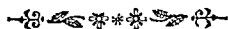




ANUBHOOTA CHIKITSA SAGARA

FIRST PART.



*A Magazine*

OF

WELL-TRIED

*Ayurvedic Medicines*

BY

PANDIT GANGA PRASAD

DADHICH TRIPATHI

Ayurveda-Panchanan

and

Member of the Ayurveda Vidya—Pitha,

— o —  
AJMER,

MEDIC PRESS.

FIRST EDITION

1908

( ALL RIGHTS RESERVED )

To be had of the author, Ajmer

Price 3 Rupees only for  
15/1000



॥ श्रीः ॥

आयदामपहर्तारि, दातारं सर्वसपदाम्।  
लोकाभिराम श्रीरामं, भूयोभूयो नमाम्यहम् ॥



आयुर्वेद पञ्चानन पण्डित गंगाप्रसाद त्रिपाठी, आयुर्वेद  
विद्यापीठस्थ सभ्य, अनूभूत चिकित्सासागर  
प्रणेता, अजमेर





# P R E F A C E.

The Almighty God, with his infinite power created this Universe and placed in it beings of all kinds. Man He made the noblest of them all and endowed him with intellectual powers of such a degree that with their aid he might be able to make this life as well as the next happy. In order to teach him, He produced Shastras (authoritative works) in all topics, by the study of which he might get knowledge of all sorts, material as well as spiritual, and be in a position to attain happiness in this world and beatitude hereafter. But all these blessings depend on a person's health. In proportion as he is healthy he is able to attain the four great objects viz Dharma, wealth, prosperity and salvation. A Sanskrit couplet has well put it "The body is the root out of which grow धर्म, अर्थ, काम and मोक्ष, and it is in a position to attain these, only if it is free from disease."

2 The Almighty God was, therefore, in his infinite mercy, pleased to ordain the introduction, among other Shastras, of the Ayurveda, (Medical science) as a guide for the preservation of health. The Ayurveda forms a subordinate part of one of the four Vedas, according to the author of 'Bhava Prakash', that of the Atharva Veda, and according to 'Chandavyuha', that of the Rigveda. The Ayurveda has again been subdivided into five different parts viz — that dealing (1) with Men, (2) with Elephants, (3) with Horses, (4) with Cows and (5) with Trees and Plants.

3 The Narayurveda or the medical science relating to man was first taught by the Almighty to Surva. Surya in his turn taught

compiled this book for the good of the public after referring to many works on the medical science. An attempt has been made to give, as far as possible, the names of the medicines obtaining in other countries and languages, together with the properties they possess and the place where, and the season in which, they are produced.

12 The author has done his best to make the book useful in every respect. Nevertheless it is possible that there may be many shortcomings. For, "to err is human", and the author of this work is no exception. It is, therefore, hoped that my medical brethren will accord this work an indulgent treatment and if any inaccuracies come to their notice or if they have any suggestions to offer, they will greatly oblige the author by communicating the same to him. Such corrections or suggestions will be duly availed of with due acknowledgment of the author's thankfulness, when the book passes into a second edition.

इस ग्रन्थ के ग्राहक, वैद्य और सज्जनों से सविनय निवेदन है कि इस मित्र दृष्टि से आद्योपान्त पद के इस में लिखी हुई औषधियों को काम में लाने का पूर्ण अनुभव करें और एक वर्ष पीछे अपनी अनुभव की हुई औषधियों का यथार्थ विवरण हमारे पास लिख भेजें हम उस को द्वितीयावृत्ति में हादिष्यन्यवाद के साथ उन्हीं के नाम से प्राचीन शैली के अनुरार प्रगट करेंगे कि अमुक २ महाशयने इन २ औषधियों के इन २ प्रयोगों का अनुभव करालिया है

PANDIT GANGA PRASAD

DADHICHA TRIPATHI

Near Jangichabootara,

Ajmer

श्रीगणेशाय नमः ॥

## भूमिका ॥

परमेश्वरने अपनी पूर्णशक्तिसे जगत को बनाकर इसमें नाना प्रकार के देहधारी उत्पन्न किये उनमें सरसे श्रेष्ठ मनुष्यको पैदा किया और इसको इम प्रकार का ज्ञान दिया कि जिससे यह इस लोक और परलोक सुधारने का यत्न करके इसकी शिक्षाके लिये कई प्रकार के शास्त्र बनाये कि जिनके पढ़ने से सांसारिक और पारमार्थिक सब प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर और तद्द्वारा संसार का मूख भोगकर परमेश्वर के लोकमें प्राप्त होजाये परन्तु ये सब बातें शरीर की आरोग्यता के आधीन हैं आरोग्यता रहने से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त कर सकता है जैसा शास्त्र में कहा है कि “धर्मार्थकाममोक्षाणां मूलमुक्त कलेसर। तच्च संसिद्धये शक्तं भवेत्तदि निरामयम्” अर्थात् शरीर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों का मूल कहा गया है और वह जो निरोग रहे तो सिद्धिके लिये समर्थ होय इसीलिये परमेश्वर ने सब पर कृपा करके आरोग्यता के लिये आयुर्वेद का प्रचार किया यह आयुर्वेद चारों वेदोंमें से एक वेद का उपवेद है भावमका-शकारने तो लिखा है कि अथर्ववेद का उपवेद है और चरणव्यूह के मत से ऋग्वेद का उपवेद है। यह आयुर्वेद पांच प्रकार का है — नरायुर्वेद, गजायुर्वेद, अश्वायुर्वेद, गवायुर्वेद और वृत्तायुर्वेद इनमें से नरायुर्वेद को मथम ही मथम ब्रह्माने सूर्य को पढ़ाया, सूर्य ने धन्वतरि, दिवोदास, काशीराज, अश्विनीकुमार, नकुल, सहदेव, यम, च्यवन, जनक, बुध, जावाल, जाजलि, पेल, करथ, अगस्त्य इन सोलह शिष्यों को पढ़ाया और इन सोलहों ही ने अलग अलग ग्रन्थ बनाये जैसे कि धन्वतरि ने—‘चिकित्सातत्वविज्ञान’ दिवोदासने—‘चिकित्सादर्पण’ काशीराज ने—‘चिकित्साकौमुदी’, अश्विनी कुमारों ने—‘चिकित्सासारतत्र’ और ‘अमर’, नकुल ने—‘वैद्यकसर्वस्व,’ सहदेव ने—‘व्याधि

सिन्धुविमर्दन' यमने-‘ज्ञानार्णव’, च्यवन ने ‘जीनदान’, जनक ने ‘वैद्यसन्देश-भञ्जन’, बुधने-‘सर्वसार’, जाबाल ने-‘तन्त्रसार’, जाजलिने ‘वेदाङ्गमार’, पैलने-‘निदान’, करथने-सर्वधर’, अगस्त्य ने-‘वैद्यनिर्णयतन्त्र’, और पूर्व समय में जब २ देवता रोगग्रस्त हुए हैं जैसे कि चन्द्रमा के “राजयक्षा” हुआ, ब्रह्माका ‘शिर’ भरव ने काटा, देवता और दैत्योंकी लड़ाई में देवता घायल हुए, इन्द्र का “भुजस्तम्भ” हुआ, पूषा के ‘दांत’ टूटे, भगदेवता के नेत्र जाते रहे, तब तब इन सबको अश्विनीकुमारों ने आयुर्वेद से चिकित्सा करके अच्छे किये यह आयुर्वेद अश्विनीकुमारों ने इन्द्र को दिया, इन्द्र ने आत्रेय आदि ऋषियों को पढ़ाया आत्रेयने ‘आत्रेयसंहिता’ वना के अग्निवेश, भेड, हारीत आदि को पढ़ाया, अग्निवेश आदि ने भी अपने अपने नाम से संहिता बनाई और जब समय के परिवर्तन से यह विद्या नष्ट होने लगी तो शेषजी महाराज ने प्राणी-मात्र पर दयाकर चरक नाम से अवतार लेकर इसी नाम से चरक नाम ग्रन्थ बनाया और सुश्रुत, वाग्भट आदि ऋषियों ने भी अपने अपने नामों से ‘सुश्रुत, वाग्भट’ आदि ग्रन्थ बनाये इनके पीछे बहुत से आयुर्वेदज्ञ पण्डितों ने भी ‘शार्ङ्गधर’, ‘भावगकाश’ आदि पुस्तकें बनाई हैं और वे प्रचलित हैं परन्तु उनमें निदान चिकित्सा आदि का तो वर्णन है औषधियों के नाम गुण और अंगों के गुण आदि का वर्णन विस्तार के साथ पूरा पूरा नहीं है और जगतक वैद्य औषधियों के नाम, गुण आदि को अच्छी तरह नहीं जानेगा तब चिकित्सा कैसे कर सकेगा, दूसरे सब औषधियां सब देशों में नहीं मिल सकती कोई कहीं मिलती हैं और कोई कहीं मिलती हैं और एक यह भी कठिनता है कि प्रत्येक देश में औषधियों के नाम अलग अलग हैं जो दूसरे देश में मिलनेवाली औषधि की इस देश में आवश्यकता हुई तो उस देश में बोले जाते हुए नाम से वह औषधि आ सकेगी इसलिए सब देशों में प्रचलित नामों का ज्ञान होना भी आवश्यक है, तीसरे जो योग में उत्तलाई हुई औषधियोंमें से कोई औषधि नहीं मिल सकती तो उस अतुल्य योग स जैसा चाहिये वैसा लाभ नहीं हो सकता, इसलिये चाहिये कि एकी औषधि के जुदे जुदे अंगों को जुदे जुदे रोगों पर काम में लावें जिससे योग पूरा करने की आवश्यकता न रहे, इन बातों को विचार

कर पूर्वोक्त हानियों को मिटाने के लिये मन बड़े परिश्रम से अनेक ग्रंथों को देखकर संसार के लाभ के लिये यह ग्रंथ रनाया है और जहाँतक मुझको और और भाषाओं के नाम मिल सके सब इसमें लिख दिये हैं और औप-धियों के नाम पूरे २ गूण, स्थान और किस समय में वे उत्पन्न होती हैं इत्यादि सब बातें लिखी गई हैं परन्तु फिरभी जो कहीं कोई बात की न्यूनता रह गई होय तो सज्जन विद्वान् लोग क्षमा करेंगे क्योंकि ईश्वर के अतिरिक्त कोई सर्वज्ञ नहीं है तथापि जो कोई सज्जन कृपा करके उस न्यूनता की पूर्ति के लिये अपनी सम्मति लिख भेजेंगे तो द्वितीयावृत्तिमें धन्यवाद पूर्वक उसको प्रकाशित करूंगा ।

इस ग्रंथ के बनाने में मुझ को जिन २ महाशयों ने सहायता दी है उन के नाम हार्दिक धन्यवादसहित प्रकाशित करता हूँ—

- श्रीयुक्त पण्डित शिवनारायण जी शास्त्री विद्यावारिधि हेड पण्डित राजकुमार मेथ्रोकोलेज अजमेर ।
- ” पण्डित भवदत्तजी शास्त्री जूनियर प्रोफेसर आफ संस्कृत गवर्नमेण्ट कालेज अजमेर ।
- ” पं० नारायणदासजी सवडिवीजनल आफिसर अजमेर ।
- ” डाक्टर नंदलालजी साहव असिस्टेण्ट सिविलसर्जन विक्टोरिया हास्पिटल अजमेर ।
- ” डा० वृन्दावन चद्रसूर असिस्टेण्ट हास्पिटल मेथ्रोकोलेज अजमेर ।
- ” डा० शरच्चद्र चट्टोपाध्याय एल० एम० एस० प्राइवेट प्रेक्टिशर अजमेर ।
- ” हकीम बहाउद्दीन साहब मुलाजिम दरगाहशरीफ रुज़्जेसाहब अजमेर ।
- ” हकीम अहमदहुसैन साहब मुलाजिम म्यूनिसिपिल कमेटी अजमेर ।
- ” वानू नानमलजी साहब कन्सरवेटर आफ फारेस्ट अजमेर मेरवाडा ।
- ” सरदार हीरासिंहजी साहब फारेस्ट आफिसर अजमेर ।
- ” लाला हरस्वरूपजी साहब फारेस्ट आफिसर अजमेर ।
- ” मु० मिट्टनलालजी साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट कभिशर आर्तिस अजमेर ।

- श्रीयुक्त पं० कृष्णानन्दनजी साहब हेडक्लर्क असिस्टेंट कमिश्नर आफिस अजमेर ।  
 ,, सेठजी धनजीशाहजी दीनशाहजी जैनरल मैनेजर फोर्ट आफ वार्डस अजमेर ।  
 ,, पं० पुरुषोत्तमदासजी दीवान भिरणाय ।  
 ,, आवा गणेश देवधर हेडक्लर्क रेल्वे पुलिस अजमेर ।  
 ,, सेठजी लक्ष्मीनारायणजी मैनेजर मसूदा ।  
 ,, पं० श्रीवल्लभजी लोअर कालेज अजमेर ।  
 ,, पं० प्रयागदत्तजी त्रिपाठी अकाउण्टेण्ट आवकारी अजमेर ।

जिन २ प्राचीन और नवीन ग्रन्थों से इसमें सहायता ली गई है उनके नामों का प्रगट करना भी आवश्यक समझ कर नीचे लिख दिये हैं:—

सुश्रुत, रुद्रमाधव, वृद्धवाग्भट्ट, भावप्रकाश, मदनपाल निघण्टु, निघंटु-संग्रह, निघंटुशिरोमणि, निघंटुतरत्नाकर, शब्दरत्नप्रमुग, अमरकोष, भगजनउल्ल अदविया, बुस्तानुलमुफरदात, आदि ।

Flora of North western Provinces Bombay Materia Medica by Dr R N Khory, Hindu Materia Medica by W C Dutt, Beeton's Medical Dictionary, List of trees and plants of mount Abu by Miss Macadam, List of trees and plants of Jaipur State, List of trees and plants in Udaipur garden etc, etc.

## सूचना ॥

इस ग्रन्थ के पढ़नेवालों पर यह भी विदित हो कि श्वेत, कृष्ण आदि पुष्पों के कारण जो वृक्षों के भेद है उन सब का वणन एक ही स्थान पर कर दिया गया है, इसी भांति गोंद, वीज आदि अंगों के जो प्रयोग हैं उनका भी सविस्तर वर्णन वहीं कर दिया गया है इन के अतिरिक्त कई औषधियां जिन के नाम अलग २ होने पर भी एक जाति की है यद्यपि वे अकारादि क्रम से लिखने के कारण अलग २ लिखनी चाहिये थीं, परन्तु वे एक ही और लिख दी गई हैं जिस से पाठकगण उनको एक ही जाति की समझें ।

प्रकट हो कि हमारे यहाँ निम्न लिखित औषधियों के आते-रुके और भी बहुतसो औषधियाँ शास्त्रोक्त रीति से बनाई हुई ( प्रस्तुत ) तय्यार ह ।

नाम औषध	ताल मूल्य	नाम औषध	ताल मूल्य
सुवर्ण भस्म	१ तोला ६०)	अभ्रकभस्म	१ तोला ५) २)
रूपरस "	" ३)	शुद्धहिगन्तू	" १)
जंड़ी से जलायाहुआ ताम्र	" ६)	शुद्ध गवक	" २)
धातु से जलायाहुआ ताम्र	" १)	शुद्ध शिलाजीत	" ॥)
हरताल का बंगेश्वर	" २)	मोती की सीप की भस्म	" ॥)
पारे का बंगेश्वर	" ५)	मोती की सीप पीसी हुई	" ॥)
सुवर्णवग	" २)	प्रवालभस्म	" ॥)
धगभस्म	" १)	प्रवाल पिसाहुआ	" ॥)
यशदभस्म	" १)	गिलाय सत	" ॥)
शतपुटी नागेश्वर	" ४)	अद्रकसत्व	" १=)
नागेश्वर	" ३)	जोखार	" ३=)
सार	" ४) २)	साजीखार	" २)
शंकर लोह	" २)	थूहर का खार	" ३=)
मंहरभस्म	" १)	पलाश का खार	" १)
कांस्यभस्म	" २)	अपामार्गचार	" ३=)
पित्तलभस्म	" १)	इमली का खार	" १)
त्रिधातुपीली	" २)	आकड़े का खार	" ३=)
त्रिधातु श्वेत	" १)	तिलचार	" १)
सुवर्ण मानिक भस्म	" १)	नीधू का खार	" १=)
छ गुणा गवक जलायाहुआ	" १)	भंग का खार	" १=)
पारा	" २५)	केले का खार	" १)
मकरध्वज ( चंद्रोदय )	" ८७)	मूली का खार	" ३=)
चन्द्रोदयवटी	" ५)	पीपल (अश्वत्थ) का खार	" १)
सूर्योदय	" १२)	कल्पतरु	" १)
हरगौरी	१२) ४)	दुर्जलजता	" १)
अभ्रकभस्म ७२५ आच की	" १५)	बालज्वराकुश	" १)



नाम औषध	तोला	मूल्य	नाम औषध	तोला	मूल्य
श्वेतज्वरगुश	१ तोला	१)	पंचामृतरस	१	॥१)
भूतभैरव	१	१)	सूतशेखर	१	॥४)
माणिक्यरस	१	१)	कफकृत	१	॥११)
वसंतमालती	१२	१२)	गर्भपाल	१२	॥१२)
लघुवसंत मालती	१	१)	प्रतापलंकेश्वर	१२	॥११)
बृहद्गगनसुंदर	१२	२१)	अक्षरसुंदरी	१२	॥३)
पंचामृतपर्पटी	१	८)	योगराजगुगल	१२	॥१५)
अग्निस्तु	१	१८)	सुधातु योगराज गुगल	१२	१)
ग्रहणीरुपाट	११	॥१-	अश्वकंचुभी	१ तोला	॥११)
ग्रहणीगंजकेशरी	११	११)	आनन्दभैरव	१	॥१)
मार्कंडेय गुटी	१	॥१)	महोदधिरस	१	॥११)
अजीर्णारि	१	१)	ब्राह्मी गुटी	१	॥११)
आदित्य	१	१)	संजीवनी गुटी	१	॥११)
बृहच्छस्त्रवटी	११	॥१-	पित्तारि	१	॥११)
अग्निदंडवटी	१	१)	रसकपूर के फूल	१	॥११)
स्वर्णपर्पटी	१	९)	अभयादि मोदक	१	॥११)
हैमगर्भ	१	५०)	कामेश्वर मोदक	१	॥११)
स्वयमाग्निरस	१	॥११)	दंतमजन	१	॥११)
श्वासकुठार	१	॥१-	स्नायु क निवारकचूर्ण	१	॥११)
शूलकुठार	१	॥११)	( इस के लेने से सालभर तक		
वज्रचार	१	॥११)	नारू नहीं निकलता है । )		
पुनर्नवादिमंझूर	१	१)	मूत्रकृच्छ्र ( सुजाक ) नाशक चूर्ण )		

### नपुंसक संजीवनी गुटी ।

रजस्वला से सभोग करने से, हस्तकर्म से, पुरुष मैथुन से, अतिमैथुन से, बहुत समय तक प्रमद रहने से, स्नायु जाल की निर्बलता से, अथवा वीर्य कम करनेवाले कई रोग और कारणों से जो नपुंसक हो जाता है, उसकी नपुंसकता मिटाने के लिये यह वटी अत्युत्तम है । इसकी ३२ गोलियों की कीमत १) रुपया है ।

## विज्ञान ।

सब ग्राहकों पर विदित हो कि इस ग्रंथकी रोग और प्रयोगानुक्रमणिका (Classification of diseases and drugs) वन भी है छपजानेपर ग्राहकों को सूचना देदी जायगी जा महाशय उमको गोल लेना चाहेंगे उनको वी. पी द्वारा अथवा मूल्य भेजने पर भेजदी जायगी, छप चुकने के पीछे उसका मूल्य नियत किया जावेगा ।

इस पुस्तक में हरेक रोग के अकारादिक्रम से संस्कृत नाम और यथा प्राप्त उनके हिंदी और अंग्रेजी नाम लिखे गये है उनको मिटानेवाली जो जो औषधियां हैं उनकी संख्या और उन औषधियों क जिन जिन प्रयोगों में उन रोगोंको मिटाने की विधि लिखी है उनकी संख्या, उन औषधियों की संख्या के आगे लिखी गई है । ऐसे एक रोगको मिटानेवाली जितनी औषधिया है उनकी और उनके प्रयोगों की संख्या उस रोग के सामने लिखदी गई है जिससे वैद्यको किसी रोग की सब औषधियां और उनके प्रयोगों को दूढने के लिये सब पुस्तकका पाठ नहीं करना पड ।

जैसे संस्कृत 'ज्वर' हिंदी 'जुखार' और अंग्रेजी 'Fever' फीवर, इसको मिटानेवाली औषधियां ये हैं ५-१, १३, ६-२, १०, १७-१४, २१-२१, इन में पहिली संख्या औषधी की और दूसरी प्रयोग की है । ज्वर के जितने भेद है उन हरेक के आगे भी उनकी औषधियां और प्रयोगों की संख्या लिखदी है ऐसेही भेद सहित हरेक रोग, उनकी औषधियां और प्रयोग लिखेहैं ।

निम्न लिखित तैल हिन्दुस्तान मे कई ठोर निकाले जाते हैं परन्तु औषध की रीति पर काम में नहीं लाये जाते हैं, मैं इन को कई रोगों में काम में लाचुका हूं, और लाताहूं ।

(१) रोगान्तक तैल—यह तैल ज्वर के वेग को कम करने में, शीत ज्वर या चवारी के ज्वर को रोकने में, फोड़े, फुन्सी, घाव, पिप्ती, दाद और खाज आदि कई प्रकार के रोगों के दूर करने में अद्वितीय है । मूल्य आधे आस की शीशी के =) दो आने ।

(२) वातारित्तैल—इस तैल के मर्दन करने से वायु की सब प्रकार की पीड़ा,

विमूचिका में होने वाले और सर्दी के प्रभाव से होनेवाले नायंट मिटते हैं। मूल्य आधे औंस की शीशी के २) दो आने।

- ( ३ ) सुपत्र तैल — यह तैल पित्तसम्बन्धी ब्रण, सुजाक और अग्निदग्ध को शीघ्रता से मिटाता है। मूल्य आधे औंस की शीशी के १) चार आने।
- ( ४ ) ज्वालामुखी तैल — यह तैल अत्यन्त भारतवर्ष में कहीं भी नहीं निकाला गया है पूर्व इस को मैंने ही निकाला है। इस तैल को लगाने से पित्तसम्बन्धी बाहर के फोड़े, पुन्सियों को और पिजाने से भीतर के घाव ( अर्थात् सुजाक आदि ) को तुरन्त मिटाता है। मूल्य आधे औंस की शीशी के ॥) आठ आने।

इन सब औषधियों का डाक व्यय पृथक् लगेगा।

उक्त औषधियों में से बहुतमी औषधियों को काम में लाने की रीति अनुभूतचिकित्सासागर में लिखी हुई है और कई औषधियां ऐसी हैं कि जिनको वैद्य की सम्मति से लेनी चाहिये अथवा जो कोई उनको काम में लाने की रीति हम से पूछना चाहेंगे तो आध आने का टिकट या जबाबी कार्ड भेजने पर हम उनको लिख भेजेंगे ॥

विदित हो कि हमने बहुत समय तक पन्थ्रम और चहुतरा द्रव्य व्यय करके पारद के संस्कार कर चन्द्रोदय ( मकरध्वज ) हेमगर्भ आदि उत्तम २ रस बनाये हैं। हमारे यहां ४ प्रकार का मकरध्वज बनाया जाता है, एक अन्तर्धूम, दूसरा बहिर्धूम, तीसरा कठोर और चौथा मृदु। जो महाशय पारद के संस्कार करना और उक्त रमादिक का बनाना हम से सीखना चाहें वे इस विषय में हम से पत्र व्यवहार करें क्योंकि उन को हमारे पास रह के इनकी सच्ची क्रिया हमारे सामने करनी पड़ेगी।

वैद्य गंगाप्रसाद दाधीचन्निपाठी

टि० जंगी चबूतरा

अजमेर।

॥ श्री दधिमध्ये नमः ॥

# संस्कृतशब्दानुक्रमणिका ।

—११: #:—

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अ-	११८८	अञ्जीरम् +	११९०	अमृणालम्	७२
अकैलकः	११८९	अटरूपः	११९१	अमृतफलम्	२३
अक्षोटः	११९०	अतसी +	११९२	अमृतवल्ली	१७६
अगदः	११९१	अतिविपा	११९३	अमृता	१७६
अगोन्तिः	११९२	अत्यन्तपर्णी	११९४	अमृतावहम्	२३
अगुरु	११९३	अद्रिकर्णी	२०	अमृतोपहिता	२१७
अग्निमन्थः	११९४	अनन्नासम्	११९५	अम्बुप्रसादः	१२२
अग्निशिखा	११९५	अनलाः *	२०५	अम्लफला	१०४
अग्निशेखरम्	११९६	अनलप्रभा	२३०	अम्लिका	३५
अङ्गोलः	११९७	अपेराजिता	२३१	अरणिः	७
अङ्गुन्दर	११९८	अपशोकः	३३३	अरख्यजीरकः	२२२
अङ्गारः	११९९	अपाकशारुम्	५५५	अरख्यार्द्रिका +	५६
अङ्गान्धिका	१२००	अपामार्गः	२१	अरितमञ्जरी	२६
अङ्गमोदा	१२०१	अफल	२३२	अरिगर्दः	१३७
अजात्नी	२००	अफेनम्	४०	अरिमेदक	१६७
अजाजी	२०१	अभयम्	७२	अरिष्ट	२७
अजात्री	२०२	अभ्यञ्जनम्	२६२	अरुणा	६४
अञ्जनम्	२०३	अधरुम्	२२२	अर्क	२२
अञ्जनवृत्तः +	२०४	अमरवल्ली	२२२	अर्कचन्दनम्	१६६

\* इमको नक्षत्रकी संख्या मे कालमूक के द्यान मे समझा ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अर्कपत्रा	३०	आत्मगुप्ता	६६	इन्द्रक	३३
अर्कमिया	२१५	आदित्यभक्ता	४६	इन्द्रमु +	३१
अर्कमूला	३०	आमण्ड.	७६	इन्द्रवारुणी	६४
अर्जुन	३१	आमम्	१६	ईपद्गोलम्	६६
अलातम्	८	आमलकी	४७	उ--	
अलाम्बुनी	२५४	आम्रः	५०	उग्रकाण्डम्	१२६
अंशुकम्	२४१	आम्रातकः	५२	उत्तमा	६३
अशोक	३२	आरग्वध.	५३	उत्पलम्	६७
अशमन्तकः	३३	आरण्यगुडत्वक्	१७८	उत्पलम्	१५०
अश्वकर्णः	३४	आरुकः +	५४	उदुम्बर	६६
अश्ववुग	२०	आर्द्रकम्	५५	उदुम्बरपर्णी	२६६
अश्वगन्धा	३५	आलु	५७	उदुम्बरम्	२४४
अश्वत्थः	३६	आलुकी	८९	उपपुष्पिका	१२०
असन	३८	आलुकम्	५८	उपोदकी	७१
असिपत्रः	६	आलूलुकम्	५८	उमा	१३
अस्थिसंहारः	३६	आवर्तनी	५६	उरुकालः	६५
अद्रिफला +	१६६	आवर्तफला	५६	उर्वारः	११०
अद्रिफेनम्	४०	आविघ्नः	१०३	उल्मुकम्	७६
आ-		आहुल्यम्	६०	उशीरम्	७२
आकलक	४१	इ-		उष्ट्रकण्ठकः	७३
आकारकरभ	४१	इक्षुः	६१	ऊ-	
आकाशवल्ली	४२	इक्षुर	१५८	ऊर्ध्वपुष्पम्	२१५
आखुकर्णी	४३	इक्षुवाकु	२५५	ए-	
आखुपापाण	५४	इक्षुदी	६२	एकवीरः	७४
आज्यम्	१८६	इन्दीवाम्	६६	एडगज	१६५
आढकी	४५	इन्दीवरा	६३	एरका	७५

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
प्रसङ्गः	७६	कटभी	२३०	कपित्थैलम्	२५६
प्रसङ्गकर्कटी +	७८	कटम्भरा	८६	कपित्थः	६८
प्रसङ्गपत्रा	२६८	कटुकम्	८३	कपित्थम्	८१
पर्वाक	११०	कटुकी	८७	कपिम्रिय-	५२
एला	७६	कटुकोशातकी	१६२	कमण्डलुः	३७
एलाबालुकम्	८१	कटुतुम्बी	२५५	कमलम्	६६
एलीयकः	१६४	कटुदला	१०६	कम्पिलकः	१००
ए-		कठिलम्	१०६	करकः	३६६
ऐन्डी	६४	कद्	८६	करञ्ज	१०१
ऐमी	१६३	कणजीरक	२६	करपर्याः	७७
ओ-		कण्टकलता	१३५	करभादन	७३
ओखगाडी	८२	कण्टकारी +	१६०	कामर्दः	१०३
ओडुपुष्पा	२१५	कण्टफल	७३	कामर्दिता	१०४
क-		कण्टफल	१०२	करवीरः	१०५
ककुभ	३१	कण्टी	९८	करीरः	१०७
कङ्गम्	२३७	कण्डुरा	९६	कर्कटशृङ्गी +	१०८
कङ्गोलम्	१८३	कण्डुला	१८	कर्कटी	१०२
कङ्गुः	१८४	कतकम्	६२	कर्कशः	१३२
कङ्गुनी	१८४	कदम्ब	९३	कर्पूरः	११३
कञ्चः	१८५	कदली	९०	कर्पूरवल्ली	११४
कच्छः	२५२	कनकः	१४६	कर्मारङ्गः	११५
कच्छुरा	२७०	कनकमभा	२३१	कर्मारः	११५
कच्ची	८५	कन्दरालः	३७	कलम्बी	११६
कटफलम्	८८	रूपर्दिता +	६५	कलम्बुटम्	१६०
कटभी	८९	कपिरुच्छु	६६	कलायः	११७
		कपिचूतः	५०	कलिकारी	११८

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
कवरी	२५८	कारवेल्लम्	१२६	कुटिलम्	२३८
कंसकम्	१३४	कार्पासी	१२७	कुट्टिम	२६६
कसेर	११६	कालजीरकः	२२७	कुडाल	३१
काकफल्गु	२०८	कालमूल	२०६	कुडाल	१२६
काकजड्या	२२०	कालमेपी X	२००	कुन्तली	२०७
काकमर्द	१६५	कालसेवम्	२३७	कुन्दः	१४०
काकमाची	१२१	कालस्कन्धः	१६७	कुन्दुरु	१४१
काकवृन्ता	१४६	कालस्कन्धः	२४०	कुपीलु	२५०
काकाएडी	६७	कालिङ्गम्	१२६	कुमारीसारोद्भवः	१६४
काकाहा	१२०	कालिन्दम्	१२६	कुमुदा	१८८
काकिनी	१२१	काली	२२९	कुमुदा	१४२
काकेचु	१३०	काश	१३०	कुम्भारी	१३१
काकेचु	१५८	काशमरी	१३१	कुम्भिका	१४२
काकेन्दुः	२५०	कासमर्दः	१३२	कुम्भीषीजम्	२६७
काकोदुम्बरा	७०	कासारिः	१३२	कुररटकः	१४३
काकोदुम्बरिका-		कासीसम्	१३३	कुरण्डिका	१४५
फलम्	१४	कांस्यम्	१३४	कुलञ्जः	१४८
काञ्चनार	१२३	किङ्किणी	१३५	कुशत्यः +	१४६
काञ्जतकः	१२२	किङ्किरातः	१४४	कुलाहलः	१४७
काण्डरुष्टा X	८७	किम्पाकः	६५	कुलिञ्जनः	१४८
काण्डेरः +	२३६	कीटारिः	२३	कुवेरक	२५२
कामरूपः	१२५	कुकरुट्ट	१३६	कुवेराञ्जः	१०२
कामवल्लभः	५०	कुकुन्दरः	१३६	कुश	२४६
कायस्था	२८०	कुङ्कुमम्	१३७	कुष्ठम्	१५०
कारवी	१०	कुटज	१३८	कुम्भैरी	१५१

\* कालमूल २०५ की सख्या म जो छप गया है उसको २०६ की सख्या में समझो।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
कुष्माण्डम्	१५३	कोकिलाक्षः	१५८	नीरिणी	१६४
कुमुम्भम्	१५३	कोद्रवः	१५९	नीरोद्भवम्	१६५
कृषा	१६७	कोद्रूपः	१५९	नुद्रचन्दनम्	१६६
कृतत्राणा	१६३	कोलानन्दः	१६०	नुद्रा	१६०
कृतफलम्	१६३	कोलम्	१६३	नुद्राग्निमन्थः	१६७
कृमिनः	१६९	कोलवल्ली	१६३	नुद्राम्ला	१६८
कृमिघ्नी	१६९	कोविदार	१६३	नुमा	१६९
कृमिजम्	१६९	कोशाफला	१६३	नुमकः	१६९
कृष्णकलि	१६४	कोशांतकी	१६३	नुमकः	१६९
कृष्णकुटज	१६९	कोशाघ्नः	१६९	नुत्रनाशिनी	१७५
कृष्णकलि	१६४	कौतुकम्	१७१	नुत्रभूषा	१७५
कृष्णचूचुकः	१६७	कौशिकः	१७४	ख-	१७५
कृष्णजटा	१६४	कौशिकः	१७४	खटिका	१६५
कृष्णजीरकः	१६७	क्रान्ता	१७१	खटिनी	१६५
कृष्णत्वक्	१६७	क्रोष्टुघण्टिका	१७९	खटो	१६५
कृष्णभेदा +	१७	क्षत्रियवरा	१५६	खटवाङ्गी	१७०
कृष्णम्	१६३	क्षवः	१६३	खट्वा	१७०
कृष्णाला ×	१७६	क्षवक	१६३	खटिरः	१६६
कृष्णबीजः	१७५	क्षवकृत्	१६३	खरपत्री +	१७३
कृष्णबीजम्	१७६	क्षारपत्रा	१७५	खरस्कन्धा	१७३
कृष्णबालः	१७४	क्षीरदलः	१७६	खर्जुर्धनः	१७६
कृष्णभारः	१७६	क्षीरफलः +	१७६	खर्जुरी	१७६
कृष्णजाजी +	१७७	क्षीरफना	१७६	खसफलक्षीरम्	१७७
क्षतही	१५६	क्षीरम्	१७७	ग-	१७७
क्षयः	१२२	क्षीरगवी	१७७	गणेशकुमुदः	१७७
क्षीरनदम्	१२२	क्षीरिका	१७७	गण्डक	१७७



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
गण्डारिः +	१२४	गैरिकम्	१८०	प्र.ण्डुःखदा	२१३
गन्धकः	१७१	गोकण्डः	१८१	च-	
गन्धकन्दकः	११९	गोकण्टकः	१८०	चक्रमर्दः	१६५
गन्धतुलसी	२५६	गोलुरः	१८१	चक्राङ्गी +	८७
गन्धपापाणः	१७१	गोजिका	१८३	चचेण्डा	१६६
गन्धमूलः	१४८	गोजि डा	१८३	चणकः	१६७
गन्धसार	१६८	गोधूम	१८४	चण्डुमः	१६२
गन्धारमा	१७१	गोमेदः	१८५	चन्दनम्	१६८
गर्दभाण्ड	३७	गोरक्षी	१८६	चन्द्रशूरम्	१७०
गव्या	१८८	गोरटः	१६७	चन्द्रसंज्ञः	११३
गायत्री	१६६	गोगाणी	१८७	चम्पकः	२०१
गारुत्मतम्	१७२	गोरोचना	१८८	चराचर	६५
गार्जरम्	१७३	गोत्रिन्दी	१३५	चलादज्ञः	३६
गिरिकर्णी	२०	गौरीपापाणकः	४४	चवकम्	२०३
गुग्गुलुः	१७४	ग्रन्थिमान्	३६	चैत्रिका	२०३
गुञ्जा	१७६	ग्रन्थिलः	१०७	चव्यम्	१०१
गुडः	१७७	घ-		चव्या	१०७
गुणवृणः	६१	घनसारः	११३	चाङ्गीरी	२०४
गुडत्वक्	१७८	घनस्कन्धः	५१	चाम्पैयः	२०१
गुडमञ्जरी	२२५	घुस्टण्ड	१३७	चारुकेसरा	२४२
गुडवी	१७६	घृणाफलम्	१२६	चिचरेडः	१६६
गुण्डकन्दः	१४६	घृतकुमारी	१६१	चिञ्चा	२५
गुन्द्रपूला	७५	घृतम्	१६६	चित्र	७६
गुप्तभेदः	८	घोतम्	२१७	चित्रकः	१०५
गुहपत्रः	१०७	घोषपुष्पम्	१३४	चित्राङ्ग *	२०६
गुहकन्या	१६१	घोषम्	१३४		

\* २०६ गव्या ग रुद्र के स्थान में चित्र

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
चिरपाकी	१८८	जम्भीरः	२१६	भातुकः	२३२
चिरपोटा	२०७	जयन्ती	२१८	भावुः	२३२
चिरविश्वक	१०१	जयपालकम्	२६७	ट-	
चिर्मिटा	११६	जया	६	टङ्गाः	२३४
चीनक	२०८	जगणः	२२६	टङ्गारी	२३५
जुगम्	२०९	जरणाद्रुमः	३४	ढ-	
जुक्राम्बला	२०४	जरणा	२०७	ढोलसमुद्रिका	२३६
जुक्रिका	२०६	जरणा +	२२०	त-	
घृदामणिः +	१७६	जलम्	२१६	तक्रजन्म	२६५
चूर्णम् +	२१०	जलवणकलम्	१४२	तक्रम्	२३७
चौचम्	१७८	जलाह्वयम्	६७	तगरम्	२३८
चोपचीनी	२११	जातिकोपा	२२१	तण्डुलीयः	२३६
छ-		जातिपत्री	२२१	तपनः	७
छगलान्त्री	११	जातिफलत्वम्	२२१	तपनः	२६
छिकिका +	२१२	जातिसस्यम्	२२३	तमाल.	२४०
छिकिनी	२१२	जाती	२२०	तमालपत्रम्	२४१
छिन्ना	१७२	जातीपत्री	२२१	तमोमणिः	१८५
ज-		जातीफलम्	२२३	तर्घटम्	६०
जटामांसी	२१४	जाम्बयम्	११७	तरुणी	२४२
जटालः	१७४	जिङ्गिनी	२१५	तर्कारी	६
जन्तुपादपः	६१	जिह्वाम्	२३८	तापिच्छः	२४०
जन्तुफल	६९	जीरक	२-६	ताम्रकूटः	२४५
जपा	२१६	जीवनम्	२१६	ताम्रचूडः	१६६
जम्भीरः	२१६	ज्योतिष्मती	२३०		
जम्बू +	२१७	ञ-			
जम्बः	२१६	भावुः	२३२		

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
ताम्रधातुः	१८०	तुरुष्कः	२५६	दन्तवीजक	२६६
ताम्रपत्रक	१८३	तुलसी	२५७	दन्तशठः	२६६
ताम्रमूला	२७२	तुवरी	२५५	दन्तशठा	२७४
ताम्रम्	२४४	तूतम्	२६०	दन्ती	२६६
ताम्रबीज	२४६	तूदम्	२६०	दन्तीबीजम्	२७७
ताम्रसारम्	१६६	तूलम्	२६०	दभ	१४९
तालः	२४६	तृणराज.	२४६	दहन	२०५
तालीसपत्रम्	२४७	तेजोचती	२३१	ढाडिमः	२६९
तिक्तजीरक	२२८	तैलम्	२६२	द्वारिका	२६३
तिक्तमरिचः	२२२	तैलभाविनी	२२०	दीर्घदण्डी	१८६
तिक्तबीजा	२५५	तौयप्रसादनम्	१९२	दीर्घपत्रा	१९१
तिनिशः	२४८	त्रपुसी	१९२	दीर्घपत्रा	१४७
तिन्तिडीका	२१५	त्रायन्ती	२६३	दीर्घपर्णः	३४
तिन्दुकः	२४६	त्रायमाणः	२६३	दीर्घफल	१५३
तिलः	२४१	त्रिवृता	२६४	दीर्घफला	१६१
तीक्ष्णगन्धः	१४१	त्रुटिः	१७६	दीर्घहन्ता	१६३
तीक्ष्णगन्धः	१५६	त्वग्गन्धम्	१०१	दुग्धगर्भा	२६८
तीक्ष्णपुष्पा	१५६	त्वचम्	१७०	दुग्धम्	२७०
तीक्ष्णफलः	१५३	द-		दुग्धिका	२७१
तीक्ष्णमूलः	१४८	दक्षिणार्त्तकी	१६६	दुरारोहा	१६८
तुङ्गमुखः	१७०	दक्षुप्रः	१६५	दुरालभा	२७२
तुङ्गी	२५८	दक्षुपर्दी	१६३	दुष्टवर्णम्	८१
तुङ्गः	२५२	दधि	२६५	दुष्टवर्णा	१६८
तुम्बी	२५४	दधित्यः	१६८	दुस्पर्शा	२८२
तुम्बुरुः	२५३	दधिपुष्पी	१६७	दृढकण्ठकः	१०३
तुरगी	२५५	दन्तधावनः	१६६	दृढपादिका	१४९

शब्द	स०	शब्द	स०	शब्द	स०
दृढवीजा	१८७	नागफेनम्	४०	पानीयामलकम्	४८
दैवदुन्दुभि	२५६	नागगम्	४८	पारवती	१६
दोग्ध्यम्	२६५	नादेयम्	१३	पारीषः	३७
द्राणकः	२३४	नादेषी	६	पावकम्	१५३
द्राविडी	७६	नारङ्गम्	१७३	पिङ्गला	१८८
द्रुमोत्पल	६८	निकुम्भा	२६६	पिचुलः	२३२
द्रीप्या	१६६	निकोचकः	८	पिच्छलच्छटा +	७१
ध—		निदिग्धिका	६०	पिच्छला +	१६
धन्वयासः	२७२	निर्मलम्	२२	पिण्डलर्जूरी	१६९
धातुकासीराम्	१३३	निशान्द्वधनी +	१८७	पिण्डमूलम्	१७३
धातुसन्धिरः	२३४	नीरम्	२१६	पितृनर्षणम्	२५१
धात्री +	४७	नीलानजः	२४०	पिप्पलाः	३६
धात्रीपत्रम्	२४७	नीलफला	२१७	पिशुनम्	१३७
धामार्गवः	२१	नीलयष्टिका	१३६	पीतकम्	१७३
धामार्गवः	१६१	नेगी	२४८	पीतकरवीरः	१०६
धाराफल	११५	प—		पीतकुरण्टकः +	१४४
धराफला	१६१	पनम्	२४१	पीततण्डुलाः	८४
ध्रुवदुग्धिका	१५६	पत्रश्रेणी	४३	पीतनकः	६०
धनुदुग्धम्	१११	पातारुपम्	२४७	पीतगुप्फकः	१४४
न—		पत्राम्ला	२०६	पीतपुष्पम् +	६०
नक्तमालाः	१०१	परिव्याधः	६८	पीतपुष्पम्	१५२
नताश्री	१०८	पलाशम्	२४१	पीतपुष्पा	४५
नन्दीवृक्ष	२५२	पत्राम्	२५१	पीतपुष्पी	११२
नलदम्	७२	पात्रलग्	१५०	पीतमसव	१०६
नरनीतम् +	१६०	पाण्डुफला	१११	पीवरी	४५
		पानीयम्	२१९	पीवरी	६

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
पुण्डरीकम् +	६६	बहुदुग्धः	१०४	भूम्यामलकी	४६
पुष्पफलम् +	१५०	बटुपत्रम्	२०	भृङ्गन्धु	१४०
पुष्टिदा	३५	बहुफला	११२	भृङ्गष्टा	२४३
पूतिकः	१०१	बहुरसा	२३१	स—	
पूतिगन्धः	१७१	बाणः	१४३	मद्गन्धः	२७
पृथ्वीका	८०	बालक्रीडनकः	६५	मञ्जरी	३२
पेज	५६	बालजीवनम्	२७०	मदघ्नी	७१
प्रपुत्राटः	१०५	बालभाज्य	१६७	मदशाक	७१
प्राचीनामलकम्	४८	बीजकः	३८	मदशौण्डिकम्	२२३
प्रियकः	३८	बृहती	६१	मधुकर्कटी	७८
प्रियङ्गु	८४	बृहत्पाली +	२०८	मधुपुष्प	३२
प्रियदर्शनः	१६४	बृहत्फलम्	१५२	मधुंगणु	८६
फ—		बृहदन्ती	२६८	मन्वेण्डफलम्	७८
फलपुष्पा	१६६	बोधिद्रुगः	३६	मनोज्ञा	२००
फलरगेतः	१	ब्रह्मकाष्ठम्	२६०	मनोरम	१४०
फला—	१६४	भ—		मयूरक	२१
फलाभ्ला	२०७	भङ्गुरा	१७	मरकतम्	१७२
फलगुनी	७०	भद्रैला	८०	मर्कटतिन्दुक	२५०
फेनिलः	२७	भल्लूकम्	५८	मर्कटी	१०
व—		भिस्सटा	८२	मर्कटी	६६
वटरी	१२७	भृतघ्नी	२५७	मलयज	१६८
वर्धरातुलसी	२५८	भृतद्रात्री	२१३	मलयू +	७०
वल्लभद्रा	२६३	भृतहरः	१७४	मल्लिका	१३९
वलामोटा	२१८	भूताङ्कुशः	२१३	महाकालः	६५
वस्तमोटा	१०	भूवात्री	४६	महाकोशातकी	१६३
बहुगन्धा	२२६	ममिचम्पकः	२०२	महागन्धः	१३८

अनुभूतचिकित्सासागरः ॥

शब्द	सं०	शब्द	सं०
महाघोषा	१०८	मोचा	६४
महाङ्ग +	२०६	मोदनी	२२५
महाज्योतिष्मती	२३१	म्लेच्छभोजनः	१८४
महातुम्बी	२५४	म्लेच्छमुखम्	२४४
महापुष्प	१२५	य-	
महाफला	१६३	यज्ञभूषणः	१४६
महारस	६१	यज्ञिकः	१६६
महावीर	४	यवफलः	१३८
महासर्ज	३८	यामुनम्	१३
महिपाक्षगुग्गुलु +	१७५	यावन	२५६
महीरुह	१५१	युग्मपत्रः	१४१
महोन्नतः	२४६	युग्मफला	६३
मासी	२१४	योपिनी	६८
शुकुन्दकः	१४१	र-	
शुण्डचणकः	११७	रक्तकम्	४८
शुङ्गरकः	११५	रक्तकाञ्चनार	१२३
शुनिद्रुम.	४	रक्तघृतकुमारी	१४३
शूत्रफला	१०६	रक्तचन्दनम्	१४३
शूपकपापाणः	४४	रक्तचित्रक	
शूपिकाहा	४३	रक्तभाबुक	
शृङ्गाम्	१८०	रक्तवातु	
शृङ्गकण्टः	१४३	रक्तफलम्	
शृङ्गुलम्	१४	रक्तरानी	
शेघनादः	२३६	रक्तला	
शेध्या	१८८	रक्तवीज	
शेषात्री	११	रक्ताङ्ग	

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
रौहिणेयम् +	१७२	वंशकुट्टज	१३६	वीरास्त्राव.	१६४
ल-		वंशिकम्	५	वृत्तगुच्छः	७३
लघुगोक्षर'	१८०	वस्त्रपञ्जलः	१६०	वृत्तपुष्प'	६३
लघुघृतकुमारी	१६२	वस्त्रञ्जकम्	१५३	वृत्तपुष्पा	६४
लताकरञ्जः	१०२	वस्त्ररागधृक्	१३३	वृत्तफल'	१
ललनाभिय.	६३	वन्दिशिरम्	१५३	वृत्तम्	१४
लाक्षापुष्पा	२४२	वाजिदन्तः	१५	वृत्तमालिका	२६
लाङ्गली	११८	वातकुम्भफल.	७८	वृत्तबीजा	४५
लेख्यपत्रः	२४६	वातारि	७६	वृषः	१५
लोगशकाखटा	१०९	वायसी	१२०	वृषपत्रिका	११
लोहितमृत्तिका	१८०	वारिपत्नी	१४२	वैवस्वतद्रुम	१५१
व-		वार्ताकी	६१	व्याघ्रः	७७
वह्निरोनः	४	वाराक	१५	व्याघ्रघण्टी	१३५
वज्रचर्मा	१७०	वासपुष्पा	२००	व्याघ्री	६०
वज्रभृङ्गी	२४५	विकीरण.	२८	व्याधिघात	५३
वज्रवीजक	१०२	विद्वलादिरः	१६७	व्याल	२०५
वज्राङ्ग	३६	विडालाक्षः	१४१	व्यालदंष्ट्र	१८१
वनजीरक.	२२८	विफला	१५६	व्यालपत्रा	११०
वनस्था	१८	विराा	१७	व्योमम्	२३
वनाश्र	५१	विपाखट	६०	व्योमवलिक्ता	४२
वनार्द्रकम्	५६	विपघ्न	२३९	- श -	
व्यस्था	४७	विपघ्नी	६४	शक्रपादपः	१३८
वरदा	४६	विपतिन्नुतः	२५०	शडम्	२३८
वराङ्गम्	१७८	विपा	१७	शतकुन्द'	१०५
वराट.	६५	विपापहा	३०	शतपत्री'	२४२
वलिस्त्राणा	१८	विपापहा	२६८	शतपर्वा	११६
				शतमल्ल	४४

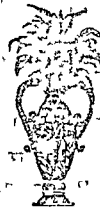
शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
शरी	७५	श्लक्ष्णक	२०८	सिंहिका	९१
शवि	७५	श्वेत मातु	१६५	सिन्धकः	२५६
शालूकम्	२२३	श्वेतराजी	१६६	सुकाण्ड	१३०
शिरा	१३०	श्वेतीजः	१४६	सुकाण्डवग्	१२६
शिलाक्षारम्	२१०	श्वेतार्क	२६	सुकुटः	१६०
शिववल्गुभा	२४३	ष-		सुक्ता	२५
शिवा	४७	षट्त्र	१०२	सुगन्ध	२५६
शिष्टाम्रिय	१७७	स-		सुगन्धिद्रुसुमः	१०६
शीघ्रगुप्प	४	सट्टीर	७४	सुचित्रा	१११
शीघ्रा	२६६	सदापुष्प	१४०	सुदण्डिका	१८६
शीतलः	२०१	सदाफल	६६	सुधा	२१०
शीतनीजम् +	६६	सम्भर	३१	सुनन्दा	३०
शुक्रोदग्म्	२४७	सरजम्	१६०	सुनिर्यासा	२९५
शुक्लार्कः	२६	सरला	१११	सुपत	६०
शुक्लम्	२४४	सर्पदन्डी	१८६	सुगन	१८४
शुक्लवरम्	५५	सर्पि	१८६	सुगना	२२०
शुद्धी	१०८	सर्पितक्ता	१०१	सुरजी	१२०
शैलरिनः	२१	सर्वतोभद्रा	१३१	सुरभि	६३
शैलरोहो	१५१	सर्वानुभूति +	२६४	सुगभिपत्रा	२१७
शैशिरिकम् +	६६	सत्त्वियम्	२१६	सुरसा	२५७
शोणकार्पासी	१२८	सहकार	५०	सुलोमशा	११०
शोणदुष्पः	१०७	सहचर	१४३	सुवर्चला	४६
श्यामा	२६४	सदस्यमूली	४३	सुवीरक	७४
श्रीसण्डम्	१६८	सारिणी	१२७	सुशाका	१८७
श्रीपर्णा	८८	सिताभ्र	११३	सुश्लक्षणा +	२०८
श्रीपुष्प	१२१	सिंहास्त	१५	सुसरेयः	११६



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
रौहिणेयम् +	१७२	वंशकुट्टज	१३६	वीरास्त्राव.	१६४
ल-		वंशिकम्	५	वृत्तगुच्छ.	७३
लघुगोचुर'	१८२	वस्त्रपञ्जलः	१६०	वृत्तपुष्प.	६३
लघुघृतकुमारी	१६२	वस्त्ररञ्जकम्	१५३	वृत्तपुष्पा	६४
लताकरञ्जः	१०२	वस्त्ररागधृक्	१३३	वृत्तफल	१
ललनामिय	६३	वन्दिशिखम्	१५३	वृत्तम्	१४
लाक्षापुष्पा	२४२	वाजिदन्तः	१५	वृत्तमल्लिका	२६
लाङ्गली	११८	वातकुम्भफल	७८	वृत्तवीजा	४५
लेख्यपत्रः	२४२	वातारि	७६	वृषः	१५
लोगशकारदा	१०९	वायसी	१२०	वृषपत्रिका	११
लोहितमृत्तिका	१८०	वारिपणो	१४२	वैवस्वतद्रुम	१५१
व-		वार्ताकी	६१	व्याघ्रः	७७
वहरोनः	४	वासक	१५	व्याघ्रपखटी	१३५
वज्रचर्मा	१७०	वासपुष्पा	२००	व्याघ्री	६०
वज्रभृङ्गी	२४५	विकीरण.	२८	व्याधिघात	५३
वज्रवीजक	१०२	विद्वलदिरः	१६७	व्याल	२०५
वज्राङ्ग	३६	विडालाक्षः	१४१	व्यालदंष्ट्र	१८१
वनजीरक	२२८	त्रिफला	१५६	व्यालपत्रा	११०
वनस्था	१८	त्रिखा	१७	व्योगम्	२२
वनाम्न	५१	त्रिपाखट	६२	व्योमवल्लिका	४२
वनार्द्रकम्	५६	त्रिपघ्न	२३९	श-	
वयस्था	४७	त्रिपघ्नी	६४	शक्रपादपः	१६८
वरदा	४६	त्रिपतिन्दुक्तः	२५०	शउम्	२३८
वराङ्गम्	१७८	त्रिपा	१७	शतकुन्द	१०५
वराट	६५	त्रिपापहा	३०	शतपर्वा	२४२
वलिस्तरणा	१८	त्रिपापहा	२६८	शतपर्वा	१६
				शतमल्ल	४४

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
शरी	७५	श्लक्ष्णक	२०८	सिंहिका	९१
शवि	७५	श्वेतधातु	१६५	सिन्धकः	५६
शालूकम्	२२३	श्वतरानी	१६६	सुकाण्ड	१३०
शिरि	१३०	श्वेतत्रीजः	१४६	सुकाण्डजम्	१२६
शिलाक्षारम्	२१०	श्वेतार्क	२६	सुकुटः	१६०
शिवबल्लभा	२४३	प-		सुक्ता	२५
शिवा	४७	पद्व	१८२	सुगन्ध	२५६
शिशुप्रिय	१७७	स-		सुगन्धिद्रुमः	१०६
शीघ्रगुप	४	सट्टीर	७४	सुचित्रा	१११
शीघ्रा	२६६	सदापुष्प	१४०	सुदण्डिका	१८६
शीतलः	२०१	सदाफल	६६	सुध्रा	२१०
शीतत्रीजम् +	६६	सम्बर	३१	सुनन्दा	३०
शुक्रोदग्म्	२४७	सरजम्	१६०	सुनिर्यासा	२९५
शुक्लार्कः	२६	सरला	१९१	सुपत्र	६०
शुक्लम्	२४४	सर्गादरुही	१८६	सुगन	१८४
शुक्लवेरम्	५५	सर्पि	१८६	सुगना	२२०
शुद्धी	१०८	सर्वगिक्ता	१०१	सुरजी	१२०
शैलरिक्तः	२१	सर्वतोभद्रा	१३१	सुरभि	६३
शैलरोहो	१५१	सर्वानुभूति +	२६४	सुरभिपत्रा	२१७
शैशिरिकम् +	६६	सत्तिलम्	२१६	सुरसा	२५७
शोणकर्पासी	१२८	सहकार	५०	सुलोमशा	११०
शोणदुष्पः	१०७	सहचर	१४३	सुवर्चला	४६
श्यामा	२६४	सदसमूली	४३	सुवीरक	७४
शोखण्डम्	१६८	सारिणी	१२७	सुशाका	१८७
श्रीपर्णा	८८	सिताभ्र	११३	सुश्लक्षणा +	२०८
श्रीपर्णा	१३१	सिंहास	१५	सूत्ररेडः	११६

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
सूचमपत्र	१३६	स्नेहशुद्धगम्	२६२	हरिप्रिया	२५७
सूचममूला	२१८	स्नेहोत्तमम्	२६७	हरिमन्थः	१६७
सूचमैला	७६	स्फुटफलः	२५३	हलिनी	११८
सूच्यग्रः +	१४६	स्फूर्जकः	२४९	हलुगख्यम्	६०
सेवन्ती +	२४३	स्यन्दनः	२४८	हवि	१८६
सोमवल्कः +	८८	सर्वणलता	२३०	हंसलोमशम्	१३३
सौवधूपणकम्	२१०	स्वर्भानवः	१८५	हस्तिनोषातकी	१६३
सौभाग्य	२३४	स्वल्पकेसर	१२३	हिद्रुपत्र	६२
सौरभः	२५३	स्वादुपुष्पा	८६	हिमाब्जम्	६७
स्तन्यम्	२७०	स्वाहाख्य	१२२	हिमालया	४६
स्थूलजीरक'	२२६	ह-		हिंसा	२१४
स्थूलदला	१६१	हयभक्ष्या +	१६६	हेमदुग्ध	६६
स्थूलापिण्डा	१६६	हयमार	१०५	हेमपुष्प	५३
स्थूलैला	८०	हरिता	२१८	हेमपुष्पः	२०१
स्निग्धजीरकम्	६६	हरिन्मणि	१७२	होमधान्यम्	२५१



॥ श्राद्धमिथ्यै नमः ॥

## मारवाड़ीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकलकरो	४१	अग्नी	८५	आलण	६०
अखरोट	५	अरी	८५	आलुवालु	८१
अगत्यो (धयो)	४४	अरीठां	२७	आलुबुखारा	५८
अगर	५	अर्जुन	३१	आंजला	४७
अंकोल	८	अलसी	१६	आसगध	३५
अंजनवृक्ष	१०	असाल् +	२००	आसोपालो	३०
अजमोद	१०	आक	२८	इरंड	७६
अजार	१४	आकडो	२८	ईसरधोल	६६
अजैपाल्यो	२६७	आगयो	१४५	ऊटकटालो +	७३
अडूसो	१५	आइ	५४	ऊंदरकनी +	४३
अतीस	१७	आदो	५५	ऊभीकंडाली +	६१
अदरक	५५	आधीभाड़ो	२१	एरड	७६
अनन्नास	१६	आफू	४०	एरंडकाकड़ी	७८
अफीम	४०	आम	५०	एरो	७५
अमरवेल	४२	आमली	३५	एल्यो	१६४
अमल	४०	आवो	५०	ककरुदो	१३६
अम्यर	२६	आरेड	४५	ककोलमिगच	८३
अम्नाडो	५०	आल	२५४	कचनार	१२३
अरडूसो	१५	आलडी	२५४	कचनारभेद	३३
अरणी	६	आल	५७	कटसेलो	१४३

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
नठगुनर	७०	काचरा	१११	कैरुदा	१०३
कडवीतोरु	१६२	काजूगुली	१२२	कैरुदी	१०४
कडू	८६	कायफल	८८	कोकन	१५७
कणेर	१०५	कालीजीरी	२२८	कोचवीज	९३
कंटाळी	६०	कालोसुरमो	१३	काठी	९५
कंडीर	१०५	काम	१३०	कोदरुगूद	१४१
कदम	९३	काँसी	१३४	कोदू	१५६
कपास	१२७	कियागच	१०२	फोयला	९
कपीलो	१००	किरमाळो	५३	फोयलोका बीज	२०
कपूर	११३	कुचीला	२५०	कोळ कांदो	१६०
कमारख	११५	कुटक	८७	खड्डी	१६५
कमल	९६	कुटकी	८७	खस	७२
करंज	१०१	कुडा	१३८	खिजूर	१६८
करेलो	१२६	कुज	१४०	खिरणो	१६९
कलधिरछ	१८६	कुन्द	१४०	खिरणो	१३८
कजंजी +	२२७	कुन्भो	१४२	खीराककडी	११२
कवडी	९५	कुन्भेरण	१३१	खैर	१६६
कैवल	६९	कुळगच	१०२	गडूल	६७
कसूबो	१५३	कुलथ	१४६	गधक	१७१
कसेरु	११६	कुलिजन	१४८	गत्रोरपाठो	१६१
कसीस	१३३	कुठ	१५०	गत्रोरफली	१८७
कसौदी	१३२	केला	६४	गहू	१८४
काकडी	१०६	कचडो	१५६	गाजर	१७३
काकडासिंगी	१०८	केमर	१३७	गिठोरन	१३५
कागलहर	१२०	कैध	६८	गिजोय	१७९
कागणी +	८४	कैर	१०७	गुड	१७७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
गुडहल	२१५	चूना	२१०	तालीसपत्र	२४७
गुळ	१७७	चेवचीनी	२११	तिल	२४१
गुलहवांस	२५४	छोटी अरणी	७	तींदू	२४६
गुलाब	२४२	छोटीडलायची	७९	तुण	२५२
गमल	१७४	छाद्य	२३७	तुम्बरू	२५३
गूलर	६६	जगनीअम्वरोट	२	तुलसी	२५७
गेंडो	१७०	जगलीअदरक	५६	तूण	२५२
गैरू	१२०	जगलीगोभी	१२३	तूवी	२५५
गोखरू	१२१	जमरी +	२१६	तूवो	२५५
गोखरूकांटी	१२३	जल	२१९	तूगरू	२५३
गोमेद	१६६	जामूय	२१७	तूर	१४५
गोलोचन	१२२	जयफल	२२३	तेजरात	२४१
घी	१२६	जावित्री	२२१	तल	२३२
घीयातोरू +	१६३	जिगणी	२२६	तोरू	१६१
चेचंडा +	१६६	जोगे	२२६	त्रायमाणा	२६३
चनेण +	१६८	भाऊ	२३२	दही	२६५
चनलाई	२३६	ढकारी	२३५	दाडम	२६६
चमेली	२२०	डाभ	१४९	दातूणी	२६६
चम्पो	२०१	तगर	२३८	दालचीनी	१७८
चव्य	२०३	तमाकू	२४५	दूध	२७०
चिणा	१६७	तमाखू	२४५	दूधी	२७१
चित्रक	२०५	तमाल	२४०	यमासो	२७१
चिरपोटण	१०१	तसतूंभे	६१	धोलो आकडो	१६
चिरमी	१७३	ताड	२४६	नकळीकपी	२१२
चीणे	२०८	तावो	२४४	नागी +	११६
धुको	२०६	नालमखाणा		नासणी	२३

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
निर्मलीकावीज	६२	विजैसार	३८	लालभाऊ	२३३
निसोत	२६४	भैसागूगल	१७५	लालतसतूबो	६५
पतीस	१७	भोडल	२१	शिलारस	२५६
पत्रज	२४१	मटर	११७	श्याजीरो	२२७
पन्नो	१७२	मतीरो	१२६	सहतूत	२६०
पवाडियो +	१६५	मरोडाफली	५६	साठो	१६१
पाखी	२१६	माखण	१६०	साल	३४
पारसपीगल	१७	मालकागणी	२३०	सांध	१११
पिएडखिजर	१६६	मिरचोई	१५५	सुरमो	१३
पीपलकोपेड	३६	मीठाइन्द्रजो	१३६	सूरजमुखी	४६
पीलीकंदीर	१०६	रतनजोत	२६८	सेलडी	६१
पेठो	१५२	राजाराड	११८	सेवती	२४३
पोई	७१	रामचिणा	१८	सोगी	२३४
फूटकाकडी	११०	रामतुलसी	२५६	सोमल	४४
बडीइलायची	८०	रामपत्री	२२०	हाडजांड	३६
बडीमालकागणी	२३१	लालपरड	७७	हिंगाठो	६२
बाहुईतुलसी	२५८	लालचन्दन	१६६	हिंगोरो	६२
बालझड़	२१४	लालाचित्रक	२०६	हीरवण+	१२८

मारवाड़ी शब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ।



॥ श्रीदधिमध्ये नमः ॥

# हिन्दीशब्दानुक्रमिका ।

—४३:५:४३—

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकरकरा	४१	अफीम	४०	आंवरा	४७
अमौआ	२८	अवरक (ख)	३२	आसापाला	३२
अखरोट	१	अमरवेल	४२	इन्द्रायण	६४
अगधिया	४	अमलतास	५३	इन्ली	२५
अगर	५	अम्बर	२४	इलायची (छोटी)	७६
अगस्तिया	४	अम्वाड़ा	५२	ईख	६१
अगोधु	६	अरणी (नी)	६	ईशरमूल	१०
अङ्गोल	८	अरण्ड	७६	ईसबगोल	६६
अजमोद (दा)	१०१	अरुई	८५	उतरन	३३
अंजन	१३	अरुसा	१५	ऊख	६१
अंजनवृत्त	१२	अलसी	१६	ऊटकटेरा	७३
अंजीर	१४	अशोक	३२	ऊमर	६२
अढहर	४५	आसगध	३५	एकवीर	७४
अहसा	१५	आहू	५४	एरण्ड	७६
अण्डखरबूजा	७८	आदा	५५	एलुआ	८१
अतीस	१७	आम	५०	एलुवा	१६४
अदरक (ख)	५५	आमड़ा	५२	आखराख्य	८२
अनआस	१६	आमला	४७	आंगा	२१
अनार	२६६	आलू	५७	अचनारभेद	३
अफयून	६०	आलू चुम्बारा	५८	अनड़ा (री)	१



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
कचरिया	१११	करौदी	१०४	कुन्द	१४०
कञ्जा	१०१	कलमीशाक	११३	कृष्णी	२६
कटकांजा	१०२	कलिहारी	११०	कुम्हड़ा	१५२
कटसरैया	१४३	कलोजी	२२९	कुत्ररदृष्ट	१४१
कुदेरी	६०	कवड़ी	६५	कुरैया	१३०
कठुमरा	७०	कसीस	१३३	कुलथी	१४६
कठुम्बर	७०	कसुम	१५३	कुलिजन	१४८
कड़वी तुर्ई	१६२	कसेरु	११६	कुष्ठवरी	१५१
कड़वी तांवी	२५५	कसादी	१३२	कूठ	१६०
कडू	८६	काकजघा	१२०	केरा	१९४
कदम	६३	काकडाशिगी	१०८	केला	९४
कदंब	६३	कागनी	८४	केवडा	१५६
कनेर	१०५	काजू	१२२	केसर	१३७
कपास	१०७	कायफर ( ल )	८८	कैथ	११८
कपूर	११३	कालाजीरा	२०७	कोरुग	१५५
कमरख	११५	काली कटभी	८९	कोंच	११६
कमल	६६	काँस	१३०	कोदों	१५६
कम्बीला	१००	काँसा	१३४	कोयला	११९
करंजवा	१०२	काँसी	१३४	कोमलिकादा	१६५
करञ्जुवा	१०१	किवाच +	६६	कोशम्भ ( म )	१५१
करियसेम	११७	कुकरौदा	१३६	कोइ	१३१
करिीर ( ल )	१०७	कुचला	२५०	कौडी	१३४
करेल	१०७	कुचिला	२५०	कौह	१३१
करेना	१२६	कुटकी	८७	खजूर	१६८
करादा	१०३	कुड़ा	१३८	खडिया	१६९
करादा	१०३			खम्भारी	१३१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
खस	७२	गोंदी	६०	चना	१०८
खिरनी	१६४	गोभी	१८३	घोषचीनी	२११
खीराककड़ी	११२	गोमेदमण्ड	१८५	चौलाई	२३९
खैर	१६६	गोरखइमली	१८६	छाछ	२३७
गदूल	६७	गोलोचन	१८८	छोटागोखरू	१८२
गनियारी	६	प्रिया	२५४	छोटीअरानी	७
गधक	१७१	प्रियातोरई	१६३	छोले	१६७
गना	६१	घी	१८२	जगलीअखरोट	२
गंभारी	१३१	घीगुवार	१६१	जगलीअदरक	५६
गंवार	१८७	घुइया	८५	जगलीजायफल	२७४
गाजर	१७३	घृत	१८६	जमालगोटा	२६७
गांहरफांजड़	७२	चने	१६७	जम्भीरीनींबू +	२१६
गांडा	६१	चन्दन	१६८	जल	२१६
गांठोरज	१३५	चन	२०३	जलकुम्भी	१४२
गिलोय	१७६	चमेली	२२०	जामुन	२१७
गुइ	१७७	चन्पा	२०१	जार्जफल	२२३
गुइर	२१५	चठ्य	२०३	जांभिली	२२१
गुलाअन्वास	१५४	चागेरी	२०४	जिङ्गिनी (खी)	२२५
गुलाब	२४२	चिचंडा	१६६	झांज	२३२
गुगर ( ल )	१७४	चित्रक	२०५	टकोरी	२३५
गुलार	६९	चिरमिटी	१७६	टंरा	२३६
गुंडा	१७०	चीता	२०५	डांभ	१४६
गेरू	१८०	चीना	२६८	डैरा	२३८
गैहू	१८४	चूकैकाशाक	२०६	डोलसमुद्र	२३६
गोखरू	१८१	चूना	२१०	तगर	२३८
गोदपटेर	७५			तमाखू	२३

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
तरबूज	१२९	दुर्गन्धितैर+	१६७	फुट	११०
तरबूज(र)	६०	बूध	२७०	गडीइजायची	८०
ताड	२४६	धनत्रहेडा	५३	बढीफटाई	९१
तांरा	२४४	धमासा	२७२	बढी मालकांगुनी	२३१
ताल	२४६	नकछिकनी	२१२	बनजीरा	२२८
तालमखाना	१५८	नामपाती	२३	बनतुलसो	२६८
तालीसपत्र	२४७	निमलीफल	६०	बलामाटा +	२१८
तिरिच्छ	२४८	निशान	२६४	बालछट	२१४
तिगिफल	२६६	नीलीकोयल	२०	त्रिजैसा	३८
तिल	२५१	नीलोफर	६७	बोकडी	११
तुन	२५२	पंजीरीकापात	११४	भुईं प्रामला	४६
तुम्बुरू	२५३	पनसोखा	२०७	भई चम्पा	२०२
तुरई	१६१	पना	१७२	भूताकुश	२१३
तुलसी	२५७	पमाड (र)	१६५	भेसागुल	१७५
तुवर	४५	पवाड +	१६५	मको	१२१
तून	२५२	पानी	२१६	महाय	१२१
तेजपात	२५१	पानीअ गला	४८	मकरन	१६०
तेदू	२४६	पारिसपीपल	३७	मटर	११७
तेल	२६२	पिण्डलजू	१६९	मदार	१२८
तेरई	१६१	पीपर ( ल )	३६	मरोडफली +	५६
त्रायमान ( ण )	२६३	पीलाफुटसरैया	१४४	मालकांगनी +	२३०
दही	२६५	पीलीरुनेर	१९६	मिरेचाई	१५५
दादमर्दन	३	पेठा	१६२	मुगलाईअड	२६८
दाभ	१४६	पोई	७१	मूसाकर्णी	४३
दालचीनी	१७८	फरफेंडु	६४	मूसाकानी	४३
दुद्धी	२७१				

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
मोरंगइलायची	८०	शिलारस	२५६	सेवती	२४३
रक्तकपास	१२८	शीतलचीनी	८३	सोंचली	४६
रामचना	१८	सखुया	३४	सोनचंपा	२०१
रामपत्री	२२२	सखिया	४४	सोमल	४४
रीठा	२७	सफेदआक	२९	सोहागा	२३४
लटजीरा	२१	सफेदकचनार	१२३	रयामतमाल +	२४०
लालअरुण	७७	सफेदकनेर	१०५	इडजुरी	३६
लालइन्द्रायन	६५	सफेदजीरा	२२६	इडजोर	३६
लालकनेर	१०५	सहतूत	२६०	हथिया	४
लालधीकुवार	१९२	सालईकागोंद	१४१	हालों	२००
लालचन्दन	१६६	सुरमा	१३	हिंगोट	६२
लालचीता	२०६	सुहागा	२३४	हुरहुर	४६
लालभाऊ	२३३	सैध	१११		

हिन्दी शब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ।



गुजरातीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

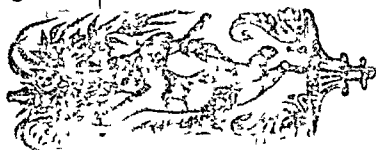
शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकरोड	१	अम्भेडा	५२	आवन्य	६०
अकलकरो	४१	अरडुशी	१५	आशुपालो	२२
अखोड	१	अरडशी	१५	आशोदरो	३३
अखोड	२	अरणी	६	आसन	३८
अगधियो	४	अरिठा +	२७	आसंध +	३५
अगधीओ (यो)	४	अकमूल	३०	इंगोरियो	६२
अगा (रु)	५	अळशो	१६	इन्दरजवनुंभाड +	१३८
अपेडी	१२०	अशेलियो	२००	इन्दरवाणी	६४
अघेडो	२१	आरुडो	२८	इंडलीतू	२१६
अतोत	८	आखसंध +	३१	उटकटो +	७३
अजगालुमात्रु	११४	आगियो	१४५	उथमुजीरुं	६६
अजमेद	१०	आहु	५५	उन्दरकनी	४३
अञ्जन	१२	आवळां +	४७	उम्बरो	६६
अञ्जीर	१४	आवली	२५	उभीभोरिंगणी	९१
अडदवेल्प	६७	आवां	५०	एकलकटो	७४
अतस	१७	आवोती	२०४	एखरो	१५८
अननस +	१६	आमळां	४७	एरडो	७६
अफीण	४०	आलु	५८	एरंड	७६
अभ्रक	२२	आलुखार	५८	एलवालुक	८१
अमरवेल	४२	प्रावळ ( ल )	६०	एळीयो	१६४

शब्द	स०	शब्द	स०	शब्द	स०
श्रोत्रराद	८२	कांग	८४	केवडो	१५६
श्रोत्रराद्य	८२	काग	१२०	केसर	१३७
कउचां +	६६	काजु	१२२	कोकम	१५७
कडवीतुम्बडी	२५५	काजू	१२२	कोकसंदा	१३६
कडवीतुरीया +	१६२	कांटाअशेलीयो	१४३	कोट	६८
कड्डु	८७	कांटेशेवती	२४३	कोठु	६८
कणभी	१०१	कायफल	८८	कोडी	६५
कतकफल	६२	कारेला +	१२६	कोदरा	१५६
कदम्ब	६३	काळोकडो	११६	कोळकंद +	१६०
कपास	१२७	काळवापुंगा	८६	कौच	६६
कपीलो	१००	काळीजीरी	२२८	खजूर	१६८
कपूर	११३	काळोवाळो +	७२	खजूरी	१६६
कमरक	१०५	काळोसुरमो	१३	खडी	१६५
कमल ( ल )	१६६	कांसडो	१३०	खाटखडुंवा	१८
करंज	१०१	कासु	१३४	खाटीभाजी	२०९
करमदां	१०३	कासुंदरो	१३२	खीराकाकडी	११२
करमदी	१०३	कुट	१५०	खेर	१६६
कळधी	१४६	कुठ	१५०	गंधक	१७१
कलम	६३	कुन्दकागडो	१४०	गधिलोखेर +	१६७
कळलावी	११८	कुम्भी	१४२	गरणी	२०
कलोजीजीरं +	२२६	कुलिजन	१४८	गरमाळो	५३
कासुंबो	१५३	कुवाडियो	१६५	गलका	१६३
कसेर	११६	कुचार	१६१	गळो	१७६
काकडी	१०६	केर	१०७	गाजर	१७३
काकडाशिमी	१०८	केरडी	१०७	गुलाब	२४२
काकच ( र )	१०८	केळ ( न्य )	६४	गुमार	१८७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
गूगळ	१७४	जांबु ( दू )	२१७	तांजलजो	२३६
गेरू	१८०	जायफल	२२३	ताड	२४६
गोखरू	१८१	जायत्री	२२१	तालीसपत्र	२४७
गोमेद	१८५	जामुस	२१५	तुम्बरू	२५३
गोरोचन	१८८	जीरा	२२६	तुर	४६
गोळ	१७७	जीरं	२२६	तुरियां	१६१
घळं	१८४	भेरकोचला +	२५०	तुलसी	२५७
घी	१८६	भीर्णीरसपाट	२१८	तेल	२६२
घणकवाव	८३	टंरुणखार	२३४	जांबु	२४४
चणोठी	१७६	टींरवा	२४६	प्रायमाण	२६३
चण्या	१६७	हुंगरीआवो	५१	प्रायमान	१६३
चमारदुपेती	६३	ढेढउमरौ	७०	प्रमासो	२७२
चम्पाकाश	१२३	दंती +	२३६	धोळीकणेर	१०५
चम्पो	२०१	दरभ	१४६	धोळोआकडो	२६
चम्बेली	२२०	दहि	२६५	धोळोसाजड +	३१
चवरू	२०३	दाडिम	२६६	नदीट्ट	२५०
चिना	२०५	दुध	२७०	नसांतर	२६४
चित्रो	६५	दुमीयुं	२५४	नहानाकमल	६७
चित्रो	२०५	दुपेली	२७१	नहानीअरणी	७
चिभडा	१११	तगर	२३८	नाकडीकणी	२१२
चीणो	२०८	तज	१७८	नानीएलची	७६
चुको +	२०६	तडवूच	१२६	निर्मली	६३
चुनो	२१०	तपोकु	२४५	निर्मळी	६३
चोपचीनी	२११	तमाल	२४०	नेपाळो	२६७
छाश	२३७	तमालपत्र	२४१	पडोला	१६६
छास	२३७	तल	२५१	पडोटी	२०७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
पाणी	२५६	भेसोगुगुल +	१७५	राळनुंनहानुं-	
पानआवळां	४८	भोआवळी +	४९	भाड' +	३४
पान्य	७५	भोपाथरी	१८३	रुखडो	१८६
पारसपीपळो +	३७	भोयचम्पो	२०२	लीलुपानुं +	१७२
पीपळो	३६	मटाणा	११७	वडिकाटो	२६
पीळाफुलनीरुखेर	१०६	मग्हाशिगी	५६	वनआवु	५६
पीलुडी	१२१	मवेडी	२२५	शवन ( न्य )	१३१
पीळोचम्पो	२०१	माखण	१६०	शाजीरं	२२७
पुगलवेत	११	मालकांगणी	२३०	शेतूत	२६०
पोथी	७१	मुदगर	११५	शेरडी	६१
पोपैया	७८	मोटीएलची	८०	शेलारस	२५६
पोयणा	६७	मोटीकाकडी	११०	शोमल	४४
पटाटा	५७	मोटीमालकांकणी	२३१	साळेडानोगुंद	१४१
वाघोटी	१३५	रतनजोत	२६८	मुखड्यचन्दन	१६८
वालडड	२१४	रतांजली	१६६	मूरजफुल	४६
वीया	३८	रातीकणेर	१०५	हमो	२४८
वेठीभोरिंगणी	६०	रातोएरडो	७७	हाडसांरुळ	३६
वेठोगोखरु	१८२	रातोचित्रक	०६	हाडसाखळ	३६
भुरांकोळां	१५०	रानतुलसी	२५८	हीरवणी	१२८
भूतकेशी	२१३	रायणी	१६४	हीराकणी	१३३

गुजरातीशब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ॥





॥ श्रीदधिमध्यै नमः ॥

## मरहठीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकरोड	१	अरवी	८५	उंर	६६
अकलकारा	४१	अर्जुनसाढडा	३१	ऊंस	६१
अक्रोड	१	अळशी (सी)	१६	एफवीर	७४
अखोड	०	अशोक	३२	एरड	७६
अंकोल	८	असाणा	३८	एलसी	७६
अंकोली	८	अहाळीव	२००	एलदोडे	८०
अगर	५	आघाडा	२१	एलवालुक	८१
अगरु	५	आपटा	३३	एळघाबोल	१६४
अगस्ता	४	आंवटवेल	१८	ककोळ	८३
अजमोद	१०	आंववती	२०४	कचरा	११६
अजमोदा	१०	आवा	५०	कडुकी +	८७
अंजीर	१४	आलुबुखार	६८	कडुभोपळा +	२५५
अडुळसा	१५	आलें	५५	रुडू	८८
अतिविष	१७	आंवलकाटी	४७	कडूजीरे +	२२८
अनानस	१९	आसन्ध	३६	कडूदोडकी	१६२
अफु (फू)	४०	इसधगोल	६६	करहेर	१०६
अभ्रक	२२	ईडनिवू	२१६	कपिला	१००
अमरवेल	४२	उटकटीरा	७३	रुमळ	६६
अंधा	५०	उतरणी	६३	रुमरख	११६
अंधाडा	५२	उदीरकानी	४३	करंज	१०१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
कावन्द +	१०३	काळाकृडा	१३६	कांटा	१४३
कावन्दी	१०३	काळावाळा +	७२	कालकादा	१६०
काईचेफुल	१५३	काळामुरमा	१३	कोळसा	९
कर्मर	११५	काळीकिन्ही	८६	कोळिजन	१४८
कलगी	१४५	काळघासुरमा +	१३	कोष्ठ	१५०
कळव	६३	काव	१८०	खजूरी	१६८
कळवीशाक	११६	कासविन्दा	१३२	खड्ड	१६५
कळलावी	११८	कासै	१३४	खिरणी	१६४
कळोनी	२०६	कुकुरबन्ध	१३६	खैर	१६६
कवडल	६५	कुकुरन्दा	१३६	खोखली	२६
कवडी	६५	कुचला	२५०	गजगा	१०२
कविड +	६८	कुटकी	१४७	गंधक	१७१
कसई	१३०	कृडा	१३८	गधीहिंषर	१६७
कसाड	१३०	कुन्द	१४०	गंधू	१८४
काकडाशिगी	१०८	कुम्भा	८८	गाजर	१७३
काकडी	१०९	कुंभी	८८	गाढा	१७०
कांग	८४	कुम्भी	१४२	गुग्गुळ	१७४
काचनी	१२३	कुलित्थ	१४६	गुंज	१७६
काजू	१२०	कुहिरी(ली)	६६	गुळचस	१५४
कापशी(सी)	१२७	केळ	६४	गुळवेल	१७६
कापुरली	११४	केवडा	१५६	गुलावशेषती +	२४२
कापुर	११३	केवणीचाशेंगा +	५६	गूळ	१७७
कायफळ	८८	केशर	१३७	गेरू	१८०
कारली	१२६	कोकम	१५७	गोकर्णी	२०
कारलें +	१०६	कोद्रव	१५६	गोखरू	१८१
काळावबर	७०	कोरफड	१६१	गोडकद्दू	

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
गोर्डाकुहिरी	१७	जायफल	२२३	ताम्र +	२४४
गोमेद	१८५	जासवन्द	२१५	तालिमखाना	१७८
गोरखचिच	१८६	जामुन्दी	२१५	नालीसपत्र	२४७
गोरोचन	१८८	जिरें +	२२६	तिवस	२४८
गोंवारी	१८७	जपाळ	२६७	तीळ +	२६१
घाउसेकी +	१२०	टंकारी	२३५	तुरी	४५
चणे	१०७	टखज	१२६	तुळस	२५७
चदन	१६८	टहाकळ	७	तूत	२६०
चन्द्रविकाशी	६७	टाकळा +	६	तूप	१८६
चमरुरा	८५	टाकळा	१६५	तूर	४७
चवरु	२०३	टाकळी +	६	तेल	२६२
चांपा	२०१	टाकळी	७	तांशीकांकडी	११२
चिच	२२५	टेंभुरणी	२४९	त्रायमाण	२६३
चित्रक	२०५	डालिच	२६९	थोरपेरण	६
चिभूड	१११	डिडा	२३६	थोरदन्ती +	२६८
चिरपोटाणी	२०७	डोरली	६१	थोरमालकांगोणी	२११
चिरफल	२५३	तगर	२३८	थोरवाळक	११०
जुका	२०६	तमालपत्र	२४१	दर्भ	१४६
जुना	२१८	तमालवृक्ष	२४०	दाहि	२६५
चोपचीनी	२११	तम्बारू	२५५	दादमर्दन	२६३
जयन्ती	२१८	तरण्ड	१६०	दावाचिनी	१७८
जटामांसी	२१४	तवसे	११२	दुधी	२७१
जाई	२२०	ताक	२३७	दूध +	२७०
जाफल	११२	ताड	२४६	दोडकी	१६१
जाभुल	२१७	तावुळजा +	२३६	धमांसा	२७२
जायपत्री	२२१	तानडीसिरनाडी	२३३	नन्दीवृक्ष	२५२

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
नाकशिकणी	२१२	भूमिगुण्ड	१७५	लपुराळेचाट्ट +	३४
नादरूक	१२५	भुगकोहळा +	१५२	लहानकमळ +	६७
नासपात ( ता )	२३	भोपनी	४३	लालरानआवा	५१
निवळी चेंव्हा +	६२	मयाळ +	७१	लिव	१२
निजोत्तर +	२६४	मालकागोणी	२३०	लोणी (नी)	१६०
नेपती	१०७	मोई	२२५	वाघाटीनेल +	१३५
पढाळ	१०६	मोक	२२५	वाटाणे	११७
पानरत्र	१७२	मोटीघोंसाली +	१६३	वृत्तकमळ ( ल )	६८
पाणी	२१९	मोटीतुळस	२७६	शहाजिरें	२२७
पाढरीकावली	१०१	मोथीतृण	७५	शिन्दी	१६८
पाढरीरुई	३९	रक्तएरंड	७७	शिलारस	२५६
पाथरी	१८३	रक्तकापशी	१२८	शिवण	१३१
पाणध्यावळी +	४८	रक्तचन्दन	१६६	शवती +	२४३
पारोसापिंपळ +	३७	रक्तचित्रक	२०६	सराटे	१८२
पिंपळ	३६	रानआलें	५६	सवागी	२३४
पिंपळीकरहेर	१०६	रानतुळस	२५८	सागरगोटा	१०२
पुंगळी	११	रामपत्री	२२२	सापसन	३०
पुंडखजूर	१६९	राळे	१८४	साळईचेचीक	१४१
पुई	७१	राले	२०६	सिरनाटी	३३०
पुपया	७८	रिंगणी	१२०	सूर्यफूलवल्ली	४६
फुड्या	११९	रिठा	११७	सामेल	४४
बाडवा	५५५	रीठा	२७	हदगा	४
बिबला	१३८	रुई	२८	हरक	१५६
भुर्चाफा	२०२	लेघुपेरण	१७	हरभरे	१६७
भुयआवळी	४६	लघुकरंवन्दी	१०४	हाडमन्धी	६२
भुनाइकुश	२१३	लघुकंबडळ +	६४	हिंणवेट	६२
		लघुदन्ती	३६३	हिराकस	१३३

श्री दयिगध्यै नमः ॥

## बंगाली शब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अगरुकाष्ठ	५	आगार	६	ईशपुल	१३
अगरुचन्दन	५	आतइच ( च )	१७	ईशलांगला	११८
अङ्गार	६	आदा	५५	ईशेगमूल	३०
अंजीर	१४	आँतमोडा	५६	इच्छे	१२६
अडर	४५	आपाइ	२१	उलदकम्पत	६८
अनानश	१६	आफिन्	४०	एकवीर	७४
अपराजिता	२०	आमडा	५२	एलवालुक	८१
अभ्र	२२	आमरुत्शारु	२०१	कचु	८५
अर्जुनगाछ	३१	आमला	४७	कटभी	८६
अशोक	३२	आम्	५०	कदकी	८७
अश्वगंधा	३५	आम्र	५०	कदफल	८८
अश्वत्थ	३६	आलकुशी	६६	कड़वड़वोनि	१८
आइरि	४५	आलु	५७	काडि	६५
आकन्द	२८	आलुचोखार	५८	कडू	८६
आकरकरा	४१	आलोकलता	४२	कण्टिकारी	६०
आरू	१६१	आबुटा	३३	कदम	६३
आरूरोट	१	इछु	६१	कदोधान	१५६
आफोड	८	इहुदी	६२	कमलागुंढि	१००
आखूरोट	१	इज्ञोट	६२	कपेत्गाछ	६१
आगमान्त	६	इन्द्रचिर्भटी +	६३	करंज	१०१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
करमुचा	१०१	कांता	१३४	खाग	१७०
करवी	१०५	कुङ्कुरशोंका	१३६	खिरनी	१६४
करील +	१०७	कुङ्कुम्	१३७	खेजुर	१६८
करेला	१२१	कुच	१७६	गंयक	१७१
कर्पूर	१३३	कुचिलागाछ	२५०	गनिनामि (री)	६
कलमीशाक	११६	कुड	१५०	गनिरि	६
कला	६४	कुडचि	१३८	गघ्	१८४
कलौजी	२२९	कुन्द	१४०	गाजा	१७३
कशाड	१३०	कुन्दरखोटी	१४१	गाडार	१७०
काकजत्रा	१२०	कुपडा	१५२	गामारगाछ	१३१
काकडुमुर	७०	कुलात्थ	१४६	गात्र	२४६
काकमाची	१२१	कुलेखाडा	१५८	गिरिमाटी	१८०
काकडाशृगी	१०८	कुश	१४६	गुग्गुल	१७४
काकला	८३	कुगमांड	१५२	गुड	१७७
काँकुड	१०९	कुसुमफुलेरगाछ	१५३	गुजंच	१७६
काञ्चन	१२३	कृष्णमलि	१५४	गुलदन्ती	२४३
काञ्चनार	१-३	कृष्णजीरा	२२७	गुलकुली	२२५
काँनिवान	८४	कथोडा	५१	गान्तर (री)	१८१
काँनीवान	२०८	केयागाछ	१५३	गाडान्तु	२१६
कापास	१२७	केशघास	१३०	गोमुक्त	१११
कापरंगा	११५	केशर	१३७	गोमंज	१८५
कामरूप	१२५	केशुर +	११६	गोरोजना	१८८
कालकासन्दा	१३२	कोकशिम	११७	गोलाप	१४०
कालकुलसी	२५७	काशमिमा	१४७	धि	१८६
कालदाना	१५५	खाडि +	१६५	घा	१८६
कालगुर्गा	१३	खरि	१६६	घृणगुपारी	१६१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
घोल	२३७	जवाफुल	२१५	तैतुल	२५
घोपालता	१६१	जाती	२२०	तैद	२४६
चइ	२०३	जामगाछ	२१७	तेउडी	२६४
चइगाछ	२०३	जायफल	२२३	तेजपात	२४१
चन्दन	१६८	जारुलगाछ	२४८	तेल, तैल	२६२
घाउलमुगरा	१५१	जीरा	२२६	तोपचिनि	२११
चाकन्दा	१६५	भाऊगाछ +	२३२	दइ	२६५
चाँपाफुल	२०१	भाँटीगाछ	१४३	दन्ती	२६६
चालमुगरा	१५१	ठरुकरमूचा	१०३	दारुचिनी	१७८
चिचिण्डा	१६६	टेपारी	२३५	दाडिमगाछ	२६६
चितेगाछ	२०५	टोकापाना	१४२	दाडिशारु	१८३
चुकावेतो	२०६	ठारुकांटा	७३	दादमर्दन	३
चुन	२१०	ढोलसमुद्र	२३६	दुव +	२७०
चून	२१०	तगरपादुका	२३८	दुगलभा	२७२
छागलवेदे	११	तमालगाछ +	२४०	दुर्गंधखदिर	१६७
छोटप्लाच	७६	तरमुज	१२६	धलाआकोड	८
छोटाखिनाइ	२७१	तामा	२४४	गुन्दुल	१८३
छोटगनिरि	७	तामाक	२४५	नटेशाक	२३६
छोटगनियारि (री)	७	तालगाछ	२४३	ननि	१६०
छोटगोखरी	१८२	तालीशपत्र	२४७	नासपाति	२३
छोलारगाछ +	१९७	तितलाउ	२५५	निर्मलीफल	९२
जटामासी	२१४	तित्पल्ला	१६३	नीलसुर्मा +	१३१
जयत्री	२२१	तिल	२५१	नेपालिधने	२६३
जयन्ती +	२१८	तुत	२६०	पन्न	१६६
जयपाल	२६७	तूनीगाछ	२५२	परशपिपुल	३७
जल	२१६	तूत	२६०	पाना	१४२

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
पानिआमला	४८	माखन्	१६०	वासक	१६
पान्ना	१७२	मुक्तजुरी	२६	विजयसार	३८
पिण्डिखेजुर	१६६	मुसव्वर	१६४	वेणाग्मूल	७२
पियाशाल	३८	मूपाकानी	४३	व्याकुड	६१
पीच	५४	मोचा	९४	व्यानारमूल	७२
पीतकरवीर	१०६	यज्ञदुपुर	६९	शशा	११०
पुंडशाक	७१	रक्तकार्पास	१०८	शसा	११२
पेयारा	१४	रक्तचन्दन	१९९	शालगाढ	३४
फुटीगाढ	११०	रक्तचिता	२०६	शिमूलक्षार	४४
वक	४	रक्तमाकाल	६५	शिलारस	२५६
वकफुलेग्गाढ	४	राखालनाडु	१४	शुंदीफुल	६७
वडएलाच	८०	राखालशशा	६४	शुयारआलु	१६०
वडपेयारा	१४	रान्जुनी	१०	श्वेतआकन्द	२६
वडलताफदकी	२३१	रामतुलसी	२५६	श्वेतशुर्मा	१३
वलालता	२६३	रीटा ( ठ )	२७	ससा	११२
वुद्र	१६७	लताफज	१००	सोंदाल	५३
वृहती	६१	लताफदकी	२३०	सेनालु	५३
भुइआमला	४६	लाड	२५४	सोहागा	२३४
भुइचाँपा	२०२	लालभाऊ	२३३	हाडभाग	३६
भेरेण्डा	७६	लालभेरेडा	७७	हाडोच	३९
मटर	११७	वनआम् (ख) रोट	२	हालिम	२००
मसिना	१६	वनआढा	५६	हिराकस	१३३
महाभरीवच	१४८	वनजीरे	२२८	हेंचतागाढ	२१३
महिषाक्षगुगुल	१७५	वनगलते	४६	होगला	७५
माकाल	६८	चातुगुलमी	२५८		



॥ श्रीदधिमध्यै नमः ॥

# पंजाबी शब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

—१३ :- \* : ४१—

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकरकरा	४१	असगन्ध	३५	कचडा	१०७
अखरोट	१	आक	२८	कचनार	१२३
अगुर +	५	आइ	५४	कटेरी	६०
अगधु	६	आम	५०	कटूमर	७०
अजमादा	१०	आमना	४७	कहवीतुंवी	२७५
अडड	४५	आलु	५७	कड़वातारी	१६२
असीस	१७	आलुबुखारा	५८	कणक	१८४
अदकर	५५	इजोट	६२	कदम	६३
अनार	२६६	इन्वजी +	२५	कदन्ध	६३
अपुठरुखा	२१	इलायची छोटी	७६	कनेर	१०५
अफीम	४०	इलायची बड़ी	८०	कपास	१२७
अभ्रक ख)	२०	ईसगोल	६६	कपूर	१११
अगरा	५०	उमजिनी	२३१	कमरख	११५
अमलातास	५३	ऊंटरुटाली	७३	कमल	१६६
अन्नडा	५२	एरका	७०	कमलफूल	८६
अन्नी		एलुवा	१६४	कमीला	१००
अरखड	७६	रुकी	१०६	करंजना	१०२
अरनी	८५	ककडसिंगी	१०८	करंजुआ	१०१
अलसी	१६	कंकोलागिरच	८३	कगमद	१०३
अशोक	३०	कंगनी	८४	करीर	१०७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
करैला	१२६	कुन्ढडा	१५२	खीरा	१५२
वरोदा	१०३	कुलथी	१०६	खैर	१६६
करौंदी	१०४	कुलाड	१०३	गंडा	६१
कर्मशाक	११६	कुमुभा	१५३	ग नयार	६
कनेसर	१०	केउडा	१५६	गन्धक	१७१
कलौजी	२२६	कैचगोच	१२१	गन्ना	६१
कसीस	१३०	केला	६४	गलो	१७६
कसेरु	११६	केला	६४	गाजर	१७३
काकजंजा	१२०	कसर	१३७	गिलो	१७६
कांगनी	८४	कथ	८८	गुग्गुल	१७४
कांदोवालासिरस	८६	कांदो	१७६	गुड	१७७
कायफल	८८	गायल	२०	गुडहल	२१५
कालाजीरा	२०७	कोला	६	गुंदवरोसा	१०१
कालाजीरा	२०८	कोशाम	५१	गुलाब	२४२
कालीसिन्धल	२०५	कोड	३१	गुलाजांस	१५४
कास	१३०	को	३१	गुलर	६६
कासमर्द	१३२	कोख +	६६	गरी	१००
कासी	१३४	कोड	८७	गोखरु	१८१
किमरी	१४	कोडी	६५	गोभो	१८३
किलक	१३०	कोलपुल्ल +	६८	गोमेद	१८५
कुशारगदल	१६१	खजूर	१६८	गोलोचन	१८८
कुजुरोदा	१३३	खटकन	२०४	घी	१८६
कुचले	२५०	खडीगिटी	१६५	घीयातोरी	१६३
कुट्ट	१५०	खन्भारी	१३१	चन्पा	२०१
कुडासक +	१३०	खसस	७२	चवरु	१०३
कुद	१००	खिरणी	१६५	चित्रा	२०५

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
चिम्भड़	१११	तरबूज	१२१	नकळिकनी	२१२
चिर्मटी	१७६	ताड़	२४६	नासपाती	२३
चीना	२०८	तावा	२४४	निगावार	४२
चूक	२०६	ताम्मा	२४४	निर्मली	९२
चूना	२१०	तालमखाना	१५८	निसांत	२६४
चोचनी	२११	तालीसपत्र	२४७	नीलकण्ठ	८६
चौलाई	२३६	तिरिन्झा+	२४८	नीलशुन्डी +	६७
छाह	२३७	तिल	२५१	नेपालीधनिया	२५३
छोले	१६७	तिली	२५१	पन्ना	१७२
जङ्गलीअदरक	५६	तुण	२६२	पवाड़	१६५
जमालगोटा	२६७	तुम्बर	२६३	पाणकन्दो	१६०
जम्भीरी	२१६	तुम्मा	६४	पातालयावला	४६
जलनिर्मली	६२	तुरियां	१६१	पानी	२१९
जाई	२२०	तुलसी	२५७	पानीआमला	४८
जाफल	१२३	तेंदू	२४९	पारिसपीपल	३७
जामुन	२१७	तेल	२६२	पिएडखजूर	१६६
जावित्री	२२१	तोरि	१६१	पीपल	३६
टींठ	१०७	ददनदाना	२६६	पीलीकनेर	१०६
टेरा	८	दही	२६५	पेठा	१५२
डिभ +	७५	दाभ	१४६	पोईसाग	७१
हेरा	८	दालचीनी	१७८	फगवाड़ा +	७०
तगर	२३८	दुर्गन्धिवैर	१६७	फरफुदु	६४
तमाकु	२४५	दूध	२७०	फुट	११०
तमाल	२४०	दूधी	२७१	ववर्दतुलसी	२५८
नमालपत्र	२४१	देवचला	२६३	वाँसा +	१५
तर	१०६	वमाह	२७२	वासा	१४३

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
विजयसार	३८	मुंगलाईअड	२६८	सुफेदचन्दन	१६८
त्रिल्लीलोटन	२१४	मूसाकनी +	४३	सुफेदजीरा	२२६
भसखडा	१८१	रेठा	२७	सुरमा	१३
मकोय +	१२१	लालअरगड +	७७	सुहागा	२३४
मखन	१६०	लालचन्दन	१६६	सोचल	४६
गटरछोटा	११७	लालुका	८१	हंडोला	७६
मठा	२३७	गहवृत	२६०	हथिया	४
ममोली	६०	शाल	३४	हदगा	४
ममोलीवडी	९१	मखुया	३४	हरहर	४५
मरोडफली	५९	सिम्मलखार	४४	हाडजोड	३६
मालकंगनी +	२३०	शिलाग्स	२५६	हालों +	२००
मीठीतोंवी	२५४	सुफेदआक	२६	हुलहुल	४६

पञ्जाबीशब्दानुक्रमणिका समाप्त हुई ।

श्री दधिमथ्यै नमः ॥

## तैलङ्गीशब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

— ० —

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकरकरमु	४१	अरडोंह	१३५	एलरुचेविवेरुडु	४३
अक्षोत्तमु	१	अलसिवित्तु	१६	कंनु	१३१
अगरु	५	अल्लम्	५५	कट्टुरोगनि	८७
अगिसे	४	अल्लिआकु	१२	कनुमु	९३
अग्निवेदपाकु	१४५	अवसि	४	कन्दुलु	४५
अग्निवेदपाकु *	१७०	अवगुडगण्डु	६५	काम्पल्लु	१००
अंकोलमु	८	अशोकमु	३२	करपुप्	५६
अजमोदा	१०	अकुपत्रो	१४१	करुअल्ल	५६
अञ्जनमु	१३	आभिदचरुडु +	७६	कर्कटकरुम्बुडी	१०८
अडविजिलकर	२२८	आरेचरुडु	१३	कर्पूरमु	११३
अडवीमुलंगी	१३६	आलुगोकारा	५८	कर्पूचल्लि	११४
अडोंह	१३५	इट्टिकोति	११६	कलवः	१९१
अडुसरमु	१५	इसगमोलवित्तु	६६	कलिव	१०४
अतिवस	१७	ईश्वरवेरु X	३०	कल्लगानगु	२६३
अदित्यालु	२००	उट्टि	६	कल्लारनु	६७
अनासपडू	१६	उत्तरेनु	२१	कवंची	५६
अतरुदामर	१४२	उलालु	१४६	कसिवेद	१३२
अभ्ररुमु	२२	उसरिकाय	४७	काकरा +	१२६
अंचालमु	५२	ऊटलंगड्डा	५७	काचि	१२१
अगटाचरुडु	९४	एगयल्लेर	१८१	कानुगचरुडु	२४०

\* यह न.म गण्डनी का नहीं है X ईश्वरवेरुके स्थान में दूग्गोल चानिये ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
कासीसमु	१३०	गिलिगिरिन्त +	२२५	चेतिवीरा	१६२
कुक्कआवालु +	४६	गुग्गुलुमु	१७४	चेरकु	६१
कुक्कतुळसि +	२५८	गुडेबिगुल	७४	जटामांसमु	२१४
कुंकुडुचेरुदु	२७	गोग्राणि	३७	जम्मुगड्डे +	७५
कुंकुमपूवु	१३७	गोगु	६८	जाजि	२२०
कुन्दरुष्कमु +	१४१	गोधूमलु	१८४	जाजिकाय	२३३
कुपिटाकु	२६	गोमेदकम्	१८५	जाजीपतिरि	२२१
कुरलु	८४	गोरचिकुडु +	१८७	जानु	१८०
कुशमु	१४६	गोरोजनमु	१८८	जिलकरि	२२६
कृतखुडमु	८१	गोलिमिडि +	१५८	जिल्लेडु	२८
कूरनिञ्जि	७	ग्रन्थितगरमु	२३८	तक्किलीचदुडु	१६
कोडिशचदुदु +	१३८	चंगल्वकोष्टमु	१५०	तकोलालु	८३
कोरुडकलवा	२००	चंडू	१६६	तगिरिस	१६५
कोडगोगुनु	१	चन्द्रमल्लि	१५४	तगेडू	६०
कोडगोंगु	६८	चल्ला	२३७	तमती	११५
कोडमामिडि	५१	चव्यम्	२०३	ताडु +	२४६
कोल्लिवित्तुलु	१५५	चामगड्डा	८५	तामर	६६
खर्जूरपण्डु	१६६	चामन्तिपुवु	२४३	ताळीसपत्रम् +	२४७
खर्जूरमु	१६८	चित्रमूलमु	२०५	तिप्पतीगे	१७६
गन्धकाया +	१०१	चिन्तपण्डु	२५	तुमिके	२४६
गज्जरगड्डा	१७३	चिंता	२५	तुम्पुरलु	२५३
गधकमु	१७१	चिन्नएळकलु	७६	तुरुष्कमु	२५६
गनेरु	१०५	चिरी	२३६	तुळसी +	२५७
गाडिदगड्डपर	११	चिरुकर	२३६	तेगडु	८३
गौरचदुडु	६२	चिल्लगिंज	६२	तेल्लजिल्लेडु	२६
गिनिया	८६	चेनिआलुगुमु	२५५	तेल्लनेगडु	२६४

श्री दधिमध्यै नमः ॥

# द्राविडी शब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अक्षरकारं	४१	आहिलकट्टे	५	कटुकरोहिणि +	१८७
अक्रोद्ध	१	आकाशतामरै	१४२	कडुकोडि	१०१
अंकोलम्	८	आइतीडापाळै +	११	कडलै	१६७
अंजिनकल्	१३	आडादोडै	१५	कत्ताळै	१६१
अतिविष	१७	आत्तुम्मट्टि	६४	कंनकत्तारि	६०
अत्ति - -	६६	आत्तुम्मिडिकाय्	६४	कमत्तं	६६
अनाशप्पशम	१६	आत्ति	४	करप्पुकाकट्टानविरै	२०
अन्नभेदि	१३३	आमणक	७६	करप्पुमर्दाणि	१४३
अफिनि	४०	आलुवोकारा	५८	करंत्त	६१
अभ्रकं	२२	आविरै	६०	करुशीराम्	२२७
अमुकराकिड्ड	३५	आशामदां	१०	कर्कटिकशृङ्गी	१०८
अमांपच्चअरिशि +	२७१	इंजि	५५	कर्पूरं	११३
अरशम्मरं	३६	इरकुली	२१३	कर्पूरचालि	११४
अलिविरै	२००	इलै	२४५	कल्याणपूशिणि +	१५२
अलिसिविरै +	१६	इस्कोन्विरै	६६	कशप्पुपीरकं	१६२
अल्लितामरै	६७	ईश्वामूलि +	३०	कशप्पुशोरक्काइ	२५५
अशोकम्	३२	उत्तामाणि +	६३	कसनएलै	१२
अहत्ति	४	एण्यै	२६२	कमकुट्टि +	१६६
अइरुकट्टई	५	एट्ट +	२५१	काक्कट्टानविरै +	१५५
अइरुकट्टै	५	कटालिकाय्	१३५	काजोरिवेर	६७

शब्द	स०	शब्द	स०	शब्द	स०
काट्टमा	५२	जातिपुष्पम्	२२०	नारकरडै +	१३६
काट्टुशीरहम्	२२८	जादिकाइ	२२३	नावल +	२१७
काण्डि	२३०	जापत्रि	२२१	निरुमेत्तनेरुप्पु +	१४५
कारट्टकिलंग	१७३	तण्णीर	२१६	नीरमुल्ली	१५८
कावि	१८०	तमते	११५	नेरवाल	२६७
काशामरं	१२	तरपूशि	१२६	नेरिजिल	१८१
कीडाम्नोत्रि +	४६	तळताळ	६	नेरुप्पु *	१७०
कुंगिलियम्	३४	तळदल	७	नेल्लिकाय्	४७
कुदकूमप्पू	१३७	तळदलेल	७	नेवलि	२६७
कुन्द	१४०	ताम्र	२४४	नेय	१८६
कुन्दमणि	१७६	ताळई	१५६	पनम्मरं +	२४६
कुपैमेनि +	२६६	ताळं +	१५६	पप्पळि +	७८
कुळुळु	१४६	तालीसपत्रै	२४७	परजिशकै	२११
कुशं	१४६	ताहाराचाङ्गि +	१६५	पाल	२७०
कोईलेणु	११६	तुङ्गगडा +	११६	पाला	३८
कोट्टन	४२	तुळसि +	२५७	पालैमरम् +	१६४
कोलेमरम्	१४३	तेत्ताकोट्टै	६२	पाहल +	१२६
गन्धकं	१७५	तैर	२६५	परायळ	८०
गुग्गुल	१७४	तौवरै	१४५	पीकै	१६१
गोट्टि	१८४	ननलुंडा	६२	पुङ्गम्मर	२४०
गोरोजन	१८८	नरिवंगायं +	१६०	पुडियारै	२०४
चव्य	२०३	नादट्टुअत्रोट्टुकोट्टै	२	पुळ	२५
चित्रमूलम्	२०५	नायकदुह	४६	पुहै	२४५
चित्रयेळं	७६	नायतुलाशि	२५८	पूनेकांजोरि	६६
जटामासं	२१४	नायुरवि	२१	पूरस	३७

\* यह गट्टी का नाम नहीं है ।



श्री दधिमथ्यै नमः ॥

# द्राविडी शब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अंकरकारं	४१	आहिलकट्टे	५	कदुकरोहिणि +	६७
अंक्रोट्ट	१	आकाशतामरै	१४२	कडकोडि	१०१
अंकोलम्	८	आइतीडापाळै +	११	कडलै	१६७
अंजनकल्	१३	आडादोडै	१५	कत्ताळै	१६१
अतिविप	१७	आत्तुम्मट्टि	६१	कनकत्तारि	१६०
अत्ति - -	६६	आत्तुम्मिडिकाय्	६४	कमलं	६६
अनाशप्पशम	१६	आत्ति	४	करप्पुकाकट्टानविरै	२०
अन्नभेदि	१३३	आमणक	७६	करप्पुमर्दाणि	१४३
आफिनि	४०	आलुनोकारा	५८	करंन	६१
अभ्रकं	२२	आविरै	६०	करंशीराम्	१२७
अमुकरांकिडङ्ग	३५	आशामदां	१०	कर्काटिकशृङ्गी	१०८
अमांपच्चअरिशि +	२७१	ईजि	५५	कर्पूरं	११३
अरशम्मरं	३६	इरकुली	२१३	कर्पूरचल्लि	११४
अलिविरै	२००	इलै	२४५	कल्याणपूशिणि +	१५२
अलिसिविरै +	१६	इस्कोल्लविरै	६६	कशप्पुपीरकं	१६२
अल्लितामरै	६७	ईश्वरमूलि +	३०	कशप्पुशोरक्काइ	२५५
अशोकम्	३२	उत्तामायि +	६३	कसनएलै	१२
अहत्ति	४	एण्यै	२६२	कसकुफट्टि +	१६६
अहरुकट्टई	५	एऱ् +	२५१	काकट्टानविरै +	१५५
अहरुकट्टे	५	कटाल्लिकाय्	१३५	कांजोरिवेर	६७

शब्द	स०	शब्द	स०	शब्द	स०
काट्टमा	५२	जातिपुष्पम्	२२०	नारकरहै +	१३६
काट्टुशीरहम्	२२८	जादिकाइ	२२३	नावल +	२१७
काण	२३०	जापत्रि	२२१	निरुमेलनेरुपु +	१४५
कारट्टकिलंग	१७३	तरणीर	२१६	नीरमुल्ली	१५८
कावि	१८०	तमैत	११५	नेरवाल	२६७
काशामरं	१२	तरपूशि	१२६	नेरिजिल	१८१
कीडाम्नोत्रि +	४६	तळताळ	६	नेरुपु *	१७०
कुंगिलियम्	३४	तळदल	७	नेल्लिकाय	४७
कुडकुम्पू	१३७	तळदलेल	७	नेवलि	२६७
कुन्द	१४०	ताम्र	२४४	नेय	१८६
कुन्दमणि	१७६	ताळई	१५६	पनम्मरं +	२४६
कुपैमेनि +	२६६	ताळं +	१५६	पप्पळि +	७८
कुळु	१४६	तालीसपत्रै	२४७	परकिशकै	२११
कुशं	१४६	तादाराघाडि +	१६५	पाल	२७०
कोइलैगु	११६	तुङ्गगडा +	११६	पाला	३८
कोट्टन	४८	तुळसि +	२५७	पालैमरम् +	१६४
कोलमरम्	४३	तेचाकोट्टै	६२	पाहल +	१२६
गन्धकं	१७५	तैर	२६५	पारायळ	८०
गुग्गुल	१७४	तौवैर	१४५	पीकै	१६१
गोट्टि	१८४	ननजुडा	६२	पुङ्गुम्मर	२४०
गोरोजन	१८८	नरिवगायं +	१६०	पुडियारै	२०४
चव्यं	२०३	नाट्टुअकोडुकोट्टै	२	पुळ	२५
चित्रमूलम्	२०५	नायकडुह	४६	पुडै	२४५
चित्रयेळं	७६	नायतुलशि	२५८	पूनैकांजोरि	६६
जटामासं	२१४	नायुरवि	२१	पूररस	३७

\* यह गडिका नाम नहीं है ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
पेयन्ति	७०	लवगपत्रि (त्र) +	२४१	वेल्ल	१७७
पेयानारै	१३०	वगलं	१३४	वेल्लमट्टि +	३१
पेयमिराट्टि +	१६३	वट्टिवेर	७२	शंगल्वकोट्टं	१५०
पेरुं	३६	वणगारं	२३४	शन्दनकट्टे	१६८
पेगमणक	७७	वणै	१२०	शप्पातिप्पु	२१५
पेरीच्चपळं	१६६	वन्दुकोल्लि	३	शम्बा	२०१
पोनानकोट्टे	२७	वन्दिमरम्	६	शम्बु	२४४
वळाकल	१६५	वलुवैरी	५६	शरकोन्नै	६३
वद्रात्ति	१५४	वळरि	११२	शव्यं	२०३
वुडमकाई	११०	वल्लरैकिलगु +	५७	शहप्पुतिप्पु	१२८
मरुधंपट्टे	८८	वल्लेरिक	२६	शामन्तिप्पु	२४३
महिपात्तिगुगुलं	१७५	वल्लैपापाणं +	४४	शिमेत्रगति	३
माङ्गाय	५०	वशालक्कीरे	७१	शिरक्कीरे	२३६
मादलं +	२६६	वालैमरम्	६४	शिविते +	२६४
मुत्तिरिक्कोट्टे	१२२	विलामरं +	६८	शिराम्	२२६
मुन्नै	११६	विळीमत्ते	-	शुन्नाम्ब	२१०
मोरु (र)	२३७	त्तिप्पुमट्टि	२५०	शेप्पुनेरिजिल	१८२
येरिक्क	२८	वैगडमरम्	३८	शेप्पुशन्दनं +	१६६
येलिमिच्चंपलं	२१३	वैमरम्	७४	शयमकलैग	८५
रोजापुष्प	२४२	वैपाल	१३८	सीदलकुडि	१७६
लंत्तैगपट्टे	१७८	वैल्लै	१६०		

द्राविडीशब्दानुक्रमणिका-समाप्त-हुई ॥



॥ श्रीदधिमध्ये नमः ॥

## कर्णाटकी शब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकलकरें	४१	अलसी	१६	कटुकरोहिनि	८७
अगर	५	अल्लिवीज	२००	कडले	१६७
अगसे	४	अवमुडहरणु +	६५	काण्णिगदगिड	१०५
अगचे	४	अशोक	३२	कब्बु	६१
अगिचे	४	आकाशतामरे	१४२	कमरक	११५
अंकुले	८	आडुसंगे	१५	कमारिकेहखिनगिड	१०३
अंकोले	८	आलु	५७	काम्पिल्ल	१००
अंजनदकल्लु	१२	इडचोल	१४१	कम्पुमत्ते	३१
अंजगी	१४	इसमकोलु	६६	करिजीरिगे	२२७
अइवीईरुल्लि	१६०	ईश्वरीनेरु	३०	करीतेगडे	२६४
अति	६६	उत्तरणे	२१	कर्नाटकशृंगी	१०८
अतिवजे +	१७	उत्राणि	१२१	कर्पूर	११३
अनानसूहरणु +	१९	एरडनेदंती	२६८	कल्लंगाडि	१२६
अन्नभेदि	१३३	एल्लु	२५१	कल्लेकायिगिड	१०४
आफिनि	४०	ककेमर	५३	कवर्गी	१५६
अभ्रक	२२	कगलिमर	१६६	कहिरे +	१६२
अमटेगिड	५२	कंचवाल +	१२३	कहीरे +	१६३
अमरवल्लि	४२	कचु	१३४	काडत्ति	७६
अमृतवल्लि	१७०	कटलेव छि	२०	काडुअल्ल +	५६
अग्गमर	३६	कटुकरोहिणि	८७	काडुजीरगे	२२८

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
कावि	१८०	गारंगिड	६२	तम्बडगिडा	१०१
किरीयाळकि	७६	गुग्गल	१७४	ताम्र	१०२
किरुनेल्लि +	४६	गुरिगिजे	१७६	ताळ	१०३
किरुसिवन्नि	८८	गुलावि	२४२	ताळीसपत्र	१०४
कीरेसोप्पु	२३६	गुल्ला	६१	तावरेहुच्चु	१०५
कुसुटेकायि	२७	गेज्जगे	१०६	तुप्पकरै	१०६
कुंकुमदहु	१३७	गोधि	१८४	तुप्पा	१०७
कुरुटिगेयभेद	११	गेरपप्पु	१२२	तुम्बर	२४१
कुश	१४६	गोरोजन +	१८८	तुम्बुरु +	२४२
केम्पुगोरंटे	१४३	ग्रन्थितगर +	१३८	तुळसि	२४३
केम्पुहत्ति	१२८	चगलकृष्ट	१५०	तोगरसे	२४४
केम्पुहलैंगिड	७७	चव्य	२०३	तोगरि	४७
कैसोरे	२५५	चिक्कनसुगुन्नि	१६	धामरांज +	२४५
कैहीरे	१६२	चित्रमूल	२०५	दालाम्बि	२४६
कोडिशेयमरनु +	१३८	चिल्लदवीजा	६२	दासवाळदाहुच्चु	२४७
कोरटिगेगिड +	६३	चुरुचुरुके	१३२	नंदवटे	२४८
कोलमल्लिगे	१४०	चुरुचुरुकेभेद	२७२	नयादलेहुच्चु +	६७
कोळावळिके +	१५८	जटामासी	२१४	नवणे	८४
खर्जरदप्पु +	१६९	जाजि	२२०	नाटश्रक्रोडु	२
गंगुंगे	२३०	जाजिकाय	२२३	नायितुलसि	२४९
गज्जरी	१७३	जापात्रि	२२१	नायिसासवे	४६
गज्जग	१०१	जीरिगे	२२६	निम्बेहपुण	२४६
गणिकेसोप्पु	१२१	दोडुपत्रि +	११४	निल्लि	७
गंडुविके	७४	तक्कि त	७	नीरामेचल्लि	२६३
गं रक	१७१	तकोल	८३	नीरु	२४६
गन्नाचीज +	१५५	तगरंगिडा	१९५	नेगुल्लु	१८१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
नेज्जुलुमुळ्ळु	१६२	मज्जिगे	२३७	श्यामगेडे	८५
नेनेअकिसोप्पु १-	२७१	माविनफ्फावि	५०	श्रीगंध	१६८
नेपालदवीजा	२६७	मुळ्ळुचिरगुळ्ळु १-	६०	संजमज्जिगे	१५४
नेरळे	२१७	मोसरु	२६५	सम्पिके	२०१
नेल्लिकायि	४७	यकदगिडु	२८	सम्पिगे	२०१
परंगिचके	२११	येरणे	२६२	सुणणद् १-	२१०
परगिपपाया १-	७८	येलुवासंदि	१२०	सुरसुरके	८१
पिलांत	१२५	रक्तचंदन	१९९	सेकिनगट्टे	११९
पिचल	१२५	लंगपट्टे	१७८	सौते	११२
पुळ्ळंपुळुचे	२०४	लवंगपत्र (जे) १-	२४१	दुर्लुगिड	७६
पलावु	१६५	लामंच	७२	दुसिशांठि	७५
पसले	७१	लिवटोलि	१२	हांगला	१२६
पालेमर	६४	लोळसरै १-	१९१	हार्कि	१५६
पिळीपापाण	४४	वटाटे	५७	हालु	२७०
पिळीयकदगिड+	२६	पन्निमर	६	हालुमाट्टे	२५६
पुदिकुंचलकायि १-	१५२	पल्लि	७	हालेमर	१६४
पूरग	३७	पल्लिहरुहे	४३	हावुमेकेकायि	१६४
पूरगा	३७	पालेमर	२४६	हिरीमदुवु	३५
पेट्टाचरे	६८	पिलीमसे	३४	हिरीयालाकि १-	१८०
पेट्टेगोनुर १-	१	विपमुष्टिवीज	२५०	हीरे	१६१
पेट्टेमावु *	५१	वेरणेवेदुरु १-	१८	हुणिशेहरणु	१२५
वेरणे +	१६०	वोमा	१०	हुलि १-	१४६
वेल्लिगार	२३४	शंखपापाण	४४	हुलगति	२४८
वेड्या	१७७	शामन्तिहुवु	२४३	हेमोलि	१८
व्यालदमरा १-	१२८	शिमैअगसे	३	होगेसोप्पु	२४५
मंगरवळि	३६	शिर्काजोरि	६७	होगेमरा	२४०
				होलेमर	१३८

\* यह कर्नाटक का शब्द है मूल से द्राविडी के कोष्ठ में छप गया है।

शब्द	मं०	शब्द	मं०	शब्द	मं०
कावि	१८०	गारंगिड	६२	तग्चडगिडा	१७५
किरीयाळकि	७६	गुगल	१७४	ताम्र	२१५
किरुनेलि +	४६	गुरिगिजे	१७६	ताळ	१
किरुसिवनि	८८	गुलावि	२४२	ताळीसपत्र	५१
कीरेसोप्पु	२३६	गुला	६१	तावरेहुवु	१
कुफटेकायि	२७	गेजगे	१०१	तुप्पकरै	२०
कुंकुमदहु	१३७	गोधि	१८४	तुप्पा	१०
कुरुटिगेयभेद	११	गेरपप्पु	१२२	तुम्बर	२१
कुश	१४६	गोरोजन +	१८८	तुम्बुरु +	२५
केम्पुगोरंटे	१४३	ग्रन्थितगर +	१३८	तुळसि	२५
केम्पुहत्ति	१२८	चगलशृष्ट	१५०	तोगरसे	२१
केम्पुहलैगिड	७७	चव्य	२०३	तोगारि	४
कैसोरे	२५५	चिक्कनसुगुनि	६६	थामरांज +	२१
कैहीरे	१६२	चित्रमूल	२०५	दालाम्बि	२६
कोडिशेयमरनु +	१३८	चिल्लदवीजा	६२	दासवाळदाहुवु	२१
कोरटिगेगिड +	६३	चुरुचुरुके	१३२	नंदवट्टे	२५
कोलमल्लिगे	१४०	चुरुचुरुकेभेद	२७२	नयादलोहुवु +	६१
कोळावाळिके +	१५८	जटामासी	२१४	नवणे	२६
खर्जरदप्पु +	१६९	जाजि	२२०	नाटश्रक्रोडु	२६
गंगुंगे	२३०	जाजिकाय	२२३	नायितुलसि	२५
गज्जरी	१७३	जापात्रि	२२१	जायिसासवे	४६
गज्जुग	१०१	जांरिगे	२२६	निम्बेइयपु	२१६
गणिकेसोप्पु	१२१	डोडुपत्रि +	११४	निळि	२१६
गंडुविके	७४	तक्कि त	७	नीरामेवलि	
गं रक	१७१	तकोल			
गन्नावीज +	१५५	तगरेगिड			

शब्द	सं	शब्द	सं	शब्द	सं
जुमुरद	१७२	फरंजमुरंक	२५६	शैतरज	२०५
जोज	१	फैहम् -	६	संजसवोयाह	१६५
जोजवरी	२	बकलेयमानिया	२३६	संदलेअस्फर	१६८
जोजबोवा	२२३	बजरेकुतूना	६६	सदलेअहमर	१६६
जोजेहिन्दी	१	बज्रलकतान	१६	समन	१८६
जयज़र	१७३	बज्रुलकरफस	१०	सम्मुलफार	४४
हिफ्ली	१०५	बन्दक -	२७	साज़	४५
तमर	१६८	बिचीखेहिन्दी	१२६	सिन्न	१६४
तमरहिन्दी	१५	बिसवासाह -	२२१	सिममिम	२५१
तम्बाकू	२४५	बुर्र	१८४	सम्मुलजलतीव	२१४
तर्फा	२३२	मआसफर	१५३	हब्बतुस्सोदा	२२९
तर्फाअहमर	२३३	मरबीज़ -	२३७	हब्बुलक़ुन्त	१४६
तलक़	२२	मा	२१६	हब्बुलनील	१५५
तीन	१४	माज़रियून	२०	हब्बुलबकर -	११७
तीनेवरी	७०	मिसमिकार	६०	हब्बुलमुलुक -	२६६
तुरबुद	२६४	मुक़ल	१७४	हब्बुस्सलातीन	२६७
तुतश्यामी	२६०	मोज़	९४	हब्बेक़िलक़िल	२३०
दंद	२६७	यासमीन	२२०	हम्माज	२०६
दारसीनी	१७८	रुम्मान	२६६	हसक	१८१
दुरबन	२०८	रिजलुलजराद	२४१	हिजल	६४
दुरबन	८४	लबनुलहामिज़ +	२६५	हिजलेअहमर	६५
नवतेसिबारा	१६१	लपन	२७०	हिताह	१८४
नसरीन	२४३	लिसानुलध-	१३८	हिम्मस	१६७
नीलुफर	६७	साफीरुलमुर		हफारीकून -	१५
नाहास	२४४	वर्द	२४२	हैफम्	६



# अरबी शब्दों की अकारादि अनुक्रमणिका ।

—\*—\*—\*—\*—\*—\*

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अकतमकत	१०९	ऊदहिन्दी	५	कुत्न-।	१२७
अंकोल	८	ऊदलवर्क ।-	८८	कुंदर	१४१
अटकूमाह	२१	एनुहीक	१७६	कुस्त	१५०
अनवुस्सालव	१२१	फदअसवद	१७७	कोमाफीतूस	१३६
अफतीमून	४२	कबरीत	१७१	कोहल	१३
अफियून	४०	कबावह	८३	खयारशम्बर	५३
अम्बज	५०	कमून	२२६	खियारशम्बर	५३
अम्बर	२४	कमूनेफिरमानी	२२७	खिरवाअवियज़	७६
अलकम	६४	कुरा	२५४	खिरवाअहमर	७७
असारून	२३८	करासिया	८१	खुशवुस्सीनी	२११
अस्लोलुब्नी	२५६	कलफ़ास	८५	खोख	५४
आकरकरहा	४१	कसद	११२	खोलजानेकस्वी-।	१४८
आवनूस	२४९	कस्वुस्सुखकर-।	६१	जजबीलरतव	५५
आमलज	४७	क़ाक़लहाकियार	८०	ज़वद	१६०
इज्जास	५८	क़ाक़लहसिग़ार	७६	जबदुलवूरक	२३४
इम्बरआजामी	७२	कातलुलकलव	२५०	जरजीर	२००
इसमद	१३	काफूर	११३	ज़रनव-।	१४७
इस्कील	१६०	किम्बील	१००	ज़ाजेअसफर	१३१
उशर	२८	किलस	२१०	ज़ाफ़रान	१३७
उश्तुरगार-।	७३	किस्सा	१०९	ज़िरीस	१७०

शब्द	सं	शब्द	सं	शब्द	सं
जुमुरद	१७२	फरंजमुशक	२५६	शैतरज	२०५
जोज	१	फैहम् -1-	६	संजसवोयाह	१६५
जोजवरी	२	षकलेयमानिया	२३६	संदलेअस्फर	१६८
जोजबोवा	२२३	षजरेकुतूना	६६	सदलेअहमर	१६६
जोजेहिन्दी	१	यज्जलकतान	१६	समन	१८६
जघजर	१७३	यज्जुलकरफस	१०	सग्मुलफार	४४
डिफ्ली	१०५	यन्दक -1-	२७	साज	४५
तमर	१६८	विचीखेहिन्दी	१२६	सिब्र	१६४
तमरहिन्दी	१५	विसवासाह -1-	२२१	सिमभिम	२५१
तम्बाकू	२४५	चुर	१८४	घुम्बुलचलतीव	२१४
तर्फी	२३२	मआसफर	१५३	हब्बतुस्सोदा	२२९
तर्फीअहमर	२३३	मरयीज -1-	२३७	हब्बुलकुजत	१४६
तलक	२२	मा	२१६	हब्बुलनील	१५५
तीन	१४	माजरियून	२०	हब्बुलबकर -1-	११७
तीनेवरी	७०	मिसामिकार	३०	हब्बुलमुलुक -1-	२६६
तुरबुद	२६४	मुकल	१७४	हब्बुस्सलातीन	२६७
तूतश्यामी	२६०	मोज	९४	हब्बेकिलाकिल	३३०
दद	२६७	यासमीन	२२०	हम्माज	२०६
दारसीनी	१७८	रुम्मान	२६६	हसक	१८१
दुखन्	२०८	रिजलुलजरद	२४१	हिजल	६४
दुखन्	८४	लषनुलहामिज +	२६५	हिजलेअहमर	६५
नवतेसिबारा	१६१	लषन	२७०	हिताह	१८४
नसरीन	२४३	लिसानुलध-	१६८	हिम्पस	१६७
नीलूफर	६७	साफीरुलमुर		हफारीकून -1-	१५
नोहास	२४४	वर्द	२४२	हैफम्	६

# INDEX TO LATIN WORDS.

247	Abies Webbiana +	80	Amomum xanthoides +
68	Abroma augusta	55	Amomum zingiber
176	Abrus precatorius	54	Amygdalus persica
166	Acacia Catechu +	122	Anacardium occidentale +
167	Acacia Farnesiana	41	Anacyclus Pyrethrum
26	Acalypha indica	19	Ananas sativa
26	Acalypha spicata	72	Andropogon muricatus
21	Achyranthes aspera +	72	Andropogon squarosus +
17	Aconitum heterophyllum +	114	Anisochilus carnosus
186	Adansonia digitata	93	Anthocephalus Cadamba
15	Adhatoda Vasica +	13	Antimonium +
218	Aeschynomene sesban +	219	Aqua
4	Agati grandiflora +	155	Aquilaria Agallocha
8	Alangium hexapetalum	30	Aristolochia indica
8	Alangium Lamarcki	44	Arsenicum Album
2	Aleurites moluccana	212	Artemisia sternutatoria +
2	Aleurites triloba	85	Artum Colocasia
191	Aloe barbadensis +	53	Asclepias echinata
193	Aloe indica	28	Asclepias gigantea +
192	Aloe rubescens	158	Asteracantha longifolia
194	Aloe succotrina	150	Aucklandia Costus
191	Aloe vera	115	Averrhoa Carambola
79	Alpinia Cardamomum	62	Balanites Roxburghii
148	Alpinia Galanga	266	Baliospermum montanum
239	Amarantus spinosus	175	Balsamodendron Katap +
24	Ambergris	174	Balsamodendron Mukul
145	Ammannia baccifera	143	Barleria cristata
145	Ammannia vesicatoria	143	Barleria dichotoma
80	Amomum aromaticum +	71	Basella alba
148	Amomum Galanga	123	Bauhinia parviflora
80	Amomum subulatum +	123	Bauhinia racemosa

128	Bauhinia tomentosa	3	Cassia alata
33	Bauhinia tomentosa +	60	Cassia auriculata
152	Benincasa cerifera	53	Cassia Fistula. +
136	Blumea lacca. +	132	Cassia occidentalis
180	Bolo Rubra	132	Cassia Sophora.
246	Borassus flabelliformis	195	Cassia Tora
188	Bos taurus.	42	Cassytha filiformis
141	Boswellia serrata. +	53	Cathartocarpus Fistula
141	Boswellia thurifera.	252	Cedrela Toona
74	Briedelia montana.	230	Celastrus alnifolia +
190	Butyrum +	230	Celastrus paniculata +
189	Butyrum Depuratum +	147	Celsia coromandiana
102	Caesalpinia Bonducolla.	212	Centipeda orbicularis +
45	Cajanus indicus +	81	Cerasus caproniana +
28	Calotropis gigantea ✓	106	Cerbera Thiovetia.
29	Calotropis Hamiltoni	151	Chaulmoogra odorata
29	Calotropis procera. +	203	Chavica officinarum
113	Camphora officinarum.	243	Chrysanthemum coronarium.
107	Capparis ophylla	243	Chrysanthemum Roxburghi
135	Capparis horrida.	197	Cicer arietinum +
135	Capparis Zeylanica. +	178	Cinnamomum iners.
9	Carbon	241	Cinnamomum Tamala.
231	Cardiospermum Halicacabum +	178	Cinnamomum Zeylanicum
86	Careya arborea.	39	Cissus quadrangularis +
78	Carica Papaya. +	64	Citrullus Colocynthis (+)
103	Carissa Carandas +	129	Citrullus vulgaris.
103	Carissa congesta. +	216	Citrus Aurantium, Var
104	Carissa diffusa. +		Limonum
104	Carissa spinarum	46	Cleome viscosa
97	Carpopogon monospermum	7	Clerodendron phlomoides +
96	Carpopogon pruriens +	20	Citoria Ternatea.
153	Carthamus tinctorius	85	Colocasia antiquorum.
227	Carum Carui	11	Convolvulus argentens.
227	Carum nigrum	43	Convolvulus reniformis.
10	Carum Roxburghianum	264	Convolvulus Turpetium +
		69	Covellia glomerata.

98	<i>Crataeva vallanga</i> +	217	<i>Eugenia Jambolana</i> +
165	<i>Creta</i>	272	<i>Fagonia arabica</i>
137	<i>Crocus sativus</i>	272	<i>Fagonia mysorensis</i>
267	<i>Croton Pavana</i> (or <i>Parana</i> )	98	<i>Feronia elephantum</i>
266	<i>Croton polyandrum</i>	133	<i>Ferry sulphas</i>
267	<i>Croton Tiglium</i>	14	<i>Ficus Carica</i>
83	<i>Cubeba officinalis</i> +	125	<i>Ficus dilatata</i>
161	<i>Cucumis acutangulus</i>	69	<i>Ficus glomerata</i> +
64	<i>Cucumis Colocynthis</i>	263	<i>Ficus heterophylla</i> +
112	<i>Cucumis Hardwickii</i>	70	<i>Ficus hispida</i> +
110	<i>Cucumis Momordica</i>	70	<i>Ficus oppositifolia</i> +
111	<i>Cucumis pubescens</i>	36	<i>Ficus religiosa</i> +
112	<i>Cucumis sativus</i> +	263	<i>Ficus repens</i> +
109	<i>Cucumis utilissima</i>	125	<i>Ficus retusa</i>
109	<i>Cucumis utilissimus</i>	48	<i>Flacourtia Cataphracta</i>
129	<i>Cucurbita Citrullus</i> +	101	<i>Galedupa indica</i>
254	<i>Cucurbita Lagenaria</i> +	157	<i>Garcinia indica</i>
142	<i>Cucurbita Pepo</i>	240	<i>Garcinia Morella</i> +
226	<i>Cuminum Cyminum</i>	157	<i>Garcinia purpurea</i> +
244	<i>Cuprum</i>	240	<i>Garcinia lobulosa</i> +
42	<i>Cuscuta reflexa</i>	89	<i>Gentiana Kurroo</i>
187	<i>Cyatopsis psoraloides</i> +	82	<i>Glinus lotoides</i> +
45	<i>Cytisus Cajan</i>	118	<i>Gloriosa angulata</i> +
63	<i>Daemia extensa</i>	118	<i>Gloriosa superba</i> +
248	<i>Dalbergia ougemensis</i>	131	<i>Gmelina arborea</i>
173	<i>Daucus Carota</i>	131	<i>Gmelina Rheedu</i> +
249	<i>Diospyros Embryopteris</i>	128	<i>Gossypium arboreum</i>
249	<i>Diospyros glutinosa</i> +	127	<i>Gossypium herbaceum</i> +
146	<i>Dolichos biflorus</i>	102	<i>Gulandina Bonducella</i>
146	<i>Dolichos uniflorus</i>	151	<i>Gynocardia odorata</i> +
73	<i>Echinops echinatus</i>	59	<i>Helicteres Isora</i>
213	<i>Elæobdendron glaucum</i> +	59	<i>Helicteres Roxburghii</i>
183	<i>Elephantopus scaber</i>	37	<i>Hibiscus populneoides</i> +
79	<i>Elettaria Cardamomum</i>	215	<i>Hibiscus rosa-sinensis</i>
47	<i>Emblica officinalis</i> +	138	<i>Holarrhena antidysenterica</i>
149	<i>Eragrostis cynosuroides</i>	158	<i>Hygrophila spinosa</i>

116	<i>Ipomaea aquatica</i>	100	<i>Mallotus philippinensis</i>
155	<i>Ipomaea hederacea</i> ✓	50	<i>Mangifera domestica</i>
43	<i>Ipomaea reniformis</i> +	50	<i>Mangifera indica</i>
116	<i>Ipomaea reptans</i>	51	<i>Mangifera indica</i> +-
264	<i>Ipomaea Turpethum</i> ✓	5	<i>Mangifera sylvatica</i> +-
220	<i>Jasminum aureum</i>	12	<i>Memecylon edule</i>
220	<i>Jasminum grandiflorum</i>	22	<i>Mica</i>
140	<i>Jasminum multiflorum</i> +-	201	<i>Michelia Champaca</i> +-
140	<i>Jasminum pubescens</i>	201	<i>Michelia rufinervis</i> +-
258	<i>Jatropha Curcas</i>	166	<i>Mimosa Catechu</i>
268	<i>Jatropha moluccana</i> +-	166	<i>Mimosa Catechuoides</i> +
32	<i>Jonesia Asoca</i>	167	<i>Mimosa Farnesiana</i>
1	<i>Juglans arguta</i>	164	<i>Mimusops balota</i> +-
1	<i>Juglans regia</i>	164	<i>Mimusops hexandra</i>
15	<i>Justicia Adhatoda</i>	164	<i>Mimusops indica</i> +-
202	<i>Kaempferia rotunda</i>	164	<i>Mimusops Kauki</i>
270	<i>Lactus</i>	154	<i>Mirabilis Jalapa</i>
254	<i>Lagenaria vulgaris</i> --	82	<i>Mollugo hirta</i> +-
255	<i>Lagenaria vulgaris</i> Wild form of	126	<i>Momordica Charantia</i>
241	<i>Laurus Cassia</i>	126	<i>Momordica humilis</i>
178	<i>Laurus Cinnamomum</i>	261	<i>Morus alba</i> +-
178	<i>Laurus nitida</i>	260	<i>Morus indica</i> +-
120	<i>Leea hirta</i> +-	97	<i>Mucuna monosperma</i>
236	<i>Leea latifolia</i> +-	96	<i>Mucuna pruriens</i>
236	<i>Leea macrophylla</i> +-	94	<i>Musa paradisiaca</i>
120	<i>Leea Scabra</i> +-	94	<i>Musa sapientum</i>
200	<i>Lepidium sativum</i>	88	<i>Myrica Neri</i>
16	<i>Linum usitatissimum</i>	88	<i>Myrica sapida</i> +
256	<i>Liquidambar imberbe</i> +-	221	<i>Myristica fragrans (Nut of)</i> +
256	<i>Liquidambar orientalis</i> +-	223	<i>Myristica fragrans (Arl of)</i>
161	<i>Luffa acutangula</i>	222	<i>Myristica malabarica (Nut of)</i> +
163	<i>Luffa aegyptiaca</i>	224	<i>Myristica malabarica (Arl of)</i> +
162	<i>Luffa amara</i>	221	<i>Myristica notha (Nut of)</i> +
163	<i>Luffa pentandra</i>	224	<i>Myristica notha (Arl of)</i> +
		223	<i>Myristica officinalis (Nut of)</i>
		223	<i>Myristica officinalis (Arl of)</i>

214	Nardostachys Jatamansi +	47	Phyllanthus Emblica.
93	Nauclea Cadamba +	49	Phyllanthus Niruri
213	Neerija dichotoma	49	Phyllanthus urinaria +
99	Nelumbium speciosum	235	Physalis edulis
105	Nerium odoratum	235	Physalis peruviana.
105	Nerium odorum	35	Physalis flexuosa +
139	Nerium tinctorium	87	Picrorhiza Kurroo +
245	Nicotiana Tabacum +	247	Pinus Webbiana +
229	Nigella indica +	203	Piper Chaba +
229	Nigella sativa +	83	Piper Cubeba
67	Nymphaea Lotus	108	Pistacia integerrima
99	Nymphaea Nelumbo +	142	Pistia stratiotes +
67	Nymphaea rubra +	117	Pisum arvense
258	Ocimum Basilicum +	117	Pisum sativum +
259	Ocimum gratissimum +	66	Plantago Ispaghul.
259	Ocimum citionatum +	66	Plantago ovata
257	Ocimum monachorum +	205	Plumbago auriculata +
258	Ocimum pilosum. +	206	Plumbago coccinea +
257	Ocimum sanctum +	206	Plumbago rosea +
225	Odina Wedier +	205	Plumbago zeylanica +
262	Oleum +	149	Poa cynosuoides
185	Onyx	46	Polanisia icosandra +
248	Ougenia dalbergioides	101	Pongamia glabra
204	Oxalis corniculata +	89	Pneumonanthe Kurroo
204	Oxalis repens +	6	Premna integrifolia
156	Pandanus odoratissimus	6	Premna serratifolia
84	Panicum italicum	58	Prunus bokhariensis +
208	Panicum mihaceum	81	Prunus Cerasus
208	Panicum mihum	58	Prunus communis +
40	Papaver somniferum +	54	Prunus persica +
159	Paspalum scrobiculatum	38	Pterocarpus Marsupium
181	Pedaliu Murex	199	Pterocarpus santalinus
31	Pentaptera Arjuna	269	Punica Granatum
155	Pharbitis nil	269	Punica nana. +
169	Phoenix dactylifera	23	Pyrus communis. +
168	Phoenix sylvestris +	170	Rhinoceros unicornis

170	Rhinoceros indicus +	57	Solanum tuberosum +
108	Rhus integerrima	90	Solanum xanthocarpum
76	Ricinus communis +	52	Spondias amara
76	Ricinus thernis. +	52	Spondias mangifera.
242	Rosa damascena +	250	Strychnos colubrina
100	Rottlera tinctoria,	250	Strychnos minor
209	Rumex vesicarius +	250	Strychnos Nux vomica
61	Saccharum officinarum	92	Strychnos potatorum +
130	Saccharum semidecumbens +	92	Strychnos Tettankotta
130	Saccharum spontaneum +	217	Syzygium Jambolanum +
198	Santalum album	25	Tamarindus indica
27	Sapindus emarginatus	25	Tamarindus officinalis
27	Sapindus Mukerossi +	233	Tamarix articulata
27	Sapindus trifoliatu.	232	Tamarix gallica +
32	Saraca indica	232	Tamarix indica. +
150	Saussurea Lappa	233	Tamarix orientalis
160	Scilla indica	31	Terminalia Arjuna
119	Scirpus.Kysoor. +	37	Thespesia populnea
60	Senna auriculata +	106	Thevetia nerifolia +
228	Serratula anthelmintica +	179	Tinospora cordifolia +
251	Sesamum indicum. +	182	Tribulus lanuginosus +
251	Sesamum orientale. +	182	Tribulu terrestris +
218	Sesbania aegyptiaca.	196	Trichosanthes anguma
4	Sesbania grandiflora. +	65	Trichosanthes laciniosa +
84	Setaria italica. +	65	Trichosanthes palmata +
54	Shorea robusta +	184	Triticum sativum +
198	Sirium myrtifolium +	184	Triticum vulgare +
172	Smaragdus	75	Typha angustifolia +
211	Smilax China	75	Typha elephantina +
211	Smilax Japonica +	160	Urginea indica
234	Soda bitoras	36	Urostigma religiosum
91	Solanum indicum	238	Valeriana Hardwickii +
91	Solanum violaceum +	214	Valeriana Jatamansi +
90	Solanum Jacquini	238	Valeriana tenera.
121	Solanum nigrum	34	Vatica robusta. +
121	Solanum rubrum. +	228	Vernonia anthelmintica



18	Vitis pentaphylla	62	Ximenia aegyptiaca +
39	Vitis quadrangularis	207	Zanonia indica.
255	Wild form of, <i>Lagenaria vul-</i> <i>garis</i>	253	Zanthoxylum alatum
35	Withania somnifera ✓	253	Zanthoxylum hostile +
138	Wrightia antidysenterica	56	Zingiber Cassumunar +
139	Wrightia tinctoria	55	Zingiber officinale
		56	Zingiber purpuraceum

## INDEX TO ENGLISH WORDS.

161	Acuteangled cucumber	188	Biliary concretion of a cow or bullock
175	The African Bdelium	255	Bitter gourd
5	Agallochum +	162	Bitter Luffa +
5	Agla +	229	Black cummin'
5	Akyaw	87	Black Hellebore
5	Aloe wood	230	Black Oil
245	American Tobacco	217	Black Plum
13	Antimony +	209	Bladder Dock +
80	The Aromatic cardamom plant	145	Blistering Ammania +
191	Barbadoes Aloes +	58	Bokhara plum
231	Balloon vine	102	Bonduc nut
94	Banana +	224	Borax +
186	Laobab tree	254	Bottle gourd +
191	Barbados Aloes. +	88	Box myrtle
153	Bastard saffron	246	Brab tree
176	Bead tree	171	Brimstone
2	Belgaum walnut.	157	Erandonia tallow +
134	Bell metal	181	Bur weed
216	Bergamot orange	242	Bussora rose
188	Bezoar +	190	Butter

237	Butter milk	197	Common gram
45	Cadjan pea.	208	Common millet +
5	Calambac.	258	Common sweet basil
113	Camphor	45	Congo pea +
235	Cape gooseberry.	138	Conessi bark.
107	Caper	244	Copper
107	Caper plant "	150	Costus
115	Carambola	150	Costus root
227	Caraway +	127	Cotton plant
9	Carbon	96	Cowhage plant +
210	Carbonate of lime	96	Cowitch
86	Carey's tree	95	Cowries.
173	Carrot	200	Cress
153	Carthamine dye	267	Croton seeds
122	Cashew nut	83	Cubebs +
241	Cassia Cinnamon	83	Cubebs pepper +
241	Cassia Lignea	109	Cucumber
76	Castor oil plant.	226	Cumin
166	Catechu	138	Curchu bark.
166	Catechu nigrum	265	Curd
165	Chalk	72	Cus-cus
9	Charcoal	166	Cutch
151	Chanlmugra	242	Damask rose
197	Chick pea. +	168	Date sugar palm
211	China root +	62	Delil.
211	China wood	42	Dodder
87	Christmas rose	81	Dwarf cherry
243	Chrysanthemum	5	Eagle wood
178	Cinnamon	59	East Indian screw tree
92	Clearing nut	249	Ebony +
189	Clerified butter	169	Edible date
265	Coagulated milk	39	Edible stemmed vine
9	Coal	98	Elephant apple
157	Cocum	75	Elephant grass
64	Colocynth.	47	Emble myrobalan
258	Common basil	172	Emerald

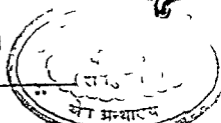
106	Exile oleander	53	Indian laburthum
102	Fever nut	176	Indian liquorice root +
117	Field pea	252	Indian Mahogany tree +
14	Fig tree	204	Indian sorrel
195	Foetid Cassia +	71	Indian spinach
154	Four o'clock plant +	160	Indian squill
55	Fresh ginger	2	Indian walnut
188	Gall stone	85	Indian yam
240	Gamboge tree	12	Iron wood tree
200	Garden cress	66	Ispaghul seeds +
117	Garden pea	84	Italian millet
28	Gigantic swallow wort	220	Jasmine
251	Gingelly	103	Jasmine flowered carisa +
197	Gram	100	Kamela
170	Great one horned rhinoceros +	72	Khus-khus
80	Greater cardamom	159	Kodra
148	Greater Galangal	157	Kokam butter
133	Green copperas	146	Kooltee
55	Green ginger	72	Koosa
174	Gum gugul	238	Kurchi bark
256	Gum storax	4	Large flowered Agati
63	Hairy flowered Cynanchum +	79	Lesser cardamom
126	Hairy momordica +	75	Lesser cat's tail +
179	Heart leaved moon seed	5	Lignum Aloes +
231	Heart pea	210	Lime
247	Himalayan silver fur +	16	Linseed
52	Hog plum	256	Liquid ambar +
36	Holy fig tree	256	Liquid storax
146	Horse gram	158	Long leaved Barlaria +
191	Indian Aloes +	99	Lotus
174	Indian Bdellium	151	Lucruban seeds
30	Indian birthwort	151	Lukrabo seeds
141	Indian incense	221	Mace +
264	Indian jalap +	79	Malabar cardamom
38	Indian kino tree	157	Mangosteen oil
		50	Mango tree

48	Many spined Flacourtia	102	Physic nut,
154	Marvel of Peru	45	Pigeon Pea
20	Mazereon +	19	Pine apple
44	Metallic arsenic.	94	Plantain,
270	Milk	78	Plum Ahucha
208	Millet	250	Poison nut +
194	Moka Aloes of Bombay	269	Pomegranate
100	Monkey face tree.	36	Poplar leaved fig tree +
186	Monkey bread tree of Africa	37	Portia tree
252	Moulmein Cedar +	57	Potato
177	Molasses	239	Prickly amaranth
97	Negro bean	21	Prickly chaff flower
132	Negro coffee	183	Prickly leaved elephant's foot
102	Nickai	111	Pubescent cucumber +
121	Night shade	53	Pudding pipe tree
71	Night shade	159	Punctured paspalum
223	Nutmeg +	53	Purging Cassia
250	Nux vomica,	267	Purging Croton +
164	The obtuse leaved Mimusops	228	Purple fleabane +
180	Ochre	257	Purple stalked basil
262	Oil	250	Quaker's nut
230	Oleum nigrum plant +	210	Quick lime
185	Onyx.	180	Red chalk
40	Opium.	180	Red lumber stone
195	Oval leaved Cassia.	199	Red sandal wood
44	Oxide of arsenic	199	Red sanders tree +
76	Palma Christi	75	Reed mace.
246	Palmyra Palm. +	242	Rose
78	Papaw tree.	206	Rosecolored lead wort +
78	Papaya tree	256	Rose malloes
54	Peach	21	Rough chaff tree
23	Pear	257	Sacred basil. +
36	Peepul tree	99	Sacred lotus +
41	Pellitory root	153	Safflower
41	Pellitory of Spain +	137	Saffron.
242	Persian rose	34	Sal tree

199	Sanders red	257	Toon tree
59	Screw tree	177	Treacle +
251	Sesamum	141	True frankincense
215	Shoe flower	37	Tulip tree
259	Shrubby basil +	264	Turpeth root
229	Small fennel	146	Two flowered dolichus
101	Smooth leaved pongamia.	37	Umbrella tree
196	Snake gourd	245	Virginian Tobacco
27	Soap berry +	133	Vitriol green
27	Soap nut +	250	Vomit nut
194	Socotrine Aloes of commerce	1	Walnut
209	Sorrel	219	Water
81	Sour cherry. +	67	Water lily
186	Sour gourd tree of Africa	129	Water melon
220	Spanish Jasmine	184	Wheat
214	Spikenard	237	Whey
66	Spogel seeds	44	White arsenic
126	Squirting cucumber. +	257	White basil
250	Strychnine tree	134	White brass
61	Sugar cane	134	White copper
133	Sulphate of iron	152	White gourd melon +
171	Sulphur	261	White mulberry
-46	Sun flower	40	White poppy +
258	Sweet basil	198	White sandal wood tree
258	Sweet common basil	168	Wild date
256	Sweet gum	90	Wild eggs plant
105	Sweet scented, Oleander, +	56	Wild ginger
83	Tail pepper	176	Wild liquorice root +
22	Talc	46	Wild mustard
232	Tamanisk.	153	Wild saffron
25	Tamarind.	35	Winter cherry
60	Tanner's Cassia	118	Wolf's bane
85	Taro	98	Wood apple
114	Thick leaved Lavender	194	Yaman Aloes of Bombay
73	Thistle	106	Yellow oleander
245	Tobacco		



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



## । अनुभूतचिकित्सासागरः ।

श्रीरामो रावणारिर्दशरथतनयो लक्ष्मणस्याग्रजन्मा ।  
सीताप्राणाधिनाथोऽनुलबलनिचयो वायुपुत्रस्य सेव्यः ॥  
कोदण्डं वै सवाणं दधदहितकुलध्वंसकर्त्ता समन्तात् ।  
सर्वान् पायादपायादखिलसुरपती राघवो लोकभर्त्ता ॥ १ ॥  
दाधीचान्वयपुण्डरीकमिहिरः श्रीमान् गणेशाभिधः ।  
विप्रोऽभूदजमेरुनाम्नि नगरे साक्षाद् गणेशाकृतिः ॥  
सूनुस्तस्य बभूव वैद्ययमुनादासो दयालु सुधीः ।  
धर्मिष्ठो गुणवान् स्वकर्म निरतोऽभूवन्त्रयस्तत्सुता ॥ २ ॥  
नासिकतीर्थसभास्थायुर्वेदाभिज्ञकोविदप्रवरैः ।  
दत्वायुर्वेदपञ्चानन इति पदवी भूपितोधीमान् ॥ ३ ॥

सोऽयं गंगाप्रसादस्तेषां ज्येष्ठो भिषग्वरो विद्वान् ।  
 स्वयमनुभूतचिकित्सासागरमद्भुतनिबन्धमातनुते ॥ ४ ॥  
 यं दृष्ट्वाक्षरचञ्चवोऽपि हि जनास्तस्स्था गदानां गुणान् ।  
 नामानि ह्याखिलाः क्रियाश्च सततं ज्ञात्वा भवेयुर्विदः ॥  
 तस्मात् संस्कृतगुर्जरादिसुगिरां शब्दांस्तथा सत्क्रियाः  
 सद्गृह्यात्र करोति वै श्रममिमं सम्यग् यथासम्भवम् ॥ ५ ॥

संख्या ( १ )

( सं० ) अक्षोटः, फलस्नेहः, रेखाफलः, वृत्तफलः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अखरोट	अखरोट	अखोड	अक्रोड	आक्रोट	अखरोट	अक्षोलसु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ागसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अक्रोटु	वेष्ट्रदगोनगर	जोजेहिन्दी	गिर्दगां	Juglans regia Juglans arguta	Walnut	

अखरोट दो प्रकारके होतेहैं जिनमें एकका वर्णन नीचे लिखतेहैं और दूसरे का दूसरी संख्यामें लिखेंगे ।

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे लेकर मनीपुर-आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—यह दो प्रकारका होताहै, एक बोया हुआ और दूसरा अपने आप उगनेवाला । बोयेहुएका छिलका पतला होताहै, उसको कागज़ी अखरोट कहतेहैं, अपने आप उगनेवालेका छिलका मोटा होताहै । यह वृक्ष १०० से १२० फुटतक ऊंचा होताहै, इसके पेदङकी गुलाई १२ से २८ फुटतक होताहै,

गु० अक्रोट । म० अक्रोट । व० आखरोट । तै० कोंडगोगुनु । अ० जोज । फ़ा० चारमज ।

इसके पत्ते गोल और कुछ २ लम्बाई लिये हुए मोटे होते हैं वे शीतकालमें गिर-  
जाते हैं और माघसे चैत तक नवीन निकल आते हैं। इसके सफेद पुष्पोंके गुच्छे  
लगते हैं जिनका आकार मीठल ( मदनफल ) के पुष्पों जैसा होता है। यह वृत्त  
जय ३०-४० वर्षका होजाता है तब इसके फल आने लगते हैं फलोंको इकट्ठे क-  
रनेके तीन महीने पीछे उनमेंसे तेल निकाला जाता है क्योंकि उस समय तक  
उनमें दूध जैसा एक पदार्थ रहता है पीछे वही, जमकर गिर बन जाता है।

फूलने फलनेका समय—चैत वैशाखमें इसके पुष्प लग जाते हैं और  
आपाठसे आसोज तक फल पकजाते हैं।

तेल निकालने की दो रीतियां हैं—( १ ) इसकी गिरीको महीन  
कूट गाढे कपड़ेकी थैलीमें भर यंत्रमें दवानेसे तेल निकलता है वह सफेद पतला  
और स्वादिष्ट होता है पीछे उस खलको पानीमें उबालनेसे जो तल निकलता है  
वह हरे रंगका होता है। इसमें जलाने और फफोला उठानेकी शक्ति होती है।  
अलसी के तेलकी अपेक्षा इसमें फफोला उठानेकी शक्ति अधिक है। ताजी गिर  
से निकाले हुए तेलके मिठासकी अपेक्षा पुरानी गिरके तेलमें मिठास कम  
होता है और उसमें दुर्गंध होती है यह तेल ज्यों २ पुराना होता जाता है त्यों २  
इसमें फफोला उठानेकी शक्ति बढ़ती जाती है।

( २ ) जैसे दश सेर गिरीमें से तेल निकालना चाहें तो पहिले आठ सेर  
गिरीको घाणी ( कोल्हू ) में ढालके परें जब वह महीन पिसकर तेल छोड़ने  
लगे तब बाकीकी दो सेर गिरी ढाल दें, जब वह अधपिसी हो जाय तब  
सेरभर मिथ्रीके बड़े २ टुकड़े कर घाणीमें ढालके पंगे से उसकी खल  
जम कर तेल अलग हो जाता है, इसको छानकर चीनी या काचके बरतनमें  
कुछ दिन तक पड़ा रखने से वह निर्मल हो जाता है और कासी या पीतलके  
पात्रमें रखनेसे नीला पड़ जाता है।

प्रयोग—( १ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे आतोंके कीड़े मरते हैं  
( २ ) घाव और फोड़ोंको साफ करने के लिये उनको इसके काथसे धोना  
चाहिये ( ३ ) इसके पत्ते ग्राही और बल बढ़ानेवाले हैं ( ४ ) पत्तोंका काथ  
पिलानेसे कीड़े मरते हैं ( ५ ) इसके पत्तोंका काथ पीने और उसीसे गाढको



धोनेसे कंठमाला मिटती है ( ६ ) अखरोट की गिरी खानेसे रुधिर शुद्ध होकर गठिया मिटती है ( ७ ) गिरी खाने और लगानेसे विष उतरता है ( ८ ) खलको पानीके साथ पीस उष्ण कर स्नायुक ( नहरुवा ) की सूजन पर लेप कर पट्टी बांधके तपानेसे सूजन उतर जाती है ऐसे १५-२० दिन तक नित्य प्रयोग करनेसे नारु गलके बह निकलता है ( ९ ) अखरोटकी ताजी गिरीको पीस उसका लेप कर ईंटको गरमकर उसपर जल छिड़क कपड़ा लपेट उस ठौर पर सेक करनेसे वादीकी पीड़ा तुरंत मिटती है ( १० ) प्रातःकाल हाथ मुंह धोये पहिले दांतोंसे गिरीको महीन चावकर लेप करनेसे दाद मिटता है ( ११ ) ब्यालका दांतुन करनेसे दांत साफ रहते हैं और उनमें कीड़े नहीं पड़ते ( १२ ) सर्दी लगनेसे या बिसूचिका में जो बांटे चलने लगजाते है उनको मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन करना चाहिये ( १३ ) पावभर गोमूत्रमें १ से ४ तोले तक यह तेल भिलाके पिलानेमे सब शरीरकी शोथ उतर जाती है ( १४ ) वादीसे फूले हुए अर्शपर इसका तेल लगानेसे सूजन कम होकर पीड़ा मिट जाती है ( १५ ) अर्दित में इसके तेलका मर्दन करके वादी मिटानेवाली औषधियोंके काथका बफारा लगानेसे बहुत लाभ होता है ( १६ ) भिलावेको इसकी गिरी के साथ खिलानेसे उसके विषका उपद्रव नहीं होता है ( १७ ) इसकी गिरी खिलानेसे अहिफेनका विष उतरता है और भिलावेके विषके उपद्रव भी मिटते है ( १८ ) मोमको बराबर मीठे तेलमें गला उसमें इसकी पिसी हुई गिरी भिलाके लेप करनेसे नाड़ीत्रण ( नासूर ) मिटता है ( १९ ) २ अखरोट ३ हरड़की गुठलीको जला उनकी भस्मके साथ ४ कालीमिरचको खरल करके अर्जन करने से नेत्रोंकी ज्योती बढती है ( २० ) अखरोटके छिलकेको ओटाकर पिलानेसे विरेचन लगता है ( २१ ) इसके छिलकेकी भस्मको किसी विष्टंभी औषधिके साथ खिलानेसे रक्ताशका रुधिर बन्ध होता है ( २२ ) इसकी पुगनी गिरी खानेसे खांसी पैदा होती है । इसकी छाल और फलके छिलके रंगतके काममें आते है । इसकी ताजी गिरी खानेके काममें आती है और सड़ी हुई गिरीको खानेसे रोग पैदा होने है ।

संख्या ( २ )

दक्षिणी ( जंगली ) अक्षोट ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
जगन्नी बा- खरोट	जंगली अ- खरोट	अखोट	जाफल अखोट	वन आक् (खू) रोट		नाट अक्रोट वितु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
नाटड अ क्रोट कोई	नाट अक्रोट	जोज़वरी		Alourites triloba A moluccana		The Belgaum or Indian Walnut

स्थान—यह वृक्ष मलाया टापूमे हिन्दुस्थानमें लाया गया है अब यह दक्षिण हिन्दुस्थानके सब प्रान्तोंमें और कलकत्तेके आस पास भी पैदा होने लगा है परन्तु मद्रास प्रान्तकी पृथ्वी इसको बहुत अच्छी मानती है ।

पहिचान—इसके पत्ते और छोटी शाखाओं पर कुछ भूरे रंगके छोटे २ रंग होते हैं, शाखाओंके अंतमें सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं ।

फूलने फलनेका समय—यह ग्रीष्म ऋतु ( गर्मीकी मौसिम ) में फूलता है और श्रावणमासोंमें इसके फल लगते हैं इनकी मध्य रेखा दो इंच लम्बी होती है ।

गोंद—इसकी छोटी शाखाओं ( टहनियों ) और फलोंके ऊपर गोंद लगता है फलोंपर का गोंद बहुधा खाने के काम में आता है ।

तेल—इसकी गिरीमेंसे आधा तेल निकलताहै और वह पहिले लिखी हुई दोनों ही रीतियों से निकाला जासक्ता है इसका रंग कहखे जैसा होता है इसमें सुगन्ध नहीं होती है यह साबुन जैसा जमजाताहै और जल्दी सूख जाता है ।

प्रयोग—( १ ) सवा तोलेसे ५ तोले तक इसका तेल पिलानेसे विरेचन लगता है ( २ ) इसका तेल व्रण का उत्तमशोधक है ( ३ ) इस के पीनेके पीछे ३ से ६ घंटोंमें अवश्य विरेचन लगता है ( ४ ) यह दस्त

लानेमें एरण्डके तेलसे अच्छा है क्योंकि इससे पेट में जलन शूल और मरोड़ी नहीं होती और जी नहीं भिचलाता है इसका स्वाद अखरोटकी गिरी जैसा होता है ( ५ ) इस के तेल या मींगीमें बंबूलका गोंद मिलाके पेट और नलोंपर लेप करनेसे किसी गरिष्ठ पदार्थ के भोजन से पैदाहुई गांठ के कारण जो बद्धकोष्ठ हुआ हो वह मिट जाता है ( ६ ) इसका तेल खाने और जलानेके काममें आता है ( ७ ) इस के फल की मींगी खानेसे आरोग्यता बढ़ती है और शरीर पुष्ट होता है ( ८ ) इसकी खल भी अच्छी रेचक है ।

— ० ० —

संख्या ( ३ )

( सं० ) अगदः, दद्रुमर्दी, कीटारिः, अङ्गसुन्दरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	दाद मर्दन		दाद मर्दन	दाद मर्दन		सिमाअविस्त
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
विभिन्नगति बहुकोलि	शिमै अगसे			<i>Cuscuta alata</i>		

स्थान—यह बंगालके नीचेके भाग, पश्चिमी मायद्वीप और ब्रह्मा आदि देशोंमें होता है ।

पहिचान—इसका फ्लाड छोटा होता है और शाखें बहुत मोटी और अन्त में रूएदार होती हैं, यह मनुष्यों की बस्ती से बहुत दूर नहीं होता है । इस की छाल रङ्गते के काम में आती है ।

प्रयोग—( १ ) मोहागा और हरडके पाथ इसकी जडको पीसके लेप करनेसे दाद मिटता है । ( २ ) इसके ताजे पत्तोंको पीसके लेप करनेसे दाद मिटता है । ( ३ ) इसके ताजे पत्तोंको दिनमें दो बेर कुछ दिनों तक दाद पर रगडनेसे दाद मिटजाता है परन्तु मिटनेके पीछे भी कुछ दिनों तक लगातार

पत्तोंको उस ठौर पर रगड़ने रहना चाहिये नहीं तो दाद पीछा होजाता है ।  
 ( ४ ) इसके पत्तोंको नमकके साथ पसिके लेप करनेसे दाद तुंगत मिट जाता है । ( ५ ) पत्तों के काथ के गंधूप करनेसे मुखपाक या मुखके छाले मिटते हैं । ( ६ ) इसके और अरदूसेके पत्तोंको चूसनेसे सूखी खांसी मिटती है । ( ७ ) इसके पत्तोंके चूर्णको मधुके साथ चाटनेसे बल बढ़ता है । ( ८ ) इसके पुष्पोंका गुल्टिस बांधनेसे दाद मिटता है । ( ९ ) इसके पत्तोंको पीसके विपैले जीवोंके दंश पर लेप करना चाहिये । ( १० ) इसके पत्तोंका रस निकालके लेप करनेसे उपदंश सम्बंधी टाकियां मिटती हैं और वह ठौर पकी हो जाती है । ( ११ ) इसके पत्तोंको ओटाके बफारा देनेसे उपदंश सम्बंधी टाकियां मिटती हैं । ( १२ ) त्वचा सम्बंधी रोगोंको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका प्रयोग बहुत अच्छा है । ( १३ ) इसके पत्तोंका लेप करनेसे वे फुंसियां मिटती हैं जो पास २ बहुतसी होती है और फैलती जाती है । ( १४ ) इसके पत्तोंको नींबूके रसमें पीसके उन फुंसियों पर लेप करनेसे भी अधिक लाभ होता है । ( १५ ) इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटता है । ( १६ ) इसके पत्तोंको सनापके साथ ओटाके पिलानेसे विरेचन लगता है । ( १७ ) सूखे पत्तोंका काथ पिलानेसे भी विरेचन लगता है । ( १८ ) यह पुराने रोगोंकी अपेक्षा नवीन रोगोंको शीघ्रता से मिटाता है ।

संख्या ( ४ )

( सं० ) अगस्तिः, मुनिद्रुमः, शीघ्रपुष्पः, वंगसेनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मगही	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अगत्यो	अगधिया	अगधियो	अगस्ता	बक	हधिया	अगिसे
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लेटिन	अंग्रेजी	
आति	अगचे			Agati Grandiflora Sesbania G	Large flowered Agati	

**स्थान**—इसके वृत्त हिन्दुस्थान के दक्षिण और पूर्वीय प्रान्त, अंतर्देश और राजपूताना आदि देशोंमें होते हैं ।

**पहिचान**—यह पुष्पोंके रंगके कारणसे ४ प्रकारका होता है इसकी उंचाई २०-३० फुट तक होती है, इसकी लकड़ी कोमल होती है, इसके पत्ते आकार में इमलीके पत्तोंके जैसे होते हैं परन्तु उन से बड़े होते हैं. वे एक दूसरेके सामने जोड़ेमें लगते हैं एक सीकपर २०-३० तक पत्तोंके जोड़े लगा करते हैं। इसके ३ इंच लम्बे पुष्प लगते हैं जो अन्तमें मुड़े हुए होते हैं उनकी पंखदियां दलदार होती हैं। इसके एक फुट लम्बी और गोल फलिया लगती है। यह वृत्त ७-८ वर्षका होके सूख जाता है ।

**फूलने फलनेका समय**—इसके वर्षा ऋतुमें पुष्प आने लगते हैं जो अगस्तयोदय तक बने रहते हैं और आश्विनमें फलियां लगती हैं ।

**गोंद**—इस की टहनियोंपर लाल गोंद लगता है जो सूखनेपर कुछ काल पड़ जाता है, यह बहुत ग्राही या संकोचक होता है ।

**प्रयोग**—( १ ) इसके कोमल पत्ते पुष्पों और फलियां शाकके काममें आती हैं—परंतु बहुत दिनोंतक लगातार और अधिक खानेसे अतिसार पैदा करती है ( २ ) इसकी छाल बहुत ग्राही है, ( ३ ) छालके चूर्णकी फकी देनेसे अतिमार मिटता है, ( ४ ) मसूरिका (चेचक) के और दूसरे ऐसे ज्वरोंमें (कि जिनमें फोड़े फुन्सियां हो जाया करती हैं) छालका डिम या फांट पिलाना चाहिये ( ५ ) इसके पत्ते और पुष्पोंका रस सुंघानेसे रुद्ध प्रतिश्याय ( बंधजुकाम ) मिटता है, ( ६ ) इसके पत्ते या पुष्पोंका रस सुंघानेसे नासिका द्वारा सिरसे बहुतसा श्लेषित जल बहकर मस्तकपीड़ा और उसका भारीपन मिटजाता है, ( ७ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे बद्धकोष्ठ मिटता है, ( ८ ) चोटके ऊपर पत्तोंका पुल्लिस बांधनेसे सूजन उतरके पीड़ा मिटजाती है । ( ९ ) पुष्प

मा० अगथ्यो । हि० अगस्तिया, हथिया । गु० अगथीओ, अगथीयो । म० हदगा ।  
ब० वक फुलेरगाछ । प० हदगा । तै० अवसि । द्रा० अहत्ति कर्ना० अगसे, अगिचे ।

या-पत्तोंका रस सुंधानेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै । ( १० ) लाल पुष्पके अगधियाकी जडको पानीमें पीस गर्भकर लेप करनेमें गठियाकी सूजनउतरतीहै । ( ११ ) पुष्पोंके रसको आंखमें डालनेसे धुंधलापन मिटता है । ( १२ ) पुष्पोंका शाक खानेसे रतोंप्रा मिटताहै । ( १३ ) इसके पत्ते सारकहैं । ( १४ ) इसके रसका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै ।

संख्या ( ५ ) \*

( सं० ) अगुरु, वंशिकं, राजाहं कृमिजं, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजारी	तैलंगी
अगर	अगर	अगर(रु)	अगर(रु)	अगरु काष्ठ	अगर	अगरु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अहिल कष्ट	अगर	ऊद(हिन्दी)	ऊदखाम	Aquilaria Agallocha	Gilambic Alnwool	

स्थान—अगरके वृक्ष गिलाहट, मलागार, मलयाचल, और मनीपुरआदि देशोंमें होतेहैं ।

पट्टिचान—यह पांच प्रकारका होताहै इसका वृक्ष बहुत बड़ा होताहै इसके पत्ते बड़े होतेहैं और पत्तभडमें नहीं गिरतेहैं उनमें और डगकी लकड़ीमें बहुधा कीड़े लग जातेहैं । इसकी लकड़ी सफेद कुछ पीलापन लियेहुए खरदरी और तन्तूदार होतीहै । जब वह बिगडने लगतीहै तब काटकर उसके टुकड़े गीली जमीनमें गाड़ रखनेमें वे काले, भारी, तेलिया और सुगन्धयुक्त

\* पृष्ठ न० ८ में जो नोट रक्खा गया है वह सं० न० ४ का समझें ।

ब० अगरु चदन, द्रा० अहरु कष्ट, अहरु कष्टई, फा० ऊदेहिदी,

Agallochium, Eagle wood, Lignum, aloes, Algia, Akjaw

होजातेहै । सिलहटमें पैदा हुआ अगर सबसे उत्तम होताहै उसको गरकी उद कहतेहै यह औपधिके प्रयोगमें अच्छाहै इसका स्वाद कडवा कसेला और तेलिया होताहै दूसरी जातिके अगर हल्के गिने जातेहै ।

फूलने फलनेका समय— इसके फूल और फल नहीं लगतेहै ।

गोंद—इसकी टहनियोंमें गोंद जैसा एक पदार्थ लगताहै उसमें बहुत अच्छी सुगंध होतीहै ।

प्रयोग—(१) हृदयका बल बढ़ानेवाली औपधियोंमें इसका गोंद मिलाया जाताहै । (२) गठिया और छोटे जोड़ोंकी सूजनपर इसके गोंद का लेप करना चाहिये । (३) हाथ पैर या किसी अंगका सूनापन मिटाने के लिये इसका लेप करना चाहिये । (४) अगर और सोठका क्वाथ पिलानेसे शरीरके हरेक अंगकी शून्यता मिटतीहै । (५) अगर और अतीसके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै । (६) अगर और सेकेहुए कमलगट्टोंकी सफेद गिरीके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे वमन बन्ध होतीहै । (७) भँवल (चक्कर) मिटानेके लिये उत्तम अगरकी लकड़ी सुघाना चाहिये । (८) इसका क्वाथ पिलानेसे ज्वरसे बड़ीहुई तृपा कर्म हो जातीहै । (९) इसको पीस गर्म करके लेप करने से पेटकी शूल मिटतीहै । (१०) इसका ठंडा लेप करनेसे शरीरकी दाह मिटतीहै । (११) अगर और शतावरका क्वाथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै और उसके पीछेकी निर्बलता मिटजातीहै । (१२) इसके महीन चूर्णकी शरीरपर मलनेसे बहुत पसीना आना बंध होताहै । (१३) इसके चूर्णकी फक्की देनेसे ज्वर छूटजाताहै । (१४) इसमें पानीमें घिसके पिलानेसे पित्तकी वमन बंध होजातीहै । (१५) इसकी लकड़ीसे तेल बनाकर उसका मर्दन करनेसे वादीकी पीडा मिटतीहै । (१६) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे हृदयका बल और पाचनशक्ति बढ़तीहै ।

—इसका इत्र ठंडा और बहुत अच्छी सुगंध युक्त होताहै । यह अगर अष्टगंज और कई प्रकारके धूपोंमें मिलाया जाताहै ।

संख्या ( ६ )

( सं० ) अग्निमन्थः, जया. तर्कारी. नादेयी,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अरणी	अरणी	अरणी	टाकली	गनिरि	अगेथु	तकिली नट्टु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वन्दिमरम्	वन्दिमर			Premna integrifolia		

स्थान—अरणीके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन, बंगाल, बम्बई, अवध, गढवाल और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें पैदा होतेहैं ।

पहिचान - अरणी दो प्रकारकी होतीहै एक छोटी और दूसरी बड़ी तथा श्वेत और काले रंगके पुष्पोंके भेदसे भी दो प्रकारकी होतीहै। बड़ी अरणीका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै. इसके पत्तोंके किनारे कटेहुए कगूरदार होतेहैं. इसकी पुरानी शाखाओंमें आमने सामने मजबूत काटे होतेहैं. छोटी टहनियोंके काटे नहीं होते. इसके कुछ नाले संफद रंगके पुष्प लगतेहैं. उनकी पंखड़ियें कुछ मोटी होतीहै और उनकी गंध अच्छी नहीं होतीहै. इसकी लकड़ी दृढ़ होताहै उसका रंग सफेद होताहै और उसपर बैंगनी रंगकी धारें होतीहैं. माघके महीनेमें इसके पत्ते गिर जातेहैं और माघसे चैततक नवीन पत्ते निकल आतेहैं । जो वृक्ष तर जमीनेमें होतेहैं उनके पत्ते जल्दी निकलतेहैं और जो सूखी जमीनेमें होतेहैं उनके कुछ देरीसे निकलतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—चैत वैशाखमें इसके पुष्प लग जातेहैं. उनके गिरनेके पीछे काले रंगके छोटे २ फल लगतेहैं ।

हि० अरणी, अगेथु ( थू ) गनियारी. म० टाकला, थोरपेरण । व० आगमान्त, गनियारि ( री ). फ० गनियार. तै० नरुपु, उटि, नरवलु. द्रा० तळुताळै, मुन्नै, फा० गनियार. लै० Premna serratifolia



प्रयोग—( १ ) इसकी जड़ कड़वी और अग्निवर्द्धक है । ( २ ) इसके प्रयोग से पेटकी शूल, ज्वर, जलोदर और सब शरीरकी ढीली पड़ी हुई सृजन मिटजाती है । ( ३ ) इसकी जड़को पानीमें पीस घीके साथ ७ दिन तक चटानेसे उदर रोग ( पित्तीका एक भेद ) मिटता है । ( ४ ) इसका सवा छ तोला क्वाथ दिनमें दो तीन बेर पिलानेसे ज्वरवालेके आमाशयकी शूल मिटती है । ( ५ ) जड़को साठेकी जड़के साथ पीस गर्मकण लेप करनेसे सब शरीरकी ढीली पड़ी हुई सृजन उतर जाती है । ( ६ ) इसके काथ पर सोंठ बुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि मिटती है । ( ७ ) इस के पत्ते कड़वे होते हैं । उनके प्रयोगसे पेटकी शूल और आध्मान मिटता है । ( ८ ) इसके पत्ते और धनियेका काथ पिलानेसे हृदयकी निर्बलता मिटती है । ( ९ ) पत्तोंका उवाल मल खानेके पिलानेसे आमाशयकी शूल मिटती है । ( १० ) पत्तोंका शाक बनाके खानेसे पेटकी वादीकी पीडा मिटती है । ( ११ ) पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसकर पिलानेसे सर्दीका प्रतिश्याय मिटता है । ( १२ ) पत्ते और कालीमिरचको पीस के पीनेसे ज्वर छूटता है । ( १३ ) पत्ते और हरड़की छालका काथ करके पिलानेसे बद्धकोष्ठ मिटता है । ( १४ ) पत्तोंको पीस पुण्डिस बनाके शोधयुक्त अर्श ( ववासीर ) पर बांधना चाहिये । ( १५ ) इसके पंचांगका क्वाथ पिलाने से गठिया और स्नायुकी वातपीडा मिटती है । ( १६ ) इसकी जड़का चूर्ण घृतके साथ ७ दिन पिलानेसे शीतपित्त मिटता है । ( १७ ) इसका क्वाथ पिलानेसे हस्तिप्रमेह मिटता है । ( १८ ) इस क्वाथके पीनेसे वसामेहभी मिटता है, इसके पत्तोंका शाक खानेके काममें आता है । अरणी दशमूलमें लीजाती है ।

संख्या ( ७ )

( सं० ) जुंद्राग्निमंथः, तपनः, अराणिः, रक्तांगः, ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
छोटी अरणी	छोटी अरनी	तहानी अरणी	लघु ऐरण	छोट गनिरि		निल्लि, तलुकि
द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
तलुदलेल	निल्लि, वल्लि			Cleorodendron -phlomoide		

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर मिलती है, विशेषकर पंजाब, सिन्धु, मेरवाड़ा, दक्षिण, विहार, बङ्गाल, अवध, मध्यप्रदेश, और लड्डा आदि देशोंमें पैदा होती है।

पहिचान—इसका भाड़ प्रायः २-३ गज ऊँचा होता है इसकी जड़ मोटी होती है उसका रंग भूरा और स्वाद कड़वा होता है और उसमें कुछ २ सुगंधभी आती है। इसके पत्ते एक दो इंच लम्बे होते हैं। इसके सुगंधयुक्त सफेद पुष्प लगते हैं। इसके काले रंगके प्रायः मूखे फल लगते हैं उनमें ४-४ मींगी निकलती हैं। इसके गौरह में हीनेही पुष्प लगते रहते हैं।

प्रयोग—( १ ) इसकी जड़के प्रयोगसे रुधिर शुद्ध होता है। ( २ ) यह बलवर्द्धक है। ( ३ ) इसके प्रयोगसे बोदरीके पीछेकी निर्बलता मिटती है। ( ४ ) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है। ( ५ ) पत्तोंका सवा तोला रस या इससे कुछ अधिक रस दिनमें दो बेर कुछ दिनों तक पीनेसे पुराना उपदंश मिटता है। ( ६ ) चौपायोंका आध्मान मिटानेके लिये इसका पंचाग खिलाते हैं। ( ७ ) अतिसार, और पेटके क्रीड़े मिटानेके लिये भी इसका प्रयोग किया जाता है।

म० टहाकळ, टाकळी. व० छोटा गनियारि, ( री )। तै० फूरनिल्लि,  
दा० तलुदल. कर्ना० तक्किने.

संख्या (-८)

( सं० ) अङ्गोलः, निकोचकः, रेची, गुप्तस्नेह ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलग्री
अंकोल	ढेरा, ढेरा	अङ्गोल	अंकोल	आंकोड	ढेरा, ढेरा	बूडुगु
द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अ०	
अंकोलम्	अंकोले	अंकोल		Alanguum Lumareku		

स्थान—अंकोलके वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, संयुक्तप्रदेश, बंगाल, अवध, हिमालयकी घाटीसे गंगातक और राजपूताना आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह काले, लाल और सफेद पुष्पोंके भेदसे ३ प्रकारके होतेहैं। इसकी ऊंचाई ३०-४० फुटकी होतीहै। इसका पेटड छोटा और सीधा होताहै और उसकी गुलाई २॥ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते एक दो अंगुल चौड़े और ३ से ६ इंच तक लम्बे होतेहैं वे पतझड़में गिरजातेहैं परंतु सबके सब नहीं गिरते और चैत वैशाखमें नवीन पत्ते आजातेहैं। इसके कच्चे फल नीले, पकते समय लाल और पकजानेपर बैजनी रंगके होजातेहैं वे झडवेर-मितने बड़े और गिरदार होतेहैं उनका स्वाद खटमीठा और कसेला होताहै। इसकी लकड़ी के बीचका भाग भूरा और कठोर होताहै और ब्यालके अंदरकी लकड़ीका रंग हल्का, पीला होताहै। इनमें किसी वृक्षके काटे होतेहैं और किसीके नहीं।

फूलने फलनेका समय—माघसे चैत तक इसके पुष्प लगतेहैं। वैशाख से श्रावणतक इसके फल लगते रहतेहैं।

प्रयोग—( १ ) इसकी जड़की ब्यालका चूर्ण खानेसे पेटके कीड़े मरते हैं। ( २ ) जड़के चूर्णकी फक्की देने से विरेचन लगता है। ( ३ ) सफेद

हि० अंकोल. म० अंकोली. ब० धला आंकोड

तै० अकोलमु क० अंकुले ॥ लै० A. hexapetalum.

पुष्पके अंकोलकी जड़के ३ भासे चूर्णकी फक्की देनेसे निर्विघ्न धमन होती है। और इसकी पूरी मात्रा न देनेसे हृत्लास होने लगता है। (४) इस वृक्षकी छाल बहुत कठवी होती है, उसको पीसके, लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटते हैं। (५) इसकी जड़की छालको कोढ़के प्रारंभमें, विचचिका (बीची) घटे हुए उपदंश और त्वचाके दूसरे रोगोंमें यथाकालतक रोगके बलके अनुसार काममें लानेसे बहुत लाभ होता है। (६) सादे, मन्द, लगातार रहनेवाले और निरुपद्रव ज्वरको पसीना लाके उतारनेके लिये इसकी जड़की छालके ३ से ५ रती तक चूर्णकी फक्की देनी चाहिये। (७) इसकी जड़ उष्ण और चरपरी है। (८) इसके चूर्णकी फक्की देनेसे बड़कोष्ठ मिटता है। (९) इसकी जड़की छाल, जायफल, जावित्री और लवंग-प्रत्येक दश दश रती पीसके फक्की देनेसे कोढ़ का बढ़ना बन्ध होजाता है। (१०) इसके २॥ भासे चूर्णकी गोली बनाके देने से काले सर्पका विष उतरता है। (११) इसकी जड़की छालका तेल बनाके मर्दन करनेसे गठियाकी तीव्रपीड़ा मिटती है। (१२) इसकी जड़के काथमें घी डालके पिलानेसे कुत्तेका विष उतरता है। (१३) लाल पुष्पवाले अंकोलकी जड़की छालका १० रती चूर्ण देनेसे सर्पका विष उतरता है। (१४) इसके १० रती चूर्णकी फक्की देनेसे विरेचन हाके जलधर मिटता है। (१५) रुधिर शुद्ध होनेके लिये इसका २ से २॥ रती तक चूर्ण मधुमें चाटना चाहिये। (१६) इसकी जड़का लेप करनेसे शूल और शोथ मिटती है। (१७) इसका फल ठण्डा, बलकारक और परिपोषक है। (१८) शरीरकी दाह मिटाने के लिये फलोंका घोट छानके शरीरपर चुपड़ देना चाहिये। (१९) उनके चूर्णकी फक्की देके ऊपर अइसेका क्वाथ पिलानेसे खन रोग मिटता है। (२०) उनको मिश्रीके साथ पीस के पिलानेसे मुख आदिसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाता है। (२१) इसके पत्तोंका पुलिटिस बाधनेसे गठियाकी पीड़ा मिट जाती है। (२२) इसके बीजोंका तेल लगानेसे ब्रण (फोडा) भर जाता है। (२३) इसकी जड़ सारक है। (२४) इसके फलोंका तेल तीव्र रेचक है। (२५) इसके फलका गूदा खट्टा और ग्राही होता है। (२६) इसके फलके गूदे को मधुमें मिलाके चांवलोंके पानीके साथ पिलानेसे अतिसार मिटता है।

( २७ ) इसको और तिलोंके खारको मधुमें मिलाके दहीके तोड़ेके साथ देनेसे सूत्राघात मिटताहै । ( २८ ) इसकी जड़की छालके ३ से ५ रती चूर्णकी फकी देनेसे पसीना आताहै । ( २९ ) चूहेका विप उतारनेके लिये इसकी जड़के चूर्ण की फकी देनी चाहिये । इसके फल खानेके काममें आतेहैं, परंतु अधिक खाने से मुखमें ऊष्मा प्रतीत होने लगताहै ॥

संख्या ( ६ )

( सं० ) अङ्गारः अलातं, उल्मुकं ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोयला	कोयला		कोब्सा	आगार अगार	कोला	
द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अं०	
		हैफम्	अनकिरत	Carbon	Coal Charcoal ( Carbon	

प्रयोग—( १ ) लकड़ीका कोयला जहरीली छूत और दुर्गन्धको मिटाता है । ( २ ) वायु आदिको शुद्ध करताहै और दुर्गन्धि पैदा होनेको रोकताहै । ( ३ ) यह मदाग्नि, अतिसार, रक्तातिसार और रुक कर आनेवाले ज्वरको अवश्य मिटाताहै । ( ४ ) इसका मंजन करनेसे दांत साफ रहतेहैं । ( ५ ) इसको पीसकर लेपकरनेसे विच्छू का विप उतरताहै । ( ६ ) विगडेहुप घाव और सूजनपर इसका पुल्टिस बांधना चाहिये । ( ७ ) बड़े स्थानोंकी हवा शुद्ध करनेके लिये कोयले काममें लाये जातेहैं । ( ८ ) पानीको शुद्ध करनेके लिये भी इनको काममें लातेहैं । ( ९ ) सुपारीका कोयला दांतोंके मंजनमें काम आता है । ( १० ) कोयलेको महीन पीसकर श्वेत या गुडके साथ देनेसे दुर्गन्धयुक्त अतिसार मिटताहै । ( ११ ) कोयलेको महीन पीस तेलमें मिलाकर घावपर लगाते है । ( १२ ) कोयले को महीन पीस घावपर बुरकानेसे रुधिरका बहना बंध होजाताहै । ( १३ ) रुधिर शुद्ध करनेके लिये कोयले का प्रयोग करना चाहिये ।

- संख्या ( १० )

( सं० ) अजमोदा, जस्तमोदा, मर्कटी, कारवी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अजमोद	अजमोद(दा)	अजमोद	अजमोद(दा)	रान्धुनी	अजमोदा	अजमोदा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आशामदा	बोमा	बम्बुलकरफस	करफस (श)	Carum Roxburghi ANUM		

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जातीहै परन्तु बंगालमें बहुत बोई जाती है ।

पहिचान—इसके पुष्प (—फ़ाड ) शीतकाल में बोये जातेहै । इसकी डालियों पर बड़े २ छत्ते लगतेहै उनमें से सफेद रंगके छोटे २ पुष्प निकलतेहै पुष्प खिरनेके पीछे उनमें दाने पैदा होतेहै उनको अजमोद कहतेहै । इसके पत्ते कटे हुए होतेहै और बीजोके गुच्छे लगतेहै ।

प्रयोग—( १ ) काले नमकके साथ अजमोद की फ़व्वी देनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै । ( २ ) इसके चूर्णकी गुडमें गोली बनाके देनेसे पेटका अफारा मिटताहै । ( ३ )—इसको गुडके साथ थोटाके पिलानेसे पेटकी वादीकी शूल मिटतीहै । ( ४ ) पसलीकी शूल या हरेक अंगकी वादीकी पीड़ा मिटानेके लिये अजमोदको गरमकर जितनी दूरमें पीडा हो उतनी दूरमें विस्तरे पर बिद्धा ऊपर हलका महीन कपड़ा ढकके उसपर रोगीको सुला देना चाहिये । ( ५ ) मूत्राशयकी वादीकी पीड़ा मिटानेके लिये अजमोद और नमकको कपडेमें या गरमकर नलोंपर सेंक करना चाहिये । ( ६ ) पीपल और नमकके साथ उसकी फ़व्वी देनेसे भूख लगने लगतीहै । ( ७ ) जिमको भोजन करनेके पीछे हिचकी चलनी हो उसको चाहिये कि अजमोदको चूसने के पीक निगला करे । ( ८ ) दांतोंकी पीडा मिटानेके लिये अजमोदकी धूनी देनी चाहिये । ( ९ ) अजमोद

की धूनी देनेसे बच्चोंकी गुदाके छोटे २ सफेद कीड़े ( जिनको चुरणे कहते हैं ) मरजातेहैं । ( १० ) अजमोद और गुड़को तेलमें पकाके, दिनमें तीन चार बेर बांधनेसे फोड़ा जल्दी पक जाताहै । ( ११ ) अजमोद और लवंगकी टोपी को मधुके साथ चटानेसे वमन बंध होतीहै । ( १२ ) अजमोदको पानमें रख उसको चाब २ के पीक निगलनेसे सुखा खांसी मिटतीहै । ( १३ ) अजमोदको तेलमें ओटा उस तेलका मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा मिटतीहै । ( १४ ) मासे भर साठके चूर्णमें इस तेलकी १० बूँदें डाल फक्की देकर ऊपर गर्म किया हुआ सोंफका अर्क पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै । ( १५ ) अजमोद उचेजक और बलवर्द्धकहै । ( १६ ) खासको मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है । ( १७ ) इसको पीस गुड़के साथ ७ दिन खिलानेसे उर्दरोग ( पिचि ) मिटताहै । ( १८ ) ३ मासे अजमोद की फक्की देके ऊपर मूलीके पत्तोंका १ तोले रस पिलानेसे पथरी गल जातीहै । ( १९ ) सुगंधयुक्त और स्वादिष्ट करनेके लिये इसका शाकादिक में छोक ( बगार ) देते हैं ।

— ०० —

संख्या ( ११ )

( सं० ) अजात्री, छागलात्री, मेपान्त्री, वृषपत्रिका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लताविशेष	बोरुडी	पुगलवेल	पुगळी	छागल बेंटे		गाडिदगडपर-
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अडा- तीडापाळै	कुर- टिगेयभेद			Convolvulus argentens		

स्थान—यह बंगालमें होताहै ।

पहिचान—यह एक प्रकारका गुल्म है ।

प्रयोग—( १ ) इसके सेवनसे पुरुषका वीर्य्य बढ़ता है । ( २ ) इसके प्रयोगसे स्त्रीका वांछन मिटता है । ( ३ ) इसके सेवनसे खांसी मिटती है । ( ४ ) यह चरपरी होती है ॥

संख्या ( १२ )

अजन ( वृक्ष )

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अजनवृक्ष		अजन	लिंग-			अल्लि, आकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी.	फ़ारसी	लैटिन.	अंग्रेजी	
काशामर	लिवटोति			Mimcydon edule	The Iron wood tree	

स्थान—यह वृक्ष हिन्दुस्थानके पूर्व दक्षिण और सीलों आदि बहुतसे देशोंमें होता है ।

पहिचान—इसके गिरदार कपिले फल लगते हैं जो पकजातेपर खानेके काममें आते हैं । इसके पत्तोंमेंसे पीला रंग निकाला जाता है ।

फूलने फलनेका समय—इसके ग्राम्प ऋतुके आरम्भमें मोरलगके जामूनी या नीले रंगके पुष्प आने लगते हैं ।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्ते ठंडे और संकोचक हैं । ( २ ) इनको पीस छानकर पिलानेसे श्वेतपट्टर मिटता है । ( ३ ) इनके क्वाथ या फाटसे धोनेसे नेत्रविकार मिटते हैं । ( ४ ) इसकी छाल, नारियलकी गिरी, अजवाण, जंगली हलदी और काली मिरच सब बराबर ले पीस गर्म करके चोंटपर लप करनेसे या इन सबको जलमें छोटाके बफारा देनेसे मूजन और पीड़ा मिटती है । ( ५ ) इसके पत्तोंका फाट पिलानेसे मूत्र कृच्छ्र मिटता है ॥



संख्या ( १३ )

( सं० ) अञ्जनं, यामुनं, कृष्णं, नादेयं ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजगती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सुरमो	सुरमा	काळो सुरमो	काळ्यासुरमा	कालशुर्मा	सुरमा	अजनमू
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अजनदकल्	अजनदकळु	इसमद	सुरमाह	Antimonium	Antimony	

स्थान—यह हिमालय और पंजाबकी कई खानोंमेंसे निकलताहै तथा कन्धार और इस्पहानसे भी आताहै । बहुधा गलीनेको सुरमेके बदले देतेहैं क्योंकि वह भी आकार और रगमें सुरमे जैसा ही होताहै । इसलिये असली सुरमेको बंवाईमें सुरमा इस्पहानीके नामसे बेचतेहैं ।

पहिचान—कई ग्रन्थकार इसको दो प्रकारका और कई ३ प्रकारका लिखतेहैं—काला सफेद और तीसरा वह सुरमा जिसको पत्थरपर घिसनेसे लाल रंगका होताहै यह पत्थर जैसा होता है—उसपर लोहेके रवेसे चमकतेहैं उसको तोडनेसे भीतरसे काला निकलताहै और घिसनेसे लाल होजाताहै ।

काले सुरमेकी पहिचान—काला सुरमा, कठोर, भारी, चमकदार और बहुत पुडतदार होताहै इसकी चमक बहुत तेज और शीशेकीसी होतीहै ।

इसके गुण—यह मधुर, शीतल, रुसेला, स्निग्ध, लेखन, ग्राही विपन्न और नेत्रोंको हितकारीहै । हिचकी, वमन, रक्तपित्त, क्षय और कफ पित्तनाशकहै ।

मा० कालीसुरमो हि० अंजन. गु० कासुरगो. म० कृष्णचासुरमा व०  
नीलसुरमा, श्वेतशुर्गा द्रा० कमुनिगिलई. अ० कोइल फा० तुतिया, संगे-  
सुरमाह

संख्या ( १४ )

( सं० ) अंजीर, मृदुल, वृत्त, काकोदुम्बरिकाफल ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अजीर	अजीर	अजीर	अजीर	अजीर	किमरी	मेडिपण्डु
द्राविडी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	अंजुरी	तीन	अजीर	Ficus Carica		Fig tree

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोया जाताहै परंतु संयुक्त प्रदेश, पंजाब, सिन्ध, मद्रास, बम्बई और राजपूताना आदिमें बहुत होताहै ॥

पहिचान—यह दो प्रकारका होताहै एक बोया हुआ जिसके फल और पत्ते बड़े होतेहै । दूसरा जंगली या अड़क जिसके फल और पत्ते इससे छोटे होतेहै । अंजीरका वृत्त ६ से ६ फुट तक ऊंचा होताहै तोडने या चीरा देनेसे इसके हरेक अंगमेंसे दूध निकलताहै इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे अधिक खरदरे होतेहै । इसके फलका आकार प्रायः गूलरके फल जैसा होताहै कच्चे फलका रंग हरा और पके हुए का कुछ पीला या बैजनी और भीतरसे बहुत लाल होताहै । इसकी गिरा बहुत मीठी और स्वादिष्ट होतीहै इसके बीज कठोर, चन्दनिया रंगके, मीठे और चपदार होतेहै पतडभमें इसके पत्ते गिरजाया करतेहै । यह देश और पृथ्वीके कारणसे मोटाई और रंगमें बहुत बदल जाताहै ।

फूलने फलनेका समय—बोये जानेके पीछे यह चौथे वर्ष में फलता है इसके दो फाल आतेहै पहिला फाल अपाद और सावनमें दूसरा पोष और माघमें आताहै, यह २० वर्षतक फलताहै और पीछे सूख जाताहै ॥

प्रयोग—( १ ) इसके सूखेफलको तीक्ष्ण ( चरपरी ) औषधियोंमें मिला देनेसे उनका चरपराहट कम होजाताहै । ( २ ) इसका गिरीको शक्कर

४० पेयारा, बडभेयारा क० मेडि पंडु,

और सिरकेमें पीसके पिलानेसे बच्चोंके श्वास नलिका सम्बन्धी रोग मिटते हैं ।  
 ( ३ ) अंजीरका सेवन करनेसे राजयच्मा ( खैनरोग ) मिटताहै । ( ४ )  
 अंजीरके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै । ( ५ ) ताजा फल खानेसे रुधिर बढ़ताहै  
 ( ६ ) शरीरकी गरमी कम करनेके लिये अंजीरको खांडमें लपेटके खाना  
 चाहिये । ( ७ ) फोड़ेको जल्दी पकानेके लिये अंजीरका पुल्टिस बांधना  
 चाहिये ( ८ ) सफेद कोढ़के प्रारम्भमें अंजीरके पत्तोंका रस लगानेसे उसका  
 बढ़ना बंध होके मिट जाताहै । ( ९ ) सूखी खांसीवालेको अंजीर खिलाना  
 चाहिये । ( १० ) अंजीरके सेवनसे कृश पुरुषका शरीर पुष्ट होजाता है । ( ११ )  
 अंजीरके बीज और छिलकेको खानेसे मंदाग्नि और आध्मान ( अफाग )  
 होजाताहै । ( १२ ) अंजीरको सिरकेमें भिगोके खानेसे दस्त-लगके सूजन  
 उतर जाती है । ( १३ ) सूखे अंजीर खानेसे खांसी मिटतीहै । ( १४ ) अंजीर  
 को ओटाके कुल्ले करनेसे मसूड़ोंके रोग मिटते हैं । ( १५ ) सूखे अंजीरका  
 पुल्टिस बनाके बांधनेसे गुदा-और स्त्रियोंके गुह्यस्थानके पीपवाले फोड़े मिटते  
 हैं । ( १६ ) अंजीरका मुरब्बा टंडा और सारकहै इसके सेवनसे रुधिर और  
 मांस बढ़ताहै ( १७ ) शरीरके कठोर भाग पर इसके पत्ते या फलों का  
 पुल्टिस बांधनेसे वहांका कठोर पन मिट जाताहै । ( १८ ) ताजे अंजीर कुछ  
 दिनोंतक लगातार खाते रहनेसे स्वाभाविक बद्ध कोष्ठ मिट जाताहै । ( १९ )  
 इसके पेड़की छालकी भस्मको सिरके या पानीके साथ पीसके मस्तक पर लेप  
 करनेसे बहुत सोच करनेसे पैदाहुई मस्तक पीड़ा मिटतीहै । ( २० ) इसके दूधमें  
 रुईका फाया भिगोके दांतोंके नीचे दवानेसे दंतपीडा मिटतीहै । ( २१ )  
 सूखे या हरे अंजीर पीस जलमें ओटाकर गुनगुना २ लेप करनेसे फोड़े और  
 गांठोंकी सूजन बिल्वर जाती है । ( २२ ) इसकी लकड़ीकी राखको पानीमें  
 घोलके गाढ़ नीचे बैठजानेके पीछे उसका नितराहुआ पानी निकाल उसमें  
 फिर राख घोल दें ऐसे ७ बेर राख घोल २ के नितारा हुआ पानी पिलानेसे  
 दूध या रुधिरका जमाव बिल्वर जाताहै ।

अंजीर खानेके काममें आतेहैं । १०० तोले सूखे अंजीरमें ६०-७० तोले  
 शक्कर होतीहै वह अंगूरकी शक्कर जैसी होतीहै ॥

संख्या ( १५ )

( सं० ) अटरूपः, वृषः, सिंहास्यः, वाजिदंतः, वासकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अ(र)डूसो	अरू(डू)सो	अरडु(डू)शी	अडुळमा	वासक	वासा	अडुसरमु
द्राविडी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आडादोडै	आडुसोगे	हूफारिनकून	-	Adhatoda vasica. Justicia A	-	

स्थान—अडूसेके पेड़ हिन्स्थानके बहुतसे भागोंमें उगतेहै ।

पहिचान—सफेद और काले पुष्पोंके भेदसे अडूसा दो प्रकारका होताहै परंतु कोई-किसी इस्को सफेद और लाल पुष्पोंके भेदसे भी दो प्रकारका लिखतेहै । इसका पेड़ १० फुट तक ऊंचा होताहै इसके पत्ते थोड़े चौड़े और चौड़ाईसे दुगुने तिगुने लम्बे नोकदार और कोमल होतेहै । इसका फल प्रायः एक इंच लम्बा जो आगेसे आधी दूरतक एकसा मोटा और पीछेसे चूड़ी उतार कुछ चपटा होता है इसके पुष्प और फलका स्वाद कड़वा और चरपरा होताहै ।

फूलने फलनेका समय—यह एक वर्षमें दोबेर फूलताहै पहिले शरद ऋतुमें और पीछे वसंत ऋतुमें ।

इसके पत्तोंको ओटाके पीला रंग निकालतेहै ।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्ते और जड़की सोंठके साथ ओटाके पिलानेसे सब प्रकारकी खांसी मिटतीहै । ( २ ) पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै । ( ३ ) इसके पत्ते और काली मिर्चके क्वाथको छान ठंडाकर मधु मिलाके पिलानेसे भी सूखी खांसी मिटतीहै । ( ४ ) अडूसेका अक्वलेह बनाके चठानेसे पुरानी खांसी मिटतीहै । ( ५ ) अडूसेके पत्ते और पोखर मूलका क्वाथ बनाके पिलानेसे श्वास मिटतीहै । ( ६ ) इसके ताजे

पुष्पोंको गर्म कर आंख पर बांधनेसे आंखके गोलैकी पित्त शोथ (सूजन) उतरतीहै। ( ७ ) इसके पुष्पोंको सोंठके साथ ओटाके पिलानेसे वांइटे मिटतेहैं। ( ८ ) इसकी जड़ पत्ते और पुष्पोंका क्वाथ या अवलेह, आक्षेपकवायु और वांइटे मिटताहै। ( ९ )-इसके पुष्प और फलोंको तेलमें ओटा उस तेलका मर्दन करनेसे हाथ पैरोंकी ऐंठन मिटतीहै। ( १० ) ताजे पत्तोंको सुखा चिलममें रखके या बीडी बनाके पीनेसे श्वास मिटताहै। ( ११ ) प्रतिश्याय ( जुखाम ) मिटानेके लिये इसके पत्तोंका क्वाथ-पिलाना चाहिये। ( १२ ) इसकी सूखी छालको चिलममें रखके पीनेसे श्वासका वेग मिटताहै। ( १३ ) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै। ( १४ ) इसके पत्तोंके क्वाथका वफारा देनेसे गठिया मिटतीहै। ( १५ ) अइसे और एरंडके पत्ते और एरंडके तेलको जलमें ओटाके वफारा देनेसे स्नायुजाल ( रगों ) की पीड़ा मिट जातीहै। ( १६ ) हरेक अंगकी सूजन उतारनेके लिये भी यह वफारा अच्छाहै। ( १७ ) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की देनेसे आर्तवज्वर (मौसमी बुखार) छूट जाताहै। ( १८ ) अरइसेके रसमें कलमी शोरा डालके पिलानेसे मूत्र बहुत लगकर पांडु रोग मिट जाताहै। ( १९ ) जलंधरमें या जबकि सब शरीर सफेद होजाय उसमें इसके पत्तोंका स्वरस पिलानेसे मूत्र वृद्धि होके उक्त रोग मिटतेहै। ( २० ) अरइसेके पत्तोंका फांट पिलानेसे ज्वरमें बढी हुई तृपा कम होजातीहै। ( २१ ) अइसेके पत्तोंको मिश्रीके साथ ओटा छानके पिलानेसे ज्वरकी ऊष्मासे बढी हुई घबराहट मिट जातीहै। ( २२ ) अरइसेके पत्तोंके क्वाथमें चन्दनके तेलकी ३० बूँदें डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै। ( २३ ) धनियां, सोंफ और अइसेके पत्ते ओटा छानके पिलानेसे रक्तानिसार ( खूनकी दस्तें ) मिटताहै। ( २४ ) अरइसके पत्ते, चन्दन और हीरादक्खनके चूर्णकी फक्की देनेसे रक्तार्श ( खूनी ववासीर ) का रुधिर बन्ध होताहै। ( २५ ) इसके पत्तोंका स्वरस पिलानेसे रक्तपित्त और रक्तानिसार मिटताहै। ( २६ ) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बनाके तीन दिन नेत्रों पर बांधनेसे नेत्र पीड़ा मिटतीहै। ( २७ ) इसके पत्तोंको पीस लवण मिलाके बांधनेसे भंगदरवी सूजन उतरतीहै। ( २८ ) पत्तोंके स्वरसमें मिश्री मिलाके

पिलानेसे रूक्ष कास मिटताहै । ( २६ ) पत्तोंके स्वरसमें शंखका चूर्ण मिलाके लेप करनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटतीहै । ( ३० ) कोमल पत्ते और हलदीको गोमूत्रके साथ पीसके ३ दिन लेप करनेसे पापा और खुजली मिटतीहै । ( ३१ ) पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे रक्तप्रदर मिटताहै । ( ३२ ) नीम-गिलोय और इसके पत्तोंके स्वरसमें मधु मिलाके चटानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै । ( ३३ ) इसके रसमें मधु मिलाके चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै । ( ३४ ) इसके पत्तोंके स्वरसमें मिश्री और मधु मिलाके चटानेसे रुधिरकी वमन ग्रन्थ होतीहै । ( ३५ ) अहसा, मुनक्का और मिश्रीका क्वाथ बनाके पिलाने से रूक्ष कास मिटताहै । ( ३६ ) इसके स्वरसमें तालीसपत्रका चूर्ण और मधु मिलाके पिलानेसे स्वरभंग मिटताहै । ( ३७ ) इसके पत्तोंको पीस गर्भवती स्त्रीकी नाभि, नल और योनीपर लेप करनेसे बालक मुख से पैदा होजाताहै- ( ३८ ) इसके पंचांगके रसमें मिश्री और मधु मिलाके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै । ( ३९ ) इसके पत्तोंका पुटपाक कर उनका रस निकाल मधु मिलाके पिलानेसे पित्तका कास और ज्वर मिटताहै । ( ४० ) इसके पत्तोंको थोडाकर कुल्ले करनेसे मसूहोंकी पीड़ा मिटतीहै । ( ४१ ) इसके छोटे पेडके पचागको छायामें सुखा कपड बान कर नित्य एक तोलभरकी फक्की देनेसे श्वास और रुफ मिटताहै । ( ४२ ) इसका अवलेह बनाके सेवन करनेसे राजयच्चा मिटताहै ।

सख्या ( १६ )

( सं० ) अनसी, पिच्छला, उमा, जुमा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अलसी	अलसी	अळशी	अळशी(सी)	मसिना	अरसी	अलसि विचु
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अग्रेजी	
अळिचयेरे ( ६ )	अलसी	बज्जलकचान		Linum-usitatissimum	Linseed	

स्थान—अलसी हिन्दुस्थान में सब ठौर खेतों में बोई जाती है ।

तेल—१०० तोले सफेद अलसीमें से ३५ तोले, लालमें से ३१ तोले और छोटे बीजोंमें से २६ तोले तेल निकलता है ।

प्रयोग—( १ ) अलसीका पुण्डिस बांधनेसे फोड़े जल्दी पक जाते हैं ।  
 ( २ ) अलसीके बीजों का क्वाथ पिलानेसे मूत्र नालीकी टाह मिटती है । ( ३ ) इसके बीजोंके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है । ( ४ ) अलसीके पुष्पोंको मधुमें चाटनेसे हृदयका बल बढ़ता है । ( ५ ) अलसीके बीजोंके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे वीर्य्य बढ़ता है । ( ६ ) अलसीके बीजोंका तेल सारक है । ( ७ ) आगसे जले हुएपर इसके तेलसे मिलाया हुआ लेप लगाया जाता है । ( ८ ) इसके बीजोंको सेक, कूट मधुके साथ चटानेसे खासी मिटती है । ( ९ ) इसके तेलको कुछ गर्मकर कानमें डालने से कानकी पीड़ा मिटती है । ( १० ) इसके तेलकी ५ बूंद मूत्रनलिका ( इन्द्रीकेछिद्र ) में डालने से मूत्रकृच्छ्र ( सोजाक ) मिटता है । ( ११ ) इसके तेलमें सोंठका चूर्ण डाल कर गर्मकर सर्दन करनेसे पीठकी शूल मिटती है । ( १२ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे खासी मिटती है । ( १३ ) वीलगिरकी फकी देके ऊपर यह काथ पिलानेसे अतिसार मिटता है । ( १४ ) इसके तेलके मर्दन करनेसे शरीरके फोड़े फुन्सी मिटते हैं । ( १५ ) इसके बीजोंको खानेके काममें लानेसे अतिसार और खासी मिटती है । ( १६ ) अलसीको प्याजके रसमें पकाके कानमें डालनेसे कानके भीतरकी सृजन मिट जाती है । ( १७ ) इसके बीजोंका काथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है । ( १८ ) अलसीकी भस्म बूरकानेसे गुदाका घाव भर जाता है । ( १९ ) अलसीको सेरुके खाते हैं । सफेद पुष्पों की अलसीके बीज खानेके काममें अधिक आते हैं । इसकी खल चौपायोंके काममें आती है और कहीं २ इसकी खलको साफकर मनुष्य खानेके काममें लाते हैं ।

संख्या ( १७० )

( सं० ) अतिविषा, भंगुरा, विषा, विश्वा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
अ(प)तीस	अतीस	अतवम	अतिविष	आतइच(च)	अतीस	अतिवस
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	ग्रं०	
अतिविष	अतिपने			Aconitum, le to rophylum		

**स्थान**—अतीसके पांथे हिमालयमें कमाऊंसे हसोरा तक, शिमला और उसके आस पास और चुम्नामें बहुत होतेहैं ।

**पहचान**— इसका पौधा एकसे तीन फुट तक ऊंचा होताहै । उसकी डडी सीधी और पत्तेदार होतीहै, उसीमें या जड़से इसके शाखें लगती है इसके पत्ते दोसे चार इंच चौड़े और नोकदार होतेहैं वे कुछ मोटे, चमकीले और ऊपरसे हरे और नीचेसे पीले रंगके होतेहैं । इसके पुष्प बहुत लगतेहैं वे एक या डेढ़ इंच लम्बे चमकदार नीले या पीले कुछ हरे रंगके बैजनी धारीवाले होतेहैं । इसके चिकने छिलकेके नोकदार बीज लगतेहैं । इसके नीचे जो डेढ़ दो इंच लम्बा और प्रायः आध इंच मोटा कंद निकलताहै उसको अतीस कहतेहैं उसका आकार हाथीकी मूंडके सदृश होताहै, जो ऊपर से मोटा और नीचेकी ओर पतला होता चला आताहै यह बाहिरसे खाखी और भीतरसे सफेद रंगका होताहै । इस का स्वाद कषैला होताहै ।

**प्रयोग**— ( १ ) अतीसको लोहसार और साँठके साथ देनेसे ज्वरके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै । ( २ ) इसको शकर और दूधके साथ देनेसे पुरुपार्थ बढ़ताहै । ( ३ ) ज्वरके वेगको रोकनेके लिये इसका १० से १५ रती तक चूर्ण तीन २ चार २ घंटोंके अंतरसे तीन चार घेर देना चाहिये । ( ४ ) चढेहुए ज्वरमें इसके चूर्णकी फकी देनेसे पसीना आके ज्वर उतर जाताहै । ( ५ ) पुराना अतिसार और आम्रातिसार मिटानेके लिये इसके दो मासे चूर्णकी फकी



दे आठ पहर भीगीहुई दो मासे सोंठको पीसके पिला देना चाहिये । जबतक अतिसार नहीं मिटे तबतक नित्य देना चाहिये । ( ६ ) इसके ५ रती चूर्णकी फकी देनेसे ज्वरकी गर्मा कम हो जातीहै । ( ७ ) इससे वमन और हल्लास नहीं होताहै । ( ८ ) इसका चूर्ण २ मासेसे, ४ मासे तक देनेसे, तुरत फैलने-वाला ज्वर छूट जाताहै । ( ९ ) शरीर भी निर्बलता मिटानेके लिये गीली अतीसका सेवन कराना चाहिये । ( १० ) इसके चूर्णकी वायविडगके साथ फकी देनेसे बच्चोंके पेटके कीड़े मरजातेहै या बाहिर निकल जाते है । ( ११ ) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे खासी मिटतीहै । ( १२ ) अतीस और पोखमूलके चूर्ण को मधुमें मिलाके चटानेसे श्वास मिटताहै । ( १३ ) इसके चूर्णको सोंठ या पीपल के साथ मधुमें चटानेसे पाचनशक्ति बढ़तीहै । ( १४ ) ज्वर छुडानेके लिये इसके ५ रती चूर्णमें १॥ रती हीराकसीस मिलाके देना चाहिये । ( १५ ) इलायची छोटी और वंशलोचनके साथ इसके १॥ मासेसे २॥ मासे तक चूर्णकी फकी देनेसे उल्ल बढ़ताहै । ( १६ ) विषमज्वर छुडानेके लिये इसके एक मासे चूर्णमें आध रती कुनैन मिलाके इतनी २ मात्रा दिनमें तीन बेर देना चाहिये । ( १७ ) एक तोले अतीस और १॥ रती सगवियेका पीसके उसमेंसे चार २ रतीकी मात्रा दिनमें तीनचार बेर देनेसे बार २ अनेवाला ज्वर छूटताहै । ( १८ ) दूषित जल, वायु आदिसे पैदाहुए ज्वरको रोकनेकेलिये इसके चूर्णकी पांच २ रती की मात्रा दिनमें तीनचार बेर देनाचाहिये । ( १९ ) इसके चूर्णकी फकी देके ऊपर चिरायतेका अर्क, पिलानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहै । ( २० ) अतीसके दो मासे चूर्णको घुरब्बेकी हरडैपर लपेटके खिलानेसे आम्रातिसार मिटताहै । ( २१ ) नागकेशर और इसके चूर्णकी फकी देनेसे वमन बंध होतीहै । ( २२ ) अतीस और कुडाब्जानके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे पुराना अतिसार और रक्तपित्त मिटताहै । ( २३ ) एक मासेसे एक तोले तक अतीस पानीमें पीसके बलानुसार देनेसे अतिसार मिटताहै ।

इसके काथकी अपेक्षा इसके चूर्णमें ज्वरनाशक शक्ति अधिकहै इसमें कोई प्रकारका विष नहींहै इसलिये इसकी मात्रा न्यूननाधिक भी दीजावे तो उस से कोई भारी उपद्रव नहीं होताहै ॥ इसकी मात्रा पौने चार मासेसे पौने १०

मासे तक दिन भरमें देनेसे कोई विघ्न नहीं होता है यह मात्रा जवान मनुष्यके लिये है, इसीसे बच्चेको देनेके लिये अनुमान कालेना चाहिये ।

संख्या ( १८ )

( सं० ) अत्यम्लपर्णी, कण्डुला, बलिसूरणा, वनस्था ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रामचिणा	रामचना	खाटखटुवा	आवटवेल	रुडवडवेनि		मंडलमारी
द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	हेगोलि			<i>Vitis pentaphylla</i>		

स्थान—रामचिणीकी बेल हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें प्रायः सब ठौर होती है ॥

परिचान—यह एक प्रकारकी बेल होती है जो बहुधा थुहरपर फैला करती है इसके तीन २ पत्ते लगते हैं वे कटे हुए कंगूरेदार किनारेके होते हैं । इसकी जड़ में अनुमान ६ इंच लम्बा कंद निकलता है इस कंदके ऊपरसे तन्तु निकलके पृथ्वीके भीतरके भीतर एक, दो हाथ लम्बा फैलकर उसके नीचे वैसाही कन्द लगता है इसी भांति ठौर २ आठ दस कन्द लग जाते हैं । इसके कुछ हरे सफेद छोटे पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं और गांठी जितने २ बड़े हरे फलोंके गुच्छे लगते हैं वे पकनेपर बैजनी रंगके हो जाते हैं इसके फलमें दोचार बीज निकलते हैं ।

फूलने फलनेका समय—यह वर्षा ऋतुमें फलती फूलती है ॥

प्रयोग—( १ ) रामचने बहुत खट्टे और संकोचक होते हैं । ( २ ) इसके कंदको घिसकर लगानेसे विच्छेका विष उतरता है । ( ३ ) इसके कंदका पुन्डिसा बाधनेसे फोडे जल्दी पकते हैं । ( ४ ) इसके पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसके लगानेसे फुन्सिया मिटती है । ( ५ ) जूडेसे जो घैलोंकी गर्दनपर

घाव पड़जातेहैं उनपर इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधाजाता है । ( ६ ) यह चरपी, खट्टी और अग्निदीप्त करनेवालीहै और प्लीह, शूल, वात, अरुचि, गुल्म, कफ और खांसीको मिटातीहै । ( ७ ) इसके फलोंका शाक बनाके खानेसे अतिसार मिटताहै ॥

इसके फलोंमें से एकप्रकारका रंग निकाला जाताहै ॥

संख्या ( १६ )

( सं० ) अनननासं, कौतुकं, आमं, पारवती ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अननास	अननास	अननसा	अनानस	अनामशा		अनास पंडू
द्राविडी	कनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
अनाशपशम	अनानसूहनु			Ananas sativa		Pine apple

**स्थान**—यह हिन्दुस्थानके दक्षिण और पूर्वी प्रान्तोंमें बहुत पैदा होताहै । यह हिन्दुस्थानमें पहिले नहीं होताथा, परन्तु अमेरिकासे लाया गयाहै ।

**पहिचान**—अननासके पत्ते केवडेके पत्तों जैसे होतेहैं, पत्तोंके काटेहोते हैं । जड़ और पत्तोंके बीचके भागमें फल लगताहै, फलके ऊपर कटेहुए पत्तोंके आकारके झिलके होतेहैं, फलका रंग पीला या कुछ ललाई लिये जाताहै । इसकी जड़ घीकुमारकी जड़ जैसी होतीहै । इसके कचे फलका स्वाद खट्टा और पकेहुएका कुछ खट्टाई लियेहुए मीठा होताहै ॥

**तेल**—इसमेंसे एकप्रकारका तेल निकलताहै ।

**प्रयोग**—( १ ) पत्तोंका रस पिलानेसे आंतोंके कीडे मरतेहै । ( २ ) पत्तोंके रसको शकरके साथ देनेसे दिचकी बन्द होतीहै । ( ३ ) इसके फलोंका

रस सीतादरोग ( मसोड़ों ) को मिटाताहै । ( ४ ) फलके रसको पिचकारीसे त्वचामें प्रवेश करनेसे विष जैसा प्रभाव पैदा होताहै । ( ५ ) फलके रसको पीनेसे पित्तकी वृद्धि होतीहै । ( ६ ) कच्चे फलको खिलानेसे स्त्रियोंकी छोड़ मिटजातीहै । ( ७ ) प्रकेफलका रस पिलानेसे ज्वरमें उत्पन्नहुई पेटकी दाह मिटतीहै । ( ८ ) पके फलका रस पीनेसे पसीना आताहै । ( ९ ) मिश्री, मि- लाके पीनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै और चित्त प्रसन्न होजाताहै । ( १० ) फलको अतिशय काममें लानेसे गर्भाशयका बहुत संकोच होताहै । ( ११ ) बन्धहुए मासिक धर्मको फिर प्रवर्त करनेके लिये पके फलको लगातार खिलाते रहना चाहिये । ( १२ ) इसके फलको धूनकर खानेसे उसका जहरीला असर मिट जाताहै । ( १३ ) फलका मुरब्बा पौष्टिक और चलवर्द्धकहै । ( १४ ) पके फलका रस कामला रोगमें हितकारीहै । ( १५ ) ताजे फलोंके टुकड़ोंपर नम क या शकर लगाकर खाना चाहिये । ( १६ ) इसके पत्तोंके सफेद भागके ताजे रसको शक्करके साथ देनेसे विषेच लगताहै और कीड़े मरतेहै । ( १७ ) विना समय जो मासिक धर्म होना बन्ध होजाताहै उसको फिर उत्पन्न करनेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये । ( १८ ) इसके एकभाग रसमें दो भाग बुरा मिला शरबत बनाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै ।

संख्या ( ३० )

( सं० ) अपराजिता, अश्वखुरा, अद्रिकर्णी, गिरिकर्णी ।

मोरवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोयनीका ( बीज )	नीलीकोयल	गरणी	गोकर्णी	अपराजिता	कोयल	दिटैनवितु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अ०	
करपुका- कट्टानविरै	कटलेवल्लि	गान्जरियन	अशखीस	Clitoria Ternatea	Muggerin	

स्थान—इसकी बेल हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर पैदा होती है।

पहिचान—यह बेल, श्वेत और नीले फूलोंके भेदसे दो प्रकारकी होती है और नीले फूलोंकी बेलभी दो प्रकारकी होती है, एकके इकहरा और दूसरीके दुहरा फूल लगते हैं अर्थात् फूलमें फूल होता है। इसके फलियां लगती हैं। जिस बेलके नीले फूल लगते हैं उसकी फलियोंमेंसे उडदकी बराबर काले बीज निकलते हैं उनके अंकुरकी ठौरके छिलकेका रंग सफेद और दोनों सिरे बिलकुल चपटे होते हैं। इसकी एक सीकपर सात पत्ते होते हैं। जिसके श्वेत पुष्प लगते हैं उसके बीज, भूरे, धब्बेदार (छाटणेदार) रंगके, और स्वादमें कडवे और तेलियां होते हैं। ताजी जड़ सफेद, चूड़ीउतार और गिरदार होती है।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीनेही पुष्प और फल लगते रहते हैं।

इसके बीज रंगतके काममें आते हैं। बीज बेलपरही सूखे हुए लेना चाहिये क्योंकि पहिले तोड़े हुए बीजोंमें गुण बहुत कम होजाता है। इसके बीजोंकी मात्रा १५ से ३० रतीतक और जड़के चूर्णकी ४ से ८ मासे तक है।

प्रयोग—( १ ) इसकी जड़ बहुत रेचक है। ( २ ) इसकी जड़ को दूसरी रेचक और मूत्रजनक औषधियोंके साथ देनेसे बढी हुई तिल्ली और जलंधर आदि रोग मिटते हैं। ( ३ ) इसके सतकी २॥ से ५ रती मात्रा देनेसे अचछा विरेचन लगजाता है। ( ४ ) जड़के प्रयोगसे मूत्राशयकी दाह मिटती है। ( ५ ) इसके ५ या ६ मासे बीजोंको लवण और सोंठके साथ पीसकर देनेसे विरेचन लग जाता है। ( ६ ) बीजोंके रसको नाकमें टपकानेसे आधाशीशी मिटती है। ( ७ ) पत्तों का काथ पिलानेसे फफोले मिटते हैं। ( ८ ) बीज उगडे और विपन्न है। ( ९ ) इसकी जड़ वामक है। ( १० ) जड़के प्रयोगसे गाठिया मिटती है। ( ११ ) बीज दृष्टिको निर्वलता गले और त्वचाके रोग गांठें और कफके रोगोंको मिटाते हैं। ( १२ ) पत्तोंके रसमें अद्रकका रस मिलाके देनेसे वह ज्वर मिटता है कि जिसमें फोड़े फुन्सियां और पसीने बहुत होते हैं। ( १३ ) ताजीजड़ या इसकी छालके देनेसे फुफुस ( फफुडे ) के रोग मिटते हैं।

( १४ ) २ वर्षके बच्चोंको एक जड़, ३ से ६ वर्ष बालेको २ जड़ और जवानको ४-५ जड़ देनी चाहिये । ताजी जड़को देनेसे उल्टी और हृत्प्राप्त होता है ।  
 ( १५ ) जड़की अधिक मात्रा जवानको देनेसे मूत्रकृच्छ्र और वार २ मूत्रका होना मिटता है । ( १६ ) यह चरपराट मिटानेवाली और मूत्रजनक है । ( १७ ) पत्तोंके रसमें नमक मिलाके कानके चारों तरफ लेप करनेसे कानकी पीड़ा और आसपास की गांठों की सूजन उतर जाती है । ( १८ ) इसकी जड़से वमन करनेसे श्वासनलिकाओंकी पित्तशोथ मिटती है । ( १९ ) इसका सत देनेसे पेट में काट और वार २ दस्तकी शंका होती है । ( २० ) बीजोंकी बहुत अधिकमात्रा देनेसे मीठे मरते हैं । ( २१ ) इसका सेवन करनेके समयमें रोगीका चित्त शांत नहीं रहता है । ( २२ ) बच्चोंके पेटके रोग मिटानेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये । ( २३ ) इसकी जड़ का काथ पिलानेसे विरेचन लागके गठिया मिटती है । ( २४ ) ताजी जड़ या जड़की छालको ओटाके पिलानेसे बच्चोंके फुफ्फुसकी बीमारी मिटती है । ( २५ ) कालीकोयलीकी जड़के प्रयोगसे सर्पका विष उतरता है । ( २६ ) इसकी जड़के कण्ठमें मधु घी और शक्कर मिलाके चंटेनेसे परिणाम शूल मिटती है । ( २७ ) इसके बीज पीस चिलामें धरके धुंम्रपान करनेसे हिचकी धन्द होती है । ( २८ ) बीजोंको पीस गर्मकर लेप करनेसे अरुणकोप की सूजन विखर जाती है । ( २९ ) इसके बीज और जड़को जलकी साथ पीसके तस्य देनेसे आधाशीशी मिटती है । ( ३० ) इसकी जड़को कानके बांधनेसे आधाशीशी मिटती है । ( ३१ ) श्वेतअपराजिता को छालीके दूधमें पीस छान मधु मिलाके पिलानेसे गिरताहुआ गर्भ स्तम्भन होजाता है । ( ३२ ) इसकी जड़को तेल या द्वाछमें पीस लेप करनेसे स्नायुपीडा मिटती है । ( ३३ ) कांजीके साथ इसको पीसके लेप करनेसे फोड़े फूटकर मिटजाते हैं । ( ३४ ) श्वेत कोयलीकी जड़को पीसके घृतके साथ सेवन करनेसे गलगंड मिटता है । ( ३५ ) इसकी जड़के चूर्णको तक्रके साथ पीनेसे कामलारोग मिटता है । ( ३६ ) इसके पत्तोंके रसकी तस्य देनेसे एकान्तरा ज्वर छूटता है । ( ३७ ) लाल सूतके ७ धागोंसे इसकी जड़को कमरमें बांधनेसे दिजारीका ज्वर छूट जाता है । ( ३८ ) इसकी जड़की भस्मका भस्वनके साथ लेप करनेसे मुखकी छाया मिटती है ।

संख्या ( २१ )

( 'सं०' ) अपामार्गः, शैखरिकः, धामार्गवः, मधुरकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आधीझाड़ो	आंगा लटजीरा	अधेडो	आघाड	आपाड	अपुठकडा	उजरेनु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
नायुरवि	उत्तरणे उत्रासि	अटकूमाह	खारेवाज्यू	Achyranthus asper	(1) The prickly chaff flower (2) Rough chaff Tree	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब जंगलोंमें पैदा होता है ।

पहिचान—यह दो प्रकारका होता है परन्तु कोई ग्रन्थकार ३ प्रकारका भी लिखते है । यह गजभर ऊंचा होता है । इसके पत्ते गोल और नोकदार होते हैं उनके पीछे सफेद रोम होते हैं । इसकी डंडी और शाखें गोल नहीं होती हैं । इसके कांटेदार आंधी, थैलियोंकी एक फुट लम्बी मंजगियां लंगती हैं । उन थैलियोंमें बीज रहते है । लाल आंधीभाड़ेके पत्तोंपर लाल धब्बे और डंडीपर भी कुछ ललाई होती है । इसके पत्ते सफेदकी अपेक्षा कुछ मोटे होते हैं ॥

फूलने फलनेका समय—यह वर्षा ऋतुमें पैदा होता है और तबही फलता फूलता है । इसके फल पकजानेके पीछे यह सूख जाता है ॥

इसकी भस्म रंगतके काममें आती है ॥

प्रयोग—( १ ) इसके पंचांगका काथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है । ( २ ) इसकी जड़के काथको पिलानेसे प्रसव-जल्दी होजाता है । ( ३ ) इसकी मंजरी को गर्भाशयके मुंहपर छुटानेसे भी प्रसव तुरंत होजाता है । ( ४ ) इसके पंचांगका काथ सारकहै और प्रवाह बढ़ाता है । ( ५ ) ढीली पड़ी हुई सर्वांगशोथ और जलद्वरको मिटानेके लिये इन-दोनोंको मिटानेवाली दूसरी औषधियों में इराको-मिलाके देना चाहिये । ( ६ ) सूखे पत्तोंका चिलममें धरकर पानेसे श्वास मिटता है । ( ७ ) इसके २ रती चूर्णकी फकी देनेसे शोथ उतरती है ।

(८) यह अर्श और फुन्सियोंको मिटाता है। (९) इसके पत्ते और जीज वामक है। (१०) बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे व्यापत्तोंके रसको लगानेसे कुत्ते, सर्प, और विच्छू आदिका विष उतरता है। (११) बीज और पत्तोंको घोटकर पिलानेसे छातीकी पीड़ा मिटती है। (१२) सूखेपत्तोंके चूर्णकी फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है। (१३) बच्चोंके पेटकी शूलामिटानेके लिये इसके चूर्णमें सेबीहुई होंग मिलाके देना चाहिये। (१४) इसके पंचांगका रस गर्भाशयके मुंहपर लगानेसे प्रसववेदना बढ़ती है। (१५) अपामार्गके सतको सफेद घूंघचीके सतके साथ देनेसे मूत्रकृच्छ्र और जलंधर मिटता है। (१६) इसके चारको हरतालके साथ मिलाकर लगानेसे आटन और क्षत मिटते हैं। (१७) इसके पंचांगकी राखको तिखीके तेलमें ओटा छानकर कान में डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है। (१८) इसकी मंजरीके रसको विच्छूके दंशपर लगानेसे उसका विष उतरता है। (१९) इसके बीजोंको पीसकर संघनेसे नाकमें से पानी टपककर मस्तकपीड़ा मिटती है। (२०) इसकी मजरीके रसको दातोंपर मलनेसे दांत टूट होजाते हैं। (२१) इसके पत्तोंको कालीपिरच और लहसन के साथ घोट ५ गोली बनाके देनेसे सर्दीसे आनेवाला ज्वर छूटता है। (२२) कोमलपत्तोंको मिश्रीके साथ घोट, मक्खनमें मिला, अग्निपर तपा, गाढा करके खिलानेसे आमातिसार मिटता है। (२३) इसके बीजोंके खानेसे भूक बन्द होती है। (२४) इसके ताजे पत्तोंके रसको धूपमें रखनेसे गाढा होनेपर उसमें थोड़ासा अफीम मिलाकर टोंकीपर लगानेसे छपदंश मिटता है। (२५) भस्मकरोगको मिटानेके लिये इसके बीजोंकी काजी बनाकर खिलाना चाहिये। (२६) इसको पानीमें पीसकर लगानेसे भिड और मधुमन्सी आदि कीड़ोंका विष उतरता है। (२७) इसकी जड़ शाख और पत्ते २॥ तोले ले ५ छटाक पानीमें १५ मिनट तक बन्द बरतनेमें ओटा छानकर २॥ तोले से ५ तोलेतक की मात्रा दिनमें दीयेर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके शोथ उतरती है। (२८) इसकी २॥ रती जड़को छालको २॥ रती कालीपिरचके साथ देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटता है। (२९) इसके बीजोंके चूर्ण और गोजरके बीजोंके चूर्णको ओटाकर गर्भवती स्त्रीको पिलानेसे सुखसे बालक पैदा होजाता



है ( ३० ) इसके चारको मधुके साथ चटानेसे कफ और श्वास मिटता है ।  
 ( ३१ ) इसके चारकी अजवाणके साथ फकी देनेसे उदरशूल मिटती है ।  
 ( ३२ ) यदि पीड़ा चलती रहे और बच्चा गर्भाशयसे बाहिर न निकले तो  
 इसकी एक तोले जड़को दो तोले पुराने गुड़के साथ थोटाकर पिलानेसे  
 बच्चा तुरंत बाहिर निकल आता है । ( ३३ ) इसकी जड़के चूर्ण को मधुके  
 साथ चटानेसे कुत्तेका विष उतरता है । ( ३४ ) इसकी जड़को जलके  
 साथ पीसकर पीनेसे विमूचिका मिटती है । ( ३५ ) इसकी जड़को छाछके  
 साथ पीसके पिलानेसे कामला रोग मिटता है । ( ३६ ) जड़को स्त्रीकी कमरमें  
 बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाता है । ( ३७ ) गर्भवती स्त्रीकी नाभि वस्ति और  
 भगपर जड़का लेप करनेसे सुखसे बच्चा हो जाता है, केवल नाभि और भगपर  
 इसका लेप करनेसे भी यह प्रयोजन सिद्ध होजाता है । ( ३८ ) इसकी जड़को  
 टुकड़ा योनीमें रखनेसे योनीशूल और मासिकधर्मकी रुकावट मिटती है । ( ३९ )  
 कन्याके कातेहुए सूतसे इसकी जड़को रविवार या पुष्यनक्षत्रके दिन बांधनेसे  
 तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर छूटता है । ( ४० ) इसकी जड़को कन्याके काते  
 हुए सूतसे चोटीमें बांधनेसे इकांतरा ज्वर छूटता है । ( ४१ ) इसकी जड़को लाल  
 रंगके ७ धागोंसे रविवारके दिन कमरमें बांधनेसे तृतीयक ज्वर छूटता है ।  
 ( ४२ ) इसके बीजोंके कल्कको चावलोंके पानीके साथ पीनेसे रक्तार्श मिटता है ।  
 ( ४३ ) इसके बीजोंको पीस दूधके साथ खीर घनाकर खानेसे भस्मका रोग  
 मिटता है । ( ४४ ) घाटीके नासूरको चीरके उसपर इसके बीज और तिलोंका  
 लेप करना चाहिये । ( ४५ ) इसके पत्तोंको जलमें पीस उसमें कपड़ा भिगो  
 बत्ती बनाके नाड़ीत्रणमें रखनेसे या उनका रस टर्पकानेसे नाड़ीत्रण भर  
 जाता है । ( ४६ ) इसके पत्ते और कालीमिरच बराबर ले घोड़ेकी लाठके साथ  
 पीसके अंजन करनेसे विमूचिका मिटती है । ( ४७ ) इसके खारके पानीसे सिद्ध  
 किया हुआ तिलोंका तेल कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता है । ( ४८ ) इसके  
 खारकी मात्रा एक रतीसे एक मासेतककी है परन्तु आवश्यकताके अनुसार  
 अधिकभी बढ़ाई जा सकती है । ( ४९ ) इसकी जड़के रसकी २-३ दिन नस्य  
 लेनेसे मारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है ।

संख्या ( ३२ )

( सं० ) अश्रकं बहुपत्रं, व्योमं, निर्मलं ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	‘मरहटी’	‘बंगाली’	पंजावी	तैलंगी
भोडल	बबरक (ख)	अश्रक	अश्रक	अश्र	अश्रक अश्रल	अश्रकमु
द्राविडी	करनादकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अश्रक	अश्रक	तलक	बबरक (तलक)	Mica	Talc	

स्थान—अश्रक हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमेंसे निकलताहै ॥

पहिचान—इसके कई पड़त जुड़े रहतेहैं उनको जुदे २ खोलनेसे पतले कागजके जैसे पत्र अलग २ होजातेहैं और उनमें काचकी भांति पार दीखने लग जाताहै । इन पत्रोंकी चौड़ाई और लम्बाई डेढ़ फुटतक होतीहै ॥

वैद्यकके कई ग्रंथोंमें इसको चार और कइयोंमें आठ प्रकारका लिखाहै । और आधुनिक खनिजविद्या जाननेवालोंने भी इसको कई प्रकारका लिखाहै परन्तु वे लोग इसके रोगनाशक गुणोंको नहीं जानतेहै ।

यह वैद्यकमें उपरसोंमें गिना जाताहै । इसकी भस्म करनेके पहिले इसको कई रीतियोंसे शुद्ध करते है । भस्म करनेके लिये केवल काले रंगका अश्रक लेना चाहिये, क्योंकि दूसरे रंगके अश्रकमें इतनी शक्ति नहीं है ।

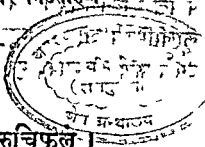
शुद्ध और भस्म करनेकी रीति—अश्रकको कोयलोंमें खालकर दूध, जौलाईके रस और कांजीमें पांच २, सात २, बेर, सुभा उसके पत्र अलग २ कर गरम पानीसे धो साफकर महीन चूर्ण बना भस्म करनेके लिये आकडेके दूधमें खरल कर टिकिया बांध सुखा सराव-संपुटमें कपड़ मिट्टीसे बन्धकर गजपुटकी आंचमें फूरे देना चाहिये । स्वांग शीतल होनेके पीछे निकालकर अर्कदुग्धमें फिर खरलकर सुखा, संपुटमें धरकर उक्त रीतिसे ५-७ आंच देना चाहिये इसी भांति

बड़की जटाके काथमें खरल कर २ के ५-७ आंच दें, हरेक बार दोदा दिन खरल करके आंच देना चाहिये, यहां तककि इसकी भस्मकी चमक विलकुल जाती रहे. ऐसे भस्म किया हुआ अभ्रक लाल या इटके रंगका होजाताहै । ऐसी भस्मको औपधिक प्रयोगमें लाना चाहिये ।

प्रयोग—( १ ) अभ्रकभस्मको लवंग और मधुके साथ चटानेसे वाय्व्य बढताहै । ( २ ) इसकी मात्रा लेके ऊपर मिश्री मिला कच्चा दूध पीनेसे पित्तके विकार मिटतेहै । ( ३ ) पीपल और मधुके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै । ( ४ ) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै । ( ५ ) मिश्री और जोखारको पानीमें मिलाके उसपर अभ्रकभस्म घुरकाके पिलानेसे मूत्रघात और मूत्रकृच्छ्र मिटतेहै । ( ६ ) ६ भासेसे तोले भर खमीरासंदलमें एक रतीसे ४ रतीतक अभ्रकभस्म मिलाके चटानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै । ( ७ ) इसके और मिश्रीके चूर्णमें चन्दनके तेलकी ३० बूंद या गंधविरोजके तेलकी २० बूंद या दोनोंकी दस ३ बूंद मिलाके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै । ( ८ ) अदरकके रसको गर्मकर ठण्डा होनेपर अभ्रकभस्म और मधु मिलाके चटानेसे श्वास और कास मिटताहै । ( ९ ) अडूसेके रस और मधुके साथ चटानेसे पित्तकी खांसी मिटतीहै । ( १० ) कटेरीके काथ के साथ देनेसे कफका कास मिटताहै । ( ११ ) लवंग और मधुके साथ चटानेसे वाय्वीका कास मिटताहै । ( १२ ) अभ्रक और सुवर्णभस्मको मधुके साथ चटानेसे राजयक्ष्मा और शोपरोग मिटताहै । ( १३ ) रक्तपित्त मिटानेके लिये इसको छोटी इलायची और मिश्री के साथ या अडूसेके रस तथा काथके साथ या गिलोयके खरस तथा काथके साथ देना चाहिये । ( १४ ) इसको और हरडकी बालको गुडमें मिलाकर गोली बनाके देनेसे या शतावर और मिश्रीके साथ फकी देनेसे वातरक्त मिटताहै । ( १५ ) इसको मधु, घृत और त्रिफलाके साथ देनेसे त्रिनेत्रविकार मिटतेहै । ( १६ ) शुद्ध शिलाजीत पीपल और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै । ( १७ ) शूरणकंदको भूभल में सेक पीस सुखाके उसमें अभ्रकभस्म और गुड मिला गोली बनाके देनेसे वातार्श मिटताहै । ( १८ ) शुद्ध भिलावे १ भाग, काले तिल १ भाग, साल उतार गुड २ भाग, अभ्रकभस्म १६ वां भाग मिला गोलियां

बना १ मासे से ४ मासे तक देनेसे पित्तार्श-मिटता है। ( १६ ) अद्रकके काथ के साथ इसको देनेसे कफार्श मिटता है। ( २० ) इसको काले तिल और मक्खन के साथ चटानेसे रक्तार्श मिटता है। ( २१ ) सोंठके साथ फक्की देनेसे वातातिसार मिटता है। ( २२ ) शूल और मिश्रीके चूर्णके साथ या नागर-मोथेके चूर्णके साथ फक्की देनेसे रक्तत्रिसार मिटता है। ( २३ ) लोद और मिश्रीके चूर्णके साथ या वीलगिर और मिश्रीके साथ फक्की देनेसे पित्तातिसार मिटता है। ( २४ ) अतीसके साथ या सोंठ-मिर्च और पीपलके साथ इसका सेवन करनेसे कफातिसार मिट जाता है। ( २५ ) मुरली की हूरडे या सोंफ और गुलकंदके काथके साथ देनेसे आम्रातिसार मिटता है।

संख्या ( २३ )



( सं० ) अमृतफलं, अमृताहं, रुचिफलं ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजगती	मरहंटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
नासपाती	नासपाती		नासपात(ता)	नासपाति	नासपाती	नासपाती
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				<i>Pyrus Communis</i>		<i>Pyrus</i>

स्थान— इसके वृक्ष काश्मीर और हिमालयके उत्तर पश्चिम भागोंमें होते हैं।  
 पहिचान— इसका कावेदार छोटा वृक्ष होता है। यह जंगली और बोये-हुएके भेदसे दो प्रकारका होता है, पहाड़ी ( जंगली ) का फल कठोर और स्वादहीन होता है, इसके श्वेत पुष्प लगते हैं।  
 फूलने फलनेका समय— इसके फाल्गुन और चित्रमें पुष्प लगते हैं और वर्षाश्रुतमें फल लगते हैं ॥

प्रयोग—(१) इसका फल मीठा, कुछ खट्टा और पचनेमें भारी है।  
 (३) वायु और अरुचीको मिटाती है। (१३) वीर्यको बढ़ाता है। (१४) इसके शर्बतमें बीलगिर या अंतीस मिलाके चटानेसे रक्तोत्सार मिटती है। (१५) रक्तकी वमन बंद करनेके लिये बैरकी मीजी बुरकाके चटाना चाहिये। (१६) नासपातीके स्वरसमें शकर डालके पिलानेसे पित्तकी मस्तरूपीड़ा मिटती है।  
 (७) इसके मुरब्बेमें नागकेशर मिलाके खिलानेसे रक्ताशका रुधिर बंध होता है।  
 (८) नासपातीका अधिक खाना टुककी हानिकारक है। (९) इसके उपद्रव को मिटानेके लिये अगरेका सेवन कराना चाहिये। (१०) इसके रसमें पीपल बुरकाके पिलानेसे पित्तकी मंदाग्नि मिटती है। (११) इसमें संधा नोन कालीमिरच और सेकाहुआ जीरा बुरकाके चाटनेसे अरुचि मिटती है। (१२) इसके फलोंका शाक, मुरब्बा और रसका शरबत बनाया जाता है ॥

१४००

संख्या (२४) अम्बर

अम्बर						
मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अम्बर	अम्बर					
द्राविडी	करनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		अम्बर	अम्बर	Ambergris		

स्थान—हिन्दुस्थान, आफ्रिका और ब्रजीलके आसपासके समुद्रमें इनके कनारोंके पास तैरता हुआ मिलता है।

पहिचान—सफेदी लिये हुए कुछ पीले रंगका छीटेदार अम्बर उसम होता है, यह चरपरा स्निग्ध और उत्तम सुगंधवाला होता है। हरा या काले रंगका अच्छा नहीं होता।

प्रयोग—( १ ) इसके सेवनसे मानसिक शक्तियोंका बल बढ़ता है। ( २ ) पुरुषार्थ बढ़ानेवाले पाक और अवलेहोंमें यह बहुधा मिलाया जाता है। ( ३ ) इसकी मात्रा एक रतीसे चार रती तककी है। ( ४ ) इसको पानमें रखकर खिलानेसे कफके रोग मिटते हैं। ( ५ ) सोनेके बरक पिसेहुए मोती और अम्बर को मधुमें मिलाकर चटानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है। ( ६ ) लॉग, जायफल और अम्बरके सेवनसे वादीके रोग मिटते हैं। इसको वातनाशक तेलमें मिलावनेसे उसकी वातनाशक शक्ति बढ़ जाती है। ( ७ ) इसको घृतके साथ चटानेसे विपका नाश होता है। ( ८ ) ब्राह्मी और शंखावलीके साथ इसको मधुमें मिलाकर चटानेसे उन्माद मिटता है और स्मरणशक्ति बढ़ जाती है। ( ९ ) कस्तूरी, केशर और शुद्ध हिंगलूके साथ इसको पानके रसमें खरलकर गोखियां बनाके खिलानेसे शीत और पसीना मिटता है। ( १० ) इसके उपद्रवोंको मिटानेके लिये धनियें की पंजीरी खिलाना चाहिये। ( ११ ) कपूरको सुंधानेसे इसका मद् बढ़ता है। ( १२ ) वृद्धावस्थामें इसका सेवन बहुत लाभकारी है। ( १३ ) अतः रोगवालेको इसका सेवन नहीं करना चाहिये।

संख्या ( २५ )

( सं० ) अम्लिका, चिंचा, तिन्तिडीका, सुक्ता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
आमली	इम्ली	आवली	चिंच	तेतुल	इम्ली	चिंचा चिंचपट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अ०	
पुळि	हुण्णिशेहण्ण	तमरहिंदी		Tamarindus indica 1. Officinalis	Tamarind	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके जंगल और बागोंमें संघट्ट और होते हैं।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होती है एकका बीज छोटा और लालरंगका

होती है बड़ा गुजरातमें होती है । और दूसरीके बीज कुछ बड़े होते हैं यह सब ठौर होती है । इसकी ऊंचाई प्रायः २० फुट तक और पेदडकी गुलाई २५ फुटकी होती है । इसके पत्ते २ इंच लम्बे, चौड़ाई इंच चौड़े, उनकी लम्बाईके दोनों और के कनारों गोल और पतझड़में नहीं गिरते हैं । इसके पीले रंगके लाल रङ्गिटे दूर पुष्प लगते हैं । इसका फल चपटा और ८ इंच तक लम्बा होता है । कच्चे फलका स्वाद खट्टा और रंग भूरा होता है पकनेपर खट्टा होता है इसमेंसे जायुनी रंगके बीज निकलते हैं ।

**फूलने फलनेका समय**—यह वर्षा ऋतुमें फूलती है भादवमें इसके फल लगते हैं और बसन्त ऋतुमें पकते हैं ।

**गोंद**—इसके बच्चे भूरे रंगका गोंद लगता है ।

इसके पत्तोंमेंसे लाल रंग निकाला जाता है ।

**तेल**—इसके १०० तौल बीजोंमेंसे ५६ तौल तेल निकलता है । यह गाढ़ा और कहरवे के रंग जैसा होता है उसमें गंध और स्वाद नहीं होता है । यह तेल सूखता नहीं है, इसके गीले बीजोंमेंसे पांचवां भाग तेल निकलता है सूखे बीजोंमें से इतना नहीं निकलता ॥

- प्रयोग**—( १ ) इसका फल पाचक, चित्तप्रसन्न करनेवाला और वातघ्न है । ( २ ) इसके फलके सेवनसे विगंडे हुए पित्तसे पैदा हुए रोग मिटते हैं । ( ३ ) शरीर की दाह और बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये इसका पका हुआ फल खाना चाहिये । ( ४ ) यह धतूरे और मदिरा के नशकों कम करती है । ( ५ ) इसके गूदेका लेप करनेसे शोथ मिटती है । ( ६ ) कच्चे फलका गूदा शोषक है । ( ७ ) पके हुए फलका गूदा स्मारक है । ( ८ ) यह पित्तकी वृद्धि को रोकता है । ( ९ ) इसके पानीसे कुल्ले और गरारा करनेसे गलेकी पीड़ा मिटती है । ( १० ) इसके बीज शोषक है । ( ११ ) इसके बीजका पुलिटिस बाधनेसे फुन्सियां मिटती हैं । ( १२ ) इसके पत्तोंको पीस रस निकालके पित्तज्वरमें पिलाते हैं । ( १३ ) मूत्रकी दाह मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये । ( १४ ) पत्तोंका पुलिटिस बनाके शोथपर बांधनेसे खिसकी

पीड़ा मिट जाती है । ( १५ ) पुष्पांका पुलिटस वाधनेसे आखकी सूजन उतरती है । ( १६ ) पुष्पांका रूस पिलानेमे रक्तार्श मिटता है । ( १७ ) इसकी बाल शोषक और त्वक्कट्टक है । ( १७ ) इसके फलके गूदेको पानीमें डाल कर शकर मिलाके पिलानेसे बच्चोंको रेश होता है । ( १८ ) टाह और पिचविकार मिटानेके लिये इसके काफल पचे और पुष्पांका शाक बनाके गिलाना चाहिये । ( १९ ) पत्ताके त्वायसे घावको धोनेसे बहुत दिनोंतक रहनेवाला ब्रूल मिट जाता है । ( २० ) इसके बीजोंके छोटे २ टुकड़े कर रातभर पानीमें भिगो के खानेसे वीर्य पुष्ट होता है । ( २१ ) पके हुए बीजके छिलके को चूर्ण ४ मासे ६ मासे जीरा और ६ मासा मिश्री इन सबको मिलाके तीन भाग कर एक भागको तीन २ घंटे बाद देनेसे पुगना आमातिसार मिटता है । ( २२ ) इसकी बालकी भस्म पाचक है । ( २३ ) पत्ताके रसमें खंडी बुझाकर देनेसे आमातिसार मिटता है । ( २४ ) एक वर्षके मोधेकी जड़े और काली मिर्च दोनों बराबर ले दहीके मट्टेके साथ पीस गोलियां बना दिनमें तीन बेर देनेसे कपसे कम दो जियादेसे जियाट २० और सरासरी ६ दिनमें आमातिसार मिट जाता है । ( २५ ) फलके गूदेको ठण्डे पानीमें पीस मुंडे हुए शिरपर लगेने से लूका अमर और मूत्र मिटती है, इसका शर्वत ठण्डा और सारके है । ( २६ ) मिश्रीके साथ इसका शर्वत बनाके पिलानेसे हृदयकी टाह मिटती है । ( २७ ) पकी हुई इमलीके गूदेको हाथ और पैरोंके तलवां पर मटन करनेसे लूका अमर मिटता है । ( २८ ) पकी इमलीको पानीमें मले उस पानीमें कपड़ा भिगोके सिरकी तरफसे पैरोंतक शरीर पर फेर भड़का भड़का कर सात दफे फिरनेसे लूका अमर मिटता है । ( २९ ) इसके गूदेके रसमें नोन भिरेव सेका हुआ जीरा और शकरा मिलाके पिलानेमे अथवा भोजनके साथमें खानेसे अरुचि मिटती है । ( ३० ) इमलीके बीजको जलमें भिगो उनके छिलके दूरकर सुखी महीन पीस दुगुनी मिश्री मिलाकर फक्की देके ऊपर दूध पिलानेसे श्वेतमदर मिटता है और वीर्य पुष्ट होता है । ( ३१ ) इसके पत्ताको पीस कर लेप करनेसे नारुकी शोथ और जलन मिटती है । ( ३२ ) इसके पचांग के खारको मिश्रीके साथ देनेसे मंदाग्नि मिटती है । ( ३३ ) इसके छिलके



नीचे रहनेमें शरीरका स्वास्थ्य विगड़जाताहै । ( ३४ ) इस वृत्तके नीचे बहुत समयतक कपड़ा पड़ा रहनेसे गलजाताहै । ( ३५ ) वर्षा ऋतुमें इसकी छायामें रहना बहुत हानिकारकहै । ( ३६ ) इसके पत्ते कीड़े मारनेके काममें आतेहैं । ( ३७ ) छिलके दूरकिये हुए बीजोंके चूर्णकी फक्की देनेसे आतिसार और आम्रातिसार मिटताहै । ( ३८ ) इसके बीजोंके सवा तोले छिलके, ६ मासा जीरा और मीठा होजानेके लायक ताड़की शक्कर इन तीनोंको महीन पीसतीन भाग कर तीन २ चार २ घंटेके अंतरसे फक्की देनेसे पुराना आम्रातिसार मिटजाताहै । ( ३९ ) इमलीके बीजके लाल छिलके शान्तिकारक और थोड़े ग्राहीहैं । ( ४० ) इसके बीजोंको घिसके फुन्सियों पर लेप करतेहै । ( ४१ ) पत्तोंके रसमें मिश्री मिला के पिलानेसे आम्रातिसार मिटताहै । ( ४२ ) २॥ तोला इमली और २॥ तोला छिवारि सेरभर दूधमें थोटा छानके ज्वरवालेको पिलानेसे उसकी दाह और घबराहट मिटतीहै । ( ४३ ) पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे आम्रातिसार मिटताहै । ( ४४ ) औषधिके प्रयोगमें पुरानी इमली काममें लाना चाहिये । ( ४५ ) स्वाभाविक बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये १५-२० वर्षकी पुरानी इमलीका शर्वत बनाके पिलाना चाहिये । ( ४६ ) इमलीके पत्तोंके रसको थोड़ा गर्म करके पिलानेसे आम्रातिसार मिटताहै । ( ४७ ) स्त्रियोंके दूध बढानेके लिये शुराने वृत्तका रस पिलाना चाहिये । ( ४८ ) कच्ची इमलीकी चटनी बनाई जायीहै । ( ४९ ) इसके बीज तीनचार दिन पानीमें भिगो, उनके काले छिलके दूर कर, पीसके बराबर घृग मिला, चने प्रमाण गोलियां बनाके दो गोली नित्य देनेसे प्रमेह मिटताहै और वीर्य्य पुष्ट होताहै । ( ५० ) ६ मासे इमलीको २ सेर जलमें थोटा, आधा पानी रखकर उसमें तोलेभर गुलाब जल मिला छान के कुछे करनेसे कंठकी सूजन उतरतीहै । ( ५१ ) इसके बीजोंको पीसके भगमें मलनेसे संकोचन होताहै । ( ५२ ) इमलीका पानी पीनेसे उदरका बल और भूख बढतीहै और आंतोंके घाव मिटतेहै । ( ५३ ) पित्तकी छर्दी और गर्माके ज्वर पर इमलीका शर्वत पिलाना चाहिये । ( ५४ ) इसके बीजोंकी १ से २ मासे तक भस्मको दहीके साथ चटानेसे रक्तार्श मिटताहै । ( ५५ ) इमलीको पानीमें भिगो मल छान थोड़ा शक्कर मिलाकर पीनेसे पित्तकी

मस्तकपीडा मिटती है । ( ५६ ) इमलीको पानीमें भिगो उस पानीके कुल्ले करनेसे पित्त का मुखपाह मिटता है । ( ५७ ) इमलीके बीजोंको पानीमें भिगो उनके छिलके दूरकर पीस बत्ती पर लेपकर उस बत्तीको नासूरमें रखनेसे नासूर मिट जाता है । ( ५८ ) इमलीकी छालके चूर्णको घीमें मिलाकर लगानेसे अग्नि-दग्धका ज्वर मिटता है । ( ५९ ) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे भिलायिके विषके उपद्रव मिटते हैं । ( ६० ) इसके बीजोंका पुलिस बांधनेसे फोड़ा पक जाता है । ( ६१ ) दो तोले इमलीको रातभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उसके नितरे हुए पानीको ध्यान उसमें थोड़ा घूरा मिलाकर ईसबगोलकी फर्ककी देके उपर पिलानेसे पित्त-ज्वर मिटती है । ( ६२ ) इमलीको नीचूके रसमें मसल ध्यानके चटानेसे विमृचिका का शोष मिटता है । ( ६३ ) इमलीके बीजोंकी मींगी और वावची दोनों बराबर ले पानीके साथ पीसके लकड़ीसे लगानेसे सफेद दाग मिटते हैं । ( ६४ ) इसके बीजोंको नीचूके रसमें पीसके लगानेसे दाद मिटता है ।

संख्या ( २६ )

अरितमंजरी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	कुप्पी	बछिकाटो	खोलली	मुक्तजुरी		कुप्पिटकु
द्राविडी	कर्णाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कुप्पैमेनि	तुप्पकरै			<i>Acalypha-indica</i> <i>A. spicata</i>		

स्थान—इसके वृक्ष, हिन्दुस्थानमें, सडकोंके کنارे और बागोंमें सब ठौर होते हैं ।

पहिचान—इसका पेड़ १-२ फुट ऊंचा होता है इसके बरिह महीने पुष्प लगते रहते हैं । बिह्लीको इसकी जड़ इतनी मिय है कि जितनी बालबड़ ।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते और लहसन का काथ पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं, (२) बच्चोंके पेटके कीड़े निकालनेके लिये इसके सूखे पत्तोंका चूर्ण देतेहैं, (३) बच्चोंके आमोशय और छातीमें जमे हुए गाढ़े कफको उलटी करा के निकालनेके लिये इसके पत्ते और कोमल डालियोंके स्वरसमें नीमके तेल की कुछ बूंदें मिलाके उनको जीभपर मलतेहैं । (४) इसका काथ पिलानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै । (५) पत्तोंको पीस सादा निमक मिलाके मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै । (६) पत्तोंके स्वरसमें तेल मिलाके मर्दन करनेसे गाठियाँ मिटतीहै । (७) इसकी जड़के काथसे विरेचन (जुल्लान) लगताहै । (८) इसके पत्तोंका स्वरस बच्चोंको पिलानेसे तुरन्त और बिना उपद्रवसे उलटी होतीहै । (९) इसके प्रयोगसे न तो आँतोंमें विशेष गड़बड़ होतीहै और न शरीरकी शक्ति घटतीहै परन्तु हृदयादिक अंगोंमेंसे दुष्ट रस बहने लगतेहैं । (१०) इसके सूखे पत्तोंके हिम या फाटमें त्रिधा गीले वृक्षके सतमें भी यी गुण बने रहतेहैं । (११) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे कर्णशूल मिटतीहै । (१२) उपदंशकी टांकियोंपर इसके पत्तोंका पुलिटस बांधनेसे लाभ होताहै । (१३) इसके पत्तोंकी टिकिया बनाके सर्पके दंशपर बांधना चाहिये । (१४) तीव्र उन्माद (पागलपन) के प्रारम्भमें इसका प्रयोग इसप्रकार किया जाताहै कि २॥ ताले ताजे स्वरसमें ३ रती सैधा या सादा निमक गलाके प्रातःकाल दोनों नखथोडियोंमें डाल ठंडे पानीके फवारेसे स्नान करावे ऐसे लगातार ३ दिन तक करनेसे नाक टपने लगेगी और उससे मस्तकमें जमे हुए दुष्ट कफादिक निकलके पागलपन मिट जाताहै । (१५) ताजे पत्तोंको पीस बड़ी गोली बनाके गुठामें रखनेसे बच्चोंका आनाह मिटताहै (१६) कनखजूरेके काटनेसे जो दाह होतीहै उसको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस अथवा पत्ते पीसकर लगाना चाहिये । (१७) ताजे पत्तोंके रसमें चूना मिलाके गाठियापर लेप करतेहैं । (१८) पत्तोंके रसको दाँदपर लगाना गुणकारीहै । (१९) इनको नमकके साथ पीमके पिजानेसे अफाग मिटताहै (२०) मस्तकमें दुष्ट रसादिकके जम जानेसे जो पीड़ा होतीहै उसको मिटानेके लिये चौदहवा प्रयोग करना चाहिये अथवा पत्तोंके स्वरसमें रूई भिगोकर दोनों नखथोडियोंमें रख देनेसे नाक टपकने

मस्तक शुद्ध होजाताहै। (२१) विस्तरेपर स्नागातारः लेटेरहनेसे टांकी होके उसमें जो कीड़े पड़जातेहैं उनपर इसके पत्तोंके चूर्णको धुस्कानेसे कीड़े मरजातेहैं और उनका घाव भरजाताहै। (२२) बच्चे और बूढ़ोंके श्वासकासके रोगमें यह मयोग करना चाहिये कि ७॥ तोले पत्ते डालियुं और पुष्पोंको २॥ पाव स्फिरिटमें वृन्द वरतनमें ७ दिनतक भिगाके दिनमें दो तीनवार हिलादेव अंतमें मल ब्यानकर २॥ पाव में बाकीकी स्फिरिट और मिलाके वातल भर रक्खे इसकी २० से ६० तक घूदे मधुमें मिलाके दिनमें दोतीन बेर देना चाहिये। (२३) बच्चोंके लिये पत्तोंके स्वरसकी ३॥ मासे तक मात्राहै और जवानके लिये ३॥ से १॥ तोले तकहै। (२४) पौनचार भासैसे सवा तोले तक इसका ताजा रस भिलानेसे बर्मन और विरेचन होतेहैं। (२५) इसके पत्ते और चूनेको पास लेप करनेसे सुमेला आदि त्वचके रोग मिटतेहैं। (२६) इसके पत्ते और चूनेको पास लेप करनेसे सुमेला आदि त्वचके रोग मिटतेहैं। (२७) इसके पत्ते और चूनेको पास लेप करनेसे सुमेला आदि त्वचके रोग मिटतेहैं। (२८) इसके पत्ते और चूनेको पास लेप करनेसे सुमेला आदि त्वचके रोग मिटतेहैं। (२९) इसके पत्ते और चूनेको पास लेप करनेसे सुमेला आदि त्वचके रोग मिटतेहैं। (३०) अरिष्टः, फानिलः, रक्तवाजः, मृगल्यः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मैरथी	बंगाली	पंजाबी	सैलडी
रिठा	रिठा	रिठा	रिठा	रीठा (ठा)	रेठा	कुकुटु चेट्टु
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कुकुटु काय	बदक	रिठा		<i>Sapindus trifolius</i> <i>S. emarginatus</i>	(8) Soapberry (4) Soap nut	

स्थान यह दो प्रकारका होताहै एका संयुक्त प्रदेश, बंगाल, आसाम आदि देशोंमें होताहै और दूसरा दक्षिण हिन्दुस्थान, संयुक्तप्रदेश और बंगाल में बहुत बौरा जाताहै। (२९) इसके पत्ते और चूनेको पास लेप करनेसे सुमेला आदि त्वचके रोग मिटतेहैं। (३०) अरिष्टः, फानिलः, रक्तवाजः, मृगल्यः।

फूलने फलनेका समय—इसके आसोजसे मृगशिरस्तक पुष्प लगतेहै और माघसे चैत्रतक फल प्रकतेहै ॥

तेल—एकके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै वह साबुन की ठौर काममें आताहै । दूसरे के बीजोंकी मींगीमेंसे जो तेल निकलताहै वह आधा गाढा होताहै और औषधिके प्रयोगमें आताहै । इसका फल साबुनकी ठौर काममें आताहै ।

गोंद—इसके गोंद लगताहै ॥

प्रयोग—(१) इसका फल अधिक-थूंक गिरानेके-लिये और संन्यास रोगमें-दिया जाताहै । (२) इसके फलको चूसनेसे सूखी खांसी मिट जातीहै । (३) इसके फलके चूरण से हरित्पाण्डु ( जिस रोगमें ग्लूब पीला पड़-जाताहै ) मिटताहै । ( ४ ) मिरगीकी बारीके-दिन इसके बीजोंको पानीके साथ पीसके मुंघाने और थोड़ासा मुंहमें रखनेसे उसका वेग रुकता है । ( ५ ) इसका फल बालकके गलेमें लटकानेसे हिचकी बन्ध होतीहै । ( ६ ) ७ मासे अरीठा खानेसे श्वास मिटताहै ।

प्रयोग दूसरेके—( ७ ) इसकी २ रती गिरको शरबत या जलके साथ देनेसे शूल मिटतीहै । ( ८ ) इसकी ४॥ मासे गिरको पानी में मथके भाग पैदा होनेपर छानके पिलानेसे सापका विष उतरता है । ( ९ ) अतिसार और विस्त्रुचिकावालेकी दस्तें बन्द करनेके लिये भी इसी जलको पिलाना चाहिये । ( १० ) इसकी १॥ या २ रती गिरको मुंघानेसे वे सब प्रकारके वेग मिटतेहै कि जिनसे मनुष्य अचेत हो जाताहै । ( ११ ) इसका बफारा या नास देनेसे स्त्रियोंके आवेश के रोग और मनका उदासपन मिटताहै । ( १२ ) इनको सिरकेमें पीस विपैले जीवोंके दंश पर लगतेहैं । ( १३ ) इनका गंडमाला की मूजन पर लेप किया जाता है । ( १४ ) सूखी खांसीमें इसकी जड़के चूर्णकी फक्की दीजातीहै । ( १५ ) समय पर ब्रह्माग्भाशियसे जल्द्री-निकलनेके लिये और ऋतुधर्म के समयमें रुधिर का ठीक प्रवाह होनेके लिये इसके बीजोंकी मींगी की बत्ती घनाके योनीमें देनी चाहिये । ( १६ ) तीव्र विरेचन करानेके लिये

इसकी ४॥ मासे मींगीमें आठवां हिस्सा सकमुनिया मिलाके देना चाहिये । ( १७ ) इसकी मींगी श्वासरोगमें लाभकारी है । ( १८ ) इसकी थोड़ीसी मींगीको मुहमें रखनेसे मिरगीवालेको चेत होजाता है । ( १९ ) कृमिरोगमें भी इसका प्रयोग किया जाता है । ( २० ) एकफलकी मींगीको स्त्री या गायके दूधमें पीसके नासदेने और अर्जन करने से अचेतपन और मत्ताप मिटता है । ( २१ ) इसकी गिरको पानीमें पीसके पिलानेसे वमन होती है । ( २२ ) इसकी गिरीको पानीमें पीसके पिलानेसे विप उतरता है । ( २३ ) इसकी मींगी और कालीमिरच धरावरले चूर्ण बनाके २॥ मासेसे ३॥ मासेतक फन्की मिरगी वाले को देनी चाहिये । ( २४ ) इसको पानीमें पीसके नस्य देनेसे आवा-शीशी मिटती है । ( २५ ) त्रिच्छू और कनखजूरेके डंककी सोई पर इस का लेप करना चाहिये, या पुन्डिस बांधना चाहिये । ( २६ ) हिम या फांटकी मात्रा यह है कि एक फलको २॥ या ५ तोले पानीमें भिगो मल ध्यानके पिलाना चाहिये ( २७ ) वमन करानेके लिये ३॥ से ७॥ मासे तक चूर्णकी फन्की देनी चाहिये । ( २८ ) कफ निकालनेके लिये ५ से १० रती तककी फन्की देनी चाहिये । ( २९ ) इसकी १॥ मासेसे २॥ मासे तककी फन्की देनेसे उत्क्रेद होता है । ( ३० ) बीज गुठली और छिलके समेत अरीठे को पीसके मिरगी-वालेको नित्य सुंधानेसे मिरगी मिटती है । ( ३१ ) एक तोले अरीठेको रातभर पानीमें भिगोके उसका नितराहुआ पानी पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ॥

संख्या ( २८ )

( जसं० ) अर्कः, चीरदलः, खर्जुघ्नः, विकीरणः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आक (कडो)	अकौआ मदार	आकडो	रुई	आक द	आक	जिल्लेडु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
योरिक्	यक्कदगिड	उशर	खरक	Calotropis gigantea As Jopias		Gigantic swallow wort

स्थान—यह हिमालयमें पंजाबसे दक्खिन हिन्दुस्थानतक और ब्यासाम, सीलोन, सिंधापुर और राजपूताना आदि कई देशोंमें होता है ।

पाहियान—लाल और सफेदके भेदसे आठ दो प्रकारका होता है। इसके फलमें गिरी नहीं होती छोटे २ बहुतसे बीज होते हैं उनमें हरेके एक और प्रायः १ इंच लम्बी सफेद रंगके बारीक रूएकी कूची लगी रहती है। जब फल पककर फट जाता है, तब बीज निकल जाते हैं और वह कूची खुलके गोलाकार बन जाती है ॥

इसका पंचांग औषधिके काममें आता है परन्तु दूध, या सुखाया हुआ दूध, ताने पुष्प और जड़की छाल औषधिके प्रयोगमें बहुत आते हैं ॥

प्रयोग—( १ ) इसका दूध तीव्र रचक और दाहक है इस कार्यके लिये थूहरके दूधके साथ बहुधा इसका प्रयोग किया जाता है। ( २ ) इसके पत्तोंकी नमकके साथ सूट मिट्टीके बरतनमें बन्धकर जला उस भस्मकी मट्टके साथ फक्की देनेसे जलंधर मिटती है और तिल्ली आदि यंत्र जो पेटमें बंद जाया करते हैं वे सब अपनी दशापर आजाते हैं, ( ३ ) जड़की छालको कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे पर और फोतीकी गज चर्मके समान मोटी पीड़ा हुई चमडी पीछी पतली हो जाती है। ( ४ ) इसके और थूहरके दूधमें दारू हलदेके चूर्णकी उची बनाके गुदाके नासूर और अस्थिव्रणमें देते हैं। ( ५ ) इसके दूधको गधुम मिलाके लगानेसे मुँहके छाले मिटते हैं। ( ६ ) इसके दूधमें रुई भिगोके घीमें तलकर डोढ़में रखनेसे उसकी पीडा मिटती है। ( ७ ) दूध लगानेसे गोडोंकी शोथ और पीडा मिटती है। ( ८ ) ताजे पत्तोंको उष्ण कर बांधनेसे भी जाडोंकी शोथ और पीडा मिटती है। ( ९ ) पत्तोंको तेलमें तलकर उस तेलका मर्दन करनेसे अंगका शून्यपन मिटता है। ( १० ) सूखे पत्तोंके चूर्णको बुरकानेसे घात्र जल्दी भगने लगता है। ( ११ ) इसके ताजे चोफले और कालीमिरच दोनों बराबर ले, पीस २॥-२॥ रतीकी गोखिया बनाके दिनमें ४-या ६ बेर देनेसे श्वास, मिरगी और वाइटे मिटते हैं, रुधिर शुद्ध होता है और स्नायुजालकी शक्ति बढ़ती है। ( १२ ) इसकी जड़की छालको बकरीके दूधमें पीसके नाकमें टपकानेसे मिरगीका वेग रुकता है।

( १३ ) इसकी जड़को बालकके सूत्रमें पीस लेप कर्क के कडे की आगसे तपानेसे पसेलीकी पीड़ा मिटतीहै । ( १४ ) जड़को नरोपर अद्रकके रसमें सरल कर चने प्रमाण गोलियां बनाके असाध्य विसृष्टिकाम भी देने से लाभ होताहै । ( १५ ) जड़की छालका चूर्ण देनेसे उपदंशसे सब शरीर में पीड़ा हुए व्रण मिटतेहै । ( १६ ) नवीन कौठको मिटानेके लिये इसके चूर्णकी फकी देनी चाहिये । ( १७ ) इसके प्रयोगमें त्वचाके कई प्रकार के रोग मिटतेहै । ( १८ ) इसके २॥ रती चूर्णकी फकी देनेसे पसीना होके वे सब ज्वर उतरजातेहै कि जिनसे शरीरमें अत्यन्त दाह अथवा दाह युक्त शोथ या क्वाथु सम्बन्धी पीड़ा अथवा शरीरमें चमचमाहट हुआ करती हो । ( १९ ) त्वचाके रोगोंमें मनुष्य बहुधा इसका दूध लगाया करतेहै परन्तु जो क्षतके ऊपर दूध लगाया जायता बहुत दाह हो जातीहै और क्षत बिगड़ जाताहै । ( २० ) इसके तीजे दूधमें मक्का मिलाके चोट और मुरड पर लेप करना चाहिये । ( २१ ) इसके दूधकी अधिक मात्रामें विष जसा प्रभावहै । ( २२ ) इसके २॥ से ५ रती दूधमें पाव रती अफीम मिलाके दिनमें दो तीन बेर देनेसे आमातिसार मिटताहै । ( २३ ) इससे पेटमें ऊष्मा बढ़कर भ्रुव लगने लगजातीहै । ( २४ ) इसके ५ रती चूर्ण को चपटाई औषधिके साथ पानी में भिगोके पुरानी गठियावाले को देना चाहिये । ( २५ ) २॥ से ५ रती इसकी जड़की छालकी फकी देनेसे आमातिसार मिटताहै । ( २६ ) ६ रती इसकी जड़की छाल और १२ कालीमिरच पीसके दिनमें २ गबेर देनेसे कामला ( पीलिया ) मिटताहै । ( २७ ) इसकी जड़का का प पिलानेसे ज्वरमें चर्चोंका मलाप करना और हाथपर तातना बन्द होजाताहै । ( २८ ) इसका लेप करनेसे नहरेकी शोथ मिटतीहै । ( २९ ) इसके पत्ते गर्म करके पांशने से नहरेकी सूजन मिटतीहै । ( ३० ) इसकी ७॥ रती छालमें आध रती अफीम मिलाके लगानार ठेके रहनेमें तीव्र आमातिसार मिटताहै । ( ३१ ) बमने करनेके लिये इसका चूर्ण १५ रती और पसीना करानेके लिये २॥ रती देना चाहिये । ( ३२ ) इसके पीले पत्तों को पांश करके घृत लगीकर अग्निपर तपानेसे जब समईन लगे तब हथेलीमें मसरोके



कानमे निचोदेनेसे कर्णशूल मिटती है । (३३) इसके पुष्प कफ निकालनेवाले हैं । (३४) इसके पुष्पोंकी चोफूली और कालीमिरच बराबर ले इन दोनोंके बराबर बंबूलकी अंतरद्वालके गाढ़े किये हुए क्वाथमे पीस गोलियां बनाके देनेसे खासी और खैन् मिटता है । (३५) बड़कोष्ठवालेके पेट और नल्लोपर इसके पत्तोंको गर्म करके बांधनेसे दस्त साफ लग जाता है । (३६) इसकी जड़की, छालका धूआं पिलानेसे उपदंश मिटता है । (३७) इसके पुष्पोंकी ५-रती कलियों के साथ-कालीमिरच-और नमक मिलाके देनेसे मंदाग्नि, दिलगा धडकना, वमन और विसूचिका मिटती है । (३८) पत्तोंको काली मिरचोंके साथ पीसके मंजन करनेसे दात साफ रहते हैं । (३९) इसके दूधमे नमक मिलाके दिनके ३ बजे पीछे लेप करनेसे दंतपीड़ा मिटती है । (४०) इसकी छालका चूर्ण, हिम, फांट या काथ पिलानेसे यथोचित मासिकधर्म होने लग जाता है । (४१) इसके सूखे फूलका आध रती या एक रती चूर्णकी खांडके साथ फक्की देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है, इसमें दूध चावलका पथ्य देना चाहिये-। (४२) पत्तोंपर एरडका तेल चुपड़कर फोतोंपर बांधनेसे पित्तशोध मिटता है । (४३) एक इंचको गर्मकर, उसपर ६-७ पत्ते धरके, पैरको तपानेसे पैरके फोड़े मिटते हैं-। (४४) पत्तोंका क्वाथ करके पिलानेसे गाठियाकी पीड़ा मिटती है । (४५)-पुष्पोंका पुण्डिस बांधनेसे एड़ीकी पीड़ा मिटती है-। (४६)- इसकी जड़ या छालका क्वाथ पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है । (४७) इसके पुष्पोंके गुच्छेको तोड़नेसे जो दूध निकलता है उसके लगाने से खुनली मिटती है । (४८) बालू रेतमें पैदा हुए पुराने वृत्तकी जड़ चैत्र-वैशाख में ले, जलसे भली भांति धोकर छायामें इतने समय तक पड़ी रहनेदेवे कि उसके चीरा देनेसे दूधका निकलना बन्द होजाय फिर उसके ऊपरके छिलके को चाकूसे खुरचके अंतर छालको जड़पर से उतार छायामें सुखा पीस कपड़-बान करके डाटदार घोटलमें भरकर रखना चाहिये । (४९) बारीसे आनेवाले वेगको रोकनेके लिये और तीनों प्रकारके कुष्ठ, उपदंश, आतिसार, आम-तिसार, पुरानीगाठिया, पारेके विकार, त्वचाके रोग, कफ, जलंधर, सर्वांगशोध (जिसमें जल पैदा होगया हो) और प्रारम्भके फोड़ोंको मिटानेके लिये

इसका प्रयोग करना चाहिये । ( ५० ) ; इसकी जड़की ज्वालके प्रयोगसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं । ( ५१ ) ; घड़ेहुए तिल्ली आदि यंत्रोंको अपनी दशमें लानेके लिये और उनके रसके रूकेहुए प्रवाहको फिरसे जारी करनेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये । ( ५२ ) ; इसके पुष्प पाचके और तल बढ़ानेवालेहैं । ( ५३ ) ; कफ, श्वास, प्रतिश्याय, मंदाग्नि और पेटकी शूल मिटानेके लिये भी पुष्पोंका प्रयोग किया जाताहै- ( ५४ ) - इसका दूध कफको निकालनेवाला और रोगनाशकहै- ( ५५ ) ; इसका वृक्ष त्वचाके रोग, मस्तकके दाद, अर्श, कुष्ठ, जलंधर, यकृत और प्लीहवृद्धिको मिटाताहै और आंतोंके कीड़ोंको मारता है- ( ५६ ) ; इस वृक्षके और इसके अंगोंसे बनेहुए गुटिका आदिके प्रयोग से मात्र प्रकाशके वेग, अपस्मार, स्त्रियोंका आत्रेशका रोग, स्नान करके या स्नान करनेके पीछेही स्त्रीसंग करनेसे जो मांस पेशियों में एक प्रकार का तनाव और ऐंठन होजातीहै वह और रगोंकी ऐंठन " जैसे हनुस्तंभ, बच्चोंकी अनुवात, किसी अंगका जकड़ जाना " ठंडे पसीने आना, विपैले जीवों के काटनेसे जो विष चढताहै वह और उपदंश आदि मिटतेहैं । ( ५७ ) ; इसके दूधको चाँड़े पंटेके मिट्टीके ठाँवमें या प्यालेमें भरकर छायामें सुखा लें, यह सुखाहुआ दूध ठंडे या गर्म जलमें नहीं गलताहै, मधु और तेलमें पिघल जाताहै । इस सुखे दूधकी २ रतीसे अधिक मात्रा देनेसे तीव्र वमन या विरेचन होतेहैं अथवा दोनोंही होके भयंकर दाह होजातीहै । औपधिके प्रयोगमें आधरतीसे धीरे २ वडाके १॥ रतीतक फरदेना चाहिये । ( ५८ ) ; यह वाँइटे मिटानेकी, शारीके वेगको रोकनेकी, स्नायुजालकी शक्ति बढ़ानेकी, श्वास, अपस्मार, अंगकी अकड़ और शून्यता मिटानेकी बहुत उत्तम औपधि है । ( ५९ ) ; पीड़ा मिटानेके लिये इसके पत्तोंको गर्मकरके वाधना चाहिये और उनको कुछ समय तक उष्ण बने रहनेके लिये उनपर सूखा सेक करना चाहिये । ( ६० ) ; इसके दूधका लेप करनेसे नहरुवेकी सूजन उतरतीहै । ( ६१ ) ; आकफे हरे २ घीस तोले पचे और १४ भासें हल्दी, इन दोनोंको पीस उड़दकी बराबर गोलियां बना नित्य ४ गोली ताजा जलेके साथ देवे या एक गोली नित्य बढाता हुआ ७ गोली तक बढ़ा देनेसे जलधर मिटताहै । ( ६२ ) ; आककी मुंह मुंदी

हुई कलियां जितनी चाहे ले - उन सवमें एक। २ कालीमिरच रख गारकी हांडीमें भर उसमें ऊपर नमक बिछा मुंह कपड़मिट्टीसे बन्दकर ज्वले पर चढाके जलालेवे, स्वांग शीतल होनेपर उसमेंसे ४ रतीकी मात्रा देनेसे कफ और श्वास मिटता है। (६३) आककी कौपल पानमें रखे शीतकालमें एक २ कौपल तीन दिनतक खीये और चौथे दिनसे आधी २ कौपल बढ़ाता हुआ ४० दिनतक खानेसे कास और कफ मिटता है। (६४) आकके दूधमें ४ तोले गेहूँ तीन दिनतक भिगो उनको गारकी हांडीमें भर कपड़ापट्टीसे मुंह बन्दकर आरने कंडोकी आँचमें जला शीतल हुए पीछे पीस छानने उसमें चार तोले गुड़ मिला १४ मामे प्रमाण गोलियां बना एक भोली प्रातःकाल नित्य लेनेसे कास और श्वास मिट जाता है। (६५) आकके सूखे पत्ते २ से ४ तरु जला उनको भस्मको रात भर पानीमें भिगो उस पानीको नितारकर प्रातःकाल पीनेसे कफ और खांसी मिटती है। (६६) आककी जड़ पानीमें घिसकर अंजन करनेसे नाखून दूर होता है। (६७) आककी जड़की श्मासे भर छाल पानीमें भिगो दांतामें रखनेसे कीड़ेके कारणसे पैदा हुई दर्तपीड़ा मिटती है। (६८) आकका प्रीलापत्ता धिना छिद्रका लेके अग्नि पर तपा उसका रस कानमें १५ दिनतक निचोड़नेसे बहिरापन मिटता है। (६९) आकके पत्तोंकी बराबर सधानोंले दोनाको कुट हांडीमें भर कपड़मिट्टी से मुंह बन्दकर जला उस भस्मकी फकी देके ऊपर मट्टा पिलानेसे तिल्ली मिटती है। (७०) इसके पत्तोंके क्वाथसे धोनेसे उपदेशके घाव मिटते हैं। (७१) इसके पकेहुए पीले पत्तोंको टोना औरसे भलीभांति पोंछकर उनपर घी चुपड़ आगपर तपा कानमें निचोड़नेसे कानकी शूल और पीड़ा मिटती है। (७२) इसकी खार खिलानेसे कफ और श्वास मिटता है। (७३) इसकी जड़को कुट कड़वे तेलमें आशकर उस तेलका मर्दन करके इसके क्वाथ एरडिके पत्ते बांधनेसे हाथ पैरोंकी वादीकी पीड़ा मिटती है। (७४) इसके २१ पत्ते पाविमर कड़वे तेलमें एक एक पत्ता जलाके उस को उतार थोडा मैनसिल पीस उसमें मिलाकर शीशी में भरके रख छोडे, इसका मर्दन करनेसे खुजली आदि त्वचा के रोग मिटते हैं। (७५) एक भाग कालीमिरच और दो भाग इसकी जड़ लेकर बकरीके दूधमें

पीस चने प्रमाण गोलियां बनाके एक गोली बारीके पहिले देनेसे शीतज्वर छूटता है। (७६) सिर्पका विप उतारनेके लिये उसके दंशपर आकड़का दूध टपकाता रहे जर्मतके शरीरमें विप रहेगा तत्कालक दूध सुसता रहेगा जर्म विपका दोष शरीरमें नहीं रहेगा तत्र दंशपर भी दूध नहीं सुसेगा। (७७) इसकी जड़को चाविलोके पानीमें घिसकर नैस्य देनेसे कामलोरीमें मिटता है। (७८) इसकी तीन कोपल गुडमें लपेट खिलोके ऊपर घी पिलानेसे सांपका विप उतरता है। (७९) विच्छूके दंशपर इसका दूध लगानेसे उसका विप उतरता है। (८०) इसकी जड़ पानीकी साथ पीसके पिलानेसे सांपका विप उतरता है। (८१) आकका दूध आधपाव और मधु आधपाव लिके कढाईमें लोहे के दस्तेसे इतना घोटके उनके चपके कारणसे कढाई दस्तेके संग जमीनसे उठ आवे फिर उसमें चार मासे अफीम डालके घोटे जर्म अच्छी तरहसे मिलजाय तत्र उसको चीनी या काचके बरतनमें रखछोड़े। इन्दीका शिर छोड़ इसका लेपकर ऊपर नागखेलका पान लपेट गज्जीकी पट्टी बाबके एक पहरतक बैठा रहे फिर उस पट्टीको खोलकर २१ वेर धोया हुआ गायका घी इन्दीपर मर्दन करे ऐसे तीन दिन करनेसे कामकी निर्वलता मिटती है। (८२) कामकी निर्वलता मिटानेके लिये आकका दूध और गायका घी दोनों बराबर लिके १२ पहर खाल करके उसमेंसे एक रती प्रमाण इन्दीपर मर्दन करना चाहिये। (८३) दो भाग दूधमें एकभाग घी मिलाकर आचपर चढाके लकडीसे खूब रगड़े जब दूध जलकर घी शेष रह जावे तत्र उताके रख छोड़े और कामकी निर्वलता मिटानेके लिये इन्दीका शिर छोड़कर उसका मर्दन करके ऊपर लिसोड़ेके पत्ते एकपहर वधे रखकर फिर खोल डालना चाहिये। (८४) इसका एक पान और २५ कालीमिरचोंको पीसकर कालीमिरच बगवर गोलिया बनाके ७ गोली तरुणको और २१ गोली बालकको आशामें देना चाहिये। (८५) बावले कुचेके दंशपर आकका दूध लगाना चाहिये। (८६) इसका दूध छायामें सुखा जला कड़वे तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटते हैं। (८७) इसके दूधमें रुई भिगोव्यायामे सुखा बची बनाके सरसोंके तेलमें उस बचीको जलाकर काजल पाढ़के लगानेसे जामूर मिटता है।

(-८८) कोयलोंकी अग्निमें-इसके पीले पत्ते जलाः ४ रती भस्मः शहदके साथ चटानेसे ब्वर छूटताहै। (-८९) इसकी जड़ पानीके साथ, पीस गोलीबनाने गुट्टामें रखनेसे खुलकर दस्त, लग जाताहै। (-९०) जड़को पानीके साथ पीसकर पेटपर लेप करनेसे खुलकर, दस्त लग जाताहै। (-९१) इसकी सेरभर जड़को आठसेर पानीमें थोडावे-जब-दो सेर-पानी शेष रहे तत्र-उसमें सेरभर एरंडका तेल डाल-देवे, फिर पानी-जलकर तेल रहजावे, तब वरतन भरके रखछोड़े इसका मर्दन करनेसे वात-पीड़ा मिटतीहै। (-९२) इसकी एक तोले जड़ और ५ मासे, कालीभिरच, को पीस छान सवाचार तोले गुंडमें मिला जवारके बराबर गोतियां बना नित्य दो गोली देतेसे उपदंश मिटताहै। (-९३) इसकी जड़को बालकके मूत्रमें पीस लेपकर धूपमें बैठनेसे अथवा अग्निसे तपानेसे वादीकी पीड़ा-मिटतीहै।

संख्या ( २६ )

( सं० ) श्वेतार्कः, शुक्लार्कः, तपनः, वृत्तमालिका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धोलोआकडो	सफेद आक	धोलोआकडो	पादरी रुई	श्वेत आकद	सफेद आक	तेल्लजिखेडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वल्लेरिक	विलयकद-गिड			<i>Galatropisprocera</i> <i>C. Hamiltonii</i>	pear	

स्थान—सफेद आक हिमालयमें सिन्ध नदीसे भेलम तक, और अबध मध्य और दक्षिण आदि हिन्दुस्थानके अधिक-शुष्क भागोंमें होताहै।

पहिचान—इसके पत्ते ४ से ६ इंच तक लम्बे और मोटे होतेहैं। इसके कुछ बँजनी या श्वेत पुष्प लगतेहैं। इसका वृत्त बहुधा ६-७ फुट ऊँचा होताहै परन्तु पंजाब आदि देशोंमें १२ से १५ फुट तक ऊँचा होजाताहै।

११) फूलने फलनेका समय—माघसे वैशाख तक इसके पुष्प-लगतेहै, शीत-कालके मारम्भ तक फल-पकतेहैं ।

प्रयोग—(१) इसकी जड़को गर्म करके दातुन करनेसे दातोंकी पीड़ा मिटतीहै और दांत दृढ़ और निर्मल रहतेहैं । (२) इसकी जड़को पीस उष्ण कर लेप करनेसे स्नायुक (नारू) की पीड़ा मिटतीहै । (३) इसके दूधको गर्भाशयके मुखपर लगानेसे श्रूण निकल पडताहै । (४) इसके दूधमें इतना विषहै कि बड़े कुत्तको ४ भासे पिलानेसे १५ मिनटमें मरजाताहै । इसके विषसे सुखमें पहिले भाग आने लगतेहै । (५) विसृष्टिकामें इसके पुष्पोंका प्रयोग किया जाताहै । (६) इसके दूधको चमड़ीपर कुछ देर तक मलके ऊपर बानी लगानेसे वहां ऐसे काले चट्टे होजातेहैं कि जैसे रंगड़ा या चोट लगनेसे होजाया करतेहैं । (७) इसकी जड़ रविवारके दिन कानमें धांयनेसे सब प्रकारके ज्वर दूर जातेहैं । (८) इसकी जड़की छालको कांजीमें पीस लेप करनेसे पुराना श्लीषद रोग मिटताहै ।

संख्या (३०)

( सं० )—अर्कमूला, सुनन्दा, अर्कपत्रा, विषापहा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलही
	ईशरमूल	अर्कमूल	सापसन	ईशेरमूल		ईश्वर बेरु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अ०	
ईश्वरवेर	ईश्वरीवेरु	भिसमिकार	जरावेरु	Aristolochia	The In-lion Birthwort	

स्थान—ईशरमूल (अर्कमूला) हिन्दुस्थानमें बहुत दूर मिलतीहै विशेष कर बंगाला कोकन, द्राविणकोर और कारोमण्डलमें मिलतीहै ।

पहचान—इसकी जड़का स्वाद कड़वा होताहै वसमें कपूर जैसी सुगंध आतीहै ।

प्रयोग—(११) अर्कमूला (ईसरमूल) की जड़ थोड़ा कर पिलानेसे जोड़ोंकी सूजन मिटती है। (१२) जड़को थोड़ेके पिलानेसे चन्ट हुआ मासिक धर्म फिरसे होने लग जाता है। (१३) इसको घिसके लगानेसे बिच्छूका विष उतरता है। (१४) जड़को गुड़के साथ उबाल कर पिलानेसे मूत्रा मंदा होनेमें बहुत कष्ट नहीं होता है। (१५) यह बलवर्द्धक और उत्तेजक है। (१६) इसके प्रयोगसे ज्वर छूटता है। (१७) इसको सर्पके दंशपर लगानेसे और खिलानेसे सर्पका विष उतरता है। (१८) यह बच्चोंकी अतोंकी बीमारीको मिटाता है। (१९) इसके पत्तोंका रस दंश पर लगानेसे विष उतरता है। (२०) पत्तोंका रस पिलानेसे जलोदर मिटता है। (२१) पत्तोंके रसकी मात्रा २ मासेसे ७॥ मासे तक है। (२२) इसके काथकी मात्रा २॥ से ५ तोले तक है।

संख्या (३१)

(सं०) अर्जुनः, संबरः, इन्द्रद्रुः, ककुभः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मैरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अर्जुन	को (कौ)ह,	धाळेसांजव	अर्जुन-सादेडा	अर्जुनगाछ	को, कोह	यैरमहि
द्राविडी	कर्नादकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बेळामट्टि	कपुमत्त			Terminalia Arjuna Pentapetala Arjuna		

स्थान—यह हिन्दुस्थान के संयुक्तप्रदेश, दक्खन, विहार, छत्तिया नागपुर और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होता है।

पहिचान—यह वृक्ष ८०से १०० फुट तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते पत-भुडमें गिर जाते हैं परंतु सबके सब नहीं गिरते, इसकी पेदड़ सीधरी नहीं होती है और उसकी गोलार्ध १० से २० फुट तक की होती है और ४० से ५० फुट ऊंची

बड़े जानेके पीछे उसमें शाखा फूटती है, उसकी छाल हरापन लिये हुए श्वेत, खान्नी, भूरी, या बैजनी रंगकी और साफ होती है ॥

फूलने फूलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगते हैं शीतल-कालमें इसके फल पकते हैं ॥

इसके मूल-मकारका साफ, सुनहरी, भूरा और, पारदर्शक गोंद लगता है वह खानेके काममें आता है-॥

( ४ ) इसकी छालमें से खाली रंग निकलता है, इसकी लकड़ीकी रसि रंगन के काममें आती है ॥

प्रयोग—( १ ) इसकी छालको दूधमें ओटाके पिलानेसे दृष्टोग मिटता है, अथवा छालको जल दूध और गुडके साथ ओटाके पिलाना चाहिये ।

( २ ) दूधके साथ इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे दृष्टी हुई हुई जुड जाती है,

( ३ ) रगड़ आने या चोटके लग जानेसे जो नील जम जाती है उसको मिटानेके लिये भी जड़के चूर्णकी फकी दूधके साथ देना चाहिये ( ४ ) इसके काथ

से फोड़े और विपैल ग्रणोंको घोना चाहिये । ( ५ ) इसका क्वाथ पिलानेसे ज्वर हटता है । ( ६ ) इसके चूर्ण में तिली का तेल मिलाके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है । ( ७ ) इसके पत्तों का स्वरस कानमें डालने से कणेशूल

मिटती है । ( ८ ) विपैल जीवों के दंशपर इसकी छालका लोप करना चाहिये ।

( ९ ) इसके फाट से रक्तातिसार मिटता है । ( १० ) इसकी छालको पीस गर्म कर लेप करनेसे चोटसे पैदा हुई मृजज मिटती है । ( ११ ) दृष्टी हुई हुई पर भी

यही लेप करना चाहिये । ( १२ ) इसके फल खानेसे पेटके यंत्रोंके ब्रह्मकी रुकावट मिटती है । ( १३ ) मूत्रके रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्तको मिटानेके लिये

इसकी छालको क्वाथ पिलाना चाहिये । ( १४ ) जलके साथ इसकी छालके चूर्णकी फकी देनेसे पित्तके विकार मिटते हैं । ( १५ ) इसकी अंतर छालका मधुके साथ

लेप करनेसे मुखकी छाया मिटती है । ( १६ ) इसकी छालका क्वाथ पिलानेसे मूत्राघात

मिटता है । ( १७ ) इसकी छालसे बनाये हुए रस का सेवन करनेसे हृदयके रोग मिटते हैं । ( १८ ) इसकी अंतर छालके चूर्णको घृत या मक्खनके साथ



घटानेसे हृद्रोग मिटताहै । ( १९ ) दूधके साथ अंतर छालके, चूर्णकी फकी लेने से रक्तपित्त मिटताहै । ( २० ) गुडके, शर्वतके साथ इसकी फकी लेनेसे जीर्ण-ज्वर मिटताहै । ( २१ ) बलकी जड़के काथ साथ इसकी फकी लेनेसे हृद्रोग मिटताहै । ( २२ ) इसके और मुलहठीके चूर्णकी फकी देकर ऊपर दूध पिलाने से हृद्रोग मिटताहै । ( २३ ) गेहूं और इसकी अंतर छालके चूर्णको तेल, गुड और घीमें पकाकर चटाके ऊपर दूध पिलानेसे सब प्रकारके हृदयके रोग मिटतेहैं । ( २४ ) गेहूं और इसकी अंतर छालको बकरीके दूध और गांयके घीमें पका चसमें मिश्री, और मधु मिलाकर चटाने से अतिउग्र हृद्रोग मिटताहै । ( २५ ) इसकी और गांगरणकी जड़की छालके चूर्णकी फकी देके ऊपर दूध पिलानेसे बादीके रोग मिटतेहैं ।

संख्या ( ३२ )

( सं० ) अशोकः, मधुपुष्पः, अपशोकः, मजरी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
बासोपालो	आसापाला	आशुपालो	अशोक	अशोक	अशोक	अशोकमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अशोकम्	अशोक			Saraca Indica Jonesia Asoca		

स्थान — यह वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बागोंमें बोया जाताहै ।

पाहिचान — आसेपालेका वृक्ष बहुत ऊंचा नहीं होताहै, इसके पत्ते प्रायः १ फुट लम्बे होतेहैं, फली दो इंच चौड़ी और ६-१० इंच लम्बी होतीहै, उसमें ४ से ८ तक चिकने बीज निकलतेहैं । इसके बीजनी रंगके पुष्प लगतेहैं वे धीरे २ लाल होजातेहैं ।

फूलने फलनेका समय — बैत्र और वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग--(१) इसकी छाल तर्भाशयके रोगोंमें (बहुत काम आती है। (२) इसकी छालके कायमें दूधमिलाके पिलानेसे तीव्र रक्तप्रदर मिटता है। (३) छालका काथ पिलानेसे रक्तार्शका रुधिर नन्द होजाता है। (४) इसकी छालके कायमें गंधकके तिजायकी २ घुंदा डालकर पिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है (५) इसके पुष्पोंको जलमें पीसके; पिलानेसे रक्ततिसार मिटता है। (६) इसके पुष्पोंको स्तनपर लेप करके चुखानेसे बालकको घमने होजाती है। (७) इसकी छाल और रसोंको चावलोंके पानीके साथ पीसके पानेसे रक्तप्रदर मिटता है। (८) यह मधुर, शीतल कसेला, कडवा, ग्राही और हृद्य है; पित्त दाह, अम, शुष्म, उदररोग, कुमिरोग, शूल, आध्मान, विष, अर्श, व्रण, अपची, शीथ, और रुधिरविकार को मिटाता है और शरीरकी कान्ति बढ़ाता है।

सख्या ( ३३ )

( सं० ) अश्मन्तकः, इन्द्रकः, कुदालः, ताम्रपत्रकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कचनारका भेद	कचनारका भेद	आशोदरो	आपटो	आबुटा	रक्ति (	आरेचट्टु
द्राक्षिणी	कर्नाटकी	अरुत्री	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Banhuia towentosa		

स्थान—यह संयुक्त प्रदेश और हिन्दुस्थानमें सीलोन तक सब ठौर होता है।

पहिचान—यह भाड़ सीधा होता है। इसकी शाखाओं पर रूप होते हैं।

इसकी छाल सफेद होती है। कचनारके पत्तोंके जैसे इसके पत्ते जुड़े हुए होते हैं इसके पुष्प छोटे और श्वेत रंगके होते हैं। इसकी फलियोंका स्वाद कसेला और मीठा होता है।

इसके बीजोंमेंसे तेल निकलता है।

प्रयोग—(१) यहाँ कृमिरोग, यकृतके रोग, प्रमेह, दाह, तुष्णा, बर्दा, विषमज्वर, चातुर्थिक ज्वर, भूतवाधा, शर्करारमरी, कुष्ठ, गुदभ्रंश, गंदमाला व्रण, कंठ रोग, रक्तविकार गलगंड, विष, अतिसार, और कफ पित्तको मिटाता है। (२) इसकी फलियां ग्राही, पचनेमें भारी, शीतले और रूद्ध है; अतिसार वात और कफको मिटाती है; और आधेमानको पैदा करती है। (३) इसकी सूखी फलियोंके जूरेकी फकी देनेसे आमामिसार मिटाता है। (४) इसकी जड़की अंतर छालके काथसे यकृतकी पित्तशोथ मिटाती है। (५) इसी काथ के कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटाता है। और दांत दृढ़ होजाते हैं। (६) इसकी फली मूत्रवर्द्धक है। (७) इसके बीजांको सिरकेमें पीसके विपैले जीवांके दंशपर या विमसोमैदाहुणीव्रणोंपर लेप करनेना चाहिये। (८) इसके पत्तोंके जूरे की फकी देनेसे आमामिसार मिटाता है। (९) इसकी अंतर छालका काथ पिलानेसे कीड़े मर जाते हैं। (१०)

संख्या ( ३४ )

संख्या ( ३४ )	संख्या ( ३४ )	संख्या ( ३४ )	संख्या ( ३४ )	संख्या ( ३४ )	संख्या ( ३४ )
अश्वकर्णः	दीर्घपर्णाः	कौशिकः	जरणादुमः		

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुगु
साल	सखुया	राबानुनदानु श्राव ०१	लरराळ- चावृत्त	शालगाद्य	शाल, सखुया	तेल्लगदि

फ्रांजिडी	कुर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कुंगिलियम	विलीमते	फारसी	फारसी	Shoren Robusta Vidua	The sal tree

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें सतलजसे आसामतक, मध्य हिन्दुस्थानके पूर्वीभाग, बंगालके पश्चिम विभाग और छुटियानागपुरमें बहुत होते हैं।

पहचान—इस वृक्षकी साधारण ऊंचाई १० से १५ फुट और पेदबकी

गोलाई १/४ से २ फुट और ऊंचाई २० से ४० फुट तक होती है ॥ कहीं २ इस वृक्षकी ऊंचाई १०० से १५० फुट और पेड़की गोलाई २० से २५ फुट और ऊंचाई ६० से ८० फुटकी होती है (इसके) पत्ते १४ से २० फुट लम्बे और पूरे बढने पर चमकदार होजाते हैं ॥ इसके पुष्प कुब्जा पीले रंगके होते हैं ॥ इसके छेदि २ फल लगते हैं ॥ इसके साथ पत्ते एक साथ नहीं गिरते हैं और फागुन तक नहीं निकल आते हैं ॥

फूलने-फलनेका समय फागुनमें इसके पुष्प लगते हैं और जठरक फलपकते हैं ॥

राल—इस वृक्षसे एक प्रकारका द्रव पदार्थ निकलता है उसको राल कहते हैं ॥

रंग—इसकी लकड़ीमें से लाल रंग निकाला जाता है ॥

तेल—इसके बीजोंको पानीमें ओटानेसे तेल निकलता है ॥

प्रयोग—( १ ) रालकी लकड़ीकी चूरेकी वृक्षके साथ फक्की लेनेसे आमातिसार मिटता है । ( २ ) १ मासे रालकी फक्की आधसेर उष्ण दूध के साथ लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है । ( ३ ) ५ तोले रालको गायके घीमें १० मिनटतक ओटाकर ठंडे पानीमें डालदेवे जब थोड़ी देर पीछे गाढ़ा होकर तैरने लग जावे तब एकत्र कर कुछ देरतक पानीमें हिलाते रहनेसे मखन जैसा होजाने पर उसकी पानी बिलकुल निकालके धर रखे उसमेंसे चूड़े जायफल

की बराबर प्रातःकाल और सायंकालके समय देनेसे मंदाग्नि मिटती है ।

( ४ ) बैसेही दोनों समयमें लेके ऊपर कच्चा दूध पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ।

( ५ ) इसमें एक रती से चार रती तक आवश्यकतानुसार रंग मिलाके देनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है । ( ६ ) रालके पास रालकी घूप देनेसे ( जलानेसे ) खुदा लाभ होता है । ( ७ ) राल संकोचक है और फोड़े और घावोंको साफ करनेवाली है । ( ८ ) मिथ्रीके साथ रालकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है । ( ९ ) यह बफारे और लेपके काममें भी आती है । ( १० ) राल और बूखला गोंद बराबर लेके ६ मासेकी फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है । ( ११ ) रालका मंजन बनेके चलनेसे दात हड़ होजाते हैं । ( १२ ) रालके चूर्णमें बराबर मिथ्री मिलाकर दश मासेकी फक्की नित्य १५ दिनतक लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ।

( १३ ) डेढ़ मासे रालकी फरकी मिश्रीके साथ देनेसे रक्तविसारं मिटाता है।  
 ( १४ ) रालको तेलमें पिघलाकरके अग्नि आदिसे जलनेके कारण जमही। सफेद  
 रहजाय उसपर लगाना चाहिये। ( १५ ) रालके चूर्णको सरसोंके तेलमें  
 मिलाके धुनी देनेसे अर्शका रुधिरसाव बन्द होता है। ( १६ ) राल—शीतल  
 पचनेमें भारी, कड़वी, कपेली, स्निग्ध और प्राही है। और पित्त, रुधिरविकार  
 पसीना, विसर्प, ज्वर, व्रण, विपादिका, फफोले, खुनली, अतिसार, अग्नि-  
 दग्धव्रण, मूत्रकृच्छ्र और पसीनेकी दुर्गंधको मिटाती है। ( १७ ) इसके बीज  
 वषा ऋतुके प्रारम्भमें पक जाते हैं, तब उनको इकट्ठ कर लेते हैं। इन बीजोंको  
 लकड़ीकी बानीकी साथ दो तीन घंटे तक ओटा खूब धो बानी विलकुल नि-  
 काल साफ करके फिर महुके पुष्पोंके साथ ओटा या सेक रखते हैं पीछे  
 इनको पका पाचन शक्तिके अनुसार पेट भरके खानेसे दो तीन दिन भूस  
 नहीं लगती है और नैरोग्यता नहीं बिगड़ती है।

संख्या ( ३५ )  
 ( सं० ) अश्वगंधा, तुरगी, पीवरी, पुष्टिदा।

मारवाडी	बिहारी	गुजराती	मराठी	बंगाली	हिंजाती	तैलंगी
आसगंध	असगंध	अक्षसंध	असिन्ध	अश्वगंधा	असगंध	पेल्लरुडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अश्वी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अमुक	हिरिमडु			Withania somnifera Physalis lzuosa	Winter cherry	

( ३ ) स्थान—यह हिन्दुस्थानके अधिक सुखे भागोंमें होती है परन्तु बंगालमें  
 कम होती है।  
 पहिचान—इसका खूटा शीतल होय ऊंचा होता है। इसके चनेठी  
 या चने जितने बड़े लाल रंगके फल लगते हैं। इसका खूटा १४-५ वर्षके पीछे  
 सूख जाता है। इसकी जड़ चपदार और कुछ कड़वी होती है।

प्रयोग-( १ ) इसके पत्तोंपर इरंडका तेल चुपड़ गर्म करके अदीठपर बांधतेहैं ( २ ) दूधके साथ आसगंधकी फकी लेनेसे बल बढ़ताहै । ( ३ ) बीजोंकी ठंडेजलके साथ फकी लेनेसे मूत्र साफ आताहै । ( ४ ) इसके बीजों को दूधमें डाल रखनेसे दूध जमजाताहै । ( ५ ) इसके पंचांगका २॥ से ५- तोलेतक रस पीनेसे गठियाँ मिटतीहैं । ( ६ ) इसका पाक बनाके खानेसे वादीके मात्र विकार मिटतेहैं । ( ७ ) अरइसेके क्वाथके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे ज्वररोग-( खैन-)-मिटताहै- । ( ८ ) इसके चूर्णमें बंग मिलाके गर्म दूधके साथ फकी देनेसे वृद्धावस्थाकी निर्वलता मिटतीहै । ( ९ ) इसके और चोचनीकी के चूर्णको मधुके साथ चटानेसे रुधिर शुद्ध होताहै । ( १० ) धोली मूसली आदि-धातुवर्द्धक-औषधियोंके साथ-इसका सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै- । ( ११- ) इसकी फकी लेके ऊपर अंगूर खानेसे या उनका रस पीनेसे शरीर मोटा होताहै । ( १२ ) दूधके साथ- इसके बीजोंकी फकी देनेसे निद्रा आने लगतीहै । ( १३ ) आसगंधके चूर्णकी फकी ठंडे जलके साथ देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै । ( १४ ) इसका गठियापर लेप करतेहैं । ( १५ ) वातरक्तको मिटानेके लिये आसगंध और चोचनीका काथ करके पिलाना चाहिये । ( १६ ) आसगंध और बहेडके चूर्णकी गुडमें गोली बना गर्मपानीके साथ देनेसे हृदय को वायुपीडा मिटतीहै । ( १७ ) इसके चूर्णको शकर- और घृतमें मिलाके चटानेसे कटिशूल-मिटतीहै । ( १८ ) इसके क्वाथसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे मासिक धर्मसे शुद्ध हुई स्त्री गर्भको धारण करतीहै- । ( १९ ) आसगंध का कल्क एकभाग, घी एकभाग और दूध = या १० भाग लेके अग्निपर चढा घृत सिद्ध करके उसका सेवन करानेसे बल और बुद्धि बढ़तीहै । और शरीर पुष्ट होताहै । ( २० ) छाळ या तेलमें इसको पीसके लेप करनेसे नहरुवा ( नारु ) मिटताहै । ( २१ ) स्त्रीके गर्भ रहनेके लिये इसके चूर्णकी ३॥ से ७ मासे तक फकी रजोधर्मके प्रारम्भके पहिलेसे देना प्रारम्भ करे और दूध चोचिलका भोजन करावे । ( २२ ) इसके चूर्णमें बराबर खाड मिलाके एक तोले प्रमाण फकी जलके साथ देनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का जाना बन्द होजाताहै ।

संख्या ( ३६ )

( सं० ) अश्वत्थः, वोषिट्टुमः, चलदल, पिप्पलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
पीपलको पेड	पीपर(ल)	पीपळो	पिपळ	अश्वत्थ	पीपल	राविचट्टु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अरशम्भर	अरशेगर			Ficus religiosa Urostigma religiosa	The Peepul tree- The holy fig tree- Popular leaved fig tree	

स्थान—इसके वृक्ष पहाड़ोंमें अपने आप उगतेहैं और बहुत ठीग लगाये जातेहैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ८० से ६० फुट, पेदहकी ऊंचाई २५-३० फुट, और उसकी गोलाई १५—१६ फुट और किसी २ की २५ फुटतक होतीहै । इसकी शाखें बहुत लंबी २ फैलतीहै, इसके पत्ते ऊपरसे साफ, नीचेसे खरदरे और थोड़ी लम्बी नोकवाले डालियोंके लटकते रहतेहैं, पतझड़में दस पन्द्रह दिनतक इसके एकभी पत्ता नहीं रहताहै । माघ से चैत्रतक नवीन पत्ते निकल आतेहैं । वे थोड़े दिनोंतक कुछ लाल रंगके रहतेहैं । पीछे हरे हो जातेहैं । इसके छोटे २ फल लगतेहैं वे पकजाने पर गहरे बैजनी रंग के होजातेहैं । उनको मारवाड़ीमें पीप्या कहतेहैं, इसकी छाल मोटी कुछ भूरी और साफ होतीहै । इसकी छाल रंगत के काममें आतीहै । इसके लाख लगतीहै ।

प्रयोग—( १ ) इसकी छाल संकोचकहै । ( २ ) इसकी छालका क्वाथ या फांट, पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै । ( ३ ) फोडेको पकानेके लिये इसकी छालका पुलिस-वांधतेहै- । ( ४ ) इसकी छालका क्वाथ या फांट, पिलानेसे कंठ (खुजली-) मिटतीहै । ( ५ ) इसकी जड़की छालके क्वाथसे विसर्प रोग मिटताहै- । ( ६ ) इसके फल खानेसे वृद्धकोष्ठ मिटताहै । ( ७ ) इसके सूखे फलोंको पीस १४ दिनतक जलके साथ फक्की देनेसे आस, मिटताहै । ( ८ ) इसके बीजोंको पीसके पीनेसे अतर्दाह मिटतीहै ( ९ ) इसके पत्ते और

कॉपलोका ववाथ पिलानेसे विरेचन लगताहै ( १० ) पित्तशोथको मिटाने-  
 के लिये इसकी छालका ठण्डा लेप करना चाहिये ( ११ ) इसकी छालके  
 कोयलोंको पानीमें बुझा उस पानीको पिलानेसे हिचकी बन्द होतीहै ( १२ )  
 इसकी नरम कॉपलोंको जला कपड् छानकर पुराने विगडेहुप फोड़ोंपर बुरकाने  
 से वे सुधरने लगतेहैं ( १३ ) इसका दूध या रस लगानेसे विवाई भर  
 जातीहै ( १४ ) इसकी सूखी अंतरछालके चूर्णको नलिका यंत्र द्वारा गुदा-  
 के नामूरमें फूंक देनेसे वह मिट जाताहै ( १५ ) इसके फल खानेसे पाचन-  
 शक्ति बढ़तीहै ( १६ ) इसके सूखे फलोंके चूर्णकी फकी कच्चे दूधके साथ  
 अतुषर्मेसे शुद्ध होनेक पीछे १४ दिनतक देनेसे स्त्रीका वध्यापन मिटताहै  
 ( १७ ) इसके पत्ते और छोटी कॉपलोंका ववाथ पिलानेसे और उसीसे स्नान  
 करानेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं ( १८ ) इसके बीजोंको मधुके साथ खदाने  
 से रुधिर शुद्ध होताहै ( १९ ) इसकी और बडकी छालको पानीमें ओटा-  
 कर कुन्ने करानेसे दातोंकी पीड़ा मिटतीहै ( २० ) पेटकी पीडा मिटानेके  
 लिये भीपलके २॥ पान पीस गुडमें मिला गोली बनाके देना चाहिये ( २१ )  
 इसके पत्ते गर्म करके सीधी ओर से वाधनेसे बद्ध भैठ जातीहै ( २२ ) इसकी  
 छालके निर्धूम कोयलोंको पानीमें बुझा उस पानीको नितारके पिलानेसे वषन  
 और तपा मिटतीहै ( २३ ) इसके और नीमके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे  
 अर्श मिटताहै ( २४ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे पित्तज और नील  
 ममेह मिटताहै ( २५ ) इसकी सूखी छालके चूर्णको बुरकानेसे व्रण मिटताहै  
 ( २६ ) इसके पत्तोंको तपाकर वाधनेसे स्नायुक गल जाताहै ( २७ ) इस-  
 के २१ पत्ते पीम गुडमें गोलिया बनाके ७ दिन खिलानेसे चोटकी पीड़ा  
 मिटतीहै ( २८ ) इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे फोड़े मिटतेहैं ।



संख्या ( ३७ )

( सं० ) पारीपः, गर्दभाण्डः, कन्दरालः, कमण्डलुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
पारस पीपल	पारिस पीपल	पारसपिपलो	पारोसा पिपल	परशःपिपुल	पारिसापिपल	मंत्राणि
द्राविडी	कनोटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पुवरस्	बूरग (गा)			Thespesia populnea Hibiscus populneodes	The Portia tree The umbrella tree Tulip tree	

स्थान—पारस पीपलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागमें होते हैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई साधारण होती है, इसके पत्ते पतझड़में नहीं गिरते हैं ।

रंग—इसके फल और पुष्पोंमेंसे पीला रंग निकाला जाता है ।

तेल—इसके बीजोंमेंसे लाल रंगका गाढ़ा तेल निकलता है ।

गोंद—इसके एक प्रकारका गोंद लगता है ।

प्रयोग—( १ ) इसकी लकड़ीके बीचके हिस्सेको घिसके लेप करनेसे पित्तके विकार और छातीकी पीड़ा मिटती है ( २ ) इसके फलके पीले रसका लेप करनेसे खुजली और त्वचाके दूसरे रोगभी मिटते हैं ( ३ ) इसकी छालके क्वाथसे स्नान करनेसे खुजली मिटती है ( ४ ) इसके क्वाथको ७। से १० तोले तक दिनमें दो बेर पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है ( ५ ) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की देनेसे शरीरका बल बढ़ता है ( ६ ) इसके पुष्पोंको पीसकर मर्दन करनेसे खुजली मिटती है ( ७ ) इसके पत्तोंको पीस गर्म करके लेप करने से जोड़ों की शोथ और पित्त शोथ मिटती है ( ८ ) इसके ताजे पत्तोंको तेलसे चुपड़ गर्म कर सूजे हुए अंग पर बाधनेसे पीड़ा मिटती है ( ९ ) इसके फलके रसका लेप करनेसे दाद मिटता है ( १० ) नाखसे पैदा हुए छाले और घाव को मिटानेके लिये इसके पत्तों पर तेल चुपड़ गर्म करके बाधना चाहिये ( ११ ) इसकी लकड़ीके गर्भका क्वाथ करके पिलानेसे शूल मिटती है ।

संख्या ( ३८ )  
( सं० ) असनः, महासर्जः, बीजकः, प्रियकः, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
विजैसार	विजैसार	बीया, आसन	असाणा बिबला	पियाशाल विजयसार	विजयसार	बेगि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बेगहमारम	होजेमरम			Pterocarpus Marsipium	The Indian kino tree	

स्थान—विजैसार के वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनसे संयुक्तप्रदेश के बांदा जिलेतक होते हैं ।

परिचान—यह वृक्ष बहुत बड़ा होता है । इसकी पेड़ सीधी और उस की गोलाई ६ से ८ फुट तक होती है । इसके पत्ते पत्तझड़ में गिर जाया करते हैं । इसके छोटे पत्तों के दोनों ओर कूप होते हैं । जब पत्ते पूरे बढ़ जाते हैं तब वे गहरे हरे और चमकदार होजाते हैं । इसके १॥—२ इंच मोटी नोकदार फलियां लगती हैं ।

फूलने फलनेका समय—वैशाख और जेठमें इसके पुष्प लगते हैं, मगसरसे फागुन तक फल पकते हैं ।

इसके एक प्रकारका लाल गोंद लगता है, इसका गोंद और बाल रंगतके काममें आते हैं ।

प्रयोग—( १ ) इसका गोंद रुधिर सम्बन्धी रोगोंको ( जैसे रक्तमदर और रक्तातिसार आदि- ) मिटानेके लिये काममें आता है । ( २ ) इसके पत्तोंको व्रण और क्षतों पर बांधते हैं । ( ३ ) इसके पत्तोंको पीसके त्वचाके रोगों पर लेप या मर्दन करना चाहिये । ( ४ ) इसका गोंद या पत्तें मुँहमें रखनेसे दंत पीड़ा मिटती है । ( ५ ) इसके पत्तोंके फायसे कुष्ठ करनेसे मुखपाक और दंतपीड़ा मिटती है । ( ६ ) अतिसार, मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि यह प्राई है । पचे और कोमल प्रकृतिवाले मनुष्यों

के लिये यह बड़ी उत्तम औषधि है। ( ७ ) इसकी लकड़ीको पानीमें घिसकर लेप करनेसे चोटकी पीड़ा मिटती है। ( ८ ) इसकी लकड़ीको जोकूट कर पानी में भिगो ४० दिनतक पिलानेसे शृष्ट मिटता है।

संख्या ( ३६ ) ०

( सं० ) अस्थिसंहारः, वज्राङ्गः, ग्रन्थिमान्, क्रोष्टुघ्नरिटका ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हाडजोड	हाडजोर हाडजरी	हाडसाक(र) न	हाडसन्धी	हाडोच हाडभागा	हाडजोड	नल्लेरु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पेरुई (इ)	मंगरवल्लि			Vitis quadrangul- aris Cissus Q	The Edible stemmed vine	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें हिमालयसे लंकातक उष्ण भागमें मिलते हैं।

परिचान—इसकी बेल होती है, इसकी शाखा और डालियें चाखूटी होती हैं, पत्ते मोटे और गिरदार होते हैं। पुष्प गुलाबी या पियाजी और श्वेत होते हैं छोटे मटरके बराबर लाल रंगके फल लगते हैं, उनमें एक बीज होता है। इसकी डालिये पुरानी होनेसे खट्टी पड़ जाती है।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्ते और कोपलोंके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार मिटता है। ( २ ) इसकी शाखाका रस कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है। ( ३ ) इसकी शाखाके रससे नाकमें टपकानेसे निन्दहाई मिटती है। ( ४ ) इसके पंचागको गर्मकर उसका २ तोले रस निकाल उसमें दो तोले घी एक तोला गोपीचन्दन और एक तोला शक्कर मिलाके चटानेसे मसूडोंकी सूजन और बिना समय मासिक धर्म होना मिटता है। ( ५ ) इसकी शाखाको चूनेके पानीमें उबाल कर पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटती है। ( ६ ) इसकी फक्की लेनेसे बल बढ़ता है। ( ७ ) साठके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे मंदाग्नि मिटती है। ( ८ ) इसकी नरम कोपलोंको थोड़ीसी सैक चटनी बनाके

दिलानेसे पेटके रोग मिटते है और भूख लगती है ( १६ ) इसकी कोंपलोंके टुकड़ोंको मिट्टीके बरतनमें बन्दकर जला उस भस्मकी फन्की देनेसे अजीर्ण और मंदाग्नि मिटती है ( १० ) इसकी कोमल शाखाओंका विछौना करके उसपर सोते रहनेसे पृष्ठवंश ( रीडकी हड्डी ) की पीड़ा मिटती है ( ११ ) इसकी थोड़ीसी कोमल कोंपलोंको पकाके खिलानेसे बल बढ़ता है ।

संख्या ( ४० )

( सं० ) अहिफेनम्, अफेनम्, नागफेनम्, खसफलक्षीरम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
अफीम आफू, अमल	अफीम अफयून	अफीण	अफू, फू	आफिन्	अफीम	नल्लमंदु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अफिनि	अफिनि	अफियून		Papaver Somniferum	Opium, or white poppy opium	

स्थान—यह हिन्दुस्थान में प्रायः सब ठौर बोई जाती है ।

तेल—खसखसके दानांमेंसे तीसरे हिस्सेमें कम तेल निकलता है, अर्थात् १० सेर में से ३ सेर तेल निकलता है ।

प्रयोग—( १ ) अफीमके लेतेही पहिले तो शरीरका आलस्य और ढीलापन मिटके फुर्ती पैदा होता है और पछि नींद आने लगती है ( २ ) वांछे और पीड़ा मिटानेके लिये इसकी थोड़ी २ मात्रा देनी चाहिये ( ३ ) इसके खानेसे शरीरके सब अंगोंपर स्नायु जाल द्वारा असर होता है ( ४ ) यह त्वचाके सिवाय शरीरके सब अंगोंको शोषण कर जाती है ( ५ ) इससे पसीना पैदा होता है ( ६ ) इसकी अधिक मात्रा देनेसे विपत्ता काम देती है । ( ७ ) जिसे रोगके अंतमें चैतन्यता जाती रहती है उस रोगमें इसको नहीं देना चाहिये ( ८ ) केवल इसीको अथवा रसकपूर और मुमेंके साथ पीस लेप

करनेसे कोमल अगकी शोथ मिटती है ( १६ ) इसका लेप करनेसे हाथोंकी बादीकी पीड़ा मिटती है ( १७ ) इसको सुमें और कपूरके साथ पीस कर देने से पुराना ज्वा छूटता है ( ११८ ) इसके लेनेसे घबराहट मिटती है ( ११९ ) इसके लेनेसे नींद आने लगती है ( १२० ) जिस रोगमें नेत्रोंकी पुतली सुकड़ी हुई हो उसमें इसको नहीं देना चाहिये ( १२१ ) इसकी अधिक मात्रा बार २ देनेसे बाँड़े मिटते हैं ( १२२ ) इसके तेलको मस्तक पर लगानेसे नींद आती है और मस्तिष्कमें बल बढ़ता है ( १२३ ) इसके बीजोंमें मादकतत्त्व नहीं है । इनको सेककर खाते हैं और गर्मीके दिनोंमें ठंडाईकी साथ पीसके पीते हैं ( १२४ ) अफीमकी मात्रा १ बाजरेके दानेसे आवश्यकताके अनुसार ४ रती तक देना चाहिये पीड़ाके समयमें मात्रा नियत नहीं है जितनी मात्रासे पीड़ा मिटे, उतनी ही मात्रा देनी चाहिये परन्तु जिसके इसका व्यसन हो उसके लिये भी मात्राका प्रमाण नहीं है ( १२५ ) इसका असर मस्तिष्क और पृष्ठवशमें जो काम करनेवाली रंगें हैं, उनके मूलमें होता है, वहांसे उन रंगोंके द्वारा शरीरके पृथक् २ अंगोंपर होता है ( १२६ ) फेफड़े, दिल और आमाशय आदिपर एक प्रकारकी झिल्ली होती है उसकी सृजन उतारनेके लिये केवल अफीम या रसकपूर या सुमें या दूसरी औषधियोंके साथ लेप आदिमें बहुत काम आता है ( १२७ ) जिन रोगोंमें शरीरकी निर्बलतासे मृत्यु होती है, उनमें इसका लेपके काममें जियादा लाना चाहिये ( १२८ ) जिस सोजिशसे या जिन रोगोंसे मनुष्य अचेत होके या गला घुटके मरजाता है वहां इसको लेपके काममें नहीं लाना चाहिये ( १२९ ) आमाशयकी झिल्लीकी सोजिशके रोगमें इसका लेप जरूर करना चाहिये ( १३० ) इससे रुंधिर और नाडियोंकी तेजी कम होजाती है ( १३१ ) हनुस्तंग या आक्षेपक वायु और गठियाकी तेज पीड़ा और प्रलाप आदि रोगोंमें अफीमका खिलाना बहुत उपकारी है ( १३२ ) आंखके देखनेमें और आंखके दूसरे रोगोंमें इसका लेप बहुत उपकारी है ( १३३ ) शरीरके अंगके निकम्मे होजानेसे जो फैलनेवाला ब्रण होजाता है उसपर इसका बहुत हल्का लेप करनेसे लाभ होता है ( १३४ ) स्नायुं सम्बन्धी और बादीकी पीड़ा पर इसका लेप करनेसे बहुत लाभ होता है ( १३५ ) अफीम और तोसादर पीसके दांतके छिद्रमें रखनेसे दांत पीड़ा मिटती है ( १३६ ) ४ रती अफीम और २ लॉग पीस गर्म कर लेप करनेसे ज़ादी और सर्दीकी मस्तकपीड़ा

मिटती है । ( ३० ) अफीम और हुक्के के कीटकी बत्ती बनाके देनेसे नाडीव्रण  
 मिटता है । ( ३१ ) अफीमको सेककर खिलानेसे पकातिसार मिटता है । ( ३२ )  
 थोड़ी अफीम खानेसे सर्दीसे पड़ाहुआ गला ठीक होजाता है । ( ३३ ) अफीमकी ४  
 चावल भर भस्म गुलाबके तेलमें मिलाके कानमें टपकानेसे कर्णपीड़ा मिटती है ।  
 ( ३४ ) अफीम और कौंदरु गोंद दोनों बराबर ले पानीके साथ पीराके सुंघा-  
 नेसे नकसीर बन्द होती है । ( ३५ ) अफीम खिलानेसे गर्मीका होलदिल  
 मिटता है । ( ३६ ) अफीमको तिलोंके तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे सुजली मिटती है ।  
 ( ३७ ) इसके डोडे और अजवायनको ओटाके कुले करनेसे पड़ाहुआ गला ठीक  
 होजाता है । ( ३८ ) बच्चा होनेके पीछेकी गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेके लिये  
 इसके डोडोंका काथ पिलाना चाहिये । ( ३९ ) ४ से ६ मासे तक इसके  
 डोडे पीसकर पिलानेसे अतिसार मिटता है । ( ४० ) इसके १ डोडे और ७  
 कालीमिरचोंको कूट, ओटाकर पिलानेसे चौथया ज्वर छूटता है । ( ४१ ) बीजा  
 सहित इसके ६ तोले डोडोंके क्वाथका हाईछटांक घुरके साथ शर्वत बनाकर उस-  
 मेंसे ३ तोलेकी मात्रा पानीके साथ देनेसे प्रतिश्याय और खांसी मिटती है ।  
 ( ४२ ) डंडी दूर किये हुए इसके २ नग टोडे और २ मासे सैंधेनमकको ३०  
 तोले पानीमें ओटा १० तोले रखवाने सोतेसमय पिलानेसे प्रतिश्यायकी  
 खांसी मिटती है । ( ४३ ) कमरकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके डोडे पानीमें  
 भिगोर इतना पिलाना चाहिये कि नशा न हो । ( ४४ ) इसके बीजाको दूधके  
 साथ पीसके लेप करनेसे केशोंका दारुणरोग मिटता है । ( ४५ ) जोरके डंक  
 पकजावे तो इसके बीजाको पीसके लेप करना चाहिये । ( ४६ ) एक तोले  
 पोस्तके दानेमें बराबर मिश्री मिलाके फरकी देनेसे कमरकी पीड़ा मिटती है ।  
 ( ४७ ) अटरखके रसकी २१ बर भावना देनेसे अफीम शुद्ध होता है । ( ४८ )  
 मरनेके लिये जा अधिक अफीम खाजाता है उसकी पहिचान यह है—पारभमें  
 उसके शरीरमें कुछ उत्तजना होती है, परन्तु पीछे तुरन्तही शरीरमें शिथिलता  
 पैदा होजाती है उसके पीछे शरीर शून्य होकर निद्रा आनेकी जैसे होके अत्य-  
 तमूर्च्छित होजाता है और आखकी पुतलिये सुकूड जाती है, इस अवस्था तक  
 तो रोगीकी चिकित्सा होसकती है परन्तु जब गिलगिली और चोट आदिका  
 ज्ञान नहीं रहता है तब चेतन्य करनेवाली औषधियोंका प्रभाव बहुत कम होता है ।

गिलगिलीका ज्ञान बंद होनेके पीछे शरीर ठंडा पड़ने लग जाता है होठ और चहुरा पुरभा जाता है नाड़ी मन्द और निर्वल होजाती है । श्वासकी नलिका सुकड जानेसे श्वासकी गति विगडके खरटेसे श्वास लेताहुआ, मरजाता है ।

इसकी चिकित्सा—जो मनुष्य अफीम खागया हो उसको मैनफल, सैंधानोंन और पीपलसे या नीमके क्वाथसे या तमाखूके क्वाथ से या घी और नॉनको चटाकर या कोई वामक औपधियोंसे वमन कराना चाहिये, ३-४ वमन हो जानेके पीछे घी और दूध पिलाना चाहिये, जबतक दूध और घी पचने नहीं लगे अर्थात् वमन होतीरहे तबतक दूध और घी पिलाते रहना चाहिये और सोने नहीं देना चाहिये, और टहलाते रहना चाहिये । जो वमनसे किसी प्रकारका लाभ नहीं देखे तो विरेचन कराना चाहिये, अथवा अफीमका विष उतारनेवाली दूसरी औपधियोंका प्रयोग करना चाहिये ।

संख्या ( ४१ )

( सं० ) आकल्लकः, आकारकरमः, अकल्लकः ।

मारवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अकलकरो	अकरकरा	अकलकरो	अकलकारा	आकरकरा	अकरकरा	अकरकरमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अकरकार	अकलकरे	आकरकरहा		Anacyclus Pyrethrum	The Pallitory of Spain Pallitory root	

स्थान—इसके वृक्ष ऐफ्रिका देश के उत्तर के प्रान्तमें होते हैं ।

प्रयोग—(१) इसकी जड़ उत्तेजक है । (२) इसका लेप करनेसे चमड़ी लाल होजाती है । और उस ठौर चरपराहट लगजाती है । (३) मधुके साथ इसका लेप करनेसे जीभ का सुग्वापन मिटता है अर्थात् मुख में पानी छूटजाता है । (४) इसको चवाते रहनेसे मुखसे लाल गिरके डाढ़ की पीड़ा मिटजाती है ।

- ( ५ ) इसको पीस गर्मकर ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटती है ।  
 ( ६ ) दांत तालुमूल और गलेके रोगोंमें इसके कुल्ले बहुत लाभकारी हैं ।  
 ( ७ ) दस्त लगानेके लिये इसके ६ मासे चूर्ण की फक्की देनी चाहिये ।  
 ( ८ ) इसको जंतून के तेलमें पका के शरीरपर मर्दन करनेसे बहुतसा पसीना हांके ज्वर उतर जाता है ।  
 ( ९ ) इसका व्वाथ करके पिलानेसे पुरानी सूखी खासी मिटती है ।  
 ( १० ) इसका चूर्ण देनेसे बच्चा जल्दी बोलने लगजाता है ।  
 ( ११ ) इसके चूर्णका मजन करनेसे दांतका दर्द मिटता है ।  
 ( १२ ) सोंठ के साथ इसके चूर्ण की फक्की लेनेसे मंदाग्नि और अफारा मिटता है ।  
 ( १३ ) मूषली आदि धातुवर्द्धक औषधियों में मिला के दूधके साथ फक्की देनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ।  
 ( १४ ) कुलिजन, सोंठ और अकलक्रे का व्वाथ करके पिलानेसे हृद्दोग मिटता है ।  
 ( १५ ) इसको लोंग के साथ देनेसे शरीर की शून्यता मिटती है ।  
 ( १६ ) बिगयतेके अर्क के साथ इसकी फक्की देनेसे निरन्तर रहनेवाला ज्वर छूटजाता है ।  
 ( १७ ) इसको वाढामके लपटेके साथ खिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटती है ।  
 ( १८ ) इसको पीपला-मूल के साथ ओटाके देनेसे चहरेके वादीके रोग मिटते हैं ।  
 ( १९ ) आख के ऊपर इसका लेप करनेसे उसकी पुरानी पीड़ा मिटती है ।  
 ( २० ) उशने के साथ इसका व्वाथ करके पिलानेसे अर्द्धांग मिटता है ।  
 ( २१ ) ब्राह्मी और शंखाघली के साथ इसका व्वाथ करके पिलानेसे मिरगी मिटती है ।  
 ( २२ ) इसका व्वाथ पिलानेसे आलस्य मिटता है ।  
 ( २३ ) इसके प्रयोगसे जलोदर मिटता है ।  
 ( २४ ) इसको अखरोट के तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे गृध्रसी मिटती है ।  
 ( २५ ) इसका व्वाथ पिलानेसे मासिकधर्म ठीक होने लग जाता है ।  
 ( २६ ) त्रिफला और बूरेके साथ फक्की देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटती है ।  
 ( २७ ) इसके २॥ रत्ती चूर्णकी फक्की देनेसे शरीर में उत्तेजकता होती है ।  
 ( २८ ) सोंठके साथ इसकी फक्की देनेसे आलस्य और शिथिलता मिटती है ।  
 ( २९ ) इसको दातोंके बीचमें दवाये रखनेसे प्रति-श्यायकी मस्तकपीड़ा मिटती है ।  
 ( ३० ) इसके और राईके चूर्णको मधुमें मिलाकर जीभ पर लेप करनेसे अर्द्धांग वायु मिटती है ।  
 ( ३१ ) इसको सिरकेमें पीस मधुमें मिलाके बिना शरीरके दिन चटानेसे अपस्मार का वध रक्ता है ।



( ३२ ) रती का पांचवा हिस्सा अकलकरा और एक रती नौसादर और एक रती अफीम ले कीड़े-खाये हुए दांत की खोखलमे रखनेसे उसकी पीडा मिटती है । ( ३३ ) अकलकरा और कपूर दोनों बराबरले पीसकर मंजन करनेसे सब प्रकारकी दंतपीडा मिटती है । ( ३४ ) एकतौले अकलकरे को पांच तौले कादिके रसमे पीसके लेप करनेसे इन्द्री मोटी होती है ।

संख्या ( ४२ )

( सं० ) आकाशवल्ली, दुस्पर्शा, व्योमवल्लिका, अमरवल्लरी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
अमरवेल	अमरवेल	अमरवेल	अमरवेल	आलोकिलता	निराधार	पौचकिगा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अ०	
कोट्टन	अमरवलि	(छोटी) अकलमन		Cuscuta reflex Cassythra hirsutis	The dodder	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमे सब दौरे होती है—

पहिचान—यह बड़ी और छोटीके भेदसे दो प्रकारकी होती है । बड़ी अमरवेलकी बड़ी भारी पीले रंगकी बेल होती है, यह जिस वृत्तपर होती है उस की हरेक शाखा और पत्तोंको पूरा ढकदेती है, यह पृथ्वीमे उगती है, परन्तु वृत्त पर चढके पृथ्वीसे अपना सम्बन्ध तोड़ देती है । और उसीपर फैलती रहती है, इसके पुष्पोंमे मीठी-सुगंध आती है । इसके बीज कड़ेव होते है । इससे एक प्रकार का रंग निकाला जाता है ।

प्रयोग—( १ ) यकृतकी कठोरता मिटानेके लिये उसपर इसका लेप करना चाहिये । ( २ ) यकृत का बल बढ़ानेके लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये । ( ३ ) इसका क्वाथ पिलानेसे तृपा बढ़ती है । ( ४ ) उशबके साथ इसको आटा छानकर मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है । ( ५ ) इसके

बीजोंको उबालकर, पेटपर बांधनेसे अपशब्द और-डकारें होके पेटकी पीडा और आध्मान, मिटजाताहै । ( ६ ) यह रेचकहै । ( ७ ) इसका हिम पिलानेसे कोष्ठशुद्ध होजाताहै । ( ८ ) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे रुधिर शुद्ध होताहै । ( ९ ) वातोन्माद मिटानेके लिये इसके बीजोंका प्रयोग करना चाहिये । ( १० ) इसकी शाखाओंका क्वाथ पिलानेसे पित्तके रोग मिटतेहै । ( ११ ) इसके चूर्णके लेनेसे जीर्णज्वर और अफारा मिटताहै । ( १२ ) इमको पीस कर लेप करनेसे कंझा (खुजली ) और पामो-मिटतीहै ।

स्थान--छोटी अमरबेल हिन्दुस्थानमें समुद्रके किनारे हर ठौर होतीहै, परन्तु उष्ण प्रदेशोंमें भी घास और टोव पर हुआ करतीहै ।

प्रयोग--( १३ ) अमरबेल पित्तके विकार मिटातीहै । ( १४ ) इसके चूर्ण में सोंठ और घी मिला लेप करनेसे पुराना घाव भरताहै । ( १५ ) इसको तिलों के तेलमें मिलाकर लगानेसे बालों की जड़ें मजबूत होजातीहै । ( १६ ) इसके रसमें शक्कर मिला आँखमें टपकानेसे आँखोंके बरोडे और सूजन मिटतीहै । ( १७ ) इसका क्वाथ पिलानेसे आँख जल्दी गिरजातीहै । ( १८ ) इसके क्वाथसे पसीना लिरानेसे जलोदर मिटताहै । ( १९ ) यह बलवर्द्धक और रक्तशोधक है । ( २० ) यह वीर्यको बढ़ातीहै और वीर्यको अधिक प्रवर्त्त करतीहै । ( २१ ) रक्तार्शके रुधिरको रोकनेकेलिये अमरबेलका प्रयोग किया जाताहै । ( २२ ) इसको बच्चों की गर्दन, भुजा और गुल्फोंपर बांधने से कई प्रकारके रोग मिटतेहै ।

संख्या ( ४३ )

( सं० ) आखुकर्णी, मूषिकाह्वा, पत्रश्रेणी, सहस्रमूली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
उदरकनी	मूसाकणी	उदरकनी	उदीरकानी मोवनी	मूपाकानी	मूसाकनी	एलुकचेविचेट्ट
द्राचिड़ी	केनाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	वालिहरुहे			<i>Ipomoea reniformis</i> <i>Convolvulus reniformis</i>		

स्थान—यह अधिक उष्ण प्रदेशों की आर्द्र भूमिमें और बिहार, राजपूताना, दक्षिण हिन्दुस्थान आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें उगती है।

पहिचान—इसके छत्ते होतेहैं उनके गोल पत्ते जमीनपर चिपे रहतेहैं हरेक पत्तेके जड़ निकलतीहै। इसकी डंढी कुछ लालरंग की होतीहै और हरेक पत्तेके पास छोटे २ पीलेरंगके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—( १ ) चूहेके दंशपर इसका स्वरस लगाना चाहिये। ( २ ) इसका स्वरस कानमें डालनेसे कानके द्रवण मिटतेहैं। ( ३ ) इसको काली मिरचोंके साथ घोट छानके पिलानेसे मूत्रका विरेचन होताहै। ( ४ ) झीड़ा-दिक मंत्रोंके द्रवके प्रवाह की रुकावट मिटानेकेलिये इसके पंचांगका बवाथ पिलाना चाहिये। ( ५ ) इसके पञ्चांगको थोटाके पिलानेसे बच्चोंके श्वास कास और पेटके रोग मिटतेहैं। ( ६ ) इसका रस पिलानेसे बालकोंके पेटके कीड़े मरजातेहैं। ( ७ ) इसके पत्तोंको पीस आटेमें मिला पूरी बना, खिला ऊपर कांजी पिलानेसे कीड़े मरजातेहैं।

— ० ० —

संख्या ( ४४ )

( सं० ) आखुपापाणः, मूषकपाषाण, गौरीपाषाणकः, शतमल्लः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सोमल	सोमल सखिया	शोमल	सोमल	शिमूलक्षार	सिम्लखार	तेल्लापाषाणमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वह्लपाषाण	शंखपाषाण	सम्मलफार	मर्गेमूश	Arsenicum Albu n	White arsenic metallic arsenic Oxide of arsenic	

प्रयोग—( १ ) शीत ज्वरको रोकनेके लिये इसकी एक रतीके साठवें हिस्सेसे आधारतीतक मात्रा देनी चाहिये। ( २ ) धातुवर्द्धक पदार्थोंके साथ इसका प्रयोग करनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै। ( ३ ) बारीसे होनेवाले वेगको रोकनेके लिये

इसका प्रयोग बहुत लाभकारी है। ( ४ ) इसका तेल मर्दन करनेसे गठिया मिटती है। ( ५ ) सड़े हुए फल-पुष्पादिक की या मलमूत्रादिकसे दुर्गन्धयुक्त पृथ्वी की गंधसे पैदा हुए ज्वरको मिटानेके लिये इसकी बहुत कम मात्रा देना चाहिये। ( ६ ) रुधिरविकार में इसकी बहुत थोड़ी मात्रा देके ऊपर त्रिफले का क्वथ मधु मिलाके पिलाना चाहिये ( ७ ) १ रती संखिया और १ तोले चावलको पीस काकदार शीशीमें धर रखें उसमेंसे १ रती चूर्ण सुघानेसे आधाशीशी मिटती है। ( ८ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे स्नायुजालकी पीड़ा मिटती है। ( ९ ) इसके तेलके मर्दनसे तथा तेलको पानपर चुपड़ कर खिलानेसे बाँटे मिटते हैं। ( १० ) रुधिर शुद्ध करनेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करनेसे कुष्ठ रोगमें बड़ा लाभ होता है। ( ११ ) इसको पानमें रखके खानेसे पुराना प्रतिश्याय मिटता है। ( १२ ) इसको घिसकर विच्छूके दंशपर लेप करनेसे उसका विष उतरता है। ( १३ ) इसका लेप करनेसे मेदेकी गाँठ मिटती है। ( १४ ) एकरती संखिया और एक मासे सफेद कथेकी, मोठकी बराबर गोलियां बनाके १—२ गोली ठंड लगनेके पहिले देनेसे शीतज्वर रुकता है। ( १५ ) संखिये को जलभंगरेके रसमें ७ दिनतक खरल कर बाजरे जैसी गोलियां बना पहिले दिन एक एक गोली संध्या सवेरे देनी चाहिये यदि हवा शीतल हो और रोगी बलवान हो तो दो दो गोली और रोगी निर्बल हो या हवा उष्ण हो तो एक एक गोली दोनों वक्त देना चाहिये ऐसे १४ या २१ दिन देनेसे उपदंश मिटता है। इसके खानेके समय वमन अधिक होतो नागरबेलके पान खिलाने चाहिये और भलीभाति पथ्य रखना चाहिये। ( १६ ) संखियेको बैंगनमें रख उसपर कपड़मिट्टीदे भोभलमें धुरता कर लेवे फिर इसीप्रकार बैंगन में ७ घेर पका उसको निकाल पीस लोहेकी नुदार्डमें आधसेर जलके संगमें ओटावे जब पानी सूखजाय तब उसकी बराबर गैरू मिला खरल कर एक चावल से रतीतक रोगीके बलानुसार देनेसे सब प्रकारके ज्वर छूटते हैं। इसके सेवनके समय मूंगकी दाल और चावलका पथ्य देना चाहिये। ( १७ ) संखियेका घी बनानेकी रीत—भैसके १० सेर दूधमें ५ तोले संखियेके छोटे टुकड़ोंको पोदलीमें बांधके बीचमें लटका देना चाहिये ऊपरसे उसका सुख बन्धकर कपड़मिट्टी ढके ऐसी मृदु आंच देना चा-

संख्या (४६)

( सं० ) भूम्यामलकी, भूधात्री, वृढपादिका, हिमालया ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
	भूई आमला	भो आवली	भुय आवळी	भूई आमला	पाताल आवला	नेल उसरिक
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कीडाम्नेलि	किरिनेलि			Phyllanthus		
				Niruri P. Urnaria		

स्थान—भूई आंवली के वृक्ष हिन्दुस्थान के अधिक उष्ण भागों में अर्थात् पंजाब से पूर्व की ओर आसाम-तक और दक्षिण की ओर दायनकोर तक होते हैं ।

पहिचान—इसका वृष्टा प्रायः हाथ भर ऊंचा होता है इसके इमलीके पत्तों जैसे महीन पत्ते होते हैं । इसके पत्तों के नीचे हरे रंग के छोटे छोटे बीज लगते हैं ।

फूलने फलने का समय—यह वर्षा ऋतु में पैदा होती है और कांती तक फल फूल कर सूख जाती है ।

प्रयोग—( १ ) इसका दूधिया रस क्षत पर लगाने से जल्दी भर जाता है । ( २ ) पत्तों के पुष्टिम में नमक मिला के लगाने से खजली मिटती है । ( ३ ) पत्तों को पीस कुचली हुई ठौर पर लेप करने से वहां की पीड़ा मिटती है । ( ४ ) १। तोले ताजी जड़ को दूध के साथ पीस छान कर दिन में दो बेर पिलाने से कामला मिटता है । ( ५ ) इस के पत्ते और कामला कापला से घाव भरता है, मूत्रवृद्धि होती है और पेट के यत्रों के बहाव को रुकावट मिटती है । ( ६ ) इसके पत्तों का काथ पिलाने से पित्त का प्रकोप मिटता है । ( ७ ) जड़ के चूर्णकी पानीके साथ फक्की देनेसे कामला मिटता है । ( ८ ) कामला कापलोंको मेथीके बीजोंके साथ देनेसे पुरानी संग्रहणी मिटती है । ( ९ ) इसके पंचांगका क्वाथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके जलंधर मिटता है ।

इसकी जड़को चाँवलोंके पानीके साथ देनेसे मासिकधर्म में प्रमाण से अधिक रुधिरका निकलना बन्द हो जाता है। ( ११ ) इसके कौमल पत्ते और कालीमिरचाँके कण्ठकी जायफलजितनी गोली बनाके देनेसे शीतज्वर और छोड़ २ के आनेवाला ज्वर छूटजाता है। ( १२ ) इसके पत्तोंको मलकर लेप करनेसे खुजली मिटती है। ( १३ ) पत्तोंको दूधके साथ मलकर पिलानेसे जलोदर और मूत्र सम्बन्धी रोग मिटते हैं। ( १४ ) पत्तोंके हाथको तालु पर लगानेसे ऊष्मा कम होके धवराहट मिटती है। ( १५ ) इसके पत्तोंकी मात्रा ३॥ मासेकी है। ( १६ ) मिश्रीके साथ इसके पंचांगका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्र सम्बन्धी अंगोंके रोग मिटते हैं। ( १७ ) पत्तोंके हिमके कुल्ले करनेसे मुरसपाक मिटता है। ( १८ ) इसकी जड़के चूर्णको चाँवलोंके पानीके साथ २-३ दिन देनेसे रक्तप्रदर मिटता है।

संख्या ( ५० )

( सं० ) आम्रः रसालः सहकारः कामघल्लभः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
आम, आवो	आम	आवो	आना, अवा	आम्र, आम्र	आम	मागिडिकाय
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मांगाय	माविनकायि	अम्बज	अम्बा	Mangifera indica domestica	The mango tree	

स्थान—आमके वृक्ष हिमालयमें कमाऊंसे भूटान तक खासियापहाड़, अवध, मल्ला, बिहार, पश्चिमी प्रायद्वीप खानदेशसे दक्षिणकी ओर और राजपूताना आदि हिन्दुस्थानके सब देशोंमें होते हैं।

परिचान—हिन्दुस्थानमें आम कई प्रकारके होते हैं। इसके वृक्षकी बंचाई ६०—७० फुट होती है। इसकी पेदब सीधी और गुलाडमें १५ फुटकी होती है। इसके मापसे जेठतक ६ से ६ इंचतक लम्बे नोकदार पत्ते लगते रहते हैं।

वे प्रारम्भमें लाल, पीछे गहरे हरे रंगके होजातेहैं। इसके कुछ पीले रंगके उत्तम सुगंधवाले (पुष्पोंके) गुच्छे लगतेहैं। इसका फल २ से ६ इंचतक लम्बा होताहै बड़े पकनेपर पीलेरंगका होजाताहै। ये देशभेदसे छोटे, बड़े, कई प्रकारके होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—इसके माघसे चैततक पुष्प लगतेहैं। वैशाखसे अषाढतक फल पकते रहतेहैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै। इसकी छाल और पत्तोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै। इसकी कच्ची कैरी रंगतके काममें आतीहै। इसकी मींगीमेंसे तेल निकलताहै।

प्रयोग—(१) आमका पकाहुआ फल पौष्टिक, बलवर्द्धक, स्निग्ध, सारक और मूत्रजनकहै। (२) इसके फलके छिलके, चूसे और खट्टे कच्चे फल दस्तबंध करनेवालेहैं। (३) इसके कच्चे फलोंका अचार, पाचक और जुधा लगानेवालाहै। (४) आमके मोर, गुदा और छाल-ठण्डे, रूच और ग्राहीहै। इनके प्रयोगसे अतिसार मिटताहै। (५) इसके सूखे पत्तोंको चिलममें बर उनका धूआं पीनेसे गलेके रोग मिटतेहैं। (६) विमूचिका और महामारी (प्लेग) के समयमें कैरीका मुरब्बा खाने और लगानेसे उनका असर कम होताहै। (७) पत्तोंके बीचकी सलीकी राख को लगानेसे गुहांजनी मिटतीहै। (८) इसकी कच्ची गुठली कड़वी होतीहै उसके खानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं। (९) सेकीहुई गुठली की गिर खानेसे आंतोंका ढीलापन मिटताहै। (१०) आमके गोंदका नींबूके रस या जैलेमें मिलाकर लगानेसे खुजली और त्वचा के रोग मिटतेहैं। (११) इसके पकेहुए फलोंका रस गर्भाशय फुफुस और आंतोंमेंसे रुधिरके बहावको बन्ध करताहै। (१२) आमकी गुठलीकी गिरीका १०-१५ रती चूर्ण देनेसे आंतोंकेकीड़े, रक्तार्श और रक्तप्रदर मिटताहै। (१३) इसकी गुठलीकी गिरीका लपटा घनाके खिलानेसे कृच्छ्र साध्य अतिसार मिटताहै। (१४) गुठलीकी गिरी श्वासको मिटातीहै। (१५) अमचूरकी मुखमें रखनेसे या जलमें भिगो उस जलसे गंधूप करनेसे शीताद रोग मिटताहै। (१६) आमके पीपड़ खानेसे शीताद रोग मिटताहै। (१७) आमके पत्तोंका धूआं पीने से हिचकी मिटतीहै। (१८) कैरीको भूभलमें सेके उसको पानीमें मल शकर मिलाके पीनेसे लू और आमका असर मिटताहै या सेकी हुई कैरीकी गिरीका

शरीर पर मर्दन करनेसे भी उनका असर नहीं होता है । ( १६ ) पके हुए आम की गुठलीकी गिरीके आटेकी रोटी बनाके खानेसे अतिसार और आम-तिसार मिटता है । ( २० ) एक गुठलीकी गिरी दिनमें दो बेर काममें आसकती है । ( २१ ) आमके सूखे पुष्पोंका काथ पीनेसे या उनके चूर्णकी फकी देनेसे अतिसार पुराना आम-तिसार और पुराना मूत्रकृन्ध मिटता है । ( २२ ) विवाईमें आम के गोंदका प्रयोग लाभकारी है । ( २३ ) आमकी गुठलीकी गिरी और गोंद और इन्द्रियव सब बराबर ले पीस एक मासे चूर्णकी फकी दिनमें दो-तीन बेर देनेसे जवान मनुष्यके अतिसार और आम-तिसार मिटजाते हैं । ( २४ ) इसकी गुठलीकी थोड़ी गिरीको थोड़े पानीमें भिगो पीस कुछ देर पीछे अग्नि-दग्धपर लगानेसे तुरन्त ठंडाई पडजाती है । ( २५ ) कैरीका शर्वत पिलानेसे पसीना आता है । ( २६ ) फटे हुए पैरों पर या अंगुलियोंके बीचके धावोंपर आमकी छाल या पत्तोंका रस लगाना चाहिये । ( २७ ) बच्चोंका अतिसार मिटानेके लिये गुठलीकी अथरतीसे डेढरती तक गिरी इकल्ली या वीलगिरके साथ देना चाहिये । ( २८ ) इसकी कोमल कोपलोंको पानीके साथ पीस छान-थोड़ी शक्करमिलाके पिलानेसे रक्तार्शका रुधिर उन्ध होता है । ( २९ ) कैरीको पीसके नेत्र पर बाधनेसे नेत्रपीड़ा मिटती है । ( ३० ) इसकी अंतर छालको पीस छान तुरन्त ही पिलानेसे दस्त बन्ध होती है । ( ३१ ) नित्य प्रातःकाल मीठे आम चूस ऊपरसे सोंठ और लुहारे डालके ओटाये हुए दूधको पीनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है और शरीर पुष्ट होता है । ( ३२ ) अमचूर और सैधे नमकको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे दाद मिटता है । ( ३३ ) इसके और जामूनके पत्ते और छालके साथसे गुदाको धोनेसे अर्श मिटता है । ( ३४ ) इसकी गुठलीकी गिरीके चूर्णकी नस्य देनेसे नकसरि बन्ध होती है । ( ३५ ) आमकी गुठली और वीलगिरके साथमें मधु और शक्कर मिलाके पिलानेसे छर्दी और अतिमार मिटता है । ( ३६ ) इसकी गुठलीकी गिरीके रसके सुंघानेसे नकमीर बन्ध होती है । ( ३७ ) इसकी जड़ हाथमें बाधनेसे पित्तज्वर कूटता है । ( ३८ ) गुठलीकी गिरीको कांजीके साथ पीस नाभिपर लेप करनेसे अतिमार मिटता है । ( ३९ ) अमचूरको पीसकर लेप करनेसे मफटीका विष उतरता है । ( ४० ) गुठलीकी गिरी और हरडकी छाल दोनोंको सरारस ले दूधके साथ पीसके



लेप करनेसे दाखण रोग मिटता है । ( ४१ ) इसके पत्तोंके रसको गुनगुना कर कानमें डालनेसे कर्णपीडा मिटती है । ( ४२ ) इसका अचार खानेमें तिर्छी कम होती है । ( ४३ ) इसकी अलंको दहीके जलके साथ पीसनाभि पर या उसके आस पास लेप करनेसे अतिमार मिटता है । ( ४४ ) इसके और जामून के पत्तोंको सवा सवा तोले स्वरसको या स्वरस न निकले तो थोड़े दूधके साथ रस निकाल पांच दूधमें मिला थोडा बुरा डालकर आठदिन तक पीनेसे रक्तार्श और वातार्श मिटते हैं । ( ४५ ) आमके हरे पत्ते मलकर तमाखू की मांति हुके में पीनेसे अर्श मिटता है । ( ४६ ) वर्षे भरके पुराने अचारका तेल लगानेसे गंज मिटती है । ( ४७ ) इसके और जामूनके पत्तोंके क्वार्थमें मधु मिलाके पिलानेसे वमन और तृषा बन्ध होती है । कैरी और आम कई प्रकारसे खानेके काममें आते हैं ।

संख्या ( ५१ )

( सं० ) कोशाअः, घनस्कंधः, वनाम्रः, जंतुपादपः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	कोशम्भ (म)	डुगरी आवा	लालरान, आवा	केओडा	कोशाम	कोड मामिडि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लेटिन	अ० ४८	
वेहदमावु				Migniera sylvatica M. India		

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके उत्तरके-भागमें अर्थात् नेपाल सिक्कम सिलहट और खासिया पहाड आदि कई ठौर-होते हैं ।

गुण—इसका कच्चा फल ग्राही खटा पचनेमें भारी बादीको मिटानेवाला और-पित्तको पैदा करनेवाला है । इसका पकाहुआ फल पचनेमें हल्का, उष्ण, रोचक और दीपन है । वात और कफके विकार, कुष्ठ, शोथ, रक्तपित्त, ब्रण और कफको मिटाता है इसका सूखा फल औषधिके काममें आता है । इसका फल स्वादिष्ट नहीं होता है परन्तु खानेके काममें आता है ।

संख्या (५२)

(सं०) आम्रातकः, पीतनकः, कपिचूतः, कपिप्रियः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
अंवाड़ो	अम्बाडा आमडा	अंगेडा	अंवाडा	आमडा	अगरा अवडा	अवालमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
फाट्टमा	धमटेगिड़			Spondias mangifera S amar		The hog plum (2) Sondias Ekminut

**स्थान**—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोये जाते हैं और अपने आपभी उगते हैं ये बोये हुए और जंगलीके भेदसे दो प्रकारके होते हैं ।

**परिचान**—इसका वृक्ष २५ फुट ऊंचा होता है इसके पेदबकी गुलाई ४ फुट तक होती है । इसके पत्तोंका आकार जिंगनीके पत्तों जैसा होता है इसके पत्ते एक शाखाके दोनों ओर बराबर लगे रहते हैं वे पकनेपर हरे और चमकदार होजाते हैं और उनको मलनेसे एक विशेष प्रकारकी गंध आती है । इसके आम के मोर जैसे मोर लगते हैं और फल कंदूरी जैसे छटि २ होते हैं उनके छिलकों पर पीले और काले दाग होते हैं । छिलकोंके पासकी गिरी बहुत खट्टी होती है और गुठलीके पासकी गिरी बहुत मीठी और खानेके योग्य होनी है ।

**फूलने फलनेका समय**—चैत्रमें इसके पुष्प लगते हैं और शीत कालके प्रारम्भमें फल पकते हैं । इसके एक प्रकारका गोंद लगता है ।

**प्रयोग**—(१) इसके फलकी गिरी खिलानेसे पित्तकी मंदाग्नि मिटती है

(२) इसके पत्तोंका चूर्ण और छालका क्वाथ आम्रातिसारमें दिया जाता है ।

(३) इसका गोंद औषधिके स्वादकी चरपराहट कम करनेके लिये उसमें मिलाया जाता है । (४) इसके पत्तोंका रस कर्णशूलमें कानके बाहर लगाया जाता है और भीतरभी डाला जाता है । (५) इसके फलको पीसके विषमें बुझाये हुए तौरके घावपर लगाना चाहिये और उसके विषको उतारनेके लिये सूखा या गीला फल खाते हैं जा इसका फल न मिले तो उसकी ठौर फिटकड़ी

काममें लातेहैं, इससे यह सिद्ध होताहै कि-शरीर परके ऐसे घावोंको कपेली चीजें लाभदायकहै । ( ६ )-शीतल रोग मिटानेके लिये इसके फलके क्वाथ, हिम या फाटसे गड़प कराने चाहिये । ( ७ ) इसके फलकी चटनी बनाई जातीहै । इसका कच्चाफल खानेके काममें कम आताहै और दूसरे शाकमें खटाई देनेके काममें बहुत आताहै ।

संख्या ( ५३ )

( सं० ) आरुग्धः, व्याधिघातः, दीर्घफलः, हेमपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
किरमाळो	भमलतास, धनवहेडा	गरमाळो	बाहवा	सौदाल, सो- नालु	भमलतास	रेलचट्टु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कोलेमर- शरकोने	ककेमर	खियाफान्वर खयाराम्वर		Cassia fistula Cathartocarpus F	The Indian Laburnum (2) Purging Cassia (5) Padding pipe tree	

स्थान- इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत और होतेहै । पहिचान और फूलने, फलनेका समय- यह वृक्ष बहुत ऊँचा, नहीं बढ़ताहै । इसकी पेट्ट छोटी होतीहै और उसकी गुलाई ३ से ५ फुट तक होतीहै इसके एक डेढ़ फुट लम्बी एक सीकप ४ से ८ जोड़े पत्तोंके लगतेहै, फागुनमें इसके पत्ते गिरजातेहैं, चैत्र-वैशाखमें नवीन निकल आतेहैं और उन्हीके साथ इसके पीले पुष्पोंकी प्रायः एक हाथ लम्बी मंजरी लगतीहै परन्तु प्रतभ्रडके दिनोंमें कभी २ पुष्पोंकी मंजरी दुबारा आजातीहै । इसके १-१ ॥ फुट लम्बी, गोल कुछ चपटी फलियां लगतीहै वे शीतकालमें पकजातीहै एक फलीमें कई खाने होतेहैं और अलग-२ खानेमें एक एक बीज होताहै खानेके दोनों ओर गिरी चिपटी रहतीहै इसकी शाखाओं में से एक प्रकारका लाल रस निकलताहै जो जमके गाँद जैसा होजाताहै । इसकी छालमें से हल्का लाल रंग निकलताहै ।

प्रयोग-(१)- इसकी फलीको मर्मकर उसकी गिरी निकाल उसको

वाढाम के तेलसे चुपड़ ओटा छानकर पिलानेसे बच्चे और गर्भवती स्त्रियोंको निरुपद्रव विरेचन होता है । ( २ ) इसकी गिरीका काय पिलानेसे लघुविरेचन होता है । और श्वासकी रुकावट मिटती है । ( ३ ) इसके साथ इमलीके गूदेका फांट करके पिलानेसे विगडा हुआ विपच विरेचन द्वारा निकल जाता है । ( ४ ) इसके पुष्पोंके गुलकंदसे ज्वर छूटता है । ( ५ ) इसके पत्ते और छालको पीस तेलमें मिलाके नाककी छोटी २ फुन्सियों पर लगाते हैं । ( ६ ) इनका लेप करनेसे स्नायुकी शोथ मिटती है । ( ७ ) इसके पत्ते और छालके क्वाथका मर्दन करनेसे त्वचाके रोग मिटते हैं । ( ८ ) इनसे बनाये हुए तेलका मर्दन करनेसे भी त्वचाके रोग मिटते हैं । ( ९ ) इसके पत्तोंका फांट सारक है ( १० ) इसकी जड़का क्वाथ तीव्र विरेचक है । ( ११ ) इसके पत्तोंको सेक भोजनके साथ खानेसे बद्धकोष्ठ मिटता है । ( १२ ) इसकी गिरका चट्टोंकी नाभिके चारों ओर लेप करनेसे उनका अफारा और पेटकी शूल मिटती है । ( १३ ) इसके और इमलीके गूदेको भिगो मल-छान रातको सोते समय पीने से प्रातःकाल साफ दस्त आजाता है । ( १४ ) इसका १ तोला गुलकंद सोते समय खाके ऊपर गर्भदूध पीनेसे कोमल प्रकृतिवालेको प्रातःकाल साफ दस्त आजाता है । ( १५ ) इसके पत्तोंको उष्ण करके अथवा उनका पुन्डिस बाधने से त्वचाका सूनापन मिटता है । ( १६ ) यह प्रयोग अर्द्धित और गठियाको भी मिटाता है । ( १७ ) पत्तोंका क्वाथ घृतके साथ पीनेसे शरीरके हर एक अंगका सूनापन और मस्तक के रोग मिटते हैं । ( १८ ) छोटे जोड़ोंकी शोथ मिटानेके लिये उनपर इसके पत्तोंका पुन्डिस बांधना चाहिये । ( १९ ) इसके पत्ते जीभ पर मलनेसे मुखपाक मिटता है । ( २० ) इसकी १॥ तोले गिरीको १० तोले पानीमें ओटा २॥ तोले रत्न छान उसमें ३ तोले घी मिलाकर खड़ा होके कुछ गर्म रपीनेसे अंडवृद्धि मिटती है । ( २१ ) इसके नवीन पत्ते या कच्ची फलीकी गिरी पीसके लेप करनेसे दाद मिटता है । ( २२ ) इसके पत्तोंको कड़वे तेलमें तुलकर चाबलोंमें मिलाके खानेसे आमवात मिटती है । ( २३ ) इसका ४ मासे तेल पिलानेसे गुल्म रोग मिटता है । ( २४ ) इसका फांटा पिलानेसे हृदिद्रामेह मिटता है । ( २५ ) इसकी जड़को चाबलोंके पानीके साथ पीसके सुघाने या लेप करने से गडमाला मिटती है । ( २६ ) इसके पत्तोंको कांजीके साथ पीसके लेप

करनेसे खुजली, गजचर्म, कुष्ठ, पांख, बीची, और दाद आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं ( २७ ) इसका क्वाथ कानमें ढालनेसे कानसे पूयका बहना बन्द होताहै ( २८ ) इसको और नीमकी छालको पीस खरबत्ता करनेसे पश्मनिकटक रोग मिटताहै ( २९ ) इसके पत्तोंको सिरके के साथ पीस कर लेप्र करनेसे कुष्ठ और दाद आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं । ( ३० ) इसके पत्तोंके काढ़ेसे धोनेसे खपदंशकी टांकियां मिटतीहैं । ( ३१ ) इसको मुहमें रखनेसे कंठके रोग मिटतेहैं । ( ३२ ) इसका २ तोले गुलकंद खानेसे खुशकवांसी तर होजातीहै । ( ३३ ) इसकी गिरी को पांजीमें घोट। उसमें तिगुना घूरा ढाल गोही चांशनी बनकर चटानेसे शुष्क खांसी मिटतीहै । ( ३४ ) अमलतासके छिलके ओटा। उसमें शकर मिला छान के गर्भवती स्त्रीको पिलानेसे बच्चा सुखसे पैदा होजाताहै । इसके पुष्प (खानेके काममें आतेहैं) फलीमेंसे इसकी गिरी निकाल रखनेसे कुब्ज दिनों पीछे त्रिगुण जातीहै इसलिये जब आवश्यकता हो तब फलीमेंसे गिरी निकाल लेना चाहिये ।

सख्या ( ६४ )

( सं० ) आरूकजी

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आहू	आहू			पीच	आहू	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		खोख	शफ्तालू	Pronus Persica Amygdalus P	Peach	

स्थान — इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत लगाय जाते हैं । कलकत्तेके पास के आहू बहुत उत्तम होते हैं ।  
 पाहिचान — यह वृक्ष साधारण उंचाई का होता है । इसके गहरे, हरे रंगके पत्ते लगतेहैं। वे गिरनेके पाहिले हलाल होजाया करतेहैं इसके गुलाबी रंगके पुष्प लगते हैं ।

॥ फूलने फलने का समय—पोपसे वैशाख तक इसके पुष्प-लगते रहते हैं वैशाखसे आसोजतक फल पकते हैं ॥

इसके एक प्रकारका गोंद लगता है, इसकी जड़की छाल रंगतेके काममें आती है, इसकी गिरीमें से एक प्रकारका तेल निकाला जाता है वह कड़वे बादामके तेल जैसा होता है और उसकी ठौर काममें भी आता है, यह तेल भोजन बनाने, जलाने और बालोंके लगानेके काममें आता है ॥

प्रयोग—( १ ) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे विरेचन लगता है ( २ ) इसका फल औषधिकी चरपराहटको कम करता है ( ३ ) इसके फलका रस लगानेसे शीतादरोग मिटता है ( ४ ) इसके फलके रसमें अजवायनका चूर्ण घुंरकाके पिलानेसे आमाशयकी शूल मिटती है ( ५ ) इसके फलके रसमें सेकी हुई हींग घुंरकाके पिलानेसे आतोंके कीड़े मरते हैं ( ६ ) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे चुरने ( कद्दुदाने ) मिटते हैं ( ७ ) इसके पत्तोंको पीस बगलमें मल गर्भ धानीसे धोडालनेसे बगलगंध मिटती है ॥

संख्या ( ५५ )

( सं० ) आर्द्रकं, शृङ्गत्रेरं, राहुच्छत्रं, अप्राकशाकम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलंगी
आदो अदरक	आदा अदरक(ख)	आदु	आले	आदा	अदकर	अलसूर
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
इनि	हसि शोठि	जजवीलरतव	जजवीलतरन	Zingiber officinale Amomum zingiber	fresh or green ginger	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सर और वीया जाता है ॥

पहिचान—इसका गुल्म प्रायः एक हाथ ऊंचा होता है इसके पत्ते वांस के पत्ते जैसे होते हैं, इसकी जड़में एक प्रकारका बन्द होता है, उसको अदरक कहते हैं यह दो प्रकारका होता है एक चूसेदार और दूसरा बिन चूसेका यह चैत वैशाख में बोया जाता है ॥

प्रयोग—( १ ) अदरकसे मंदाग्नि, गले मस्तक और छातीके रोग, अर्श, उर्दद, गठिया और जलोदर आदि कई रोग मिटतेहैं। ( २ ) भोजनके पहिले अदरकके टुकड़ों पर नॉन बुरकाके खानेसे, अरुचि मिटतीहै। ( ३ ) अदरकके रसमें दूध मिलाकर सुंघने से मस्तकपीड़ा और दूसरे रोगभी मिटतेहैं। ( ४ ) अदरकके रसमें मधु मिलाके लेनेसे मंदाग्नि, प्रतिश्याय और खांसी मिटतीहै। ( ५ ) अदरकके रसमें शकर मिला, उष्णकर पिलानेसे सर्दी और खांसी मिटतीहै। ( ६ ) इसके रसमें नींबूका रस मिलाकर लेनेसे पैत्तिक मंदाग्नि मिटती है। ( ७ ) इसके रसमें तुलसीका रस शहद और मोर की पंख के चंदवे की भस्म मिलाके देनेसे वमन बन्ध होतीहै। ( ८ ) इसके टुकड़ों पर नमक बुरकाके खानेसे जीभ और गला साफ होजाताहै। और जुवा बढ़तीहै। ( ९ ) इसके रसकी २—३ वूँदें आंखमें टपकानेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै। ( १० ) इसके रसकी नस्य देनेसे ज्वर में मूर्च्छा मिटतीहै। ( ११ ) अदरक, चरपरा और उष्ण है। इसकी चटनी से मुंह साफ होजाताहै। ( १२ ) इसको हरेक समय मुंह में रखनेसे, रोटी में मिलाके खानेसे या नमकके साथ थोडा २ सात दिनतक खानेसे सिंदूर के उपद्रव मिटतेहैं। ( १३ ) अदरकके टुकडेको नमकमें लपेट कर घातोंमें ढवानेसे सर्दी की दंतपीड़ा मिटतीहै। ( १४ ) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पीनेसे वातज अंडवृद्धि मिटतीहै। ( १५ ) अदरक त्रिफला और गुडको एकत्र करके देनेसे कामला रोग मिटताहै। ( १६ ) इसको मधुके साथ खानेसे अरुचि मिटतीहै। ( १७ ) इसके रसमें मधु मिलाके चटानेसे श्वास, कास, प्रतिश्याय और कफ मिटताहै। ( १८ ) इसके रसमें अजवायनको पीस के शरीरपर मर्दन करनेसे वातपीडा मिटतीहै। ( १९ ) इसके स्वरसमें पुराना गुड़ मिलाकर पिलानेसे सर्वांगशोथ उतरतीहै परन्तु इस प्रयोगके सेवक करते समय रोगीको केवल बकरीका दूध पिलाना चाहिये। ( २० ) इसका रस गुनगुना करके कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै। ( २१ ) इसका रस, मधु, मैधानमक और तेल इन सबको मिला उष्णकर कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै। ( २२ ) इसके एक सेर रसमें तिल्लीका आधसेर तेल सिद्ध करके धर रक्खे उसको गुनगुना कर मलनेसे जोड़ोंकी वातपीडा मिटतीहै। ( २३ ) इस का अचार खानेसे भूख लगतीहै।

संख्या ( ५६ )

( सं० ) वनार्द्रकं, पेज, अरग्यार्द्रका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जगली, अदरक	जगली अदरक	वनआद्रु	रानआलें	वनआद्रा	जगली अदरक	करुअल्लम् करपुष्प
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	केटाल			Zingiber (a. n. var Z. purpurea.		Zi ger—Gassamand ( ) Wild ginger

स्थान—यह हिन्दुस्थानके कई प्रान्तोंमें अर्थात् कोकन, बिहार, बंगाल, कारोमंडल और सिलहट आदि देशोंमें होताहै ।

पहिचान—ताजे जगली अदरकमें कपूर जैसा तीव्र सुगन्ध आतीहै । इसका स्वाद, चर्परा और कुछ कड़वा होताहै परंतु सूख जाने पर ये सब बातें कम होजातीहै ।

फूलने फलनेका समय—यह अषाढ-श्रावणमें फूलताहै, कार्तिक और मृगशिरमें फलताहै ।

प्रयोग—(१) यह उष्णहै । (२) स्त्रियोंके आवेशका रोग मिटानेके लिये इसके रसमें नमक मिलाके पिलाना चाहिये । ( ३ ) जिस अंग की चेष्टा जाती रहेउसपर कालीमिरचके साथ इसका लेप करना चाहिये । ( ४ ) इसको भूभलमें सेक छील नमक लपेटके खिलानेसे पेटका अफारस मिटताहै । ( ५ ) धनिये के साथ इसका क्वाथ करके पिलानेसे अतिभार मिटताहै । ( ६ ) विस्तृचिका में भी इसका प्रयोग किया जाताहै । ( ७ ) इसके रसमें गुड़ भिला के सुघानेसे अपस्मार मिटताहै ॥



संख्या: ( ५७ )

( सं० ) आलुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुड़ी
आलू	आलू	बटाटा		आलु	आलू	ऊटलैगड्डा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वज़रैकिड्या	बटाटे आलु			<i>Janna tuberosus.</i>	Potato	

स्थान—आलू हिन्दुरथानमें प्रायः सब ठौर बोये जातेहैं ।

गुण—ये शीतल, मधुर, रूक्ष, पचनेमें भारी, मलको गाढ़ा करनेवाले, और शरीरमें आलस्य पैदा करनेवाले हैं । अग्नि दुग्ध, मूत्र, मल, कफ, चायु, बल, वीर्य और धातुओं को बढ़ातेहैं । और रक्तपित्त को मिटातेहैं । मंदाग्निवाला यदि इनको अधिक खाजावे तो अफारा आजाताहै । इनका शाक, हलुवा, पूरी आदि कई भोजन के पदार्थ बनाये जातेहैं और फलाहार के काममें आतेहैं ॥

संख्या ( ५८ )

( सं० ) आल्लुकं, आलूकं, भल्लूकं, रक्तफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुड़ी
आलूबुखारा	आलूबुखारा	आलू भातुबुखार	आलूबुखार	आलूबुखार	आलूबुखारा	आलूबुखारा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आलूबुखारा		इज्जास	आलू	<i>Prunus Communis</i> <i>P. Bokhariensis</i>	The plum Alucha Cherry plum Fokhara plum	

स्थान—आलूबुखारा गढ़वालसे कश्मीर तक बहुत पैदा होताहै और अलमोडा सारनपुर और पश्चिमोत्तर प्रान्तोंमें भी होताहै ।

पहिचान—यह साधारण उंचाई का वृक्ष होता है। इसके फल बड़े आवलेके धरावर, कुछ लिलाई और पिलास लिये हुए चमकदार होते हैं। कच्चे फल खट्टे और पके फल खटपीठे और रसदार होते हैं। यह दो प्रकार का होता है, एकके फल अपाठमें और दूसरे के जेठमें पकते हैं। इसके एक प्रकार का पीले रंग का गोंद लगता है जो बंजल के गोंद जैसा होता है।

1. प्रयोग—( १ ) भोजन करनेके पहिले आलूबुखारे को खाने से पित्त के विकार मिटते हैं। ( २ ) यह पित्त को कम करता है पाचन शक्ति बढ़ाता है और सौरक है। ( ३ ) इसकी जड़ शोषक है। ( ४ ) इसके गोंद के गुण बनेलके गोंदके धरावर हैं और उसकी ठौर काममें आता है। ( ५ ) आलूबुखारा बहुत खट्टा होता है परन्तु शर्करा के साथ खानेसे रुचि पैदा करता है और चित्त मसन्न करता है। ( ६ ) इसके फल को गर्मपानीमें भिगो खानकर पिलानेसे पित्तज्वर की शान्ति होती है। ( ७ ) आलूबुखारे को मुरममें रखने से तृया कम होती है। ( ८ ) इसके पनीमें गडूल का शरत मिलाके पिलानेसे कंठपीड़ा मिटती है।

संख्या ( ५६ )

( सं० ) आवर्त्तनी, आवर्त्तफला, दक्षिणावर्त्तकी, ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मरोड़ाफली	मरोराफली	मुरडाशिंगी	केवणीचारेगा-	आत्मोड़ा	मरोड़ाफली	कवची श्यामली
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बलुवेरी	कवर्गा			Helicteres Isoru H Roxburghii	The East Indian screw tree ( ) Screw tree	

स्थान—मरोराफली मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान जम्बूतकके सूखे जंगल, बंगाल, मेवाड़, और अवध के जंगलों में होती है और सिवालिक पहाड़ की घाटी पर इसके वृक्ष अपने आप उगते हैं ॥

पहिचान—इस का वृक्ष छोटा होता है। इसकी फली-पचलडी, अदि दार और डेढ़ दो इंच लम्बी होती है चैत्र में इसके नवीन पत्ते निकल आते हैं।

फूलने फलने का समय—चैत्र से वर्षा ऋतु के अन्त तक इसके पुष्प लगते रहते हैं, और शीतकाल में इसकी फलिया पक जाती हैं।

प्रयोग—(१) यह आँतोंके रोगोंमें काम आती है। (२) इसके चूर्ण को, एरंडके तेलके साथ कान में डालनेसे कानका बहना बंद हो जाता है। (३) नये पैदा हुए बच्चेकी कमरमें मरोड़ा फलीका टुकड़ा बांध देनेसे आँतोंके रोग मिटते हैं। (४) इसका कषय करके पिलानेसे बच्चोंके पेटकी शूल मिटती है। (५) वायविडंगके साथ इसका कषय करके पिलानेसे पेटके कीड़े मरते हैं। (६) काले नमकके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे शूल और अफारा मिटता है। (७) अतीस या इंद्रजवके साथ या द्रोनोंके साथ देनेसे अतिसार मिटता है। (८) चिरायतेके साथ इसका कषय करके पिलानेसे ज्वर छूटता है। (९) इसकी पीने चारसे साढ़े सात मासे तक मात्रा दिनमें दो तीन बेर देना चाहिये। (१०) इसकी जड़ और छालमें भी बेही गुण हैं जो इसकी फलीमें हैं। (११) इसको जलके साथ पीसके सापके दंशपर लगाना चाहिये। (१२) इसको वंगभस्मके साथ देनेसे मूत्रातिसार मिटता है। (१३) डेढ़ तोला मरोड़फली को पानीमें भिगो मल छानके पिलानेसे कफ और रुधिरकी दस्त बंध हो जाती है।

संख्या (६०)

(सं०) आहुल्यं, हलुराख्यं, तरवटं, पीतुष्पं ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आलूण	तरवड (२)	आवळ (ल) आवल्य	तरवड			तेगड
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आविरे	तरवडगिटा			Cassia—auriculata. Benn. A	The Tanner's Cassia.	

स्थान—इसके वृत्त हिन्दुस्थानके मध्य प्रदेश, दक्षिण, सीलोन और राजपूताना आदि कई भागोंमें होते हैं।

पहिचान—इसका वृत्त १॥—२ गज ऊंचा होता है। इसकी ३ से ५ इंच लम्बी सीकों पर ८ से १२ जोड़े पत्तोंके लगते हैं, इसके पत्ते सहिजनेके पत्तोंके जैसे होते हैं। इसके आसोजसे फागुन तक पीले रंगके पुष्पोंकी मंजरियां लगती हैं, इसके ३-४ इंच लम्बी और आधइंच चौड़ी फलिया लगती हैं उनमें ४ से ६ तक बीज निकलते हैं, इसके एक प्रकारका राल जैमा पदार्थ लगता है, इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकलता है।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंका लेप करनेसे ध्यांखकी पीड़ा और पीपका बहना बंद होजाता है (२) इसकी छाल बहुत संकोचक है (३) इसके क्वाथके फुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है (४) इसके क्वाथकी पिचकारी देनेसे दस्त बन्द होती है (५) इसके पत्तोंके क्वाथ या फांटसे पित्तविकार मिटते हैं (६) इसके बीजोंकी गिरीको महीन पीसकर अंजन करनेसे नेत्रपीड़ा मिटती है (७) इसके पंचाग या इसके किसी अंगका क्वाथ करके पिलानेसे बहुमूत्रता मिटती है (८) इसकी कलियोंको चावलोंके साथ पीसके स्नान करनेके पहिले शरीर पर मर्दन करनेसे शरीरकी दाह मिटजाती है (९) इसके पत्तोंको चाहकी ठौर औंटाके पिलाते हैं (१०) इसके बीजोंका सेवन करनेसे शरीर कृश होजाता है (११) इसकी छालके क्वाथके गंधूप करनेसे शीतादरोग मिटता है। इसके बीजोंकी मात्रा ३॥। मासेतककी है।

संख्या (६१)

(सं०) इक्षु, गुडतृणः, असिपत्रः, महारसः, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	(पंजाबी)	तैलजी
साठो सेलडी	गन्ना, ऊख ईख, गाडा	शेरडी	ऊस	आरु, इक्षु	गन्ना, गडा	चेरकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		
करम्ब	कव्यु	किसुसुकर	नएशकर	Saccharum officinarum		The sugar cane

स्थानः—गन्ना हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोझा जाता है।

पहिचान—यह आठसे बारह फुट लम्बा होता है—हिन्दुस्थानमें कई प्रकार के गन्ने होते हैं जैसे पौण्ड्रक, भीरुक, वशक, शतपौरक, कान्तार, तापसेलु, कार्ण्डेलु, सूचीपत्रक, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपौर, और कौशक आदि ये सब एक देशमें पैदा नहीं होते हैं कहीं दो जातिके और वही चार जातिके ऐसे अलग २ देशोंमें अलग २ जातिके होते हैं।

इसके साधारण गुण—यह स्निग्ध, शीतल, पचनेमें भारी, रस और पाकमें मधुर होता है वात, कफ, बल, कान्ति पुरुषार्थ और मूत्र को बढ़ाता है कृमि पैदा करता है। और बढ़कोष्ठ, रुधिरविकार और पित्त के विकारों को मिटाता है।

प्रयोग—(१) कच्चे साठे का रस सूखी खांसी को मिटाता है। (२) बाँधी और पित्त के विकार मिटाने के लिये पके (जवान) गन्ने का रस पिलाना चाहिये। (३) रुधिर की व्रमन बन्ध करनेके लिये वृद्धगन्ने का रस पिलाना चाहिये। (४) गन्ने को चूसने से सूखी खांसी तर होजाती है। (५) गन्ने का वासी रस पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है। (६) भोजन करने के पीछे गन्ने को चूसने से आहार शीघ्रतासे पचजाता है। (७) शीघ्र चिरेचन कराने के लिये गन्ने के रसमें जौ की ढागी (वाल) के नीचेका ठंडल मलके पिलाना चाहिये। (८) गन्नेके रसको ओटा ठंडा करके पिलानेसे आनाहं वायु-मिटती है। (९) गन्ने के रसमें अनारका रस मिलाके पिलानेसे रक्तातिसार मिटता है। (१०) इसका रस पिलानेसे हिक्का बन्ध होती है। (११) पित्त दाह मिटानेके लिये केवल इसका रस या रसमें मधु मिला के पिलाना चाहिये। (१२) इसके और आवलों के रससे सिद्ध किये हुए घृतके खाने पीनेसे पित्त गुल्म मिटता है। (१३) इसके और आवलों के रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र-मिटजाता है। (१४) इसके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होजाती है। (१५) इसके रसके साथ हरडे के चूर्णका सेवन करनेसे गलगंडादि गाठें मिटती हैं। (१६) इसकी जड़को कांजीके साथ पीनेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ता है। (१७) इसको भूभलमें सेकके चूसनेसे स्वरभंग मिटता है।

सख्या-( ६२ )

( सं० ) इंगुदी, हिंगुपत्र, विषकरटः, सुपत्रः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हिंगोटो (रो)	हिंगोट, गौदी	इगोरियो	हिंगणवेट	इगोट, इगुदी	इगोट	गारचडु
द्राविडी	कन्नोटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
ननुजडा	गोरगिड			<i>I alenites Roxburghii Alychnis aclypti ca.</i>	De B.	

स्थान—हिंगोटे के वृक्ष कात्रपुर से सिक्किम तक, बिहार, गुजरात, ग्वान-  
देश, दक्खन और राजपूताना आदि कई देशोंमें होते हैं ।

परिचान और फूलने फलने का समय—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा  
और काटेदार होता है । इसकी पेटळ छोटी और खड़ी होती है । उसकी मोलाई  
दो फुट या कुछ अधिक होती है । फाल्गुन में इसके नयन पत्ते निकलते हैं । चैत्र  
वैशाख में श्वेत या कुछ हरे श्वेत, सुगंधयुक्त छोटे पुष्पों के गुच्छे लगते हैं । इसके  
पके हुए फलके छिलकेका रंग पीला और उसके भीतर भीठी परन्तु वेखाद  
गिरी गुठलीके चारों ओर लिपटी रहती है । फल मझोले आमके बराबर होते हैं  
इसकी गुठली आतिशबाजी के काममें आती है ।

प्रयोग—( १ ) इसका पंचांग औषधिके काममें आता है इसके बीजांजी  
गिरीकी फकी देनेसे कफ मिटता है ( २ ) इसकी छालकी फकी देनेसे पेटके  
कीड़े मरते हैं ( ३ ) इसके कच्चे फलकी आधरतीसे १० रती तककी मात्रा  
देनेसे दस्त लगता है ( ४ ) एक रती से १५ रती तक इसकी गिरीकी फकी  
देनेसे सूखी खासी मिटती है ( ५ ) एक फलकी आधी गिरी देनेसे पेटकी  
शूल मिटती है ( ६ ) वायाविडंगके साथ इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी देनेसे पेटके  
कीड़े मरते हैं और विरेच होता है ( ७ ) हिंगोटेकी भांगीको पानीमें घिसकर अग्न  
करनेसे आमकी ज्योति बढ़ती है ( ८ ) इसकी दोभाग भांगीमें एकभाग अमर

मिलाके अंजम करनेसे मोतियात्रिन्द मिटताहै ( ६ ) इसकी छालके एक तोले चूर्णकी फक्की नित्य १५ दिन पानीके साथ देनेसे कुष्ठ आदि रुधिर-विकार मिटतेहैं परंतु इस प्रयोग के सेवनके समयमें खटाई लवण और वातल पदार्थोंसे बचना चाहिये ( १० ) इसकी गुठली की गिरी में से तेल निकाला जाताहै । इसके तेलके गुण—यह स्निग्ध, शीतल और मधुरहै । कांति, बल, धातु, केश, कफ और नेत्रोंकी ज्योतिको बढ़ाताहै और पित्तनाशक है ( ११ ) इस तेलका शरीरपर मर्दन करनेसे कान्ति बढ़तीहै ( १२ ) शिरमें लगानेसे बाल घबटतेहैं ( १३ ) दूधमें इसकी १० से ३० बूंदें डालकर पीनेसे पित्त शान्त होताहै ( १४ ) व्रण पर लगानेसे उसकी दाह मिटजाती है ॥

संख्या ( ६३ )

( १० ) इन्दीवरा, युग्मफला, दीर्घवृन्ता, उत्तमा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	भरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	उतरन	चमारदुभेली	उतरणी	इन्द्रचिंभिटी		गुरुटीचिट्टु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
उत्तमनि	हासकोर्सीगे			<i>Diosma extensa</i> <i>Asclepias ocellata</i>	<i>Hairy Bowel</i> <i>Cynanchum</i>	

स्थान—यह हिन्दुस्थानके उष्ण प्रदेशोंमें होती है ॥

पहिचान—यह एक प्रकारकी बेल होतीहै, इसके सफेद पुष्प और दो २ फल एकठौर लगतेहैं वे आकड़ेके फलके सदृश होतेहैं उनके ऊपर कांटे होतेहैं और उनमें रुई निकलतीहै फलको तोडनेसे इसकी डालीमें से दूध निकलता है इस बेलमें गंध अच्छी नहीं होतीहै ॥

प्रयोग—( १ ) इसके स्वरस की १० बूंदों से मासे तक मात्रा देने से घमन होके बालकोंके पेटके रोग मिटजातेहैं ( २ ) बच्चोंकी खांसी और श्वासमें इसके पत्तोंका शरती स्वरस लाभदायकहै ( ३ ) बच्चोंको इसके पत्तोंका काथ

पिलानेसे उनके पेटके कीड़ोंका उपद्रव मिटताहै ( ४ ) इसके पत्तोंके स्वरसमें चूना मिलाके लगानेसे हाथपैरोंकी गठिया की सूजन मिटतीहै ( ५ ) अदीठ पर इसके पत्तोंकी टिकड़ी बाधनेसे उसका घाव जल्दी भरताहै ( ६ ) इसके और काली तुलसीके पत्तोंका रस निकालके पिलानेसे बच्चोंको बिना परिश्रम वमन होजातीहै ( ७ ) इसके पत्ते और अजवायनको पीस गर्मकर गोली बनाके खानेसे खांसी मिटती है ॥

— ० ० —

संख्या ( ६४ )

( सं० ) इन्द्रवारुणी, ऐन्द्री, अरुणा, विपर्णा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तसतुषो	इन्द्रायन फरफेंदु	इटरवाणी	लभुकावडक	सम्बालशशा	तुम्गा फरफेंदु	येटिपुच्चफायि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आत्तु- म्बिडिकाय	हावु- मेक्केफायि	हिजल- अलकूम	शिरग	Citrullus. Colocynthis Cucumis L.	Colocynthis	

स्थान—इसकी बेलें पश्चिमोत्तरदेश, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होती है ॥

पाहियान—वर्षा ऋतुमें इसकी बेलें उगतीहै वे प्रायः २० हाथतक लम्बी बढ़जातीहै उनके २-३ हाथ बढनेके पीछे हरेके पत्तेके पास कुछ पीला पुष्प लगताहै उसके नीचे गोल फल लगताहै जो पहिले हरा और पक जाने पर पीले रंगका होजाताहै । इसकी बेलें ज्यों २ बढ़ती जातीहै त्यों २ इसके हरेके पत्तेके नीचे जड़ फूटके जमीनमें लग जातीहै और हरेके पत्तेमें पुष्प और फल लगता जाताहै फलकी गिरी कडवी होतीहै उसमें ठौर २ रीज गडे रहतेहै ।

इसके बीजोंमेंसे प्रायः आधा तेल निकलताहै, उसके निकालनेकी यह रीतिहै कि बीजोंको फलकी गिरीसे अलग करके सेक लें फिर उनको जलमें

मा० गरडूमो, ब० रासालनाडु, तै० प्रापर, द्रा० आत्तुम्बिडि ।



थोटा थैलीमें भर बन्दकर मलके वनके जिलके उतरकर गींगीका तेल निकाल लेना चाहिये।

प्रयोग--(१) इसकी जड़ तीक्ष्ण विरेचक है जिन २ रोगोंमें विरेचनकी आवश्यकता है उन सबकी औषधिघ्नोमें बहुधा यह मिलाई जाती है (२) स्त्रियोंके स्तनपाकमें इसकी जड़का लेप करते हैं या पुल्टिस बांधते हैं (३) इसका जुल्लाव लेनेसे शरीरमें जहां २ आम आर रुफ होता है वह निकल जाता है (४) इसका वफारा देनेसे स्त्रीवर्म शुद्ध होने लग जाता है (५) इसके फलमें दूध कर उसमें कालीमिरचें भर, छेदको बन्द कर ऊपर कपड मिट्टी चढाके भूभलमें आगके पास कुछ दिन तक गाड़ रखते हैं पीछे उनको निकालके अफारा मिटानेके लिये दिया करते हैं। इसीरिति से रेवन्दचीनीका भी प्रयोग किया जाता है (६) जबकि टुकड़में सूत्रका वनना बन्द होजाता है अथवा मूत्र रुक जाता है तो इसके गूदेमें रेवन्दचीनी मिलाके देना चाहिये (७) इन्द्रायन इकल्लीकाममें नहीं आती है परन्तु बहुधा रेचक और वातनाशक औषधियोंके साथ दी जाती है इसको इकल्ली देनेसे पेटमें मरोडे होजाते हैं और अधिक मात्रा देनेसे आंतोंमें शोथ होजाती है और कभी २ मनुष्य मर भी जाता है (८) इसकी गिरीको पानीमें थोड़ा मल ब्यान गाढा करके उसकी गोलिएा बना रखते हैं, इनमेंसे १-२ गोलीको सोती समय ले ऊपर उष्ण द्रव्यको ठंढा करके पीनेसे प्रातःकाल शुद्ध विरेचन लग जाता है (९) इसका सूखी जड़की फरकी देनेसे विरेचन लगता है (१०) शरीर के किसी भागकी जलयुक्त शोथ को मिटानेके लिये इसका वफारा और विरेक देना चाहिये (११) यह आस की बहुत उत्तम औषधि है (१२) वृश्चाके डब्बके रोगमें इसकी जड़के १ मासे चूर्णमें २ रती संधानमक मिलाके उष्ण जलके साथ देना चाहिये (१३) तसतूबेकी गिर और एलुबको पीस गूमें करके लेप करनेसे अफारा उतरता है (१४) इन्द्रायन (तसतूबे) में साभरानोन और अजवायन भर उसका मुह बन्द करके घाममें सुखा कर धर रखें, इसमेंसे उष्ण जलके साथ फकी देनेसे दस्त लगके पेटकी पीडा मिटती है (१५) इसके ताजे फलकी गिरको उष्ण जलके साथ या सूखी गिरको अजवायनके साथ चिमूचिकाग देना चाहिये।

( १६ ) इसकी जड़को पानीके साथ पीस छानके पिलानेसे घूत्रकी रुकावट मिटती है ( १७ ) इसके पके हुए फलको या उसके द्रिखकेको तेलमें थोड़ाकर कानमें टपकानेसे बहिरापन मिटता है ( १८ ) इसकी जड़को पीस गौंके घीमें मिलाके भंगमें मलनेसे बच्चा तुरन्त सुखसे पैदा होजाता है ( १९ ) इसकी जड़को सिरकेमें पीस गर्म करके लगानेसे सृजन उत्पत्ती है ( २० ) इसकी जड़को हकड़ोंको पांच गुने पानीमें थोड़ावे जब तीन भाग पानी शेष रहजावे तब छानकर उसमें बराबरा बुरा डाल शर्वत बनाकर पिलानेमें उपदेश और वातपीड़ा मिटती है ( २१ ) इसके फलकी गिरीको गर्म करके पेटपर बांधनेसे आंतोंके सब प्रकारके कीड़े मरजाते हैं ( २२ ) इसको पानीके साथ पीसके प्रमृता स्त्रीके बड़े हुए पेटपर लेप करनेमें उम्रका पेट पीछा अपनी योग्य दृशापर आजाता है ( २३ ) इसकी जड़को योनीमें रखनेसे योनिशूल और पुष्पावरोध मिटता है ( २४ ) इसकी जड़ और पीपलके चूर्णको गुड़में मिलाके एक तोले प्रमाण नित्य देनसे संविगत वायु दूर होती है ( २५ ) इसके चूर्णको नस्य देनेसे अपस्मार मिटता है ( २६ ) इसके पके हुए फलकी धूनी देनेसे दांतोंके कीड़े मरजाते हैं ( २७ ) इसके तजे फलकी ७ मास गिरी खानेसे विन्डूका विष उतरता है ( २८ ) इसके रसमें रुईका फोया भिंगोके योनीमें धरा रखनेसे बच्चा तुरन्त सुखसे पैदा होजाता है ( २९ ) वीलिपत्र के साथ इसकी जड़को पीसके सेवन करानेसे स्त्री गर्भ को धारण करती है ( ३० ) इसकी जड़का गाँयके दूध के साथ कई दिनातक सेवन करनेसे सफेद केश काले होजाते हैं परन्तु जबतक इसका सेवन किया जाय तबतक केवल दूधही पीना चाहिये ( ३१ ) १० तोले इन्द्रायन को २ सें जल में थोड़ा आधसे रत्न मल छानकर उसमें आधसे एरंडका तेल डालके थोड़ावे जब केवल तेल शेष रहजावे तब उतारके शीशिम भर रजले इसमेंसे डेढ़ तोला तेल गाँके दूधमें मिलाके पिलानेसे उपदेश आदि रोग मिटते हैं ( ३२ ) इसके बीजके तेलसे केश काले हो जाते हैं । बीजोंकी मागी खानेके काममें आती है । इसके फलका मुरब्बा बनानेकी रीति यह है कि इन्द्रायन को चाकूस खूब गाँद के पानीमें थोड़ाके निकाल लें जबतक उसका कडवापन न मिटे तबतक उसको थोटा २ के जल निकाल दिया करें पीछे उसका दूरेके साथ मुरब्बा बनालेना चाहिये । इससे पेट के विकार मिटते हैं ॥

संख्या: (६५)

( सं० ) महाकालः, काकमर्दः, किम्पाकः, उरुकालः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलेगी
लाल तसतुवा	लालइंद्रायन	चित्रो	कंबडल	माकाल रक्तमाकाल		अंबगुडपण्डु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	अवगुडहनु	हिंजलेग्रहमर	शिरंगसुख	<i>Trichosanthis</i> <i>palmata</i> <i>Laciniosa</i>		

स्थान—यह हिन्दुस्थान के आर्द्र जंगलों में सब ठौर होती है ।

पहिचान—इसकी बड़ी भारी बेल होती है इसका फल गोल, चमकदार और लालरंग का होता है उसके भीतर का भाग नारंगी रंगका और उसमें नीलेरंग के बीज होते हैं इस जंगली बेलका फल बहुत रचक होता है वाईहुई का फल जत्र अच्छीतरहसे उवाल लिया जाता है तो नैराग्यतादायक हो जाता है ।

प्रयोग—( १ ) इसके फलको पीसके नारियल के तेल के साथ गर्म करके कानके भीतरके दुष्ट ब्रणपर लगानेसे वह साफ होके भर जाता है ( २ ) सर्द गर्मी से जो नाक में ऐसे फोड़े होजाते हैं कि जिनमेंसे सड़ाहुआ पीप निकलताहो उन परभी उक्त तेलके लगानेसे लाभ होता है ( ३ ) इसके फलको चिलममें रखके पीनेसे श्वास मिटता है ( ४ ) इसकी और तसतुवेकी जड़ बराबर ले पीसके अदीठ पर लेप करना चाहिये ( ५ ) इसकी जड़, हल्दी, हरडकी छाल, बहेड़े और आवले प्रत्येक बराबर ले इनका काथकर मधु मिलाके पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ६ ) इसके फल के रस या जड़की छाल को तिलोंके तेलमें थोड़ा उस तेलको मस्तक में मलने या लगानेसे मस्तकपीडा या वार होनेवाली मस्तकपीडा मिटती है ( ७ ) इसके और सुरयाली ( ककरडी ) के बीजोंका तेल निहाल मस्तक के बाल मुंडवाके उसपर इस तेलका लेप करनेसे बाल काले उगने लगते हैं ।

संख्या ( ६६ )

(-सं०) ईसवगोलं, शैतवीजं, शौशिरिकं, सिग्धजीरकम् ।

गारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ईसवगोल	ईसवगोल	उधमुंजीरू	ईसवगोल	ईसवगोल	ईसवगोल	ईसवगोलवित्तु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
इस्कोन्विरै	इसमगोलु	बजरेकुतूना	अस्पगोल	Plantago ova L. P. Japāhul	Isopogon or spogon L. seeds	

स्थान—इसके वृक्ष बंगाल, मैसोर, फारोमडल के किनारा और पंजाब में पाये जाते हैं ।

प्रयोग—( १ ) ३ मासे ईसवगोल को १५—२० (मिनट तक पानीमें भिगो के निगला देनेसे पुराना अनिसार और आम्रातिसार मिटताहै ( २ ) आंतोंकी दाह, शोथ और काटु को मिटानेके लिये सात वीजोंकी या उनकी भुस्सीकी मिश्री के साथ फकी देनी चाहिये; या उनको थोड़े जल में भिगोके फूल ज्ञानेपर निगला देना चाहिये ( ३ ) इसका चेष, निराल बूरा बाल के पिलाने से पुराना आम्रातिसार और अतिसार मिटताहै ( ४ ) पित्त प्रकृति वाले के प्रतिशयाय में इसका चेष बहुत हितकारीहै ( ५ ) इसके चेषमें बूरा मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( ६ ) वीजों को सेरुके फकी देनेसे अतिसार और आम्रातिसार मिटताहै ( ७ ) इसकी मात्रा ३ मासे से ६ मासे तकहै ( ८ ) बूरे के साथ इसका शर्बत बनाके पिलानेसे मूत्रमार्ग की दाह और मूत्रकी उष्णता मिटतीहै ( ९ ) जब मूत्रका पैदा होना बन्द होजाया हो; या जलताहुआ मूत्र उतरता हो; या मूत्राशय में दाह होती हो तो इसका केवल शर्बत या उसमें मूत्रजनक दूसरी औषधियाँ मिलाके पिलाना चाहिये ( १० ) इसका शर्बत पिलानेसे रक्तार्श का रुधिर बन्द होजाताहै ( ११ ) भिगडे हुए व्रण और घार पर ईसवगोलका पुण्डिस बाधतेहै ( १२ ) शीतल मिरच और कलमीशोरेके साथ इसकीफकी मूत्रकृच्छ्रमें बहुत लाभदायक है

( १३ ) १। तोले ईसवगोल को १। सेर जल में आटा आधा रख के दिन भर में पिला देनेसे अतिसार और आमतिसार मिटताहै ( १४ ) इसके काथसे ज्वर की ऊष्मा कम होजातीहै ( १५ ) गठिया और छोटे जोड़ों की गांठों पर इसका पुड्डिस धांधतेहै ( १६ ) पित्त की मस्तरुपीड़ा में इसका चेष लगाना चाहिये ( १७ ) कफ और प्रतिश्याय में इसका काथ पिलाना चाहिये ( १८ ) इसको सिरके में पीसकर कनपटियोंपर पतला लेप करनेसे नकसीर बन्व होतीहै ( १९ ) इसका चेष लगानेसे पित्त की नेत्रपीड़ा मिटतीहै ( २० ) इसको गुलखैरा के पुष्पों के साथ पीसकर कनपटियों पर लेप करनेसे घामसे पैदा हुई मस्तरुपीड़ा मिटतीहै ( २१ ) होंठ या जीभ फटजाने पर इसको चेषमें कतीरा गांध मिलाके लेप या कुल्ले करने चाहिये ( २२ ) इसके चेषमें कादेका रस मिला कुछ गर्भ करके कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै ( २३ ) इसको सिरकेमें भिगो दांतोंके नीचे दबा रखनेसे गर्मीकी धंतपीड़ा मिटतीहै ( २४ ) इसके चेषमें गडूलका शर्वत मिलाकर पिलानेसे तृषा मिटतीहै ( २५ ) इसके चेषमें कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै ( २६ ) ३-४ महीने तक लगातार दिनमें दोबेर १ तोले ईपद्मोलकी फकी लेते रहनेसे सब प्रकारके श्वास मिटतेहै ( २७ ) इसको सिरकेमें भिगो चेष निकालके पिलाने से मेंडका विष उतरताहै ( २८ ) १ तोले ईपद्मोलकी चेष निकाल जिसमें बुरा मिलाके पिलानेसे पिचोन्माद मिटताहै ( २९ ) इसको पीसके लेप करनेसे सूजन उतरतीहै

संख्या ( ६७ )

( सं० ) उत्पल, रात्रिपुष्प, हिमाब्ज, जलाह्वयम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गडूल	गडूल नीलोफर	नहानकमल प्रोयणा	कहानकमल चंद्रविक्रापी	शुदीकुल	नीलशुदी	कलहारमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अश्विनामरे	नयादलेह	नीलफर	नीलफर	Hyphlea Folia	Waterlily	

स्थान—गड्डले हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंके जलाशयोंमें होतेहैं ।

पहिचान—यह सफेद नीले और लाल रंगके पुष्पोंके भेदसे ३ प्रकारके होतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) इसके पुष्प, रुक्त शीतल और संकोचकहैं ( २ ) इनको थोटाकर पिलानेसे अतिसार मिटताहै ( ३ ) इनका शर्वत पीनेसे हृदयका बल बढ़ताहै ( ४ ) पित्तज्वरमें इसके पुष्पोंको बूके साथ थोटाके पिलाना चाहिये ( ५ ) विसूचिकामें मूत्रकी रुकावट मिटानेके लिये इसकी जड़ या डंडीका काथ पिलाना चाहिये, ( ६ ) यकृत के पैत्तिक रोगोंमें, इसकी डंडीका काथ अथवा शर्वत पिलाना चाहिये ( ७ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी, देनेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होताहै ( ८ ) इसकी जड़को बीलगिरके साथ थोटाके पीनेसे आमातिसार मिटताहै, ( ९ ) इसके बीजोंके चूर्णको मधुके साथ चाटनेसे पित्त संबंधी त्वचाके रोग मिटतेहैं ( १० ) इसके पुष्प और डठलके चूर्णकी फकी लेनेसे आंतों और आमाशयसे रुधिरका बहना बन्द होताहै ( ११ ) इसकी जड़ोंको कच्ची अथवा उवाले कर खातेहैं कच्चे फलफा शाक बनाके खातेहैं इसके बीजोंको सेककर खातेहैं ( १२ ) इसके बीज त्रिपनाशकहैं ( १३ ) इनका लेप करनेसे कुष्ठकी दाह मिटतीहै ( १४ ) इसका शर्वत पिलानेसे प्रतिश्याय मिटताहै ( १५ ) पसलीकी सूजन मिटानेके लिये इसका शर्वत पिलाना चाहिये ( १६ ) गड्डलेके चूर्णकी नस्य देनेसें तृषा मिटतीहै ( १७ ) इसको दूधमें मिला कर एक महीने तक जमीनमें गाढ रखे फिर उसका घी निकालके लगानेसे केश काले होतेहैं ।

संख्या ( ६८ )

( सं० ) डुमोत्पलः, परिव्याध, पीवरी, योपिनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
			वृक्षकमळ(ल)	उल्लट्कमळ		गोंगु कोंडगोंगु
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	बेहतावरे			Abroma August.		

स्थान—यह हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण प्रदेशोंमें होताहै।

प्रयोग—(१) इसकी जड़की छाल और कालीमिरचके दोसे द' मासे तक चूर्ण देनेसे ऋतुधर्म ठीक होने लग जाताहै (२) इसकी जड़की छालमें एक प्रकारका चिपदार गाढा पदार्थ निकलताहै उसमें रजोधर्मकी रुकावटको दूर करनेका गुणहै (३) ऋतुधर्म प्रारम्भ होनेके एक सप्ताह पहिले इस औषधि को देनेका प्रारंभ करना चाहिये। जबतक ऋतुधर्म न हो तबतक देते रहना चाहिये जिस दशामें रजस्वलाका रुधिर जम जाताहै उस दशामें इसका प्रयोग करना बहुत लाभदायकहै (४) इसकी पांच तोले सूखी छालको २॥ पात्र पानीमें ओढाकर दिनमें तीन बेर ढाई ढाई तोले पिलानेसे मासिक धर्म अपने उचित समयपर होने लगजाताहै और गर्भाशयभी अपनी योग्य दशामें होजाताहै (५) इससे पेटकी पीड़ा और आध्मानभी मिटताहै (६) मासिक धर्म होने के समय पीड़ाका होना या मासिक धर्मके विकारसे पैदा हुआ बन्ध्यापन इसके प्रयोगसे मिटजाताहै।

संख्या ( ६६ )

(सं०) उदुम्बरः, जन्तुफलः, हेमदुग्धः, सदाफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	भरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गूलर	ऊमर गूलर	उंचरो	उधर	यज्ञदुमुर	गूलर	भेडिचेट्टु
द्राचिडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अचि	अचि			Flens glomerata. Corolla glomerata.		

स्थान—इसके वृक्ष राजपूताना, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान हिमालय और आसाम आदि बहुतसे देशोंमें होतेहै।

पहिचान—इसकी उंचाई ४० से १०० फुटतक होतीहै इसकी पेड़की गोलाई ५ से १४ फुटतक होतीहै इसकी छाल भूरी और साफ होतीहै। इसके पोप

से चत्रतरु नवीन पत्ते निकल जाते हैं । इसका फल रूपदार होता है वह पकजाने पर लाल वा नारंगी रंगका होजाता है । इसके लाख लगती है इसकी छाल में से काला रंग निकाला जाता है ।

फूलने फलनेका समय—चैतसे अपाढतरु फल पकते हैं ।

प्रयोग—( १ ) इसके कचे फलोंका शाक होता है और उनके चूर्णको आटेमें मिलाके रोटी बनाकर खाते हैं ( २ ) इसकी छाल शोषक है ( ३ ) छालके क्वाथसे क्षतको धोना चाहिये ( ४ ) बिल्ली और व्याघ्रके काटेहुए घावको इसके क्वाथसे धोते हैं ( ५ ) आम्रातिसारमें इसकी जड़के चूर्णकी पकी देना चाहिये ( ६ ) इसकी जड़में छेद करके एक प्रकारका द्रव ( मद ) निकालते हैं उसको बल बढ़ानेके लिये बहुत दिनोंतक लगातार पिलाते हैं ( ७ ) पत्तोंको पीस मधुके साथ चटानेसे पित्तके विकार शान्त होजाते हैं ( ८ ) इसके पत्तोंपर जो फफोले जैसा आकार उठजाता है उसको दूधमें भिगो मधुके साथ चटानेसे चेचकके फोडेमें जो ऊँडे गढे पडने लगते हैं वे बन्ध होजाते हैं ( ९ ) इसके दूधको जलमें मिलाके पिलानेसे रक्तातिसार और रक्तार्श मिटता है ( १० ) बहुमूत्र या और प्रकारके मूत्ररोग मिटानेके लिये पारा आदि धातुओंके रस पनाये जाते हैं उनमें इसके पके फलोंका ताजा रस डाला जाता है ( ११ ) इसकी पेटडमेंसे जो रस निकाला जाता है वह बहुमूत्र रोगमें दिया जाता है ( १२ ) कर्णमूलके शोथपर या दूसरी पेशियोंकी पित्तशोथ पर इसके मदका लेप करना चाहिये ( १३ ) इसका ४ तोले मद पिलानेसे मूत्रकुच्छ मिटता है ( १४ ) क्षतपर इसके मदका लेप करना चाहिये ( १५ ) इसके क्वाथके गंडूप करनेसे मसूड़े और दांत दृढ हो जाते हैं ( १६ ) इसकी छालका हिम या फाट पिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है ( १७ ) इसकी जड़का मद पिलानेसे मूत्रातिसार मिटता है ( १८ ) इसके फल संकोचक और ग्राही है ( १९ ) इसके फलसे पेटकी पीड़ा और आध्मान मिटता है ( २० ) बिलके शर्बतके साथ इसके फलके चूर्णकी पकी देनेसे रक्तप्रदर मिटता है ( २१ ) कमलगट्टे और इसके फलोंके चूर्णको दूधके साथ देनेसे रुधिरकी वमन बन्ध होती है ( २२ ) इसके मूखे या हरे फलोंको पानीमें पीस मिश्री मिलाके पिलानेमें



खिरकी वमन, रक्तातिसार रक्तार्श और मासिकधर्ममें अधिक रुधिरका जाना बन्ध होता है ( २३ ) इसकी पेदडकी छालको पानीके साथ पीस तालू पर लगानेसे नकसीर बन्ध होती है - ( २४ ) इसका एक मासेभर दूध पिलाने से दस्त बन्ध होती है ( २५ ) इसकी जडको कूटकर आटाके पिलानेसे गर्भस्त्राव होना बन्ध होता है ( २६ ) इसके दूधमें फोया भिगोके नामूर भगंदर और घावपर नित्य नया बांधनेसे भर जाते है ( २७ ) सूत्रके रोग मिटानेके लिये इसका दूध दो घतासोंमें भरके खिलाना चाहिये ( २८ ) इसकी छालको पीसके लेप करनेसे भिलावेके धुम्रसे पैदा हुई शोथ उतरती है ( २९ ) इसकी जडकी छालके हिममें शक्कर मिलाके पिलानेसे तृषायुक्त पित्तज्वर छूटता है ( ३० ) इसके पक्के फलोंको मजु अथवा गुडके साथ खानेसे नकसीर बन्ध होती है ( ३१ ) इसके पके हुए फलोंके रसमें शक्कर मिलाके पिलानेसे पित्तकी तृषा मिटती है ( ३२ ) इसके गोंद और शक्करकी फक्की पानीके साथ देनेसे पित्तज्वरकी दाह मिटती है ( ३३ ) इसका रस पिलानेसे श्वेत प्रदर मिटता है ( ३४ ) इसके दूधमें वापची भिगो पीसके लेप करनेसे सब प्रकारकी पिटिका और ब्रण मिटते है । ( ३५ ) इसकी अंतर छालको खीके दूधमें पीसके पिलानेसे बच्चेका भस्मरु रोग मिटता है ( ३६ ) इसकी छाल और लालाके बीजोंको बराबरले कूट छानके पानीके साथ ४० दिन फक्की लेनसे श्वेतकुष्ठ मिटता है ( ३७ ) गुलारके रसमें मधु मिलाके पिलाने से रक्तपित्त मिटता है ॥

संख्या ( ७० )

( सं० ) काकोदुम्बरः, अजात्ती, फल्गुनी, मलयः ।

गोरवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कूटगूलर	कदुमर कदुम्बर	देड उम्बरो	काळा उम्बेर	काकडुमुर	फगवाडी कदुमर	ब्रह्ममंडि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पेयत्ति	काडत्ति	तीनेवरी	इजीरेटस्ती	Ficus III Fida F. Oppositifolia		

स्थान—कठगूलरके वृक्ष चनाव नदीसे पूर्वकी ओर और बंगाल मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होते हैं।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ६० फुट तक होजाती है। माह, फागुन में इसके नवीन पत्ते निकल आतेहैं। इसके पके हुए फलका रंग कुछ हरा होताहै। इसकी छाल पतली और खरदरी होतीहै। उसका रंग भूरा या कुछ हरा होताहै, इसकी अंतर छालमें दूध निकलताहै।

फूलने फलने का समय—चैत, वैशाख और जेठ तक इसके फल पक जातेहैं।

प्रयोग—(१) इसके फल, बीज और छाल, अच्छे चामक और थोड़े रूचकभी है। (२) इसकी छालके १ से २ मासे तक चूर्णकी दिनमें तीन चार घेर फक्की देनेसे बारीसे होनेवाले वेग मिटते हैं। (३) इसकी ४ रती से १ मासे तककी मात्रा बलवर्द्धक है। (४) इसके फलोंको पुष्टिस बनाके वद पर बांधते है। (५) इसके फल खानेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ताहै। (६) इनके सेवनसे गर्भपात होना बन्द होजाताहै। (७) इसके पके हुए फलोंको बीनोंको छायामें सुखाके शीशीमें भर बन्दकर रखें जब वमन कराना हो उससमय ४ मासे पीसके उष्ण जलके साथ फक्की देना चाहिये। (८) ऐसेही २॥ मासे से ४ मासे तक इसकी छालके चूर्णकी फक्की देनेसे वर्मना अधिक होतीहै, और थोड़े बहुत शौचके वेगभी होतेहै। (९) इसके पके हुए तोजे फलकी मात्रा ४ से ६ मासे तक है। इसके फल खानेके काममें आतेहैं। (१०) इसके फलोंके चूर्णमें बराबर शिकर और शहद मिला मोदक बांधकर खिलाने से प्रदर रोग मिटताहै। (११) फलोंके रस में मधु मिलाके पिलाने से रक्तप्रदर मिटताहै। (१२) इसकी जड़ और धतूरेके बीजों को चावलोंके पानीके साथ पीसके पिलानेसे कुचे का विष उतरताहै। (१३) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में बल आताहै। (१४) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में शक्ति आताहै। (१५) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में सुख आताहै। (१६) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में सुस्वास्थ्य आताहै। (१७) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में सुन्दरता आताहै। (१८) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में सुकृति आताहै। (१९) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में सुखी आताहै। (२०) इसके फलके रस में शहद मिलाके पीने से शरीर में सुखी आताहै।

देना चाहिये ( १३ ) इसके ७॥ मासे चूर्णको २५ तोले पानीमें ओटाके उस  
मेंसे २॥ या ४-तोले तककी मात्रा देनी चाहिये यह काथकी मात्रा है ( १४ )  
इसका काथ-पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र-मिटता है ( १५ )-इसकी-दृष्टीकी हवासे-दाह-  
मिटती है ( १६ ) खस और पीपलामूलको बराबर ले घीमें घटानेसे तीव्र  
हृन्शूल-मिटती है ( १७ ) इसके रसमें घृण-मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद ( गर्मी  
का-होल-दिल- )-मिटता है।

संख्या ( ७३ )

( सं० ) उष्ट्रकण्ठकः, कण्ठफलः, करभादन, वृत्तगुच्छः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
ऊटकटालो	ऊटकटेरा	उरकटो	उटकटीरा	ठाकुरकाँटा	ऊटकटाली	
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		उस्तुरगार	उस्तुरखार	<i>Echinops echinatus</i>	<i>Thistle</i>	

१. स्थान—यह मारवाडमें बहुत होता है ।

२. पहिचान—ऊटकटारका गुल्म पसर कटेली जैसा होता है परंतु पृथ्वीपर  
नहीं फैलता है। यह खडा होता है। इसके गोल डोढे लगते हैं उनपर छोटी, बड़ी  
तीखी-शूलें लगी रहती हैं।

३. प्रयोग—( १ ) इसकी जड़की छाल और गोखरू तीनों तीन मासे और  
मिश्री दि-प्रासेकी दूधके साथ फकी लेनेसे प्रमेह मिटता है ( २ ) छुंवारेकी गुठली  
और इसकी जड़की छाल बराबर ले पीसनेके फकी देनेसे मंदाग्नी  
मिटती है ( ३ ) इसकी जड़की छालके चूर्णको पानमें रखके खिलानेसे खांसी  
और कफ मिटता है ( ४ ) इसकी जड़की छालको ओटाके पिलानेसे बच्चा  
होते समय स्त्रीको बहुत कष्ट नहीं भोगना पड़ता है ( ५ ) तालमखाने मिश्री  
और इसकी जड़की छालके चूर्णकी फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ६ ) इसकी  
जड़को पीसके गर्भवती स्त्रीके पेटपर लेप करनेसे बालक सुखसे पैदा होजाता है

( ७ ) इसकी सूखी जड़के एक एक तोले चूर्णको मधुमें मिलाके ७ दिन खाने से अधिक पानीना आना मिटताहै ।

संख्या ( ७४ )

( सं० ) एकवीरः, महावीरः, सकृद्वीरः, सुवीरकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
	एकवीर	एकलफटो	एकवीरु	एकवीर		गुडेबिगुल
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बेंगलरम	गडुबिके			<i>Briedella montana.</i>	<i>Briedella.</i>	

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें भेलमके पूर्वकी ओर, बिहार, ओड़ीसा और बंगालमें होतेहैं ।

पाहचान—यह एक साधारण ऊंचाईका वृक्ष होताहै इसके स्कंधमें मोटे तखे और लम्बे कुछ २ दूरपर अण्णदार कटे होतेहैं इसके पत्ते पाकडके पत्तों के आकारके होतेहैं फल छोटे २ बेरके आकार झुमकोंमें लगतेहैं इसके कुछ हरे रंगके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) इसकी छालको पानीमें भिगोनेसे बहुतसा चैप निकलता है ( २ ) इसके चूर्णकी फक्की देनेसे वीर्य्य पुष्ट होताहै ( ३ ) इसके प्रयोग से बीडे मरतेहैं ( ४ ) बिलगिरके साथ इसके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार मिटताहै ।



संख्या ( ७५ )

( सं० ) एरका, गुंद्रमूला, शरी, शविः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	वद्वाली	पंजाबी	तैलङ्गी
एरो	गोंद टिर	पान्य	मोथी तृण	होगला	एरकाडिम	जम्मु गड्डे
द्रावड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Typha Angustifolia.</i> <i>T. Elepaantina.</i>	The reed mace Lessorcat's tail or Elephant grass.	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें तालाब और नदियोंके किनारे होता है ।

पहिचान—इसके पत्ते बहुत लम्बे और इंच सत्राईच चौड़े होते हैं ये एक ओरसे साफ और दूसरी ओर उनके बीचमें कुछ उठी हुई लंगी खड़ी रेखा होती है इसी जड़मेंसे ही इसके पत्ते निकलते हैं पत्तोंके बीचमें एक लंबी डंडी होती है उसके ऊपर एक फुट लंबा रूएदार सिट्टा होता है ।

प्रयोग—( १ ) इसके पकेहुए सिट्टेकी रूई क्षत और ज्वर पर सादी रूईकी भांति लगाई जाती है ( २ ) एरको जलमें ओटाके स्नान करनेसे शीतपित्त मिटता है ( ३ ) इसकी जड़को मिश्रीके साथ ओटा छान ठंडा करके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ४ ) यह शीतल पुरुषार्थ पैदा करनेवाला नेत्ररोग मिटानेवाला और वातल है ( ५ ) यह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह और रक्तपित्तको मिटाता है ।

संख्या ( ७६ )

( सं० ) एरण्डः, आमण्डः, चित्रः, वातारिः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
एरण्ड इण्ड	एरण्ड अरण्ड	एरण्डो एरण्ड	एरण्ड	भरण्डा	हंडोला.अरण्ड	आमिदूट्ट
द्रिडी	नर्नाटवी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आगणक	हर्लिंगिड	खिरमाअत्रियज	वेदअजीर सुफद	Ricinus Communis R. cernis	Castor oil plant. (2) Palma, Christi.	

स्थान—एरण्डके वृक्ष हिन्दुस्थान में सत्र और होतेहैं ।

पहिचान—इसका वृक्ष दो प्रकार का होताहै एरुके वृज बड़े होतेहैं उसका तेल जलानेके काममें आताहै और दूसरेके बीज छोटे होतेहैं उसका तेल औषधिके प्रयोगमें आता है इसके बीजोंका तेल निकालने में अग्नि का संस्कार या उष्ण जलका ससर्ग नहीं होने देना चाहिये ऐसे निकाला हुआ तेल जलाने में दूसरे सब तेलोंसे अधिक प्रकाश देताहै इसकी रोशनी ठण्डी और नेत्रोंको हानिकारक नहींहै । यह जलनेमें दूसरे तेलोंसे कम जलता है और इसका कज्जल कम होताहै ।

प्रयोग—इसका तेल विशेष करके विरेचन के काममें आताहै, इससे निरुपद्रव तीव्र विरेचन लगताहै रोगीकी आयु और शरीरकी शक्ति चाहे जैसे हो दाह और खुजली नहीं होताहै शौचके वेग अवश्य लगतेहै परन्तु कभी २ किमीको विरेचन नहीं भी होताहै ( २ ) बालक को जन्मदिनसे तीन सप्ताह तक लगातार इस तेलकी थोड़ी २ मात्रा देनी चाहिये ( ३ ) बादीकी तीनुपीड़ा मिटातेवाली औषधियों के योग में इसका तेल पढ़ताहै ( ४ ) इसको गोमूत्र के साथ पेटके रोगोंमें देना चाहिये ( ५ ) सौंठके फाथ में मिलाके पिलानेसे भी बादी के रोग मिटतेहै ( ६ ) दश मूलके फाथमें मिलाके पिलानेसे भी बादीके रोग मिटतेहै ( ७ ) इसकी गुलीको पीस उष्णकर लेप करनेमें छोटे जोड़ोंकी और गठिया की शोथ मिटतीहै ( ८ ) स्त्रीके स्तनोंकी

शोथ पर भी यही लेप करना चाहिये ( ६ ) इसके पत्तोंमें इसकी मींगी जितनी शक्ति नहीं है। ( १० ) अहिफेन आदि दूसरे मादक विषोंका विष उतारने के लिये इसके पत्तोंका स्वरस पिलानेके बमन कराना चाहिये ( ११ ) इसके पत्तोंकी जोके आटेके साथ लूपरी बनानेके बांधनेसे आंखोंकी पित्त शोथ उतरती है ( १२ ) प्लीहादिक की पुरानी वृद्धि मिटानेके लिये इसकी जड़से विरेचन कराना चाहिये ( १३ ) इसकी जड़का लेप करनेसे रुधिरविकार मिटते हैं ( १४ ) इसके पत्ते उष्ण करके स्त्रीके स्तनों पर बांधनेसे दूध का संचार मिटता है ( १५ ) रुधिरकी ऊष्मा के कारण से शरीर पर खुजली और फोड़े फुन्सी होजाते हैं उन पर एम्बिका तेल लगाना चाहिये ( १६ ) इसके तेल की अपेक्षा इसकी मींगी में रेचक शक्ति बहुत तीव्र है अर्थात् २-३ बीजोंकी मींगीमें बहुत तीव्र विरेचन लगता है ( १७ ) इसके पत्तोंका स्वरस पिलानेसे दूधका संचार अभिक होता है ( १८ ) इसके पत्तोंको पीसकर विगड़े हुए घाव और घ्रणों पर लगानेसे साफ होके मिट जाते हैं ( १९ ) पत्तोंको उष्ण कर पेट पर बांधनेसे मासिक धर्म ठीक होने लगता है ( २० ) इसके पुष्प सारक हैं ( २१ ) इसके पत्तोंकी गर्भ करके बांधने से नहरुवे की शोथ उतरती है ( २२ ) इसकी सूखी जड़का काथ ज्वरनाशक है ( २३ ) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे त्वचाके रोग मिटते हैं ( २४ ) आंखके सफेद भागमें रंगड लगनेसे उत्पन्न हुई पीड़ाको मिटानेके लिये उसमें इसके तेलकी बूँद डालना चाहिये ( २५ ) विरेचन करानेके लिये इसके तेलकी तिगुने त्रिफलाके काथ या दूध के साथ देना चाहिये ( २६ ) इसकी जड़को पीस खानके पिलानेसे अफीम का विष उतरता है ( २७ ) इसके पत्तोंका रस गुदामें नित्य २-३ बेर मलने से पेटके कीड़े बाहिर निकल आते हैं ( २८ ) इसकी कोंपलोंको पीस खानकर पिलानेसे अफीमका विष उतरता है ( २९ ) इसकी कोमल कोंपलोंको पीस के लेप करनेसे नाड़ीघ्रण मिटता है ( ३० ) इसकी जड़को सिरके त्या पानीके साथ पीसकर गुणगुना कर लेप करनेसे श्रृंखलोंकी शोथ उतरती है ( ३१ ) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे कृमिरोग मिटता है ( ३२ ) इसकी दो सेर जड़ को ८ सेर पानीमें थोड़ा २ सेर पानी रख उसमें सेरभर एम्बिका तेल डालके थोड़ाके उस पानीको छिजोदेवें इस तेलका मर्दन करनेसे दाध शिरके जोड़ोंकी

वातपीडा मिटती है ( ३३ ) इसकी एक मींगी श्रुत स्नानके पीछे निगलानेसे एकवर्ष तक गर्भ नहीं रहता है ( ३४ ) इसके पत्तोंको गीली जमान पर बिछा उनको दाह युक्त ज्वर वालेके शरीर पर बांधनेसे दाह और ज्वरकी शान्ति होती है ( ३५ ) इसके रसमें पीपलका चूर्ण मिलाके तस्य देने या अंजन करनेसे कामला रोग मिटता है ( ३६ ) इमकी जड़के चूर्णको मधुमें मिलाके चटानेसे कामला रोग मिटता है ( ३७ ) इसके तेलको गोमूत्रमें मिलाके नित्य थोड़ी २ मात्रा एक महीने तक पितानेसे शुभ्रसी और उरुस्तंभ आदि रोग मिटते हैं ( ३८ ) इसके बीजोंकी मींगीकी दूधमें खीर बनाके खानेसे आम वात काटिशूल आदि वातपीडा मिटती है ( ३९ ) इसका तेल पिलानेसे वातकंठक रोग मिटता है ( ४० ) इसकी मींगी, सोंठ और शफर सब बराबर ले गोली बन के देनेसे आमवात मिटती है ( ४१ ) इसकी १ तोले जड़को प्रातःगुने पानीमें छोटा चतुर्थांश रख उसमें थोड़ा जोखार मिलाके पिलानेसे पार्श्व हृदय और कफकी शूल मिटती है ( ४२ ) इसके तेलको सोंठके काथमें मिलाके पिलानेसे काटिशूल मिटती है ( ४३ ) तेलको दूधके साथ पिलानेसे वातगुन्म मिटता है ( ४४ ) वातवृद्धि मिटाने के लिये भी इसका सेवन दूधके साथ एक महीने तक कराना चाहिये ( ४५ ) गोमूत्रके साथ इस तेलका सेवन करानेसे पुराणी वातवृद्धि मिटती है ( ४६ ) बलके क्वाथ में सिद्ध किया हुआ इसका तेल दूधमें मिलाके पिलानेसे आध्मान और शूलयुक्त अत्रवृद्धि मिटती है ( ४७ ) एरंडके तेलमें हरड़के चूर्णको मिलाकर पिलानेसे अत्रवृद्धि और शुभ्रसी आदि बादीकी कई प्रकारकी पीडा मिटती है ( ४८ ) इसका ५ मासे तेल १० तोले दूध में मिलाके पिलानेसे पारे और दिङ्गलूके उपद्रव मिटते हैं ( ४९ ) इसके और नीमके बीजोंको नीमके पत्तोंके रसमें गोली बना पानीमें रखनेसे उसकी शूल मिटती है ( ५० ) इसके तेलमें समान भाग दूध मिलाके पिलानेसे अट्टवृद्धि मिटती है ( ५१ ) इमके तेलमें हरड़को त्रिककर गोमूत्रमें मिलाके पिलानेसे श्लीषद मिटता है ( ५२ ) इसकी जड़का ६ मासे रस दूध में मिलाकर पिलानेसे कामलारोग मिटता है ( ५३ ) इमके पंचांग चो हठीमें भर उसका गृह कपड मिट्टीमें बन्दकर अग्निमें जला उसमेंसे एक तोले भस्म को चार तोले गोमूत्रमें घोलकर पिलानेसे श्लीशोदर मिटता है ( ५४ ) इसके तेल



और 'गुग्गुलुको' गोमूत्रमें मिलाके पिलानेसे 'पुगनी' वातवृद्धि मिटती है (५५) इसकी मींगीको पीसकर 'गुग्गुलु' लेप करनेसे गुर्देकी वातपीड़ा मिटती है (५६) इसकी मींगीके छिलकेकी भस्मको 'नाकमें' फूंकनेसे नकसीर बन्द होती है (५७) इसकी मींगी खानेसे श्वास मिटता है (५८) इसके पत्ते सिरकेमें पीसके लेप करनेसे स्तन कठोर होजाते हैं (५९) इसकी लकड़ीकी एक तोले भस्म खानेसे वातपीड़ा मिटती है (६०) इसके हरे पत्तोंको पीसकर गुदापर बाधनेमें चवा-मीर मिटती है (६१) इंडोलीकी मींगी बवांभीरको मिटाती है (६२) इसकी मींगी और मीठा तेल दोनों बराबर ले आटाके नित्य मलनेमें इन्द्रि की निर्वलता मिटती है (६३) इसकी मींगी पहिले दिन एक फिर दूसरे दो ऐसे प्रतिदिन एक २ बढ़ाता हुआ ७ तक बढ़ाके बसेही एक २ कम करता हुआ एकतक ले खानेसे वायुशूल, अजीर्ण और हाथपावका रह जाना मिटता है (६४) एरंड और अहदीके पत्तोंको पीस गर्म करके लेप करनेसे वादीकी पीड़ा मिटती है (६५) इसकी मींगीको पीस बाल उखाड़ उस ठौर पर लेप करनेसे बाल दीस उगते हैं (६६) इसकी जड़को पीसके घी या तेलमें मिला कुछ गर्मकर गाढा लेप करनेसे वात विद्धी मिटती है ।

संख्या (७७)

(सं०) रक्तैरण्डः, व्याघ्रः, रुद्रः, करपर्णाः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	उत्तर	चमारदुधेली	उत्तरणी	इन्द्रचिर्मिठी		गुरुटीचेट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
उत्तमनि	हालकाशींगे					

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर लगाये जाते हैं ।

प्रयोग—(१) यह कमेला, चरपरा, कडवा और पचनेमें हलका है । (२)

वात, कफ, श्वास, कास, कृमि, अशु, वेद, रुधिरविकार, पांडु, भ्रम और

अरुचिको मिटाताहै ( ३ ) इसके पत्ते वातपित्तको बढ़ातेहै और मूत्रकृच्छ्र, शतकफ और कृमि रोगको मिटातेहैं ( ४ ) इसके अंकुर गुल्म, वस्तिकी शूल, कफ, कृमि, वात और सर प्रकारकी वृद्धिको मिटातेहै ( ५ ) इसकेपुष्प-वात, कफ, पित्त और मूत्र रोगको मिटातेहैं और रक्त पित्तको बढ़ातेहैं ( ६ ) इसके बीजकी बींजी, अतिउष्ण, चरपरी, मधुर, सिग्ध और सारकहै, मलकी गांठ को तोड़तीहै अग्निको बढ़ातीहै, गुल्म, शूल, कफ, यकृतके रोग, वातोदर, प्लीहा और वातार्शका नाश करतीहै ( ७ ) इसका तेल मधुर, उष्ण, कसेलो चरपरा, तीक्ष्ण और पचनेमें भागी होताहै ( ८ ) यह सूक्ष्म होनेके कारण से सब स्रोतों को साफ करदेताहै ( ९ ) यह तेल योनी शूल, गुल्म, वातरक्त हृद् रोग, जीर्णज्वर, वद, कटि, पृष्ठ और क्रोष्ठकी शूलको मिटाताहै, बुद्धि, कान्ति, आरोग्यता, स्मृति, बल और आयुर्दाको बढ़ाताहै और हृदयको बलवान करताहै।

संख्या ( ७८ )

(सं०) एरंडककटीः वातकुंभफल, मधुककटी, मध्वरंडफलम्।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंजी
रंडकाकडी	अंड खरबूजा	पोपिया	पोपिया			पोप्यायि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
पप्यालि	परगियपाय			Carica papaya		The papaw or papawtree

स्थान—इसके वृक्ष दहलीसे सीलोन तक हिन्दुस्थानके सब प्रागोंमें लगाये जातेहैं।

पहिचान—इसके १२ महीने पुष्प लगा करतेहैं इसके उगनेके डेढ़ वर्ष पीछे फल लगने लगतेहैं इसके फलमें बहुतसे काले बीज होतेहै उनका छिल का मोटा और चमकदार होताहै इसका पका हुआ फल छोटे खरबूजे जितना बड़ा होताहै और उसकी गिर कोमल पीली और कुछ मीठी होतीहै इसका एक २ डंडीपर बहुत बड़ा एक २ पत्ता लगताहै इसके बीजोंका स्वाद राई जैसा होताहै इसका वृक्ष बहुत वर्षों तक नहीं रहताहै इसके राल जैसा श्वेत गोंद लगताहै।

प्रयोग--( १ ) इसके कच्चे फलका दूधिया रस कृमिनाशक है ( २ ) इमको पिलानेमें विचार रखना चाहिये क्योंकि यह आंतों को बहुत हानि पहुंचाता है इसके देनेकी यह रीति है कि ताजे फलका १। तोले दूध या रसको १। तोले मधुमें भली भांति मिला उसमें ४-५ तोले ओटता हुआ जल मिलाके ठंढा होनेपर पिलादेवें फिर इसके दो घंटे पीछे परंठके तेलमें नीबूका रस या सिरका मिलाके पिलादेवें आवश्यकता हो तो दूसरे दिनभी ऐसेही इतनी मात्रा पिलावें यह मात्रा जवान मनुष्यके लिये है ७ से १० वर्ष तकके बच्चेके लिये इससे आधी और ३ से ७ वर्षके बच्चेको इससे चौथाई मात्रा पिलानी चाहिये जो इससे पेटमें मरोड़ी चलतो गर्म जलमें शक्कर मिलाके गुदामें पिचकारी देना चाहिये ( ३ ) पेटके कीड़े मारनेके लिये १। मासेसे ३।। मासे तक दूधिया रस पिलाना चाहिये इसका असर आंतोंके लम्बे गोल कीड़ोंपर अधिक और लम्बे चपटे कीड़ोंपर कम होता है ( ४ ) इसके बीजोंकी फकी देनेमें आंतोंके कीड़े मरजाते हैं ( ५ ) इसके राज गर्भवती स्त्रीको थोड़े बहुत भी नहीं खिलाने चाहिये ( ६ ) इसका दूधिया रस गर्भाशयके मुखपर लगानेसे गालक मुखसे उत्पन्न होजाता है ( ७ ) इसके कच्चे फलके खिलके उतारनेसे जो दूध निकलता है उसको एकत्र कर बालूरेतपर एक गाढ़ा कपड़ा बिछा उसपर उस दूधको ढाल देवें जब उसका पानी सूखके सफेद चूर्णसा होजावे तब उसकी बोतलमें भर रखना चाहिये इसमेंसे जवान मनुष्यको भोजन करनेके पीछे आधीरतीसे रतीतक खाद या दूधके साथ देनेसे भोजन शीघ्रतासे पच जाता है ( ८ ) बच्चे और सुकुमार स्त्रियोंके लिये इसके चूर्णका शर्वत बनाके देना चाहिये ( ९ ) उसका पका हुआ फल रक्तशोधक है ( १० ) बद्ध कोष्ठ मिटानेके लिये उसके पके हुए फलको कई दिनों तक लगातार प्रभातके समय खिलाना चाहिये ( ११ ) इसके सूख फलके चूर्णमें अथवा फलक टुकड़ोंपर नमक लगाकर खिलानेसे बड़ी हुई तिखी नम होजाती है ( १२ ) इसका दूधिया रस लगानेसे आँटन और चे फोड़े मिटजाते हैं कि जिन पर बारंबार खरूट आकर उतर जाया करता है ( १३ ) दूधको विच्छेके दंशपर लेगानेसे विष उतरता है ( १४ ) इसके कच्चे फलके चूर्णकी फक्की देनेसे पुसना अतिसार मिटता है ( १५ ) इसके पके हुए ताजे हरे फलका शाक और आचार बनाते हैं । ये सारक और

मूत्रजनकहै ( १६ ) इसका पका फल खानेसे पेटकी दाह मिटती है और मल ढीला पड़जाता है ( १७ ) इसके हरे फलके रससे पेटकी पीड़ा मिटती है ( १८ ) अर्शवालेके मलको ढीला करनेके लिये इसका पका हुआ फल खिलाना चाहिये ( १९ ) कच्चे फलका दूधिया रस लगानेसे स्नायुककी शोथ बिखर जाती है ( २० ) इसका दूधिया रस लगानेसे सफेद चाटे, उपदंशके जूए और त्वचाके दूसरे रोग मिटते हैं ( २१ ) इसका पका फल उष्ण और सूचक है इसलिये रज्जाशर्श, बदी, हुरे, तिहरी और बड़े हुए यकृत वालेको खिलाते हैं ( २२ ) इसके पके हुए हरे या कच्चे फलका शाक खिलानेसे तुरंत दुग्ध बढ़ता है ( २३ ) इसके पके हुए हरे फलको बनार सुखा चूण बनाके २॥ रत्तीसे १॥ मासे तक फी फरकी देनेसे मंटाग्नि मिटती है ( २४ ) इसके दूधिया रसका लेप करने से गांठ बिखा जाती है ( २५ ) इसके पत्तेको उष्ण जलमें डुबोकें अथवा अग्नि पर तपाके बांधनेसे स्नायुसम्बन्धी पीड़ा मिटती है ( २६ ) इसके बीज भी कृमिनाशक है ( २७ ) रुधिर विकारसे जो त्वचा मोटी पड़ने लगजाती है उस पर इसके पत्तोंका पुलिटिस बांधनेसे उसका मोटापन मिटकर फिर मोटा होना बन्द होजाता है ( २८ ) इसके पके हुए फलके खानेसे कोई उपद्रव नहीं होता है और आरोग्यता बढ़ती है ( २९ ) इसके कच्चे फलके रसमें शक्कर मिला ३॥ मासेकी गोली बनाकर तिहरीवालेको दिनमें ३ बेर देना चाहिये ( ३० ) कई लोग इसके पके हुए फलको शक्करके साथ और कई कालीमिरच और नमकके साथ और कई इसके टुकड़ोंको पानीमें उबालकर नीबूके रस और शक्करमें मिलाके खाते हैं। इसके हरे फलके टुकड़ोंको आटा, मीठे तेलमें छोककर उनमें सिरका, नमक और कालीमिरच मिलाके खाते हैं।

संख्या ( ७६ )

(स०) एला, सूद्धमैला, द्राविडी, त्रुटिः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
छोटीइलायची	इलायची	नानीएलाची	एलाची	छोटएलाच	इलायची नीलोटी	चिन्पेकफल

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
चिन्नयेळ	किरीयाळकि	काकलह सिंगार	हील्सुई खेजाका	lettaria Cardamom L. Alhina C.	The lesser cardamom Malabar L.

**स्थान**— इसके बूटे हिन्दुस्थानके पश्चिम और दक्षिण भागमें, कनारा, मैसूर, कुर्ग, ट्वनकोर, मदुरा और मल्लवार आदिक पहाडी तरजंगलामें बहुते होते हैं।

**पहिचान**— इनकी जड़में कंद निकलता है इनके सफेद और लाल पुष्प लगते हैं, उनमें इलायची दाना जैसी सुगन्धि आती है। उत्तम इलायचीके दाने काले रंग के होते हैं।

इलायची दानाका तेल जो भभ्रुमें निकाला जाता है वह हल्के पीले रंगका होता है और स्वाद और सुगन्धमें इलायची जैसा ही होता है २० ताल इलायची दानोंमें १ तोला तेल निकलता है। इसके बीज हवा लगनेसे विगड़ जाते हैं इसलिये आवश्यकताके बिना उनको खिलकामसे नहीं निकालना चाहिये।

**प्रयोग**— (१) इलायची दाने खाने से श्वास की दुर्गंध मिट जाती है (२) इनको महीन पीसके सुघनेसे मस्तकपीडा मिटती है (३) इनको सककर मस्तकीके साथ दूधमें फक्की देनेसे मूत्राशयकी दाह मिटती है (४) अनारके शर्करोदक (शर्बत) में इलायची बुरकाके तथा इसके तेलकी ५ बूट डालकर पिलानेसे उत्कृष्ट और चमन बन्द होती है (५) विमृचिकामसे शरीरमें जो शिथिलता होजाती है उसको मिटानेके लिये भी पिचकी प्रबलता हो तो चौथा प्रयोग करना चाहिये और कफ वातकी प्रबलता होवेतो नहीं करना चाहिये (६) दूसरी चरपरी चीजांके साथ इनकी फक्की देनेसे अफारा और पेटकी शूल मिटती है (७) पानबीडेमें इलायचीदाने डालकर चवानेसे मुखकी दुर्गंध मिटती है (८) थोडा २ करके तोले भर इलायचीका अर्क पिलानेसे नकसीर बन्द होवी है (९) इलायचीदाने और पीपलामूलके चूर्णको घृतके साथ चटानेसे उपद्रव सहित कफका हृद्बोग मिटता है (१०) इलायचीदानेके चूर्णको गोमूत्र या केलेकेरस अथवा मदिराके साथ लेनेसे कफका मूत्रकृच्छ्र मिटता है (११) इलायचीदाने खानेसे मदाग्नि मिटती है (१२) इलायची के एक

या २ तोले बिलकोंको आग्नेय पानीमें छोटा आग रख के पिलानेसे विसूचिका मिटती है (१३) छोटी-या बड़ी इलायचीका अचलेह बनाकर चटानेसे बमन बन्द होती है (१४) इनका स्वाध पिलानेसे तृषा बन्द होती है ।

संख्या ( ८० )

(स०) स्थलेला, पृथ्वीका, कायस्था, भद्रैला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बड़ीइलायची	बड़दिलायची	मोटीएलची	एलदोडे	बटएलाच	इलायची बड़ी	पहएळकलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पिरियेळ	हिरियाळकि	कानलह-किवार	कानलह-कला	Am m m sul ulatum	The gr for cardap to	

स्थान—इसके वृक्ष नेपाल में होते हैं ।

पचिचान—इसके बीज चरपरे और सुगन्धयुक्त होते हैं । उनमेंसे तेल निकलता है वह चित्त प्रसन्न करने वाला उत्तेजक और पीले रंगका होता है यह सुगन्ध और स्वाद में बज्रों जैसा ही होता है ।

प्रयोग—( १ ) मिश्रीके साथ इसके बीजों के चूर्ण की फक्की लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( २ ) इनके चूर्णको धोली मूसली और मिश्रीके साथ लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( ३ ) वीलागिरके साथ इनके चूर्ण की फक्की लेनेसे अतिसार मिटता है ( ४ ) साँठके साथ लेनेसे मन्दाग्नि मिटती है ( ५ ) इनके २ मासे चूर्णको कुनैनके साथ देनेसे स्नायु जालकी पीड़ा मिटती है ( ६ ) इसका ५ रत्ती चूर्ण लेनेसे यकृत के प्रण मिटते हैं ( ७ ) काले नमकके साथ इनके चूर्णकी फक्की लेनेसे पेटकशिशूल और अफारा मिटता है ( ८ ) मिश्रीके साथ इनके चूर्णकी फक्की लेनेसे विसूचिकासे या किसी दूसरे रोगसे पैदा हुई दाह मिटती है ( ९ ) इनके स्वाधके गंडूप करनेसे दाँत और मसूड़ोंके रोग मिटते हैं ( १० ) इलायचीदाने और खरगुनेकी मींगीको मिश्रीके साथ घोट छानकर पिलानेसे वृकाशमरी मिटती है ( ११ ) आंताँमसे

थोड़ा और गाढ़ा रस निकलनेसे जो मंदाग्नि होती है उसको मिटानेके लिये इनका प्रयोग बहुत लाभकारी है (१२) इनकी फकी लेनेसे पित्तका प्रवाह बढ़ता है (१३) रार्दके चूर्णके साथ इनकी फकी लेनेसे यकृतमें रुधिरका जमाव विखर जाता है (१४) इनके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाके ३ मासेकी फकी गर्भवती को देनेसे उसकी जुधा बढ़ती है ।

हि० वं० मोरंग इलायची ।

Latin — Amomum aromaticum Eng — The Aromatic cardamom plant

स्थान—इसके वृक्ष बंगालके पूर्वकी सीमाके ग्रामोंमें होते हैं । इनके फलोंको मोरंग इलायची कहते हैं ।

पहिचान और फूलने फलने का समय—इनके डोड़े बड़ी इलायची के डोड़ोंसे कम मिलते हैं, परन्तु बीजोंका स्वाद और आकार मिलता हुआ ही है । इसके फल भादवे तथा आसोजमें पकते हैं ।

प्रयोग (१५)—ये बीज संकोचक, ग्राही और चुलकारक हैं (१६) इनके चूर्णका मंजन करनेसे दात, दृढ़ और उजले रहते हैं ।

हिन्दी, इलायचीदाने । Latin — Amomum canthioides

स्थान—ये इलायचीदाने चीन और सिंघापुरसे आते हैं और दक्षिणके हरेक बड़े नगरमें मिलते हैं ।

पहिचान—ये बीज नोकदार कोई तिरखंडे कोई दूबे हुए और कोई चिपटे होते हैं और आकारमें उनसे छोटे और पीले भूरे-रंगके होते हैं ये चित्र प्रसन्न करने वाले, उत्तम सुगंध वाले और स्वाद में कुछ चरके होते हैं मलेवारकी इलायचीके बीजोंसे इनकी सुगंधी और स्वाद अधिक तीक्ष्ण होने पर भी इनके स्वादसे चिच बहुत प्रसन्न होता है ।

प्रयोग—(१७) ये उत्तेजक और वातनाशक हैं और उत्तम सब रोगोंमें लाभकारी है कि जिनमें साधारण इलायचीदाने काममें आते हैं (१८) इनके चूर्णको मक्खनमें मिलाके चदानेसे आतोंकी ऐंठन, शूल, दूस्तकी बार बार शंका होना, बार बार दस्तका लगना और आमातिसार मिटता है (१९) इनका चूर्ण १॥ मासेसे २॥ मासे तक देना चाहिये ॥

संख्या ( ८१ )  
 ( सं० ) एलावालुकं, कपित्थं, दुष्टवर्णं, त्वक्गन्धम् ॥

मरावाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
आलूनालू	एलुआ	एलवालुक	एलवालुक	एलवालुक	लालुकां	कूतरुनुडमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	सुरसुरके	करासिया	आलूनाल आलूवअली	<i>Prunus Cerasua</i> <i>Cerasua Capronia</i>	The sour cherry or the sour cherry	

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके संयुक्तप्रदेश पंजाब और हिमालयमें होते हैं, कश्मीरमें इसकी कई जातें बोई जाती हैं उनके अच्छे फल लगते हैं।

पाहिचान—यह एक साधारण, उंचाईका वृक्ष खट्टे और मीठे फलोंके कारणसे दोमकारका होता है, इसके सफेद, पुष्प लगते हैं—इसकी पेड़की छोटी, होती है इसमें कूट जैसी गंध आती है इसकी छाल, कैथकी छाल जैसी होती है, इसके एक प्रकारका गोंद लगता है, फूलने फलनेकर समझा—इसके वृक्ष बंशालमें, पुष्प लगते हैं और जेठमें फल पकते हैं।

भयोग—( १ ) यह कसेला, शीतल, पचनेमें हल्का, प्राकमें, सरपरा और रोचक है मुखके स्वादको सुधारता है कफ, मूर्छा, वादी, दाह, ज्वर, कड़, विप, वमन, तृषा, श्वास, हृद्रोग, (पित्त, रुधिरविकार, वद, कृमिरोग और कुष्ठ आदि रोगोंको मित्रता है ( २ ) इसकी छाल कड़वी और ग्राही है ( ३ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है—( ४ )—इसकी गिरीसे स्नायुजालका बल बढ़ता है। इसके फलोंको मुग्घा और आचार बनाया जाता है। एलुआ इस नामसे जो पदार्थ मिलता है वह एलावालुक नहीं है।

संख्या ( ८२ )

( सं० ) ओखराडी, भिस्सटा ।



मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	ओखराड	ओखराड				
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Mollugo Indica Glycys lotoides		

स्थान—यह सूखी तलाइयोंकी तलहटी और नदियोंके किनारेपर हिन्दु स्थानके उष्ण भागोंमें सब ठौर होतीहै।

पहिचान—इसका पेड एक से तीन फुट तक ऊंचा होताहै इसमेंसे बैजनी नीलारंग निकलताहै।

प्रयोग—( १ ) इसकी जडकी भस्म बच्चोंको कफकी बीमारीमें दी जाती है ( २ ) इसके पत्तोंके क्वाथसे धीनेसे घाव साफ होजाताहै ( ३ ) इसके बीजोंकी फकी देनेसे विरेच लगताहै ( ४ ) इसकी और करोंदेकी जडको कूट टिकेडी घनोके बाधनेसे छाला उठजाताहै ( ५ ) इसके सूखे पेड़के पंचांगका क्वाथ कर उसपर थोडी राई बुरकाके पिलानेसे रुधिरशुद्ध होताहै ( ६ ) इसके पंचांगकी भस्म और कालीमिरचको पीस तेलमें पिलाके लगानेसे मस्तकके पुराने व्रण भिटतेहैं ( ७ ) जिसका मूत्र बन्ध होगयाहो उसको इसका पंचांग और कालीमिरचको ठंडाईकी भांति घोट खानकर पिलाना चाहिये।

संख्या ( ३३९ )

( सं ४४ ) कंकोलं, कटुकं, कोलं, कृतफलम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
ककोलमिरच	शीतलचीनी	चणकबाव	ककोळ	कौकला	ककोलमिरच	तककोलालु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	तककोल	कवानह		Piper, Cubeba Lababa, Officinalis	Cubeba (?) Cabel papp (?) Tall papp er	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें कहीं २ बोई जाती है ॥

पहिचान—असली, चकली तथा बड़ी और छोटीके भेदसे वंकोल मिरच दो प्रकारकी होती है—मोटे बकलवालीको कंकोल और पतले बकलवालीको शीतलचीनी कहते हैं। इसके एक प्रकारका रस जैसा पदार्थ लगता है ॥

इसमें से पच्चीसवें से आठवें भाग तक तेल निकलता है अर्थात् १०० तौलेमें से ४ से १३ तौले तक तेल निकलता है, उसमें हल्की चरपरी, सुगन्धि होती है और कपूर और प्येपरमिण्ट जैसा उष्ण स्वाद होता है ॥

प्रयोग—(१) यह पुरुषार्थ पैदा करनेवाली बहुत उत्तम औषधि है (२) इसके चूर्णकी फकी लेनेसे पेटका अफारा मिटता है (३) इसको चूसने से खांसी की रूचता मिटती है (४) उष्ण वेसवारण गर्म मसाले की यह बहुत उत्तम वस्तु है (५) मिथ्रीके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटती है (६) शीतलमिरच, बच और कुल्लिजनको नागरवेलके पानके रसमें पीस गोल्ली बनाके चूसनेसे स्वरभंग मिटता है (७) मुखके भीतरकी शोथ मिटानेके लिये इसको चूसते रहना चाहिये (८) इसको चूसने से गलेका भारीपन मिटता है (९) अफीमके साथ इसकी गोलिया बनाके देनेसे आम्रातिसार मिटता है इसपर मूंग चावल और कच्चे केलेकी खिचड़ी देना चाहिये (१०) दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे मूत्रवृद्धि होती है (११) इसके चूर्णकी फकी साठके साथ लेनेसे शरीरका आलस्य मिटता है (१२) शोथविखेस्नेवाली औषधियोंके साथ इसका अथवा केवल इसका ही लेप करनेसे शोथ और गांठ विखरजाती है (१३) वीर्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंके रोग मिटानेके लिये शीतलमिरच, इलायची, वंशलोचन और मिथ्री इन सबके एकतौले चूर्णकी फकी पावभर दूधके साथ देना चाहिये (१४) इसको चूसनेसे स्वरभंग मिटता है ॥

सख्या ( ८४ )

( स ) कङ्कु, कङ्कुनी, प्रियंगुः, पीततण्डुलः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कांगनी	कांगनी	कांगनी	कांगनी	कांगनी	कांगनी	कुरलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
००९	सुवण	खन	अरजुत	Solaria Italica	Italian millet	

स्थान—कांगनी हिन्दुस्थानमें बहुतवार बोई जाती है और अपने आप भी उगती है ०० तौले कांगनीमें ७३ तौले मक्का और प्रत्येक तौनतौले तेल निकलता है ॥

प्रयोग—(१) कांगनी खानेका एक उत्तम पदार्थ गिना जाता है परन्तु इसकी उष्ण प्रकृति होनेके कारण खानेके काममें कम लीतौ है जो यह इकछाही खाई जावेतो इससे कभी अतिसार हो जाता है। इसके त्र्युपपत्नी, कचोरी आदि कई प्रकारके पदार्थ बनाये जाते हैं। इसके पत्तोंका आक बनाया जाता है। इसको दूधमें छोटा करानिषल रोगीको पिलाना चाहिये (२) इसको ओटाकर पिलानेसे मूर्च्छा होती है। (३) इसका लेप करनेसे गठियोंकी पीडा मिटती है। (४) अतिसार वालेको इसकी फसली देते हैं। (५) इसकी रज्जुकांनमें बुरकानेसे पूयकी बिहनी बन्द होजाता है। (६) शोष्णी मन्थनात् तैलं तैलं तैलं संख्या—(२५) अणु ०९) तैलं तैलं तैलं (सं०८) कच्ची, कचुः, आलुकी (०९)

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजा	तैलड़ी
अरीः अरबी	धूर्य	अरबी	अरबी	कचुः	अरबी	चौमगड्डा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शेयमकलंग	श्यामेगड्डे	कलकास		Colocasia antiporum Arum C	Indian yam Taro	

स्थान—अरुईके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर होते हैं। यह सात प्रकारकी होती है। परन्तु हिन्दुस्थानमें तीन प्रकारकी ही बोई जाती है।

प्रयोग—( १ ) इसके कोमलपत्तोंमेंसे रस निकालके लगानेसे और पिलानेसे नाड़ियोंमेंसे या रक्त बाहिनी शिराओंमेंसे निकलता हुआ रुधिर बंध होजाताहै ( २ ) इस रसके लगातेही सद्य और शुद्ध क्षतमेंसे रुधिरका निकलना बंध होजाताहै और कुछ देरमें घाव भर जाताहै—( ३ ) काली जाति की अरबीके पत्ते और उनकी डंडियोंका रस निकाल उसमें नोन डालकर लेप करनेसे पेशियों ( गिल्डियों ) की और गांठोंकी सूजन विखर जातीहै ( ४ ) इसी जातिके कंदका रस निकालकर लेप करनेसे, घालों का, गिरना बंध होजाताहै और नवीन उगने लगतेहै ( ५ ) इसके कंदका रस पिलानेसे चक्षुकोष्ठ मिटताहै ( ६ ) भिड़ या दूसरे विपैल जीवोंके दंशपर इसका रस लगागेसे विष उतरताहै—( ७ ) इसका रस, पिलानेसे रक्तांश मिटताहै ( ८ ) यकृतमें जो रुधिर जम जाताहै, उसको उखिरनेके लिये इसका रस पिलातेहै ( ९ ) इसके पत्ते और कंदका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या ( ८६ ),

( सं० ) कटभी, स्वादुपुष्पा, मधुरेणुः, कटम्भरा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	कालीकटभी	काळावापुगा	काळीकिन्ही	कटभी	काटोवाला सिरस	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				<i>Cassia-arbores.</i>	Care) a tree	

स्थान—काली कटभीके वृक्ष हिमालयमें जमुनासे पूर्वमें और बंगाल, ब्रह्मा और मध्य पश्चिम और दक्षिण हिन्दुस्थानमें होतेहै ॥

पहिचान—इसका वृक्ष ५० फुट ऊंचा होताहै । इसके पेदड़की गुलाई ८ फुटकी और उसकी छाल १—२ इंच मोटी गहरी भूरी और या खरदरी होतीहै । इसके पुष्प खिरनेके पीछे ही फायुन और चैतमें नये पत्ते आने लगतेहै और एक २ सीकपर १०—१२ जोड़े पत्तोंके लगतेहैं, पत्ते कुछ लम्बे और

सुकड़े हुए होते हैं वे, शीतकालमें लाल पड़जाते हैं । उष्ण कालमें इसके श्वेत और गुलाबी, या पियाजी बड़े २ पुष्पोंके गुच्छे छोटी, बालियोंके अन्तमें लगते हैं । इसका फल हरे रंगका होता है उसकी मध्य रेखा ३ इंचकी होती है ।

फूलने फलनेका समय—उष्णकालमें इसके पुष्प आते हैं और उनके ३-४ महीने पीछे इसके फल पक जाते हैं । इसके फल खाने और औषधिके काममें आते हैं इसके बीजोंमें थोड़ा बहुत विष है । इसकी छाल रंगतके काममें आती है । इसके भूरा या कुछ नीलापन लिये हुए गोंद लगते हैं वह पानीमें लगजाता है ।

प्रयोग—( १ ) इसकी छालसे अतिसार मिटता है ( २ ) इसको भिगोनेसे जो बहुतसा चेष-निफलता है वह मर्दन करनेकी जिन औषधियोंसे उपाड़ होता है उनमें मिलानेसे उपाड़ नहीं होता ( ३ ) सर्पका विष उतारनेके लिये इसकी जड़का क्वाथ पिलाना चाहिये ( ४ ) सांपके दंशपर इसकी जड़का लेप करते हैं ( ५ ) बच्चा होनेके पीछे बल बढ़ानेके लिये इसके पुष्पोंका शर्वत पिलाना चाहिये ( ६ ) बच्चा होनेसे जो घाव होजाता है वह इसके क्वाथसे धोनेसे मिटजाता है ( ७ ) ताजी छालके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कफ और प्रतिश्याय मिटता है ( ८ ) इसका फल ग्राही है ( ९ ) इसके फलका क्वाथ करके पिलानेसे प्राचनशक्ति बढ़ती है ॥

संख्या ( ८७ )

( सं० ) कटुकी, कृधमभेदा, कांडरुहा, चकाड़ी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कुटकी कुटक	कुटकी	कडु	केदारकटुकी	कटुकी	कौड़	कटुफुरोगनि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कटुफुरोहनि	रुडु रोहीणि(नि)			<i>Pterorhiza kurroa</i>	<i>Black Helebore Christmas rose</i>	

स्थान—कुटकी हिमालयमें, कश्मीरसे सिक्किम तक पैदा होती है ।

पहिचान—इसका पौधा छोटा होताहै उसके थोड़े बहुत रूप होतेहैं, इसकी जड़ पतली और जोड़दार होतीहै ।

प्रयोग—(१) कुटकी कड़वी और चरपरी होतीहै इसकी अधिक मात्रा देनेसे साधारण विरेचन होताहै (२) ७॥ मासे कुटकीके चूर्णमें ७॥ मासे शकर मिलाकर उष्ण जलके साथ फकी देनेसे साधारण विरेचन होताहै (३) कुटकी और नीमकी अंतर बालको काथ पिलानेसे पित्तज्वर और तृषा मिटतीहै (४) कुटकीके २॥ तथा ३ मासे चूर्णकी फक्की देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै (५) इसके ५ रत्ती से १॥ मासे तक चूर्णकी फक्की देनेसे बल बढ़ताहै (६) जिस २-रोगमें डराका प्रयोग लिखाहै उस २ रोगको मिटानेवाली एक द्रो औषधि इसमें मिलाने से यह अधिक गुण करतीहै (७) ४ से ८ मासे तक इसके चूर्णकी फक्की देनेसे तिब्बी मिटतीहै (८) काली-मिरच के साथ इसकी फक्की देनेसे पेटकी शूल मिटती है (९) सोंठ के साथ इसकी फक्की देनेसे खत्र प्रकारकी मंदाग्नी मिटतीहै (१०) कुटकीका तेल बनाके आमामशय और अंतर्द्वियों-पर मर्दन करनेसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै (११) इसके चूर्णकी-१। से २॥ मासे तक मात्रा बारीसे आनेवाले ज्वर में देना चाहिये (१२) तोले तोले भर कुटकी का काथ दिनमें ३-४ बेर ३-४ दिन तक लगातार देनेसे जलंधरवालेको पानीकी गहरी दस्तें लगेके जलंधर मिटता है परन्तु कभी २ सात दिन तक यह काथ पिलाना पड़ताहै (१३) इसके ६ मासे चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाने उष्ण जलके साथ फकी देनेसे कफ और पित्तज्वर छूटताहै (१४) इसके चूर्णमें शकर मिला गरम जल के साथ एक तोले भरकी फक्की लेनेसे कामला रोग मिटताहै (१५) इसके चूर्णको मधुमें मिलानेसे चटामेसे हिचकी बन्द होतीहै (१६) इसके और शूलहठीके चूर्णकी गर्भजलके साथ फक्की लेनेसे जीर्णज्वर, रक्तपित्त और हृद्रोग मिटताहै (१७) इसके क्वाथमें पीपलका ज्वर्य युग्मकाके पिलानेसे एजाहिक ज्वर, आस और कास मिटजातीहै ॥

सग्या ( ८८ )

( सं० ) कद्रफलं, सामेवल्कः, श्रीपर्णी, कुमुदा...

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कायफल	कायफल (क)	कायफल	कायफल कुंभा कुंभी	कटफल	कायफल	पापरवुडम
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मरुधंपट्टे	किरुसिन्नत्रि	ऊडुलवके	दारशाशन	<i>Myrica Neri M Sapida</i>	<i>The box myrica</i>	

स्थान—कायफलके वृक्ष हिमालय में रावीसे पूर्वकी ओर, खासिया पहाड़ में सिलहट और दक्षिण की ओर सिंघापुर तक होते हैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होता है इसकी पेड़ मोटी और खड़ी होती है। चैत वैशाखमें इसके नये पत्ते आजाते हैं उनको मलनेसे या तोड़नेसे मन्द सुगन्ध आती है इसकी डंडीके पत्तोंके जोड़े नहीं लगते हैं। इसके फल छोटे और लम्बे होते हैं उनमें लाल रंगकी थोड़ी गिर निकलती है। इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाता है।

फूलने फलने का समय—आसोजसे मृगशिर तक इसके पुष्प लगते हैं और वैशाखमें फल पकते हैं।

प्रयोग—( १ ) इसकी छालको सहीन पीसके सुघानेसे रुद्ध प्रतिश्याय मिटता है। ( २ ) पसीने मिटानेके लिये साठ और कायफलको पीस कपड़-छानकर मर्दन करना चाहिये, इस कामकी यह बड़ी उत्तम औषधि है। ( ३ ) मस्तकका भारीपन मिटानेके लिये कायफल और कालीमिर्चको पीसके सुघाना चाहिये। ( ४ ) इसको सिरकेमें पीसके लगानेसे मसूढ़े मजबूत हो जाते हैं और दातोंकी पीड़ा मिट जाती है। ( ५ ) कायफलको तेलमें पका उसकी बुँद कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है। ( ६ ) इसका काथ पिलानेसे श्वास रोग मिटता है। ( ७ ) कायफल और वीलगिरके क्वाथसे अतिसार मिटता है। ( ८ ) इसके काथमें जोखार डालके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है। ( ९ ) इसका चूर्ण विगड़े हुए घावपर बुरकाना चाहिये यह उसको इसके हिमसे धोना चाहिये। ( १० ) इसके चूर्णकी पौनेचार भासेकी फकी देना चाहिये। ( ११ ) इसके फूलोंका तेल बनाके उन सन रोगोंमें काममें लाना चाहिये कि जिनमें

इसकी छाल काममें आती है ( १२ ) इसकी छाल उष्ण और उच्चेजक है ( १३ ) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे कफ और खासी मिटती है ( १४ ) इसके और काले नमकके चूर्णको फक्की देनेसे पेटकी पीड़ा मिटती है ( १५ ) इसकी पानीमें पीस उष्ण कर लेप करनेसे गांठ बिखर जाती है ( १६ ) इसके और पीपलके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे कफ ज्वर छूटता है ( १७ ) इसको महीन पीस घृतमें मिलाके लेप करनेसे अर्शकी पीड़ा मिटती है ( १८ ) इसको पानमें रस चाब २ के पीक निगलनेसे गलेके कफ सम्बन्धी रोग मिटते हैं ( १९ ) इसके क्वाथके कुल्ले करनेसे टेंटपीड़ा मिटती है ( २० ) इसी क्वाथसे जिह्वाका भारीपनभी मिटता है ( २१ ) कायफल नकलीकनी और कटेरीके सूखेफल मत्येक छेबै मासे और चार तोले तमाखूको महीन पीस दो मासे नित्य सुंधानेसे अपस्मार मिटता है ( २२ ) इसको भैंसके दूधमें पीस रातको इन्द्री पर लेपकर प्रातःकाल धो डालना चाहिये ऐसे कई दिनोंतक करनेसे नपुंसकता मिटती है ( २३ ) इसके कपड्डखान—फिये—हुए चूर्णमें परावर घूरा मिलाकर मासिक धर्मसे शुद्ध होनेके पीछे एक तोलेकी फक्की नित्य ३ दिनतक देनेसे स्त्री गर्भ धारण करती है ।

संख्या ( ८६ )

( सं० ) कडू ।

मराठी	हिंदी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कडू	कडू	कडू	कडू	कडू	नीलकण्ठ कमलफूल	
आविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Gentiana kurroo Pneumonanthe K.		

स्थान—कडूके बूटे कश्मीर और राजपूताना आदि देशोंमें होते हैं ।  
 पहिचान—इसके सुन्दर नीले पुष्प लगते हैं ।  
 प्रयोग—( १ ) इसकी जड़ बहुत कठवी होती है और विरायतेकी वीर काममें आती है ( २ ) इसको कालीमिरचके साथ पीसकर पिला-



फल के बीज निकाल पीस कर इन्दीपर मलके ऊपर एरंडके पत्ते बांधनेसे ध्वजभंगता मिटती है (३७) सफेद कटेलीकी जड़को पुष्प, नक्षत्रके दिन लाकर कन्याके हाथसे पिसवाके गौके दूधके साथ ऋतु स्नानके पीछे स्त्रीको पिलानेसे वह गर्भको धारण करती है (३८) कटेलीको पीसके खिलानेसे सर्पका विष उतरता है ।

संख्या (६१)

(सं०) वृहती, सिंहिका, क्रांता, वार्ताकी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बभीकटाली	बढीकटाई	ऊभीभोरिंगणी	डोरली	वृहतीगोब्याकुल	मगोलीबर्दा	मुलक
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	गुल्ला			<i>Solanum indicum</i> S. violarum.		

स्थान—ऊभी कटेलीके पेड़ हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होते हैं ।

पहिचान—इसका छोटा और खड़ा चुप होता है इसके पत्ते और शाखाओंमें तीखे कांटे होते हैं इसके फल आवलेके बराबर बड़े चित्तले और पीले होते हैं इसके पत्ते हरे और आकारमें बैंगनके पत्तोंके जैसे होते हैं इसको बैंगन कटेरीभी कहते हैं ॥

प्रयोग—(१) यह इकली काममें नहीं आती है परन्तु तबभी सूखी खांसी, कफ और प्रतिश्यायके रोगोंको मिटाती है (२) हृदयके रोग, श्वास, नपुंसकता, जीर्णज्वर, अफारा, शूल कृमिरोग और अतिसारको मिटाती है (३) इसकी डोडीकी धूनी देनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटती है (४) टूकके रोग और मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये इसका १२॥ तोले क्वाथ दिनमें दो बेर पिलाना चाहिये (५) समयपर बच्चा जन्दी पैदा होनेके लिये इसका क्वाथ पिलानेसे (६) इसकी एक तोले जड़का क्वाथ पिलानेसे कफ और श्वास मिटता है ॥

(सं०) कतकं, तोयप्रसादनं, अम्बुप्रसादः, तिकमरिचः ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
निर्मलीकावीज	निर्मली	निर्मली (ळी) कतकफळ	निबळी बंबी	निर्मलीफल	निर्मली जलनिर्मली	चित्तगिज
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तेचकोट्टे	चिह्नदनीजा			Strychnos potatorum Tettankotta	The cl...ing out	

स्थान—निर्मलीके वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, बंगाल और बिहारमें होतेहैं ।

पहिचान—यह साधारण उंचाईका वृक्ष होताहै, इसकी छाल धूसर के रंगकी होतीहै उसमें गहरी दरारें पड़जातीहैं इसके सुगंध युक्त श्वेतपुष्प लगतेहैं, इसका फल पकनेपर काला पड़जाताहै उसमें गोल और एक ओर से चिपटा, गिरेमें लिपटाहुआ बीज निकलताहै ॥

प्रयोग—(१) निर्मलीके बीजोंको पीस थोड़े कपूर और मधुमें मिला आखमें अंजन करनेसे गीडोंका बहुत आना बन्दहोताहै (२) निर्मलीके बीज और सेधनमकड़ों पानीमें घिसकर आखमें अंजन करनेसे अर्जुनरोग मिटता है (३) नेत्रके और कई रोगोंमें निर्मलीका बीज काममें आताहै (४) नेत्र की ज्योति बलवान् करनेके लिये निर्मलीके बीजको पानीमें घिसकर अंजन करना चाहिये (५) निर्मलीके आधे या सावित बीजको पानीमें महीन पीस कुछ मट्टेमें मिलाके सातदिन तक देनेसे बहुत दिनोंका पुराना अतिसार जो किसी औषधिसे नहीं मिटताहो, मिटजाताहै (६) निर्मलीके बीजोंको पीस दूधकी साथ फकी देनेसे मूत्रकृन्ध मिटताहै (७) निर्मलीके बीजोंको पानीसे पीस पानीकी मटकीमें ढाल देनेसे पानीका गदलापन मिटके पानी निर्मल होजाताहै (८) निर्मलीके ताजे बीज खानेके काममें आतेहैं इनका सुरब्बा बनाया जाताहै (९) निर्मलीके प्रयोगसे मूत्रातिसार मिटताहै (१०) इसके गुदेको मधुके साथ चटानेमें सूखी खासी मिटतीहै (११) निर्मलीके पकेहुए

फलकी साठे सात मासेकी मात्रा देनेसे वमन होती है ( १२ ) निर्मलीकी भस्म में थोड़ा बूरा मिलाकर खानेसे रक्तार्श मिटता है ( १३ ) निर्मलीको मधुमें पीसकर अंजन करनेसे मोतियाबिन्दु मिटता है ( १४ ) इसके एकतोलें भीजांके छाछके साथ पीस मधुमें मिलाकर खानेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटते हैं ।



संख्या ( ६३ ) -

( सं० ) कदम्बः, वृत्तपुष्पः, सुरभिः, ललनाप्रियः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
कदम	कदम्ब कदम	कदम्ब कलम	कळव	कदम	कदम्ब कदम	कनुमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Anthocephalus- codamba.	- 71 -	

स्थान—इसके वृक्ष बंगालके उत्तर और पूर्व भागके जंगलोंमें बहुत होते हैं और हिन्दुस्थानके उत्तरके भाग, बंबई और पंचमहल आदि स्थानोंमें बोये जाते हैं ।

पहिचान—इसका चून्ना बड़ा होता है और बहुत शीघ्रतासे बढ़ता है अर्थात् पहिले दो तीन वर्षोंमें हरवर्ष दश २ फुट बढ़ता है इसके स्कंधकी गुलाई हरमासमें एक इंच बढ़ती है दश बारह वर्ष पीछे यह पाहिले जैसी शीघ्रता से नहीं बढ़ता अर्थात् थोड़ा २ बढ़ने लगजाता है कहीं कहीं बहुत ऊँचा बढ़जाता है इसके पत्ते वसंतऋतुमें गिरजाते हैं उनका आकार नागरबलक पत्त जैसा होता है, परन्तु उनके तीखी नोक नहीं होती छोटे होते हैं, इनके पीछेकी रेशा किरमिची रंगकी होती है इसके पुष्प अड़वेरसे कुछ बड़े और सफेद रंगके होते हैं इसके फल छोटी नारंगी जितने बड़े और पीले रंगके होते हैं । यह तीन प्रकारका होता है कदम्ब, धाराकदम्ब और भूमिकदम्ब ॥

फूलने फलनेका समय—वैशाखसे श्रावण तक इसके पुष्प आते हैं ।

प्रयोग—(१) यह चरमरा, कड़वा, मीठा, कसेला, खारा, शीतल, रुखा,

और पचनेमें भारी है। दूग्ध क्षीर्य और शरीरकी कान्ति बढ़ाता है अतिसार रक्त-  
वेकार, मूत्रकुच्छ, वात, पित्त, कफ, व्रण, विष और दाइको मिटाता है (२) इसकी  
शलका ववाथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (३) इसकी छाल बलवर्द्धक है (४)  
इसके पत्तोंके ववाथके कुरले करनेसे मुखपाक मिटाता है (५) इसके अंकुर  
केसैले, शीतवीर्य, अग्नि बढ़ानेवाले और पचनेमें हल्के हैं। अरुचि रक्तपित्त  
और अतिसारको मिटाते हैं (६) इसके फल-रोचक, पचनेमें भारी, उष्ण  
वीर्य और कफकारक हैं और खानेके काममें आते हैं (७) इसके पत्रे हुए फल  
तीनों दोषोंको मिटाते हैं।

संख्या ( ६४ )

( सं० ) कदली, रंभा, मोचा, वृत्तपुष्पा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
केला	केला केरा	केलय केल	केल	मली मोचा	केला केरला	भरटीचट्ट
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वाळिमरम्	बालेमर	गोज		Musa-aspentum. M. paradisiaca.	Thebanus or Plantain	

स्थान—केलेके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जाते हैं।

पहिचान—केले-पहाड़ी, जंगली, छोटे, बड़े, हरी छालके, लाल छालके  
और कोकनी आदि भेदसे कई प्रकाशके होते हैं। इसका वृत्त ८ से १८ फुटतक  
ऊंचा होता है पत्रे २-२॥ गज लग्ने और एक या दो फुट चौड़े होते हैं पेड़  
सम्भके समान होती है उसके बीचमें एक सफेद दंडा होता है उसपर बकुलके  
कई पत्र लगते रहते हैं सबसे ऊपरकी बकुलका रंग हरा और चमकदार होता है  
इसके पत्रमें पत्ते निकलते चले जाते हैं सिवाय पत्तोंके कोई शाखा इसके नहीं  
होती केवल पत्तोंसे ही वेष्टित होता है। इसके बीचमें हंडी निकलती है, उसके  
नोकदार लालरंगका बड़ापुष्प लगता है उसकी हरेरु  
गहरी हैं, वेही समय पाकर कले होजाते हैं।

प्रयोग--( १ ) कच्चा केला ठण्डा और आदी है । ( २ ) पक्का केला खिलानेसे मूत्रातिसार, मिटता है । ( ३ ) स्त्रियोंका पित्तप्रदर मिटानेके लिये पक्का केला खिलाना चाहिये । ( ४ ) मूत्रातिसारवालेको केलेका न्दी बनाके खिलाते हैं । ( ५ ) बालोंकी दाह और अग्निसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये पच्चे केलेके पत्ते बांधने चाहिये । ( ६ ) जिसरोगमें गीली पट्टी बांधी जाती है उसे गीली बनी रहनेके लिये उसपर केलेके पत्ते बांध देने चाहिये । ( ७ ) दुःखती हुई आखपर या आंखोंके दूसरे रोगोंमें आखके ऊपर छेसा रखनेके लिये केलेके पत्ते बांधने चाहिये । ( ८ ) विमुचिकामें तृपा मिटानेके लिये केलेकी पेदड़का रस पिलाना या उसके गंडूप कराना चाहिये । ( ९ ) इसकी पेदड़के रसके कुल्ले करानेसे शीताद रोग मिटता है । ( १० ) शरीरको पुष्ट करनेके लिये केला बहुत अच्छा फल है । ( ११ ) अग्नि से जलेहुएके ऊपर केलेका पुलिटस बांधना चाहिये । ( १२ ) केलेको उषालकर बच्चोंके उपदशके ब्रणों पर बांधना चाहिये । ( १३ ) केलेकी जड़का कौथ पिलानेसे आतोंके कीड़े मरते हैं । ( १४ ) पित्त प्रकृतिवालेको केला बहुत गुण करता है । ( १५ ) पक्का केला खानेसे आमाशय, फुफ्फुस, टमक और मूत्रकी दाह मिटजाती है । ( १६ ) छोटा पक्का केला खिलानेसे पुराना आतिसार और आमातिसार मिटता है । ( १७ ) बड़ी जातिका सूखा केला खिलानेसे शीताद रोग मिटता है । ( १८ ) केलेका खार बनानेकी रीति केलेके वृत्तको जलाके उसकी राखको ६ गुने पानीमें घोलके ८ पहर धरकर रखे पीछे उसको खूब मलकर गाढ़े कपड़ेमें बानकर स्वच्छ जल निकाल लें जब उसमें बानीका लेश मात्र भी नहीं रहे तब उस पानीको मिट्टी या कलाई चढ़ेहुए त्रतन में भरकर अग्निपर छोटाके औंटाके जब उसको सब पानी छीजकर चूने जैसा रहजावे तब उसको उतार सुखाकर चीनी या काचकी टाटादार शीशीमें भरकर धरकर रखे यह अम्लपित्त को मिटाता है और नमक की ठौर काममें आता है । ( १९ ) हरे केलेको औंटा कर दहीमें मथके रुचिके अनुसार शर्करा या नमक मिरचमिलाके खिलानेसे आतिसार और आमातिसार मिटते हैं । ( २० ) पुरानी आमली की गिरको थोड़े जलमें मसलें उसका रार निकालकर उसमें पक्का केला और पुराना गुड़ या मिर्ची मिलाके आमातिसार के प्रारम्भ में पिलाना चाहिये ।

(२१) इरे कच्चे केलेको धूपमे, सुखा पीसके उसके आटे की रोटी बनाके मंदा-  
 ग्निवालेको खिलानेहै, इससे उसके अफारा और खट्टी डकारें नहीं आतीहैं  
 (२२) केलेकी सूखी रोटीको थोड़े नमक के साथ खिलाना चाहिये, जब्दी  
 पचनेके कारणसे यह रोटी बच्चेके आमातिसार और अतिसारमें गुणकारी है  
 (२३) इसकी कोमल जड़ोंके रसमें हीरा दक्खन मिलाके पिलानेसे पेटकी शूल  
 भिदतीहै (२४) केलेका खार और शक्कर पानीमें मिलाकर पिलानेसे हृदयकी  
 दाह भिदतीहै (२५) कोमल केला खिलानेसे रुधिरकी वपन और मूत्राति-  
 सार भिदताहै (२६) केलेमें नमक मिलाके खिलानेसे आमातिसार भिदताहै  
 (२७) जड़को पीसके पिलानेसे पित्तके विकार भिदतेहैं (२८) जिस रोगमें  
 रुधिरकी ललाई जाती है अर्थात् पांडुरोगमें इसकी जड़को पीसके पिलानी  
 चाहिये (२९) केलेके पेड़का रस रक्तपित्त को मिटाताहै (३०) जिस  
 बालकको मात्रासे अधिक अफीम दे दिया हो उसको केलेकी छाल और  
 पत्तेका रस पिलाना चाहिये (३१) छालके २॥ तोले रसमें २॥ तोले घी  
 मिलाके पिलानेसे तेज विरेचन होताहै (३२) जलाया हुआ सोडागा और  
 कलमीशोरा इसकी जड़के रसमें गलाके पिलानेसे मूत्रकी रुकावट भिदतीहै  
 (३३) इसके पुष्पोंके रसमें दही मिलाके खिलानेसे आमातिसार और रक्त-  
 मंदर भिदताहै (३४) कच्चे केलेको सुखा पीसकर उस चूर्णकी फक्की  
 देनेसे बालकोंका कई प्रकारका अतिसार भिदताहै (३५) इस चूर्णमें खांड  
 मिलाकर फक्की देने ऊपर दूधकी लस्सी पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र भिदताहै (३६) संखिये  
 के बिपको उतारनेके लिये इसकी जड़का रस पिलाना चाहिये (३७) इसकी जड़के  
 रसमें घी और शक्कर मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र भिदताहै (३८) पुराना अति-  
 सार भिदनेके पीछेकी मंद्राग्निमें ऋषिकेलेको भाक आदि बनाके खिलाना  
 चाहिये (३९) सूर्यकी तेज किरणोंकी गर्मीसे बचनेके लिये टोपीमें केलेके  
 पत्तेके टुकड़े रख देने चाहिये (४०) केलेको गायके दूधमें ओटा कर खाते  
 हैं केलेके पुष्पोंका शाक बनायी जाताहै (४१) इसके पत्तेकी डंडीकी  
 गिरीको ओटाके खातेहैं (४२) इसके पेड़का रस सुंधानेसे नकसिर बंध  
 होतीहै (४३) इसकी जड़को मनुष्यके मूत्रमें पीस कुछ गर्म कर कपड़ेपर लंगा  
 के धड़ेपर बांधनेसे वह विखर जातीहै (४४) इसके पत्तोंका स्पर्श करानेसे

पित्तकी मूर्च्छा मिटती है ( ४५ ) इसके पके फलकी २४ तोले गिर घीके साथ नित्य प्रातःकाल ४१ दिनतक खानेसे भस्मक रोग मिटता है ( ४६ ) इसके फलको घीमें तलकर कालीमिरचके साथ खानेसे कफके विकार मिटते हैं ( ४७ ) इसके कंदके रसमें बसबर मधु मिलाके पिलानेसे दमन बन्द होती है ( ४८ ) इसका रस पिलानेसे मदिराका वेग कम होजाता है ( ४९ ) इसके पके फल और आंबलोंके रसमें मधु और शक्कर मिलाके सेवन करानेसे सोमरोग मिटता है ( ५० ) इसके खार और हल्दीका लेप करनेसे श्वेतकुष्ठ मिटता है ( ५१ ) इसके पत्तोंकी राखमें थोड़ा नमक मिलाके फक्की देनेसे खाँसी और कफ मिटता है ( ५२ ) इसकी पेदड़का रस पिलानेसे मूत्रनालीकी दाह मिटती है ( ५३ ) इसके पीले पत्तोंको कड़वे तेलमें जला उसमें मुर्दासंग मिलाके लगाने से श्वेतदान मिटते हैं ।

संख्या ( ६५ )

( सं० ) कपर्दिका, वराटः, चराचरः, बालक्रीडनकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोडी कवडी	कौडी कवडी	कोडी	कवडी	कडि	कौडी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
						COWRIES.

पहिचानः—श्वेतरक्त और पीले रंगके भेदसे कौडिया तीन प्रकारकी होती है । पीठपर कुछे दानेदार पीलीकौडी, जो तोलमें ६ मासेभरहा, उसको आपधिके काम में लाना चाहिये ।

कौडीको शुद्ध और भस्म करनेकी रीति—इसको एक पहरतक कांजीमें ओढानेसे शुद्ध हो जाती है । इसको कोयलोंकी अग्निमें रखके धूंकणीसे फूंक देना चाहिये जब वह फूटकर बिखरनेलगे तब अग्निमें से निकाले स्वांग शीतल होनेपर पीसके धरना चाहिये ॥

कपर्दिका भस्म—शीतल, चरपरी और तिक्त होती है । नेत्ररोग, फोड़े,

खैर, कर्णसाव, मंदाग्नि, परिणामादिशूल, संग्रहणी और वातकफ सम्बन्धी कई रोगोंको मिटाती है ( २ ) इसकी भस्म कानमें डालनेसे पूयका बहना बन्द होके उसका घाव भर जाता है ( ३ ) इसको पानमें रखके खिलानेसे सूखी खांसी मिटती है ( ४ ) फोड़े मिटानेवाली औषधियोंमें इसकी भस्म मिलाकर पीके साथ लेप करनेसे फोड़े मिटते हैं ( ५ ) इसको मखनके साथ चटानेसे क्षयरोग मिटता है ( ६ ) पीपलामूलके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटती है ( ७ ) कालीमिरच और इसकी भस्मको पीस नीचूकी फाकमें भर अग्निपर तपाकर चूसनेसे पेटकी शूल मिटती है ( ८ ) सोंठके चूर्णके साथ इसकी फकी देनेसे संग्रहणी मिटती है ( ९ ) इसकी ३ मासे भस्म, ७ मासे मधु और थोडा नमक मिलाके चटाने से संग्रहणी मिटती है परन्तु इसके सेवन करनेवालेको साठी चावल और दूधका पथ्य देना चाहिये ( १० ) पीली कौड़ी पीसकर नीचूके रसमें भिगो देवे जब रस सूखजाय तब खरल करके दोनों समय मुख पर मलनेसे मुहांसे मिटते हैं ( ११ ) कंठी और पीली कौड़ीको जलाकर अलग २ महीन पीसकर मर्दन करनेसे हाथपावोंसे अधिक पसीना निकलना बन्द होता है ॥

संख्या ( ६६ )

( सं० ) कापिकच्छुः, आत्मगुप्ता, कंडुरा, मर्कटी, ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
कौचबीज	कौच किवाच	कौच फउचा	कुपिरि ( ली )	आलकुशी	फौछ	विन्नडूलगोबेल
द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पुनैकाञ्जोरि	चिकनसुगु- लि			Mucuna-pruriens Caryopogen P	The Cow-pe plant or	

स्थान—कौचकी बेल दक्षिण हिन्दुस्थान, मालवा और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होती है ।

पाहचान—इसकी बेल बड़ी हांती है बीलकी भाति इसके तीन २ पत्ते लगते हैं । इसके तीन, चार या पांच फलियोंके गुच्छे लगते हैं, फलियों पर रूप



होतेहै, पकी हुई फलियोंके रस का शरीर पर स्पर्श हो जानेसे अत्यंत दाह, खुजनी और फुन्सियें हो जातीहै । फलियोंमें चबले जैसे बीज निकलतेहैं परंतु उनका रंग चबलों जैसा नहीं होताहै । इसके पुष्प धालोलके पुष्पों जैसे होतेहैं ।

प्रयोग—(१) कोंचके बीज गोखरू और मिश्री के चूर्णकी गुणगुने दूधके साथ फक्की लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै (२) इसकी जड़के चूर्णकी बढ़ातीहै (३) इसकी जड़के चूर्णकी फक्की स्नायुजालके रोगोंमें बहुत उपकारीहै (४) इसके बीजोंकी खीर बनाकर खिलानेसे अर्द्ध और अर्द्धगि आदि वातरोग मिटतेहैं (५) प्रमेहमें इसके बीजोंके साथ दूसरी पौष्टिक औषधियें मिलाके फक्की लेना चाहिये (६) स्वरमें प्रलाप मिटानेके लिये इसकी जड़को काथ पिलातेहै (७) इसकी जड़को पीसकर जलंधरबेलके पेटपर लेप करतेहैं और जड़का थोड़ा टुकड़ा टखने और कलाईपर बांधतेहैं (८) कोंच बीजोंके धिसके लेप करनेसे विच्छूका विपत्तगतहै (९) इसकी फलीके रसको कीड़े मारनेके काममें लातेहै (१०) कोंचके बीजोंका पाकचूना खानेसे वीर्य बढ़ताहै और शरीर पुष्ट होताहै (११) कोंचकी फलीके रसके लेप करनेसे उसस्थानपर उत्तेजना और छोटे-छोटे होजातेहैं (१२) दो दाई मासे कोंच बीज खिलानेसे श्वेतपदर मिटतीहै (१३) इसकी कच्ची फलीका शाक खानेके काममें आताहै, इसकी जड़के काथमें मधु मिलाकर पिलानेसे तीव्र विसृचिका मिटतीहै । (१४) कोंचबीजोंके ५ रती चूर्णकी जलके साथ फक्की लेने से मूत्रकी रुकावट मिटतीहै (१५) कोंचके कच्चे बीजोंको छायेमें सुखाकर उनके १० मासे चूर्णको प्राक्प्रर दूधमें थोड़ाकर पीनेसे श्रुतप्रमेह मिटताहै (१६) इसके बीजोंके चूर्णको मधु और घीमें मिलाकर चटानेसे श्वास मिटताहै (१७) इसका स्वरस पिलानेसे अपवाहुक रोग मिटताहै (१८) योनीका दीलापन मिटानेके लिये उसको इसकी जड़के काथसे धोनी चाहिये (१९) कोंचबीज और तालमखानेके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला फक्की लेके ऊपर धारोष्ण दूध पीनेसे वीर्य बढ़ताहै (२०) इसकी दो मासे जड़को मुखमें रखनेसे वीर्य स्तंभन होताहै (२१) इसके एक तोले बीजोंको पीसकर ३ छटाग पानीके साथ प्रातःकाल ७ दिन पीनेसे उपदर्श मिटताहै (२२) इसके छिले हुए ४ तोले बीजोंको पीस टिकिया बनाकर १२ तोले कड़वे तेलमें जला

उस तेलको छान घाव या नासूरमें टपकानेसे भर जातेहैं।

संख्या ( ६७ )

(सं०) दधिपुष्पी, खटाड़ी, कृषा, काकाडी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
	करियसेम	अडदवेल्य	गोडीकुहिरी			दूलगाड
द्राविडी	कर्नाटकी	अग्वी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
काजोरिवेर	शिरुकाजोरि			<i>Stueuna monspeliensis</i> <i>Carpopogon</i> <i>monspeliensis</i>		The Negro bean

स्थान—दधिपुष्पीकी बेल हिमालयके पूर्वभाग, खासिया पहाड़, आसाम चितगंग, पश्चिम प्राय द्वीप और सीलोनके पहाड़में बहुत होती है।

पहिचान—इसकी फलियां कुछ गोल और रूए दार होती हैं उनमें बड़ा चिपटा प्रायः गोल एक बीज होता है।  
 प्रयोग—(१) यह कसेली और तिक्त होती है। योनिदोष और कोष्ठ-व्रणको मिटाती है और रुधिर को शुद्ध करती है (२) इसका बीज सूखी खासी में काम आता है (३) इसका क्वाथ पिलानेसे श्वास रोगमें शांति होती है (४) इसके बीजोंको ओटाकर कुल्ले करनेसे जिह्वाके रोग मिटते हैं (५) इनका लेप करनेसे रुधिरका संचार कम होजाता है ॥५॥

संख्या ( ६८ )

(सं०) कपित्थः, दधित्थः, चिरपाकी, कण्टी।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
कैथ	कैथ	कोट, कोठ	कविठ	कथेतगाव	कैथ	बेलग
द्राविडी	कर्नाटकी	अग्वी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
बलामर	ब्यालदमर			<i>Ferula assatica</i> <i>Crataegus</i>		Elephant or wood apple

स्थान—कैथके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर-वोयेजातेहैं और अपने आप भी उगतेहैं।

पहिचान—यह साधारण उंचाई का वृक्ष होताहै इसकी पेदड़ की गुलाई २ से ४ फुट तक होतीहै। इसके कांटे सीधे और बड़े हूँद होतेहैं। इसके पुष्प हल्के लाल रंगके होतेहैं। इसके गोल बड़ाफल लगताहै, उसकी मध्य रेखा ३॥ इंचकी होतीहै, उसका ब्रिलका कठोर, खरदरा और भूरे रंगका होताहै, उसके पकनेपर उसमें तीक्ष्णगंध आने लगतीहै। फलकी गिर बहुत खट्टी होतीहै, उसमें दौर, २ बीज जमे रहतेहैं। इसके फल पकनेके पीछे भी बहुधा वे बहुत समयतक वृक्षपर ही लगे रहतेहैं। इसके पत्ते चरपरे होतेहैं और उनमें सोंफकीसी सुगंध आतीहै, इसके एक प्रकारका गंधरहित, श्वेत और पारदर्शक गोंद लगताहै, वह बहुत चिपदार होताहै और पानीमें गलजाताहै।

फूलने फलनेका समय—माघ, चैत्र, वैशाखतक—इसके पुष्प लगतेहैं आसोजतक इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—(१) इसके पके फलकी गिरकी चिटनी बनाई जातीहै। इसकी कच्ची गिरमें शक्कर मिलाके खातेहैं (२) इसकी गिरका टुकड़ा मुखमें रखनेसे शीताद रोग भिटाहै (३) बीलगिर और काठोड़ीका शर्वत बनाके पिलानेसे बच्चोंके पेटकी शूल मिटतीहै (४) इसका शर्वत भूख बढाताहै (५) इसका शर्वत पिलानेसे विष उतरताहै (६) काठोड़ीको औटाकर कुल्ले करने से गले और मसूड़ोंके रोग भिटेहैं (७) इसका लेप करनेसे सांपका विष उतरताहै (८) विषैल जीवोंके काटनेसे जो प्रीड़ा होतीहै उसको मिटानेके लिये काठोड़ीका लेप करना चाहिये यदि काठोड़ी न मिले तो कैथके फलके ब्रिलके का लेप करना चाहिये (९) इसके कच्चे फलके गूदेके चूर्णकी फक्की देनेसे अतिसार और आमतिसार भिटाहै (१०) इसका फल ठंडा, रुक्ष, ग्राही, चित्तमन्त्र करनेवाला, बल वर्द्धक और हृदयका बल बढानेवालाहै (११) काठोड़ी मुंहमें रखनेसे मुंहसे पानीका गिरना बन्द होजाताहै (१२) इसके पत्ते ग्राहीहै (१३) इनका चत्राय पिलानेसे या इनका चूर्ण मधुकेसाथ चटानेसे बच्चोंका अजीर्ण और अतिसार भिटाहै (१४) इसकी छालसे पिचके विकार भिटेहैं (१५) इसके गोंदमें चंदूलके गोंद जैसे गुणहैं (१६) इसके गोंदको पानीमें

पिचलाके पिलानेसे दस्तकी बार २ शंकाका होना मिटजाताहै ( १७ ) दूसरी औषधियोंमें इसको मिलानेसे ज्वरकी चरमराहट कम होजातीहै ( १८ ) इसको अङ्गरेजी में " फैरोनियाम " कहते हैं ( १९ ) इसके बीजों का तेल लगानेसे खुजली आदि त्वचाके दूसरे रोग मिटतेहैं ( २० ) कोढ़ और दादपरभी इसका तेल लगातेहैं ( २१ ) काठोड़ीको पीस तेलमें छोटा-कर उस-तेलके लगानेसेभी कोढ़ और दाद मिटताहै ( २२ ) काठोड़ीको खानेके काममें बहुत लानेसे गठिया और छातीके रोग पैदा होजातेहैं ( २३ ) इसके बीजोंको सेककर खानेसे पुराना अतिसार मिटताहै ( २४ ) इसके स्वरस में मधु-मिलाकर उसमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे वमन, हिचकी और श्वास मिटताहै ( २५ ) इसके और बासके पत्तोंके कल्कको पानीमें धानकर पिलानेसे प्रदर मिटताहै ( २६ ) इसके रसको घुनगुनाकर कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै । इसके पत्तोंको ओटानेसे उनमेंसेभी तेल निकलताहै ।

संख्या ( ६६ )

( सं० ) कमल, पुगड़ीकं, कौकनदं, इन्दीवरम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
कमल	कमल	कमल	कमल	पद्म	कौकनद	तागर
द्राविड़ी	कर्नाटकी	आधी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कमल	ताधरेहुवु			Nelumbi semperocuum. Nymphaea. Jumba.	The sacred lotus.	

स्थान—कमल हिन्दुस्थान में बहुत से तालाबों में होता है ।  
 पाहजान—इसके पत्ते गोल, बड़े २ और एक ओरसे साफ होतेहैं, उस ओर पर पानीकी बूदें नहीं ठहरतीहैं, वे ऊपरसे हरे और नीचेसे कुछ सफेद हरेरंगके होतेहैं, इसके गुलाबी, लाल, नीले और सफेद पुष्प लगतेहैं इसकी डंडी खस्दरी हाताह उसको तोड़नेसे उसमें से तन्तु निकलतेहैं डंडीमें कई छिद्र होतेहैं इसकी जड़ सफेद होतीहै उसमें मोटे २ छिद्र होतेहैं । इसकी जड़का

मारवाही भाषा में हिस्से कहते हैं ॥

( - फूलने फलनेका समय—उष्णकालमें इसके पुष्प आते हैं और बरसात के अंतमें बीज पकते हैं ।

८. प्रयोग—( १ ) कमलकी केशर आही और डंडी है ( २ ) इसको मधुमें चटानेसे दाह मिटती है ( ३ ) कमलगट्टेको अग्निमें सेक, बिलका उतार, उमकी गिरके भीतर एक हरा भाग है उसको निकालकर उस सेफेद गिरको पीसकर मधुमें चटानेसे उल्टी बन्ध होती है ( ४ ) इसको जलके साथ पीस छान बर्थाको पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है ( ५ ) इसके बड़े र पत्तोंको विस्तरे पर बिछाकर उत पर रोगीको सुलानेसे ज्वरसे बढी हुई ऊष्मा और त्वचाकी दाह मिटती है ( ६ ) इसके पत्तोंका दूधिया गाढा रस पिलानेसे अतिसार मिटता है ( ७ ) कमलकी केशर; मुलतानी मिट्टी, और मिश्रीके चूरीकी फक्की जलके साथ देनेसे स्त्रियोंका रक्तप्रदर मिटता है ( ८ ) मक्खन और मिश्रीके साथ कमलकी केशर चटानेसे रक्तार्श मिटता है ( ९ ) कमलकी छोटी पत्तियां आही है ( १० ) कमलके पुष्पोंका शर्बत पिलानेसे शीतला कम निकलती है ( ११ ) जिन ज्वरों में फुन्सी फोड़े अधिक निकला करते हैं उन ज्वरोंमें कमलका शर्बत पिलानेसे बहुत उपकार होता है ( १२ ) इसकी जड़का लेप करनेसे दाढ़ और त्वचाके बहुतसे दूसरे रोग मिटते हैं कमलगट्टेकी मींगी कुछ मीठी होती है ( १३ ) २॥ प्रासे कवलगट्टेकी मींगी और शकरकी फक्की जलके साथ देनेसे चित्त प्रसन्न हो जाता है ( १४ ) इसका काथ पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतर जाता है ( १५ ) इसके काथमें शकर डालकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि बहुत होती है ( १६ ) कमलकी जड़, पुष्प, डंडी और पत्ते ज्वरमें परतु विशेष करके लूके ज्वरमें अधिक उपकारी है ( १७ ) पद्ममधुको बंगालवाले आखाके रोगोंमें बहुत काममें लाते हैं ( १८ ) इसकी जड़को तिलीके तेलमें आटाकर उस तेलको शिरमें लगानेसे मस्तक और आंखें ठण्डी रहती हैं ( १९ ) इसकी जड़का रस निकालके लगानेसे भी वही गुण होता है ( २० ) इसकी स्त्री केशरको काली मिर्चके साथ पीसके पीने और लगानेसे सर्पका विष उतरता है ( २१ ) स्नायुजालकी निर्बलता मिटानेके लिये कमलका प्रयोग करना चाहिये ( २२ ) कमलकी डंडी और नागकेशरको पीस दूधके साथ पिलानेसे दूसरे महीनेमें

गर्भ-स्राव होना मिटजाता है (२३) इसके बीजोंको पीस शकर मिलाके  
 दूधके साथ एक महीनेतक सेवन करानेसे स्त्रियोंके स्तन कठोर होजातेहैं ।  
 (२४) इसके पत्तोंको शकरके साथ खिलानेसे काचका निकलना घन्द हो  
 जाता है (२५) कमलेसे सुगंधित किया हुआ जल पिलानेसे पित्तकी दाह  
 मिटती है (२६) श्वेत कमलको सब अंगपर लेप करनेसे दाह मिटती है (२७)  
 कमलगट्टोंको कुछ पानीमें भिगोर। उस पानीको पिलानेसे बालकोंकी पित्तकी  
 रुपा मिटती है (२८) कमलके और बड़के पत्तोंको जलतेलेमें मिलाकर  
 लगानेसे फैलनेवाले फोडे मिटतेहैं (२९) इसकी जड़िया कंदका शाक  
 और आचार बनातेहैं। इनको बनारसर सुखाको रखलेतेहैं जब चाहें तब शाक  
 बनालेतेहैं। सूखे या गीले कमलगट्टे खानेके काममें आतेहैं।

(सं०) कम्पिलकः, रक्तगोः, रजतः, रचनकः ।

मौरवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कपीले	कम्बिला	कपीला	कपिला	कमलगुड	कमीला	कम्पिलमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	कम्पिल	किम्बील	कम्बेला	<i>Adiantum philippinense</i> <i>Rottlera tinctoria</i>	The monkey fang tree (L. Amela.)	

स्थान—कपीलेके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे पूर्वकी ओर बंगाल और  
 ब्रह्मोत्तक और सिन्धसे दक्षिणकी ओर सीलोनतक होतेहैं।  
 परिचान—इसका वृक्ष २०—३० फुट ऊंचा होताहै। इसकी पेदडकी  
 गुलाई ३—४ फुटकी होतीहै। इसकी शाखें बहुधा जइसेही निकलतीहैं।  
 इसकी छाल चौथाई इंच मोटी होतीहै। इसके पत्ते सभके सबे एक साथ किसी  
 अक्षुभ नही गिरतेहैं, डहीपर एक २ अलग २ कुछ नोकदार पत्ते लगतेहैं।  
 इसके अंत और पीले पुष्प लगतेहैं। इसके तीन ३ पडतके छोटे २ जीज  
 लगतेहैं वे चर्मकील ताल चूर्णसे गहरे दके रहतेहैं।

फूलने-फलने का समय—इसके कार्तिक और पोषमें पुष्प आते हैं और उष्णकालमें फल पकते हैं।

प्रयोग—(१) कपीलेका लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटते हैं (२) कपीलेको पिलानेसे क्रोध मिटता है (३) कपीलेसे मन्दाग्नि, ज्वर, भ्रम, पक्षाघात और यकृत और फुफ्फुसकी पीडा मिटती है (४) कपीलेके ८ मासेसे एकतोले तक चूर्णको मधुमें चटानेसे पिटाट मरजाती है (५) इसकी ८ मासे मात्रासे दस्तें लगती हैं और तीसरी या चौथी दस्तेंम कीड़ा मरकर बाहिर आजाता है (६) कपीलेको पानी या तेलमें पीसकर लगानेसे त्वचापर रक्त और ठंडी हवाका असर नहीं होता है (७) ८ मासे कपीला और १२ मासे हींगको दहीके तोडमें पीस म्रममाण गोल्यांत्रना १-२ गोली गर्भ जलसे देनेसे पसलीकी पीडा और कृमिरोग मिटते हैं (८) तिलोके तेलमें इसको पीसके लगानेसे अंडकोपकी टांकियां मिटती हैं (९) इसको बराबर कडुवे तेलमें खरलकर उसमें फोया भरके बांधनेसे घाव भरता है (१०) ६ मासे कपीलेको गुडमें मिला गोली बनाके देनेसे पेटके कीड़े सब बाहिर निकल जाते हैं (११) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे पित्त गुल्म मिटता है परंतु इसका सेवन करानेके पहिले दिन थोडा घी पिलाना चाहिये। कपीला रंगतके काममें आता है। इसके बीजोंसे तेल निकाला जाता है।

संख्या (१०१)

( सं० ) करञ्जः, नक्तमालः, चिरविल्वकः, पूतिकः।

मरवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
करज	कंजा, करंजुवा	करञ्ज, कण्डी	करज	करज, करमुचा	करजुआ	गचचकाइ
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कडुकोई	गज्जगो, गज्जुग			Pongamia pabra, Galedupa indica.	Smooth leaved Pongamia	

स्थान—करञ्जके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होते हैं।

पहिषान—करञ्जका वृत्त ५०-६० फुट ऊंचा होता है इसकी पेदड छोटी और गुलाइमें ५ से ८ फुट तक होती है। इसकी छाल एक इंच मोटी और थिकनी होती है चैतमें इसके पत्ते गिरजाते हैं और कुछ दिनों पीछे नवीन आजाते हैं पत्ते, चमकदार और हरे रंगके होते हैं और एक सौकपर २-३ जोड़े से ५ इंच लम्बे पत्तोंके लगते हैं इसके नीले, श्वेत और बैजनीरंगके पुष्प लगते हैं। इसकी फली मोटी, कठोर मांस दो इंच लम्बी और एक इंच चौड़ी होती है इसके बीजोंमेंसे लाल, भूरा, गाढा, बीजोंको पांचवां भाग, तेल निकलता है। इसकी राख रंगतके काममें आती है। इसके एक प्रकारका गोंद लगता है।

फूलने, फलनेका समय—त्रैशारव और जेठमें इसके पुष्प लगते हैं और दूसरे वर्षके चैत में फलिया पकती है।

प्रयोग—(१) इसके बीजोंका लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटते हैं (२) इसके बीजोंको दवाके निकाले हुए तेलका मर्दन करनेसे त्वचाके रोग और गठिया मिटती है (३) इसके पत्तोंका पुन्डिस बांधनेसे घावके कीड़े मरते हैं (४) इसकी जड़का रस भिगड़े हुए भाँवोंपर लगाते हैं (५) इसकी जड़के रसकी पिचरकी देनेसे भगंदर मिटता है (६) खुजली और त्वचाके कई प्रकारके दूसरे रोगोंको मिटानेके लिये इसका तेल बहुत प्रबल है (७) उपदश सम्बन्धा जड़ोंपर इसके तेलमें नींबूका रस मिलाके लगानेसे बहुत लाभ होता है (८) इसकी डालीका रस जड़ और तेलके प्रयोगसे ज्वरपर दुर्गंध युक्त त्रायुका प्रभाव नहीं होता है (९) इसके और चित्रकके पत्ते कालीमिरच और नमक को पीस दहीके साथ चटानेसे कोढ़ मिटता है (१०) पेटके भीतरके यत्र बदनानेपर भी उक्त बीजोंका चटाना उपकारी है (११) इसकी जड़का रस नारेलका दूध और चूनेका पानी मिलाकर पिलानेसे भूत्रकृच्छ्र मिटता है (१२) इसके और चित्रकके पत्तोंके रसमें कालीमिरच और नमक बुरकाके पिलानेसे मदारिन्, अतिसार और श्रेफारा मिटता है (१३) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे मूत्रातिसार मिटता है (१४) इसकी फलियोंकी माला बनाकर पहिनाने से कुत्ताधासी मिटती है (१५) इसके बीजोंको मधुके साथ चटानेमें कुत्ताधासी मिटती है (१६) इसके बीजोंकी मींगीका लेप करनेसे कोढ़ मिटता है (१७) इसके कोमल पत्तोंका पुन्डिस रक्तार्श पर बाधा जाता है (१८) इसकी फलियोंकी गिरका चूर्ण



चटानेसे कुत्ताधासी मिटती है - ( २६ ) इसकी जड़की बालके वृधिया, रसकी  
 पित्रकारी देनेसे भगंदर, जन्दी भर जाता है - ( २७ ) इसकी जड़की बालके  
 वृधिया, रसमें बराबर तिलों का तेल और कुष्ठ नीलाधुया मिलानेके लगानेसे  
 हड्डियोंके घाव भरजाते हैं - ( २८ ) अप्सुमारमें इसके पत्तोंका प्रयोग बहुत प्र-  
 कारा है - ( २९ ) इसकी मींगीके चूर्णमें शक्कर मिलाकर फकी लेंनेसे अर्श मिटती है  
 परन्तु इस प्रयोगमें स्निग्ध भोजन देना चाहिये - ( ३० ) इसकी मींगीको एक  
 मासे चूर्ण ३० मासे मधुके साथ पहिले दिन चटावे फिर तिरंगी एक एक मासे  
 चूर्ण घटाता हुआ ११ दिन तक बढ़ाके फिर वैसेही एक एक मासे कम करता  
 हुआ तीन मासे तक ले आनेसे पथरी मिटती है - ( ३१ ) इसकी कोंपलोंकी ७  
 मासे राख दो तोले मधुकी साथ चटानेसे अश्मरी मिटती है - ( ३२ ) इसकी  
 लकड़ीका दांतुन करनेसे अरुचि मिटती है - ( ३३ ) इसके कौमल पत्तोंकी पीस  
 सधा नर्मक मिलाके खानेसे वमन बन्द होती है - ( ३४ ) इसके बीजोंको  
 सेक जा कूटकर कई घेर खिलानेसे दुस्साध्य वमन बन्द होती है - ( ३५ )  
 पित्त बढ़ानेवाली औषधियोंमें इसको मिलाकर लेप अथवा सेक करनेसे वात  
 पीड़ा मिटती है - ( ३६ ) इसके बीजोंके चूर्णकी पलासके पुष्पकी रसकी कई  
 भावना दिकर उनकी सलाई बनाके नेत्रोंमें फेरनेसे फूलों कटती है - ( ३७ )  
 इसके पुष्प और गुड़को पीस छपण जेलके साथ लेनेसे आधोशीशी मि-  
 टती है - ( ३८ ) इसके रसका लेप करनेसे व्रणके कीड़े मरते हैं - ( ३९ ) इसकी  
 भस्ममें नीम मिलाके मलनेसे दंतपीड़ा मिटती है - ( ४० ) इसके एक बीजकी  
 मींगी और एक रती नीलेधुथेकी सरसोंकी बराबर गोलियां बना नित्य एक  
 गोलियां देनेसे पसलीकी पीड़ा मिटती है - ( ४१ ) इसके पत्तोंके रसको हथेली  
 और तलवोंपर मलनेसे वीर्य रतन बनता है - ( ४२ ) कुसुमके रंगसे रंगे हुए  
 लाल बस्त्रमें एककजा लालसूतसे बांधकर ४५ मास पर्यंत स्त्रीकी कमरमें बंधा  
 रखनेसे गर्भपात नहीं होता है - ( ४३ ) इसकी बीजोंकी मींगी १५ धूममें भिगो पी-  
 सकर मुखपर मलनेसे मुखकी कान्ति बढ़ती है - ( ४४ ) इसकी मींगीको जलमें  
 पीसकर नाभिमें टपकानेसे कफज्वर छूटता है - ( ४५ ) इसकी ३० कोंपल और  
 दो कालीमिरच पानीके साथ पीसके लगानेसे कफज्वर छूटता है - ( ४६ ) इसकी  
 फल खानेके काममें आता है - ( ४७ )

( सं० ) लताकरजः, वज्रवीजकः, कुबेराक्षः, कण्टफलः

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
किणगच कुळगच	कटकरजा फरजवा	काकर, काकच	सागरगोटा गजगा	लताकरज	फरजवा	
द्राचिडी	कनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		अकतमकत	खायेडबलास	Caesalpinia Bonducella Gouandina B	Fever nut Physal. nut Bonduc nut. Sicker	

स्थान — किणगचकी बेल, हिन्दुस्थानमें सबठार होती है परन्तु बंगाल और ब्रह्मामें बहुत होती है।

पहिचान — यह एक प्रकारकी बेल होती है। इसके कुछ मुड़े हुए काटे लगते हैं इसकी शाखाकी एक सीक पर ६ से १० तक जोड़े पत्तों के लगते हैं। इसके पीले पुष्पोंकी मंजरी लगती है। इसके दो तीन इंच लम्बी १-१ ॥ इंच चौड़ी फलियां लगती हैं उन हरेकमें २-३ बीज निकलते हैं और फलियों के छिलके पर कठार, सीधे और ताले छोटे २-बहुतसे काटे होते हैं। इसके बीज कुछ हरे, भूरे या शीशेके रंगके साफ और चमकीले होते हैं।

फूलने फलनेका समय — इसके वर्षा ऋतुमें पुष्प और फलियां लगती हैं।

प्रयोग — (१) किणगचकी गिरा और कालीमिरच बराबर ले पीस ८ से १५ रती तक दिनमें दो बेर देनेसे चारिसे आनेवाला आर्तव ज्वर ( मांस-मीवुखार ) छूटता है ( २ ) इसकी गिरा उष्ण, रुक्ष और बहुत कड़वी है ( ३ ) इसकी गिरा श्वास रोगको मिटाती है ( ४ ) इसकी गिराको पीसकर लेप करनेसे सूजन विखरजाती है ( ५ ) इसकी गिरा खानेसे कुछ मिटता है ( ६ ) इसको हुकेमें पीनेसे पेटकी शूल मिटती है ( ७ ) इसकी गिरा और हींगको बिलोये हुए दूध में पीसके पीनेसे अजीर्ण मिटता है ( ८ ) इसके और सुपारीके कोयलोंको फिटकड़ीके साथ पीस मंजन करनेसे मसूड़ोंका फूलना और मुँहके बाले मिटते हैं ( ९ ) इसी चूर्णके खानेसे दिनमें दो बेर आनेवाला ज्वर छूटता है और उसकी निर्बलता मिटती है ( १० ) किणगचकी गिरा रक्तसावको

रोकती है ( ११ ) इसकी गिर ( संक्रामक रोग ( उड़कर लगनेवाले रोग ) का  
 असर नहीं होने देती है ( १२ ) इसकी गिरको पीसकर लेप करनेसे राई, अंड-  
 कोपकी सूजन और बुद विखरजाती है ( १३ ) इसकी गिरको एरंडके तेलमें पीस  
 लेप करनेसे अंडकोपमें भराहुआ पानी सूखजाता है ( १४ ) इसके पत्तोंके प्र-  
 योगसे हृद्रोग मिटता है और रुकाहुआ मासिकधर्म जारी होजाता है ( १५ ) इसके  
 पत्तोंका तेल और गिर=आक्षेपक और अर्द्धग आदि वातघ्याधियोंको मिटाता  
 है ( १६ ) पत्तोंको घी या एरंडके तेलमें तलकर उनका गाढा लेप करनेसे अंड-  
 कोपकी सूजन और पीडा मिटती है ( १७ ) इसकी कोमल शाखा और पत्तों-  
 का काथ पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटता है ( १८ ) इसकी गिर  
 खानेसे कष्टसे प्रसव होना मिटजाता है ( १९ ) इसकी जड़की छालका काथ  
 पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाता है ( २० ) चट्टे हुए ज्वरको उतारनेके  
 लिये २० मासेसे ६ मासे तक इसकी गिरकी मात्रा देनी चाहिये ( २१ ) गिर  
 की मात्रा ५ से १५ रतीतक देनेसे बल बढ़ती है ( २२ ) इसकी गिरकी पीसके  
 विच्छेदके दशपर लगानेसे विप्र उतरता है ( २३ ) इसकी राखको घावपर बुर-  
 काते है ( २४ ) यकृतके रोग मिटानेके लिये इसके कोमल पत्तोंका प्रयोग करना  
 चाहिये ( २५ ) इसकी छालके ५ रती चूर्णकी फूँकी देनेसे ज्वर या  
 दूसरे रोग मिटनेके पीछेकी निवेलता मिटती है ( २६ ) इसकी गिर और चाय-  
 विडंगके चूर्णकी फूँकी देनेसे कौड़ि भरते है ( २७ ) इसकी मींगीके तेलका  
 मर्दन करनेसे आक्षेपक और कपवायु मिटती है ( २८ ) शरीरकी छोटी-छोटी  
 फुन्सियोंके चट्टे मिटानेके लिये इसकी तेलकी मर्दनी करनी चाहिये ( २९ )  
 शरीरपर इसके तेलका मर्दन करनेसे त्वचा कोमल हीजाती है मच्छ ( ३० )

( सं० ) करमदी, आविघ्न, चौरफल, इडकेरटक, ...

मारेवाडी	हिन्दी	गुजराती	भिरहटी	बंगाली	गणजार्धी	उप वैलकी
करमदी	करौदा	करमदी	करवन्दी	टकरमचा	करौदा	वोकलिव
	करौदा	करमदा	करवन्दा		करमदा	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	कमारिकहेपिग नामिड	मोड	ककंदह करुदा	Carissa (Syn. Congesta)	Jasmine flowered varia.

**स्थान**—कुरुदक वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागमें बोये जातेहैं, अथवा, बंगाल और दक्षिण हिन्दुस्थानमें अपने आप उगतेहैं पंजाब और गुजरातमें बाहोंके ऊपर लगातेहैं।

**पाहचान**—इसकी पदह ३-४ फुट लम्बी और गोलाईमें दो फुट होतीहै छोटी शाखें कुछ लाल, भूरेरंगकी, साफ और काटेदार होतीहैं। इसकी छाल आधुंध मोटी भरी या अत पीलेरंगके छोट्टेदार होतीहै। इसके १०-२० तक सफेद पुष्पके गुच्छे डालियाके अन्तमें लगतेहैं, एक इंच लम्बा साफ, हरा और कहींसे लालरंगका फल लगताहै वह पकनेपर काले रंगका होजाताहै उसमें से जो दधिया रस निकलताहै उसमें बड़ा जेप होताहै।

**फूलने फलने का समय**—पोषसे चैत तक इसके पुष्प लगतेहैं और अषाढ और श्रावणमें कुरुद पकतेहैं।

**प्रयोग**—(१) इसका कच्चा फल ग्राहीहै (२) पक्का फल ठंडा और खटा होताहै (३) इसके पके फल पित्त विकारको मिटातेहै (४) इसकी जड़ के चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै (५) इसका लेप करनेसे मक्खिया नहीं बढतीहै (६) इसका नावुक रस और कपूरके साथ पीसकर पांवपर लेपसे मदन करताहै (७) इनका शाक या जदनी त्रनाके खानसे मसहोंके रोग मिटतेहैं (८) इसके कच्चे फलका रस लगानेसे चमडीपर चमचमाहट लगजातीहै और कभी २ छालेभी होजातेहै (९) लगातार रहनेवाले ज्वर के प्रारम्भमें इसके पत्तोंका जवाथ बहुत उपकारीहै (१०) इसके पत्तोंके रस में मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खासी मिटतीहै (११) पहिले दिन प्रातःकाल इसके पत्तोंका एक तोला रस पिलावे पीछे एक एक तोला रस नित्य बढ़ाता हुआ १० तोले तक बढ़ादेवे ऐसे प्रातःकाल निद्रा पिलानेसे ज्वलंघर मिटताहै (१२) इसके फलका शाक जदनी, अथाचार और मूरच्चा आदि भोजनके कई पदार्थ बचासे जातेहैं।

इसके और ताकतपककर मस्तकपीडा मिटजाती है (२२) इसके पत्तोंको ओका मीस तेलमें मिलाके लेप करनेसे जोड़ोंकी पीडा मिटती है (२३) इसके तेल पत्तोंके चूर्णको घातपर चुरकानसे घाव भरजाता है (२४) इसके पत्तोंसे बनाया हुआ तेल खुजली और पातको मिटाता है (२५) इसके पत्तोंके काथसे द्रपदश के ४ वरणोंको थोडा चांहिये (२६) इसकी अण्डको चट्टे, प्रानीके सधापीस कर दस्त जाते समय जो अशी घाहिर निकल आते है उनपर लगानेसे वे मिट जाते है (२७) इसकी अण्डको किंदालीके रसमें खरल करके इन्दीपर लेप करने से नपुंसके ताडमिटी है और इन्दी पुष्ट होजाती है ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पीलीकंडीर	पीलीकनेर	पीलाफुलनी कणर	पिवकीक यहर	पीतकरवीर	पीलीकनेर	काली तामर
द्राविडी	कन्नोटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
डॉक्टर	का मिर्च	पुर्ण	डॉक्टर	<i>Theropogon folia</i>	The shell or yellow color	

स्थान—यह हिन्दुस्थानके जंगलामें बहुत होता है ।  
 पहिचान—इसके बीजामसे साफ पीला तेल निकलता है, वह जलनमें आकाम देता है और खानमें नरोग्यतादायक है । १०० ताले बीजामसे ३५। से ४१ ताले तक तेल निकलता है ।  
 प्रयोग—(१) इसके दधिवा रसमें बहुत विष होता है (२) इसकी छाल कडवी, रेचक और ज्वर उत्पन्नवाली है (३) इसका अके कड़े प्रकार के शीतज्वर आदि बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकता है (४) इसकी अधिक मात्रा देनेसे भ्रम और विरचन बहुत होता है (५) इसकी छालकी अधिक मात्रा विषका काम देती है (६) इसका चवाभ बारीसे आनेवाले ज्वरको मिटाता है (७) इसके बीजोंकी भीगी बहुत कडवी होती है उसको चवानसे मिटा



चूर्णसे बद्ध कोष्ठ मिटता है ( ४ ) इसकी छालिका लेप करनेसे पित्तशोध मिटती है ( ५ ) इसकी जड़का वफारा देनेसे हाथ पैरोंके जोड़ोंके रोग मिटते हैं । ( ६ ) इसकी छाल कड़वी होती है ( ७ ) कैंका वृक्ष उष्ण और सारक होता है ( ८ ) इसकी लकड़ीको विष करे गुणगुना लेप करनेसे सूजन उतरती है ( ९ ) इसके प्रयोग से विष उतरता है ( १० ) इसकी लकड़ी की एक मासे राख देनेसे कफ मिटता है ( ११ ) इसकी क्रोमल कोपलोंको बिना जलसे पीसकर २-३ दिन तक मलनेसे उस और पर बाल जल्दी उग आते है ( १२ ) इसकी सूखी कोपलोंके एक तोले चूर्णमें ६ मासे काली मिर्च मिलाके प्रातः काल पानीके साथ फकी लेनेसे तिल्ली मिटती है ( १३ ) इसकी एक तोले जड़को ३ मेर पानीमें आटा आधसेर रखकर दिनमें दोबेर ७-८ दिन पिला-नेसे रक्तशि मिटजाता है ( १४ ) इसकी लकड़ीकी भस्मको धीमे मिलाकर चा-टनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है ( १५ ) इसके और एरंड के पत्तों को गर्भ करके बांधनेसे शोध उतरती है ( १६ ) इसकी जड़को पीसकर बालोंकी जड़में मलने से बाल लंबे बंद जाते हैं । ( १७ ) कच्चे कैंरो का शाक और अचार आदि बनाये जाते हैं और इनको तेल या घीमें तलकर मसाला ( नोनभिरच ) लगाके खाते हैं ।

सख्या १२०८  
 ( सं० ) ककटशुगी, श्रुङ्गा, नताही, महाघाषा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगी
काकडासिगी	काकडा शिगी	काकडाशिगी	काकडाशिगी	काकडाशिगी	काकडासिगी	काकडाकशुगी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
काकडाकशुगी	काकडाकशुगी			<i>Platelia integrifolia</i>		

को स्थान—काकडा शिगी सिन्धु नदीसे केमाऊ तक शिमलाके पास, पश्चिमोत्तर सीमा और पेशावरकी खाटीमें होती है ।  
 पहाड पहाड—यह असली और ककली के भेदसे दो प्रकारकी होती है ।

अमली काकड़ा सिंगीका वृत्त ४० फुट या इससेभी कुछ अधिक ऊंचा होता है इसकी पेटडकी, गोलाई ८-९ और कभी, कभी १२-१५ फुटतककी होजाती है इसकी बाल सफेद रङ्गकी होती है। इसकी छोटी डालियें खाखी या कुछ लाल भूरे रंगकी होती है। इसकी, ६ से ६ इंच लम्बी सींकपर ४-५ जोड़े पत्तोंके लगते हैं। इसके पुरुष और स्त्री जातिके भेदसे दो प्रकारके पुष्प लगते हैं। माघ में इसके, गहरे, हरे, पत्ते गिर जाते हैं और फागुनमें नये पत्ते निकल आते हैं इसकी, सिंगी पोली, और कठोर होती है यह रंगतके काममें आती है। फूलने फलने का समय—वैशाखमें इसके पुष्प लगते हैं और जेठसे श्रावण तक इसके फल पकते हैं।

प्रयोग—( १- ) यह बलवर्द्धक और कफनाशक है ( २- ) यह खांसी, सैन, श्वास, ज्वर, मन्दाग्नि और आमाशयकी जलनको मिटाती है। इसकी साधारण मात्रा इन रोगोंकी औषधियोंके साथ १। मासेकी है ( ३ ) बच्चोंके फुफ्फुसके पुराने रोगोंमें इसका सेवन बहुत उपकारी है ( ४ ) इसके सेवनसे मंदाग्निभी बमन मिटती है ( ५ ) बीलागिरके साथ इसकी फरजी लेनेसे अतिसार मिटता है ( ६- ) इसको और कायफलको मधुके साथ चटानेसे श्वास मिटता है ( ७ ) इसको और कटालीको थोटाके पिलानेसे खांसी मिटती है ( ८ ) इसको और पीपलको मधुके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटती है ( ९ ) इसका लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटते हैं ( १० ) इसके १। मासे चूर्णको मलाई के साथ चटानेसे आमातिसार मिटता है ( ११ ) इसको घीमें सेक पीस उसमें कुछ शक्कर मिलाके फक्की देनेसे आमातिसार मिटता है ( १२ ) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे बच्चोंकी खांसी मिटती है ( १३ ) इसका चूर्ण सहतके साथ थोड़ा चटानेसे बालक हृष्ट पुष्ट और बलवान होजाता है ( १४ ) इसकी कालीभिरचके बराबर गोलिया बनाकर मुहमें रखनेसे रुफ और खांसी मिटती है।

स्थान—इसके वृत्त कश्मीरसे सिक्कम और भूटानतक और खासिया पहाड़में होते हैं।

पहिचान—इसका वृत्त ३० फुट ऊंचा होता है इसके छोटे पेटडकी गोलाई ३ फुटकी होती है इसके पत्ते लाल होके आसोजमें गिरजाते हैं इसकी डालियाँ



के अन्तमें ६ से १२ इंच लम्बी सीकोंपर २५ से ४ इंच लम्बे पत्तोंके ३ से ६ तक जाड़े लगतेहैं इसके कुछ हरे पीले पुष्प लगतेहैं-इसके एक प्रकारका खल जैसा पदार्थ लगताहै ॥

फूलने फलनेका समय—ग्रीष्म ऋतुमें इसके पुष्प लगतेहैं श्रावण और भादवेमें फलप्रकतेहैं ॥

प्रयोग—(१) इसके वृत्तकों दूधियाँ रस घिडा चरपरा होताहै उसके लगानेसे ब्यालां होजाताहै (२) इसका फल खैर रोगकी मुख्य औषधियोंमें गिनाजाताहै (३) इसको असली किफिडा सिंगी के बदले में देतेहैं जापानवाले इसके फलों को निबोलीके साथ कूट उबाल कर गर्मपत्र को संच में देवा कर उनमेंसे एक प्रकारका मोम निकालतेहैं उसकी जापान चैक्स कहतेहैं उसकी मोम बत्तियां बनातेहैं ॥

संख्या (१०००)

(सं०) कर्कटी, कटुदला, मूत्रफला, लामशुकाडा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलकी
फाकड़ी	फाकड़ी(री)	फाकडी	कार्कडी	फाकुडी	तर ककडी	( )
द्राविडी	किर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		किस्ता	खैरजाह	Cucumis thibetanus	Cucumber	

स्थान—यह बंगाल, सयुक्तप्रदेश, पंजाब, राजपूताना, खानदेश, चंबई आदि कई देशों की तराईमें और नदियोंके किनारे खूब और वर्षा ऋतुमें बोईजाती है ॥

पहिचान—इसकी बेल लम्बी होतीहै, इसका पुष्प पीला होताहै। इस के फल गोलखंबे कुछ मुडेहुए और खेवावाले होतेहैं जब खोटी होतीहै तब बहुत कोमल और रूएदार होतीहै और जब यह पूरी बढजातीहै तो २-२ ॥ फुट लम्बी होजातीहै जब यह पकजातीहै तब ऊपरसे चमकदार पीले नारजी रंगकी होजातीहै। यह ग्रीष्म ऋतुका उत्तम शाकहै ॥

गुण और प्रयोग—(१) यह मीठी, ठंडी, और रोचक होती है। कफ, पित्त, रुधिरविकार, मूत्रापात, पथरी, पित्तकी चमन, दाह, तृपां और श्रमको मिटाती है और मूत्रवृद्धि करती है। (२) पकी हुई ककड़ी पित्त और जठराग्निको बढ़ाती है। (३) इसके बीज ठंडे, पौष्टिक और मूत्रवर्द्धक हैं। (४) जिसके मूत्रका बनना बन्ध हो गया हो उसको इसके ७॥ मासे बीजोंको पानीमें पीस छानके पिलानेसे अथवा उसमें कुछ नोन डालकर पिलानेसे मूत्र अधिक आने लगता है। (५) मूत्रकी दाह मिटानेके लिये इसके बीज और जोखारको पानीमें घोट छानकर पिलाना चाहिये। (६) इसके बीजोंको मिश्रीके साथ घोट छानकर पिलानेसे शर्कराशरीर मिटती है। (७) पथरीवालेके लिये भी इसके बीजों का प्रयोग बहुत अच्छा है। (८) इसके सेके हुए बीजोंका चूर्ण बहुत मूत्रवर्द्धक है। उप्यकालमें कच्ची ककड़ी खानेका बहुत उत्तम पदार्थ है। इसके बीजोंको सूखा पीसके खानेके काममें लाते हैं जिससे शरीर बहुत पृष्ठ होता है। इसकी मींगीमेंसे जो तेल निकलता है वह खान और जलानेके काममें आता है।

संख्या—(११०)

(सं०) एवारुः, व्यालपत्रा, सुलोमशा, उवारुः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
फूटकाकड़ी	फूट	मोटीकाकड़ी	थोरवाडुक	फुटीगाछ	फुट	बुडम
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
बुडमकाई				Cucumis Monardii		

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सबेरे और बोई जाती है।

पहिचान—यह ककड़ी बड़ नारियल जितनी बड़ी बहुत चिकनी और पकने पर हल्के पीले रंगकी होके निकस जाती है यह कर्नाटकम शातकालम हावा है।

गुण और प्रयोग—(१) यह शीतल, मधुर, रोचक, अभिप्यन्दी, छह और दीपन है। पित्त, मूत्रके रोग, मूर्छा, दाह, रक्तपित्त और कफको मिटाती है और

में किसी अंगमें पीड़ा होतो, मिटती है ( २२ ) पट्टोंके दर्दपर कपूरका लेप करना चाहिये, ( २१ ) एकरती, एलुवा और १॥ या २ रती कपूर, मिलाके लगानेसे स्नायुकी पीड़ा मिटती है ( २२ ) यह उत्तेजक और कफ निस्सारक है ( २३ ) पीड़ा और बाइटे मिटाने, पुरुषार्थ बढ़ाने और पसीने लानेके लिये इसकी मात्रा आधी रतीसे ५ रती तक है ( २४ ) कफनाशक औषधियोंके साथ कपूर पुरानी खांसीको मिटाता है ( २५ ) कुत्तैनानोसादरके फूल और कपूरकी गोली देनेसे रक्तछीबी सन्निपात, अर्थात् गुजराती रोग मिटता है ( २६ ) दो ताले कपूरको २॥ पाव पानीमें पीसके उसमें हरेक वृत्तके बीजोंको भिगोकर या दुबोके बानेसे वे बहुत जल्दी लगते हैं जो घृत्त कलम से लगाये जाते हैं उनकी कुलमको कपूरके पानीमें दुबोके जमीनमें रखनेसे बहुत जल्दी जड़ छोड़ देते हैं ( २७ ) मांसकी पेशियोंकी पीड़ामें कपूरका तेल मर्दन करना लाभकारी है ( २८ ) तीव्र खांसीमें खांसी मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ कपूरका प्रयोग करना चाहिये ( २९ ) दांतकी खोखलमें कपूर भर देनेसे दांतकी पीड़ा और दांतका विगड़ना बन्ध होजाता है ( ३० ) पित्तकी मस्तकपीड़ामें सिरके और ठण्डे जलके साथ कपूरका लेप करना चाहिये ( ३१ ) अफीम और कपूरको राईके तेलमें मिलाके मर्दन करनेसे मांसपेशियों या रक्तवाहिनी शिराओंकी गठियाकी पुरानी पीड़ा मिटती है ( ३२ ) कपूर और एलुवेकी गोली बनाकर देनेसे मूत्रकृच्छ्रमें दाह खुजली और बार-बार इन्दीकी चैतन्य होना मिटता है ( ३३ ) २॥ रती कपूर उत्तेजक पसीना लानेवाला है और स्नायुसम्बन्धी मस्तकपीड़ाको मिटाता है ( ३४ ) विगड़े हुए घावपर कपूरका लेप करनेसे घाव सुधरने लगजाता है ( ३५ ) साफकी हुई स्फिरिटमें गलाये हुए कपूरकी २ से ५ चूंद तक शकल पर डालके रखिलानेसे अजीर्ण और शूल मिटती है ( ३६ ) विसूचिका के प्रारम्भमें इसका प्रयोग करनेसे बमन और विरेचन बन्ध होजाते हैं ( ३७ ) कपड़ोंमें कपूर रखनेसे कीड़े नहीं लगते हैं ( ३८ ) प्रतिश्यायके कारण श्वास नलिकामें उपद्रव होतेही स्फिरिट कैम्फर देनेसे बड़ा लाभ होता है ( ३९ ) विसूचिका में हार्थ पैरुठंडे हो जाने पर स्फिरिट कैम्फर से लाभ होता है ( ४० ) विसूचिका में हरचौथे घटे ५ रती कपूर देनेसे लाभ होता है ( ४१ ) कले पर कपूर घुरकाके रखिलानेसे बर्चा सुखसे

पैदा होजाताहै इस कामके लिये दश रती कपूर बहुत है (४२) ५ से १० रती तक कपूर उच्चेजकहै, वाइटे मिटताहै, पसीना और नींद लाताहै और नपुंसकता पैदा करता है। दांतशूल, पुरानी गठिया, कष्टसे मासिकधर्म होना, प्रलाप, पानीजरा, ज्वरके पीछेकी निर्वलता, कूकरधांसी, फुफुसका सड़जाना, विमूचिका, कंपवायु, स्त्रियोंका आवेशको रोग, अंपस्मार, प्रसूतीके वाइटे, हृदय का धड़कना आदि रोगोंमें कपूरका प्रयोग लाभकारीहै (४३) कपूरको नित्य काममें लानेसे शरीर उत्तेजित रहताहै (४४) यह कृमिनाशकहै (४५) कपूर और मिश्रीको पीसके चुरकानेसे मुखपाक मिटताहै (४६) कपूर और चन्दनको घिसकर सूघनेसे गर्मीकी मस्तकपीडा मिटतीहै (४७) कपूरको कीडोंके खायेहुए दांतोंमें रखनेसे दंतपीडा मिटतीहै (४८) कपूरको सिरकेमें मिलाके मदेन करनेसे मक्खी और भिड़का विष उतरताहै (४९) चढ़के दूधमें कपूरको खरलकर अंजन करनेसे फूला कटताहै (५०) कपूरकी धूनी देनेसे रक्तस्राव बंध होताहै (५१) एकभाग कपूर और ४ भाग सफेद कत्थेकी गोलियां बना एक रतीसे ४ रतीतक देनेसे पित्तज्वर छूटताहै (५२) एकमासे कपूरको कई तोले गुलाबजलमें घोटकर पिलानेसे संखियेका विष उतरताहै (५३) कपूरको सिरकेमें पीसकर दंशपर लगानेसे विच्छूका विष उतरताहै (५४) तारपीनके तेलमें कपूरको गलाकर मर्दन करनेसे विमूचिकाके वाइटे मिटतेहै (५५) एकतोले कपूरको पानीसे भरीहुई बोतलमें डालकर उसके डाट लगाके २ घंटेतक पड़ी रखें, फिर उसमेंसे २॥ तोले पानी ले उसमें ३ मासे इमलीका गुदा और ३ मासे शकर मिलाके पिलानेसे दाहज्वर और लू मिटतीहै।

संख्या ( ११४ )

( सं० ) कपूरवल्ली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	भरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	पूजरीका पात	अजमानुपात	कापुरली			कपूरवलि

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कंपूरवृक्ष	डोडुवात्रि			<i>Antiochilus carnosus</i>	Thick leaved Lavender

स्थान—यह उत्तरी सफ़ार और मलवारमें होती है।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे स्त्ररसम्बन्धी गलेके रोग मिटते हैं (२) इस रसमें शकर और तिलोंका तेल मिलाके शिर पर लेप करनेसे उसकी दाह और पित्तकी पीड़ा मिटती है (३) इसके पत्ते और डालियोंका काथ पिलानेसे विशेषकरके बच्चोंके कफके और वंढके विकार मिटते हैं (४) खचेकी रसासी मिटानेके लिये उसकी गांठें दूधमें इसके पत्तोंका रस और शकर मिलाके पिलाना चाहिये (५) इसके पत्तोंके रससे प्रतिश्याय मिटता है (६) इसके पंचागमें से उद्धतेवाला तेल निकलता है इस तेलका मर्दत्त करनेसे शरीरकी शिथिलता मिटती है (७) इसके तेलकी १० बूंदें सोंठके १॥ मासे चूर्णमें मिलाके फकी देनेसे पसाना आता है (८) अइसेके काथमें इस तेलकी १० बूंदें डालके पिलानेसे सूखी खांसी मिटती है

कर्मरङ्गः, कर्मरिः, धाराफलः, मुद्गरकः

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कमरख	कमरख	कमरकमुद्गर	कर्मर कर्मरख	कामररङ्ग	कमरखी	तगत

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तमर (इ)	कमरक			<i>Averrhoa Carambola</i>	Carambola

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुते ठौर लगाये जाते हैं।

प्राधिष्ठान—बंगालमें कमरख दो प्रकारकी होती है एक रुखी और दूसरी खटमीठी। इसका वृत्त १५-२० फुट तक ऊंचा होता है इसकी डालियोंपर एक दूसरेके सामने पत्तोंके जोड़े नहीं लगते हैं पत्तोंका नीचेसे चन्द्रनियां रंग हाता है

इसके छोटे २ भेद और बैजनी रंगके पुष्प लगतेहैं इसका पकाहुआ फल ती  
 १ घ लम्बी कुछ हरे और पीले रंगकी होताहै ।

फूलने फलनेका समय—वर्षाऋतुमें इसके पुष्प लगतेहैं मृगशिर और  
 पोषमें फल पक जातेहैं ।

प्रयोग—(१) इसका कच्चा फल खटा और ग्राही होताहै—(२) क  
 फलको खानसे ज्वर और छातीमें पीडा होजातीहै (३) इसका पकाहुआ  
 फल खटमोठा हाताहै इसके शाक अचार मुरब्बा आदि भाजनके प्रदाय बना  
 जातेहैं (४) खटमोठा फल शीतल हाताहै और उसको पित्त ज्वरमें ठ  
 मिटानके लिये देतेहैं (५) इसके पत्तोंका कालीमिरचक साथ घोट छानक  
 पिलानेसे अन्तर्दाह मिटतीहै (६) जबफा फांट या हिम बनाकर पिलाने  
 ज्वर छुट जाताहै (७) इसके दानों प्रकारके फल शीतादरोगको मिटाते  
 (८) इसके पत्ते, जड़ और फल शीतल हातेहैं (९) इसके कच्चे सूखे फल  
 का चूर्ण ज्वरमें देते ।

संख्या (११६)

(सं०) कलम्बी, शतपर्वा, ।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	कलमी शाक		कळवी शाक	कलमी शाक	कर्मशाक	तोमैवंचलिचेय
द्राचिडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कोहलैग				<i>Ipomoea aquatica</i> L. plant		

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होतीहै, परन्तु बंगालमें जला-  
 शयाकी तीरपर बहुत होतीहै मद्रास और सीलोनमें शाकके लिये कमपूर्वक  
 बोई जातीहै । जिन भूखण्डों या नाडियोंमें बारह महीने पानी रहताहै उनमें  
 यह बारह महीनेही बनी रहतीहै ।

पट्टिचान—इसके सफेद पुष्प लगतेहैं इसकी डालियां खोखली (पोली)  
 होतीहै और जड़ मोठी होताहै ।

प्रयोग—( १ ) घड़े हुईकी अपेक्षा स्वतः उत्पन्न हुईमें विपनाशक शक्ति अधिक होती है । सखिये और अफीमका विष उतारनेके लिये इसका स्वरस पिलाके वमन कराते है ( २ ) इसके अर्कको मुखाके फकी देनेसे विरेचन लगता है ( ३ ) इसके पत्ताका शाक घनाके खानेसे अफीमका मद ( जशा ) छतर जाता है ( ४ ) इसके पत्त और डालियोंके टुकड़े कर मुखा रखते है उनको खटाइके साथ उवालेके चाबलेके साथ खाते है ( ५ ) इनको रातको उवाले रखके प्रातःकाल भोजनके पहिले खानेसे स्त्रियाकी स्नायुजाल सम्बन्धी साधारण निचलता मिटती है और उनके दूध बढ़ता है । इसकी कामल शाखा पत्ते और जड़ शाकके काममें आते है ।

सख्या ( ११७ )

( सं० ) कलायः; मुण्डचणकः )

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तलुकी
मटर	मटर	मटाणा	वाटाणें	मटर	मटरछोटा	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	अफारसी	( लैटिन )	अंग्रेजी	
		हुबुलबकर	फसग	<i>Psium sativum</i> (?) <i>P. avicenne.</i>	<i>Field pea.</i> (?) <i>The garden pea.</i>	

स्थान—मटर हिन्दुस्थानके बहुतसे भागमें बोया जाता है ।

इसकी हरी फलियोंका शाक बनाया जाता है या जैसे ही खानेके काममें आती है इनमेंसे मटर निकालिके कच्चे या उनके शाक घनाके खाते है पके मटर की दाल बनाते है या इसके आटेकी रोटियां बनाते है । दूसरी फलियोंकी अपेक्षा इसकी फलीको कम पसंद करते है । क्योंकि इससे बहुधा पेटमें अफारा आजाता है जो यह अच्छी तरह नहीं पकाई जावे या इसका छिलका ठीक नहीं उतारा जावे तो इसके खानेसे स्वास्थ्य बिगड़ जाता है । पुनियाके जिलामें बहुधा कच्ची फलियां खाते है जिससे उनके अतिसार और आम्रातिसार हो जाया करता है ।

॥ १०६ तौले मटरमें ५५ तौले आटा और सत्रा तौले तेल होता है ।

प्रयोग—(११) मटरके खेतमें सोनेसे हाथपर और शरीर शुन्य होजाता है । अथवा शरीरमें श्रिकण्ड जाता है । (२) मटरके आटेको खेतना करनेसे सुखकी श्यामेता मिटती है । (३) मटरके खानेसे आदीपित्त और आम वेदता है । (४) मटर कसेला, मीठा, शीतल, क्वचिबर्द्धक, शरीर पुष्ट करनेवाला, और दाह, कफ और रुधिरबिकारको मिटानेवाला है । (५) इसके काथसे फूली हुई अंगुलियोंको घोना च्यदिये या मृष्ट कंसु मूत्र की कमी को मराने में सहायक है ।

( सं० ) कलिकारी, लाडली, अग्निशिखा, हालिनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	मद्रासी	मंजाबी	तैलड़ी
राजराट	कलिहारी	कळलावी	कळलावी	ईशकागली	कलेसर	पैलवेदुरु
आविही	कर्नाटकी	अरुबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	बेलेवेदुरु			Abgulata	Wolf's bane	

स्थान—कलिहारी हिन्दुस्थानके बहुतसे जंगलोंमें पैदा होती है ।  
 परिचाय—यह दो प्रकारकी होती है एकका कंद गोला होता है उसको स्त्रीवृत्त कहते हैं और इसके कंदके लक्षण अथवा दो लम्बे टुकड़े ऐसे जुड़े हुए होते हैं कि जिनसे एक समान बन जाता है इसको पुरुष वृत्त कहते हैं । इसके गोल कंदके ऊपर और लम्बे कंदके समकोनपर इस वृत्तके उगनेका एक गोल चिन्ह बना रहता है और लंबेकी ओर छोटी रमहीन रज्जु लगी रहती है । इसका छिलका पतला, दीला, हल्का और बादामी रंगका होता है ; उसके भीतर सफेद रंगका कंद होता है ; उसका स्वाद कड़वा होता है और उसमें दक्की चरपरी-संध आती है ॥ २ ॥  
 फूलने फलनेका समय—वर्षा ऋतुमें इसके बहुत सुंदर बड़े-पेले और लाल अथवा पीलेलाल-पुष्प लगते हैं ॥—

प्रयोग—( १ ) यह सात उपविषोंमें गिनी जाती है ( २ ) गर्भवतीकी पीडा मरानेके लिये ; इसके कंदको पीसके उसकी नाभि और योनिके होठों



और बालों पर लेप करते हैं ( १३ ) जो आंवल नहीं निकलते- इसके कंदको पीसके हथेली और पागथलियों पर लेप करना चाहिये, या कलौंजी और पीपल की मंदिराके साथ पीसकर पिलाना चाहिये, अथवा इसकी बची बिनके योनिमें रखना चाहिये ( १४ ) इसकी मात्रा प्रारम्भमें आधरती (देनी) चाहिये पीछे बढ़ाकर एक (एक) मसिभरा दिनमें दो तीन बेर देसके हैं ( १५ ) इसको गुड़ करनेकी यह रीति है कि जब इसके पुष्प आर्जित तत्र पुरुषार्थकों कंदको जमीनमें से निकाल उसके पतले कपड़े बनाने कर उनको कुछ नमक डाले हुए मट्टमें रातभर भिगोरखें और दिनमें उनको निकालकर सुखा लें ऐसे ४-५ दिन तक करनेसे इनके विषका प्रभाव कम होजाता है, अंतमें इनको पूरा सुखाके धर रखें, कीले सापके फाटे हुए कौन्डनमें से ऐसे ४ रती तक अथवा आवश्यकतानुसार न्यून अधिक मात्रा देनेसे काले सापका विष उतरजाता है ( ६ ) इसके कंदको ठंडे पानीमें पीस कर खजूरे या विच्छुके दशपर लगाके तपानेसे उनका विष उतरजाता है ( ७ ) त्वचाके कुमिरोगपर इसका लेप करना चाहिये ( ८ ) इसके कंदको फूट पानीमें भिगो मलके छाननेसे जो मैदा निकलता है उसके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ९ ) इसकी २॥ से ६ रती तक की मात्रा दिनमें ३ बेर देनेसे पुरुषार्थ और पराक्रम बढ़ता है ( १० ) इसको सोंठके साथ फकी देनेसे भूख बढ़ती है ( ११ ) इसकी गुड़के साथ खिलानेसे आंतके कीड़े मरते हैं ( १२ ) इसका चूर्ण बुरकानेसे घावके कीड़े भरजाते हैं ( १३ ) इसके पत्तोंके चूर्णको व्याखके साथ देनेसे कामला रोग मिटता है ( १४ ) इसकी जड़ योनिमें रखनेसे योनिशूल मिटती है ( १५ ) बच्चा होनेके समय इसकी जड़के तन्तुओंको हाथ पैरोंमें बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाता है ( १६ ) इसके कंदको पानीमें पीसके सुंधानेसे सर्पका विष उतरता है ( १७ ) इसके कंद और निधुडीके रससे सिद्ध किये हुए तेलकी मस्ये देनेसे फैली हुई गंडमाला शीघ्रतासे मिटजाती है ( १८ ) इसके कंदको काजामे पीस गंधवती की केपरोपर लेप करनेसे बालक सुरत पैदा होजाता है

तनीकर्म ( ९ ) गीजा निरुपमा ( १२ ) विद्ये ( ९ ) - मधिप विद ( १० ) कसेरुः, गुराडकन्दः, सूकरेष्टः, गन्धकन्दकः ।

मराठी	हिंदी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कसेरु	कसेरु	कसेरु	कचरा फुरव्या	केसुर	कसेरु	कड्डिकोत्ति

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
तुंगगडु	सेकिनगडु			Scirpus kysoor	

स्थान—कसेरु हिन्दुस्थानमें तालाब और नदियोंके किनारे होतेहैं।  
 पहिचान—यह छोटे और बड़ेके भेदसे दो प्रकारका होताहै। छोटा कसेरु हल्का और आकारमें मोथे जसा होताहै उसको "चिचोड" कहतेहैं और बड़ेको "राजकसेरु" कहतेहैं वह जायफल जितना बड़ा होताहै इसके काल रंगका कुछ रूपदार पतला छिलका होताहै इसके रंग सफेद होताहै शीतकालमें जमीनमेंसे कसेरुके जड़ निकालजातेहैं जिनके ऊपरका काला छिलका अलग करके फेंकेही खातेहैं।  
 प्रयोग—(१) कसेरु मोठे, बड़े, शरीर को पुष्ट करनेवाले, कुछ कसेरु और पचनेमें भारीहै रक्त पित्त, दाह, नेत्ररोग, अतिसार और अरुचिको मिटानेवालाहै। वाय्य, वात, कफ और दुग्धका बढानेवालाहै (२) कसेरु खाने से त्रिप उतरताहै (३) कसेरु और मुलहठीके चूर्णकी पोदली बना आकाशसे भेले हुए पानीमें भिगो २ के आंखमें फेरनेसे रक्ताभिष्यन्द मिटताहै (४) कसेरुके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे ज्वर, ग्रन्थि रहतीहै (५) कसेरु खानेसे अतिसार मिटताहै—(६) औषधि के खाने पीनेसे जो मुखका स्वाद बिगड़े जाताहै वह इसके खानेसे मुंहका स्वाद सुधर जाताहै (७) कसेरुके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे सूखी खासी मिटतीहै।

संख्या—(१२०)

( सं० ) काकजघा, काकाहा, वायसी, सुरङ्गी।

मराठी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कागलहर	काकजघा	अघेटी, काग	धाउसकी	काकजघा	काकजघा	बलमतीप

और बालोंपर लेप करते हैं। ( ३ ) जो आंवल नहीं निकलतो इसके कंदको पीसके हथेली और पापथलियोंपर लेप करना चाहिये, या कलोजी और पीपलको मदिराफेरोसाथ पीसकर पिलाना चाहिये, अथवा इसकी बचीबनाके योनिमें रखना चाहिये ( ४ ) इसकी मात्रा प्रारम्भमें आधरती (देनी) चाहिये पीछे त्रिदाकर एक (एक) मासभरादिनमें दो तीनघेर देसके हैं ( ५ ) इसको शुद्ध करनेकी यह रीति है कि जब इसके पुष्प अर्जावि तत्र पुरुषाद्युक्तको कंदको जिमीनमें से निकाल उसके पतले कपड़े पर नार कर उनको कुछ नमक डाले हुए मट्टमें रातभर भिगोरखें और दिनमें उनको निकालकर सुखा लें ऐसे ४—५ दिनतक करनेसे इनके विषका प्रभाव कम होजाता है, अंतमें इनको पूरा सुखाके भितर रखें, काले सांपके काटे हुएको इनमेंसे ऐसे ४ रती तक अथवा आवश्यकतानुसार न्यूनतक मात्रा देनेसे काले सांपका विष उतरजाती है ( ६ ) इसके कंदको ठंडे पानीमें पीस कर खजूरे या बिच्छूके दशपर लगाके तपानेसे उनका विष उतरजाता है ( ७ ) दूबचाके कुमिरोगपर इसका लेप करनेना चाहिये ( ८ ) इसके कंदको फूट पानीमें भिगो मलके ब्याननेसे जो मैदा निकलती है उसके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ९ ) इसकी २॥ से ६ रती तक की मात्रा दिनेमें ३ बेशे देनेसे पुरुषार्थ और पराक्रम घटता है ( १० ) इसको सोंठके साथ फकी देनेसे भूख बढ़ती है ( ११ ) इसकी गुड़के साथ खिलानेसे आंताके कीड़े मरते हैं ( १२ ) इसका चूर्ण बुरकानेसे घावके कीड़े मरजाते हैं ( १३ ) इसके पत्तोंके चूर्णको छाछके साथ देनेसे कांमला रोग मिटता है ( १४ ) इसकी जड़ योनिमें रखनेसे योनिशूल मिटता है ( १५ ) बच्चा होनेके समय इसकी जड़के तन्तुओंको हाथ पैरोंमें बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाता है ( १६ ) इसको कंदको पानीमें पीसके सुंधानेसे सर्पका विष उतरता है ( १७ ) इसके कंद और निघुडीके रससे सिद्ध किये हुए तेलकी नस्य देनेसे फेलाहुई गंडमाला शीघ्रतासे मिटजाती है ( १८ ) इसके कंदको कांजाम पीस गंधवती की केपिरोपर लेप करनेसे बालक तुरंत मैदा होजाता है

किसीरुः, गुण्डकन्दः, सूकरेष्टः, गर्धकन्दकः

होते हैं। पुष्प सकेद और बहुत छोटे, २ होते हैं। इसके प्रके हुए फल काले रंगके होते हैं ॥

प्रयोग—(१) इसके फल-उल और-मूत्रवर्द्धक, शीतल और स्निग्ध है, रुमिरको शुद्ध करते हैं और हृदयके रोगोको मिटाते हैं (२) मकोयका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (३) इसके काथमें पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि मिटती है (४) इसके काथसे आँखोंको धोनेसे ज्योति बढ़ती है और फोडोंको धोनेसे फोडे मिटते हैं (५) बाबले, (पागल) कुत्तेके काटे हुएको इसका काथ पिलानेसे और उसीसे उसके घावको धोनेसे घाव भरजाता है और विष उतर जाता है (६) इसके पौधेका १५-१६ तोले स्वरस पिलानेसे बहुत दिनोंसे बढ़ा हुआ यकृत कम होजाता है—इसका स्वरस बनानेकी यह रीति है कि—इसका रस निकाल उसको मिट्टीके बस्तनमें इतना गर्म करे कि उसका रंग बदलकर हरेसे गुलाबी होजावे तब ठण्डाकर छानके प्रात काल पिलाना चाहिये (७) इसके अर्कको पिलानेसे अच्छा घिरेचन और मूत्रवृद्धि होती है (८) इसकी थोड़ी मात्रा देनेसे शरीरके बहुत दिनोंके लाल चट्टे मिटजाते हैं (९) इसका काथ पिलानेमें दबी हुई चेचक (शीतला) फिर बाहिर आजाती है (१०) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे टुक और मूत्राशयकी शोधकी पीड़ा मिटती है (११) इसकी जड़के काथमें थोड़ा गुड मिलाके पिलानेसे निद्रा आती है (१२) इसके पत्ते, फल और डालियोंका सार निकालके पिलानेसे जलोदर और हृदयके रोग मिटते हैं। इसका सारकी मात्रा २ से ८ मासेतक दिनमें एक या दोबेर देना चाहिये (१३) इसके अर्कका लेप करनेसे जलोदर मिटता है (१४) इसके पत्तोंको चबानेसे मुख और जिह्वाके छाले मिटते हैं (१५) इसके ताजे रसकी मात्रा ५ से २० तोलेतक है (१६) इसके रस में मिथी मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र का दुर्गन्धयुक्त स्राव मिटता है (१७) जलोदरवालेको इसके पत्तोंका शाक खिलाना चाहिये (१८) इसका सार रेचक और मूत्रवर्द्धक है (१९) इसके पत्तोंके काथमें शोरे और नोसादरके तिजावकी चार २ बूद डालके पिलानेसे बहुत दिनोंका बढ़ा हुआ यकृत ठीक होजाता है (२०) इसके काथमें हलदीका चूर्ण डालके पिलानेसे कामलारोग मिटता है (२१) सर्वांग जलमय शोथके उपर इसके फलोंका उष्ण लेप करना

चाहिये (२२) इसके पत्तोंके रसमें घी या तेल मिलाके दांतोंकी जगह पर मलनेसे दांत बिना कष्टके निकल आतेहै ( २३ ) इसकी जड़को सूतसे बांध मस्तकमें बांधनेसे नष्ट हुई निद्रा आने लगतीहै ( २४ ) इसकी जड़ कानमें बांधनेसे रात्रि ज्वर छूटताहै । ( २५ ) इसके रसमें सोंहागा मिलाके पिलानेसे वमन बन्द होतीहै ( २६ ) पित्तरोग वालेकी आंखोंको ढक कर उनके घीसे चुपड़ेहुए इसके फलकी धूनी देनेसे कीड़े बाहिर निकल आतेहै ( २७ ) इसके पत्ते और फोमल शाखाओंका शाक बनाया जाताहै, इसके पके फल खानेके काममें आतेहै उनसे कोई उपद्रव नहीं होताहै ।

संख्या ( १२२ )

( सं० ) काजूतकः, केश्यः, उपपुष्पिका, स्वाद्वाख्यः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
काजूगुळी	फाजू	काजू(जू)	काजू			मुचमाभिड़ि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मुदिरिकोट्टे	गेरपप्यु			Anacardium occidentale	The cashew Nut	

स्थान— इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके दक्षिण भागोंके जंगलोंमें बोये जातेहै ।

पहिचान— इसके वृक्षकी ऊंचाई ३० से ४० फुट तक होतीहै इसके पीला या कुछ ललाई लिये हुए गाँद लगताहै वह पानीमें पूरा नहीं गलताहै ।

इसकी गिरको ढवानेसे हलका पीला तेल निकलताहै वह शरीरका उत्तम पोषण करनेवाला और हरेक वातमें बादाम स्नेहकी बराबरहै । इसकी २॥ सेर गुलीमेंसे सेर तेल निकलताहै । इसके छिलकोंमेंसे भी एक प्रकारका तेल निकलताहै उसका रंग काला और स्वाद कड़वा होताहै । इसतेलके लगानेसे फफोला उठजाता है और काष्ठ आदिके चुपड़ देनेसे दीमक नहीं लगतीहै । १०० तोले छिलकोंमें से २६॥ तोले तेल निकलताहै ।

प्रयोग— ( १ ) आँटन, शरीरपरके मस्से और फोड़ोंको जलानेके लिये छिलकों का तेल लगातेहै । इस तेलके लगानेसे वह ठौर लाल पड़ जातीहै या वहा फफोला हो जाताहै ( २ ) इसकी गिरी खानेसे शीताद रोग भिटताहै

( ३ ) इसके फलका स्वरस, शोथयुक्त पीड़ा पर लगाया जाता है ( ४ ) इस तेलके लगानेसे कोढ़से पैदा हुआ त्वचाका शून्यपन मिट जाता है । ( ५ ) इसके छिलकोंको भिरकेमें भिगो उनका तेल निकाल विवाई पर लगाना चाहिये ( ६ ) उपदंशसे पैदाहुए फोड़े या लाल चट्टोंको मिटानेके लिये यह तेल लगाया जाता है । इसकी मींगीको सेकर खातेह और उसका मुरब्बा बनातेह ।

संख्या ( १२३ )

( सं० ) काञ्चनारः, कोविदारः, कुहालः, स्वल्पकसरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कचनार	सफेद कचनार	चपाकाटी	काचनी	काचन काचनार	कचनार कुलाड	देवकाचनमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
	कोचाले कचनार		कचनार कचनार	Bauhinia racemosa. fl. parvi flora.		

स्थान—सफेद कचनारके वृक्ष पंजाव, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान अथवा और बंगाल आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं । यह श्वेत, पीले और लाल पुष्पोंके भेदसे तीन प्रकारकी होतीहै ।

परिचान—इसका वृक्ष १५—२० फुट ऊंचा होताहै, इसकी शाखें झुकी हुई रहतीहैं । इसकी छाल एक इंच मोटी, खरदरी, भूरे या सफेद रंगकी होतीहै, मृगशिरमें या कुछ पीछे इसके पत्ते गिर जातेहैं । फागुनसे जेठ तक नवीन आजातेहैं ।

फूलने फलने का समय—फागुनसे जेठतक इसके पुष्प लगतेहैं और कातीसे फागुन तक इसकी फलियाँ पकतीहैं इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

प्रयोग—( १ ) दूषित पृथ्वी, जल, वायु और सड़ेहुए फलसे पैदाहुए ज्वरमें जो मस्तक पीड़ा होतीहै उसको मिटानेके लिये सफेद कचनारके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये ।

( सं० ) पीतकाञ्चनारः

Latin—Bauhinia tomentosa

स्थान—पीले कचनारके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं।

प्रयोग—( २ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं ( ३ ) इसकी मूखी फलियोंके चूर्णकी फकी देनेसे आमृतिसार मिटताहै ( ४ ) इसकी जड़की छालका काथ पीनेसे यकृतकी शोध उतर जातीहै ( ५ ) इसकी छालके काथ, फाट या डिपके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै ( ६ ) इसका फल मूत्रजनकहै ( ७ ) इसके बीजोंको सिरकेमें पीसकर लेप करनेसे घाव के कीड़े मरतेहैं ( ८ ) इसके मूखे पत्तोंके चूर्णकी फकी देकर ऊपर सोंफका थर्क पिलानेसे आमृतिसार मिटताहै ( ९ ) इसके छोटे पुष्पोंको थोड़ा खानकर पिलानेसे आमृतिसार मिटताहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकलता है।

संख्या ( १२४ )

( सं० ) रक्तकाञ्चनारः, युग्मपत्रः, महापुष्पः, गण्डारी ।

स्थान—लाल कचनारके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर लगाये जातेहैं।

पहिचान—यह एक साधारण ऊंचा वृक्ष होताहै इसकी पेदड़ छोटी और खड़ी होतीहै उसकी गोलाई ४-५ फुटकी होतीहै, इसकी छाल हल्की या गहरे भूरे रंगकी होतीहै । इसके पुष्प निकलनेके पहिले पुराने पत्ते गिरजातेहैं इसके उष्ण कालके प्राग्भमें या कहीं २ माघ फागुनमें सुगंधयुक्त 'दोइच' लम्बे बूडे और लाल श्वेत पुष्प लगतेहैं उनके दो मास पीछे बीज पकतेहैं । इसके भूरे रंगका गाँद लगताहै वह पानीमें फूल जाताहै परन्तु बहुत कम गलताहै । इसकी छाल रंगतके काममें आतीहै इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—( १ ) इसकी जड़का काथ पिलाने से मंदाग्नि मिटतीहै ( २ ) ३ मासे अजत्रायनके चूर्णकी फकी देकर ऊपर इसका काथ पिलानेसे अफारा उतरताहै ( ३ ) इसके पुष्पोंका गुलकंद या मूखे पुष्पोंको पीस शकरके साथ फकी लेनेसे साररूपन अर्थात् मल ढीला होजाताहै ( ४ ) फोडको जल्दी पकानेकेलिये इसकी जड़का चाबलाक धोवनके साथ पीस पुलिटस बनाकर बांधना चाहिये ( ५ ) ऐसेही इसकी छाल और पुष्पोंका उत्तरीतिसे पुलिटस बनाकर बांधनेसे 'फोडा जल्दी' पक जानाहै ( ६ ) इसकी छालका काथ पिला-

नेसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं ( १७ ) इसकी सूखी कलियोंके चूर्णको फुकीं देनेमें आमातिसार मिटताहै ( १८ ) इसकी कलियोंशीतल और ग्राहीहैं उनको शाक खिलानेसे अतिसार मिटताहै ( १९ ) इसकी कलियोंके काथसे आंतोंके कीड़े मरतेहैं ( २० ) मिथ्री और मक्खनमें इसकी कलियोंका चूर्ण पिलाके चाटनेसे रक्तांश मिटताहै ( २१ ) इसकी छालके या पुष्पोंके काथको उर्दाकर मधु मिलाके पीनेसे रुधिरविकार मिटताहै ( २२ ) गंडमाला मिटानेके लिये इसकी छालके काथ पिलाना चाहिये ( २३ ) इसकी छालके काथमें वावचीके तेलकी २० बूंद डालकर पीनेसे कोढ़ मिटताहै ( २४ ) इसकी छालके काथसे फोड़े फुन्सियोंको धोना चाहिये ( २५ ) इसकी लकड़ीके कोपलोंका मंजन करनेसे दंतपीडा मिटतीहै ( २६ ) इसकी छालके काथपर सोंठका चूर्ण घुरकाके पिलानेसे गंडमाला मिटतीहै ( २७ ) इसकी छालके रसमें नीरे का चूर्ण अथवा कपूर मिलाके पिलानेसे दाह मिटतीहै ( २८ ) इसकी छालके काथमें स्वर्णमात्तिका-भस्म-घुरकाके पिलानेसे अंतर्गत मसूरिका बाहिर निकल आतीहै ( २९ ) इसके पुष्पोंका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै ( २० ) चावलके धोत्रनके साथ कजनारकी छालको पीस सोंफ घुरकाके पिलानेसे गंडमाला मिटतीहै ( २१ ) इसकी छालको ओटाकर गंदूप करनेसे मसूडोंकी पीडा मिटतीहै ( २२ ) जामुनकी मौलसैरीकी और इसकी छालको पानीमें ओटाकर गुदाको धोनेसे रक्तांश मिटताहै ।

सख्या ( १२५ )  
( सं० ) कामरूपः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
			नादरुत	कामरूप		येरजुनी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	पिलाल मिंजल			1. loul-retuck. 2. dilata.		

स्थान—यह हिमालयके पूर्व भागमें कमाऊसे बंगालतक, आसाम, द-



क्षिण हिन्दुस्थान और दक्षिण प्रायद्वीप आदि देशों में होता है।  
 पहिचान—महत्तम बड़ा होता है; और इसके पत्त पत भड़में नहीं गिरते हैं  
 इसके छोटे, २ प्रकार के फल और २ लगते हैं वे एक जाने पर चैजनी रंगके हो  
 जाते हैं और उनपर छोटे कुब्ज पीले रंगके रहते हैं।  
 प्रयोग—(१) इसकी जड़की छालको या केवल जड़को या पत्तोंको तेलमें  
 ओढ़ाके लगानेसे घाव भरते हैं और चोटकी पीड़ा मिटती है, (२) इस तेलका  
 मर्दन करनेसे स्नायु पीड़ा मिटती है (३) इसके पत्तों और छालका पुष्टिस  
 वनाके बांधनेसे मस्तककी वातपीड़ा मिटती है (४) इसके और तुलसीके  
 पत्तोंका रस पुरावर ले उसमें आधा घी मिलाके पिलानेसे अफारा और शूल  
 मिटती है (५) गर्म ईदपर इसके रसको बिडकके अफारा देने और सेक करनेसे  
 अफारा और शूल मिटती है (६) इसकी छालका एक तोला रसांद्र में मि  
 लाके पिलानेसे यकृतके रोग मिटते हैं।  
 संख्या (१२६) पृ १८८ (६) विभाग कर्ना  
 ( सं० ) कारवेल्ल, कठिल्ल, उयकारण्ड, सुकारण्डकम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलकी
करेलो	करेला	करेला	कारली कारले	उच्छे करेला	करेलो	गोकाररी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पाहलू	हागला			Morboria Chaurantia M-humilis	Haby mordica, Squirling cucumber	

स्थान—करेला हिन्दुस्थानमें बोया जाता है।

पहिचान—करेले कई प्रकारके होते हैं उनमें दो मुख्य हैं एक उष्णका  
 लका और दूसरा वर्षा ऋतुका। इनके भी कई भेद हैं। इनके अलग २ देशों  
 में अलग २ नाम हैं। वर्षा ऋतुमें होनेवालेको करेली कहते हैं और ग्रीष्म  
 ऋतुमें होनेवालेको करेला कहते हैं।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे आतोंके कीड़े मरते हैं।

(२) इसके रसका लेप करनेसे द्वाद मिटतीहै (३) इसके फलका शाक बनाया जाताहै ( ४ ) इसके रसमें चाकूमिट्टी मिलाके लगानेसे मुँहके छाले मिटतेहैं ( ५ ) इसके रसका शिर पर लेप करनेमें पीपवाली फुन्सिया मिटतीहै ( ६ ) अग्निसे जलेहुए पर लेप करनेसे उसकी दाह मिटतीहै ( ७ ) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे बच्चेको विरेचन लगताहै ( ८ ) इसका पंचांग, ढालचीनी पीपल और चात्रलाको जंगली वादामके तेलमें मिलाकर लगानेसे खुजली आदि तंत्रचाके रोग मिटतेहैं ( ९ ) इसकी जड़ ग्राही और उष्णहै ( १० ) इसकी जड़को घिसके वादीके अर्शपर लेप करतेहैं ( ११ ) इसके पत्तोंके रसका लेप करने से परके तलवोंकी जलन मिटतीहै और आखके बाहिर चारों ओर लेप करनेसे रतौधा जाता रहताहै ( १२ ) जंगली करेलेके फलेसे ज्वर छूटता है ( १३ ) अन्धे पैदा हुए बच्चेके मुखमें इसके पत्तेका टुकड़ा रखनेसे उसकी छाती और अन्तडियोंका सर्ब मल और आम निकल जाताहै ( १४ ) पत्तोंको ओटाकर पिलानेसे मसूती स्त्रीका रुधिर शुद्ध होताहै और दूध बढ़ताहै ( १५ ) इसके पत्तोंके रसमें सौंठ, मिर्च और पीपलका चूर्ण बुरकीके पिलानेसे अतु-धर्म शुद्ध होने लगताहै ( १६ ) इसका फल कड़वा, मृदुसारक, शीतल और बल-वर्द्धकहै ( १७ ) इसके रसको लेप करनेसे फोड़ोंकी दाह और खुजली मिट-तीहै ( १८ ) इसके पत्तोंके रसको सिरकेके साथ पिलानेसे धमन होतीहै ( १९ ) इसके पत्तोंके रसमें बडी हरद घिस कर पिलानेसे कामला रोग मिटताहै ( २० ) इसके कच्चे फलके रसको गर्भ करके लेप करनेसे गठियाँ मिटतीहै ( २१ ) इसके फल के रसमें राई और नमक चुराके बडीहुई तिल्लीवालेको पिलाना चाहिये ( २२ ) अकृतृष्टिवाले को इसके रसमें तसतूवेकी जड़का चूर्ण ढाल के पिलाना चाहिये ( २३ ) इसके दो तोले रसमें थोडा मधु मिलाके पिलाने से विरेच लगके जलघेर मिटतीहै ( २४ ) इसके रस में तेल मिलाके पिलाने से विमूचिको मिटतीहै ( २५ ) शीतज्वरमें ठण्ड लगनेके पहिले इसके रसमें जीरेका चूर्ण मिलाके पिलाना चाहिये ( २६ ) सुखे करेलेको सिरकेमें पीस गर्भकर लेप करनेसे कठकी सूजन मिटतीहै ।

संख्या ( १२७ )

( सं० ) कपासी, बदरी, सारिणी, चव्या ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
कपास	कपास	कपास	कापशी (मी)	कपास	कपास	कपास
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	कुतून	कुतून	पबाह	herbaceum	Cotton plant.	

स्थान कपास हिन्दुस्थानमें सब ठौर होता है। इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकलता है यह सूख जाता है। कपास के बीजोंको हिंदीमें बिजौले, मरहठीमें सिरकी और मारवाड़ी में काकड़े कहते हैं। काकड़ेकी मींगी स्नायु जालको बलवान करती है (१) काकड़ोंकी मींगीकी खीर बनाके खिलानेसे मस्तिष्ककी ईर्निर्वलता मिटती है। (२) मस्तककी पीड़ा मिटानेके लिये काकड़ोंकी मींगी और पोस्तके बीजोंका हरि र करके खिलाना चाहिये। (३) अग्निसे जले हुए पर और छाते पर इसकी मींगीका लेप करनेसे दाह मिटती है। (४) तोले भर मींगीकी खीर बनाके खिलानेसे शरीरकी निर्वलता मिटती है। (५) इसकी मींगीका तेल लगानेसे गठियाकी पीड़ा मिटती है। (६) इसकी मींगीको जलके साथ पीस बान ज्वार लोके साथ खीर बनाके खिलानेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ता है। (७) पाव काकड़ोंको सवासेर पानीमें ओटाकर २॥ पाव पानी रखके छानलेवे, इसमेंसे १२॥ तोले काय रोगीको उंह लगनेके एक या दो घंटे पहिले पिलानेसे बारीसे अनेवाला ज्वर रुक जाता है। (८) इसकी मींगीकाे दूधिया जल बनाके आमातिसारवालेको पिलाते है। (९) इसके बीजोंको दवाके निकाला हुआ तेल लगानेसे त्वचाके पीले जड़े मिटते है। (१०) इसके पत्तोंको चाहके जमे ओटाके पिलानेसे अतिसार मिटता है। (११) दस्तकी बारबार शंका मिटानेके लिये इसके पत्तोंको ओटाके गुदाके बफारा देना चाहिये।

(१३) इसकी जड़को काथ पिलानेसे मूत्र उतरते समयमें दाह और पीडाका होना मिटती है (१४) इसके पुष्पोंका शर्बत घनाकर पिलानेसे विक्षिप्तपन मिटता है और चित्त प्रसन्न होता है (१५) इसके पुष्पोंका पुण्डिस बांधनेसे अग्निसे जले हुएकी दाह और चटका या कुलन मिट जाती है (१६) रूई और ऊनका या रूई और शैलमन्ना बनाहुआ कपड़ा शरीरको बहुत नैरोग्य रखता है (१७) जूत और चांदी (टांकी) पर रूईकी भस्म बुरकानेसे बहुत जल्दी औराम होता है (१८) जिसके हाथ या पैरकी शीथमें जलन हो जाय, या जिसकी हाथ या पैर शून्य होजाय उसपर सोंठ या आंबाहलदीकी चूर्णकी बुरकाके उसके ऊपर रूई बांधते है (१९) कौकडोंकी मींगी और सोंठको जलके साथ पीनेके लेप करनेसे अंडवृद्धि मिटती है (२०) खांसी मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसकी मींगीको आटाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटती है (२१) इनकी मींगीका हरीश बनाके खिलानेसे मलाढीला हो जाता है (२२) इनकी मींगीका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है (२३) इसके पत्तोंको रस पिलानेसे आम्रातिसार मिटता है (२४) पत्तोंको तेलसे चुपडके बांधनेसे छोटे जोड़ोंकी मृज्जन मिटती है (२५) इसके कोमलपत्ते और जड़के कोथमें नाभितक बैठाने से छीके गर्माशयकी शूल मिटती है (२६) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे कष्टसे आसिकधर्म होना मिट जाता है (२७) इसकी जड़की शं० तोले छाल को सबासेर पानीमें आटाकर रातपाव पानी रख लेवे फिर उसमेंसे ५० तोले की मात्रा हर २० या ३० मिनटमें देना चाहिये, या इसके गाढे किये हुए सारकी मात्रा ३० से ६० बूद तक देनेसे सर्दसि बन्ध हुआ मासिकधर्म फिर होने लग जाता है और कष्ट से मासिकधर्म होना मिट जाता है (२८) छाता के रोगोंको मिटानेके लिये इनकी मींगीका दुधिया रस पिलाना चाहिये (२९) घावके ऊपर पट्टी बांधनेके लिये रूईको कारबोलिक ऐसिड या सोहागेके तिजात्रमें भिगोके सुखा रखना चाहिये । इसकी पट्टी बांधनेसे ज्वर (घाव) का साव बन्ध होजाता है और उसको हवासे बचाती है (३०) घावका रुधिर बन्ध करनेके लियेभी उसी रूईका फोया बांधना चाहिये (३१) रूई या ऊनका बुना हुआ कपड़ा हवाके जीवोंको घावपर पहुंचनेसे रोकता है (३२) इनकी मींगीको पीसके कनपट्टियों पर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटती है

( ३३ ) इसके पत्ते दहीमें पीसके लेप करनेसे नेत्रपीड़ा मिटती है - ( ३४ ) विनौलीको आटाकर कुरले करनेसे दन्तपीड़ा मिटती है - ( ३५ ) १ तोले विनौले की मींगीको पानीमें पीसके पिलानेसे धतूरेका विष उतरता है - ( ३६ ) इसके पुष्पोंकी एक तोले भस्मकी फुकी देनेसे मासिक-धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का निकलना बन्ध होता है - ( ३७ ) इसकी जड़को चांबलोंके पानीके साथ पीसकर पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटता है - ( ३८ ) इसके और पाकड़के स्वरसमें मधु मिलाकर पिलानेसे अतिसार मिटता है - ( ३९ ) जंगली कपासकी जड़के चूर्ण को चांबलोंके आटेमें मिलाकर उसकी रोटी या पूरी बनाके खिलानेसे अपची रोग मिटता है - ( ४० ) जंगली कपासकी जड़को कांजीके साथ पीसकर पिलानेसे दूध बढ़ता है - ( ४१ ) इनकी मींगीको पीस गायके दूधमें आटाकर पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरते हैं - ( ४२ ) इसकी रविवारके दिन उखाड़ी हुई जड़को चवानेसे विच्छ्रका विष उतरता है - ( ४३ ) इसके बीजोंको पीस गर्मकर टिकिया बनाके तदपर बांधनेसे बदा विखर जाती है - ( ४४ ) ७ मासे विनौले रातको पानीमें भिगो-देवे और प्रातःकाल उठनेकी पीस छानकर थोडा सैधानमक मिलाके पीनेसे कामला मिटता है - ( ४५ ) इनकी मींगीको पीस टिकिया बनाके दिनमें दोबेर कुछ गर्म २ बांधनेसे वातपीड़ा मिटती है - ( ४६ ) इनकी मींगीको महीन पीसकर मधुके साथ अंजन करनेसे नष्टहुई निद्रा फिर आने लगजाती है - ( ४७ ) इसके पत्तोंको पीठे तेलमें आटाके लेप करनेसे वायुपीड़ा मिटती है ॥

संख्या ( १२८ )

शोणकापीसी ।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हीरबण	रक्तकपास	हीरवणी	रक्तकापशी	रक्तकापीस		यरीटिपत्ति
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
शुष्पुतिप्पु	केप्पुहत्ति			Gossy, lum arborum		

प्रयोग—( १ ) हीरवणकी फूलकी पेंसडीको गायके या स्त्रीके दूधमें पीसके लेप करनेसे बच्चोंकी आंखकी पीड़ा मिटती है ( २ ) इसकी जड़का कायपिलानेसे ज्वर छूटती है ( ३ ) इसके पत्तोंके रसमें बनजीरेको पीसके लेपकरनेसे ज्वरके पीछे होनेवाले फोड़े फुन्सी, मिटते हैं ( ४ ) इसके पत्तोंको दूधके साथ पीसके पिलानेसे पीड़ाके साथ थोड़ा २ मूत्र उतरना और मूत्र उतरते समय पीड़ाका होना मिटता है ।

संख्या ( १२९ )

( सं० ) कालिङ्ग, कालिन्द, कृष्णबीज, घृणाफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मतीरो	तरबूज	तडबूच	टरबूज	तरमुज	तरबूज	दरबूजि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तरपूशि	कलंगहि	बिच्चीखेहिन्दी	खरबुजाह- हिन्दी	Citrullus vulgaris Cucurbita Citrullus	The Water-melb-	

स्थान—तरबूज हिन्दुस्थानके रेतिले भागोंमें होता है यह अलग २ देशोंमें अलग २ समय में बोया जाता है ।

पहिचान—यह बहुत बड़ा होता है इसका छिलका हरा, किसीका कुछ कालास लिये हरा और चिकना होता है । इसकी गिरी कुछ सफेदी लियेहुए पीली या बहुधा लाल होती है । इसके बीजोंमेंसे स्वच्छ पीले रंगका तेल निकलता है वह खाने और जलानेके काममें आता है ।

प्रयोग—( १ ) इसके बीजोंको धींगी ठंडी होती है ( २ ) इसकी मींगीको मिश्रीके साथ घोट छानकर पीनेसे मूत्रका विरेचन लगता है ( ३ ) इसकी मींगीका पाक बन्नाके खानेसे शरीर पुष्ट होता है ( ४ ) इसको अर्क पिलानेसे तृप्ता मिटती है ( ५ ) यह जहरीली छूतको मिटाता है ( ६ ) पानीजरेमें इसका प्रयोग बहुत उपकारी है ( ७ ) इसकी गिरी खिलानेसे धूँके साथ रुधिरका आना बन्ध होजाता है परन्तु पसलीकी पीड़ावालेको नहीं खिलाना चाहिये

इसके सूखे फलोंको पकाकर दूधके साथ पीसके पिलानेसे शीत पित्त मिटताहै ( ६ ) इसके कोमल पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे अंगुलीके नखसम्बन्धी चत मिटतेहै ( १० ) इसके फलोंका काथ पिलानेसे पित्तज्वर छूटताहै । इसके फल पहाड़ी लोगोंके खानेके काममें आतेहै ।

संख्या ( १३२ )

( सं० ) कासमर्द, कासारिः, कर्कशः, अरिमर्दः ।

मराठाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कसोदी	फसोदी	कासुदरा	कासविदा	कालकासिन्दा	कासगर्द	कासिबंद
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पेयावार	चरुचरुक			Cassia occidentalis	The Negro coffee (or Round podded cassia)	

स्थान—कसोदीके वृक्ष हिमालयसे पश्चिम प्रायः द्वीपतक/बंगाल दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतेहै । इसके दो भेदेहै, एकका वर्णन यहहै और दूसरका दूसरी संख्यामें है ।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्त जड़ और बीज औपधिके काममें आतेहै यतानों विष नाशक, और विगड़े हुए द्रोषाको निकालनेवालाहै ( २ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे कुत्तोंघोसी मिटतीहै ( ३ ) इसका जड़का फाट या हिम पिलानेसे कई प्रकारके विष खतरतेहै ( ४ ) इसका पंचांग रेचकहै ( ५ ) इसके पत्तोंको मात्रा ६ मोसकीहै ( ६ ) इसकी जड़का हिम मूत्रवर्द्धकहै ( ७ ) इसके पत्तोंको हिम या काथ पिलानेसे प्राणि और त्वचा सम्बन्धी दूसरे रोग मिटतेहै ( ८ ) पांव और त्वचा सम्बन्धी दूसरे रोगोंको मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पीसकर लेप या मर्दन करना चाहिये ( ९ ) इसकी जड़का काथ जल धरके पूर्व रूपमें पिलाना चाहिये ( १० ) इसके पत्तोंको पीसकर ताजे घाब पर लेप करनेसे तुरत भर जाताहै ( ११ ) इसके पके बीजोंको पीसकर दाद पर लेप करतेहै ( १२ ) खुजली मिटानेके लिये इसके बीजोंको पीसके लेप

करना चाहिये ( १३ ) इसके बीजोंको सेक पीस उनका काथ बनानेके इफला या काफ़ीके साथ पिलानेसे कुनैन जैसा काम देताहै ( १४ ) इसके बीजोंको काथ पिलानेसे पसीना आताहै ( १५ ) इसकी जड़को काजीके साथ पीसकर लेप करनेसे दाद, कुष्ठ आदि त्वक् रोग मिटताहै ( १६ ) सिंहकी मूछको बाल खानेसे जो विष चढ जाताहै उसको उतारनेके लिये इसके पत्तोंको रस ३ दिन पिलाना चाहिये ( १७ ) इसकी जड़को नींबूके रसमें घिसकर लगानेसे दाद मिटताहै ( १८ ) इसकी जड़को मुखमें चबिके उन्टे कानमें फूंक देनेसे विच्छूका विष उतरताहै ( १९ ) इसके पत्ते और काली मिरचाको पीसकर लेप करनेसे कंठमाला मिटतीहै ( २० ) इसके फल खिलानेसे या इसके बीज पीसके लेप करनेसे विच्छूका विष उतरताहै ( २१ ) इसकी साढे तीन मासे जड़ और पाँचे द्रो मासे काली मिरचका चूर्ण खिलानेसे सर्प आदिका विष उतरताहै ( २२ ) इसके २ या ३ पत्ते और २ या ३ काली मिरचको पीसके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै ( २३ ) इसकी जड़को बालके चूर्णको शहदमें मिला गोखिया बनाकर प्रकृतिके अनुसार एकसे चार मासे तक देके ऊपर दूध पिलानेसे वीर्य पुष्ट होताहै ( २४ ) इसके बीजको पानीमें घिसके अंजन करनेसे सर्पका विष उतरताहै ( २५ ) इसके और मूलीके बीजोंको गंधकके साथ पीसकर लेप करनेसे श्वेतकुष्ठ मिटताहै ( २६ ) इसके पत्तोंका दूध बनाके पिलानेसे हिचकी रुकतीहै ( २७ ) पत्तोंका काथ पिलानेसे श्वास रोग मिटताहै ( २८ ) इसके पुष्पोंके ७ मासे रसमें कुछ मधु मिलाकर नेत्रमें टपकानेसे नेत्रपीडा मिटतीहै ( २९ ) इसके ताजे फलोंको सेककर खानेसे खासी मिटतीहै ।

( सं० ) कासमर्द भेद । *Cassia Sophora*  
 यह कसौदीका भेदहै और हिन्दुस्थानमें सबठौर पैदा होताहै ।  
 प्रयोग ( ३० ) इसके पत्ते, बाल और बीज रेचकहै ( ३१ ) इसके पत्तोंके रसमें चन्दन घिसके लगानेसे दाद मिटताहै ( ३२ ) इसकी जड़को घिसकर लेप करनेसे दाद मिटताहै ( ३३ ) दाद और पावको मिटानेके लिये इसके बीजोंको पीसके लेप करना चाहिये ( ३४ ) इसकी जड़को काली मिर-



चूके साथ पीसके पिलानेसे सर्पका विष-उतरताहै (३५) इसके बीज पत्ते और गंधकको पीसके लेप-करनेसे पात और दाद मिटताहै (३६) इसकी छालके काथमें मधु मिलाकर पिलानेसे मूत्रातिसार मिटताहै (३७) मूत्रातिसार-मिटानेके लिये इसके बीजोंको पीसके मूत्रके साथ चूटाने चाहिये (३८) इसके पत्तोंका रस लगानेसे दाद और त्वचाके रोग मिटतेहैं (३९) इसके पुष्प खानेके काममें आतेहैं (४०) मूत्रकृच्छ्रके मारम्भमें इसके पत्तोंको काशी-मिरचके साथ पीसके पिलाना चाहिये (४१) उपद्रवकी ५ टांकीमें एक घड़से पत्तोंका रस लगानेसे लाभ होताहै (४२) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (४३) कृष्ण तिलक (४४) कौशिकी का मूलक कृष्ण तिलक (४५) (सं० (४३३) का नाम कृष्ण तिलक (सं०) कासीस) धातु कासीस, वस्त्ररोगधृक्, महंसलोमशम्

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
कसीस	कासीस	हिराकरी	हिराकस	हिराकसू	कसीस	कासीसमु
द्राविडी	कनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अन्नभेदि	अन्नभेदि	नाजेअसफ	नाकजर्द	Iron sulphur	Vitriol green green Copper sulphate of iron	

स्थान—हिरा कसीस-हिन्दुस्थानमें बहुत ठार खानामेंसे निकलताहै ।  
 धातु कसीसके गुण और प्रयोग—(१) यह कसली, शीतल, खट्टी, उष्ण, वृष्य, खारी और कडवी होतीहै । विष और कृमिका नाश करतीहै, कान्ति बढ़ातीहै, नेत्र और केशोंको हितकारीहै, खुजली, चित्रकुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वात, कफ, घण, कुष्ठ और नय रोगको मिटातीहै (२) कसीस और कैथकी गिरको मधुके साथ चूटानेसे हिजकी बन्द होतीहै (३) अन्नवृद्धि-बालेके अन्न कोषोंको बलसे प्राप्तकर कसीस और सैधेनमकको परंडके तेलमें मिलाके पिलानेसे ज्वर छूटताहै (४) कसीस और सैधानमकस्त्रीके दूधमें पीसके अंजन करनेसे शिरोत्पात रोग मिटताहै (५) कसीस और सैधेनमकके चूर्णको मधुमें मिलाके अंजित करनेसे शिरार्ध

रोग मिटाता है (-५.) ताविरे-पात्रमे पुष्प कसीसके चूर्णके तुलामीके रसके १० दिनों तक भावना देकर अजवत करनसे पिल और बाफनीके रोग मिटते हैं (३६) पुष्प कसीस उष्ण, कपेली, खटी, केशरंजक और नेत्रों हितकारी है, केशोंकी खुजली, कुष्ठ, त्वरोग, पथरी, मूत्रकण्ड, वात, कृष्णवर्ण और श्वेत कुष्ठको मिटाती है। इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठ आदि अने प्रकारके त्वचाके रोग मिटते हैं।

( ३७ )

संख्या ( १३४ ) ( १ ) ( १ ) ( १ ) ( १ ) ( १ ) ( १ )  
 (सं०) कांस्थं, घोषं, कंसक, घोषपुष्पम् ( १ )

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कसीस	कसीस	कसीस	कसीस	कसीस	कसीस	कसीस
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बगल	कचु					Ball in tal White copper or brass

यह उपधातु है ताँबु और ताँगके योगसे बनाई जाती है।

गुण— यह कडवी, उष्ण, लेखन, विशद, सारक, भारी, खबी, कपेली, दीपन, पाचक, रुचिकारक, कफ पिच्छ नाशक, नेत्रोंको हितकारक और वात कफके विकारको हरनेवाली है।

संख्या ( १३५ )

(सं०) किंकिणी, व्याघ्रघंटी, गोविन्दी, कण्टकलता ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
गिटोरन	गिटोरन	वाघाटी	वाघाटीबेल			गडडोड, अडडोड
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कटलिकाय				Castoreum		

स्थान—गिटीरनकी बेल हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होती है।  
 पहिचान—इसकी बड़ी भारी बेल होती है, इसके मुठे हुए कांटे लगते हैं।  
 इसके सफेद बड़े पुष्प लगते हैं जो पीछे गुलाबी रंगके होजाते हैं इसके फलकी  
 मध्य रेखा इंच या डेढ़ इंचकी होती है। फल पकानेपर लाल रंगके  
 होजाते हैं। यह बेल बहुधा गांवके पासकी खारी जमीनमें या पहाड़ी जमीन  
 में होती है।

प्रयोग—( १ ) दाह और खुजली मिटानेके लिये इसके पत्तोंका लेप  
 करते हैं ( २ ) इसके पत्तोंकी लुपरी वा उनसे सृजन बिखर जाती है ( ३ ) अर्श  
 का फुलाव या सृजन मिटानेके लिये इसके पत्तोंकी लुपरी बाधते हैं ( ४ )  
 विसूचिकामें इसकी बालका चूर्ण सिरकेमें घोलके पिलाना चाहिये ( ५ ) इसके  
 पत्तोंका काथ पिलानेसे उपदंश मिटता है ( ६ ) इसके फल कड़वे और उष्ण  
 हैं। विसूचिका, वात, कफ और त्रिदोषनाशक है इनका आचार बनाते हैं।  
 यह कपेली, कड़वी, शीतल और पित्तनाशक है।

## संख्या ( १३६ )

(सं०) कुकुरदुः, कुकुन्दरः, ताम्रचूडः, सूक्ष्मपत्रः ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
ककलंदो	कुकुरौदा	कोकरुदा	कुकुरबन्ध कुकुरुन्दा	कुकुरशोका	कुकुरौदा	अडवीमुळगी
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
नारककरंडे		कोमाफिनस	करपसेरुमी	<i>Bumelia lacera</i>		

स्थान—कुकुरौदा—हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बहुधा नदी और तालाब  
 आदिके किनारे पर आर्द्र भूमिमें होता है।

पहिचान—इसको पत्ते छोटे और ताम्ररङ्गके पत्तोंके जैसे होते हैं।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्तोंके काथसे आर्शको बांटनेसे नेत्रपीडा मिट-  
 ती है ( २ ) इसके पत्तोंके स्वरसको पिलानेसे बच्चोंकी गुदाके कीड़े मरते हैं

(३३) इसके प्रचांगना-काथ पिलानेसे ज्वर छूटा है ( ४ ) इसकी-ताजी जड़को छेद में रखनेसे तृप्ता कम हो जाती है ( ५ ) कुकरादेको मिश्रीके साथ घोट-टाचनकर पिलानेसे आरकाश मिटता है ( ६ ) इसको काली-मिरचके साथ घोटकर पिलानेसे विस्त्रिका की तृप्ता मिटती है ( ७ ) इसकी गौली जड़को मुखमें रखनेसे मुखशोष मिटता है ( ८ ) इसका रस (या इसके पत्रे मलने या वांधनेसे अर्थ मिटता है ( ९ ) इसके पत्रोंको पीसके वांधनेसे फोड़े मिटते हैं ( १० ) इसके पत्रोंको घीसे लुपड़कर गाठपर धांधनेसे वह बिखर जाती है ( ११ ) यह चस्मरा कडवा और ज्वण होता है ( १२ ) ज्वर-स्थिर विकार, तृप्ता और आहको मिटाता है ( १३ ) अभिसे गंध किपेडप-कुरादेके अकर्म के आसे कालीमिरच मिला, बेर, सपान, गोखिया बनाकर दिनमें दो-बेर दो गोली देनेसे अर्थ मिटता है ॥

॥ योः जगदी

संख्या ( १३७ )

( सं० ) कुकुम, अग्निशेखर, पिशुन, घुसृणम् )

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	मंगाली	पंजाबी	तैलुगी
केसर	केसर	केसर	केशर	कुकुम-केशर	केसर	कुकुमपूवु
द्राचिडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कुकुमपू	कुकुमदह	जाफगान	लरकीगसि	Caryos latifol	Caros latifol	

स्थान—केसर कश्मीरमें बहुत पैदा होता है ॥

प्रयोग—( १ ) केसर उच्छेदक है ( २ ) दालचीनी और केसरकी गोली बनाके देनेसे पेटकी शूल मिटती है ( ३ ) पानमें रखके खिलानसे मति-स्मान मिटता है ( ४ ) इसको और पानको पीस गमे करके पिलानसे पचाकी सर्दीका असर मिटता है ( ५ ) इसकी अधिक मात्रा देनेसे अचत करनखाल धिमका काम देती है ( ६ ) ज्वण आपधियोंके साथ इसकी गोली बनाके देने से वाइटे मिटते हैं ( ७ ) केसर और अकलकरकी गोली बनाके देनेसे मासिक

धर्म शुद्ध होना लग जाता है ( ८ ) हृदयको बल देनेवाली आपवियामें इसको मिलाके देनेसे लाभ होता है ( ९ ) ब्राह्मीके काथपर केसर धुरकाके पिलानेसे चित्तका उद्वेगपन मिटता है ( १० ) यकृत वृद्धिवालीको करलेके रसमें केसर धुरकाके पिलानेसे लाभ होता है ( ११ ) इसको नीचूके रसके साथ देनेसे विस्त्रिचका मिटती है ( १२ ) केसरको छालीके दूधमें पका पीसके पीनेसे ऊर्ध्वगत रक्तपित्त मिटता है परन्तु उम रोगीको कुछ दिनोंतक छालीका दूध पिलाना चाहिये ( १३ ) केसरके कल्कको रातभर पानीमें भिगा उसमें मधु मिलाकर पिलानेसे मूत्रार्थात् मिटता है ( १४ ) पुराने घीमें केसरको पीसकर तीन दिनतक पिलानेसे शर्कराशमरी मिटती है ( १५ ) केसरको घीमें खरलकर नस्य लेनेसे आगशीशी आदि मस्तरूपीडा मिटती है । इसमें से पीलारंग निकाला जाता है ॥

॥ ... ॥

संख्या ( १३ = )

( सं० ) कुटजः, यवफलः, महागन्धः, शक्रपादपः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
कुडा खिरणो	कुडा, कुरैया	इन्दरजवनु काह	कुडा	कुडाचि	कुडाशब	कौडिशचूदूट
द्राविडी	कर्नाटकी	झरुनी	फारसी	लटिन	अंग्रेजी	
पाला वेतपाल	कोडाशिगे- यमरु	लिसानुल साफारुलमुर	जवानिकुज- रक्तलेक	Holarrhena antipressentia Brightia	Curchi or Conesl Dark	

स्थान—कडवे इन्द्रजौके वृक्ष हिन्दुस्थानके सुखे जगलोंमें बहुत होते हैं ।

पट्टिचान—यह वृक्ष २०—३० फुट ऊंचा होता है, इसकी पुदुड-बोटी, सीधी और गोलाकार ३-४ फुट होती है इसकी छाल चापे इत्र मोटी कुछ भुरी या कुछ काल रंगकी होती है, इसमें पुराने पत्त माघमें गिर जाते हैं और चैत वैसाखमें नयीन निकल आते हैं । इसके पुष्पोंमें सुगंध नहीं होती है, इसकी गोल फालिय १-१ ॥ फुट लम्बी होती है उनमें लव, धीज निकलते हैं उनको एक नोकपर एककी ऊंची लगी रहती है जो मुसके गालाकार होजाती है फुलोका डाली परसे तोड़नेसे दूध निकलता है ।

फूलने फलनेका समय—इसके चतसे जठरको सफेद पुष्प लगते हैं शीत-  
कालमें फल पकते हैं, और बहुधा फागुन, चतमें फलियां तडकी जाती हैं ॥ १० ॥  
प्रयोग—(१) इसकी खैली छालको पीसकर जल में बालिकों शरीर  
पर मर्दन करते हैं (२) फलीको पीस सर्पके दंश पर लगानेसे सूजन उत्तर  
ती है और दाह मिटती है (३) इसकी जड़की छालको सत ११ रती और  
अफीम पावरती देनेसे आमोतिसार मिटता है (४) केवल इसकी जड़की छाल  
आमोतिसार मिटाने है (५) जड़की छालको प्रारतीसे ३० रती तक चूर्ण  
दिनेमें ३ बर जवान मनुष्यको जलके साथ देना चाहिये (६) जड़की छालको  
२॥ से ५ तोला काथ अतिमार और आमोतिसारको मिटाता है (७) इसकी  
काथ दोनों प्रकारके अशोंको मिटाता है (८)—ज्वरातिसार मिटानेके लिये  
इसका काथ पिलाना चाहिये (९) अतिसार या आमोतिसारके प्रारम्भमें  
कुड़ाछालका प्रयोग नहीं करना चाहिये (१०) इसके काथमें पुरानी राडि-  
या मिटती है (११) अतिसार मिटानेके लिये इन्द्रजोका एक या दो रती  
चूर्ण देनेको चाहिये (१२) सब शरीरकी निर्बलता और दुबलापन  
मिटाने के लिये २-३ रतीकी मात्रा देनी चाहिये (१३) इन्द्रजोको पीस  
मधु मिला पुरानी रुईका फोया उसमें भर गर्भाशयके मुखपर लगानेसे गर्भा-  
शयकी पित्तशोथ मिटती है (१४) कुड़ाछाल ताजी लेना चाहिये छालके  
द्रव सत्वकी १० से २० बूंद देनेसे अतिसार रक्तातिसार या पुराना आमो-  
तिसार मिटता है (१५) इसके ५ तोले काथमें थोड़ा अफीम मिला कर दो २ या  
तीन २ घंटेके अंतरसे पिलानेसे तीव्र आमोतिसार मिटता है (१६) इसकी  
छालके काथका गठ्ठाकर उसमें अष्टाश या चतुर्थाश अतिसार चूर्ण मिला-  
कर घटानेसे त्रिदोषका अतिसार मिटता है (१७) इसकी छालको पीसकर  
गायके दूधके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ मिटता है (१८) इसकी छालके चूर्ण  
को देहीके साथ सेवन करनेसे शंकराशमरी मिटती है परन्तु इसके सेवनके समय  
में पथ्य भोजन करना चाहिये (१९) इन्द्रजोका मधुके साथ घटानेसे  
रक्ताश मिटता है (२०) इसकी छालका स्वरस पिलानेसे अतिसार मिटता है  
(२१) इसका काथ पिलानेसे आमोतिसार मिटता है (२२) ४ तले कुड़ा-  
छालको ३२ तोले जलमें ओटा चतुर्थाश पानी रखे छान उसमें उज्जना ही

अन्तारकात् रसमिलात् अग्निप्रकृताद्वाकरं जसपसे ६ गासेकी मात्रा कृष्णमैलिका  
 पिलानेसे रक्तातिसार मिद्वताहै ( २२३ ) इलालके काशम शीत और भी-पिलाकर  
 पिलानेसे रक्तातिसार मिद्वताहै ( २२४ ) ७ गासे इन्द्रजौको चारुपद्धतसे सके दूध  
 में भिगे-पीस गर्भकर इन्द्रोपर-लेपकर पट्टी बांध देवे फिर गर्भजल से थोड़ा ले  
 ऐसे कई दिवत क करनेसे इन्ही पृष्ठ होजातीहै ( २५ ) ८ गासे इन्द्रोपर गर्भ-  
 जलमें भिगे उस जलको वातुकर पिलानेसे प्रितका अतिसार मिद्वताहै ( २६ )  
 इन्द्रजौ चरपसे कहेके शंखिल, आही, पाचन और दीपनहै ( २७ ) ९ गातेतरक  
 काकाहृद्दपित्त कई प्रकारके तत्रु शब्द अथवा अतिसार जिद्वेप, रुक्क कम्पि  
 त्तिसर्प और रुि रक्विकारको मिद्वताहै ॥ गां ९ गांको पाक जात ५ सं ॥ ८

भागी कन्यामी भागीमन्त्र ॥ १ ॥ नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं  
 भस्मया कन्यामीमांसा ॥ संख्यो १३६ ) श्री १३ गांकी पाक जात  
 -६ ( सं ०३ ) कृष्णाकुटजः वंशकुटजः मल्लिका, नीलयष्टिका ॥ ८  
 १३ गांकी पाक जात ( ११ ) श्री १३ गांकी

रथान् — ग्रीवे इन्द्रजौके वृक्ष मध्य हिन्दुस्थान और राजपुताना आदि  
 कंडूहाई है । एतल्लिका लोहाई ( १३ ) १३ गांकी पाक जात ( १३ ) १३ गांकी  
 कडू दूधमें हातहै । सुवाडम वासाक जगलाम् अजमर और पुष्करके वाचम नाग-  
 भास्म ॥ १३ गांकी पाक जात ( १३ ) १३ गांकी पाक जात ( १३ ) १३ गांकी  
 पहाडम हातहै ।  
 परिष्कान् — इसका वृक्ष छोटा हातहै इसके पत्ते पतझडम खिर जाया  
 किर ( १३ ) १३ गांकी पाक जात ( १३ ) १३ गांकी पाक जात ( १३ ) १३ गांकी  
 कर्तहै इसकी छोटो हालिया पोलि या हल्के भूरे रंगकी हातीहै इसके पत्ते  
 ३—४ इंच लम्बे हातहै इसके सफेद पुष्पां गूच्छ लगतहै इसके १० सं १२  
 १३ गांकी पाक जात ( १३ ) १३ गांकी पाक जात ( १३ ) १३ गांकी  
 लंबी फलियांके भुसके लगतहै ।  
 फलने फलने का समय — फणन और चत्रम इसके पुष्प अत नवीन  
 पत्ते लागजातहै शीतकालम इसके फल परतहै ।  
 प्रयोग — १) इसके कोमल पत्ते और फलियांका धाक बनाया जातहै  
 इसका बीजांम, स रंग निकलताहै इसके २-३। मत्त पत्ताको ३ घटातक आटा  
 डालतेरखा, लानस, आध, सपानीवा निकलताहै । १३ गांकी पाक जात ( १३ )

संख्या (१४४) ॥ सं० (४४) कुन्दः, सदापुष्पः, भृङ्गवन्धुः, मनोरमः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कुन्द, कुन्द	कुन्द	कुन्द, कुन्द	कुन्द	कुन्द	कुन्द	कुन्द
द्राविडी	कन्नडकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कुन्द	कुन्द	कुन्द	कुन्द	Jasminum pubescens	अंग्रेजी	

स्थान—कुन्दके वृक्ष हिन्दुस्थानके सब बागोंमें लगाये जाते हैं ।  
 प्रयोग—(१) कुन्दके पत्तोंको पुन्टिस वृक्षके सुस्त फाड़ापर बांधते हैं ।  
 (२) इसको जड़को घिसके सफेद देशपत्र लेप करके अथवा आँसूके पिलानि  
 से विष उतरता है । (३) यह शीतल, मधुर, कषेला, पचनेमें हल्का, सारक,  
 पाचक, दीपन, हृद्य, चरपरा और कड़वा होता है । पित्तरोग, मस्तिष्करोग, विष,  
 शय, आम और रुधिरविकारकी मिटाता है ।

संख्या ( १४४ ) सं० ( ४४ ) कुन्दुरुः, सुकुन्दकः, विडालाजः, तीक्ष्णगंधः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कोदरुंग	सालरुंग गोद	सालरुंग गोद	सालरुंग गोद	कुन्दुरुखोटी	गुदवरोसा	कुन्दुरुकंग
द्राविडी	कन्नडकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कोदरुंग	कोदरुंग	कोदरुंग	कोदरुंग	Donnellia sericea	The true frank Indian incense	

स्थान—सालरुके वृक्ष बहुधा हिन्दुस्थानके उत्तर और रत्न देशोंमें होते  
 हैं अर्थात् सतलज नदीसे नेपाल तक मध्य हिन्दुस्थान और बरारसे राजपूताने तक  
 और दक्षिण सरकार और कोकन आदि देशोंमें होते हैं ॥  
 यह चान—इसमेंसे पारदर्शी सुनहरी पौले रंगकी अथवा गोदो गोद



निरुलता है, जो धीरे २ जम जाता है। इसका स्वाद कड़वा होता है। यह मुहमें नरम होजाता है। तपानेसे नरम होजाता है। इसको तीक्ष्ण अग्निमुत्तपानेसे इसके परिमाणु-अलग-२ होजाते हैं।

प्रयोग—(१) नारियलके तेलमें इसको गाँदका मरहम बनाके घावों पर लगाते हैं (२) इसको घीमें भिलाके उपदेशकी भाँकियों पर लगाते हैं (३)

श्वसकी दुर्गंध मिटानेके लिये इसको बंचलके गाँदके साथ मुखमें रखना चाहिये (४) इसकी ३॥ मासकी फकी कई दिनों तक लगातार लेते-रहनेसे मर्दरोग मिटता है अर्थात् मोटा मनुष्य दुबला हो जाता है (५) गाँदको खिखेरने या बटा

नेके लिये कादरू गाँद और सिद्धका पानीमें पीस कर पदपर लगाकर गाँद पर चप देते हैं (६) स्निग्ध या चपदार आपधिके चपमें इसके तुलकी १० से २० तक चूँट डाल कर पिलानसे मूत्रकच्छ मिटता है (७) नारियलके तेलमें इसका मरहम बनाके

लगानेसे पुराने फाँड़े मिटते हैं (८) कुंदरूको त्रिफलाके साथ आटाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है (९) बड़ी हरड़ेकी छाल और कुंदरू बराबर ले पीस छानके मधुमें गोली बनाके लेनेसे बद्धकोष्ठ मिटता है (१०) इसको तेलमें आटाकर मर्दन करनेसे गठिया मिटता है (११) कुंदरू गाँदको महीन पीसकर

अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढती है और नेत्रका घाव जमाहुआ रुधिर आस्र का, बहना, बाफनीका, गलना और नेत्रोंकी सफेदी मिटती है (१२) इसके गाँदके शहदमें भिलाके अंजन करनेसे धुंध मिटती है (१३) इसकी धूनी देनेसे नेत्रोंकी खुजली मिटती है (१४) इसको पीसके नस्य देनेसे नकसीर बन्ध

होता है (१५) कुंदरू गाँद पीसके दाँत और मसूड़ोंपर मलनेसे रुधिर बिकारकी दंतपीडा मिटती है (१६) कुंदरू गाँदको दीपकमें जला उसका काजल पाइ उस काजलके अंजनसे नेत्रोंसे पानीका बहना और पलकोंका फड़ना

बन्ध होजाता है (१७) ३॥ मासे कुंदरू गाँद सायंकालके समय पानीमें भिगो भातकाल छान थोडा घुरा भिलाकर पिलानेसे भूलरोग मिटता है।

संख्या (१४२)

(इस०) कुम्भिका, वारिपर्णी, कुमुदा, जलवलकलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कुम्भी	जलकुम्भी	कुम्भी	कुम्भी	पाना टोकापाना		अन्तरदांभर
द्राविडी	कन्नोटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
आकाश	आकाश					

स्थान—जलकुम्भी—बंगाल, कोरा मण्डल कोष्ट, मद्रास, दखिन, ब्रह्मा और सीलोन आदि कई देशों में होता है।  
 प्रयोग—(१) इसका हिम या काथ शीतल होता है और शरीरके चर्मवेगाहटको मिटाता है (२) मिसरकी साथ इसका काथ करके, २॥—२॥ ताले दिनमें दो बार पिलानेमें चिनग मिटाता है (३) इसका पुत्ताका पुलिटस बाधनेसे अशुकी पीडा कम होती है (४) इसके पुत्ताको चावलाके साथ आटा, खाने उसमें नारियलका दूध मिलाके पिलानेसे आमातिसार मिटाता है (५) इसका जड़के चरणको मिश्रण साथ फकी देके ऊपर गुलाब जल-पिलानेमें खांसी मिटाता है (६) इसका जड़के काथमें मधु मिलाके पिलानेसे आस-मिटाता है (७) इसका जड़ सारके ( ८ ) जलकुम्भीकी भस्मका लगू करनेसे मस्तरुके दाद मिटाते है (९) इसका भस्मका गोमूत्रमें पका खानके-पिलानेसे गुल-गंड मिटाता है इस प्रयोगके सेवन करनेवालेको कोदोंकी रोटी या दलिया छाब के साथ खिलाना चाहिये । पूनेके जिलेके गरीब लोग कालके दिनमें इसका शाक बनाके खाते हैं । यह जिस तालात्रमें होती है उसका प्राणी साफ रहता है ।

संख्या (१४३)

(सं०) कुराटकः, वाणः, सहचरः, मृदुकण्डः १७

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कटमेलो	कटमेरसा	काटाअशो	कोराटा	कुटीशाड	वास	जलमेरसा

द्राविडी	कनोदकी	थरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
करपुगुर्दाणि	केम्पुगोरयट			Darleria cristata U. Alcholuma.	

स्थान—कटसरैया वागोंमें बोया जाता है और कई पर्वतोंमें अपने आप उगता है।

पहिचान—यह काले धोले लाल और पीले रंगके पुष्पोंके भेदसे और प्रकारका होता है इन सबके शूल लगती हैं और इनके पत्तोंमें विशेष अन्तर नहीं है।

प्रयोग—(१) काला कटसरैया, कड़वा और चरपरा होता है। वात, कफ, शोधकण्डू, शूल कुष्ठ, व्रण और त्वन्दूपाको मिटाता है (२) इसके बीज सर्पके विषको उतारता है (३) इसके पत्तोंको पीस आगपर तपाके लेप करनेसे शोध उतरता है (४) इसकी जड़को हिम, फाट या काथ पिलानेसे कफ मिटता है (५) इसकी जड़को पीस तेलमें मिला गर्भ करके लेप करनेसे सूजन उतरती है (६) इसकी जड़को पीस गायक दूधके साथ पुरुष और स्त्रीको तीन दिन पिलाने खिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करती है (७) धोला कटसरैया—कड़वा, चरपरा माठा, उष्ण और सिग्ध होता है, दांत और बालोंके रोग, कुष्ठ, वात, रुधिर विकार, कफ, कड़ू और त्वन्दूपाको मिटाता है (८) लाल कटसरैया—कड़वा और उष्ण होता है शोध, ज्वर, वात रोग, कफ, रुधिरविकार, पित्त, आध्मान, शूल, फास, और श्वासको मिटाता है और शरीरको कान्ति बढ़ाता है।

संख्या (१४४)

(सं०) पीत कुरगटकः किकिरातः, कनकः, पीतपुष्पकः।

स्थान—पीला कटसरैया—तुम्बू, मद्रास, आसाम, सिलहट, सीलोन और राजपूताना आदि कई देशोंमें होता है कहीं २ इसको खेतोंकी वाड़पर लगाते हैं।

पहिचान—इसके एक प्रकारका पीला गोंद लगता है वह सूजनेपर काला पड़जाता है।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंका रस कुड़वा कड़वा होता है परन्तु स्वाद में बुरा नहीं होता है (२) बच्चोंके प्रतिश्याय में (कि जिसमें ज्वर हो और

कफ बहुत बढ़ गया हो ) इसके ११ तोले रसमें मधु या घृता और जल मिलाके दिनमें दो बर-पिलाना चाहिये ( ३ ) इसके पत्तोंका स्वरस वर्षा ऋतुमें पौरोकी पगधलीके लगानेसे वर्षातके जलसे पगधली नहीं फटती है ( ४ ) इसके पत्तोंका रस उपदंशकी टोकियोंपर लगाते हैं ( ५ ) कालीमिरच और इसके पत्तोंको पानीके साथ पीस घानकर पिलानेसे उपदंश मिटता है ( ६ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटजाता है ( ७ ) इसके पत्तोंके हिम, फाट या काथमें मधु मिलाके पिलानेसे रूक्त खानी मिटती है ( ८ ) इसके काथमें ईट बुझाके बफारा देनेसे पसीना होनेसे ज्वर उतरजाता है और छूटजाता है ( ९ ) इसके काथ पर सोंठ घुरकाके पिलानेसे बचाका अतिसार मिटता है ( १० ) यह उष्ण कडवा और कपेला है। मंदग्नि, वात, कफ, कण्डू, शोथ, रक्तविकार और त्वक्दापका मिटाता है।

संख्या ( १४५ )

( सं० ) कुराडिका, जत्रभूषा, जत्रनाशिनी

मौरवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
आयो	कुराडवृक्ष	आगियो	कलगी			अग्निउदपाकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
नरुपु				Amorpha fruticosa		Blistering Ammonia

स्थान—आगियो हिन्दुस्थानकी आदिभूमिमें सबठौर होता है मन्।  
 प्रयोग—११ इसमें नोसादर जैसी तीव्रगंध आती है परन्तु घुरी नहीं है ( २ ) इसके पत्ते बहुत चुरपरे होते हैं उनको मल टिकडी बनाके आध घंटेतक बांधके खोल देनेसे बूहा किसीके १२ घंटोंमें और किसीके २४ घंटोंमें बाला होजाता है और किसीके होता ही नहीं परन्तु इसके बांधनेसे दाह, कण्डू होती है ( ३ ) पीप, मडी हुई गाठको शीघ्रतासे पकानेके लिये इसके पत्तोंका पुन्डिस बाधना चाहिये ( ४ ) इसकी जबके स्वरसकी शोथपर लगातही

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
कूठ	कूठ	(ठ)	फोए	कुड	कुट्ट	चंगल्वकोष्टम
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन		अंग्रेजी
शंगल्वकोष्ट	चंगलकुष्ट	कुम्त	कुस्त	Sauvestrea Lappa. Aucklandia-Coastus.		The Costus. Costus root.

स्थान—कूठ कश्मीर, चनाव और भेलमक नलोंमें पैदा होती है भादवे और आसोज में इसकी जड़ जमीनमें से निकाली जाती है उसमें बहुत सुगंध होती है जब यह गड्ढामें बोध लादके खानाकी जाती है तब उस प्राणीकी हवाकी सुगंधित कर देती है ।

प्रयोग—(१) यह पुरुषार्थ और बल बढ़ाती है (२) त्रास और कफ के विगडनेसे जो रोग पैदा होते हैं उनमें इसका अयोग बहुत उपकारी है (३) इसके चूर्णको मधुमें भिलाके चूनेसे श्वास रोगमें बड़ा उपकार होता है (४) इसको पानामें घिसकर लप करनेसे गाँठें निखर जाती है (५) यह चरपरी और उत्तेजक है (६) कफ, श्वास, कास, ज्वर, मदाग्नि और त्वचाके रोगोंमें दी जाती है (७) इसके चूर्णको मरहम बनाके फोड़ा पर लगाते हैं (८) विमृचिकामे शिथिल रूप अर्थात् उत्तेजित करनेके लिये कूठका काथ करके पिलाते हैं और इसको तेलमें तलकर उस तेलका मर्दन करते हैं (९) इसके चूर्णको फोड़ों पर चूरकते हैं (१०) इसके चूर्णका मंजून करनेसे दातकी पीड़ा मिटती है (११) गादियाकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन करना चाहिये (१२) सावों के कीड़े मारनेके लिये इसका चूर्ण चूरकाना चाहिये (१३) इसके चूर्णको पान में रख चानू के पीके निगलनेसे खासी मिटती है (१४) मंदाग्नि मिटानेके लिये कूठ, सोंठ और सधनमककी फकी देना चाहिये (१५) वादी और कफकी ज्वरको मिटानेवाली औषधियोंमें कूठ भिलाई जाती है (१६) कूठ और रालका धूध (धुँधा) पिलानेसे हिचकी बन्ध होती है (१७) कूठ और एरण्डकी जड़को कानीके साथ पीसकर लप करनेसे वादीसे पैदा हुई मस्तकपीडा मिटती है (१८) इससे ज्वनायाहुआ तूल (वैतिरेकको) मिटाता है

(१५६६) इसका बफारा लेनेसे प्रतिश्याय मिटता है (२०) इसके चूर्णको दुग्धी शहतमें मिलाकर चटानेसे श्वास और सासी-भिदती है (२१) ५ तोले कूठको जी कूठकर खेर भर पानीमें ओटा आधसे रख कर दिनमें तीन चार बरमें पिला देनेसे कुत्तेका विष उतरता है

(सं०) कुष्ठवैरी, शैलरोही, महीरुह, वैवस्वतद्रुमः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
ना	कुष्ठवैरी			चालमुगग, चाउलेमुगग		
द्राचिडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Osmorhiza odorata</i>	<i>Lucrulan er</i>	

स्थान—चालमुगराके पेड़, सिकम और खासिया पहाड़से, चटगांव-और-रगून तक हातेह इसके १०० ताले बीजोंमें से २५ से ३०, ताले तक तेल निकलता है ।

प्रयोग—( १ ) इसके बीजोंका लेप करनेसे कोढ़ मिटता है ( २ ) त्वचाके दूसरे रोगोंमें भी इसका लेप करतेह ( ३ ) इसका तेल रुधिर शुद्ध करनेके लिये दिया जाता है ( ४ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे उत्तेजना पैदा होती है ( ५ ) कोढ़के, लिये इसके तेलका प्रयोग बहुत उत्तम है, जो कोढ़ थोड़ा बढ़ागया हो और बहुत दिनोंका न हो तो इसके प्रयोगसे बहुत शीघ्र और मर्शाके योग्य गुण होता है । जब बहुत बढ़गया हो और पुराना पड़गया होवे तब कई महीनों या वर्षों तक इसके तेलका सेवन करना चाहिये । यह मात्र प्रकारके कोढ़में गुण करता है । जन इस तेलको खानेके लिये काममें लायें तब शरीर पर भी इस तेलका मर्दन करना चाहिये, परन्तु केवल इस तेलका मर्दन करनेमें दूसरे उपद्रव होजातेह; इसलिये एक भाग इसके तेलमें दो या तीन भाग नीमका तेल मिलाके मर्दन करना चाहिये ( ६ ) यह

एक प्रकारके कुष्ठ जो खूँगी और गोडोंमें होता है उसमें और उपदंशके उपद्रवों में मर्दन किया जाता है ( ७ ) जब इसके तेलका सेवन कराया जावे तब उस रोगीको मच्छी, भूँघामच्छी, वेंगन, दूसरे हरेशाक, मट्टा, नींबूकी खटाई और तेज मदिरा आदि खानेको नहीं देना चाहिये । इस तेलको पानी या दूधमें डालके देना चाहिये । इसकी ५ से १५ वूँदें या अधिक धीरे २ बढ़ाता हुआ दिनमें ३-४ बेर देना चाहिये, जो इससे जी मचलाने लगे या बमन होवे या आँत ढीली होजावें तो इसको एक दो दिन छोड़कर फिर उसकी कुछ कम मात्रा देनेका प्रारम्भ करना चाहिये ( ८ ) इसको पीने और मर्दन करनेसे कोढ़, गंडमाला, त्वचाके रोग और पुरानी गठिया मिटती है ( ९ ) उपदंश और त्वचाके साधारण रोगोंको मिटानेके लिये इस तेलका तीन सप्ताह तक सेवन करना चाहिये । इस तेलमें घी मिलाकर-भी मर्दन करते हैं ( १० ) ज्वर रोगमें इस तेलका प्रयोग बहुत उपकारी है ( ११ ) इसके बीज की मींगीकी तीन तीन रत्ती प्रमाण गोलियां बना दिनमें तीन बेर लेवें, पीछे उनको धीरे २ बढ़ावें । जबतक कि खाली होवड न होने लगे ( १३ ) बिगड़े हुए जखम और बच्चोंके पेसे फोड़े कि जिनमें खरूंट आता जाय और खुजली चलती रहे, वे इसके सेवनसे मिट जाते हैं ।



सं० ( १५२ )

( सं० ) कुष्माण्डं, पुष्पफलं, पीतपुष्पं, बृहत्फलम् ।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पेठा	पेठा कुम्हड़ा	भूराकोळा	भूराकोहळा	कुमडा कुष्माड	पेठा कुम्हड़ा	गुम्माडि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
पुष्पि	कुवल, गुवल			<i>Bepinassa carifera.</i> <i>Cucurbita Lepo</i>		The white gourd melan

स्थान—पेठा हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाता है । इसके बीजोंमेंसे पतला फीका और पीले रंगका तेल निकलता है ।

प्रयोग—( १ ) पेटेका शर्वत पीनेसे रुधिर शुद्ध होताहै ( २ ) इसका स्वरस पिलानेसे रुधिरकी बन्ध बन्ध होतीहै ( ३ ) इसके स्वरसमें मिश्री डालके पिलानेसे अतर्दाह मिटतीहै ( ४ ) इसकी गिरी कनपाटियोंपर बाधनेसे नेत्रों की पित्त दाह मिटतीहै ( ५ ) इसके बीज आंतोंके कीड़े मारतेहै ( ६ ) इसकी मीर्गीका १। तोले तेल एकवेर या दो घंटे पीछे दूसरीवेर देकर उसके पीछे कोई सारक औषधि देनेसे आंतोंके कीड़े मरके या जीतेहुए निकलजातेहै ( ७ ) क्षयरोगके प्रारम्भमें इसके ताजे स्वरस के साथ मोतीकी सीपका चूर्ण चटातेहै ( ८ ) फुफुस सम्बन्धी क्षयरोग में यह एक बहुत उत्तम औषधिहै ( ९ ) फुफुसकी छोटी २ गांठें मिटानेके लिये इसका स्वरस बहुत उत्तम औषधिहै ( १० ) इसके मुरब्बेसे रक्तार्श मिटताहै ( ११ ) पित्तकी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसका मुरब्बा खिलाना चाहिये ( १२ ) उपदंशकी टांकियों पर इसकी गिरीका बफारा देना चाहिये ( १३ ) पेटेका स्वरस रेचक और रक्तशोधकहै ( १४ ) पारेके विकारको शांत करनेके लिये इसके स्वरस का सब शरीरपर मर्दन करना और पिलाना चाहिये ( १५ ) शरीरको कृश करनेवाले क्षय आदि रोगोंको मिटानेके लिये इसका मुरब्बा बहुत उपकारीहै, और शीघ्र पचताहै ( १६ ) शरीरकी अतर्दाह मिटानेके लिये इसका शर्वत या मिठाई या मुरब्बा खिलाना चाहिये ( १७ ) शरीर पुष्ट करनेके लिये इसका पाक, मिठाई या मुरब्बा बहुत उत्तम औषधिहै ( १८ ) इसके शर्वतके साथ शुद्ध शूरणके चूर्णकी फकी देनेसे रक्तार्श मिटताहै ( १९ ) पारेका उपद्रव मिटानेके लिये पेटेका पाक खिलाना चाहिये ( २० ) पेटा मृत्रवर्द्धकहै और भीतरके यंत्रोंमें से रुधिरके बहावको रोकताहै ( २१ ) इसके रसमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तका उन्माद मिटताहै ( २२ ) अयस्मार मिटानेवाली औषधियोंके साथ पेटेका घी बनाके खिलानेसे अयस्मार मिटताहै ( २३ ) पाक बनानेके लिये पुगना और पका पेटा लेना चाहिये ( २४ ) इसके ६ मासे पुष्प पीसके पिलानेसे विस्त्रुचिकामें लाभ होताहै ( २५ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी उष्ण जलके साथ देनेसे भयंकर श्वास और कास मिटताहै ( २६ ) पेटेके रसमें गुड मिलाके पिलानेसे कोद्रव (कोदों) का विष उतरताहै ( २७ ) इसके और काकड़ीके बीजोंको पीसकर नाभिके नीचे लेप करनेसे



रक्त प्रकारके कुष्ठ जो खूनी और गांठोंमें होताहै उसमें और उपदेशके उपद्रवों में मर्दन किया जाताहै ( ७ ) जब इसके तेलका सेवन कराया जावे तब उमर रोगीको मच्छी, भोजामच्छी, बेंगन, दूसरे हरेगाक, मद्दा, नींबूकी खटाई और तेज मदिरा आदि खानेको नहीं देना चाहिये । इस तेजको पानी या दूधमें डालके देना चाहिये । इसकी ५ से १५ वूँटें या अधिक धीरे २ बदावा हुआ दिनमें ३-४ बर देना चाहिये, जो इससे जी मचलाने लगे या बमन होवे या घातें ढीली होजावें तो इसको एक दो दिन छोड़कर फिर उसकी कुछ कम मात्रा देनेका प्रारम्भ करना चाहिये ( = ) इसके पीने और मर्दन करनेसे कोढ़, गंडमाला, त्वचाके रोग और पुरानी गठिया मिटतीहै ( ८ ) उपदेश और त्वचाके साधारण रोगोंको मिटानेके लिये इस तेलका तीन सप्ताह तक सेवन करना चाहिये । इस तेलमें घी मिलाकर भी मर्दन करतेहैं ( १० ) कय रोगमें इस तेलका प्रयोग बहुत उपकारीहै ( ११ ) इसके बीज की मीर्गीकी तीन तीन रत्ती प्रमाण गोलियां बना दिनमें तीन बर लेवें, पीछे दनको धीरे २ बदावें । जबतक कि खाली होवड़ न होने लगे ( १३ ) बिगड़े हुए जन्म और बच्चोंके ऐमे फोड़े कि जिनमें सखट आता जाय और खुजली चलती रहे, वे इसके सेवनमें भिद जातेहैं ।



सं० ( १५२ )

( सं० ) कुष्माण्डं, पुष्पफलं, पीतपुष्पं, बृहत्फलम् ।

मरावाड़ी	हिन्दी	गुजगती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पेठा	पेठा कुन्हड़ा	मुगांठोळां	मुगांठोळ्यं	कुमडा कुम्मांड	पेठा कुन्हड़ा	गुन्मडि
द्राविडी	कनाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
पुगडि	कुचल कुचल			Resinous seeds Custard Apple		The white fruit mass

स्थान—पेठा हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाताहै । इसके बीजोंमेंसे पतला फीका और पीले रंगका तेल निकलताहै ।

प्रयोग—( १ ) पेटेका शर्वत पीनेसे रुधिर शुद्ध होताहै ( २ ) इसका स्वरस पिलानेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै ( ३ ) इसके स्वरसमें मिश्री डालके पिलानेसे अतर्दाह मिटतीहै ( ४ ) इसकी गिरी कनपाटियोंपर बांधनेसे नेत्रों की पित्त दाह मिटतीहै ( ५ ) इसके बीज आंतोंके कीड़े मारतेहै ( ६ ) इसकी मागीका १। तोले तेल एकवेर या दो घंटे पीछे दूसरीवेर देकर उसके पीछे कोई सारक औपधि देनेसे आंतोंके कीड़े मरके या जीतेहुए निकलजातेहै ( ७ ) क्षयरोगके प्रारम्भमें इसके ताजे स्वरस के साथ मोतीकी सीपका चूर्ण चटातेहै ( ८ ) फुफ्फुस सम्बन्धी क्षयरोग में यह एक बहुत उत्तम औपधिहै ( ९ ) फुफ्फुसकी छोटी २ गांठें मिटानेके लिये इसका स्वरस बहुत उत्तम औपधिहै ( १० ) इसके मुरब्बेसे रक्तार्श मिटताहै ( ११ ) पित्तकी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसका मुरब्बा खिलाना चाहिये ( १२ ) उपदंशकी टाकियों पर इसकी गिरीका बफारा देना चाहिये ( १३ ) पेटेका स्वरस रेचक और रक्तशोधकहै ( १४ ) पारेके विकारको शांत करनेके लिये इसके स्वरस का सब शरीरपर मर्दन करना और पिलाना चाहिये ( १५ ) शरीरको कृश करनेवाले क्षय आदि रोगोंको मिटानेके लिये इसका मुरब्बा बहुत उपकारीहै, और शीघ्र पचताहै ( १६ ) शरीरकी अतर्दाह मिटानेके लिये इसका शर्वत या मिठाई या मुरब्बा खिलाना चाहिये ( १७ ) शरीर पुष्ट करनेके लिये इसका पाक, मिठाई या मुरब्बा बहुत उत्तम औपधिहै ( १८ ) इसके शर्वतके साथ शुद्ध शूरणके चूर्णकी फकी देनेसे रक्तार्श मिटताहै ( १९ ) पारेका उपद्रव मिटानेके लिये पेटेका पाक खिलाना चाहिये ( २० ) पेठा मूर्खवर्द्धकहै और भीतरके यंत्रोंमें से रुधिरके बहावको रोकताहै ( २१ ) इसके रसमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तका उन्माद मिटताहै ( २२ ) अपस्मार मिटानेवाली औपधियोंके साथ पेटेका घी उनके खिलानेसे अपस्मार मिटताहै ( २३ ) पाक बनानेके लिये पुंगना और पका पेठा लेना चाहिये ( २४ ) इसके ६ मासे पुष्प पीसके पिलानेसे विसृचिकामें लाभ होताहै ( २५ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी उष्ण जलके साथ देनेसे भयंकर श्वास और कास मिटता है ( २६ ) पेटेके रसमें गुड मिलाके पिलानेसे कोद्व (कोदों) का विप उतरताहै ( २७ ) इसके और काकड़ीके बीजोंको पीसकर नाभिके नीचे लेप करनेसे

जकी रुकावट मिटती है (२८) इसके चार तोले स्वरस में एक भासे जवा-  
 मार और एक तोले शकर, मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (२९) इसके  
 बरस में हींग और जोखार मिलाके पिलानेसे अस्ति और इन्द्राकी शूल  
 थरी और शर्करा मिटती है (३०) पेटके अठारह गुने रसमें घी और मूत्र-  
 टीका कन्क शाल घी सिद्ध करके पिलानेसे अपस्मार मिटता है (३१) इसके  
 बरसमें गुड और जोखार मिलाके पिलानेसे मूत्राघात और शर्कराश्मधी मिटती है।

संख्या (१५३)

(सं०) कुसुम्भं, बाहिशिखम, पावकं, त्रिस्त्रंजकम् । ३ )

अरवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
कसुंबो	कसुम्भ	कसुंबो	कडईचेफुल	कुसुमकुलो	कुसुम्भा	लुलुकु लेकनेगारसु
आविडी	बनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		मूशासफर	खशकदावे	Carthamus tinctorius	Carthamine dye The safflower Wild or Mustard saffron	

स्थान—कसुम्भ हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोया जाता है।

पहिचान—इसके पेट दो प्रकारके होते हैं। एक काटेवाले, उनके पुष्पोंमें  
 से जो रंग निकलता है वह हल्का होता है। दूसरे बिन काटेवाले उनके पुष्पों  
 मेंसे जो रंग निकलता है वह बहुत उत्तम होता है ॥

इसके ४० तोले बीजोंमेंसे ७ तोले तेल निकलता है।

प्रयोग—(१) कसुम्भके बीज रचक है (२) इसके बीजोंका तेल  
 गठियामें मदन किया जाता है (३) इस तेलके मर्दन करनेसे शरीरके हरेक  
 अंगका शय्यपत्र और निश्चेष्टपत्र मिटता है (४) इसके बीजोंके विरेचसे शरीर  
 मेंसे कफके और दूसरे विगडे हुए दोष निकल जाते हैं (५) इसके सुखे  
 हुए ४ भासे पुष्पोंकी फकी लेनेसे कामता रोग मिटता है (६) इसके बीजोंके  
 प्रयोगसे रजोधर्म शुद्ध होने लगता है (७) इसके बीजोंका लेप करनेसे गाढ़  
 विस्त्र जाती है (८) इससे कबीज, भृंग कला और तिल इन सबका हकडे

करके तेल निकालतेहैं। वह औपधिके काममें आताहै (१६) इसके बीजे सारकहै। इनकी अधिक मात्रा देनेसे एक दो हल्के दस्त आजातेहैं। (१०) इसके साठे सात मासे बीजोंको २॥ पाप पानीमें आटाकर पिलानेसे पत्नीा होताहै। (११) इसके बीजोंको पीस पुन्डिस बनाके वचा होनेके पीछे गर्भाशय पर बाधनेसे वहाकी पित्त शोथ और पीडा कम होजातीहै। (१२)

इसके बीजोंको पीसकर विगड़े हुए फोडों पर लेप करजा चाहिये (१३) कम्मूको आटाकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै (१४) इसका तेल फोड़े पुन्डिसों पर लगाया जाताहै (१५) दवा हुवा निकाला और चचक आदिको

पीडा बृद्धि निकालनेके लिये कम्मूको आटाके पिलाना चाहिये (१६) इसके बीजोंकी भागीका पानीमें चेष निकाल उसमें थोडा नूरा मिलाके गुनगुना कर पिलानेसे उदरपीडा मिटतीहै (१७) इसके तीन मासे पुण्याको पीस दहीको

साथ खानेसे अर्थ मिटताहै (१८) इसके बीज और बचलकी छालको नूरावर ल जलाके चमलाके तेलम मिलाकर बालोंको जड़म मूलनेसे बाल कम और लम्बे बढ़जातेहै। (१९) इसके बीजोंको सेककर खातेहै।

संख्या (१५४) नाम हिन्दी संज्ञा कि  
(संज्ञा) कृष्णकालिः कृष्णकालिः।

माराडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	मैजारी	तैल
गुलहवास	गुलअव्वास	गुलवस	गुलवस	गुलवस	गुलवस	गुलवस
द्राविडी	कर्नाटकी	द्वारती	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बद्रोक्षि	सर्जमल्लिग	गुलअव्वास	Mirabilis jalapa.	The four o'clock plant.		

स्थान—गुलहवास हिन्दुस्थानके बहुतेके भागोंमें बोया जाताहै।  
(१) प्रयोग—(१) इसका जड़ कुष्ठ रेचकहै (२) इसके पत्तोंको मल गर्म करके बाधनेसे गठे और फोड़े जल्दी पकतेहैं (३) इसके पत्तोंको तेलसे चुम्बक गर्म करके रोंनेसे मोटा जन्दी पक जाताहै (४) इसकी जड़को सुखा

स कपड़ छान कर दूसरी औषधियोंके साथ पाक बनाके पुष्टाईके लिये खाते  
( ५ ) इसकी जड़ का पानीमें घिस लेप करनेसे त्नोंटकी सूजन उतरती है ।

संख्या ( १५५ )

( सं० ) कृष्णबीजः ।

पारवांडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
मेरचाई	मिरचाई			कालदाना		कोल्लिवित्तुलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कान्निडा- वेरै	गन्नीबीज	हव्वुलनीळ	तुसुमनील	<i>'Pomacha hederae'</i> <i>Pharbitis nil.</i>		

स्थान—मिरचाई हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जाती है और अपने आपभी  
बहुत उगती है । यह दो प्रकारकी होती है ।

प्रयोग—( १ ) मिरचाईके सवा मासेसे पौने चार मासेतक बीजोंके चूरे  
की फकी देनेसे विरेच और मूत्र विरेच होते हैं ( २ ) मिरचाईके २॥ रती सत  
में आधी या एक रती रस कपूर मिलाके देनेसे या केवल २॥ रती सत ही के  
दनेसे अच्छा विरेचन होता है ( ३ ) भोजनके पहिले इसको २॥ रती सत देनेसे वमन  
नहीं होती है और ५ रती सत देनेसे वर्मन होती है ( ४ ) यकृतकी शिथिलतासे  
जो बद्ध कोष्ठ होजाता है उसको मिटानेके लिये मिरचाईका सत बहुत उपकारी  
है ( ५ ) पौनेचार मासे मिरचाईके बीज विरेचनके लिये जुलाफेका बराबर  
काम देते हैं । ( ६ ) अंतडियोंकी सूजन वालेको मिरचाई के बीजोंको विरेचन  
नहीं देना चाहिये ( ७ ) पौने चार मासे मिरचाई और ३॥ रती सौंठमें  
थोड़ी शकर मिलाके देनेसे अच्छा विरेचन होता है ( ८ ) कालादाना और  
इमलीका सत प्रत्येक १७॥ तोले और सौंठ २॥ तोले इन सबको कपड़ छान  
कर उसमेंसे साठे पांच मासे की मात्रा देनेसे अच्छा विरेचन लग जाता है ( ९ )  
इसके विरेचनसे कफ और पित्तके विकार निकलते हैं ( १० ) पेटके कीड़े मारने  
के लिये भी इसका विरेचन देते हैं ( ११ ) इसकी मात्रा देनेसे एक से ३ घंटे

तक विरेचनके ४-५ अच्छे वेग हो जाते हैं (१२) कोई रं इनको सेक पीस के फकी देते हैं।

संख्या (१५६)

(सं०) केतकी, तीक्ष्णपुष्पा, विफला, धूलिपुष्पिका।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
केवड़ो	केवड़ा	केवड़ो	केवड़ा	केयागाध	केउड़ा	मोगलि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अङ्ग्रेजी	
ताळ, ताळई	ताळ	-	फादी	Pandanus odoratissimus		

स्थान—केतकी के वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थानके किनारे पर, बंगाल, मद्रास अहाता और राजपूताना आदि कई देशोंमें बहुत बोये जाते हैं और अपने आप भी उगते हैं इससे तेल बनाया जात है।

प्रयोग—(१) केतकीके फूलोंका इत्र उत्तमकहै (२) केतकीके पुष्पों का तेल राईटे मिटाताहै (३) इसके तेलका मर्दन करनेसे शिरकी पीड़ा और गोंडिया मिटतीहै (४) इसकी जड़का तेलभी औषधिके काममें आताहै (५) इसके पुष्पोंके कोमल पत्र कच्चे या मसालेके साथ पकाके खाये जातेहैं (६) इसके पुष्पोंको मीठे तेलमें डाल कर ४० दिन तक धूपमें रखकर मर्दन करनेसे चायुकी पीड़ा मिटतीहै।

संख्या (१५७)

कोकन।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोकन	कोकम	कोकम	कोकम			
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अङ्ग्रेजी	
				Garcini indica. G. purpurea.	Cocum, Kokam butter Mango-stem oil Bridandia tallow	

अध्यात—कोकनके वृक्ष-कांकन और कानारेके बागोंमें बहुत बोये जाते हैं।

परिचान—इसके बँजनी रंगका छोटी नारंगी जितना बड़ा। फल लंगुता

जो चैत वैसाख में पकता है। इसके फलका रस रंगतके काममें आता है।

नेकन के तेल तैल-वीजाँ-मैसे ० तैले तेल-निकालती है, उसके निकालने की

तान रीतिया है (१) पहिले इसके बीजोंके छिलके अलग कर उनकी गिरीको

थरकी खरलमें खरलकर पीछे उसको लाहकी कड़ाई या मिट्टीके तगार में

पानीके साथ आग पर चढाके ओटावें फिर कुछ समय पीछे उसको दूसरे बर-

तनमें निकालके ठण्डा करनेसे तेल पानी पर तैर आता है वह ठण्डा होने पर

तुप जाता है तब उसको निकाल लेते हैं (२) पहिली रीतिक अनुसार बाजाकी भागी

की पीस, बड़े बरतनमें पानीमें घोल रातभर रख छोडे और प्रातःकाल पानी

पर जमे हुए तेलको निकाल लेवें पीछे उस वच्चे हुए को दहीकी भांति मथने से

जी मखन जसा पदार्थ ऊपर आजाता है उसको निकाल लेवें (३) जैसे

कोल्ह में आर बाजाकी तेल निकालते वधई कोल्हमें इसका तेल शीत

कालमें निकालना चाहिये। कोकनका तेल बहुत दिन तक रहनेसे सूड जाता

है। इसको सुधम रखनेसे मखनकी भांति पिघल जाता है और जिहापर

शीतलता प्रतीत होती है।

(४) प्रयोग—(१) कोकनका फल औषधिकी रीत पर भोजनके काममें

आता है (२) इसका फल कुछ शोषक है। इमलीकी अपेक्षा इसकी खटाई

अच्छी होती है (३) इसके फलके रसकी शक्ति बनाया जाता है उसका प्रयोग

से पित्तके विकार मिटते हैं (४) कोकनका तेल शरीरको पोषण करता है।

कठोरताको शिथिल करता है और पदार्थकी चरपराहट मिटाता है (५)

क्षय में फुफुसके रोग, गंडमाला, सम्बन्धी रोग, और आम्रातिसार मिटानेके लिये

काममें आता है (६) फुफुसके रोगमें सूडकाड मूडकी तेल जैसा काम देता है।

(७) बार २ दस्तकी शंका होने और पेटकी शूल-मिटानेके लिये इन रोगों-

को मिटाने वाली दूसरी औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करना चाहिये (८)

शरीरका पोषण करनेके लिये और बल बढ़ानेके लिये काहमच्छीके तेलके

बदलेमें इसकी १। तोलेसे २। तोलेतक मात्रा देनी चाहिये (९) अतिसार और

आम्रातिसार मिटानेके लिये यह ३।। से ७।। मासेतक देना चाहिये

(१०) चमड़ी-बिलजानेपर और शीतकालमें हाथ, पैर, होठ आदिके फटजानेपर इसका तेल-मलना चाहिये (११) मरहम बनानेके काममें इसका तेल बहुत आताहै (१२) कोरुनकी बाल ग्राहीहै। इसके कोमल पत्तोंको केलेके पत्तेमें लपेट, पुटपाक बना, उसमें से निकाल करे प्रथम पीसके-पिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१३) इसके फलके रसके शीत से ज्वरकी उपशान्ति मिटतीहै (१४) इस मूलके पिलानेसे शीतल, रोग मिटताहै (१५) इसके सुरा लोले तेलको थोड़े थोड़े हुए चोंचलोंमें पिलाके रिलानेसे आमातिसार मिटताहै (१६) इसकी मात्रा द्दितमें एक-दो देना चाहिये। इसका अंजनी रंगका फल खुराकके काममें आताहै ॥

गौरवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगी
तालमसाणा	तालमखाण	एखरो	तालिमखाना	कुनेसाडा	तालमखाना	गोलिमिडि
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अग्रजी	
नीरसुडी	कोळावलिके			<i>Myrsine aphana</i> <i>Eastern Anthea foliolata</i>	Long leafed Baruffe	

स्थान—तालमखानके वृक्ष हिन्दुस्थानमें हिमालयसे सीलोन तक सब ओर होतेहैं।  
 पचिचान—इसके लुप तलैया, नाडी आदि वर्पातके जलाशयोंमें उगतेहैं इनके काटे लगतेहैं और पत्ते लम्पे होतेहैं।

। (१७) इसके सब अंग आधिक-प्रयोगमें आतेहैं।—ये ठण्डे और सूखे रोग (१८) यकृत सम्बन्धी रोग, जलन्धर, गठिया और वीर्य ह्रास, मूत्रसम्बन्धी अणुके रोगोंमें इसका पंचाग, भस्म और शीत काममें आनेवाला प्रत्यय पैदा करतेहैं (१९) इसकी जलका-सवा-रस-का तोले कार्य दिनोंमें दो बेर पिलानेसे मूत्रवृद्धि-हाके जलन्धर मिटताहै (२०) इसके फल



परामिट मिटानेवाले और मूत्रवर्द्धक है, ये बलवर्द्धक होनेके कारण वीर्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंके रोगोंको मिटातेहै ( ५ ) इसकी जड़ ठण्डी कड़वी है और मूत्रवर्द्धक है ( ६ ) इसके पत्ते ठण्डे और मूत्रवर्द्धक है ( ७ ) इसके रतीसे ७॥ मासेतरु बीजोंका हिम या फाट बनाके पिलाना चाहिये ( ८ ) इसके २॥ तोले पंचांगको २॥ पाव जलमें ओटा ७ छटाक पानी रखके उसमें ५ तोले तक नित्य पिलाना चाहिये ( ९ ) इसकी जड़का प्रयोगभी पंचांगकी रीति पर करना चाहिये ( १० ) इसके पत्तोंको ओटते हुए पानीमें रात्रीके समय भिगोकर प्रातःकाल छानके जलन्धरवालेको पिलानेसे मूत्रका विरेचनगके जलन्धर मिट जाताहै ( ११ ) इसकी २॥ तोले ताजी जड़को २५ तोले जलमें बन्ध वरतनमें पाव घंटेतक ओटा छानके उसमेंसे २॥ से ५ तोले तक जलन्धरवालेको पिलाना चाहिये, जो आवश्यकता समझें तो मूत्रवर्द्धक औधियोंको इसके साथमें ओटाकर पिलाना विशेष गुणकारीहै ( १२ ) पथरी मिटानेके लिये इसकी जड़का ६-६। तोले काथ दिनमें दोबेर पिलाना चाहिये ।

— ० ० —  
संख्या ( १५६ )

( सं० ) कोद्रवः, कोरदूषः ।

पारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कोदू	कोदों	कोदरा	कोद्रव, हरक	कदोधान	कोदों	वरगलु
विडि	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	हाक			<i>Paspalum scrobiculatum</i>	<i>Kodra. Punctured pasalum</i>	

स्थान—हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें वर्षाऋतुमें इसकी खेती होतीहै । कोंदों कई भातिके होतेहै उनमें दो मुख्यहै एक सविप और दूसरा निर्विष १०० तोले कोदोंमें ७७। तोले मैदा और २ तोले तेल होताहै । कटी हुई कोदों खेतमें पड़ी रहनेके कारण जो वर्षाके पानीसे भीग जातीहै उसमें विष अधिक होजाताहै, जो नहीं भीगतीहै उसमें विष कम रहताहै ।

इस अन्नको बहुतसे आदमी-खुराकके लिये काममें लातेहैं परन्तु यह अन्न नैरोग्यतादायक नहींहै इसके खानेसे किसी २ फो सन्निपातज्वर होजाताहै और किसी २ को वमन होने लगतेहैं यदि इस अन्न का शोधन भली-भाँति नहीं किया जावे तो विष जैसा प्रभाव प्रगट करताहै ।

इसके साथ इसी जैसा एक घास पैदा होताहै जिसको मैजिना या मैजिनी कहतेहैं वह आसानीसे पहिचानमें नहीं आसकताहै उसी का यह जहरीला असरहै इसमें यह दोष नहींहै इसके दोनोंके सिवाय-हरेक-भागमें विषहै परन्तु भुस्भी और छिलकेमें अधिकहै इस अन्नको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि गोबरका पानी करके उसमें कोदोंको तीन चार घंटे तथा अधिक समय तक भिगोदेवेँ भिगोनेसे जो भारी और निर्विश अन्न होगा वह डूब जायगा और-लघु ( हल्का ) विपैल-अन्न तैरता रहेगा, इस प्रकार से निर्विम अन्नको निकाल कर सूर्यकी धूप ( घाम ) में सुखा लेंगे, इस अन्नकी जवतक निर्विष होजानेकी पूरी-निश्चय नहीं हो ततक उक्त क्रिया करते रहना चाहिये इस क्रियासे भी पूरा विष नहीं-निकलताहै परन्तु यह अन्न पुराना पढनेसे अपने आप विषरहित होजाताहै । इसको काममें लानेके लिये मिट्टीकी चक्री में दलतेहै पीछे इसको फटकर साफ करनेसे काममें लाने योग्य होजाताहै अन्न मट्टेके साथ खानेसे निर्विष होजाताहै कोदोंके विषसे ये लक्षण होतेहैं जैसे अचेतपन, मलाप, काम करनेवाले मात्र पट्टोंका वेगसे कापना, आसकी पुतलीका फैलना, नाड़ीका निर्मल होना, बहुत पसीना होनेसे शरीर ठंडा पड जाना, भोजनके निगलने में कठिनता होना-अर्थात् कंठ मिलजाना इत्यादि ।

प्रयोग—( १ ) कोदोंका विष उतारनेके लिये जड़के अटेका लपटा या केलेके पत्तेकी-डंडीका रस, या जामफलका खटारस या गुड़ मिला हुआ कोहलेका रस पिलाना चाहिये या हार सिंगारके पत्ते खिलाने और चुसाने चाहिये ।

संख्या ( १६० )

( सं० ) कौलकंदः कृमिघ्नः सुकृटः वक्षपञ्जलः ।

रिवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
कोलीकादा	कोलीकादा	कोलीकादा	कोलीकादा	गुयारवालु	पाणकदा	नुकावल्लिगड्डा

द्राविडी	कर्नाटकी	अस्वीम	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
----------	----------	--------	-------	-------	----------

रिवंगीय	अडवीइरुल्लि	इम्कोल	व्याजदस्ती	Onchium tichor Squilla Indica.	Indian squill
---------	-------------	--------	------------	-----------------------------------	---------------

कोली कादा हिन्दुस्थानमें बहुधा प्रतीली जमानमें और सिंधु किनारे सब टीरा होता है (१६) कोली कादा का प्रयोग (१७) हाथ पैरों का निश्चै और शून्यपन सूखी खासी, भेदाग्नि, मूत्रकी कमी, पेटमें मासिक धर्म, पेटमें अन्नाकी रुकावट, श्वास, जलधर, गाठिया, पथरी, मूत्र सम्बन्धी रोग, कोह और त्वचाके रोग इन सब रोगोंमें कोलीकादेकी उपयोग किया जाता है (१८) जितने बड़े कोलीकादेकी पत्रों का इतनी तक मात्रा देनेसे मूत्रवृद्धि होती है (१९) कोलीकादेको कूट घुल्लिस घनाके घाघनेसे गठिया और चोटकी सूजनकी पीडा मिटती है (२०) तीजे कोलीकादेके रसकी कपडेके पाण लगाते है (२१) यह बड़ा होजानेसे गुणहीन हो जाता है और जल, पृथ्वी और अतुके कारणसे इसके गुणभी न्यूनार्धिक होजाते है

संख्या (१६१)

(सं०) कोशातकी, धामार्गवः, धारोफला, दीर्घफला ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
तोळ	तेरई, तुरई	तुरिया	दोडकी	घोमालता	तेरि, तुरिया	वीरिभ

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
पीके	हीरे			Iuffa acutangula. Cuculus acutangula.	Acuteangled cucumber

स्थान—यह हिन्दुस्थानके समुक्त प्रदेश, सिक्किम, आसाम, बिहार, राजस्थान आदि बहुतेके भागोंमें बोई जाती है।

पौष्टिक—इसकी बेल होती है इसके पत्ते नीचे से खदेरे होते हैं इसके पुष्प हलके पीले रंगके होते हैं इसकी फल प्रायः एक हाथ लम्बा और उसके ऊपर तीखी तीखी धारे होती है यह चत्रसे अपाठ तर्क बोई जाती है।

फूलने फलने का समय—यह चामासमें फूलती फलती है।

प्रयोग—(१) इसके बीज कड़वी तोरुके बीजोंकी अपेक्षा चामक और रेचक कम होते हैं (२) इसके बीजोंको पीस गन्ध लेप करनेसे तिल्लीकी सूजन मिटती है (३) इसका लेप करनेसे रक्ताश और कटि मिटता है (४) इसके पत्तोंको स्वरस चर्चोंकी आखाम डालनेसे पपाटाकी फुंसियाँ मिटती हैं (५) रातके समय गोडाका अधिक आना बन्ध जाता है, जिससे आँख नहीं चिपती है (६) इसका शाक बहुत अच्छा होता है।

संख्या (१६२) में

(सं०) कटुकोशातकी

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	भरहरी	बंगाली	अंग्रेजी	शातलही
कड़वी तोरु	कड़वी तुरई	कड़वाँतुरीया	कड़ु दोडकी	तितपलला	कड़वी तोरी	चितवीरी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कण्ठपुरीका	कैहीरेपा	पारसी	लैटिन	(सं०)		

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें समुच्चैः मिलती है।

प्रयोग—(१) इसका फल तीव्र रेचक और चामक है (२) कड़ी कड़वी तोरुको सेक उसका रस निकालके कनपटीपर लगानेसे मस्तकपीडा मिटती है (३) इसके पके बीजोंके चूर्णकी फकी या काथ करके पित्रानेसे वृम्व और विरेचन होता है (४) इसकी बेल और पत्ते—कड़वे, मृदु और बलबद्धक होते हैं (५) इसके पत्तोंको पीस कर लगानेसे चौपाये के घाव भर जाते हैं।

६) कड़वी तोरुंकी गिरको पानीमें पीस-कर पिलानेसे वमन और विरेचन के कुत्तेका विष उतर जाता है ( ७ ) इसके सूखे फलके चूर्णको सुंघानेसे पलिया मिटता है ( ८ ) फलके स्वरसको लगानेसे कई प्रकारके विषैल जान-सूँका विष उतर-जाता है ( ९ ) इसकी और जमूंदकी जड़ सारिका का दूध और जीरेको शकरके साथ देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १० ) इसके बीज आ-तिसार में दिये जाते हैं ( ११ ) इसके पके और सूखे बीज वामकह ( १२ ) इसके बीजोंके १० रतीसे २ मासे तक चूर्णकी फकी देनेसे टीक विरेचन हो जाता है परंतु किसी ८ का एकभी दस्त नहीं लगता है और किसी २ को घंटों तक वमन हुआ करती है ( १३ ) एक सावित मझाली कड़वी तोरुंकी कटरात भर पानीमें भिगो प्रातःकाल मल ध्यानकर पिलाने से विरच होता है परंतु किसीको नहीं भी होता है और पेटमें केवल मराठी ही होती है ( १४ ) इसके बीजोंके छेलके या सबमें केवल बीजकी गिरा अधिक वामकह ( १५ ) बीजोंकी गिर को मीठे तेलमें घिसकर अंजन करने से आंखका फूला दूर होता है ( १५ ) इस के बीजोंकी १। मासेसे २ मासे तक मींगीकी मात्रा देनेसे वमन होती है और ५ से आठ रती तक देनेसे खाली होबूढ होती है २। से ५ रती तक देनेसे सूखी खांसी मिटती है ( १६ ) इसके स्वरस में पीपल मिलाकर नस्य देनेसे गलगंड आदि रोग मिटते हैं ( १७ ) इसका और हल्दीका लेप करनेसे अर्श मिटते हैं ( १८ ) इसके चूर्णको गुदापर मलनेसे अर्श खिर जाते हैं ( १९ ) इसके काथमें मधु और घी मिलाकर पिलानेसे वमन होके विष उतरता है ।

मं. ३६३

संख्या ( १६३ )

( सं० ) हस्तिकोपातकी, महाकोपातकी, महाफला, ऐभी

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
घयातोरुं	घीयातोरुं	गलका	मोटीघासाली	धुनुकुं	घीयातोरुं	मागीधिरा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पेयमिरडी	कहिरापहार			<i>Ruffa acryliaca</i> <i>et</i> <i>Pentandra</i>		

स्थान—घीयां तोरुं हिन्दुस्थानमें हर ठौर बोई जातीहै।  
इसके बीजांमेंसे तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) इसके बीज बामक और रचकह (२) यह स्निग्ध, सारक और पीठीहै, बादी बढ़ातीहै और घावको भरतीहै (३) इसका अधिक सेवन करनेसे अफारा और कड़े पदा होजातेहै, यह इसके फलीका शाक बनतीहै।

संख्या ( १६४ )

( सं० ) चीरिणी, राजादनः, फलाध्यक्षः, प्रियदर्शनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
खिरणी	खिरनी	रायणी	खिरणी	खिरनी	खिरणी	मालमाजु-
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पालमरम्	हालेभर			Minusop hexandro M' Louisa	( ३ )	

खिरनी दो प्रकारकी होतीहै एकको विवरण यहां लिखाहै दूसरीको अगि लिखेंगे।

स्थान—खिरनीके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थानमें पंचमारीके पहाडातक, गो-दावरीके उत्तरमें और हिन्दुस्थानके पश्चिमोत्तर भाग और राजपूताना आदि देशोंमें बोये जातेहै।

पहचान—इसका वृक्ष ५०—६० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदड़ सी-धी होतीहै, छाल कुछ भूरी या कुछ काले रंगकी और खदरी होतीहै, इसके फूलती हुई बहुतसी शाखें लगतीहै, गोल, नोकदार और साफ पत्त लगतेहै वे पत्तभड़में नहीं गिरतेहै। इसके कुछ सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगतेहै। इसका फल हुआ फल पीले रंगका होताहै, उसमें एक बीज निकलताहै उसका आ-कार नीमकी निबोली जैसा होताहै, परन्तु उससे कुछ लम्बा और मोटा होताहै

फूलने फलनेका समय—कार्तिकसे पौष तक इसके पुष्प लगतेहै, जेठ अषाढ तक फल पकतेहै इसके एक प्रकारका गाँद लगताहै इसके बीजांमें

से तेल निकाला जाता है उसको थोके बाजे लोग धीके बढलेमें बेच देतेहैं।

प्रयोग—(१) इसकी छालमें मोरसलीकी छाल जैसे गुणहै। इसके दूधिया रसमें किरमालेके पत्ते और घुआगके बीजोंको पीसके फोड़ों पर लगातेहैं (२) इस वृक्ष के ऊपर जो वटाक का वृक्ष उग जाताहै उसको पत्तोंको गभेकर अके निकाल उसमें पीपल डालके पिलानसे वाइट मिटतेहैं इसके फल फलाहार और खानक काममें आतेहैं, आर गरीब लोग गर्मीके दिनोंमें बहुत खाया करतेहैं।

Latin *Mimusops Kauri M. Balota*

1 : 11-21-11 Pg. The Obstice le ved, mimusops . ( 0 )

### दूसरीका विवरण यह है—

स्थान—खिरनीके वृक्ष होशियारपुर, लाहौर, मुलतान गूरवाबाला आदि बहुतसी ठौर होतेहैं।

प्रयोग—(३) इसके बीजोंको पीसके दुखी हुई आंखपर लेप करतेहैं (४) इसके फल खानेसे बल बढताहै (५) ज्वर छुड़ानेके लिये खिरनी खिलाना चाहिये (६) खिरनी उष्ण और स्निग्धहै (७) कुष्ठ, तृप्ता और प्रलाप रोग में इसका प्रयोग किया जाताहै (८) तिली आदि मंत्रोंके बहावके विगाडको सुधारनेके लिये खिरनीका सवन करना चाहिये (९) यह कृमिनाशकहै (१०) इसकी जड़ और छाल ग्राहीहै (११) बच्चोंको अतिसार मिटानेके लिये छालको पानीमें पीस मधु मिलाके पिलाना चाहिये (१२) इसके पत्तोंको तिलीके तेलमें थोटा उसमें इसकी छालको पीसकर भर्दन करनेसे ग्राह्ये पैरीका दूरकीपन मिटताहै जो एक प्रकारके जलवरसे हाताहै (१३) आंख और कोनक पित्त शोथ को मिटानेके लिये इसका दूधिया रस लगाना चाहिये (१४) इसके पत्ते आनाहलदी और सौटका पुलटिस स्वाधनसे गाठ निखरजातेहैं (१५) इसकी जड़को पानीमें पीस मधु मिलाके पिलानसे बच्चोंको अतिसार मिटताहै (१६) इसका खट्टा फल खानेसे भूख बढताहै।

संख्या (१६५)

(सं०) खडी, खट्टिका, खट्टी, श्वेतभालु

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खड्डी	खड़िया	खडी	खड्	खडिमाटी	खड़ामिट्टी	बलपसु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
गुळकल	घळ्ळु			Greta.		Chalk

गुग्गु—खड्डी—मीठी, कडवी, शीतल और लेखनहै. ब्रणदोष, पित्त, दाह, कफ, रक्तविकार, नेत्र रोग, विष और शोष को मिटातीहै ।

संख्या ( १६६ )

(सं०) खदिर, गायत्री, दंतधावनः, यज्ञिकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खैर	खैर	खैर	खैर	खदिर	खैर	चंडू
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
काशुकट्टि	कगलिमर		कथा	Acacia catechu Mimosa catechuoides		Catechu Catech. Nigrum

स्थान—खैरके वृक्ष मध्य और पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान गोंड अथवा, अपर गोदावरी, छुटिया नागपुर, बम्बई अहाता, अहमदाबाद, भडोच, पांच महल, मूरत, उरोदा, मद्रास अहाता, मैसोर और राजपूतानेके जगलोंमें होतेहै ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३०—४० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेटड छोटी और बहुत सीधी नहीं होतीहै उसकी गुलाई ४ से ६ फुट और ऊंचाई १० फुट तक होतीहै । इसकी डालिया बहुत मिलवा और काटेदार होतीहैं । इसकी छाल प्रायः पौन इंच मोटी और कुछ सफेद भूरे रंगकी होतीहै पुराने वृक्षकी छाल प्रायः काली होजातीहै । इसकी छोटी डालिया बैजनी रंगकी



और साफ होती है,। इगकी फलियां ( पातडिया ) दो तीन इंच लम्बी, आध  
 व्या पौन इंच चौड़ी, पतली, भूरी और चमकदार होती है, जिनमें ३ से १०  
 तक बीज निकलते हैं। माघ फागुनमें इसके पुराने पत्ते गिर जाते हैं और फा-  
 गुन चैतमें नवीन पत्ते निकल आते हैं।

फूलने फलने का समय—वैशाखसे अषाढ तक इसके पुष्प लगते हैं  
 वसंत ऋतुमें फलियां लगती हैं, वे बहुत समय तक टूट परही लगी रहती हैं।  
 इसके एक प्रकारका कुछ पीला गोंद लगता है वह स्वादमें मीठा पानीमें गलने-  
 वाला और बहुत चपदार होता है। इसको बंगूलके गोंदमें बेच देते हैं। इसके गुण  
 भी उससे मिलने हुए ही हैं।

प्रयोग—( १ ) इसका सत बड़ा ग्राही है। ( २ ) गुदाकी त्रिजली ढीली  
 पड़ जानेसे जो दस्तकी रुकावट न रहे, तथा उसके साथ थोड़ा ज्वरभी होवेतो  
 इसके ३॥॥ मासे सतको मधुके साथ चटाना चाहिये ( ३ ) इसका डेढ मासे  
 सत चटानेसे आमातिसार मिटता है ( ४ ) इसको चूसनेसे ममूडोंके दुःसाध्य  
 रोग मिटते हैं ( ५ ) चिरायतेके अर्कके साथ इसकी फकी लेनेसे वारीसे आने-  
 वाला ज्वर छूट जाता है ( ६ ) इसको मुहमें रखनेसे लटका हुआ काग सिमट  
 जाता है या पीछा ऊपरको उठ जाता है और इसके लटकजानेसे जो खाती  
 का ठसका हो जाता है वह भी बन्द होजाता है ( ७ ) इसको तेलमें चुपड के मुग्गमें  
 रखनेसे बोलीका भारीपन मिटता है ( ८ ) इसको पचगुने पानीमें ओटा  
 आठवा भाग वाकी रख कर उसमें जायफल, कपूर और सुपारीको पीस  
 गोली बनाके मुखमें रखनेसे मुखपाक आदि समस्त रोग मिटते हैं ( ९ )  
 इसको पानीमें गलाके पिचकारी देनेसे श्वेत और रक्तप्रदर मिटते हैं ( १० )  
 इसकी पिचकारी देनेसे नया और पुराना मूत्रकृच्छ मिटता है ( ११ ) बालक  
 पैदा होनेके पीछे प्रमाणसे अधिक रुधिर बहनेको रोकनेके लिये इसकी पिच-  
 कारी देनी चाहिये ( १२ ) इसके काथसे फोडोंको धोते हैं ( १३ ) इसके काथका  
 लेप करनेसे शोथ मिटती है ( १४ ) इसका लेप बनाके, खुजली, अपदंश और  
 अग्निदग्ध पर लगाते हैं ( १५ ) पुराने और जिसमेंसे पूय बहती हो उस फोडे  
 पर मोमके साथ इसका लेप बनाके लगाना चाहिये ( १७ ) वेर वेर भरने-  
 वाले फोडे पर इसके लेपमें मोरथूथा मिलाके लगाना चाहिये ( १८ )

मोम और अफीमके साथ इसका प्रलेप बनाके लगाने से कांचका निकलना बन्ध हो जाताहै, ( १६ ) इस लेपके लगानेसे लटकते हुए मस्से सिमट जातेहैं ( २० ) घाव पर इसका चूर्ण बुरकानेसे रुधिरका बहना बन्ध हो जाताहै ( २१ ) उपदंशकी टांकी पर इसका चूर्ण बुरकातेहैं ( २२ ) स्तनकी वीटलीके घाव पर इसके-चूर्णका बुरकाना लाभकारीहै ( २३ ) जो मनुष्य मानसिक रोगसे नित्य उदास रहता हो, उसका चित्त प्रसन्न करनेके लिये इसको जण और सुगंधित चरपरे पदार्थोंके साथ देना चाहिये ( २४ ) आंखके श्वेत भागमें जो पित्त शोध हो जावे तो उसको मिटानेके लिये पानीमें पीसके ठण्डा लेप करना चाहिये ( २५ ) नीलायूथा और अंडकी जरदीके साथ इसका प्रलेप बनाकर लगानेसे फैलनेवाला घाव मिटजाताहै ( २६ ) स्त्रियोंके बालक होनेके पीछे उनके दूध और बल बढ़ानेके लिये खैरसार और बोल मिलाके देतेहैं ( २७ ) इसकी अधिक मात्रा खानेसे नपुंसकता पैदा होतीहै ( २८ ) इसकी थोड़ी मात्रासे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( २९ ) जायफल और दालचीनीके साथ इसकी गौली बनाके खिलानेसे अतिसार मिटताहै और बल बढ़ताहै ( ३० ) कामकी बाधाको कम करनेके लिये ५ रतीसे १ मासे तक कत्थेको पानोंमें गलाके स्त्री या पुरुषको पिलाना चाहिये ( ३१ ) लेकी हुई सुपारी और कत्थेके चूर्णका मंजन करनेसे फूले हुए मसुडे बैठ जातेहैं परन्तु कई दिनों तक लगातार मंजन करते रहनेसे दांत काले पड़ जातेहैं ( ३२ ) मसुडे और दातां को दृढ़ करनेके लिये कत्था, क्रिणगच और कसीसके चूर्णका मंजन करना चाहिये ( ३३ ) २ रती खैरसार, हल्दी और मिश्रीके चूर्णकी फकी खेनेने मुखी खांसी मिटतीहै ( ३४ ) कत्थेको पीसके बुरकानेसे ज्ञानसे पूय बहना बंध होजाताहै ( ३५ ) इसको धीमें मिलाके लगानेसे गर्मके फोड़े, फुन्सी मिटतेहैं ( ३६ ) खैरके काथसे स्नान करना और उसका बफारा लेना त्वचाके रोगोंमें बहुत उपकारीहै ( ३७ ) खैरके कोयले सुपारीकी भस्म और बादामके छिलकोंकी भस्मका मंजन बनाके मलनेसे दात दृढ़ होजातेहैं ( ३८ ) कत्थे और गूदीकी छालको मुखमें रखनेसे मुखपाक मिटताहै ( ३९ ) खैरके काथको पिलानेसे या लेप, उबटना और भोजनमें उपयोग करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहैं ( ४० ) इसकी छाल, आवला और वावचीका काथ करके पिलानेसे सफेद

कुष्ठ मिटताहै ( ४१ ) बालक होनेके कई सप्ताह पहिलेसे खैरके काथसे स्तनोंकी बीटलियोंको धोतेरहनेसे बालक होनेके पीछे उनपर घाव नहीं पडतेहै ( ४२ ) २-३ तोले कत्था जलमें पीसके पिलानेसे संखियेका विष उतरताहै ( ४३ ) कत्था मुंहमें रखनेसे जीभके चीरे मिटतेहै ( ४४ ) खैर और विजैसारके काथको टंडा कर पिलानेसे विस्फोटक मिटताहै ( ४५ ) खैर और लेमवाके काथसे गुदाको धोनेसे उसके व्रण मिटतेहै ( ४६ ) सफेद कत्था और कलमीशोरा बराबर ले महीन पीसके बुरकानेसे मुखके छाले मिटतेहै ( ४७ ) त्रिफला और कत्थेको ओटाकर कुल्ले करनेमें मुखपाक मिटताहै ( ४८ ) कत्था और वीलगिर बराबर ले चूर्ण बनाके फकी देनेसे अतिसार मिटताहै ।

संख्या ( १६७ )

( सं० ) चिट्खदिरः, अरिमेदक, कालस्कंधः, गोरटः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	दुर्गन्धिखैर	गन्धिलोखैर	गंधीहिंवर	दुर्गंधखदिर	दुर्गंधिलैर	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Acacia Farnesiana Mimosa f.		

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर उगतेहै ।

पहिचान—यह एक प्रकारका भाड होताहै, इसके सीधे काटे लगतेहै । इसकी एक सीकपर १० से २० जोडे पत्तोंके लगतेहै । इसके बीठी सुगंधवाले गहरे पीले पुष्प लगतेहै और दो तीन इंच लम्बी फलियां लगतीहै ।

फूलने फलनेका समय—माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगतेहै ।

प्रयोग—( १ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै ( २ ) जिन २ रोगोंके लिये बबूलकी छाल काममें आतीहै उनमें इसकी छाल भी काममें आतीहै ( ३ ) इसके गोंदको धातु पुष्ट करनेवाली औषधियोंमें मिलाके लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( ४ ) इसकी छालको दसगुने जलमें आटा बान कर

कुछे करनेसे मुखपाक मिटताहै ( ५ ) इसकी छालके काथसे फोड़े फुन्सियों को धोनेसे वे जन्दी मिटजातेहै ( ६ ) इसके ७॥ मासे कोमल पत्तोंको पीरा गोली बनाके खिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( ७ ) इस वृत्तमें यह गुणहै कि इसके पास सर्प और ऊँदरे नहीं रहतेहैं । इसके बहुतसा गोंद लगताहै उसमें बंबूलके गोंदसे भी अधिक गुणहै और उसको बंबूलके गोंदकी ठौर काममें लातेहै । इसकी छाल और फलियोंमें से रंग निकाला जाताहै । भभके आदि यंत्रमें खैचा हुआ इसके पुष्पोंका अर्क बहुत सुगंध युक्त होताहै ।

संख्या ( १६८ )

( सं० ) खजूरी खरस्कंधा, दुष्प्रधर्षा, दुरारोहा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मगहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खिजूर	खजूर	खजूर	शिंदी, खजूरी	खेजुर	खजूर	खजूरमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		तमर	खुरमा	Phoenix Sylvestris	The wild date or Date-sugar palm	

स्थान— इसके वृत्त बंगाल, बिहार, कारोमण्डलकी तीर, गुजरात, सहैलखण्ड और मैसोर आदि बहुतसे देशोंमें होतेहै ।

पहिचान— इसके वृत्तकी ऊँचाई ४०-५० फुट तक होतीहै । इसके २ से ६ फुट तक लम्बी डालिया लगतीहै । इसका फल दृग और एक ऊँच लम्बा होताहै वह पक जानेपर कुछ लाल पीले रंगका होजाताहै उसकी गिरफा स्वाद कुछ मीठा और कसेला होताहै इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

फूलने फलनेका समय— इसके चैत वैशाखमें पुष्प लगतेहै और भादवे आसोजमें फल पकतेहै ।

प्रयोग— ( १ ) इसके फलको वादाम विहीदाने पिस्ते गर्म मसाले ( मोंठ आदि ) और शकरके साथमें खिलानेसे पेटार्थ पैदा करताहै ( २ ) इसकी गींगी और आंधीभाड़ेकी जडको नागरवेलके पानमें रखके रानेसे शीत

ज्वर छूटता है ( ३ ) इस वृक्षका रस जिसको ताड़ी कहते हैं, वह ठंडी है ( ४ ) इसके बीचका कोमल भाग पुराने मूत्रकृच्छ्रको मिटाता है ( ५ ) इसकी जड़ से या जड़की राख से दांतुन करनेसे दंतपीड़ा मिटती है ( ६ ) इसकी जड़के काथ से कुल्ले करनेसे दातोंका दर्द मिटता है ( ७ ) इसका पारु वनाके खानेसे स्ना युजालकी शक्ती बढ़ती है ( ८ ) इसके मदसे शर्करा बनाई जाती है जो बंगाल आदि देशोंमें बहुत खपती है ।

संख्या ( १६६ )

(सं०) पिण्डखजूरी, द्वीप्या, स्थूलपिण्डा, फलपुष्पा, हयभक्षा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पिण्डखिजूर	पिण्डखजूर	खजूरी	पेंडखजूर	पिण्डिखजूर	पिण्डखजूर	खजूरभण्डु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पेराचपळ	खजूराहण्डु			Phoenix dactylifera.	The Edible date	

स्थान—पिण्डखजूर के वृक्ष—पंजाब, सिन्ध, गंगाका अंतरवेद, बुंदेलखण्ड, दक्षिण और गुजरातमें बहुत होते हैं, बंगालकी पृथ्वी इस वृक्षको नहीं मानती है ।

पहिचान—इसके वृक्ष १०० से १२० फुट तक ऊंचे बढ़ जाते हैं । इसका फल पकने पर १ से ३ इंच लम्बा बहुधा कुछ लाल या कुछ पीले भूरे रंगका होता है, इसकी गिर मीठी होती है ।

फूलने फलने का समय—फागुन और चैतमें इसके पुष्प लगते हैं भादवे और आसोज में इसके फल पकते हैं । स्त्री वृक्षोंकी अपेक्षा इसके पुरुष वृक्ष कम मिलते हैं इसके एक प्रकारका गोंद लगता है जो औषधीके काममें आता है ।

प्रयोग—( १ ) इसके गोंदकी फर्की देनेसे अतिसार मिटता है ( २ ) इसके बीजोंको जलमें पीसके पपोटां पर लेप करनेसे आंखका मैल और गुदलापन मिटता है ( ३ ) इसका ताजा रस ठंडा और सारक है ( ४ ) गर्भकी शक्करकी

अपेक्षा इसकी शक्ति बहुत नैरोग्य बढ़ानेवाली और चित्त प्रसन्न करने-  
 वाला है ( ५ ) आखके गोले और सफेद भागकी पित्त शोथ मिटानेके लिये  
 आख पर इसके बीजोंका लेप करतेहै ( ६ ) मूत्र और वीर्य सम्बन्धी रोगोंको  
 मिटानेके लिये इसके गोंदका प्रयोग बहुत अच्छा है ( ७ ) पिढखजूरको नि-  
 त्य खानेसे मसूडोंमें घाव हो जातेहैं ( ८ ) इसके ताजे रसमें मिश्री मिलाके पि-  
 लानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ९ ) इसके फलके प्रयोगसे श्वासकी दुर्गंध मिट-  
 ती है ( १० ) इसके फलोंका पाक बनाके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( ११ ) श-  
 रीरको पुष्ट करनेके लिये इसके फलोंका प्रयोग बहुत अच्छा है ( १२ ) छुहारे  
 को दूधमें ओटाके पित्रानेसे प्रतिश्याय मिटता है और पसीनालानेके लिये भी  
 यह प्रयोग बहुत अच्छा है ( १३ ) छुहारे, शतावर और मिश्रीको ओटाकर पीने  
 से सूखी खासी मिटती है ( १४ ) छुहारेमें अहिफेन और जायफलके चूर्णको  
 भर पुटपाक में पका, गोलियां बना, एक २ रती खिलानेसे अतिसार मिटता है  
 ( १५ ) छुहारेकी गुठली को मुंहमें रखनेसे अथवा इसको पानीमें घिसके पीने  
 से तृषा मिटती है ( १६ ) छुहारेकी गुठलीके चूर्णकी जलके साथ फकी लेनेसे  
 मदाग्नि मिटती है ( १७ ) छुहारे और सोंठको पानमें रखके खिलानेसे श्वास  
 रोग मिटता है ( १८ ) छुहारेको नीचूके रसमें भिगो उसमें नमक और उष्ण वे-  
 सवार ( गर्म मसाला ) मिला अचार बनाके खानेसे अरुचि मिटती है, इसके  
 अचारको खटमूठा बनानेके लिये इसमें बूरा या बूरेकी चासनी मिलातेहै यह  
 भी बहुत रोचक होता है ।

— ०० —  
 संख्या ( १७० )

( सं० ) गण्डकः, खड्गः, वज्रचर्मा, तुङ्गपुखः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गेंडो	गेंडा		गांडा	गाण्डार खग		अग्निवेदपाकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
नेरुपु		जिरीस	करकदन	Rhinoceros unicornis R Indicus	The great one horned Rhinoceros	

स्थान—गंडे तीन प्रकारके होतेहैं। उनमेंसे जिस जातिके गंडेके प्रयोग यहां लिखेहैं वे बहुधा आसामकी घाटीमें होतेहैं।

प्रयोग—( १ ) गंडेके सींगके प्यालोंको विपकी परीक्षा करनेके लिये काममें लातेहैं ( २ ) इसके सींगकी धूनी देनेसे अर्श मिटतेहैं ( ३ ) बालक होनेके समयमें जिस स्त्रीकी पीड बन्ध होजातीहै तो उसकी भगके इसके सींग की धूनी देनेसे पीड पीछी चलने लगजातीहै और व्रचा होनेमें दुःख नहीं होताहै ( ४ ) इसके सींगके प्यालेमें पानी भरके पीनेसे अर्श मिटताहै ( ५ ) गंडेकेसींग, दांत, पंजे, मांस, चर्म, रुधिर, विष्टा और मूत्र ये सब औषधिके प्रयोगमें आतेहैं, इसके सींगके जितने प्रयोगहैं उन सबमें काले नोकदार सींग काममें लाने चाहियें क्योंकि काले नोकदार सींग सबसे अच्छे होतेहैं।

—:—:—

संख्या ( १७१ )

( सं० ) गंधकः, गंधपापाणः, गंधाश्मा, पूतिगंधः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गंधक	गंधक	गंधक	गंधक	गंधक	गंधक	गंधकसु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
गंधकं	गन्धक	कवरीत्	गोगिर्व	Sulphur	Sulphur Bluinstone	

स्थान—गंधक ज्वालामुखी पहाड़ोंमें या उनके आसपासके पहाड़ोंमें निकलताहै। यह बहुधा स्रोह और तावेमें मिला हुआ रहताहै।

पहिचान—यह-यहा बहुधा दो प्रकारका मिलताहै। एक आमलासार- जो कुछ हरास लिये हुए पीले रंगका चमकदार होताहै। दूसरा-मूठिया जिमकी ठली हुई गोला रूले होतीहैं। असली गंधकमें सुगंध और स्वाद नहीं होताहै, यह जल और मदिरामें नहीं गलताहै घी और तेलमें पिघल जाताहै, और शुद्ध गंधकको जलानेसे पीछे कुछ नहीं रहताहै।

गंधकको शुद्ध करनेकी पहिली रीति—एक चौड़े मुहके बरतनमें गायका दूध भर उसके मुह पर मलमलका कपडा बांधकर उसपर देहरा पिसाया हुआ गंधक विद्या, उसमें जलन की कारपर एक थगुली मोटी अटिकी चांद लगा उस पर एक लोहेका तारा जमा, उसकी खोम फकीकर उस तवे पर कायलोंकी अंगि र्वे देवे और ध्यानसे देखता रहे कि वहाँ खोमोंरुत्तकर गंधकका धुआं न मिलती जाय, अंगर कहींसे निकलती उसको तुरंत धुव कर देवे, जिसे अंगिसे गंधक पीलकर कपडेमें हीके धूपमें गिरजावे तब उसकी खोमाखोलेकर गंधकको धुवसे निकालके अकतममें लाना। चादिये। अंगि र्वे देवे। विनाकर या देही जमाके विलीकेगी पी निकाल लेना। चादिये। इस धीके लो गनिसे। उपदेशकी टाकियां मटलीहो। गग। तप (३)। हाउम। इही तप म्नि गंधमरी रीति पीतल चांलीहेके पात्रमें गंधकसे दुगुना म्पीले। अंगि र्वे देवे। चहा उसमें गंधक डालकर गंध अंचा। देवे। जक। गंधक। पिसाया जावे, जस उसको गायके दूधम। ध्यान। लेवे। अजव। गंधके दूधमें जम लावे। तब उन्नको निकाल जलमें २३ घंटे छोटाके उसका म्भव। धी। निकाल देवे। और। अजव। जस। गंधक में धी न रहे। तब उसको सुखा। लो। ग। इसमें अह। म्पयों जज है कि जो। गंधकमें कुछ धी रह जावे तो कुछ दिनों पीछे इसमें धीकी। गंध। अंगि र्वे देवे। प्रयोग—(१) अशुद्ध गंधकसे सवतसे कुष्ठ, ताप, भ्रम और पित्तके रोग पैदा होते है। जल, वायु, रूप और सुखरु। नाश होता है इसलिये अशुद्ध गंधकका काम नह। लाना चादिये (२) शुद्ध गंधक अत्यन्त उष्ण अंगि र्वे और वीर्यवर्द्धक। कासी, स्वांस, सीया। हृदा। म्पकं। कुष्ठ। नेत्र। म्पि। वि। र्वे देवे। विप और कुमि रोगको मिटाता है (३) दो मासतक शुद्ध गंधकको विना तमकके आटेकी गठीमें रख पकाकरके खिलानेसे पीप और सुखली मिटती है (४) गंधकके चार रली फूल खिलानेसे बद्ध कोष्ठ मिटती है (५) गंधकको सरसाके तेलमें पीस मर्दन करनेसे फोडे फुन्सी मिटते है (६) इसकी थोड़ी मात्रा देनेसे पसीना आता है (७) गंधकको पीस धीमें मिलाके लगानेसे

सणा। शुद्ध होके भर। जाता है (८) गंधकको मिसर। परेके उसमें खरूलकर एक। चावल। म्प। अंगि र्वे देवे १५ दिन तक। लेतेसे। अख। वीर्य। और। वल। बढ़ता है (१०) गंधक पीसके लगानेसे पिच्छका त्रिप। अंगि र्वे देवे (११)



गंधक और लसणके जलानेसे टांटिया उड़ जातेहै ( १२ ) गंधकको नीचके रसमें मिलाके पिलाने से विमृचिका मिटतीहै ( १३ ) चार मासे गंधकको ८ मासे गुड़के साथ खिलाकर ऊपर दूध पिलानेसे २० प्रकारके प्रमेह और पिटिका मिट जातीहै ( १४ ) गंधक और यवत्तारको पानी या कड़वे तेलमें पीसके लेप करनेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै ( १५ ) गंधकके खानेसे और इसको कड़वे तेल में पीसके लेप करनेसे पामा और खुजली मिट जातीहै ( १६ ) ४ मासे गंधक को कड़वे तेलमें मिलाके पिलाने और लेप करनेसे दूध पीनेवालेकी पांव या खुजली शीघ्र मिट जातीहै ( १७ ) इसको गोमूत्रमें पीसके लेप करनेसे कोढ़ मिटताहै ( १८ ) गंधकको सिरकेमें पीस उसमें रूई भिगोके कीड़े खाये हुए दातमें रखनेसे दंतपीड़ा मिटतीहै ( १९ ) एक भाग गंधक और दो भाग मिश्रीको सहत में मिलाकर दो मासे प्रमाण पानमें रखके खानेसे श्वास मिटताहै ( २० ) इसको पीसकर भिड़के दंश पर मलनेसे उसका विष उतरताहै ( २१ ) गंधकको आकके दूधमें दो दिन तक खरल कर ठिकिया बना छायामें सुखा किसी व्रतन में जलभर उसमें ठिकियाको ढाल कर चार पहरतक मंदाग्निसे ओटावे । जब तेल पानी पर तैर आवे तब उसको अगुलीसे उतारके धर रखे इस तेलके लगानेसे दाद और पांव आदि त्वचाके रोग मिटतेहै ।

संख्या ( १७२ )

( सं० ) गारुत्मतं, मरकतं, रोहिण्यं, हरिन्मणिः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पद्मो	पद्मा	लीलुं, पाहुं	पाचरत्न	पान्ना	पन्ना	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		जुमुरद	जुमुर्द	Smargdus	Emerald	

शुभ ग्रह—वृषा, मधुर, रोचक, पौष्टिक और वृष्यहै । विष, भूतवाधा, अम्लपित्त, ज्वर, वमन, दाह, मंदाग्नि, अर्श, पादुरोग और शोथको मिटाताहै और अोजको बढ़ाताहै ।

संख्या ( १७३ )

( सं० ) गार्जरं, पिण्डमूलं, पीतकं, नारङ्गम् ।

मारवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलघ्री
गाजर	गाजर	गाजर	गाजर	गाजर	गाजर	गज्जरगञ्जा
द्राविदी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कारट्टक्किन्गम्	गज्जरी	ज्यज़र	ज़रदफगज्य	Daucus Carota	The Carrot.	

स्थान—गाजर हिन्दुस्थान में सब ठौर बोई जाती है । इसके बीजों में से तेल निकाला जाता है उसमें तीव्रगन्ध होता है और उसका स्वाद अच्छा नहीं होता है, यह तेल उष्ण और उबनेवाला होता है ।

प्रयोग—( १ ) गाजर योगवाही और बलवर्द्धक है ( २ ) कच्ची गाजर खानेसे आतोंके कीड़े मरते हैं ( ३ ) निगडे हुए फोड़ों पर गाजरका पुन्टिस बांधते हैं ( ४ ) गाजर खानेसे शरीर पुष्ट होता है ( ५ ) इसके बीज स्नायु जाल को बलवान् करते हैं ( ६ ) बच्चा होनेके समयकी अधिक पीड़ा मिटानेके लिये इसके बीज और पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये ( ७ ) गाजरको इलुंवा खिलानेसे शरीर पुष्ट होता है ( ८ ) गाजरके बीज चरपरे, उत्तेजक और शूल मिटानेवाले हैं आध्मान, जलंधर और वृक्के रोगोंमें काम आते हैं ( ९ ) गाजरके पुन्टिसमें नमक डालके बाधनेसे वह पित्त शोथ उतरता है कि जिसमें फुन्सियां हो जाती हैं ( १० ) कच्ची गाजरको पीसके लेप करनेसे अग्नि आदिसे जले हुए की दाह मिटती है ( ११ ) गाजरका आचार खिलानेसे तिष्ठी कम होती है ( १२ ) गाजरके पत्तोंको घीसे चुपड़ गर्म कर उनका रस निकाल २-३ घूंटें कान और नाकमें टपकानेसे कुछ छींके आकर आधाशीशी की पीड़ा मिट जाती है ( १३ ) गाजरके छिलकेको महीन पीसकर अंजन करनेसे कुंजारोग मिटता है ( १४ ) इसके बीजोंकी धूनी देनेसे गर्भवती कष्टी स्त्रीको सुखसे प्रसव हो जाता है ( १५ ) गाजर के बीजोंके स्थान में जगली गाजर काम में आ सकती है ।





प्रयोग—( १ ) मासिक धर्मकी रुकावट मिटानेके लिये तथा मासिकधर्म शुद्ध होनेके लिये इगका प्रयोग बहुत उपयोगी है ( २ ) बच्चा होनेके पीछे यह गुगुलु ॥ रतीसे ३ रती तक लगातार पाच सात तथा ग्यारह दिन तक देनेसे गर्भाशय का सब दूषित मल निकल जाता है ( ३ ) पुराने फोड़ा पर इसका लेप बनावे लगाना चाहिये ( ४ ) इसके धुएसे वायु शुद्ध होता है ( ५ ) इसको आंग भोम को गोमूत्रके साथ पीस घत्ती बनाके नासूरमें देनेसे वह शीघ्र मिटजाता है ।

संख्या ( १७६ )

( सं० ) गुञ्जा, रक्तला, प्रणला, चङ्गामणिः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
चिरमी	चिमिटी	चणोठी	गुज	कुच	चिभटी	रक्त गुरिगिञ्ज
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कुन्दमणि	गुरिगिजे	एनुदीक्	चश्मैलुरूस	<i>Abrus precatorius</i>	<i>Indian 'or wild'</i> <i>Liquorice root</i> <i>Boad tree</i>	

स्थान—यह हिन्दुस्थानके पहाड और जंगलोंमें प्रायः सब ठौर मिलती है ।

पहिचान—यह एक प्रकारकी बेल होती है इसके पत्ते इमली जैसे होते हैं परन्तु स्वादिमें भीठे होते हैं इस बेलकी फलियां लगती हैं जिस बेलके गुलाबी पुष्प लगते हैं उसकी फलीमेंसे ३—५ तक काली आंखवाले लाल बीज निकलते हैं जिसके काले पुष्प लगते हैं उसकी फलीमेंसे ६ से १२ तक सफेद आंखवाले काले बीज निकलते हैं तथा जिसके सफेद पुष्प लगते हैं उसकी फलीमेंसे ४ से ६ तक सफेद बीज निकलते हैं पुष्पोंके रंगके कारण घुंघर्ची दशसे भी अधिक जातिकी होती है परन्तु हिन्दुस्थानमें सब प्रकारकी नहीं मिलती है ।

फूलने फलनेका समय—यह वर्षा ऋतुमें फूलती फलती है इसके पंचांगमें पत्ते सबसे ज्यादा भीठे होते हैं उनमेंसे बहुतसा सत निकाला जा सकता है तथा बेल मेंसे एक प्रकार का जार भी निकलता है । कई लोग इसकी जड़को गुलहटी बतलाते हैं परन्तु गुलहटी दूसरी चीज है, इसकी जड़ नहीं है ।

- प्रयोग—( १ ) इसकी जड़ और फलोंके दो भाग काथमें एक भाग तेल डाल कर पचावें जब काथ जलकर तेल मात्र शेष रहजावे तब उसको उतार लें इस तेलके मर्दनसे दारुण गंडमाला मिटती है ( २ ) इसकी जड़को पकरीके मूत्रमें घिस कर अंजन करनेसे असाध्य तिमिर रोग मिटता है । ( ३ ) सफेद चिरमी की ३० रती जड़को पीस उसका अर्क निकाल मिश्रीके साथ देनेसे सुजाक मिटता है ( ४ ) इसको रातभर जलमें भिगो प्रभात मल ध्यानकर पीनेसे श्वेतप्रदर मिटता है ( ५ ) जड़को साँठके साथ २॥ या ३॥ रती देनेसे खासी या कुत्ताघासी मिटती है ( ६ ) पत्तोंको राईके तेलसे चुपड़ कर गठियापर बांधनेसे सूजन उतरती है ( ७ ) ताजे पत्तोंको पीस रस निकाले तेलमें मिलाके मालिश करनेसे दर्द मिटता है ( ८ ) घुंगचीको पारा, गंधक, निंबोली, भ्रूके पत्ते और चिनौल्लोंके साथ पीसकर लगानेसे फोड़े फुन्सिया मिटती है ( ९ ) यह रेचक है परन्तु अधिक मात्रा देनेसे विष का काम देती है और वि-सूचिका ( हैजे ) केसे निशान पैदा करती है । विशेषकर चिरमीके छिलकेके लाल हिस्सेमें विष होता है ( १० ) आधरतीसे १॥ रती तक घुंगचीके चूर्ण को दूधमें ओटा इलायची धुरकाके पीने से स्नायुजाल की शक्ति बढ़ती है परन्तु अधिक मात्रा देनेसे वमन लाती है—( ११ )—विना उवाले हुए चूर्ण को खानेसे भी वमन और दस्त बहुत होते हैं ( १२ ) सफेद घुंगची तथा उसकी जड़की दूसरी दवाइयोंके साथ चटनी बनाकर खिलानेसे पुरुषार्थ पैदा करती है ( १३ ) घुंगचीको घिसकर प्रपोटोंकी फुन्सिया तथा आखके दर्दपर लगाने से कुछ सूजन पैदा होकर दोनों मिट जाते हैं ( १४ ) हलकी सूजनपर घुंगची को घिसकर लगानेसे बहुत लाभ होता है । ( १५ ) इसके चूर्णको सूघनेसे सिर का तेज दर्द मिटता है ( १६ ) पेटमें खानेकी अपेक्षा रुधिरमें मिलनेसे विषका काम अधिक देती है । उस जगह फोड़ा होकर सूजन हो जाती है । इस विषको दूर करनेके लिये, सिरका २ भाग, शकर ३ भाग और चूनेको पानी १ भाग मिलाकर ४॥ मासेकी मात्रा देनी चाहिये । ( १७ ) चिरमीके छिलके उतार भांगी को महीन पीसकर आखके फूले तथा प्रपोटोंकी फुन्सियोंपर लगानेसे लाभ होता है ( १८ ) इसकी जड़को पानीमें घिसकर नास देनेसे आंधाशीशी मिटती है ( १९ ) घुंगची और उसकी जड़को नारियलके दूधके साथ देनेसे बवासीर



ज्वर और संतापको मिटाता है । यह तीन वर्ष तक काममें आसकता है पछे हीन वीर्य होजाता है ।

प्रयोग—(१) पीपलामूलके चूर्णकी गुडमें गोली बनाके खानेसे कईदिनों से नष्ट हुई निद्रा आने लग जाती है (२) गुडमें आधा भाग पीपल का चूर्ण मिला गोली बनाके देनेसे जीर्णज्वर, मंदाग्नि और खांसी मिटती है (३) गुडमें जायफलका चूर्ण मिलाके देनेसे मुखशोष मिटता है—(४) गुडमें थोर का दूध मिलाके देनेसे श्वास, कास मिटता है (५) गुड और संचललौणको मिलाकर गोली बनाके खानेसे अरुचि मिटती है (६) स्निग्ध अन्नके भोजन करनेसे जो तृषा पैदा होती है उसको मिटानेके लिये गुडका शर्वत पिलाना चाहिये (७) गुडमें सोंठ और देवदारु का चूर्ण मिलाके देनेसे हृदयकी वायु पीड़ा मिटती है (८) गुडमें हरड़का चूर्ण मिलाके देनेसे वातरक्त मिटता है (९) गुडको निवाये दूधमें मिलाके पिलानेसे सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र मिटते हैं (१०) ६ मासे गुड और ६ मासे हन्दी कांजीके साथ पीसकर पिलानेसे पथरी मिटती है (११) गुडको घीमें मिलाकर पिलानेसे सूर्यवर्च रोग मिटता है (१२) गुड और धीलगिरकी गोली बनाके देनेसे रक्तातिसार मिटता है (१३) गुड और हरड़की गोली बनाके खिलानेसे अर्श मिटता है (१४) मंदाग्नि मिटानेके लिये गुड और हरड़के चूर्णकी गोली बनाके देना चाहिये (१५) गुड और सोंठके चूर्णकी गोली बनाके खानेसे आमजीर्ण मिटता है (१६) गुड और पीपलके चूर्णकी गोली बनाके खानेसे अजीर्ण मिटता है (१७) गुडमें हरड़का चूर्ण मिलाके खानेसे बद्धकोष्ठ मिटता है (१८) गुडमें बराबर कड़वा तेल मिलाकर २१ दिन तक सेवन करनेसे श्वास रोग मिटता है (१९) हृदयका बल बढ़ानेके लिये गुड और घी मिलाकर पीना चाहिये (२०) इस प्रयोग से वातरक्त भी मिटता है (२१) गुड और अदरकको एक तोलेसे बढ़ाता हुआ १२ तोले तक बढ़ाके एक महीने तक खिलानेसे या पानीके साथ पीसकर पिलानेसे शोथ रोग मिटजाता है इस प्रयोगके सेवनेके समय में केवल दूध या दूध चावलका पथ्य देना चाहिये (२२) गुड और सोंठके चूर्णकी गोली बनाके देनेसे बादीका प्रतिश्याय मिटता है (२३) गुड और पीपलके चूर्णकी गोलीसे संग्रहणी मिटती है (२४) गुड खानेसे पिच्छूका विष उतरता है (२५) स्त्री गमन



प्रयोग—( २१ ) इसके बीजाँको कूट मधुमें मिलाके चदानेसे बच्चों का आमातिसार मिटताहै ( २२ ) बच्चोंकी खाँसी, मिटानेके लिये बीजाँके काथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये ( २३ ) ज्वरघ्न औषधियोंके साथ इसके बीजाँ का काथ करके पिलानेसे ज्वर कूटजाताहै ।

संख्या ( १७६ )

( सं० ) गुडुची, अमृतवल्ली, छिन्ना, अमृता ।

भारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलुड़ी
गिल्लिया	गिल्लोथ	गळ्ळे	गुळवेन	गुलची	गल्लो, गिल्लो	तिप्पतीगी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	इ. लैटिन	अंग्रेजी	
सीदलकुडि	अमृतवल्ली			<i>Tinospora Cordifolia</i>	<i>Heart leaved Moor seed</i>	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें प्रायः कर्नाटसे आसाम और ब्रह्मा तक, और बिहार और कोकनसे कर्नाटक और सीलोन तक सब ठौर होतीहै ।

पहिचान—इसकी बेल होतीहै जब यह पुरानी होजातीहै तब इसकी डंडीपर एक पतला सफेद रंगका सलदार पतले कागज जैसा छिलका उस पर ठौर २ से अलग दीखने लगजाताहै उसके भीतर हरे रंगकी डंडी होतीहै इसके छोटे २ पीले पुष्प लगतेहै । छोटे और लाल रंगके एक २ दो ३ तीन तीन फल इकट्ठे लगतेहै ।

प्रयोग—( १ ) इसके सब अंग औषधिके काममें आतेहै । यह—रक्तशोधक, बिल्वर्दक, स्वेदजनक और सर्षांगकी क्षिण्वलता मिटानेवालीहै । ज्वर, तिल्ली, कामला, त्वचाकेरोग, गठिया, मूत्रदोष और मंदाग्निको मिटातीहै ( २ ) इसकी जड़का काथ तीव्रत्वामकहै ( ३ ) सर्पको विष उतारनेके लिये इसकी जड़का काथ पिलातेहै ( ४ ) कुष्ठरोगमें इसका स्वरस पिलातेहै ( ५ ) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे बल बढ़ता है ( ६ ) इसका काथ या हिम पिलाने से बुभानी गठिया मिटतीहै ( ७ ) उशवेके साथ इसका काथ पिलानेसे उपदंशसे पैदा हुए सब शरीरके फोड़े मिटतेहै । इससे

मूत्र अधिक आने लगता है ( २ ) दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे  
 गदिया और मूत्रकी खटाई मिटती है ( ६ ) इसके और सोंठके चूर्णकी  
 फकी दूधके साथ लेनेसे मंदाग्नि मिटती है ( १० ) इसके स्वरसमें  
 पापाणभेदका चूर्ण और मधु मिलाके जदानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ११ )  
 इसके छोटे टुकड़ोंकी माला बनाकर पहिनेसे कामला मिटता है ( १२ )  
 ज्वरनाशक दूसरी औषधियोंके साथ इसका काथ करके पिलानेसे मंद  
 वेगवाला जीर्णज्वर और विषमज्वर मिटता है ( १३ ) इसका काथ  
 पिलानेसे मूत्र अधिक उतरता है ( १४ ) इसके फांद या हिमसे श्वेतमदर  
 मिटता है ( १५ ) घाहीके साथ इसका काथ बनाके पिलानेसे जन्माद  
 मिटता है ( १६ ) इलायची, तंशलाचन और गिलोयसतको मधुके साथ  
 जदानेसे क्षयरोग मिटता है ( १७ ) गिलोयसतकी मात्रा ६ मासे तककी  
 है ( १८ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है  
 ( १९ ) शतावरके साथ इसका काथ करके पिलानेसे श्वेतमदर मिटता है  
 ( २० ) गिलोयको पानीमें घिस गुनगुना करके कानमें डालनेसे कानका मैल  
 निकल जाता है ( २१ ) गिलोय और हल्दीसे सिद्ध किये हुए तेलके लगानेसे  
 लाड़ी व्रण मिटता है ( २२ ) गिलोयके हिममें शकर मिलाके प्रातःकाल पिलाने-  
 से पित्तज्वर छूटता है ( २३ ) गिलोयके काथपर पीपलका चूर्ण डुरकाके पि-  
 लानेसे कफ ज्वर और जीर्णज्वर छूटता है ( २४ ) इसके काथको ठंडाकर  
 उसमें चतुर्थांश मधु मिलाके पिलानेसे जीर्ण ज्वर छूटता है ( २५ ) इसके स्वर-  
 समें पीपल का चूर्ण और मधु मिलाके पिलानेसे जीर्णज्वर, कफ कास,  
 प्लीहा और मरूचि मिटती है ( २६ ) इसके काथको ठंडाकर उसमें मधु मिलाके  
 पिलाने से वमन बन्ध होती है ( २७ ) इसके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे  
 कामला रोग मिटता है ( २८ ) इसके पत्तोंको पीस छाबमें छानकर पीनेसे  
 कामला मिटता है ( २९ ) इसके रसस या कूकसे सिद्ध किया हुआ भैंसका  
 घी चाणूण दूधमें मिलाके पीनेसे हलीमक रोग मिटता है ( ३० ) इसके स्वरस  
 में घी और दूध मिलाके पिलानेसे हलीमक मिटता है ( ३१ ) क्षय रोगमें वमन  
 की शान्ति के लिये इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये ( ३२ )  
 इसके और सोंठके चूर्णकी नस्य देनेसे हिचकी बन्ध होती है ( ३३ ) इसके

हिममे मधुमिलाके पिलानिरो जिदोफ की वमन बन्ध होती है (१३४)। हृदयकी वात पीडा मिटानेके लिये गिलोय और कांती भिरचको उष्ण जलके साथ पीसकर प्रातःकाल पिलाना चाहिये। (१३५) गिलोय और एरंडके बीजोंको दहीके साथ पीसकर पगधलियो पर लेप करनेसे उनकी दाह मिटती है (१३६) इसके साथ एरंडका तेल मिलाके पिलानेसे वातरक्त मिटता है (१३७) इसके साथ मूगिल मिलाके पिलानेसे वातरक्त मिटता है (१३८) इसके स्वरस, कल्क, चूर्ण या क्वथके सेवन करनेसे वातरक्त मिटता है (१३९) इसके कल्क और काथसे घृत बना उसका पिलाने और मदन करनेसे वातरक्त मिटता है (१४०) ३ या ५ जवाहरंडके चूर्णकी गुडमें गोली बना उसको खिलाकर ऊपर गिलोय का काथ पिलानेसे बहुत बड़ाहुआ वातरक्त मिटता है (१४१) गिलोय और चित्रकका काथ पिलानेसे सर्पिः प्रमेह मिटती है (१४२) गिलोय का काथ पिलानेसे शीतपित्त मिटता है (१४३) इसके स्वरसमें मधु मिलाकर पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटता है (१४४) इसके स्वरसमें मधु मिलाकर पीनेसे प्रमेह मिटता है (१४५) इसके और शतावरके स्वरसमें गुडकी चासनी बनीके चाटने से वातज्वर छूट जाता है (१४६) इसका फाट पिलानेसे पित्तज्वर छूटता है (१४७) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे कामलारोग मिटता है (१४८) घृतके साथ गिलोयका सेवन करनेसे वात मिटती है (१४९) गुडके साथ सेवन करनेसे घटकाष्ठ मिटता है (१५०) मिश्रीके साथ सेवन करनेसे पित्तके उपद्रव मिटता है (१५१) मधुके साथ सेवन करनेसे कफ मिटता है (१५२) सांडके साथ इसका सेवन करनेसे आमवात मिटता है (१५३) गोमूत्रके साथ इसका सेवन करनेसे श्लीषदे मिटता है (१५४) इसके स्वरसका बलानुसार सेवन करनेसे कफपित्त जनित कुष्ठ मिटता है इसका हिम पिलानेसे जोरज्वर छूटता है गुण म हानपी म पी दूसरे वृत्तापर चढ़ी हुई गिलोयके गुणकी अपेक्षा नीमपर चढ़ी हुई गिलोयमें गुण अधिक है। गिलोयसत का स्वाद फोका या कड़ कड़वा होता है जो यह बहुत अच्छी तरहसे धोया जावे तो उसका रंग सफेद हो जाता है कम पीनेसे कुछ हरे रंगका रह जाता है। ( १५ ) पृष्ठान् पानाया त्यागि एत मत्तम इत्ये अये न त्रिये मि त्तम इ ( ६६ ) शोभते इ न किन्नी एत इत्ये अन्व विपु त्तम नो त्तम इ

संख्या ( १६० )  
 ( सं० ) गैरिकं, रक्तधातुः, ताम्रधातुः, लोहितमृत्तिका

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
गोखरू	गोखरू	गोखरू	गोखरू, काश्	गिरिमाटी	गोरी	गोखरू, जानु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कावि	कावि			Gole Rubra.	Ochre Red Lumber stone Red chalk	

गुण—यह स्निग्ध, पीटी, कपेली, टण्डा और तंत्राको हितकारी है। दाह, पित्त, कफ, हिचकी, रुधिररिपकार, ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अश्रु और रक्तपित्तको मिटाती है, अग्निदग्धक व्रणका और दूसर व्रणोंका रोपन करती है और शरीरकी कान्ति, बलको बढ़ाती है ॥

प्रयोग—(१) सोनागैरूके चूर्णको मक्के साथ चटानसे बालककी हिचकी बन्ध होती है (२) सोनागैरू और सेलखडी (घीयाभाटा) परावर ले चूर्ण बनाकर ६ मासेकी फकी ठण्डे जलके साथ दिनसे बिना समय मासिक्रम होना और उस समयमें प्रमाणसे अधिक रुधिरका बहना बन्ध होता है ॥

संख्या ( १६१ )  
 ( सं० ) गोकुरः, गोकण्टः, व्यालदंष्ट्रः, चुरकः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
गोखरू	गोखरू	गोखरू	गोखरू	गोकुर(री)	गोखरू भेसखडी	गोखरू पनुगपल्लरू
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
भेरिजिल्	नेगुलु	हसके	खरिखसके	Pedaliun Murex	Barweed	

स्थान—यह हिन्दुस्थानके दक्षिणमें समुद्रके किनारे, सीलोन, गुजरात, काठियावाड़ और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंके रतीले भागोंमें होता है।

पहिचान—इसका छोटा पोधा होता है इसकी डालियाँ और पत्ते बहुत चेपदार होते हैं इसकी जड़ पीली सिंदूरिया रंगकी होती है इसके पत्ते कुछ गोल और दलदार होते हैं, इसके चोखूटे प्रायः एक-एक लम्बे-फल लगते हैं—उन के चारों कोनों पर एक-एक कांटा होता है और उनके नीचेका भाग चारों ओरसे सिमटता हुआ एक कोनेमें आमिलता है, इसके कच्चे फलका रंग हरा पकनेपर पीला और सूखजाने पर मिट्टिया रंगका होजाता है इसका छिलका सूखके तन्तुओंकी जालीसी दीखने लगजाता है ।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्तोंसे निकाला हुआ चेप ( लुआव ) पिलानेसे मूत्र मार्ग और मूत्राशयकी अधिक जम्मा मिटती है ( २ ) इसके देनेसे मूत्र बहुत जल्दी आता है ( ३ ) इसके फल और पत्तोंके चपका पिलानेसे मूत्रकी रुकावट और मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ४ ) गोखरूके सेवन से इन्द्रियोंकी निबलता स्वप्न प्रमेह और वीर्यका स्वतः निकल जाना मिटता है ( ५ ) गोखरूके चूर्णमें लौंग इलायची शकर और घी मिलाके दूधके साथ देनेसे शरीर पुष्ट होता है ( ६ ) यह गर्भाशय के रोगों को मिटाता है ( ७ ) इसके पत्तोंको पीसकर पिलानेसे बढी हुई तिल्ली कम होजाती है ( ८ ) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो उनको चेप निकालके पिलानेसे दृक्की प्रमाण से बढी हुई जम्मा कम हो जाती है ( ९ ) पापाणभेद और गोखरूका क्वाथ, या फांट पिलानेसे पथरी मिटती है ( १० ) इसके पत्तोंका स्वरस लगानेसे मुखपाक मिटता है ( ११ ) इसके चेपके साथ तीक्ष्ण औषधिको पिलानेसे उसका चरपराहट कम हो जाता है ( १२ ) इसके फलों का काथ पिलाने से मासिकधर्म शुद्ध होने लगता है ( १३ ) बालक होने के पीछे जो क्षुब्ध जलादिक गर्भाशय में रह गये हों तो उनको निकालनेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये, इससे प्रसूति-सम्बन्धी रोग मिटते हैं ( १४ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पित्तके रोग मिटते हैं ( १५ ) गोखरू और सौंठका काथ नित्य प्रातःकाल पिलानेमें आमवात और कटिशूल मिटती है ( १६ ) इसके काथमें जौखार मिलाके पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १७ ) इसका पंचाग और ककड़ीके बीजोंको काजीके साथ पीसकर वस्तिपर लेप करनेसे मूत्र शुद्ध होती है ( १८ ) भेड़के दूधमें मधु मिला उसके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे पथरी मिटती है ( १९ ) इसके पंचांगके काथ

में मधु-और मिश्री पिलाकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और उष्णवायु मिटतीहै ॥

संख्या ( १६२ )

( सं० ) लघुगोक्षुरः, गोकण्टकः, चण्डसः, पडङ्गः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मुरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोखरूकाटी	छोटागोखरू	बेठोगोखरू	सराटे	छोटगोखरी		नेमिंग्लु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
रुप्पुनेरिंजि- ल	नेज्जुलुमुडु			(Perisperm) (T. lanuginosus)		

॥ स्थान—छोटे गोखरू विहार पश्चिमोत्तर देश मद्रास अंहाता अवध और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसके प्रसर पृथिवी पर फैलतेहैं उनके चने जैसे पत्त और छोटे पीले पुष्प लगतेहै इसके दो २ फल जुड़े हुए लगतेहै इनको गोखरूकाटी या काटी कहतेहैं । एक २ फलके तीन तीन काटे लगतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) इसका पंचाग परन्तु विशेष करके इसका फल औषधि के काममें आताहै ( २ ) इसके फलके चूर्णकी फकी देनेसे स्त्रियोंका बन्ध्यापन मिटताहै ( ३ ) इसके पंचागको २ घंटेतक जल में भिगो मल छानकर पिलानेमें मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( ४ ) गोखरू और मिश्रीके छःछः मास चूर्णकी ठंडे जलके साथ फकी देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ५ ) ५ तोले गोखरू ७॥ मासे धनिया दोनोंको जोकूटकर २॥ पाव पानीमें ओटा आधा रख छान दिन भरमें थोडा थोडा पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ६ ) गोखरू इसकी जड़ और चावलको एकत्र ओटा छानकर पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ७ ) इसके फल और पत्तोंका २॥ से ७॥ तोले काथ दिनमें तीन चार बेर पिलाने से मूत्राशयकी पुरानी सूजन उतर जातीहै ( ८ ) इसके फल और पत्तोंका स्वरस २॥ से ५ तोले तक दिनमें दो तीन बेर पिलानेसे मूत्रनालीकी दाह मिटतीहै ( ९ ) इन दोनोंके कायमें चन्दनके तेलकी दश घुंदा लालके दिनमें तीन

वेर पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १० ) गोखरूके ६ मासे चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे सुरत प्रमेह मिटताहै ( ११ ) गोखरूको शतावरके साथ थोटाके पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( १२ ) गोखरूके चूर्णको मधुके साथ चटाकर ऊपर बरूरीका दूध पिलानेसे पथरी मिटतीहै ( १३ ) गोखरूका शर्बत पिलानेसे शरीरमें पित्तकी शान्ति हातीहै ( १४ ) गोखरूके १५ रती चूर्णमें कालीमिरच और मिश्री मिलाके देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १५ ) इसके सेवन से नपुंसकता मिटतीहै ।

संख्या ( १८३ )

( सं० ) गोजिह्वा, गोजिका, दार्दिका, खर्पत्री ।

मरावाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जंगलीगाभी	गोभी	भोपाथरी	पाथरी	दाहिशाक	गोभी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Elephantopus scaber	Tricky leaved elephant's foot	

प्रयोग—( १ ) गोजिह्वाकी जड़का काथ पिलानेसे मूत्राघात मिटताहै ( २ ) गोभीके पत्तोंको कूट चाबलके साथ थोटा छानके पिलानेसे आमोशय की शोथ और पीडा मिटतीहै ( ३ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै ( ४ ) इसके पत्तोंको थोटा छान उंडाकर मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( ५ ) इसके पत्तोंको पीस टिकिया वनाके बांधनेसे नेत्रपीडा मिटतीहै ( ६ ) इसको पानीके साथ पीसकर १४ मासे तक खिलाने पिलानेसे कफके साथ रुधिरका आना और रुधिरकी बमन बन्ध होतीहै ( ७ ) गोभीकी चटनी वनाके खानेसे स्वरभंग मिटताहै ( ८ ) इसके पत्ते और डालियोंको पानीमें थोटा छान उस काथमें मधुकी चासनी वनाके चटानेमें स्वरभंग मिटताहै ( ९ ) इसका शाक वनाके खानेसे अर्श मिटताहै ( १० ) इसकी जड़ गलेमें बांधनेसे ज्वर छूटताहै ( ११ ) जंगली गोभीका शाक खानेसे अर्शका रुधिर

बन्ध होता है ( १२ ) इसके पत्तोंको गुदापर मलनेसे अर्शकी दाह मिटती है ( १३ ) इसके पत्तोंको मधुमें पीसके लेप करनेसे मनुष्यके दशका विष उतरता है ।

संख्या ( १८४ )

( सं० ) गोधूमः, सुमनः, बहुदुग्धः, स्लेच्छभोजनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गहूँ	गेहूँ	घऊ	गहूँ	गम्	कणक	गोधूमलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
गोदि	गोधि	हिंताह, वुर	गद्ग	<i>Triticum sativum.</i> <i>T. vulgare</i>	Wheat.	

स्थान—गेहूँकी खेती हिन्दुस्थानमें सब ठार होती है ।

पहिचान—यहां तीन प्रकार के गेहूँ होते हैं ( १ ) काठे ( २ ) बाजे ( ३ ) कठ बाजे ।

प्रयोग—( १ ) गेहूँका आटा, मैदा, दलिया, रवा और सूजी ये सब खाने और औषधिके काममें आते हैं ( २ ) पित्तवितर्ष पर आटेका लेप करते हैं ( ३ ) अग्निदग्ध पर इसका लेप करना चाहिये ( ४ ) त्वचा की दाह कई प्रकारकी सूजली दाह या चीस युक्त फोड़े पुन्सियों पर आटेका टंडा और गर्म लेप करना चाहिये ( ५ ) चापड ( भुस्ती ) के हिम, फाट या काथसे पसीना निकालने या रुठोरपनेको ढीला करनेके लिये स्नान कराना चाहिये ( ६ ) चरपरी औषधिके खाने पीनेसे जो भीतर दाह हो जाती है उसको मिटानेके लिये चापडका हिम फाट या काथ पिलाते हैं ( ७ ) चापड का पुब्स्टिस कई रोगोंमें बाधा जाता है ( ८ ) चापडकी रोटी कुछ सारक होती है ( ९ ) चापडकी रोटी मंद्राग्निवाले के लिये पथ्य है ( १० ) चापडमें मैदाका भाग बहुत कम होनेके कारण इसकी रोटी बहुमूत्रवालेको लाभकारी है ( ११ ) गेहूँके आटेमें से मैदा निकाल उसको सूजन की ठौरपर सूखी लगानेसे सूजन के भीतर जो खट्टा द्रव होता है उसको सोस लेती है और चमड़ीको बिल्लने नहीं ।



देती है (१२) चम्परी औषधिपर मैदा का गलेफ लगाके निगलनेसे उस औषधि का क्षरपराफट नहीं लगता है जिस औषधिको मुहमें छूनेसे विकार हो जातेह उसपरभी इसका गलेफ चढाके निगलना चाहिये (१३) सवा तोले गेहूँ और दो मासे रोधे नमकको पावभर पानीमें ओटा तीसरा भाग पानी रख छानके ७ दिनतक पिलानेसे खासी मिटती है (१४) दो तोले गेहूँके सतको किसी बरतनमें रात्रीके समय थोड़े पानीमें घोलकर उसको प्रातःकाल पिलानेसे मूत्रकृन्ध मिटता है (१५) गेहूँ और शणके बीजोंके चूर्णको घीमें तलकर उसमें गुड मिला लड्डू बांके खानेसे स्नायुक गल जाता है (१६) गेहूँ और चनोंको ओटाकर उनका पानी पिलानेसे वृक्क गुब्दे और मूत्राशयकी पथरी गल जाती है (१७) गेहूँको जला उनकी भस्ममें बराबर गुड़ और घी मिलाकर डेढ़ २ तोलेकी मात्रा तीन दिन देनेसे चोटकी पीड़ा मिटती है ।

संख्या ( १८५ )

( सं० ) गोमेदः, राहुरत्नः, तमोमणिः, स्वर्भानवः ।

मार्वाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोमेद	गोमेदमणि	गोमेद	गोगद	गोमेद	गोमेद	गोमेदक
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Onyx	Onyx	

इसके गुण—यह अम्ल, उष्ण, पाकमें लघु, पाचक, दीपन, रोचक और बुद्धिवर्द्धक है। वात, कफ, पित्त, क्षय, त्वचाके रोग, नेत्ररोग और कास को भिदानेवाला है ।

संख्या ( १८६ )

( सं० ) गोरची, सर्पदण्डी, दीर्घदण्डी, सुदण्डिका,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कलाविरछ	गोरखइगळी	रुखडो	गोरखविच			
द्राविड़ी	बर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Adansonia digitata.	The Babab-tree The sour gourd or monkey bread tree of Africa.	

स्थान—कलाविरछ के वृक्ष हिन्दुस्थानमें कहीं होते हैं।

परिचय—यह वृक्ष सबसे बड़ा और सबसे अधिक आयुवाला होता है इसकी ऊंचाई ६० से ७० फुट तक होती है इसके पेड़की गुलाई १६-२२ और ४० फुट तक होती है और कहीं २ स्कंधकी मध्य रेखा ३० फुटकी होती है जैसे पील, पलाश और बरगैके तीन २ पत्ते लगते हैं वैसेही इसके पाच, या सात २ पत्ते लगते हैं। उष्ण कालमें इसके पत्ते गिर जाते हैं और वर्षा ऋतुमें नवीन आजाते हैं इसका छोटा फल नीबू जितना और बड़ा फल १ फुट लम्बा और आलू जैसा होता है परन्तु पृथ्वी, जल और वायुके कारणसे फलका आकार बहुत बदल जाता है इसका स्वाद कुछ खट्टा होता है और इसमें भूरे बीज निकलते हैं।

फूलने फलने का समय—वैशाख और ज्येष्ठमें इसके पुष्प आजाते हैं इसके एक प्रकारका सफेद गोंठ लगता है उसमें किसी प्रकारकी गंध और स्वाद नहीं होता है। इसकी जड़में से लाल-रंग निकाला जाता है।

प्रयोग—(१) इसके फलकी गिरी चपदार, ठंडी, कुछ खट्टी और स्वादिष्ट होती है इसको ज्वरकी दाह कम करनेके लिये खिलाते हैं (२) इसकी छींड़ी रतीसे १० रतीतक गिरी मट्टेके साथ खिलानेसे अतिसार और आमोतिसार मिटता है (३) इसके पत्ते और छालमें भी चेष होता है (४) इसकी २॥ तोले छीलको १५ छटाक जलमें ओटा १० छटाक रख छानकर दिनभर में सव, पिला देनेसे पसीना आकर ज्वर उतर जाता है (५) इसकी छालके चूर्णकी फकी देनेसे, बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है (६) इसके काथ पर पीपल घुरकाके पीनेसे पाचन शक्ति बढ़ती है (७) त्वचाके रोगोंपर इसकी गिरीका लेप करना चाहिये (८) इसकी छालका काथ पिलानेसे पित्तकी

मस्तकप्रीडा मिटती है ( ६ ) इसकी छालके काथमें जौखार ढालके पीनेसे मूत्र की रुकावट मिटती है और मूत्रवृद्धि अधिक होती है ( १० ) इसकी लकड़ी जहरीली छूतको मिटाती है ( ११ ) इसके फलके बीजोंमें ज्वरनाशक शक्ति है ( १२ ) इसकी छाल और पत्तोंकी चटनी बनाते है ( १३ ) इसके सूखे पत्तोंको महीन पीसकर शरीरपर मर्दन करनेसे अधिक पसीना आना बन्ध होजाता है ( १४ ) इनके चूर्णकी फकी देनेसे भूख बढ़ती है ( १५ ) गुजरातमें इसके पत्तोंको भोजनके साथ खाते हैं इनसे शीतलता रहती है ( १६ ) इसके फलोंका शर्वत ठंडा और दाह मिटानेवाला है ।

संख्या ( १८७ )

(सं०) गौराणी, दृढबीजा, निशांध्यग्निः, सुशाका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
गवारफली	गवार	गुवार	गोवारी			गोरचिक
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Cyamopsis Psoralidza.		

स्थान—यह वर्षा ऋतुके प्रारम्भमें बहुतसे देशोंमें बोयाजाता है ।

परिचान—इसका गुल्म दो प्रकारका होता है। एक २, ३ फुट ऊंचा बढ़कर फैल जाता है और दूसरा सीधा जो ५, ६ फुट ऊंचा बढ़ जाता है। इसकी फली २, ३ इंच लम्बी होती है ।

प्रयोग—( १ ) पित्तातिसार मिटानेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये ( २ ) तिल और गवारको कूट जलमें राधकर चोट या मोच की सूजनपर बाधना चाहिये ( ३ ) यह शीतल, रुक्ष, मधुर, पचनेमें भारी, कफकारक, पित्तनाशक और अग्निको दीप्त करनेवाली है ( ४ ) इसके पत्ते पित्तनाशक हैं ( ५ ) पत्तोंके रसका अजन करनेसे रतौंधा मिटता है ( ६ ) इसके पत्तोंको

शाक खानेसे रतौधा मिटाताहै ( ७ ) इसकी फलियोंका शाक बनाकर खातेहैं परन्तु निर्बल और घादीकी भकृतिवालेको नहीं खिलाना चाहिये, क्योंकि इससे पेट में आध्मान ( अफारा ) और शूल हो जातीहै। गँवारकी बहुधाकी-मल कच्ची फलियोंको सुखाके रख छोडते हैं जब चाहे तब उनको घी या तेलमें तल उनपर नमक, मिरच, ( मसाला ) लगाकर खातेहै, गँवारकी खेती अधिक बाने का कारण यह है कि यह चाँपायों के खाने के काममें बहुत आता है।

संख्या ( १८८ )

( सं० ) गोरोचना, पिङ्गला, गव्या, मेध्या।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गोलोचन	गोलोचन	गोरोचन	गोरोचन	गारोचना	गोलोचा	गोरोजनसु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
गोरोजन	गोरोचन			Dosaurus	Gall stone Biliary concretion of a cow or bullock	

**पट्टिचान**—गौके पित्तको ( गोलोचन ) कहतेहै, इसकी गोली प्रायः जाय-फल जितनी बड़ी होतीहै कादके बिलेकेकी जैसे इसके पुडतपर-पुडत, जमेहुए होतेहै, इसके टुकड़े पीलास लियेहुए नारजी, रगके होते है।

**गुग्गु**—यह शीतल और कडवाहै उन्माद, गर्भस्त्रान, कृमि, अरुचि, कुष्ठ, भूतग्रह, विष, रक्तविकार और नेत्ररोगको मिटाताहै, वीर्यको बढ़ाताहै और ज्वरके रुधिरको रोकताहै।

संख्या ( १८९ )

( सं० ) घृत, आज्य, हविः, सर्पिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
घी	घी, घृत	घी	तूप	घि, घृत	घी	जैधिय

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नैय	तुप्पा	समन	रोगनेज्द	Butyrum Depuratum	Clarified butter

घृत आठ प्रकारके होते हैं इनमें गौका घृत सबसे उत्तम होता है। जहाँ कहीं विशेष घृतका नाम नहीं लिखा हो वहाँ गौका घृत लेना चाहिये।

प्रयोग—( १ ) यह ठण्डा शिथिल करनेवाला और आमाशयकी पीड़ा मिटानेवाला है ( २ ) वाणी, सुंदरता, शरीरकी कान्ति, मेदके भाग और मानसिक शक्तियोंको बढ़ाता है ( ३ ) नेत्ररोग, उन्मत्तता, आध्मान, पीडा सहित अतिसार, फोड़े और घाव आदि रोगोंमें इसका प्रयोग बहुत लाभकारी है। और अलग रोगोंमें अलग रीतिसे काममें आता है ( ४ ) घी को शुद्ध करनेकी रीति यह है कि इसको अग्निपर अच्छा गर्म करके उसपर से उतार के कुछ देतक पडा रखें जब इसमें झाड़ और पानी पैदे बैठ जाय तब कपड़ेमें छानकर काममें लायें ( ५ ) जिस रोगको मिटानेके लिये गौघृत बनाया जावे उसी रोगकी औषधियोंके काथ या कल्कमें आटेके बूनाते हैं कई रोगोंके लिये कई प्रकारके घी बनाये जाते हैं कोई घृत खानेके कोई पानेके, कोई मर्दनके, कोई सुंघनेके और कोई वस्तीके काममें आते हैं ( ६ ) घृतका पाक तीन प्रकारका होता है मृदु, मध्य और स्खर ( ११ ) ताजा घी खानेके काममें और पुराना घी औषधिके काममें आता है ( १२ ) १० वर्षका घी पुराना कहाजाता है उसमें बहुत तेज, चरपरी, सुगंध होजाती है और उसका रंग लाखा जैसा होजाता है घृत जितना पुराना होवे उतना ही उसका गुण अधिक होता है ( १३ ) १०० से १००० वेरतक ठण्डे जल से धोया हुआ घृत कई रोगोंको मिटाता है। धोया हुआ घी साबुन और भाग जैसा कोमल होजाता है यह ठण्डा और शिथिल करनेवाला है। स्नायुपीडा किसी अंगका शून्य और निश्चष्टपन, स्नायुकी अस्तक पीडा, श्वास, गठियाके रोग जोड़ों का करहापन, शरीर हाथ या पैरोंकी दाह और नेत्ररोग आदि बहुतसे रोगोंमें बहुत काम आता है ( १३ ) ज्वरकी बहुत बढी हुई ऊष्माको घटाने के लिये धोया हुआ घृत शरीरपर मलना चाहिये ( १४ ) पुराने घीमें हींग मिलाकर

सुंधानेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै ( १५ ) पुराने घीमें हींग और सैधानमक  
 मिलाकर सुंधानेसे ज्वर छूटताहै ( १६ ) साँठके कल्क से घनाया हुआ घृत  
 मंग्रहणी, पांडुरोग, प्लीहा, कास और ज्वरको मिटाताहै ( १७ ) घी और दूध  
 मिलाकर पिलानेसे अफीम आदिके विष उतरतेहै ( १८ ) घी और मधुको  
 गौरे गोबरके रसमें मिलाकर पिलानेसे रक्तपित्त मिटताहै ( १९ ) रक्त-  
 पित्त मिटानेके लिये १०० बर धूपहुए घीको मस्तकपर लेप करना चाहिये ( २० )  
 कुँछ उष्ण घी पिलानेसे हिचकी बन्धे होजातीहै ( २१ ) भोजन किये पीछे  
 घीमें काली मिरचका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे स्वरभंग मिटताहै ( २२ ) जीरे  
 या धनियेके कल्कसे सिद्ध किये हुए घीके सेवनसे विमन, अरुचि और मन्दा-  
 ग्नि मिटतीहै ( २३ ) अठारे भाग पेटेके रसमें एक भाग घृत सिद्ध करके काममें लाने  
 से पित्तविकार मिटतेहै ( २४ ) पलासके चारसे सिद्ध कियाहुआ घी रक्त गुल्मको  
 मिटाताहै ( २५ ) धनिया और गोम्वरुके काथ और कल्कसे सिद्ध कियाहुआ घी  
 पिलानेसे मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और शुक्रदेप मिटताहै ( २६ ) गायके घीमें सैधानमक  
 मिलाके पीने और लेप करनेसे अडवृद्धि मिटतीहै ( २७ ) घृत और सैधे-  
 नमकको पानीमें खरलकर गर्म लेप करनेसे शीतपित्त मिटताहै ( २८ )  
 घृतमें सैधानमक मिला कुँछे गर्मकर अभ्यङ्ग करनेमें शीतपित्त मिट-  
 ताहै ( २९ )  
 १०० बर पानीसे धोये हुए घीका बार २ लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै  
 ( ३० ) शिररोगमें धोयेहुए घीका बार २ मर्दन करना चाहिये ( ३१ ) चार-  
 भाग अट्टसेके रसमें एक भाग मी डाल करके सिद्ध कर सेवन करानेसे रक्त-  
 पित्त मिटताहै ( ३२ ) पटोलके या पटोल और साँठके कल्कसे सिद्ध कियेहुए  
 घीका सेवन करनेसे कफ, पित्तके विकार मिटतेहै ( ३३ ) शतावरीके रक्तसे  
 घृत सिद्ध कर सेवन कराने से अम्लपित्त, वातपित्तजनितरोग, रक्तपित्त  
 तृषा, मूर्छा, श्वास और संताप मिटते हैं ( ३४ ) घृतके सुंधनेसे आधाशीशी  
 मिटतीहै ( ३५ ) ज्वरमें कफ मिटनेसे १२ रात्री पीछे घृतका सेवन कराना  
 चाहिये ( ३६ ) घृतमें सैधानमक मिलाकर पिलानेसे वातजनितछटि बन्ध  
 होतीहै ( ३७ ) दूधमें ग्री मिलाकर पीनेसे पित्त शान्त होताहै ( ३८ ) साँठके  
 कल्क और काथसे सिद्ध कियेहुए घीका सेवन करनेसे वात, कफ और वटि-  
 श्ल मिटतीहै ( ४६ ) चौगुने काजीके जलमें साँठके कल्कसे सिद्ध कियेहुए

धीका सेवन करनेसे आमवात और मंदाग्नि मिटती है ( ४० ) पीपलके काष्ठ और कल्कसे बनायेहुए धीको मधुमें मिलाकर चटानेसे परिणामशूल मिटती है ( ४१ ) ५० उत्तम हरद और ८ तोले संचलनान इनस एक सेर धीको चौगुण जलमें सिद्धकर उसका सेवन करानेसे श्वास, गुल्म, हृद्रोग, उदररोग, और वातरोग मिटते है ( ४२ ) अर्जुनके कल्क और रससे धी बनाकर उसका सेवन करानेसे सर्व प्रकारके हृद्रोग मिटते है ( ४३ ) एक सेर धी और ८ तोले चित्रकका कल्क दुगुने गोमूत्र और चौगुने जलमें ढाल सिद्धकर उसमें जौखार मिलाकर पिलानेसे उदरविकार मिटता है ( ४४ ) धीको २१ वेर धोकर मर्दन करनेसे भिड़ और मक्खीका विष उतरता है ।

संख्या ( १६० )

( सं० ) नवनीतः, मृच्छां, सरजं, कलम्बुटम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
माखण	मक्खन	माखण	लोखी, लोन	ननि, माखन्	मक्खन	बेला
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
वणै, वेजै	बेण्ये	जबद	मस्का	Dutyram		Butter

प्रयोग--( १ ) वकरीके मक्खनका मर्दन करनेसे गमा और खुशकीकी मस्तकपीड़ा मिटती है ( २ ) मक्खनमें मिश्री मिलाके खिलानेसे कंठकी खुशकी मिटती है ( ३ ) मक्खनका शरीरपर मर्दन करनेसे बल बढ़ता है और शोथरोग मिटता है ( ४ ) गौके दूधमेंसे निकालेहुए मक्खनमें मधु और शकर मिलाके खानेसे रक्तातिसार मिटता है ( ५ ) मक्खनमें नागकेसरका चूर्ण और शकर मिलाकर चटानेसे अर्शका रुधिर बन्ध होता है ( ६ ) मक्खनमें तिल मिलाके खानेसे अर्शका रुधिर बन्ध होता है ( ७ ) मक्खनमें मधु और शकर मिलाकर चटानेसे या दूध, धी और मधु मिलाकर पिलानेसे क्षयरोग मिटता है । ( ८ ) मक्खन और मिश्री चटानेसे जायफलका मद उतरजाता है ( ९ ) पैरके तल-चोंपर मक्खनका लेपकर उनको तपानेसे दाह मिटती है ।

संख्या ( १६१ )

(सं०) घृतकुमारी, गृहकन्या, स्थूलदला, दीर्घपत्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गवॉरपाठे	धीगुवार	कुवार	कोरफड	घृतकुमारी	कुआरगदल	फलावद
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
फत्तलै(इ)	लोलसरे	नवतेसिवारा	दररुतेसिन	Aloe vera A. barbadensis	Babaco Aloe Indian aloe	

स्थान—धीगुवार हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाता है ।

पहिचान—यह कई जातिका होना है इसका उचाई प्राय २॥ फुटकी होती है इसके श्वेत रंगकी एक जड़ होती है इसके पेदड़ नहीं होती है इसके पत्ते भीतरकी ओरस दबे हुए और बाहिरकी ओरसे उठ हुए साफ हरे रंगके और गिरदार होते हैं ये जड़ की ओरसे चोड़े और अन्तमें नोकदार होते हैं इनके दोनों किनारों पर कुछ मुड़े हुए छोटे कटे हांते हैं । पत्तोंके बीचमें उनसे लंबी छिनगेदार एक डही निकलती है उसको मारवाड़ीमें गवॉरपाठेकी फली कहते हैं ।

प्रयोग—ग्वारपाठेके पत्तेका ताजा रस रेचक और ठंडा है ( २ ) इसके रसको गर्मकर लेप करनेसे आखकी पीड़ा मिटती है ( ३ ) ग्वारपाठेकी गिर पर हन्दीडाल गर्मकर बांधनेसे आखकी पीड़ा मिटती है ( ४ ) ग्वारपाठेकी गिर पर सोहागा बुरकाके खिला देनेसे तिल्ली मिटती है ( ५ ) ग्वारपाठेकी गिरको पकाके बांधनेसे फोड़ा जल्दी पकजाता है ( ६ ) ग्वारपाठेकी गिर ६ मासे, गोघृत ६ मासे इनमें हरडका चूर्ण और सेंधा नमक मिलाकर देनेसे गोलकी पीड़ा मिटती है ( ७ ) इसकी गिरपर पलाशका खार बुरकाके खिलाने से स्त्रियोंका मासिक धर्म शुद्ध होने लगता है ( ८ ) इसकी जड़को ओटा छान उसपर सेकी हुई हींग बुरकाके देनेसे पेटकी शूल मिटती है ( ९ ) इसकी गिर का चूरमा बनानेकी रीति—गेहूँके आटेमें धीका मोवन देकर उसको इसकी गिरमें ओसन बाठी बना सेर, मूट, छानकर उस वू में घृत और खांड मिला-



कर लड्डू बनाकर खानेसे कमरकी वादी मिटती है ( १० ) ऐसेही वादी बना  
 मेक घीमें चूकर खानेसे कमरकी, वादीकी पीड़ा मिटती है ( ११ )  
 अजवायनके ग्वारपाठके रसकी ७ भावना दे सुखा फिर नीगुके रसकी  
 सुखा २ कर ७ भावना देकर उसकी फकी देनेसे अजीर्ण, अध्मान,  
 मंदाग्नि और पेयकी पीड़ा आदि रोग मिटती है ( १२ ) इसके गूदेके रसकी  
 गूदे सोते समय कानमें टपकानेसे नेत्रपीड़ा मिटती है ( १३ ) इसकी एक मासे  
 गिरमें तीन रती अफीम मिलाके उसको पोटलीमें पाथ पानीमें भिगो २३ कर  
 नेत्रों पर फेरनेसे और एक दूध भातर डालनेसे नेत्रपीड़ा मिटती है ( १४ )  
 इसके रसको गर्भ कर दूसर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है ( १५ )  
 गवारपाठके रसमें ६ मासे, एलुवा और एक तोला बंगूलका गाँद मिला पीस-  
 कर पेदपर लेप करनेसे बालकका डब्बा मिटता है ( १६ ) इसकी एक तोले  
 जड़को पीस कुछ गर्म पानीके साथ पिलाकर वमन करानेसे त्रिपमज्जर कुटता  
 है ( १७ ) इसके रसमें घी मिलाकर सुघनेसे कामला रोग मिटता है ( १८ )  
 इसके पत्तेके एक औरका छिलका दूरकर उसपर सैधा नमक बुरकाकर कुत्तेके  
 दंशपर तीन दिन तक बांधनेसे कुत्तेका विष उतरता है ( १९ ) इसकी फली  
 ( गादल ) का शाक बनाकर खानेसे वृद्ध कोष्ठ मिटता है ( २० ) इसकी गादल  
 बहुत रोचक है । इसकी फलियोंको बनारके सुखा रखते हैं, उन मुखे लुए  
 डुकडोको "खेलरे" कहते हैं । इनको घीमें तल नोन मिरच तलाकर खाते हैं  
 ( २१ ) इसका आचार बनानेकी रीति — गवारपाठके पत्तोंके दोनों ओरके  
 काटोंको कुछ छिलके सहित अलग करके फिर उनके दो तीन अंगुलके कपे  
 काट कर ५ सेर लेलेवें उनमें पीसा हुआ आध सेर नमक डालकर खब  
 हिलाकर सुघ वन्ध करके तीन दिन धूपमें धर देवें और तिनमें २२-३३ बेर  
 उड़ाया दे दिया करें पीछे उसमें १० तोले हल्दी, १० तोले धनियां, १० तोले  
 सफे जीरा, १५ तोले लाल मिरच, ६१ तोले मेकी हुई हींग, ३० तोले अज-  
 वायन, १० तोले सोंठ, ७१ तोले काली मिरच ७१ तोले पीपल, ५ तोले लोंग, ५ तोले  
 दालचीनी, ५ तोले सोहागा, ५ तोले अकलकरा, १० तोले सियाह जीरा ५  
 तोले लड़ी इलायची, ३० तोले जवाहरदूध, ३० तोले सांफ और ३० तोला राई  
 इनमें जवाहरदूध को सांफ ही रख और सब को महीन कूट कर उसमें मिला दें

रोगीको यलाबल देखकर ६ मासेसे ३ तोले तक इसकी मात्रा देवे इससे पेटके वात, कफ संमन्धी कई विकार मिटतेहै यह आचार सुग्व जावे तो उसकी फकी देवे या आशादिक और दालमें मिलाके खिलावे, यह रोगीके ही काममें नहीं आताहै, किन्तु रोचककी रीतिपर हरेक मनुष्य के काममें आताहै ।

संख्या (१६२)

(सं०) रक्तघृतकुमारी ।

Alp. Rubesc.

स्थान—इसके गुल्म बंगाल, पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान और और भी कई ठौर होतेहै । इसके नारंगी और कुछ लाल पुष्प लगतेहै । इसके पत्तोंकी जड़ बैजनी-रंगकी होतीहै ।

प्रयोग—(१) इसकी गिरका हनुवा-बुनाकर विलानेसे अर्शरोग मिटता है । (२) इसके रससे बनेहुए एलुवेको ज्वण जलमें गला, जागरनेलके पान पर उसका लेपकर उस को उच्चके पेटपर चप देनेसे बच्ची दस्तकी रूकावट मिट जातीहै, अर्थात् एक-दो-पदुवेग-लग जातेहै । (३) इसको स्फिरिट म गलाकर लेप करनेसे बाल काले पड़ नातेहै । (४) बाल उगानेके लिये भी यही लेप करना चाहिये । (५) गुलाबके इश्रमें गलाके लगानेसे नेत्रोंकी कई प्रकारकी पीड़ा मिटतीहै । (६) इसको निशोतकी साथ देनेसे बद्धकोष्ठ मिटतीहै । (७) बच्चोंकी आतोंके नीचे मारनेके लिये यह नुहुत उत्तम औषधिहै । (८) इसके गाँद जैसे सूतका लेप करनेसे शोथ-विस्त्रा जातीहै । (९) पकाशुसके उपद्रवके कारणसे जो मस्तकमें रोग होतेहै उनको मिटानेके लिये अथवा चित्त उदास रहता होवेतो इसका सीरा देना चाहिये । इसमें गुलाबका, गुलकुंद और रूमिस्तकी मिलानेसे पेटमें म-ठोटी नहीं चलतीहै । (१०) रातकी सोते समय इसकी गोली देनेसे प्रभात में साफ दस्त लगनेसे अर्शकी पीड़ा मिटजातीहै । (११) ताजी गिरमें हल्दी मिला गर्मकर लेप करनेसे चोटकी सूजन और पीडा मिटतीहै । (१२) इसकी गिरको फिटकड़ीके रसपानीसे पीसकर गर्मकर लेप करनेसे नेत्रोंसे पानी और पूयका बहना बन्ध होजाताहै । (१३) इसके गाँद किये हुए रसमें हींग मिला

गर्मकर वृक्षोंके पेटपर लेप करनेसे शूल और फुफ्फुस सम्बन्धी रोग मिटते हैं (१४) इसके आधीरती रसमें आधीरती सोहागा मिलाकर माके दूधके साथ देनेसे भी उक्त रोग मिटते हैं (१५) पेटपर इसका लेप करनेसे बद्धकोष्ठ और अफारा मिटता है (१६) इसके पीले रसमें हल्दी मिला गर्मकर लेप करनेसे तिखी मिटती है (१७) इसको खिलानेमें भी तिखी मिटती है (१८) थोड़े गंधक के साथ एलवे की गोली बनाके देनेसे अर्शकी पीड़ा मिटती है (१९) गवॉरपाठेकी गिरको अजवाण और नॉनके साथ खिलाने से पेटकी शूल और मंदाग्नि मिटती है (२०) इसके गाढ़े किये हुए रसमें शकर मिलाके देनेसे मुजाक मिटता है (२१) इसके पत्तोंके ताजे रसको दूध और जलकी साथ पीनेसे मुजाक और गर्भाशयकी पित्तशोथ मिटती है (२२) इसके प्रयोग से औषधियोंकी चरपराहट और शरीरकी शिथिलता मिटती है (२३) इसके प्रयोगसे लघु विरेचन होता है (२४) इसकी ताजी गिरमें शकर मिलाके खिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और दाह मिटती है और मूत्र अधिक आने लगता है (२५) इसकी कोमल गिर खानेसे गठिया मिटती है (२६) इसकी गिरका दो दाई अंगुल चोखुटा गिरीदार टुकड़ा ले उसपर आधीरती कसीस और आधीरती हींग बुरकाके खिलानेसे तिखी और दस्तकी कब्जें मिटती है (२७) आधीरती एलुवा आधीरती कसीस और आधीरती हींगकी गोली बनाकर देनेसे तिखी मिटती है (२८) इसके गिरदार टुकड़ेका एक ओरका छिलका दूरकर उसपर रसोत और हल्दी बुरका गर्मकर बांधनेसे बद्धखिलर जाती है (२९) इसके एक ओरका छिलका दूरकर अग्निपर रख उसपर थोड़ी अफीम और हल्दी बुरकाकर उष्ण होनेसे उतार उसका रस निकालके खिलानेसे चौथैया ज्वर छूटता है।

संख्या (१६३)

( सं० ) लघुवृतकुमारी ।

Aloe Indica

स्थान—यह छोटा गवॉरपाठा मद्रास अहातेके दक्षिण किनारे पर बहुत होता है।

**पहिचान**—इसके पीले पुष्प लगतेहैं जड़में इसके पत्तोंकी चौड़ाई लाल पुष्पवाले गव्वारपाठके पत्तोंसे आधी होतीहै । इसके पत्ते प्रायः पौनहाथसे एक हाथ तक लम्बे होतेहैं ।

**प्रयोग** ( १ ) इसके पत्तेकी गिरको ठण्डे पानीमें भली भांति धो उस पर मिथी घुरकाके खानेसे शरीरकी ऊप्मा और रुधिरके भ्रमण का वेग कम हो जाताहै ( २ ) ऐसे साफ की हुई गिरपर फुलाईहुई थोड़ी फिटफुडी घुर्का के बांधनेसे नेत्रपीड़ा मिटतीहै ( ३ ) इसके गाढ़े कियेहुए रसकी एलुवे जितनी मात्रा देनेसे तीव्र विरेचन लग जाताहै ( ४ ) इसके गीले और सूखे रसमें बराबर गुणहैं ( ५ ) शरीरके ऊपरकी सूजनपर इसके ताजे रसका लेप करना लाभकारीहै ( ६ ) इसके ७॥ तोले ताजे पत्तोंका बनारक ३०में ११। मासे नमकमिलाके जलमें इतना गर्म करें कि आंठने लग जावे तब छान उस में २॥ तोले मिथी मिला ठंडाकर प्रातःकाल पिलानेसे विरेचन लगके तिथी कम हो जातीहै ( ७ ) इसकी जड़का काथ पिलानेस ज्वर छटताहै ॥

संख्या ( १६४ )

( सं० ) वीरास्त्रावः, एलीयुकः, कृष्णबोलः, कुमारीसारोद्धवः ।

मागवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
एळयो	एलुवा	एळीयो	एळयाबोळ	मुसव्वर	एलुवा	
द्राविही	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अग्रेजी	
		सिन्न	सिन्न	Aloe succotrina	The socotrine aloes of commerce The yamani or Moka aloes of Bombay	

**प्रयोग**—( १ ) इसकी थोड़ी मात्रा देनेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै आर बल बढ़ताहै ( २ ) इसकी अधिक मात्रा देनेसे विरेचन लगताहै ( ३ ) रजस्वलाके रुकेहुए रुधिरको निकालनेके लिये अधिक मात्रा देनी चाहिये ( ४ ) स्त्रियोंके एक खास रोग जिसको स्त्रियोंके आवेशका रोग कहतेहैं उससे और आतोंके पट्टोंकी निर्मलतासे पैदाहुए बद्धकोष्ठको मिटानेके लिये इसका प्रयोग

करतेहै ( ५ ) मंदाग्नि, कामला और पांडुरोगको मिटानेके लिये इसकी थोड़ी रमात्रा देनी चाहिये ( ६ ) इसको सिरकेके साथ पीसकर मर्दन करके त्वचाके रोग मिटतेहै ( ७ ) इसको और अफीमको जलके साथ पीसकर लेप करनेसे पित्त, शोथ और मुरडकी पीडा मिटतीहै ( ८ ) नाभिके चारों ओर इसका लेप करनेसे दस्त आके अफारा मिट जाताहै ( ९ ) पेहू अर्थात् नलोंपर इसका लेप करने से कष्टमे रजस्त्रलाहोना मिटताहै ( १० ) जो बच्चा रेंक और पथि नहीं पी संकता हो उसके पेटपर साबुनके साथ इसका लेप करनेसे दस्त साफ होजाता है ( ११ ) चोट या मोचसे पैदाहुई सूजनको मिटानेके लिये चनेके पानीके साथ या गर्म पानीके साथ इसका लेप करना चाहिये ( १२ ) एलुवा, अफीम, बोल और अंडेकी सफेदीका लेप करनेसे डर तरदकी सूजन बिलख जातीहै और उसकी पीडा मिट जातीहै ( १३ ) इसके बराबर कत्था ले दौनोंको पीस के लगानेसे नाड़ीव्रण मिटताहै ( १४ ) एलुवा और इंडोली दोनोंको बराबर ले महीन पीस, गर्म करके लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( १५ ) प्रीसाहुआ थोडासा एलुवा चमेलीके तेलमें डाल गर्म कर कानमें डालनेसे कानकी खुजली मिटतीहै ( १६ ) गर्मीके कारण से कानमें कांढे पडगये हों तो एलुवा पानीमें पीस कानमें डालनेसे कांढे मरजातेहै ( १७ ) एलुवा, सोहगा और बीजाडोलीकी चने प्रमाण गोलिया बना दिनमें दोबेर दो दो गोली देनेसे थासरोय मिटताहै ( १८ ) सबजी दूरकिया हुआ जमालगोटा और एलुवा दोनों समान भाग ले बाछियाके मूत्रके साथ लोहेकी खरखमे लोहेके दस्तेसे चोट संगप्रमाण गोलिया बना बालककी अवस्था देखकर माके दूधके साथ गोली देनेसे प्रसलीके रोग मिटतेहै ( १९ ) एलुवे का लेप करनेसे स्नायुक ( नारु ) गलजाताहै।

संख्या ( १९५ )

( सं० ) चक्रमर्द, प्रपुत्राट, एडगज, ददुघनः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
प्रवाडिया	प्रमाड(र)	कुवाडियो	टाकळा	चाकन्दा	पवाड	तगिरिस

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
ताहार।च्चवि	सुगरेगिडा	सजसवोयाह	सगसवोया	Cassia Tora	The loc id cassia. Oval leaved cassia.

स्थान—पवांडके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पहिचान—इसका पोधा २ फुट ऊंचा होताहै । यह वर्षाऋतुका वृक्षहै । इसके बीजोंमेंसे नीला रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—( १ ) मलको ढीला करनेके लिये इसके पत्ते काममें लातेहै ( २ ) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे दाद और पाव मिटतेहै ( ३ ) इसके बीजोंको छाछमें ३ दिन भिगो महीन पीसकर शरीरपर मर्दन करनेसे पाव और खुजली मिटतीहै ( ४ ) इसके बीजोंको धूरके रसमें भिगो गोमूत्रमें पीस छिड़डेवाली गाठोंपर लेप करना चाहिये ( ५ ) इसके और करंजके बीजोंका लेप करनेसे दाद मिटताहै ( ६ ) इसके बीज और पत्तोंकी प्रकृति गलानेवाली या पतली करनेवालीहै ( ७ ) इनका लेप करनेसे त्वचाके बेरोग मिटतेहै कि जिनमें चमडी कड़ी होजातीहै ( ८ ) महामारीकी गांठपर इसके पत्ते या बीजोंका लेप करतेहै ( ९ ) इसकी जड़को नीचूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै ( १० ) इसके चमदार और दुर्गंधवाले पत्ते सारकह, इस कामके लिये इनको थोटाकर पीतेहै ( ११ ) जिन बच्चोंको दात उगनेके कारणसे ज्वर आताहो उनको इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये । ( १२ ) पत्तोंको एरंडके तेलमें तली, पीसकर गिण्ड हुए फोडोंपर लेप करतेहै ( १३ ) पाव या त्वचाके दूसरे रंगवाले रोगीको इसके पत्तोंके काथसे स्नान कराना चाहिये ( १४ ) इसके कोमलपत्तोंका शाक बनातेहै ( १५ ) इसके बीजोंको सेक पीसके या इनको आंटाके काफीकी ठौर काममें लातेहै ( १६ ) इसके बीज और आकंडके फूलोंको खट्टे दहीमें पीसके लेप करनेसे दाद मिटताहै ( १७ ) पवांडके बीज १ सेर गायकादूध दोसेर घी पावभर और २ तोले गंधक इनको थोटा दूध जलजानेके पीछे पीसकर मर्दन करनेसे दाद पांव और खुजली मिटतीहै ( १८ ) इसकी जड़को चापलोंके धोवनके साथ पीसके मात काल पिलानेसे जलप्रदर मिटताहै ( १९ ) पवांडके बीजोंके

४-४मासे चूर्णकी फकी २१ दिनतक देनेसे कफ और खाँसी मिटतीहै (२०) इसके बीजाँको पानीमें इतने दिनतक भिगावें कि वे सड़जावे तब उनको पीसकर शरीरपर मर्दन करके गर्म जलसे स्नान करलेनेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं ( २१ ) इसके बीजाँके चूर्णको दही और जलमें दोतीन दिन भिगा-शरीरपर मलकर उष्ण जलसे स्नान-करनेसे भाई दूर होतीहै ( २२ ) अन्तार-लोग सनायके पत्तोंमें इसके पत्ते मिला देते हैं ।

संख्या ( १६६ )

( सं० ) चचेंडा, चिचंडः, श्वेतराजी, अहीफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चचेंडा	चिचेंडा	पडोला	पडोळ	चिचिण्डा		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अङ्गरेजी	
				Trichosanthes angulina.	The snake gourd	

स्थान—चचेंडाकी बेलें हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोई जातीहैं ।

पहिचान—इसके पीले पुष्प लगतेहैं जब इसके फल पकतेहैं तब वे एकसे तीन फुट तक लम्बे चमकदार और नारंगी रंगके हो जातेहैं । जबतक कच्चे रहतेहैं तबतक उनपर लम्बाईमें सफेद धारियें बनी रहतीहैं ।

प्रयोग—( १ ) इसके बीज शीतल होतेहैं । ( २ ) इसके फल वात पित्त को मिटातेहैं । बल और रुचिको बढातेहैं और शोथ रोगवालेको बहुत हित-कारीहै जबतक इसके फल केवल ४ इंच लम्बे रहतेहैं तबतक उनका शाक बहुत स्वादिष्ट होताहै ।

संख्या ( १६७ )

चणक, हरिमन्थः, कृष्णाचूचुक, बालभोज्यः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चिया	चने, छोले	चण्या	हरभरे, चणे	बुद्, छोला	छोले	रणगुलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कडलै	कडलो	हिम्मस	नखूद	Clear Arctinum	Gram. The common gramor Chick pea	

स्थान—चने हिन्दुस्थानमें सबठौर बोये जातेहैं ।

पहिचान—चनेके बूटे २ फुट ऊंचे होतेहैं इनकी सीकोंपर आमने सामने कटुवां कंगूरेदार, कुछ गोल पत्ते लगतेहैं । इनके शोशनी रंगके पुष्प लगतेहैं । इसकी डालीके थोड़ी २ दूर पर चनोंकेदगेगरीयां लगतीहैं उन्नय १, २ या तीन चने निकलतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) चने पित्तविकार को मिटातेहैं ( २ ) मंदाग्नि, अजीर्ण और बद्धकोष्ठमें चनकाम्ल प्रयोग किया जाताहै. लोग भूलसे इसे न्यनग्वार कहतेहैं, इसको चणकाम्ल या चणकशुक्त कहता. चाहिये: ( ३ ) चणकाम्ल बनाने की यह रीतिहै “कि जिन दिनोंमें आंस पडने लगे उन दिनों में सूरज उगनसे पहिले चनोंके खेतमें जाकर एक हल्की मलमल के टुकडेको चनेके बूटों पर फेरे जब वह गीला होजाय तब उसको चीनी, काच या मिट्टी अथवा पत्थर के बरतनमें निचोडके बोतलमें भरकर रखछोडें अथवा उस कपडे को नित्य भिगो २ के सुखा देनेसे वह कई दिनोंमें गाढा होजाताहैं जब शाक आदि में खटाई देनी हातो उस कपडेमेंसे जरासा टुकडा कतर पानीमें भिगो पलके उसा पानीको शाकमें डाल देतेहैं जिससे उसमें अच्छी खटाई होजातीहै । अतार लोग इसके बदलेमें गंधकके तिजायको हल्का कर उसमें कुछ रंग देके चणकाम्ल के नामसे बेच दिया करतेहैं ( ४ ) गर्मीके दिनोंमें चणकाम्लको जलमें मिलाके पीनेसे ठण्डाई रहतीहै ( ५ ) ६ मासे सिरका और ६ मासे चणकाम्ल मिला कर पीनेमें अजीर्ण मिटताहै, ( ६ ) अतिसार मिटानेके लिये इन दोनोंको मिलाकर कुछ दिनोंतक पिलाने चाहिये ( ७ ) इसको थोड़े जलमें डालके पिलानेसे लू वा असर मिट जाताहै ( १०. ) चनेके



सूखे पत्तोंको राजपूतानेमें पानसी कहतहै । जब गीले पत्ते नहीं मिलें तब सूखे पत्तोंको थोड़ा उनका पुण्डिस बनाके मोच या उतरेहुए हाथ पैरको पीछा बैठाके उसपर बाधतहै ( ११ ) पत्तोंके ताजे रसमें जौखान मिलाके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै ( १२ ) थोड़े से चणकाम्लको पानीमें मिलाके ज्वरवाले को पिलानेसे उसकी तृषा और दाहकी घबराहट मिटजातीहै ( १३ ) जिस स्त्रीके कष्टसे मासिक धर्म होता हो गर्भ पानीमें एक चनेका बूटा रखके उसपर उस स्त्रीको बैठा देना चाहिये अथवा चणकाम्लको जलमें डाल आटाके उसको बफारा देना चाहिये ( १४ ) जिस मनुष्यके शर्कराशरीर होवे अथवा जिसके पथरी होनेकी सम्भावना होवे उसको चणकाम्लका सेवन बहुत कम करना चाहिये ( १५ ) चनोंको पानीमें भिगा कर उस पानीको पीनेसे बल बढ़ताहै ( १६ ) जिस पानीमें चने भिगाये हों उस पानीको पिलानेसे वमन बन्ध होतीहै ( १७ ) छांला का हिम पिलानेसे पित्तके विकार मिटतहै ( १८ ) चणकाम्लमें नीमके कौमल पत्तोंको पीसके लेप करनेसे कोढ़ मिटताहै ( १९ ) चणकाम्लको कुछ जलमें मिलाके पीनेसे तिष्ठी कम होतीहै ( २० ) श्वासकी नलीके कफको मिटानेकेलिये रातको सोते समय सेकें हुए थोड़ेसे चने खाकर ऊपर गर्भ दूध पीलेना चाहिये ( २१ ) जीका मचलाना मिटानेके लिये चणकाम्लको जलके साथ पीना चाहिये ( २२ ) चणकाम्लमें लौंग बुगकाके पिलानेसे वमन मिटतीहै ( २३ ) विसूचिकामें चणकाम्लका प्रयोग किया जाताहै ( २४ ) गीले सेकेहुए चनों को मागवाडी भाषामे डोले कहतहै ये खानके काममें आतहै ( २५ ) इनको पानीमें भिगाकर अन्तर्दाह मिटानेके लिये उस पानीको उष्णकालमें बच्चाका पिलाया करतहै ( २६ ) इनको पानीमें भिगाकर उस पानीको पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै ( २७ ) इसके आटेका उबटना फंगनेसे शरीरका रंग गोरा हो जाताहै ( २८ ) ५ तोले चनेकी दालको आधपात्र जलमें भिगों प्रातःकाल खुब मसले बूग मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै ( २९ ) चनोंकी भुम्सी हुक्में तमाखूकी तरह पीनेसे हिचकी बन्ध होतीहै ( ३० ) ३॥ तोले चने पाव पानीमें थोड़ा आधा पानी रखकर पिलानेसे जलंधर कम होताहै ( ३१ ) धुनेहुए चने और ब्लीली हुई बादामकी गुली दोनों बराबर ले नित्य दोनों समय खानेसे बल बढ़ताहै ( ३२ ) चनोंके

होले खानेसे वीर्य पुष्ट होताहै ( ३३ ) चनोंके आटेकी अलोनी रोटीमें घी डालकर खानेसे जोड़ोंकी पीडा मिटतीहै ( ३४ ) चनेके आटेमें गुग्गुलु मिला टिकिया घना उसको बदपर बांध उसपर नीमके गर्म पत्ते बाधनेसे बढ वैठ जातीहै । सूखे-सेकेटुए चने खानेके काममें आतेहैं । चनेके आटेको बेसण कहते हैं । चनेकी दाल और बेसण के कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनतेहैं ।

संख्या ( १६८ )

( सं० ) चन्दनं, श्रीखण्डं, मलयजः, गंधसारः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मगही	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चन्दन	सफेद चन्दन	सुखलक्ष्यचन्दन	चन्दन	चन्दन	सुफेदचन्दन	श्रीचन्दनमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
चन्दनकट्टे	श्रीगन्ध	संदलेअम्फर	सदलेसुफेद	Bantalum album Sijrum Myrtifotum	The white sandal wood tree	

स्थान—चन्दनके वृक्ष मेसोर, कोयम्बटूर सलीमसे दक्खिन मदुरा तक और उत्तर में कोल्हापुर तक बंवाई अहाता, पूना, गुजरात, राजपूताना मध्य हिन्दुस्थान और हिन्दुस्थान के उत्तर भागमें किसी २ ठौर बोये जातेहैं ।

परिचय—चन्दनका वृक्ष छोटा होताहै, इसकी ऊंचाई ४० फुटतक होतीहै । यह १२ महीने, हरा भरा, रहताहै अर्थात् वसंत ऋतुमें पत्ते नहीं गिरतेहैं । इसके पेदङ्ककी गुलाई ३ फुटकी होतीहै, डालियां पतली और लटकती, हुई होतीहैं । इसके पत्ते हलके होतेहैं और एक दूसरेके आमने सामने लगतेहैं । इसके पुष्प कुछ भूरे गहरे बेंजनी या लाल रंगके गंध रहित होतेहैं । फल काले रंगके लगतेहैं उनमें एक २ बीज निकलताहै । पृथ्वीमेंसे रस ऊंचा चढ़ानेवाली इसके पेदङ्कके भागकी लकड़ी सफेद रंगकी और त्रिगंध होतीहै । मध्य भाग की लकड़ी कुछ पीली, भूरे रंगकी और अत्यन्त सुगंधवाली होतीहै । चन्दनके बीजोंमेंसे दशाहा और चैपदार तेल निकाला जाताहै वह जलानेके काममें आताहै । चन्दनकी लकड़ीमेंसे जो तेल निकाला जाताहै वह स्वच्छ और पीले रंगका होताहै इसकी जड़ोंमेंसे भी बहुत अच्छा तेल निकलताहै ।

प्रयोग—( १ ) चन्दन कई प्रकारके होतेहैं उनमें श्वेत, रक्त और पीत ये तीन मुख्यहैं ( २ ) चन्दनकी लकड़ी कड़वी ठण्डी और ग्राही होतीहै ( ३ ) यह पित्तविकार, वमन, ज्वर, तृषा और शरीरकी दाह को मिटाताहै ( ४ ) चन्दन का लेप करनेसे, मुहांसे, ऊपर बढनेवाली जल युक्त पित्त शोथ, खुजली और छोटी फुन्सियां मिटतीहैं ( ५ ) इसको जलके साथ घिसके आढा लेप करनेसे दाह युक्त मूजन मिटतीहै ( ६ ) ज्वरकी अधिक ऊष्मासे उत्पन्न हुई घबराहट मिटानेके लिये कनपटियों पर चन्दनका लेप करतेहैं ( ७ ) त्वचाके जिन रोगोंमें दाह और खुजली होवे उनपर इसका लेप करना चाहिये ( ८ ) चन्दनके प्रयोगसे पसीना आताहै ( ९ ) यह—रूक्ष, बलवर्द्धक, विपनाशक और हृदयका बल बढानेवाला है ( १० ) यह—हृदय, मस्तिष्क और आमाशयकी रक्षा करनेवालाहै ( ११ ) पित्तज्वरमें इसके प्रयोगसे शान्ति रहतीहै ( १२ ) त्वचाके ऊपरके छाले मिटानेके लिये चन्दनके तेलमें नींबूका रस और कपूर मिलाके मर्दन करना चाहिये ( १३ ) चन्दनके छोटे छोटे टुकड़े करके उनको थोड़े साजीखारके साथ पानीमें इतनी देरतक ओटाना चाहिये कि जबतक वे नरम पड़ जाय पीछे उनको उस जलमें निकाल, शकरकी चासनीमें डालके मुरब्बा बना लेना चाहिये । इस मुरब्बेसे दाह और तृषा आदि रोग मिटतेहैं ( १४ ) चारियलके जलमें चन्दनका बूर मिलाकर पिलानेसे तृषा मिटतीहै ( १५ ) उष्ण कालमें स्नान करनेके पीछे शरीर पर चन्दनका लेप करनेसे गर्मीकी चमचमाहट और बहुत पसीना आना बन्ध होजाताहै ( १६ ) मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये चन्दनके कई प्रकारके प्रयोग करतेहैं । गायके दूधके साथ चन्दन के बूरकी फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १७ ) जहां शीतल मिरच आदि औषधियां मूत्रकृच्छ्रको नहीं मिटा सकतीहैं वहां चन्दनके तेलकी १० से ३० तक बूंदे गायके दूधमें डालके दिनमें दो तीन बेर पिलाना चाहिये ( १८ ) दूध या दूधकी लासीमें इसकी ३० से ४० तक बूंदें डालके पिलानेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १९ ) ललाट या कनपटीपर चन्दनका तेल लगानेसे पित्तकी मस्तक पीड़ा मिटतीहै ( २० ) खांड में इसकी ३० बूंदें डालके दिनमें दो बेर फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( २१ ) चन्दन को घिसके कनपटियों पर लेप करने से पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटती है

(२२) सफेद चन्दनको घिस गोली बना दिनमें दो तीन घेर खानेसे रुभिरकी वपन बन्ध होती है ( २३ ) पिप्पलिसारमें इसका प्रयोग किया जाता है ( २४ ) चन्दन और खीरा ककड़ीको सुघानेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटती है ( २५ ) चन्दन और कपूरको गुलाब जलमें घिसकर सुघानेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटती है ( २६ ) चन्दन और धनियाके पत्ते सुघानेसे ढींके बन्ध होती है ( २६ ) चन्दनको शकर और मधुके साथ चटानेसे वपन बन्ध होती है ( २७ ) चन्दन को मधु, मिश्री और चावलके धोवनके साथमें लेनेसे पिप्पलिसार मिटता है ( २८ ) इसके एक तोले चूर्णको आंवलोंके रस और मधुमें मिलाकर पिलानेसे वपन मिटती है ।

संख्या ( १६६ )

( सं० ) रक्तचन्दनं, जुद्रचन्दनं, ताम्रसारं, अर्कचन्दनम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लालचन्दन	लालचन्दन	रत्ताजली	रक्तचन्दन	रक्तचन्दन	लालचन्दन	रक्तचन्दनम्
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शोणुशन्दन	रक्तचन्दन	संदलेअहर्गर	सन्दलेसुखी	Pterocarpus Santaliflora	Red sandal wood The sanlers red or red sanders tree	

स्थान—लालचन्दनके वृक्ष कुडापा, उत्तर अरकाट और करनूलके दक्षिण भागमें बहुधा मिलते हैं परन्तु अब मद्रास, बंबई और मजालहातेमें भी बोये जाते हैं ।

पहिचान—रक्तचन्दनको वृक्ष छोटा होता है । यह सूखी और बहुधा पथरीली भूमिमें, उष्ण और रुक्ष देशोंमें होता है, इसकी लकड़ीमेंसे लालरंग निकाला जाता है ।

प्रयोग—( १ ) यह ग्राही और बलवर्द्धक है और बहुतसे ग्राही प्रयोगों की औषधियोंमें मिलाया जाता है ( २ ) इसका इकल्लेका प्रयोग बहुत कम किया जाता है ( ३ ) इसका लेप करनेसे दाह और शोथ मिटती है ( ४ ) ललाट पर लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटती है ( ५ ) कई रोग मिटानेके लिये जो तेल बनाये

जातेहैं उनकी औषधियोंमें लालचन्दन मिलाया जाताहै ( ६ ) रक्तातिनामें लालचन्दनका प्रयोग किया जाताहै ( ७ ) जब कि अनिसारमें रुधिर और पित्तका सम्बन्ध होताहै तब श्वेत और रक्त, दोनों चन्दन दिये जातेहैं ( ८ ) तिलोंके तेलमें रक्तचन्दनको मिलाके स्नान करनेके पीछे, शरीरपर मर्दन करने से रुधिर शुद्ध होताहै ( ९ ) पित्तविकार और त्वचा के रोग मिटानेके लिये रक्तचन्दन खाने और लगानेके काममें आताहै ( १० ) ज्वरकी उष्मा कम करनेके लिये इसको पानीमें घिसके पिलाना चाहिये ( ११ ) फुन्सियों पर इसका लेप करना चाहिये ( १२ ) नेत्रोंकी ज्योति बलवान् करने लिये कतपही और आंखके पगोटों पर इसका लेप करना चाहिये ( १३ ) पसीना लानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै ( १४ ) इसको जलमें घिसके इन्दी आदि की त्वचा छिलजाने पर लेप करना चाहिये ( १५ ) पुराने आम्रातिसारमें कड़ाहुआ मवाद बन्ध होनेके पीछे इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये ( १६ ) इसको सैमनमरुके साथ स्त्रीके दूध में घिसकर नास देनेसे हिचकी बन्ध हो जातीहै ( १७ ) इसके साथ कपूरको घोटकर कई दिनों तक पीनेसे नकसीर बन्ध होजातीहै ( १८ ) इस प्रयोगसे मासिकधर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का निकलना बन्ध होजाताहै ।

संख्या ( २०० )

चन्द्रशूरं, वासपुष्पा, रक्तराजी, कालमेया ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
असालू	हालों	अरोळियो	अहाळीव	हालिम	हालू	अदिरवाल
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
अलिबिरे	अल्लिबीज	जरजीर	तराहतेजक	Lepidium Sativum	The garden cress The Cress	

स्थान—असालू हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै ॥

पहिचान—इसके बीजोंमें चेष होताहै ॥

प्रयोग—( १ ) असाह्य (बल बढ़ाती है और रुधिरको शुद्ध करती है) ( २ ) यह हिचकी, अतिसार और रुधिरविकारसे जो त्वचाके रोग होते हैं उनमें बहुत उपकारी है ( ३ ) यह उष्ण और रूक्ष है ( ४ ) इसके सेवनसे तिखी आदि घटे हुए रोग अपने योग्य आकारपर आजाते हैं ( ५ ) सर्दीके कारणसे जो कोई उपद्रव होजाता है उसको मिटानेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये ( ६ ) इसका काथ पीनेसे आमामशयकी पीड़ा मिटती है और आमामशय कुछ उत्तेजित होजाता है ( ७ ) गर्भवती स्त्रीको इसका काथ कभी नहीं पिलाना चाहिये ( ८ ) इसके बीजोंको कूट नींबूके रसमें मिलाकर लेप करनेसे शोथ-विस्वर-जाती है ( ९ ) यह लघु और साग्क है ( १० ) इसके प्रयोगसे अतिसार और आमामशय मिटते हैं ( ११ ) इसका काथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटता है ( १२ ) जिन् रोगोंमें सरसों काम देती है उन रोगोंमें असाह्य भी काम देती है ( १३ ) दाह और खुजली पैदा करनेवाले पदार्थोंके विषयको उतारनेके लिये इसके बीजोंको गाढा चप निकालके पिलाना चाहिये क्योंकि यह विषैल परिमाणुओंको गलेफ देता है और आमामशय और अंतर्द्वियोंके फलाओंके ऊपर एक प्रकारका ढक्कन बना देता है ( १४ ) इसके बीजोंको चबवुलके गोंदकी ठौर काममें आसकता है ( १५ ) इसकी दहनिया ओटा पिलानेसे श्वास और सूखा कास मिटता है ( १६ ) इसके शरीरसे रक्तार्श पड़ता है ( १७ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे दस्तकी बार २ शका होने बन्द होजाता है ( १८ ) इसको ओटाके पिलानेसे सब शरीरमें फैला हुआ उपद्रवका उपद्रव मिटता है ( १९ ) इसके बीजोंको दूधमें ओटाके पिलाने स्त्रियोंके दूध बढ़ता है ( २० ) इसके बीजोंकी मात्रा ४ से १० मासे तक बरती है ( २१ ) इसके काथकी मात्रा २॥ से ७॥ तोले तककी है ( २२ ) इसका काथ दिनमें ३-४ बेर पिलाना चाहिये । इसका काथ बनानेकी यह रीति है कि २ तोले दरगचे हुए इसके बीज और ३॥ मासे दरगची हुई मुलेहदी १२॥ छटाके पानीमें बन्ध बरतनमें १० मिनट तक ओटाके छान लेना चाहिये ( २३ ) इसके १०० तोले बीजोंमें से ५७ तोले तेल निकलता है वह तेल जैसा होता है ।

संख्या ( २०१ )

( सं० ) चम्पकः, चाम्पेयः, शीतलः, हेमपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलग्री
चपो	चम्पा सोनचपा	चपो पीलोचपो	चांपा	चाँपाफुल	चम्पा	सम्पङ्गि
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
शम्चाँ	सम्पिके(ग)			<i>Michelia champak</i> & <i>M. Rufinervis</i>		

स्थान—चम्पाके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बागों में बोये जाते हैं और रावी के दक्षिणकी ओर पश्चिमोत्तर हिमालय, नेपाल, आसाम, ब्रह्मा, नीलगिरी, और पश्चिमी घाटोंके जंगलोंमें कनारा तक अपने आप उगते हैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ६० से १०० फुट तक ऊंचा और बहुत सुन्दर होता है। इसकी शाखें खड़ी फैलती हुई और पास रहती हैं जिससे इसकी छाया सघन घन बनी रहती है। इसके उजम सुगंध वाले पत्तोंके पुष्प देश भेदके कारणसे अलग २ ऋतुओंमें लगते हैं परन्तु विशेष करके वैशाखमें लगते हैं और फल शीतकालमें पकते हैं, इसके पत्ते लम्बे और नोकदार होते हैं, ये वसंत ऋतुमें नहीं गिरते हैं, इसके बीज छोटे मटरके बराबर होते हैं। इसके पुष्पोंमें से रंग निकाला जाता है। इसके बीजोंमेंसे गाढा तेल निकलता है, इसके पुष्पोंमेंसे उड़नेवाला तेल निकलता है, इसके पत्तोंका सुगंधित अर्क खेंचा जाता है, इसके पुष्पोंसे सुगंधित तेल बनाया जाता है वह शरीर और वालोंमें लगानेके काममें आता है।

प्रयोग—( १ ) इसके पुष्प और फल कड़वे और ठण्डे हैं, ये मदाग्नि हृत्प्रास और ज्वर छुड़ानेके लिये कागमें आते हैं ( २ ) पत्तोंको घीसे चुपड़ उन पर जीरेका चूर्ण बुरका प्रमृतास्त्रीके शिरपर बाधनेसे उन्माद, प्रलाप और उन्मादकी भड़क मिटती है ( ३ ) इसके पुष्पोंको तिर्झीके तेलमें पीस शिरपर लेप करनेसे भेचल मिटती है ( ४ ) पुष्पोंको तेलमें पीसकर नाकके ऊपर लेप करने से नासिकासे दुर्गंध युक्त पूयका बहना बन्ध होता है ( ५ ) पुष्पोंको पीस ठंडाई की तरह पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके मूत्रकृच्छ्र और वृक्के रोग

मिटती है (६) इसकी सूखी जड़ और जड़की छालको पीस दहीमें मिलाके पीपयुक्त फोड़ेपर बांधनेसे वह फोड़ा सूख जाता है या पक जाता है (७) इसका फाट करके पिलानेसे मासिक धर्मके समयमें कष्ट होना बन्ध होजाता है (८) इसके पुष्पोंसे बनाया हुआ तेल लगानेसे मस्तकपीडा मिटती है (९) छोटे जोड़ोंकी शोथ पर इस तेलका मर्दन कर ऊपर इसीके पत्ते बांध देने चाहियें (१०) दुरनीदई आंखमें इस तेलकी एक दो बूंदें डालनेसे उसकी पीडा मिटती है (११) इसके बीजोंका तेल पेटपर धीरे २ मर्दनकर तपानेसे आघमान मिटता है (१२) इसको मल पत्तोंको जलमें मसल उसकी बूंदें आंखमें डालनेसे आंखकी ज्योति निर्मित हो जाती है (१३) पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाकर पिलाना चाहिये (१४) इसकी छालका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (१५) इसकी छाल और पुष्प उत्तेजक है (१६) इसकी छालके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे सूखी खांसी मिटती है (१७) इसकी छाल और अतीक्ष्णके चूर्णकी फकी त्रेनेसे अतिसार मिटता है (१८) पेरोंकी बियाई पर इसकी बीज और फलका लेप करना चाहिये (१९) इसकी जड़का काथ पिलानेसे विरेचन लगता है (२०) इसके पुष्पोंका तेल बनाके मर्दन करनेसे बाँडटे मिटते हैं (२१) इसके पुष्पोंके फाटमें काला नॉन बुराके पिलानेसे पेटकी वात की पीडा मिटती है (२२) आमामशयकी शूल मिटानेके लिये इसके पुष्पोंके काथ पिलाना चाहिये (२३) इसके पुष्पोंको मधुके साथ चटानेसे बल बढ़ता है (२४) इसके ताजे पत्तोंका २ तोले रस या उरमें थोड़ा मधु मिलाकर पिलानेसे पेटमेंसे कीड़े निकल जाते हैं (२५) गठियाकी पीडा मिटानेके लिये इसके ताजे पुष्पोंसे बनये हुए तिलोंके तेलका मर्दन करना चाहिये (२६) इसके हिम या काथकी मात्रा ५॥ तोलेकी है (२७) इसकी छालका काथ पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है (२८) इसकी छालको नागबेलके पानमें रखके खाते हैं (२९) तुरंतके दूटे हुए पुष्पोंको २ तोले मधुके साथ चटानेसे पित्तोन्माद मिटता है (३०) इसके पुष्प, छाल और पत्तोंको पानीमें पीसकर मर्दन या उबटना करनेसे ब्याई (भाई) दूर होती है (३१) इसके पुष्पोंको नीसूके रसमें पीसके मलनेसे मुखकी भाई मिटती है ।



संख्या ( २०२३ )

( सं० ) भूमिचम्पकः ।

मौरवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	भुइचम्पा	भौयचंपो	भुइचाफा	भुइचौपा		कोरुडकलवो
द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Kaempferia rotunda</i>		

स्थान— भुइचम्पके वृक्ष हिन्दुस्थानके आर्द्र और उष्ण देशोंमें होते हैं ।

परिचान— इसके कद और जड़के आटेका रंग पीला होता है और स्वादमें कड़वा चमपरा और कपूर जैसा होता है ।

प्रयोग— ( १ ) इसके पंचांगको पीस मरहम बनाके लगानेसे ताज्जा घाव सुरत मिलजाता है ( २ ) इसके चूर्णकी फकी देनेसे शरीरमें कहीं भी रुधिर या पूर्यो जमा हुआ हो निकल जाता है ( ३ ) इसकी जड़का लेप करनेसे गले गंध भिटाता है ( ४ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे जलमय सर्वांगशोथ भिटाती है ( ५ ) पेटकी शूल भिटानेके लिये इसकी जड़का काथ पिलाना चाहिये ( ६ ) इसकी जड़ या कंदका लेप करनेसे शोथ बतरती है ( ७ ) फोड़ेको जल्दी पकानेके लिये इसकी जड़को पुन्डिस घनाके बाधना चाहिये ।

संख्या ( २०३ )

( सं० ) चव्य, चाविका, चवक, कोलवल्ली ।

मौरवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	चव्य	चव्य, चव	चवक	चवक	चवक	चव्यमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	चव्य, शव्य	चव्य		<i>Piper chaba</i> <i>Charica off cinarum</i>		

स्थान—चव्य के लृत्त हिन्दुस्थानों में बोये जाते हैं।  
 प्रयोग—(१) इसका फल उत्तेजक है (२) इसके फलके प्रयोग से  
 प्रतिश्याम और पेटकी पीड़ा मिटती है (३) इसके पुष्पोंके प्रयोगसे कृत्रिम  
 त्रिषण्ण, श्वास, त्रास और रुक्ष रोग मिटता है (४) यह उष्ण, चरपरी, रोचन  
 और दीपन होती है। कृमि, श्वास, शूल, वात, कफ, ज्वर और अर्श की  
 पीड़ा मिटती है। इसकी लकड़ी और जड़ रंगने के काम में आती है।

संख्या (२५५) चांगेरी म्बुद्राम्बला, चुक्राम्बला, दंतशठाल

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलड़ी
	चागेरी	आवोती	आववती	आमरुलशाक	खटकल	पुलिचिता
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
पुडुचोरी (६)	पुल्लुपुल्लुने	गिनाफ	हिन्दु	Oralis Corniculata The Indian corn Bladder dock		

स्थान—चांगेरी हिन्दुस्थान के और सीलों के अधिक उष्ण भागों में होती है।

प्रयोग—(१) इसके पत्ते ठण्डे, शान्ति करनेवाले, पेटकी शूल और मस्त  
 का असाध्य रोग मिटानेवाले हैं (२) ज्वर, आमातिसार और मसूढ़ोंके  
 रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंका प्रयोग करना चाहिये (३) चांगेरी  
 आदि घृत बनाकर गुदा पर लेप करनेसे उसका निकलना बन्द होजाता है  
 (४) इसके पत्तोंका ताजा रस पिलानेसे घट्टेका मद उत्तरता है (५)  
 इसके ताजे पत्तोंकी चटनी बनाके खिलानेसे शूल और पाचन शक्ति बढ़ती है  
 (६) जिम शोधमें अधिक दाह और पीड़ा होती हो उसको मिटानेके लिये  
 इसके केबले पत्तोंकी पुलिस या पत्तोंको पानीमें पीसके पुलिस बनाके बांधना  
 चाहिये (७) इसके पत्तोंको कूट पानीमें थोड़ा खाने उसमें सफेद कादेका रस  
 मिलाके लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटती है (८) चर्म मेद वा मदकी

गांठ पर इसके पत्तोंके रसको लेप करना चाहिये ( ६ ) इसके रसका अंजन करनेसे आंखका जाला कटता है ( ७ ) चर्चोंका आमातिसार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका अर्क पिलाना चाहिये ( ११ ) मिस्रदोंका असाध्य रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रससे गंडूप कराना चाहिये ( १२ ) इसके पत्तोंके काथ में से कीहुई हींग बुरकाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटती है ( १३ ) इसके पत्तोंके रसका शर्वत बिनके पिलानेसे वृषा मिटती है ( १४ ) पित्त रोग मिटानेके लिये इसका शर्वत पिलाना चाहिये ( १५ ) इसके पत्तोंको ठंडाईकी जैसे घोट छान उसमें बुरा डालकर पिलानेसे अंतर्दाह मिटती है ( १६ ) इसके सूखे पत्तोंसे दांतोंका मंजन करना चाहिये ( १८ ) इसके पत्तोंको मुखमें पानकी जैसे रखनेसे मुखकी दुर्गंध मिटती है ।

संख्या ( १२०५ )

( सं० ) चित्रकः, दहनः, व्यासः, कालमूलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चित्रकः	चित्रका, चीता	चित्रो, चित्रा	चित्रक	चित्तियाछी	चित्रा	चित्रमूलमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
चित्रमूल	चित्रमूल	शैतरज	बेलबुरिदा	<i>Plumbago zeylanica</i> <i>P. auriculata</i>		

स्थान—चित्रक हिन्दुस्थानमें बहुधा सब ठौर उगता है, परंतु दक्खिन प्रायः ही पश्चिम और बंगालमें बहुत होती है।

प्रयोग—( १ ) चित्रककी जड़में बेहो शक्ति है जो रक्त चित्रककी जड़में है, परंतु इसकी जड़में शक्ति कम है। यह पाचनशक्ति और श्रुतको बढ़ाती है ( २ ) यह मंदाग्नि, अर्श, सर्वांगी जलमयशोथ, अतिसार, त्वचाके रोग और दूसरे रोगोंको मिटाती है ( ३ ) पीनेवाले फोड़ोंके मुंह करनेके लिये इसकी जालाका लेप करना चाहिये ( ४ ) छाला उठानेवाली या जलानेवाली

दूसरी औषधियोंमें रक्त चित्रकरी छाल मिलाई जाती है (५) इसकी फकी लेनेसे कफके उपद्रव मिटते हैं (६) इसका लेप करनेसे गठियाकी पीडा मिटती है (७) ग्वारपाठेकी गिरके ऊपर चित्रककी छालके चूर्णको घुरफाके खिलानेसे तिल्ली मिटती है (८) चित्रककी छालको दुग्ध या शुक्त या नमक और जलके साथ पीसके कोठ और दूसरे प्रकारके त्वचाके रोगों पर लेप करना चाहिये अथवा इन्हीं औषधियोंके साथ पीस पुल्टिस बनाके उस ठौर पर इतनी देर तक बंधा रखना चाहिये कि जबतक छाल न उठे। इस पुल्टिसको गठियोंकी शोथपर १५—२०मिनिट तक बंधा रखनेसे लाभ होता है (११) इसके ३॥ मासे चूर्णकी फकी देनें चाहिये (१२) इसके मुखमें रखनेसे लाब्ब घटने लगजाती है (१३) पसीना लानेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है (१४) विगड़े हुए घावपर इसका दूध लगाना चाहिये (१५) इसके दूधके लगानेसे खुजली मिटती है (१६) इसके काथ और कल्कसे सिद्ध किये हुए घीका सेवन करनेसे संग्रहणी मिटती है (१७) इसकी जडको पीसकर लेप करनेसे अर्श मिटता है। अथवा इसकी जडकी छालके चूर्णको दही या तक्र के साथ पाना चाहिये (१८) इसके चूर्णके आवलोंके रसकी शोभावना देके उसको गौघृतके साथ रात्रिमें चटानेसे पांडुरोग मिटता है (१९) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे नेकसीर बन्ध होती है (२०) इसका लेप या मर्दन करनेसे मडल कुष्ठ मिटता है (२१) ११ ताले चित्रककी जडके चूर्णको मधुमें चटानेसे बालक मुखसे पैदा होजाता है (२२) इसका जडके चूर्णरो तेलमें पकाके उस तेलका तालुपुपर मर्दन करनेसे भूपेका विष उतरता है (२३) इसकी जडको पीसकर मृत्तिकाके पात्रमें लेप कर उसमें दही जमा उसको उसीमें बिलोकर उस छालको पिलानेसे अर्श मिटता है (२४) चित्रक और देवदारुको गोमूत्रमें पीसके लेप करनेसे श्लीषद रोग मिटता है।

(संख्या १२०६)

(सं०) रक्तचित्रकः, महाङ्ग, रुद्राहः । - )

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लालचित्रक	लालचिता	रातोचित्रक	रक्तचित्रक	रिक्तचिता	गण्ड देवा	शिवसुचित्र
द्राचिडी	कनौटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Plumbago Rosea.	Rose colored Lead	

प्रयोग— ( १ ) इसकी जड़को बाला-उठानेके काममें लातेहैं ( २ ) इसकी जड़ चरपरी और उत्तेजक है ( ३ ) इसकी जड़को तेलमें मिलाकर मर्दन करनेसे गठिया और पक्षाघात मिटताहै ( ४ ) इत रोगोंकी साधारण दूसरी-आपधियोंमें इसको मिला चूर्ण बनाके फकी जेनी चाहिये ( ५ ) इसकी जड़के-पुल्डिस से बाला उठानेमें शोथ तो अधिक होतीहै परन्तु बालेमें जल कम निकलताहै ( ६ ) इसकी जड़की बाला और थोड़े आटेका-पुल्डिस बनाके चमडीपर आध घंटे तक बांधकर उतार लेना चाहिये इससे २० से १८ घंटे तकके समयमें उतनीही दौरमें बाला उठजायगा किसी ३ के इससे दाह और पीडा तो अधिक होतीहै परन्तु बाला छोटा उठताहै और घाव जल्दी नही भरताहै ( ७ ) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे तीव्र विषका काम करतीहै इस लिये इसका प्रयोग करनेमें सावधानी रखनी चाहिये ( ८ ) इसकी सूखी जड़की बालके प्रयोगसे कोढ़ और उपदंश मिटताहै ( ९ ) दुःखती हुई आस पर इसके दूधका लेप करना चाहिये ( १० ) आँके हुए गुभे या छोडको गर्भाशयमेंसे निकालनेके लिये इसकी जड़को गर्भाशयके मुँहके भीतर रख देना चाहिये ( ११ ) इसकी कोमल दहनियोंका लेप फोड़ेपर करना चाहिये ( १२ ) इसके दूधका लेप करनेसे खुजली मिटतीहै ।

संख्या ( १२७७ )

( सं० ) चिरपोटा, कुंतली, फलाम्बा, दीर्घपत्रा, ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	पनसोसा	पर्पोटी	चिरपोटाणी			
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Zanonia indica Physalis minima P. Indica		

स्थान—यह आसाम पूर्वी बंगाल मखन प्रायद्वीप मलबार घाट और सीलोनमें होती है।

गुण—यह ठंडी, रूक्ष है।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्तोंको मखन निकाले हुए दूधमें पीसकर लेप करनेसे पीडा मिटती है ( २ ) ज्वर मिटानेके लिये भी इसका प्रयोग करते हैं ( ३ )—इसका फल तांब्र-विरेचक है ( ४ )—बड़े २ फोड़े और गांठोंसे नसोंमें जो दाह और खुजली हो जाती है उनको मिटानेके लिये इसके पत्तोंको जलमें ओढ़ाके स्नान कराना चाहिये ( ५ ) इसके पत्तोंको दूध और मखनके साथ पीसकर लगानेसे वाइटे और-पट्टोंकी-एँठन-मिटती है ( ६ ) इसके पत्तोंका ताजा स्वरस पिलानेसे विपैल जीवोंके काटनेसे जो विष चढ़ती है वह उतर जाता है।

संख्या—( २०८ )

( सं० ) चीनेक, काककडु, श्लक्ष्णक, शुरलच्छणा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चीणो	चीना, चैना	चीणो	राले	कानीधान	चाणो	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		सुवन	अरज़न	Pani unguilacena P. millum.	Millet Common mill	

। स्थान—संयुक्त प्रदेश, बुंदेल खंड, पंजाब और नडौटा आदि । बहुतेरे

देशोंमें इसकी खेती होती है। बुंदेल खण्डमें यह दो प्रकारका होता है—एक फि-  
कई नामसे और दूसरा राली नामसे प्रसिद्ध है। ये दोनों वर्षा ऋतुमें बोये जा-  
ते हैं। इनमें फि ई जातिके को कुछ पहिले पाते हैं। हिमालयमें इसको शीतकाल  
में बोते हैं। शिमला प्रान्तमें मनुष्य इसकी रोटी बनाकर खाते हैं उसको चनट्टी  
कहते हैं। १०० तोले चनमसे ६६। तोले मैदा और ३॥ तोले तेल निकलता है।  
इसको चावलोंकी भांति राधकर खाते हैं। बिहारमें इसको रांधकर या सेककर  
खाते हैं। इसको मीठे चांवलोंकी भांति राधक भोजन करत है। उपवासके दिन  
इसका फलाहर करते हैं।

प्रयोग—( १ ) यह अन्न शीघ्र पचता है, और पुष्टिकारक है।

संख्या ( २०६ )

( सं० ) चुक्रं, चुक्रिका, पत्राम्बला, रोचनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलङ्गी
चूका	चूकेकाशक	ख टीभाजी चूका	चुका	चुकावेत्ता	चूक	
द्राविडी	पर्नाटली	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		हम्मान	तुरस्था	Rum x vesic. riva	Barrel Bladder Lock.	

स्थान—चूके का शाक हिन्दुस्थान के बहुत से वागों में बोया जाता है।

प्रयोग—( १ ) चूके का रस शीतल सारक और कुछ सूत्रवर्द्धक है ( २ )

इसके रसमें नमक डाल के पिलानेसे हृत्वास मिटता है ( ३ ) इसके पचांगका  
रस पिलानेमें आमाशयकी दाह मिटती है ( ४ ) इसके रसमें सोंठ डालके  
पिलानेसे भूख बढ़ती है ( ५ ) पेटमें चलनेवाले कीड़ों के विपकी और विच्छ  
के दशकी पीडा मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पीसके लेप करना चाहिये ( ६ )  
इसके राजाका सेक चूण बनाके फला देनेसे आमातिसार मिटता है ( ७ )  
गुण—यह उष्ण चतुत खट्टा सारक, रोचक और पचनेमें हल्का हाता है। शूल-  
गुण, मन्दाग्नि, हृदय की पीडा, आमवात, तृषा, वमन, कफ, वात और

मुख के विरसपन को मिटाता है, पित्त को बढ़ाना है और मल की गांठ को बिखेरता है ।

संख्या ( २१० )

( सं० ) चूर्ण, सुधा, सोधभूषणकं, शिलाचारम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
चू०	चूना	चुनो	चुना	चून, चुन	चूना	मुनपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शुलाम्	सुण्ट	किलम्	बाहरु		Lime. Carbonate of lime Quick lime	

प्रयोग—( १ ) चूना, सजी, मोरधुया और सोहागे के पानीमें पीसके गांठ और मससे पर लेप करतेहै ( २ ) चूनेके पानीमें तिनीका, तेल और शकर मिलाके पिलानेसे किसी दूसरी औषधिसे नहीं मिटनेवाला मूत्रकृच्छ मिटताहै ( ३ ) पागल कुत्तेके दंश पर गीले चूनेका लेप करतेहै ( ४ ) ५ तोले कलीको ५ सेर पानीमें काकदार शीशीमें बुझा २, ३ दिन तक हिलाकर रस छोड़ें इसको १२ घंटे पहिले काममें न लायें जब चूना पेंडमें जाजाय तब उस नितरेहुए पानीमेंसे २॥ से ५ तोले तक पिलानेसे अन्तपित्त मिटताहै ( ५ ) चूनेका पानी बहुधा नया बना रखना चाहिये । उसके काक मजबूत रखना चाहिये, जिससे हवा न घुससके ( ६ ) चूनेका पानी पिलानेसे बच्चेके दूधके विकार नहीं होतेहैं ( ७ ) चूनेका मीठा पानी बनानेकी यह रीति है कि २॥ तोले चूनेको ५ तोले चीनी शकरके साथ सरसल कके २॥ पाव पानीग मिलाकर काकदार शीशी में भरकर बन्ध करके रख छोड़ें जब वह पानी नितरजाय तब उसमें से १५, २० चूंड दूमें मिलाके बच्चेका दिनमें २, ३ सेर पिलाना चाहिये ( ८ ) जिसको खट्टी डकार आतीहो, हृदय में टाढ हो या अन्तपित्तसे अजीर्ण रहने लगगया हो, उसको पानेवाग्से ५ तोले तक चूनेका पानी पिलाना चाहिये ( ९ ) अजीर्ण से जिन्के मूत्र थोड़ा उतारने लग गया हो और बहुत



पीला होगया हो, खट्टी डकार, बहुत आने, लग गई हो, और वमन होने लग गई हो उसको दूधमें चूनेका पानी मिलाके पिलाना चाहिये (१०) जिसको अम्लपित्तसे अतिसार होगया हो उसको चूनेके पानीमें बंबूलका गोद या चेपदार दूसरी औषधि मिलाके पिलाना चाहिये (११) चूनेके पानीमें बराबर निवाया कियाहुआ दूध और गोद मिलाके गुदामे पिचकारी देनेसे अतिसार मिटता है (१२) बच्चेको अपनी माके दूधके सिवाय और कोई बनावडहुई खुराक खिलानेसे जो अतिमार और वमन होजाय तो उसको २॥ पाव दूधमें छटा या चौथा हिस्सा चूनेका पानी मिलाके पिलाना चाहिये । ऐसे अतिसार और वमनको चूनेका मीठा पानीभी मिटाता है (१३) जब किसी भी औषधि स वमन बन्द नहीं होवे तो चूनेके पानीको दूधमें मिलाके पिलाना चाहिये (१४) इस पानीको दूधमें मिलाके पिलानेसे बड़ेहुए ज्वरकी वमन मिटती है (१५) पीले-बुखारमें काली वमनको नोकनेके लिये चूनेका पानी और दूध बहुत उपकारी है (१६) एक भाग चूनेके पानीमें दो या तीन भाग पानी मिलाके पिचकारी देनेसे श्वेतप्रदर या दूसरे प्रकारके पानी बन्ध होजाते है (१७) दूधमें चूनेका सया तोला पानी मिलाके दिनमें ३, ४ बरें देनेसे कभी २ गंडमाली में लाभ होता है (१८) जिस गंडमालीमें पीपवाले फोडे होने लगे और लगातार घाव पड़ते जाय तो इस दूधके पीनेसे वे फोडे मिट जाते है और घाव भर जाते है (१९) यह दूध १२ घंटे से अधिक न पडा रहना चाहिये (२०) गंडमाली सम्बन्धी या दूसरे प्रकारके फोडे जिनमें बहुत पीप निकलता हो उनपर चूनेका पानी लगाना चाहिये (२१) मवा पाव चूनेके पानीमें १५ रती रसे कपूर मिलाके उपदंश सम्बन्धी फोडे या ऐसे फोडे कि जो भरे नींगले होगये हों उनपर लगाना चाहिये (२२) इसको अंग्रेजीमें Black Ink ब्लैक इन्क कहते है इसमें कपडेको भिगोकर उसे फोडोंपर लगातार धरा रखना चाहिये (२३) बडुल स्याय सुजली और दाहवाले बहुतसे त्वचाके रोगोंमें केवल चूनेके पानीमें या तेल मिलेहुए चूनेके पानीमें कपडा भिगोकर उसे त्वचा पर रखनेसे बहुत फायदा होता है (२४) स्तनकी बीटलीके घावपर या जो बीटली तडक गई हो उसपर चूनेका पानी लगाना चाहिये (२५) चूनेके पानीमें बगैर पानी या दूध मिलाके नाक या कानमें उसकी पिचकारी देनेसे उनका बंधना बन्ध हो जाता है (२६)

क्षयरोगवाले मनुष्यको दूधमे चनेका पाना मिलाकर पिलाना चाहिये ( २७ )  
 बहुमूत्रवालेके लियेभी यह प्रयोग उपकारोहै ( २८ ) जिस बच्चेकी गुंडामे  
 चूने ( कद्दूदाने ) पड गये हों या आंतमें पिटाट पैदा हो गई हो तो १०  
 तोले चूनेके पानीकी जवतक वे न निकलजाय तवतक तीनचार बेर पिचकारी  
 देना चाहिये ( २६ ) चूनेका पानी पिलानसे संखियेका विष उतरताहै ( ३० )  
 अग्निसे जले हुएपर या खाली दाजे हुएपर चनेका पानी और अलसीका  
 तेल बराबर मिलाके लगाना चाहिये, जहां अलसीका तेल न मिले ब्रह्मा तिलों-  
 का तेल लेलेना चाहिये, इन दोनोंको हिलाकर एस मिलाखने चाहिये कि दो-  
 नोंका एक रूप होजाय, तब उसमें कपडा भिगोके घावपर लगातार आवश्यक-  
 क्तानुसार लगा रहने देना चाहिये ( ३१ ) रुईके फोएको इसमें भिगोके माता  
 ( शीतला ) के ब्रणोंपर धरा रखनसे वे ऊंडे नहीं पडतेहैं ( ३२ ) इसके पानी  
 से घनेसे बाल गंध मिटतीहै ( ३३ ) चूना और शहद मिला कपड़ेपर  
 लगा उसको बदपर बांधनेसे बंद विखर जातीहै ( ३४ ) चूना और घी मिला-  
 के उठते हुए फोड़ेपर लगानसे वह घटने नहीं पातीहै ( ३५ ) चूनेका नींबूके  
 रसमें मिलाकर मर्दन करनेसे मकड़ोका विष उतरताहै ( ३६ ) पुराने चूनेका  
 देहीके जलमें पीसके तेलसे जले हुए ब्रण पर लगाना चाहिये ( ३७ ) चूने  
 और नासादरको मिलाकर सुंधनेसे कफ और वातसम्बन्धी मस्तरूपीडा  
 मिटतीहै ( ३८ ) चूने और विडलवणको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे  
 नारु मिटतीहै ( ३९ ) चूनेको मयुके साथ पीस तिलीपर लेपकर उसके ऊपर  
 अजगरके पत्ते बांधनेसे तिली मिटतीहै ( ४० ) चूना और साबुन महीन पीसके  
 लगानसे पीयूषका घाव मिटतीहै ( ४१ ) चूना और सज्जी जलके साथ पीस  
 मस्सेका जगला कडेस रगडकर २, ३ दिन तक लगानसे मस्से मिट जातेहैं  
 ( ४२ ) चूनेका तेलम मिलाकर जिस दिन फोडा उठे उसी दिन लगानसे  
 नहीं बढता है ( ४३ ) चूना, तेल और चिरौजी पीसके मर्दन करनेसे मकड़ोका  
 विष दूर होताहै ।

संख्या ( ३११ )

। अमृतोपहिता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
चोबचीनी	चोबचीनी	चोपचीनी	चोपचीनी	तोपचिनि	चोबचीनी	परगिचका
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
परगिशके-	परगिचक	खुशबु-सीनी	बसेचीनी	[Sialix China b Japanica.	China root, or wood	

स्थान—चोबचीनी जापान और चीनसे हिन्दुस्थानमें आती है।

गुण—यह चरपरी, कड़वी और उष्ण है क्षीण मनुष्योंको पुष्ट करती है और अग्नि बढ़ाती है। बद्धकोष्ठ, आफरा, शूल, वातरोग, अपस्मार, उन्माद, शरीरकी पीडा, कुष्ठ और विमर्षको मिटाती है।

प्रयोग—( १ ) चोबचीनी उपदंश और गठिया के रोगोंमें बहुत उपकारी है ( २ ) यह पुरुषार्थ पैदा करनेवाली औषधियों में मिलाई जाती है ( ३ ) कोढ़ मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है ( ४ ) त्वचा के पुराने रोग मिटानेके लिये इसके चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये ( ५ ) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है ( ६ ) निर्बल मनुष्योंको इसका सेवन करानेमें बड़ी सावधानी रखनी चाहिये, क्योंकि यह हृदयकी यथोचित धड़कनेकी संख्याको कम करती है ( ७ ) यह मांसको बढ़ाती है ( ८ ) काडमच्छीके तेलकी ठीक चोबचीनी काम देसकती है ( ९ ) इसका काथ पिलानेसे गठिया मिटता है ( १० ) जिसका शरीर उपदंश से फूट गया हो और जिसके शरीरमें उपदंश वा रिप फैल गया हो उसको चोपचीनीके काथ फांट या हिममें मधु मिलाके पिलाना चाहिये ( ११ ) इसके ४ मासे से १ तोले भरतक चूर्णको मधुमें मिलाकर चटानेसे गंडमाला मिटती है ( १२ ) १० तोले चोबचीनीको ८० तोले जलमें घोंटा १० तोले जल रख उतार द्या २॥ तोले से ७॥ तोले भर काथ दिनेमें १,४ घेर पिलानेसे खैर रोग मिटता है ( १३ ) चोबचीनीका तेल मर्दन करनेसे गठिया मिटती है।

संख्या ( २१२ )

( सं० ) छिकिनी, छिकीका, जंबकृत, घ्राणदु खदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
नकलीकणी	नकलीकणी	नकलीकणी	नकलीकणी	हचेताग छ	नकलीकणी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अग्रेजी
				Centiplexopticalia Ar. 1/2/1/2/3/4/5/6/7/8/9/10/11/12/13/14/15/16/17/18/19/20/21/22/23/24/25/26/27/28/29/30/31/32/33/34/35/36/37/38/39/40/41/42/43/44/45/46/47/48/49/50/51/52/53/54/55/56/57/58/59/60/61/62/63/64/65/66/67/68/69/70/71/72/73/74/75/76/77/78/79/80/81/82/83/84/85/86/87/88/89/90/91/92/93/94/95/96/97/98/99/100		

स्थान—नकलीकणी हिन्दुस्थानके जगलोंके आद्रिस्थानोंमें होतीहै ।

पहिचान—यह शीतकालके पिछले दिनमें पैदा होतीहै ।

प्रयोग—( १ ) इसके बीजोंकी नस्य देनेसे छींके आतीहै ( २ ) शि की पीड़ा मिटानेके लिये नकलीकणी की नस्य देना चाहिये ( ३ ) बन्ध र खामको बहानेके लिये नकलीकणीकी नस्य देना चाहिये ( ४ ) नकलीकणी को पौस गर्मकर गालोंपर लेप करनेसे दात और डाढ़की पीडा मिटतीहै ( ५ ) आघातशीशी मदानके लिये नकलीकणीका चूर्ण सुघाग चाहिये ( ६ ) इस चूर्ण मचानेसे मिरगीका वेग दूर होताहै ( ७ ) यह चरपरी, रोचक, दीप पचनेमें हल्की, उष्ण, कर्पूनी और तीक्ष्णगंध युक्त होतीहै ( ८ ) यह-पित्तऔर अग्निको बढ़ातीहै ( ९ ) दाह, दोष, वात, कफ, कुष्ठ, कुमिरोग, रक्तविकार ग्रहपीडा, भूतबाग और वातरक्तको मिटातीहै ।

सख्या ( २१३ )

भूताकृशः, जवकः, जवः, भूतद्रावी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	भूताकृश	भूतकरी	भूताकृश			भूतवेद
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अग्रेजी
इरकुली	यामराज			Elaeagnus glaberrima Nerita diacoma		

स्थान—भूताकृश, दक्षिण हिन्दुस्थान और चम्पई अहांतमें होतीहै ॥

प्रयोग—( १ ) इसके कड़वे और सुगंधित पत्तोंका हिम या फाट पिलानेसे पेट और आंतोंके रोग मिटतेहैं ( २ ) पत्तोंके काथसे प्रतिश्याय मिटताहै ( ३ ) चिरायतेके साथ इसके पत्तोंको आटाकर पिलानेसे वारीसे आनेवाला ज्वर-छूटजाताहै ( ४ ) इसके पत्तोंके काथकी उष्ण-भाफको श्वासके साथ पीनेसे बहुत पसीना आताहै ( ५ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे वच्चोंके पेटकी पीडा मिटतीहै ( ६ ) इसके पत्तोंके काथमें साँठ घिसकर पिलानेसे वच्चोंकी मंदाग्नि मिटतीहै ( ७ ) वच्चोंके दात आनेके दिनोंमें जो ज्वर होताहै उसको छुड़ानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलातेहै ( ८ ) इसके पञ्चांगका काथ पिलानेसे गठिया मिटतीहै ( ९ ) इसके पत्तोंका तेल निकालके मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै ( १० ) बहुत पसीना लेना होतो इसके तौले भर पत्तोंका काथ करके वफारा लेना चाहिये ( ११ ) इसके पत्तोंका ३॥ से ५ तौले तक काथ पिलानेसे बहुत पसीना आताहै

संख्या ( ३१४ ) -

(सं०) - जटामांसी, मांसी, कृष्णजटा, हिंसा

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
वालछड़	वालछड़	वालछड़	जटामासी	जटामासी	बिल्लीलोटन	जटामासमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
जटामास	जटामासी	सुन्नुलउल		Nardostagis		
		तीव		Jatamansi	spikenard	

स्थान—वालछड़ हिमालयमें गढ़वालसे सिक्किम तक होती है।

पट्टिज्ञान—इसकी जड़ रंगतके काममें आतीहै। २८ सेर जटामांसीमें ७॥ तौले तेल निकलता है॥

प्रयोग—( १ ) इसकी जड़ चरपरी, सुगंधयुक्त, बलवर्द्धक, उत्तेजक और कड़वी होतीहै ( २ ) वाइटे, अपस्माद, स्त्रियोंके आघेशका रोग, और नशोंकी एंठनका रोग मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै ( ३ ) बिल्ली

आदि पेटके यंत्रोंके बढ़ावकी रूपावट और मासिक धर्मका कष्ट मिटानेके लिये मूत्र और पाचनशक्ति बढ़ानेके लिये और श्वास सम्बन्धी जलिकाओं को शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है ( ४ ) कामला, गलेके रोग और विपटोप दूर करनेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये ( ५ ) वालोंकी सफेदी मिटानेके लिये और उनको बढ़ानेके लिये इसका प्रयोग करते हैं ( ६ ) मस्तक या ललाटेपर इसका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटती है ( ७ ) इसको घोट दान मधु मिलाकर पीनेसे रुधिर शुद्ध होता है ( ८ ) कई प्रकारके तेल बनानेकी औषधियोंमें यह मिलाई जाती है ( ९ ) हृदयका धडकना कम करने के लिये इसका लेप करते हैं ( १० ) आध्मान मिटानेके लिये उष्ण जलके साथ इसके चूर्णकी फकी देना चाहिये ( १२ ) इसकी मात्रा ५ रतीसे ११ मासेतक की है ( १३ ) दातोंकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके चूर्णका मंजन करना चाहिये ( १४ ) मुखकी दुर्गंध मिटानेके लिये इसको मुखमें रखना चाहिये ( १५ ) इसको पीसके मूँधनेसे नाकके मलकी दुर्गंध मिटती है ( १६ ) इसका शर्वत पिलानेसे हृदय और कफके रोग मिटते हैं ( १७ ) ६ तोले वालछड डेढ सेर पानीमें ओटा आधा पानी रख उसमें सेर भर मधु डालकर शर्वत जैसी चासनी बनाके सर्दीके रोगोंमें देना चाहिये ( १८ ) ३॥ मासे वालछड पीसके पिलानेसे कफकी वमन बन्ध होती है ( १९ ) १४ मासे वालछडका लाल बकरीके दूधमें पीसके पिलानेसे जलधर मिटती है ( २० ) वालछड और नमकको सिरके के साथ पीसके लगानेसे जलंधर मिटता है ( २१ ) इसको पीसके लगानेसे पसीनेका अधिक आना बन्ध होजाता है ॥

संख्या ( २१५ )

( सौ ) जपों, ऊर्ध्वपुष्पं, ओद्गुपुष्पा, अर्कप्रिया ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
गुडहल	गुडहर	जामुस	जासवेड़ जामुदी	जवाफल	गुडहल	दासानिपुष्प

द्राचिडी	कर्नाटकी	ध्रुवी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शष्पात्तिपू	दामवाळदा हुवु			Hibiscus Rosa sinensis	The Shoo flower

स्थान—गुडहलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें बोये जातेहैं ।

पहिचान—यह एकेरा, दोहेरा, लाल पीले और सफेद पुष्पोंके भेदसे कई प्रकारका होताहै । हिन्दुस्थानमें इसकी फलमें लगाई जातीहै । इसके पुष्पों मेंसे लाल रंग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—( १ ) इसके पुष्प शिथिलता पैदा करतेहैं ( २ ) इसके पुष्पों के काथसे औषधियोंकी चरपगहट मिट जातीहै ( ३ ) इसके पुष्पोंके कौथे या शर्वतके सेवनसे ज्वरमें शान्ति होतीहै ( ४ ) मूत्रकी पीड़ा और दाह मिटाने के लिये इसका शर्वत बहुत उत्तमहै ( ५ ) वीर्य्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटानेके लिये इसका शर्वत पिलाना चाहिये ( ६ ) ताजे पुष्पोंकी पंखडियोंका रस और जैतूनका तेल बराबर लेके ओटावे जब रस खीज जावे तब तेलको अग्नि परसे उतार छानकर रख छोड़ें । इसतेलके लगानेसे केश अच्छे बढ़तेहैं ( ७ ) इसके पत्ते चरपराहट और पीडा मिटानेवाले और सारक हैं ( ८ ) इसके पुष्पोंको धीमें तलकर बूरेके साथ खिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है ( ९ ) इसके लाल पुष्पोंका शर्वत ज्वरकी दाहको मिटाताहै ( १० ) इसके बीजोंको ठंडाईकी जैसे घोट छानके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( ११ ) इसका पुष्प पहिले दिन एक लेवे दूसरे दिन दो ऐसे नित्य एक २ बढ़ाकर ५ दिन तक बढ़ाके फिर नित्य एक २ कम करता हुआ एक पर लाके छोड़देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १२ ) इसके पुष्पोंको छायामें सुखा उनके चूर्णमें बराबर बूरा मिलाकर ३ मासेकी फकी ४० दिन तक लगातार लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( १३ ) इसके पुष्पोंके रसमें बराबर तेल मिलाके ओटावे जब रस खीज जावे तब उसको उतार छानकर शीशी आदि बरतनमें भरकर रखछोड़ें । इसके लगानेसे दारुण रोग मिटताहै ( १४ ) इसके पुष्पोंको पानीमें पीस नाभीपर और उसके आस पास लेप करनेसे बच्चा सुखसे पैदा होजाताहै ( १५ ) उपदंशकी टांकियोंको इसके पत्तोंके काथसे धोना चाहिये ।

गुण—यह शीतल, मधुर, स्निग्ध, पौष्टिक, ग्राही, केस और गर्भ बढ़ाने वाली और प्रमेहको मिटानेवालीहै ।

संख्या ( २१६ )

( सं० ) जम्बीरः, दंतशठः, जम्भः, जम्भीरः ।

मरावाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जम्बेरी	जम्भीरी, नींबू	ईडलींबू	ईडनिम्बू	गाँडानेबु	जम्भीरी	निम्बपेडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
लेमिचपले	निम्बेहरणु			Citrus Aurantium var Limonum.	Bergamot orange.	

स्थान—जमेरीके पेड़ हिन्दुस्थानमें कहीं २ होतेहैं ।

जमेरीके फलकी छालको दवानेसे एक प्रकारका तेल निकलताहै अथवा उसका अर्क खँचनेसे अर्कके साथ तेल निकलजाताहै । इसके पत्ते और पुष्पोंका अर्क खँचनेसे उनमेंसे भी अलग २ तेल निकलताहै ।

प्रयोग—( १ ) नींबूके रसमें जितने गुणह उतनेही जमेरीके रसमें है परन्तु नींबूके रससे इसके रसमें यह अधिकताहै कि नींबूका रस पढा रहनेसे उसका गुण कम होजाताहै इसके रसका कम नहीं होताहै ( २ ) शीतला, बोदरी, लालबुखार ( रातड्या ) और दूसरे प्रकारके ज्वरोंमें जमेरीका शर्वत शान्ति करताहै ( ३ ) शरीरके भीतरके किसी यंत्रमेंसे जैसे फुफुस, आमाशय, अंतर्द्वियों आदिमेंसे जो राधर निकलता हो उसका रोक्नेके लिये इसका शर्वत बहुत उपकारीहै ( ४ ) इसके रसम एक तोला शंखकी भस्म मिलाके पिलानेसे प्लीह रोग मिटताहै ।

गुण—यह उष्ण, गुरु, खट्टी, होतीहै ।

संख्या ( २१७ )

( सं० ) जम्बूः, नीलफला, सुरभिपत्रा, जाम्बवम् ।

मरावाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जाम्बु	जामुन	जामु (बू)	जामुल	जामगाछ	जामुन	नेरेडु



संविदी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
नावलू	नेरळे			Eugenia jambolana Syzygium jambolanum	Black plum.

स्थान—हिन्दुस्थान के बहुतसे भागोंमें जाम्बूणके वृक्ष बोये जाते हैं और अपने आप भी उगत हैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ७०, ८० फुट या कभी कभी ६० फुट ऊंचा बढ़ जाता है इसकी पेटह लम्बी और बहुत सीधी नहीं होती है। उसकी गोलाई ६, ८ फुट, कभी कभी १२, १५ फुटकी हो जाती है। इसका वृक्ष ७० फुटका होनेके पीछे उसके पहिली शाखा फूटती है, इसकी शाखा खड़ी और फैलती हुई होती है, छोटी शाखा लटकती रहती है, इसके कोमल पत्ते गहरे हरे रंगके होते हैं वे बड़े होनेपर चमकदार और सुगंधयुक्त हो जाते हैं, उनकी लम्बाई ६ इंच तक होती है। इसकी छाल गहरे भूरे रंगकी और १, २ इंच मोटी होती है। इसके छोटे और कुछ हरे पुष्पोंके आमके मोर जैसे मोर लगते हैं। इसका फल बैजनी या काले रंगका, एक इंच लम्बा और चमकदार होता है। इसके पत्ते, फल और वृक्षकी और भी कई बातें, देश भेदके कारणसे बहुत पलट जाती हैं।

फूलने फलनेका समय—इसके फागुन चैतमें चमकदार, तावके रंगके नवीन पत्ते और पुष्प लगते हैं, और जेठ अषाढमें फल पकूजाते हैं।

प्रयोग—( १ ) इसकी छालके चूर्णकी फकी देनेसे आमार्तिसार मिटता है ( २ ) इसकी छालके काथके गंधूप करनेसे दांत दृढ होते हैं ( ३ ) कच्चे जाम्बूण के रसको सिरका बनाया जाता है, वह पेटकी शूल और बादीकी पीडा मिटानेके लिये काममें आता है ( ४ ) इसको कलमी शोरेके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है ( ५ ) इसका ताजा रस बरुकीके दूधके साथ पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटता है ( ६ ) इसके पत्तोंका केवल स्वरस अथवा उसमें कोई दूसरी ग्राही आपधि मिलाके पिलानेसे अतिसार मिटता है ( ७ ) मूत्रवृद्धि और मधु प्रमेहको मिटानेके लिये जाम्बूणकी सूखी गुठलीके चूर्णकी फकी देनी चाहिये ( ८ ) यह मूत्रमेंसे शक्करको बहुत शीघ्रताके साथ घटाता है ( ९ ) इसकी गुठलीकी और आमकी गुठलीकी सूखी गिरके चूर्णकी फकी देनेसे

अतिसार और आमति सार मिटता है (१०) इसकी छालके काथके गड़प करनेसे गलेके छाले मिटते हैं (११) इसके ताजे कोमले पत्तोंके रसको चकरी के दूधके साथ पिलानेसे आमति सार मिटता है (१२) इसकी छालके काथ में सोंठ और जायफल घिसके पिलानेसे अतिसार और आमति सार मिटता है (१३) कुचीलेके विपको उत्तारनेके लिये, इसकी गुठलीकी सूखी गिरके चूर्णकी १० मासेकी मात्रा देनी चाहिये (१४) तिल्ली मिटानेके लिये इसके सवा तोले रसकी मात्रा देनी चाहिये (१५) जामूनका शर्वत अतिसार मिटानेके लिये काममें आता है (१६) पारेका लगातार कई दिनों तक सेवन करनेमें अथवा और कोई कारणसे मुँहाआगया हो अर्थात् मुँहसे लाल बहती होतो इसकी छालके काथसे गड़प करने चाहिये (१७) पके हुए जामून खिलानेसे पथरी मिटती है (१८) विच्छूके दंश पर इसके पत्तोंका पुष्टिस बांधना चाहिये (१९) पके हुए जामूनके सिरकेसे पेटकी शूल मिटती है (२०) तिल्लीवाले को पके हुए जामूनका सिरका पिलाना चाहिये (२१) सिरकेकी मात्रा ३॥ मासेसे ७॥ मासेतककी है (२२) पके हुए जामूनका सिरका पिलानेसे अजीर्ण और उसकी दाह मिटती है (२३) मसूड़ोंका डीलापन और उनकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके ताजे पत्तोंके रससे कुल्ले करेना चाहिये (२४) पका हुआ जामून कुछ खटा और ग्राही होता है (२५) जामूनकी गुठली परसे उसकी गिर उतार उसमें कुछ नमक मिला एक घंटे तक पडी रखनेसे बहुत स्वादिष्ट होजाती है (२६) बहुत जामून खानेसे ज्वर आने लगजाता है (२७) इसकी लकड़ीके कोयले का मंजन करनेसे मसूड़ोंसे रुधिर निकलना बन्ध होजाता है (२८) इसकी कोपलोंके दो तोले रसमें थोडा बुरा मिलाके पिलानेसे अर्शसे रुधिरकी निकलना बन्ध होजाता है (२९) इसकी छाल और पत्तोंके काथसे बगलको धोनेसे उसकी गन्ध मिट जाती है (३०) इसकी और आमकी छालके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे व्रमन और तृषा मिटती है (३१) इसके २॥ पत्ते पानीमें पीसके पिलानेसे विपल जीवोंका विप उतरता है (३२) आम और जामूनके पत्ते और छालको पानीमें ओटोकर सींचा लेनेसे काचका निरुलना बन्ध होता है (३३) इसका शर्वत विष्टम्भी औषधियोंके साथमें पिलानेसे संग्रहणी अति-

सार और अर्श मिटते हैं ( ३४ ) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे अग्नि-  
दग्ध का सफेद दाग मिटता है ( ३५ ) इसकी और आमकी गुठलीकी गिरको  
पानीमें पीसकर मलनेसे मुखकी भाई मिटती है ।

गुण—यह कपला, खटा, ग्राही, मीठा, पाचक, रुच, रोचक है ।  
संख्या ( २१८ )  
( सं० ) जयन्ती, बलामोटा, हरिता, सूक्ष्ममूला ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	बल मोटा	शीर्षाखपाट	जयती	जयती		सोमेन्दा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अङ्ग्रेजी	
	तोगरसे			<i>Sesbania aegyptiaca</i> <i>Aeschynomene sesban</i>		

स्थान—जयन्ती हिन्दुस्थानमें सब ठौर होती है ।

प्राहिचान—जयन्तीका दृष्ट ८, १२ और नदियोंके किनारे १५, २०  
फुट ऊंचा होता है । यह बहुत वर्षों तक नहीं रहता है, इसकी एक सँकपर  
१० से २० जोड़े पत्तोंके लगते हैं इसकी फली ६ से ८ इंच लम्बी होती है  
उसमें २० से ३० तक बीज निकलते हैं ।

फूलने फलनेका समय—वसंतमें इसके पुष्प लगते हैं ।

प्रयोग—( १ ) इसके बीज उत्तेजक और ग्राही हैं ( २ ) इसके बीजोंके  
प्रयोगसे मासिकधर्म का कष्ट मिटता है ( ३ ) तिल्ली कटनेके लिये इसके बीजोंकी  
फली देनी चाहिये ( ४ ) इसके बीज और अर्शसके चूर्णकी फली देनेसे अ-  
तिसार मिटता है ( ५ ) इसके बीजोंकी फली देके ऊपर रसोतका हिम पिला-  
नेसे रक्तप्रदर मिटता है ( ६ ) इसको पवाडके बीजोंके साथ पीसके शरीर  
पर मर्दन करनेसे पामा और त्वचाके कई प्रकारके रोग मिटते हैं ( ७ )  
इसकी छालका रस पिलानेसे पामा मिटती है ( ८ ) दूसरी प्रकारके फोड़े फु-  
न्सी मिटानेके लिये इसकी छालके रसमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये  
( ९ ) फोड़ेको जन्दी पकानेके लिये इसके पत्तोंका पुन्डिस बांधना चाहिये

(१०) मूत्रज, अंडवृद्धि और गठियाकी मूजन विखेरने के लिये, इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये (११) शरीरकी सुजली मिटानेके लिये, इसके बीजोंके घूर्णको आठमें मिलाके उबटना करना चाहिये (१२) इसके बीजोंको दिखाते रहने से कई मनुष्योंका विच्छूका विष उतरजाता है (१३) इसके ताजे पत्तोंका ५ तोले रस पिलानेसे पेटके कीड़े मरते हैं (१४) इसके पत्ते हल्दी और कादा या लसणको पीसके लेप करनेसे शोथ विखर जाती है (१५) इन सबको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे उस ठौरपर छाला उठजाता है (१६) इसके पुष्पोंको तिहरीके तेलमें थोड़ा उस तेलको सिर, छाती और कनपटियों पर लगानेसे गहता हुआ प्रतिश्याय मिटता है (१७) इसकी जड़को पीस विच्छूके दशपर लेप करनेसे विच्छूका विष उतरता है (१८) पीपवाले फांडे को जल्दी पकानेके लिये इसके पत्तोंका पुल्टिस बांधना चाहिये, इससे ब्रह्म-फोडा जल्दी पकके उसका पीप पकी हुई चमडीके पास चला आता है (१९) जयंतीकी जड़को हाथमें लेके जहातक विच्छूका विष चढा हो वहासे जहा काटा हो वहातक हाथको एक इंच दूर रखकर हाथकी अगुलियोंको टेढ़ी कर अर्थात् सर्पके फणके जैसे करके बार बार भाड़नेसे विच्छूका विष उतरजाता है ।

गुण—यह कड़वी, चरपरी, उष्ण, और वातनाशक है ।

संख्या (२१६)

( सं० ) जलं, पानीयं, सलिलं, नीरं, जीवनम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जल, पाणी	जल, पानी	पाणी	पाणी	जल	पानी	नीछु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तप्पीर	मीरु	मा	आव	Aqua	water	

प्रयोग—( १ ) हर किसी प्रकारके विषमें गर्म पानी पिलाकर वमन करानेसे विष उतरता है । ( २ ) ठण्डे पानीकी नस्य देनेसे नकमीर बन्ध होती है ( ३ ) ईट बुझाये हुए पानीको ठण्डा करके पिलानेसे वमन बन्ध होती है ( ४ )

वादीकी तृपा मिटानेके लिये सोना, रूपा, या इट बुझायाहुआ, या छोटीया हुआ पानी पिलाने चाहिये (५) पानीमें मधु या शकर मिलाकर पिलानेसे तृपा मिटतीहै (६) मधु मिलाहुआ ठण्डा पानी पेटभर पिलाके वमन करानेसे तृपा शान्त होतीहै (७) जलमें मिथ्री मिलाके पिलानेसे दाह मिटतीहै (८) वन्तिपर उष्ण जलकी धारा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटतीहै (९) उष्ण जलकी ठण्डा कर उसमें मधु मिलाके पिलानेसे मेदवृद्धि मिटतीहै (१०) दूध, शकर और पानी मिलाकर मस्तकपर तरडा (छाटा) देनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (११) मस्तकपर ठण्डा पानी डालनेसे नकसीर बन्ध होतीहै (१२) गर्म पानीकी मस्तकपर तरडा देनेसे उसकी गर्मी मस्तकमें पहुंचनेसे प्रतिश्याय मिटतीहै (१३) गर्म पानीके कुत्ते करनेसे मसूडोंकी पीडा मिटतीहै (१४) गर्म लोह की बुझायाहुआ पानी पिलानेसे तिह्नीके विकार मिटतेहै (१५) जिस ठौर विच्छू काटा हो उसपर उष्ण जलकी धारा देनेसे अथवा उस अंगको उष्ण जलमें रखनेसे विष उतर जाताहै (१६) गर्म जलमें नोन मिलाकर विच्छूके देशपर मलनेसे विष उतरताहै (१७) ठण्डा जल पानेसे मूच्छी दूर होतीहै (१८) शीतल जल पिलानेसे रक्तपित्त और मदात्पय मिटताहै (१९) पेट भरके ठण्डा जल पानेसे सुपारीका मद उतरताहै (२०) गर्म जलमें एरंडका तेल मिलाकर पिलानेसे शूलयुक्त गुल्म रोग मिटताहै (२१) मुंहमें पानी भर लेवे फिर जलसे नेत्रोंको छाटनेसे तिमिररोग मिटताहै परन्तु जब मुखका पानी गर्म हो जावे तब उसे थूक देवे और दूसरा ठण्डा पानी फिर मुखमें भर लेवे (२२) जलकी नस्य लेनेसे आधाशीशी मिटतीहै (२३) ठण्डे पानीसे स्नान करानेसे पित्तकी मस्तकपीडा मिटतीहै (२४) गर्म पानीसे गरारा करानेसे कंठकी सूजन मिटतीहै (२५) मुंहपर ठण्डा पानी छाटनेसे मर्छी मिटतीहै (२६) गर्म जलसे हाथपांव और तलवोंको धोनेसे या तरडा देनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (२७) सेंधे नमकको महीन पीस जलके साथ नस्य देनेसे हिचकी बन्ध होतीहै ।

सख्या (२२०)

(सं०) जाती, मनोज्ञा, सुमना, तैलभाविनी व - (२१)

रिवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
चमेली	चोली	चमेली	चमेली	चमेली	चमेली	चमेली
विडी	कनीटकी	अरबी	फारसी	लटिन	अरबी	
विपुष्य	जाजि	आचमनि	गुडुहाइयन्	Jasminum grandiflorum	Jasmine	Flu spanish

स्थान - चमेलीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

पाहचान - इसका एक बड़ा भाग होताहै, इसका तीनसे ५ तक जोड़े

पत्तोंके लगतेहैं, इसके सफेद पुष्प लगतेहैं, उनमें मीठी सुगंध आतीहै।

फूलने फूलने का समय - इसके फागुनसे भाद्र तक पुष्प लगतेहैं।

विशेष - (१) इसके पुष्पांसे सुगंधित तेल बनाया जाताहै वह ठण्डा होताहै और शरीरके दाह मिटानेके लिये उसका मर्दन करतेहैं। (२) इसके पत्तोंका काथ-पिलानेसे त्वचाके रोग-मुखपाक-और कानकी पीड़ा-आदि रोग मिटतेहैं। (३) इसके पत्तोंके ताजे रसको लगानेसे पेटकी अगुलियोंके नोचके नाम आटन मिटतेहैं। (४) चमेलीके पंचागका काथ-पिलानेसे तिल्ली आदि मंत्रोंके बहावकी रुकावट-और मासिकधर्मकी रुकावट-मिटतीहै। (५) इसके पत्तोंका काथ कुमिनोशक और मूत्रवर्द्धकहै। (६) त्वचाके रोग, मसूरीडा और नेत्रोंकी निर्बलता मिटानेके लिये इसके पुष्पोंकी या उनके मारुका लेप करना चाहिये। (७) पत्तोंको आटाके कुत्ते करनेसे दांत और डोढ़की पीड़ा मिटतीहै। (८) इसके पत्तोंका चमनेमें मुखकी क्लिष्टकी घाब मिटतीहै। (९) इनको घीमें तलाके चवानेसे भी वही गुण होताहै। (१०) शरीर पर चमेलीका तेल मर्दन करनेसे ठंडी और सूखी घातुका प्रभाव नहीं होताहै। (११) इसके शापुष्पोंको गुह्यगोचनके साथ पीतके नाकमें टपकानेमें मस्तकी पीड़ा मिटतीहै। (१२) इसके पुष्पोंके रसमें तेल बनाके इन्द्रोपर मलनेमें ध्वजभंगता मिटतीहै। (१३) इसके किलेमें अनुवा भिलाके कानमें डोलनेमें उसकी खुनली मिटतीहै। (१४) इसके चमने तेलन पोया भिगोके नाभपर रखनेमें वायुशूल मिटतीहै। (१५) इसके पत्तोंके किलेमें राई पीसके इन्द्रो, पेड़ और जीवा पर

लेप करनेसे नंपुसकता मिटती है ( १६ ) इसके पत्तोंके काथसे इन्दीको धोनेसे उपदंशके क्षत्र मिटते है ( १७ ) इसके ताजे पत्तोंका २ तोले रस, गायका २ तोले घी और २ तोले राल इन सबको एकत्र करके पिलानेसे पांच प्रकारका उपदंश मिटता है । इसको लेनेके समय घी, दूध और गेहूँका पथ्य खाना चाहिये ( १८ ) इसके पत्तोंको चबानेसे मुखपाक मिटता है ( १९ ) इसके पत्तोंके तेल को कानमें डालनेसे पूतिकर्ण मिटता है । इसके तेल में कपूर मिलाकर मलने से खुजली मिटती है ।

गुण—यह कपैली, कड़वी, व्रण, कुष्ठ, विप, रक्तपित्तको मिटाती है ।

संख्या ( २२१ )

(सं०) जातिपत्री, जातिकोषा, जातिफलत्वक्, जातीपत्री ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जावित्री	जावित्री	जांबत्री	जायवनी	जयत्री	जावित्री	जाजीपतिरि
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
जापत्रि	जापत्रि	विसवासाह	वज्रवानज	It is the aril of myristica fragrans.	The mace.	

स्थान—जापत्री और जायफल एकही वृक्षके अंग है इसवास्ते इसके स्थानादिक जायफलके साथ लिखे हैं ।

प्रयोग—( १ ) हल्का ब्वर छुड़ानेके लिये जावित्री दी जाती है ( २ ) क्षयरोगमें जावित्रीका प्रयोग बहुत उपकारी है ( ३ ) कफकी तरीसे जा आस होता है उसमें जावित्रीको पानमें रखके खिलाना चाहिये ( ४ ) शरीरको कुश करनेवाले और आतोंके पुराने रोगोंमें ४ से ६ रतीतक और आवश्यकता हो तो १५ रती तक जावित्रीकी मात्रा देना चाहिये । इसकी अधिक मात्रा देने में बहुत सावधानी रखना चाहिये क्योंकि इससे मूर्च्छा और बहुत नशा आजाता है ( ५ ) यह पुरुषार्थ बढ़ाती है । पेटकी, बादीकी, पीड़ा और मंदाग्नि को मिटाती है ( ६ ) जावित्रीको सेककर खिलानेसे विसूचिकाके दस्त मिटते हैं ( ७ ) सेकीहुई जावित्रीको काली भिरचके साथ खिलानेसे यकृत और ग्रह





द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	ग्रीकी
जादिकाइ	जाजिकाय	जोजबोवा		Myristicae fr. grand. M. Officinalis.	Theriacum

स्थान - जायफलके वृक्ष मोलुकाके, टापूम, वंदाके ज्वालामुखी पहाड़ोंमें होतेहैं। अब हिन्दुस्थानमें नीलगिरी पहाड़ों पर इसके वृक्ष बोये जाते हैं और औरभी कई ठौर इसके वृक्ष बोये जातेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष ४०; ५० फुट ऊंचा होताहै। इसके पत्ते वसतच्छतु में नहीं गिरतेहैं।

प्रयोग—(१) जायफल-गन्दाग्निकी एक-बहुत अच्छी औषधिहै (२) यह हृदय और शरीरका बल बढ़ाताहै (३) रक्तको दूध छुड़ानेसे जो उपद्रव होतेहैं उनको मिटानेके लिये जायफल दियाजाताहै (४) जायफल की अधिक मात्रा देनेसे बहुत नशा आजाताहै और मूर्च्छा-होजातीहै (५) ताजे-जायफलके, रसको पानीमें मिलाके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटताहै (६) त्वचामें खसैजना प्रैदा, करनेके लिये जायफलका उडनेवाला तेल मर्दन करनेचाहिये (७) जायफल का गाढा तेल भी इसी काममें आताहै (८) मस्तकपीडा, मिटानेके लिये जायफलका लेप करना चाहिये (९) आंखोंपर इसका लेप करनेमें इयाने बढ़तीहै (१०) जायफल उत्तेजक और पेटकी, वादीकी पीडा मिटानेवालाहै (११) अस्तिसे ३ मास तक जायफल खिलानेसे हल्की पटाग्न, अफारा, शूल और अतिसार मिटताहै (१२) जायफलको टण्डे पानीमें घिसके पिलानेसे विमूचिकाके रोगीकी तृप्ता भिडतीहै (१३) जायफलको यंत्रमें दबानेसे जो तेल निकलताहै उससे गठिया, अर्द्धांग और मोचका दबानेमिटताहै (१४) जायफलमें एक छोटा छिद्र करके उसको भीतासे पेलकर उसमें थोडा अफीम भर उसी बूसे उसके छिद्रको बन्धकर फिर बोडी आटा आसण कर उसको उसमें लपट भूषलमें सेकपीके उसको पीसके गोखिया बनालेव, इन गोखियाकी उचित मात्रा देनेसे अतिसार मिटताहै (१५) इस गालीको ठेके ऊपर दूध पिलानेसे बल बढ़ताहै (१६) गाखियाकी पीडा मिटानेके लिये इन गोखियाको साठ रू कार्य

कसायदेना चाहिये ( ११ ) । जायफल और जंगली असवके फलको पीस गाली वनाके मुखमें रखनेसे द्रवपीडा मिटती है ( १२ ) कर्णमूलकी गांठ और दूसरी पेशियों की शोधको मिटानेके लिये जायफलको पीसके बना पर लोपकरना चाहिये ( १६ ) जायफलके चूर्णमें घी, खांड मिलाके, चटानेसे बच्चोंका आमातिसार मिटता है ( २० ) । जायफलको तेलमें घिसके, मर्दन करने से विमूचिकाके वाइटे मिटते है ( २१ ) । भीतरके यंत्रोंमें रुधिरके जमावको बिखेरनेके लिये जायफलको तेलमें घिसके मर्दन करना चाहिये ( २२ ) मिरगी वालेके गलेमें जायफल लटकानसे लाभ होता है ( २३ ) अर्दित रोगमें जायफलको मुखमें रखनेसे लाभ होता है ( २४ ) ठण्डे पानीमें इसके घिसके पिलाने

से तृप्ता और जीमूचलाना मिटता है ( २५ ) इसका लोप करनेसे शरीरके नीले और काले और चट्टे मिटते है इसमेंसे दो प्रकारका तेल निकलता है एक सफेद चरपरा, जायफलके जसा तीव्र गंधवाला होता है । दूसरा कुछ पीले रंग

का और गाढा होता है उसको जायफलका मक्खन कहते है । इसका तेल निकालने की दो रीतिया है ( १ ) जायफलको रूट पानीमें भिगो भभकेमें अर्क खंचनेसे उसकेसाथ तेल निकल आता है ( २ ) जायफलको रूट गरम जलमें

सिजाकर गर्म २ को दवानसे गाढा तेल निकल आता है जो बह उदा होने पर जम जाता है ।

गुण — यह तिक्त, उष्ण, रोचक, लघु, कुड, दीपन और प्राही है ।

स्थान — जंगली जायफलके वृक्ष कोकर्म, कनारी और उत्तर मल्लवारमें होते है ।

प्रायोग — ( १ ) इसको तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटती है ( २ ) इसका लोप करनेसे वादीकी पीडा मिटती है ( ३ ) इसको सेका पीसा उसा चूर्णको दिनमें २, ३ बेर देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटता है ( ४ ) निम्न

लानेके लिये इसके चूर्णको मधुमें चटना चाहिये (५) वादी मिटानेके लिये आहिफेनके साथ इसकी गोली बनाके खिलानी चाहिये (६) यह असली जायफलसे बहुत बड़ा होता है जैसे रागपत्रीको जावित्रीके बदलेमें बेच देते हैं वैसेही जंगली जायफलको भी जायफलके बदलेमें घोखेसे देते हैं। इसके बीजों को कूटकर पानीमें आंठानेसे एक जपनेवाला कुछ पीले रंगका तैल निकलता है।

संख्या ( २२५ )

( सं० ) जिङ्गिनी, सुनिर्यासा, गुडमञ्जरी, मोदनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलुड़ी
जिगणी	जिगिणी (नी)	मवडी	मोई, मोक	गुलडुली	कालीसिम्बल	गिलिभिरिन्त
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Odina woder,		

स्थान—जिगिनीके वृक्ष हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होते हैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ४०, ५० फुट ऊंचा होता है, इसकी पेड़की सीधी होती है उसकी गुलाई ५, ६ फुट होती है। इसके बड़ी और फैली हुई थोड़ी डालियां होती हैं। इसकी छाल भूरी या कुछ काले रंगकी और चिकनी होती है, पोप, माघ या वसंत ऋतुमें इसके पुराने पत्ते गिरके जेठ तक नवीन आजाते हैं। इसकी शाखाओंके अन्तमें थोड़े पत्ते लगे रहते हैं। इसके फल पकने पर लाल रंगके होजाते हैं। वसंत ऋतुमें इसके कुछ पीला और सफेद रंगका गोंद लगता है वह पानीमें आधा गलता है और आधा नहीं गलता है इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाता है।

फूलने, फलनेका समय—माघसे चैत तक—इसके पुष्प लगते हैं और जेठसे फल पकने लगते हैं।

प्रयोग—( १ ) इसकी छाल आही है ( २ ) इसकी छालके काथको

गाढा करके फोड़े फुन्सियों पर लेप करना चाहिये ( ३ ) भरे नींगले फोड़े पर इस गाढ़े काथका लेप करना बहुत उपकारी है ( ४ ) इसकी छालके काथके इस्तेमाल करनेसे मसूड़ोंका ढीलापन मिटता है ( ५ ) इसकी छालको नीमके तेलमें पीसके लगानेसे पुराने और भरे नींगले फोड़े मिटते हैं ( ६ ) इसके गोंदको नारियलके दूधमें पीसके लेप करनेसे मोच और चोटकी पीड़ा मिटती है ( ७ ) इसके पत्तोंको तेलमें थोड़ाके बांधनेसे मोच और चोटकी पीड़ा मिटती है ( ८ ) इसके पत्तोंको काथ पिलानेसे श्वास मिटता है ( ९ ) स्त्रियोंके हृदयका बल बढ़ानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये ( १० ) गठियाकी पीड़ा मिटानेके लिये कई प्रकारके लेप और तेलों में इसका प्रयोग किया जाता है ( ११ ) अहिफेन या दूसरे विषोंमें जो मूर्च्छा हो गई हो उसको मिटानेके लिये इसके ताजे पत्तोंके १० तोले रसमें ५ तोले इन्डुलीको मसल ब्यान पिलाके चमन कराना चाहिये ।

गुण—यह मधुर, उष्ण, कटु और कपली होती है । मुख दुर्गन्ध, तृषा वात और कफके रोगोंको मिटाती है ।

संख्या ( २२६ )

( सं० ) जीरकः, जरण. अजाजी, कणजीरक. ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलंगी
जीरो	सफेदजीरा	जीरू, जीरी	पादरीजिर	जीरा	सुभेदजीरा	जिलकर
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शीराभ	जीरिंगे	कम्बू	जीराखमी	Cuminum Cuminum	Cumini	

स्थान—जीरा बंगाल और आसामके सिवाय हिन्दुस्थानके बहुतसे भागों में कहीं थोड़ा और कहीं बहुत बोया जाता है ।

प्रयोग—( १ ) पेटका अफार और शूल मिटानेवाली औषधियोंमें दो मासे जीरेको मिलाके देना चाहिये ( २ ) जीरेको नींबू के रसमें भिगो कुछ

नमक मिलाके खटाईको जीरा वनातहै । गंधवती स्त्रीजी मिवलाना और खाली होवड इसी जीरेसे बन्ध होजातीहै ( ३१ ) जीरेको पाक बनाके खिलानेसे बच्चेकी मान्का दूध बढ़ताहै ( ३४ ) जीरेकी धूमि चुपड़ नलिकाद्वारा उमकी धूनी पीनेसे हिचकी मिटतीहै ( ३५ ) जीरा, शूलमिट्टीनवाला, उत्तेजक और ग्राहीहै ( ३६ ) यह ज्वर और अतिसारमें उपकारीहै ( ३७ ) जीरा ममेलिके काममें आताहै ( ३८ ) यह ठंडा है इसलिये पूत्रकृच्छ्री कई औषधियोंमें मिलाया जाताहै ( ३९ ) इसको लेप करनेसे दाह और पीडा मिटतीहै ( ४० ) इसको और नमकको पीसवी और मधुगंधिला गंधकर अथवा ठण्डा लेप करनेसे बिच्छू का विष उतरताहै ( ४१ ) यह छोकनेके काममें आताहै ( ४२ ) इसके और इसके तेलके गुण एकसे ही है ( ४३ ) इहमें जीरेको चूर्ण मिलाके खानेसे अतिसार मिटताहै ( ४४ ) ४ तोले जीरा और २ तोले सिंदूरको ३२ तोले कडवे तेलमें पचाके लगानेसे पामा मिटतीहै ( ४५ ) जीरे और धनियेके कलक से पिसद्व कियेहुए धीके सेवनसे मंदाग्नि और वातपित्तके रोग मित्तहै और रुचि बढ़तीहै ( ४६ ) जीरेके चूर्णको रुचनारक मिलाके रसमें मिलाके लेनेसे संताप मिटताहै ( ४७ ) ६ मासे जीरेको एक तोले शकर और ४ तोले मधुमें मिलाकर चटानेसे रुचि बढ़तीहै ( ४८ ) जीरेको रेशमीन कपडेमें लपेट बची बना उसका धुआ जाकमें सूधनेसे बहुत दिनोंकी वमन बन्ध जाती है ( ४९ ) इसके चूर्णको गुडमें मिलाके खाने से मंदाग्नि, विषमज्वर और वातके रोग मित्तहै ( ५० ) सोंठ और जीरेको पानी के साथ पीसके लगानेसे मरुडीका विष उतरताहै ( ५१ ) जीरेको तिरकेमें ओटा पीसके पिलानेसे ट्पा और हिचकी मिटतीहै ( ५२ ) जीरा और १५ तम काली मिरचको घोट छानकर पिलानेसे कुत्तेको विष उतरताहै ( ५३ ) जीरा और काली मिरचको पानीके साथ पीस ओटाके मर्दन करनेसे अंड कोपका कडापन मित्तहै ( ५४ ) जीरेका तेल बनाया जाताहै और जीरेमें भी एक प्रकारका तेल होताहै ॥

गुण—यह कटु, ग्राही, दीपन, लघु, कुष्ठ उष्ण और मधुर होताहै ।

सख्या ( ३३७ )

( सं० ) कृष्णजीरकः कृष्णजाजी, जरणा, कालजीरकः ।।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
श्याजीरो	कालाजीरा	शाजीरु	शहाजिरे	कृष्णजीरा	कालाजीरा	तल्लजिकरु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कहूरीराम	फरिजीरिगे	कमुकिर- मासी	सियाहजीरा	<i>Carum nigrum.</i>	<i>Caraway</i>	

स्थान—कालाजीरा हिन्दुस्थानके बहुतेस भागमें बोया जाता है।

प्रयोग—( १ ) सियाह जीरा अफारा, शूल, हल्की मन्दाग्नि और आतोंके वाइरोंको मिटाता है ( २ ) इसका तेल उत्तेजक है ( ३ ) विरेचनकी गोलियां बनानेमें सियाहजीरा डाला जाता है ( ४ ) ७। मासे सियाह जीरेको पाव ओटते हुए जलमें डाल फांट बनाकर उससे आँखोंको धोनेसे ज्योति बढ़ती है ( ५ ) इसका काथ पिलानेसे पेटके कीड़े मरते है ( ६ ) इसका शयत पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है ( ७ ) गर्भाशयकी सूजन मिटानेके लिये इसके काथसे पात्रको भरकर उसमें स्त्रीका बैठाना चाहिये ( ८ ) जो अग्नि बाहिर लटकते हैं और पीडा करते हैं तो उनपर इसका पुलिस पाथना चाहिये ( ९ ) इसको घीसे चुपडकर नलिका द्वारा धूम्रां सूघनेसे प्रतिश्याय मिटता है इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलता है वह पीले रंगका और पतला होता है उसमें सियाहजीरे जैसी तीव्र गंध और स्वाद होता है।

संख्या ( २२८ ) -  
( सं० ) वनजीरक, तिक्तजीरक, बृहत्पाली, अरग्यजीरकः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
फालाजीरी	वनजीरा	काळीजीरी	फिडुजीरी	वनजीरे	कालाजीरा	शडविजि- लहर
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
फाटुशीरहम्	काहुजीरगे			<i>Vern nia anthelmintica seccatula A.</i>	<i>The purple flag lane</i>	

स्थान—कालीजीरी हिन्दुस्थानमें सब ठौर होती है ।

प्रयोग—( १ ) काली जीरी, श्वेतकृष्ट और त्वचाके रोगोंमें बहुत काम आती है ( २ ) यह कृमिनाशक है परन्तु इकल्ली इस काममें कम आती है ( ३ ) त्वचाके पुराने रोग मिटानेके लिये इसको इसी गुणवाली दूसरी औषधियोंके साथ मिलाके देते है ( ४ ) कुष्ठ और कृष्ट सम्बन्धी दूसरे रोगोंमें वर्षभर तक इसकी फकी नित्य लेनी चाहिये अथवा कालीजीरी और तिलोंको निवाये जलमें भिगो घोट ब्रानके पिलाना चाहिये परन्तु इसके पहिले धूप या और किसी रीतिसे शरीरका पसीना निकाल देना चाहिये, इसमें दूध चावलोंका पथ्य देना चाहिये ( ५ ) आँतोंके कीड़े और कफ निकालनेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये ( ६ ) कफकी गाँठोंको विखेरनेके लिये इसका पुन्डिस बांधना या लेप करना चाहिये ( ७ ) इसको खाने पीनेके काममें कम लाना चाहिये क्योंकि इससे कभी २ उपद्रवभी हो जाते हैं ( ८ ) कफ और अफारा मिटानेके लिये इसका काथ पिलाते है ( ९ ) सर्पका विष उतारनेके लिये इसको विषनाशक औषधियोंके साथ मिलाके देते है ( १० ) सर्वांग जलमय शोथ को मिटानेके लिये काली जीरीकी फकी देते है ( ११ ) पीपवाले बड़े फोड़ों पर इसको लेप करते है ( १२ ) ज्वर छुड़ानेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है ( १४ ) रसायनकी रीतिपर इसका सेवन करनेसे आयु बढ़ती है बुढापा जाता रहता है और बालोंका सफेद होना बन्द हो जाता है ( १५ ) इसकी साधारण मात्रा ५, ६ मासेकी है इसकी एक मात्रा देके फिर ४, ५ घंटेके पीछे दूसरी मात्रा देके एरंड का तेल या और सारक औषधि देना चाहिये ( १६ ) किसी २ को काली जीरीके ५ रतीसे २ मासे तक चूर्णकी मात्रा देनेसे पेटके कीड़े मरके बाहिर निकल जाते है ( १७ ) १। मासेसे १।। मासे तक चूर्णकी फकी देनेसे बल बढ़ता है ( १८ ) इसी मात्रासे आमाशयकी शूल मिटती है ( १९ ) इसको ठण्डे जलके साथ घोट ब्रानके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है ( २० ) इसको नीबू के रसमें पीसके लेप करने से जूबें, लीकें मरती है ( २१ ) इसके बीजोंमें जहरीली छूत मिटानेकी शक्ति है ( २२ ) काली जीरीके पोथेकी मकानमें धूनी देनेसे अथवा उसको पीसके आंगन में विखेर देनेसे कई प्रकारके विपैल जीव उस मकानमें से बाहिर निकल जाते है ( २३ ) इसको और

कलौजीको पीसके लेफ करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै ( २४ ) इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै ।

संख्या ( २२६ )

( सं० ) स्थूलजीरक., जर्णा, काली, बहुगंधा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
फकौजी	फलौजी	कलौजी जीरुं	कळोजां	कलौजी	कलौजी	
द्राविड़ी	कूर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		हब्यतुसोदा	शम्भोनीजू	<i>Nigella, sativa</i> ✓ India.	Small fennel or black cumin	

स्थान--कलौजी हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोई जातीहै ।

प्रयोग--( १ ) कलौजी चरपरी और सुगंध युक्त होतीहै ( २ ) पेट और आमाशयकी, वादीकी पीड़ा, अजीर्ण, मंदाग्नि, ज्वर और अतिसारको मिटातीहै ( ३ ) इसके प्रयोगसे स्त्रियोंके दूध बढ़ताहै ( ४ ) यह--उष्ण, कृश करनेवाली, फोड़ोंको पकाने और साफ करनेवाली और मूत्रवर्द्धक है ( ५ ) सर्दोंके उपद्रवोंको मिटानेके लिये इसकी फकी देतेहै ( ६ ) इसके प्रयोगसे कीड़े मरतेहैं ( ७ ) ५ रतीसे २॥ मासेतक कलौजीके चूर्णकी फकी देनेसे शरीरकी ऊष्मा, नाड़ीकी चाल और शरीरके भीतरके यंत्रोंका सब प्रवाह बढ़ जाताहै वृक्क और त्वचाका प्रवाह अधिक बढ़ताहै ( ८ ) ५ रतीसे १॥ मासेतक कलौजीके चूर्णकी फकी देनेसे कष्टसे मासिक धर्म होना बन्ध होजाताहै ( ९ ) यह गर्भवतीको नहीं देनी चाहिये ( १० ) बलवर्द्धक औषधियोंमें इसकी भी गिनतीहै ( ११ ) यह रेचक औषधियोंके साथ दीजातीहै ( १२ ) बच्चेकी माका दूध सुधारनेके लिये उसको शाक या खड़ीके साथ कलौजी खिलानी चाहिये ( १३ ) इसके बीजोंको गर्मकर दरगन्ध मलमलके कपड़ेमें धाध लगातार सूखते रहनेसे मस्तककी सर्दी और प्रतिश्याय मिटताहै ( १४ ) कपूर और कलौजी



को पीसके ऊनी कपड़ेमें रखनेसे कीड़े नहीं लगतेहै ( १५ ) दूसरी कुष्ठनाशक औषधियोंके साथ इसको खोपरेके तेलमें पीसके मर्दन करनेमें कुष्ठसस्त्रन्धी त्वचाके कई रोग मिटतेहै ( १६ ) कलौजी ५ तोले व वची ५ तोले, गूगल ५ तोले दाहहलदी की जड़ ५ तोले गंधक २॥ तोले नारियलका तेल दो बोतल इन सब चीजोंको दरगचके तेलमें डाल दोतलमें भर काक लगाकर ७ दिनतक धुपमें धरी रखें और उसको दिनमें दोतीन बेर खूब हिला दिया करें।

इस। तैलका मर्दन करनेसे कुष्ठआदि त्वचाके रोग मिटतेहै ( १७ ) इसके तीन मासे चूर्णको ३ मासे मक्खनमें मिलाके चटानेसे हिचकी बन्ध होतीहै ( १८ ) इसके ७ दाने सौ के दूधमें पीसकर नाकमें टपानेसे कामलारोग का श्रेष्ठ प्रीलापन मिटजाताहै ( १९ ) इसका काथ पिलानेसे कामला मिटताहै ( २० ) इसको पानीके साथ पीसकर बालोंमें मलनेसे बाल बढ़ने लगतेहैं और उनका गिरना बन्ध होजाताहै ( २१ ) कलौजी और एलुवेकी वची

बनाके गुदामं देनेसे चुरने मरतेहै ( २२ ) इसका और काले जीरेका लेप करनेसे सदीकी मस्तकपीडा मिटताहै ( २३ ) कलौजीके एक तोले चूर्णको मधुके साथ बारीके दिन चटानेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै ( २४ ) इसको मद्यम मिलाके लगानेसे बन्दरका विष उतरताहै ( २५ ) इसको गुडमें मिलाके देनेसे विष। ज्वर छूटताहै ( २६ ) भुनी कलौजी २ मासे नोसादर २ मासे और सोंठ ३ मासे इनको पीस पोस्टी बाधके सूघनेसे प्रतिश्याय मिटताहै ( २७ ) इसका पाक बनाके खिलानेसे कुत्तेका विष उतरताहै ( २८ ) इसके पाकसे उदरकी चातपीडा, कृमि, अफारा और कफके रोग मिटतेहै ( २९ ) इसकी भस्मके मेलनेसे अर्श मिटतेहै ( ३० ) इसकी भस्मको मधुमें मिला बची बनाकर

गुदामं रखनेसे अर्श मिटतेहै ( ३१ ) इसके चूर्णकी पकी देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै ( ३२ ) इसको दहीमें पीसके लेप करनेसे नारू मिटताहै ( ३३ ) इनको शिरकेमें पीस रातके समय मुखपर लेप करके प्रातःकाल धोडालनेसे मुंहासे अर्थात् जवानीकी फुन्सिया मिटतीहै ( ३४ ) इसी लेपसे त्वचाके सफेद चट्टे मिटतेहै ( ३५ ) इसके बीजोंमेंसे दो प्रकारका तेल निकलताहै एक काले रंगका सुगंध युक्त और उड़नेवाला होताहै। दूसरा स्वच्छ प्रायः रंग रहित अर्थात् श्वेत और परखडके तेल जैसा गाढा होता है।

संख्या (१३०) ज्योतिष्मती, स्वर्णलिता, कटभी, अनलप्रभा ।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलकी
मालिकागणी	मालकगनी	मालकागणी	मालकगणी	लताफकी	मालकागनी	मालकगुनिवित्तुल
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
काण्ड	गंगुगे	हब्वे किल	फारसी	<i>Calastrus paniculata</i> <i>Calastrotum</i>	The flower is plant black oil	

स्थान—यह भूखण्डों में आसाम तक, पूर्वी बंगाल, बिहार, दक्षिण, हिन्दु-स्थान, ब्रह्मा और सीलोन में होती है। (४१) इसके तेल का उपयोग—

पहिले—इसका भोजन करने की भांति होता है, अर्थात् वृत्तपर खदता है इसके काटे नहीं लगते हैं। इसके डोडे में तीन खाने होते हैं, उनमें ३, २, २, तक बीज निकलते हैं, और उस डोडे का रंग खाल होता है।

प्रयोग—(१) इसके बीजों को पानी में ओटा करके तेल निकालते हैं उस तैलकी १० से १५ बूट तक ३ दिन में दो बर देने से शरीर में चित्तन्यता पैदा होती है और कुछ घटो पीछे खुलासा पसीना हो जाता है परन्तु निर्बलता नहीं होती है (२) स्नायु, सम्बन्धी और किसी अंग के शूल और निश्चेष्टपन के जये रोग में इसका तेल बहुत उपकारी है (३) मालकागनी, लोबान, लॉग, जायफल और राजा-वित्री इन सबको मिलाकर अर्क खंचते हैं उसके साथ इन सबका तेल निकाला जाता है (४) इसके बीजों की फकी देने से गठिया और वादी के दूसरे रोग मिटते हैं (५) इसका खैरा हुआ तेल फुफ्फुस के रोगों में लाभकारी है। इसके लेने की रीति पहिले प्रयोग में लिखी है (६) मालकगनी के बीज, उष्ण, रुक्त, पुरुपाथ बढ़ाने वाले और उत्तेजक है। (७) गठिया छोटे जोड़ों की, मजन, पचाघात सम्बन्धी रोग, कष्ट और सर्दी से पैदा हुए दूसरे रोगों में मालकगनी को खाने और लगाने के काम में लाना चाहिये इसके खाने की यह रीति है कि पहिले दिन एक बीज खाना फिर नित्य एक एक बीज बढ़ाते जाना ऐसे १५ दिन में १५ बीज तक बढ़ाना। इसके बीजों को खाने का आरम्भ करे तबसे इसका तेल

लगानेका या मालकॅगनीके साथ ऐसीही दूसरी चीजोंको पीसके उस अंगपर लगानेका प्रारम्भ कर देवे ( ८ ) इसके बीज आदिका लेप, गाठियाँ और दूषित जल वायु आदिसे पैदा हुई पीड़ाको मिटाताहै ( ९ ) -मालकॅगनीके पत्तेभी औषधिके प्रयोग में आतेहैं ( १० ) इसके तेलको दूधकी लस्मीमें ढालके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ११ ) इसका तेल लगानेसे नासूर और लम्बे घाव मिटतेहैं ( १२ ) आमाशयके बिगाड़मेंभी यह तेल काममें आताहै ( १३ ) दूसरी कई औषधियोंको समाह या मर्हाने तक सेवन करनेसे जो रोग नहीं मिटतेहैं वे इस तेलके सेवन करनेसे तुरंत ठीक होने लगजातेहैं । इसके सेवनका पहिला उत्तम गुण तो यहहै कि मूत्रवृद्धि होके जलधर सम्बन्धी दूषित जल कम होने लग जाताहै । इसके सेवन करनेवाले रोगीको बहुत हल्की और बहुत थोड़ी चीजें खानेको देतेहैं अर्थात् दूध और रोटीके सिवाय कुछ नहीं देतेहैं ( १४ ) इसके तेलकी १० से ३० बूंद तक देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( १५ ) और ५ से १५ बूंद तक देनेसे पसीना आताहै और स्नायुजाल उत्तेजित हो जाताहै स्नायु सम्बन्धी रोग मिटानेके लिये मालकॅगनी को दूधमें ओटाके पिलातेहैं ( १६ ) मालकॅगनीके बीजोंको खीरमें मिलाके खानेसे नपुंसकता मिटतीहै ( १७ ) इसके तेलकी दश दश बूंदें नागर वेल्के पानमें लगाके दिनमें दो तीन बेर खानेसे नपुंसकता मिटतीहै परन्तु उन दिनमें दुग्ध और घृतका अधिक सेवन करना चाहिये ( १८ ) पांडु रोगकी जलयुक्त शोधमें इसके तेलका सेवन बहुत उपकारीहै ( १९ ) इसके और मंडूकपर्णाके पत्तोंके रसमें ढालझड़को पीसके लेप करनेसे कपालकी पित्तशोध मिटतीहै ( २० ) २ मासे मालकॅगनी और इलायचीदानेको निमलजानसे कफका श्वास मिटाताहै ( २१ ) इसके बीजोंको पीसके लेप करनेसे रक्तार्श मिटाताहै ( २२ ) इसके तेलकी मात्रा दूधके साथ देनेसे उदर रोग मिटतेहैं ( २३ ) इसको २१ दिन तक गोमूत्रमें भिगो उसका तेल निकालके लगानेसे श्वेतकुष्ठ मिटाताहै ( २४ ) इसके तेलका पगधलियोंपर मर्दन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै ( २५ ) जोड़ोंकी, चादीकी पीड़ा मिटानेके लिये और भूख बढानेके लिये मालकॅगनीका सेवन इस प्रकार करना चाहिये कि पहिले दिन एक दाना और दूसरे दिन दो ऐसे नित्य एक २ दाना बढाताजाय जब ऊष्मा अधिक बढती जान पड़ेतो उसी दिनसे एक २ दाना पीडा घटानेका श्वांरभ कर देना चाहिये ( २६ ) इसके तेलकी एक २ बूंद नित्य एक

भहीने तक सेवन करनेसे बुद्धि बढ़तीहै परन्तु इसके सेवनेके समय चावल और गायके घीका पथ्य लेना चाहिये। इसके बीजोंको यंत्रमें दबाकर तेल निकालते हैं वह तेल पीले रंगका और चरपरी मुग्धवाला होताहै।

संख्या ( २३१ )

❀ ( सं० ) महाज्योतिष्मती, सैजोवती, बहुरसा, कनकप्रभा ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मालकागणी	मालकागुनी	मालकाकणी	मालकागोणी	लताफटकी	उमजिनि	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Cardis jernum Hallecabum	Ballo u vino Heart pos.	

स्थान—इसकी बेल हिन्दुस्थानके बहुतसे जंगलोंमें और विशेष करके बंगाल और पश्चिमोत्तर देशमें होतीहै।

प्रयोग—( १ ) इसकी जड़ चामक, सारक, पेटकी शूलनाशक और चमड़ीको लाल करनेवालीहै ( २ ) यह पसीने लातीहै मूत्र और बल बढ़ाती है ( ३ ) इसको इरुल्ली, या दूसरी औषधियोंमें मिलाकर गठिया, स्नायुसम्बन्धी रोग और अर्श आदि कई रोगोंमें देतेहै ( ४ ) इसकी जड़का पांच छः तोले काथ दिनमें दो बेर पिलानेसे मल ढीला हो जाताहै ( ५ ) यह चैपदार होतीहै इसके स्वादसे कुछ जी मचलाताहै ( ६ ) इसके बीजोंके प्रयोगसे ज्वर में निर्मलता नहीं होतीहै ( ७ ) इसके बीजोंके सेवनसे पसीना होकर गठिया की पीड़ा कम हो जातीहै ( ८ ) इसके धुनेहुए पत्तोंकी फकी देनेसे मासिकधर्म में यथोचित रज आने लग जाताहै ( ९ ) इसके पत्ते, सज्जीखार, बच और भिर्जसारकी जड़की छाल इन सबको दूधमें पीस ४, ४ मासेकी मात्रा तीन दिन तक देनेसे स्त्रियों के मासिकधर्म में यथोचित रज निकलने लग जाता है ( १० ) कृष्णस सम्बन्धी रोगोंमें इसके पत्तोंका सेवन उपकारीहै ( ११ ) इसके पत्तों

\* मा० हि० बटी, गु० मोटी, म० थोर, ब० बड। ये वृक्त भापाके आदमि हैं।

को पीस एरुडके तेलके साथ पीनेमे गठिया और कुमरकी पीडा मिटती है (१२) इसके पत्ते और गुड़ को तेलमें रांधके दुःखती हुई आंखपर लेप करते हैं (१३) इसके पंचांगको तेलमें ओटा, अजान उस तेलको शरीर पर मर्दन करनेसे पित्तकी पीडा मिटती है (१४) अकढेहूए हाथ-पैरोंके और गठियाके ऊपर इसके पंचांगको पानीमें पीसके लेप करना चाहिये (१५) इसके बूटेको दूधमें भिगाके लेप करनेसे सूजन और कठोर गठि खर जाती है (१६) मालकगनी के पंचांगको रस सवात्ताले भर नित्य पीनेसे प्रासिकधर्म यथोचित होने लग जाता है (१७) इस रसमें मिश्री मिलाके पिलानेमे सूत्रकृच्छ्रकी दाह मिटती है इस के पत्ते और कौपल शाक बनानके काममें आती है।

संख्या-(२३२)

( सं० ) भावुक, पिचुलुः, भावूः, भावुः, अफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
भाऊ	भाऊ		सिरनाटी	भाऊगाभू		
द्राविडी	कनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		तफा	गुज	Tamox gallica T. indica	Tamoxale	

स्थान—भाऊके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सबठौर नदियोंके किनारे और समुद्रके पास बालूरतमें और खारडीभूमिमें होते हैं।

पहिचान—यह बीज और कलमसे लगाय जाता है इसका वृक्ष जबतक छोटा रहता है तबतक शीघ्रतासे बढ़ता है और जबकी जवानीको पहुँचके जन्दीही मरजाता है। इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होता है उसकी पेदङ्की गुलाई ३ फुटकी होती है। इसकी डालियें मुड़ीहुई होती है और नवीन छोटी डालियोंकी छाल कुछ ललाईलिये भूरे रंगकी और चिकनी होती है उसपर कुछ सफेद छोटे दाग होते हैं, इसकी पेदङ्की और बडी डालियोंकी छाल सतली कुछ हरी, भूरे रंगकी और खरदरी होती है। इसके बहुधा सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं।

इसके पत्तों को छोड़ दो। इसके पत्तों और पुरुषों जातिके पुष्प अलग-अलग नही होते। इसके डोंडू (गोबर) के गुणों में अति है। (१) इसके गुणों में अति है। (२) इसके गुणों में अति है। (३) इसके गुणों में अति है। (४) इसके गुणों में अति है। (५) इसके गुणों में अति है। (६) इसके गुणों में अति है। (७) इसके गुणों में अति है। (८) इसके गुणों में अति है। (९) इसके गुणों में अति है। (१०) इसके गुणों में अति है।

सुकुवा (३३३)

(सं०) रक्तमंत्रिक

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	भंगाली	संजायी	तैलेगी
लालभाऊ	लालभाऊ		तावडीभिर नाटी	लालभाऊ		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		तर्फी इदगर	गजेसुखी	Tamarix arctica T orientalis		

होनेकेसमयकाकृष्टमिटानेके लिये आंध्रिभांडकी जड़के काश्मि इसको सुबुरका  
के पिलाना चाहिये (१८) गभाशयसे बहते हुए रुधिरका रोकनेके लिये सोहाग  
के जलमें कपडा भिगोके योनीके भीतर रखना चाहिये (१९) त्वचाके रोग मिटानेके

लिये इसके पानीका मर्दन करना चाहिये (२०) शिब्याके स्तनके सूजवपपर इसका  
लेप करना चाहिये (२१) डमको मोममें मिला गोली बनाके कीडाके खाये हुए  
दांतकी खोखलमें रखनेसे पीडा मिटती है (२२) फुलायिहुए से हांसेमें मिश्री मिला-

कर मजत करानेमें दात दड़के इतनेका इतने ( २३ ) सोहागा और सिरका मिला  
भूमिकरके कात्तमें डालनेसे त्वमेहा सरतमें ( २४ ) अलकांती खांसी और कफ  
के रोगमें आधा कच्चा और आधा फुलाया हुआ सोहागा इमुरे सुहापर काली

मिरजको ग्वाणपाठके रसमें सोडा जने जिमनी गोली बना देना चाहिये (२५)  
रुन्नी फुलाये हुए सोहागकी पसने रुद्धमें गोली बना कर उसको मातृकात्त  
खाकर उसके ऊपर थोडा घी पीके और अलावा मधु त्वमेहासे २ दिन

तक लेनेसे अडकोपरी सूजन मिटती है ( २६ ) इसको पीसकर सुखमें ल  
गानेसे बुबे मरजाती है ( २७ ) इसको चारका एक सप्त मिलातेसे जोज  
बुबु इती है ( २८ ) इसको पानीके साथ पिलानेसे सर्पका विष खतरता है ( २९ )

विषका अधिक मात्रा लेनेवालेका विष खतरके लिये सीमें सोहागा मिलाके  
पिलाना चाहिये ( ३० ) इसको मिलायके रसमें मिलाके पिलानेसे रक्तमदक  
( ३१ ) मिटती है ( ३२ ) ३ मासे भूते म सुहागमें इती है रक्तमदिका शीस

चुण बनाके सातदिन तक दाने समय कानसे चारु मिटता है ( ३३ ) ३ मासे  
सुहागको ४ ताल गुडम मिलाकर उसमेंसे साते समय के समुली भक्षकाना  
दनेसे श्वास मिटता है ( ३४ ) एकअना अनुदयाम सोहागा और लीकामाफरहि

ता इतने महीत पीसकर दोजा समय एक २ मासेकी मात्रा लेनेसे रक्तमदक  
मिती है ( ३५ ) १ मासे सुहागा गुलाबक ४ सप्तके त्वमेहा मिलाके २ दिनतक  
खानेसे और चिकना भोजन करनेसे जारु मलजाता है ( ३६ ) सुहागको लंब

दन्तक साथ पानीमें पीसकर मलनेसे भां दर होती है ( ३७ ) दोले सु  
हागका फुलाकर शीस मिलाके पिलानेसे सर्पका विष खतरता है ( ३८ ) सुहाग  
रोगका विष खतरके लिये इसको चारका सोहाग मिलाके पिलानेसे चाहिये ( ३९ )  
सोहागा रोगतक काममें आता है।

संस्कृत नाम तस्मीं लड्डा ( संख्या १२३५ ) किंवा ( १ ) - भांग  
 नाम भांग लीप लड्डा लो ( संख्या ) टह्कारीनाम ( ६ ) इंग्रजी नाम

गारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलकी
टह्कारी	इष्टकी	भांग	शिकारी	भांगेपारी	लड्डा ( १ )	इष्टी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अग्नेयी	
॥ मन्त्रः ॥				Physalis peruviana	The cape gooseberry	

स्थान - दंकासीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें छोड़े बहुतसव ठौर बोये जाते हैं  
 पहिचान - इसके वृक्ष वंशाख ज्येष्ठमें बोते हैं ये अग्नेयी वगीचोंमें बहुत  
 होते हैं इसका फल आकृति आदिमें हरी कलाकिलस बहुत मिलता हुआ होता है  
 वह चमकदार और कहकूते रंगका और बहुत स्वादिष्ट होता है और कच्चाही  
 खानेके काममें आता है - पोष-माघमें इसके फल पकते हैं ।  
 गुण - यह कड़वा और पचनेमें हल्का होता है, वात, कफ, मूजन, विसर्प

और लड्डाखिलको, मिठीता है, अग्निको दीपक करता है । - नाम  
 लड्डा ( ६ ) इंग्रजी नाम लड्डा संख्या १२३५ किंवा ( १ ) लड्डा भांग लड्डा  
 नाम भांग लीप लड्डा लो ( संख्या ) टह्कारीनाम ( ६ ) इंग्रजी नाम

गारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलकी
लड्डा	लड्डा	भांग	शिकारी	भांगेपारी	लड्डा ( १ )	इष्टी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अग्नेयी	
॥ मन्त्रः ॥				Lycopersicon	The cape gooseberry	

स्थान - दंकासीके वृक्ष हिन्दुस्थानके उपमाभारतमें प्रमाळोंमें वंशाख  
 और आसाम वरु प्रौढे हलदीराम और मंधिमी हिन्दुस्थानमें जाते हैं ।  
 पहिचान - इससे छोड़े सफेद गुण लगेते हैं, दम तीव्र, रगतके नाशके, व्यतीत



खनोन्नयन हीता है ( ७ ) यह बलवर्द्धक है, और वारीस आनिवाली पित्तकी रोकता है। पुराने फोड़े पर इसका लेप करना चाहिये ( ८ ) *Amorpha fruticosa* ( ९ ) *Amorpha fruticosa* ( १० ) *Amorpha fruticosa* ( ११ ) *Amorpha fruticosa* ( १२ ) *Amorpha fruticosa* ( १३ ) *Amorpha fruticosa* ( १४ ) *Amorpha fruticosa* ( १५ ) *Amorpha fruticosa* ( १६ ) *Amorpha fruticosa* ( १७ ) *Amorpha fruticosa* ( १८ ) *Amorpha fruticosa* ( १९ ) *Amorpha fruticosa* ( २० )

मासुवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुगु
चनलाई	चौलाई	ताजलजो	तादुलजा	निदिसाकि	चौलाई	चिरा चिल्केर
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शिरकरी	फारेसोपु	बकुलेयगानिया	मुफदगर्जेडी	<i>Amaranthus spinosus</i>	( १८ ) Prickly amaranth.	

स्थानं— यह हिन्दुस्थानमें बहुत और होती है, परन्तु बंगाल और मलबार में बहुत होती है।

प्रयोग— ( १ ) यह शीतल, लघु, रुक्ष, मधुर, सेचक, दीपन, और विपनाशक है ( २ ) सर्पका विष दूर करनेके लिये इसके पत्रोंका रस पिं लाया जाता है ( ३ ) इसकी जड़का काय-पिलानेसे उपेक्षणी शूलामिटती है ( ४ ) इसकी जड़को चोट-दानकर-पिलानेसे मूत्रद्वन्द्वामिटता है और पीप-बन्ध-हो जाता है ( ५ ) रक्तप्रदर भित्तनेके लिये उसकी भित्तनेवाली दूसरी औषधियों के साथ इसकी जड़का प्रयोग किया जाता है ( ६ ) फोड़ोंको जल्दी पकानेके लिये इसके पत्रोंका पुण्डिस घातते हैं ( ७ ) गाठ और जड़को जल्दी पकानेके लिये इसकी जड़का पुण्डिस नाथते हैं ( ८ ) इसकी जड़के कायकी मात्रा २॥ से ५ तोले तक है ( ९ ) यह ढण्डी और मूत्रवर्द्धक है ( १० ) इसको गर्म जल में भिगो मल-दानकर-पिलानेसे मूत्रकी मात्रा बढाव और पीप-बन्धामिटती है ( ११ ) इसकी जड़को गधिसके लेप करनेसे विच्छूका विष उतर जाता है ( १२ ) इसकी जड़को मसोत, मधु, और चीवलोको भोरणके साथ पिलासे सब प्रकार के मदरामिटते हैं ( १३ ) इसके और नीमके पत्रोंको पोसकर कनपटी पर लेप करनेसे नकसीरुबन्ध हीनो है ( १४ ) इसका शाक खानेसे पथरी माला जाती है

( १४ ) इसकी सूखी या गीली ( १६ ) मासे ( जड़को पीस ) गागरके प्यीके साथ पिलानेसे विष उतरती है ( १५ ) इसकी जड़को पीसकर तारूपर बांधनेसे तारू गल जाता है ( १६ ) इसके प्रचांगकी राखका उबटनाया लेप करने थोड़ा देर धूपमें बैठके गर्म जलसे स्नान करनेसे झाड़ू दूर होती है ( १७ ) इसके पत्तोंको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे मरुडीका विष दूर होता है ( १८ ) इसका मधुमें अवलेह बनानेसे रक्तपित्त मिटता है ॥

संख्या ( - २४० ) -

( सं० ) तमालः, कालस्कन्धः, नीलध्वजः, तापिच्छः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
तमाल	स्यामतमाल	तमाल	तमालवृक्ष	तमालवृक्ष	तमाल	फानुगवृक्ष
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पुंगमर	होंगमरा			Gareinia aborea G. lobulosa	The Gamboge tree.	

स्थान—तमालके वृक्ष पूर्वी बङ्गाल, खासिया पहाड़, पश्चिमी और पूर्वी मासदीप आदि देशोंमें होते हैं

गुण—यह कपैला, मधुर, शीतल और पचनेमें भारी है।  
 प्रयोग—( १ ) इसमेंसे एक प्रकारका ताल जैसा पदार्थ निकलता है वह अति तीक्ष्ण विरेचक है ( २ ) इसके प्रयोगसे पेटके कीड़े मरते हैं ( ३ ) जल धरे तथा उसी प्रकारके दूसरे रंगोंमें इसका प्रयोग बहुत उपकारी है ( ४ ) इसकी अधिक मात्रा देनेसे यह आर्तमें बहुत तीक्ष्ण पीड़ा पटा करके विषको काम देता है, इसलिये तबको यही साधनीसे देना चाहिये ( ५ ) विरेचनके लिये इसकी इकल्ला देनेसे पेट बहुत फटता है और पीड़ा बहुत होती है इसलिये पाड़ा और काट मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसको देना चाहिये ( ६ ) इसका लेप करनेसे शोध उतरती है और पीड़ा मिटती है ( ७ ) इसकी टहनियोंके टुकड़ोंको पानीमें पीसके लेप करनेसे फुन्सिया मिटती है ( ८ ) श्याम देशसे

संख्या ( २४२ )

( सं० ) तरुणी, शलपत्री, लाक्षापुष्पा, चारुकेसरा ।

भारवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलत्री
शुलाबि	गुलाब	गुलाब	गुलाब	गुलाब	गुलाब	रोजापुष्प
द्राविडी	कनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शुलाबि	शुलाबि	गुलाब	गुलाब	Rosa	The Damask, Bussora or persian rose	

स्थान— गुलाब हिन्दुस्थानमें सर्वथा बागोंमें बोया जाता है ।

प्रतिष्ठान— चैत वैशाखमें इसके गुलाबी रंगके पुष्प लगते हैं । इसकी शाखाओंमें छोटे-छोटे रंगके फूलोंका इत्र निकाला जाता है और जलका गुलाबजलभी बनाया जाता है ।

प्रयोग— ( १ ) गुलाब शीतल; ग्राही, उपचनेमें लघु, कड़वी, चरपरी, पीचक और सारक है । फूले हुए गुलाबके पुष्पकी पंखड़ीकी अपेक्षा गुलाबकी कली अधिक संकोचक होती है ( २ ) इसकी केलियां शीतल रूक्ष, बलवर्द्धक और सारक है ( ३ ) इसकी पंखड़ियोंका लोप संकोचक है ( ४ ) इसकी डंडी उष्ण, रूक्ष और ग्राही है ( ५ ) उष्णकालके अतिसारका मिटानेके लिये गंधके तिलगुलाबको गुलाबजलसे हल्का करके पिलाना चाहिये ( ६ ) शुक्ल एक भाग, गुलाबजल ( एक भाग ) और पाती देश भाग मिला उसमें कपडा भिगोकर शिरपर रखनेसे ज्वरकी आख्या कम हो जाती है ( ७ ) एक भाग गुलाबजलमें दो भाग नीले मिलाकर पिलानेसे नाक टपकने लगा जाता है ( ८ ) तुषा कम करनेके लिये यही जल पिलाना चाहिये ( ९ ) इस जलको पिलानेसे ज्वरमें मस्तकी की भडकन कम हो जाती है ( १० ) इस जलको कुल्ले करनेसे मुखका मिटता है ( ११ ) आगके ऊपर इस जलमें भिगाया हुआ रुईका फाया बांधनेसे पित्त की नेत्रपीडा मिटती है ( १२ ) गुदा में पिचकारी देनेके लिये गुलाबजलको काम

में लाते हैं (१३) यह हृदय और मस्तकसम्बन्धी रोग, अग्नि और वातके उपद्रवको मिटाता है (१४) गुलाबकी शर्वत पिलानेसे गर्मीकी बेहोशी मिटती है (१५) आखापर गुलाबजलके छीटे देनेसे गर्मीकी बेहोशी मिटती है (१६) इसके पत्तों चयानसे मुखपाक मिटता है (१७) दो भाग कुरम गुलाबक पुष्पाकी एक भाग पेंग्वीडियोंको मलकर ४० दिन तक धूपमें रखनेसे गुलकंद अच्छा बन जाता है (१८) या इमी तरहसे मधु मिलाके बनायेहुए गुलकंदके सेवन करने से पाचनशक्ति और उदरका जल बढ़ता है (१९) इसके पुष्पाके तैलका मर्दन करनेसे गुदाकी शोथ उतरती है।

संख्या ( २४३ )

( सं० ) शेवन्ती, रामतरुणी, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा ।

भारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेवती	शेवन्ती	कोटेशेवन्ती	शेवती	गुलदन्ती		चामन्तिपुञ्जु
द्राविडी	कर्नाटकी	स्यरवी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
शामन्तिपु	शामन्तिहुञ्जु	निहरीनी	रु. ५५, १५	<i>Chrysanthemum coronarium</i> G. Roxburghii.		

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतसे भागमें बोई जाती है।

( ४ ) पहिचान—छोटे, बड़े या सफेद, पीले और नारंगी रंगके पुष्पोंके भेद से यह कई प्रकारकी होती है। इसके पत्तोंमें अलग-अलग प्रकारके होते हैं।

प्रयोग—( १ ) सेवती शीतल, रुद्ध रूपेली, मीठी और सार रहै। सेवती की जड़को चयानेमें मुहमें अकलकर जसा चरपराहट लग जाता है और उसकी ठौर काममेंभी आसकती है ( २ ) सेवतीके पत्तोंको काली मिरचके साथ पीसके पिलानेसे मूत्ररुद्ध मिटता है ( ३ ) इसकी जड़को कुलिंजन और साठके साथ आटाके पिलानेसे शूल, स्त्रियोंका आवेशका रोग, मस्तकपीडा, तन्द्रा और पानीजरा मिटता है ( ४ ) इसकी जड़को चयानेमें जीभकी निरसतापन मिटती है ( ५ ) अपस्मार, पुगाने नेत्र रोग

और मुखके शिरा सम्बन्धी रोगोंमें इसका प्रयोग बहुतही उपकारी है (६) इसकी जड़को पीस पुल्टिस बनाके बांधनेसे कच्ची गांठें बिखर जाती हैं और जिसमें पक्क पड़ गया हो वे शीघ्रतासे पक्क जाती हैं (७) इसकी जड़को घिस गर्म कर पके हुए फोड़े पर लेप करनेसे उसका मुंह खुल जाता है।

संख्या ( २४४ )

( सं० ) ताम्रं, म्लेच्छमुखं, शुल्वं, उदम्बरम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ताबो	ताम्रा	त्रावु	ताबे	तामा	तावा, ताम्मा	रागि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
ताम्रं शम्भु	ताम्र	नोदास	मिस	Cuprum	Copper	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर खानोंमेंसे निकलता है।

पट्टिचान—तांबा दो प्रकारका होता है एक नेपाल और दूसरा म्लेच्छ । इनमें नेपाल नामका ताम्र उत्तम होता है । उत्तम तांबेकी परीक्षा यह है कि जिसका रंग गुडइलके पुष्प जैसा हो, स्निग्ध कोमल चोट सहनेवाला हो जिसमें लोह और शीशा नहीं मिला हो और जिसको धोनेसे लाल रंग निकलता हो ऐसा तांबा औषधिके प्रयोगमें उत्तम होता है।

ताम्रमें—( १ ) वमन ( २ ) भ्रम ( चकर ) ( ३ ) घबराहट ( ४ ) दाह ( ५ ) शूल ( ६ ) कड़ ( ७ ) विरचन ( ८ ) वीर्यका नाश ये आठ दोष होते हैं। इन दोषोंको मिटानेके लिये इस प्रकारसे इसका शोधन करना चाहिये—

इसको शुद्ध करनेकी रीति—( १ ) इसके कंठक बेधी पत्रोंको लाल कर २ के तक्र तेल और गोमूत्रमें अलग २ सात २ बर बुझानेसे वान्ति दोष मिटता है ( २ ) ऐसेही कांजी और कुलत्थों के काथमें बुझानेसे भ्रमलका दोष मिटता है ( ३ ) धुहर और गौके दूधमें बुझानेसे घबराहट पैदा करनेवाला

दोष मिटाताहै ( ४ ) इमली और नींबूके रसमें बुझानेसे दाह कारक दोष मिटाताहै ( ५ ) ग्वारपाठ और नारियलके जलमें बुझानेमें शूलकारक दोष मिटाताहै ( ६ ) दुग्ध और गौ घृतमें बुझानेसे कंठकारक दोष मिटाताहै ( ७ ) शूरणके रस और दहीमें से निकलेहुए पानीमें बुझानेसे विरेक करनेवाला दोष मिटाताहै ( ८ ) मनु और दाखोंके रसमें बुझानेसे वीर्यनाशक दोष मिटाताहै बुझावा देनेके लिये जितने द्रव्य लिखेह उन प्रत्येकमें सात ७ बर बुझाना चाहिये ।

ताम्रभस्म बनानेकी यह रीतिहै—कि एक भाग पाग और दो भाग गधककी कजलीको नींबूके रसमें खरल कर ३ भाग शुद्ध तांबेके पत्रों पर लेप कर उनको सुखा दो सरावोंमें कपडमिट्टीमें बन्ध कर गजपुटकी आंच दे के स्वांग शीतल होनेपर सरावोंमेंसे उस ताम्रको निकालकर फिर उक्त रीति से शूरणकदके रसमें खरलकर टिकड़ी बना, सुखाके उक्त रीतिसे गजपुटकी आंच देकर स्वांग शीतल होनेपर निकाल खरलकर उसमेंमें एक चावल प्रमाण दहीपर ढालकर उसको चार पहरतक पडा रखवे । जो दही पर हरापन आजावे तो उक्त रीतिसे आंच देते रहें और उसकी परीक्षा करते रहें जब दहीपर हरापन आना बन्ध होजाय तब उक्त रीतिसे पचामृतके तीन आंच देकर औषधीके प्रयोगमें लाना चाहिये । ऐसे बनाई हुई ताम्रभस्ममें वान्त्यादिक दोष नहीं रहतेहैं । इसकी भस्म बनानेकी दूसरी रीति—उक्त रीतिसे शुद्ध किये हुए ताम्रका पूर बना उसको छोटी दूधीके रसमें खरल कर टिकिया बना उसी दूधीकी लुगदीमें रखकर उसको सराव संपुटमें बन्ध कर उक्त रीतिसे गजपुटकी आंच दे निकाल उसी रीतिसे फिर उसके रसमें खरल कर टिकिया बना २ के प्रश् आंच देनेसे शुद्ध निर्दोष ताम्रभस्म होजातीहै ।

ताम्रभस्मके गुण—यह परिणामशूल, उदररोग, वातशूल, पाहू, ज्वर, गुल्म, जीह, ज्वर, मन्दाग्नि, श्वास, कास, संग्रहणी कुष्ठ, वात, कफ, शोथ, तन्द्रा, कृमि, वमन, मोह, अतिसार, अर्श, भ्रम, मस्तकरोग, प्रमेह और हिका आदि अनेक रोगोंको अलग २ अनुपानके साथ मिटातीहै ( २ ) केचुपमें से निकाले हुए ताम्रके गुण—यह शीतल होताहै, सब प्रकारके कोढ़ और ज्वरों को मिटाताहै ।

संख्या (२२४५) ६ मी. फी. ( ४ ) भा. भा. भा.

( सं० ) ताम्रकटः, वज्रभृङ्गा, चारपत्रा, कुमिधनी ।

मॉरिवादी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	मिर्जावी	तैलेगी
तामाकू(ख)	तामाखू	तामाकु	तम्बाखू	तामाक	तामाकु	पोगाकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पुहै, इलै	होगेसोपु	तम्बाकू		Tobacco Tobacum	Tobacco American virginian Tobacco	

स्थान - तमाखू हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बौई जाती है ।  
 इसको आदानसे एक प्रकारका गहरा, भूरा, चरपरा और कुछ दुग्धवाला  
 अर्थात् तमाखू जसा गंधवाला तेल निकलता है । इसके १०० तौले बीजामें से  
 ३६ तौले तेल निकलता है, इसका रंग कुछ हरासे लियहूए पीला होता है, इस  
 में गंध नहीं होती है इसको खुला रखनेसे जल्दी सूख जाता है । तमाखू के तेल  
 में बहुत विष होता है ।

प्रयोग - ( १ ) तमाखू उष्ण, तीक्ष्ण, चरपरा, कड़वी और वामकह और  
 दृष्टिको निर्बल करती है इसके पत्ते नाडीके स्पंदको घटाते है ( २ ) तमाखूकी  
 धूआं हवाको शुद्ध करता है ( ३ ) तिस्रहिकके रोगों के पास इसको धूनी  
 देनी चाहिये ( ४ ) हुकेको पानी सूत्रबद्धकह ( ५ ) नहचम जो काला तेल  
 होता है उसको नाडीत्रण पर लगाना चाहिये ( ६ ) रतोधा मिटाने के लिये  
 उसका आखमें अजन करना चाहिये ( ७ ) आख दुखनेसे जा गीह बहुत आ-  
 या करते है, वे इसके अजनसे मिट जाते है ( ८ ) तमाखू, चूना और पुत्राग  
 को छालका लेप करनेसे अण्डदृष्टि मिटती है ( ९ ) धनुस्तम्भमें पृष्ठ वंशपर  
 तमाखूके पत्ताको पुल्टिस बांधना चाहिये ( १० ) इसके अधिक सुघनेसे एक  
 प्रकारकी असाध्य मन्दाग्नि हो जाती है ( ११ ) तमाखूके अधिक खाने और  
 पीनेसे स्नायु जालकी शक्ति निर्बल हो जाती है ( १२ ) यह अग्निको विना-  
 डती है और यकृतके कर्मको शिथिल करती है और अद्रष्टिका पुररूप पदा

करती है (११) इसका बहुत सेवन करनेसे बहुतसे शारीरिक उपद्रव हातों पर नृत्य  
 साधारण रीतिपर खाने पीनेसे स्थाय्यकी दानि नहीं होती है (१२) धनुस्तम्भमें प-  
 ट्टोंके खिंचाव और घाटोंको मिटानेके लिये तमाखूको पत्तोंको पेशाविरह  
 या सोलहगुने जलमें ओटा चौथाई घाकी रखे हुए फार्सक वफांग पृथ्वीना चा-  
 हिये (१५) पत्तोंकी गुदोंमें इसके पत्तोंकी बीचली भूमिक रख देनेसे मल ढीला  
 होजाता है (१६) अंडकोपरी पीडा और सूजन मिटानेके लिये इसके ताजे  
 पत्त अथवा सूखे पत्तोंको गीले करके धावना चाहिये (१७) नाक या  
 गलेमें जो जोर चिपटजाती है उसको उतारनेके लिये इसके पत्तोंका चूर्ण या  
 टुकेंके नहचेको भीतरका क्रीडा काममें खाना चाहिये (१८) डेम्के सूखे  
 पत्तोंको अंडकोपपर बांधनेसे हृत्पास और वमन अवश्य होती है (१९) कुचिलेके  
 सतत विष उतारनेके लिये इसके पत्तोंको हिम या फोट पिलांना चाहिये  
 (२०) फोडेपर इसके पत्तोंका लेप करनेसे पीडा मिटती है (२१) पांडुरोग-  
 वालेको तमाखूका धूम्रपान करना चाहिये (२२) मंदाग्नि आदि पेटके रोग-  
 वाले घेके इसका धूम्रपान लाभकारी है (२३) फूलद्वेष मसूढ़ोपर इसके प-  
 त्तोंका चूर्ण मलनेसे उनका पकना धंय होजाता है और पीडा मिटजाती है (२४)  
 टुकेंके पानीसे ब्रणको धोनेसे उसके कीड़े मरजाते हैं (२५) तमाखूके अधिक  
 पीनेसे तीतिमिर रोग (नेत्रभोग) होजाता है (२६) साधारण रीतिसे तमाखू  
 पीनेसे कई प्रकारकी मंदाग्नि मिटती है (२७) तमाखूको सूखे पत्तोंको नीबूके  
 रसमें पीसके तिलीार लेप करना चाहिये (२८) इसको खानेवाला जबतक  
 इसको सुहमें रखता है तदनक उसके मुंहसे पानी गिरता रहता है (२९) दोभाग तमाखू  
 और एकभाग कौली भिरचको पीसकर मंजन करनेसे दंतपीडा मिटती है (३०) फो-  
 ल्डू (वाणी) से निकाले हुए तमाखूके बीभोंके तेलको मर्दन करनेसे अतदोग मिटते हैं  
 (३१) तमाखूके गुलकों पीसकर लगानेसे फोडा जल्दी पककर फूटजाता  
 है (३२) इसके गुलको कड़े तेलमें पीसके लेप करनेसे गंज दूर होती है  
 (३३) आध सेर तमाखूको आध सेर पानीमें चरि पड़े भिगा उसको निचो  
 उस पानीमें धरापर तेल डालकर ओटावे जब तेल शेष रहजावे तब उसको  
 उतार लेवे इसको मर्दन करनेमें जोड़ोंकी पीडा मिटती है (३४) तमाखूके  
 गुलकी राखको पानीमें ८ महर भिगा उसके नितरे हुए पानीको फटाईन पना



उसको द्विजो, खार बनाके, २ रतीकी मात्रा देनेसे, काम और श्वास मिटता है ( ३५ ) इसके हरे पत्तोंके रसमें धरावर गुड मिला, शर्वत बनाके १४ से २८ मासे तक देनेसे श्वास मिटता है ( ३६ ) इससे दस्त और चमन होनेके कारण निर्मल मनुष्य को इसकी थोड़ी मात्रा देनी चाहिये ( ३७ ) इसके बीज दो भाग, और खाल एक भाग, को महीन पीस छान गीठे तेलमें ४ महर तक उष्ण रखके इन्दीपर लगानेसे हथरसके उपद्रव मिटते हैं ।

संख्या ( २४६ ) तालः, लेख्यपत्रः, तृणराजः, महोन्नतः

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
ताड़	ताड़ ताल	ताड़	ताड़	ताले गाछ	ताड़	ताड़
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पानमर	वालमर			<i>Borassus flab. bifloris</i>	<i>Palmyra Palm</i> <i>Brabtree</i>	

स्थान - ताड़के वृक्ष दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थान, बङ्गाल, सिन्धके नीचेके भाग, और संयुक्त प्रदेशमें अलीगढ और शोहजहापुरमें बहुत पाये जाते हैं ।

पहचान - यह वृक्ष ४० से ६० फुट तक और कहीं कहीं १०० फुट तक ऊँचा होता है । पूरे वृक्षपर वृक्षके जड़से ऊपर पेदङ्के भागकी मध्यरेखा बहुधा मांस १॥ २ फुटकी होती है, इसके पत्तों ६० से ८० भाग होते हैं, उन हरेक हिस्सोंकी मध्यरेखा ३ से ५ फुट होती है । इसके पुष्प कोमल, गुलाबी और पीले रंगके होते हैं, एक कलीमेंसे एक २ पुष्प धीरे २ खुलता है इसका फल कुछ दवाहुआ चिकना और चमकदार होता है उसका छिलका कुछ पिलास लिये हुए भूरे रंगका होता है उसमें कड़े चूसे दाग पीले रंगकी गिरी उसके बीजोंके लिपटी रहती है उसमें २ से ४ तक बीज निकलते हैं इसके एक प्रकारका काला गोदू लगता है ।

॥ फलनेफलने का समय—फागुनके माहिनेमें इसके पुष्प लगते हैं चैत वैशाखमें छोटे फल और अपाह्वावणमें इसके बड़े फल पकते हैं इसके फल की मध्य रेखा ५ से ७ इंच की होती है ।

॥ प्रयोग—( १ ) यह मधुर, शीतल, सारक, स्निग्ध, और पचनेमें भागी है । इस वृक्षका रस उत्तेजक और कफनाशक है ( २ ) इसका ताजा रस बहुत मीठा और सारक होता है इसको लगातार कई दिनों तक पीते रहनेमें उदरकोष्ठ मिट जाता है ( ३ ) यह त्रिचशोधक पर लगाया जाता है ( ४ ) जलंधरके रोगमें इस रसको पिलाते हैं ( ५ ) इसके पुष्पोंके सूखे हुए गुच्छेकी राखको पिलानेसे हृदय की जलन मिटती है ( ६ ) इसकी कलीके चूर्ण की फकी देनेसे शरीर पुष्ट होता है और बल बढ़ता है ( ७ ) इसका रस पिलाने से तिब्बी मिटती है ( ८ ) इसकी अत्तकी कलीको जलके साथ घोट छानके पीनेसे मूत्रवृद्धि होती है ( ९ ) इसकी जड़ ठण्डी है और रक्तको बढ़ाती है ( १० ) इसकी ताड़ीमें चावलके आटेकी लेई पका उसको कपड़ेपर फैला हल्की अग्निपर तपाके सडे हुए मानवाले फोड़े अड़ीठ और सुप्त फोड़ोंपर लगानेसे उनमें जल्दी अकुर आने लगता है ( ११ ) इसके प्रकट हुए फलके सूके कालपर करनेसे त्वचाके रोग मिटते हैं ( १२ ) इसकी पत्ते लगी हुई साखाकी जड़के बाहर रूई जैना एक हल्का घूरा पदार्थ होता है उसको घावमेंसे बहते हुए लोहीको रोकनेके लिये घावर लगाते हैं ( १३ ) इसके रससे सिरका, ताड़ी और मदिरा बनाई जाती है ( १४ ) इसके रसमें थोड़ा खमीर उठाके पिलानेसे मूत्रातिसार मिटता है ( १५ ) इसके पुष्पोंके गुच्छेकी भस्म पिलानेसे पित्तके रोग मिटते हैं ( १६ ) इसके पत्ते और छोटी जड़ोंका रस निशालके पिलानेसे पटकी आनामें अधिक द्रव का होना और हिचकी मिटती है ( १७ ) इनका ताजा रस पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है ( १८ ) इसके ताजे रसमें मिर्ची मिलाकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १९ ) इसके खमीर उठाये हुए रससे किभी २ को तीव्र विचन लग जाता है ( २० ) उष्णकालमें इसके ताजे रसको ठंडाईकी ठौर पीते हैं ( २१ ) इसके कच्चे सूदेकी पोलमें जो पानी रहता है वह मीठा होता है उसको पिलानेमें चमन और खानी चमने बन्ध होजाती है ( २२ ) ताड़के कच्चे बीजोंमें जो दूधिया रस रहता है वह मीठा और ठण्डा होता है उसके पिलानेसे हिचकी और उच्छ्वस मिटता है ( २३ ) उपदेश

से जब अरडकोप और इन्द्रियो मूर्जन होजाती है और टाकियां बहुत बढ़ जाती हैं तो उनको मिटानेके लिये इसके हरे पत्ताका रस पिलाते है ( २४ ) ज्वरको प्यास और दाहको मिटानेके लिये इसका फल खिलाते है ( २५ ) इसके मीठे रसमें सुगन्धित पदार्थ जैसे लौंग और दालचीनी आदि मिलाके रोगीके वल और अग्निके अनुसार पिलानेसे उसका दुबल पन मिटता है और पराक्रम बढ़ता है ( २६ ) इसके पुष्पोंके मूवेहुए गुच्छेकी भस्मको उमी गुणवाला दूसंगी औषधियों में मिताके देनेसे वारीसे आनेवाला वेग मिता है ( २७ ) इसके पुष्पोंके गुच्छेको काटनेसे जो ताजा रस निकलता है उसका पिलानेमे मूत्रवृद्धि होके जलधर मिटता है ( २८ ) ताड़के पत्तोंका खार और हींगको चावलका माटेके साथ पीनेसे मेटवृद्धि मिटता है ( २९ ) इसकी उत्तरदिशाकी जड़ हो शरीरके बराबर लम्बे धागेसे स्त्रीकी कंठमे बांधनेसे सुखसे प्रसव होजाता है ( ३० ) इसकी शाखाका रस पिलानेसे उन्माद मिटता है ( ३१ )

संख्या ( २५७ )

( सं० ) तालीसपत्र, पत्रारुण्य, शुक्रोदरं, धात्रीपत्रम् ।

भारंगडी	हिन्दी	गुजराती	महटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तालीसपत्र	तालीसपत्र	तानीमपत्र	तालीसपत्र	तालीशपत्र	तालीमपत्र	तालीमपत्र
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तालीसपत्र	तालीसपत्र	जरेनीय		Abies webbiana Pinna W	The Himalayan silver fir	

स्थान — इसके वृक्ष हिमालयमें सिन्धु नदीसे श्रृटान तक होते है ।  
 परिचय — इसका वृक्ष १२० से १५० फुट तक ऊंचा होता है । इसकी पदरकी गुत्ता है १४/१५ फुट और कहीं कहीं २५ से ३० फुटकी होती है । सघनघनानवनके सिवाय अन्य स्थानोंमें इसकी बालियां ऐसी मिलती है कि जमीन तक चली जाती है । इसके छटे वृक्षकी छाल चिकनी और रेशम जैसी सफेद होती है । पुरानी पेड़की छाल कुछ भूषण सफेद होती है, इसकी

दोटी टालियोंका एक २ पत्ता चकर खाता हुआ निकलता है। इसके पत्ते चि-  
टे और बहुत कम चौड़े अर्थात् एक इंचका ८ वां भाग चौड़े और एकसे ३  
च लम्बे होते हैं, उनके ऊपरका भाग गहरा हरा और चमकदार होता है,  
नीचेका भाग खरेदरा होता है। चैत, वैशाखमें इसके अनवीन पत्ते निकल आते  
विशुलासा हरे रंगके होते हैं और पुराने पत्ते काले रंगके होजाते हैं और  
रसे कालेही दीखते हैं। यह वृक्ष सदैव हरा बना रहता है। इसके राल जैसा  
उफेद पदार्थ लगता है। इसके बेंजनी रंग निचालो प्ज.ता है।

फूलने फलनेका समय—चैत्रमें इसके पुष्प लगते हैं। वैशाखके अन्त  
क इसके शंकरे आकारके फल, तीन इंच तक लंबे बढ जाते हैं और भादोंमें  
क जाते हैं, आसोजमें उनके छिलके और बीज वृक्षसे गिर जाते हैं।

प्रयोग—(१) तालीश पत्र पचनेमें हल्का, तीक्ष्ण, उष्ण, रुद्धवा और  
गोदक। इसके गोदको गुलाबके तेलमें भिलाके चाटनेसे नशा आजाता है। (२)  
संको मस्तकपीडा और स्नोयुपीडा आदिमें लगाते हैं (३) इसके सूखेपत्तोंके  
चूर्णको अजैत्रायन के साथ देनेसे अफारा मिटता है (४) मधुके साथ चटा-  
से सूखी खासी मिटती है (५) काले निमकके माथ देनेसे पेटकी शूल मिट-  
ती है (६) इन्द्रगोकु राथ देनेसे अतिसार मिटता है (७) छोटी इलायची  
और वैशलोचनके साथ मधुमें चटानेसे बल बढता है (८) अद्दुसेके पत्तोंके  
साथ ओटाकर पिलानिमें क्षय रोग मिटता है (९) हलदीके साथ चिलममें  
लेके पिलानेसे आस मिटता है (१०) अदरकके रसके साथ चटानेसे खासी  
मिटती है (११) सोंठके साथ पीस गर्मकर निलोप लेप करनेसे मूत्रातिसार  
मिटता है (१२) कुत्ताधासीमें इसके पत्तोंको गर्मजलमें भिगो खानके पिलाना  
वाहिये (१३) तालीसपत्रकी मात्रा पौने दो। मासेसे साढे तीन मासे तक  
की है (१४) बच्चोंको वागीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसके ताजे  
पत्तोंके स्वरसकी ५ से १० बुद्धे जलमें या उसकी भाके दूधमें भिजाके देना  
वाहिये (१५) पेमहा दंत निकलनेके समयमें और आतीके रोगोंमें भी  
दिया जाता है (१६) बच्चा होनेके पीछेकी निर्मलता मिगनेके लिये, इसके  
चूर्णकी फकी दंत है (१७) इसके ३॥ मासे चूर्णको शरीरके साथ देनेसे  
हृदयका बल बढता है और अतिसार मिटता है।

संख्या (२४६) तिनिशः, स्यन्दनः, नेमी, रथदुः।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बिंंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तिरिच्छ	हमी	तिवम	जारुलगाछ	तिरिच्छा	नीमि	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	हुलगाति			Ongelila dalbergioides Dallergia ougeinensis		

स्थान— तिनिशके वृक्ष हिमालयमें सतलजसे तिमटातक मध्य हिन्दुस्थान अवध गोरखपुर गोदावरी और कनाराके जंगलोंमें और आयदीपके पश्चिमकी तीरपर होते हैं।  
 पहिचान— इसकी लंबाई ० से ४० फुटकी होती है इसकी छ्वांटी और मुड़ी हुई पेदरकी गुलाई ३ से ४ और कभी ७ फुटकी होती है। इसकी छाले गहरे भूरे रंगकी होती है। इसके पत्ते चौड़े अंडेके आकारके २ से ६ इंच लम्बे होते हैं पौध और प्रायमें इसके पुष्प पत्ते गिर जाते हैं और चैत वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकल आते हैं इसके लाल रंगका गोंद लगता है फूलने फलनेका समय— फागुनसे वैशाखतक इसके पुष्प निकलते रहते हैं।

प्रयोग— (१) तिनिश कपेला, उष्ण और प्रादी है इसके गोंदकी फकी देनेसे अतिसार मिटता है, (२) सेकी हुई सौफ मिश्री और इसका गोंद मत्स्यके चरावर रं जले पीस घृतमें मिलाके चदानेसे आमातिसार मिटता है (३) इसकी छालका काष्ठ पिलानेसे ज्वर छूटना है।

(सं०) तिन्दुकः, स्फूर्जकः, कृष्णत्वक्, कृष्णसारः।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बिंंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तीद	तैद	टीवरवो	टैमरणी	गार, तैद	तैद	तुमिकि

द्राचिडी	कानोटकी	शरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	लुगूर	आरुनुस		Diospyros Embryopteris 7 1/2 Clattona	स्पैकनी

स्थान—तेदके वृक्ष हिन्दुस्थानमें पंजाब और सिन्धके सिवाय प्रायः बहुत और होते हैं।

पहिचान—इसकी ऊँचाई ३०, ३५ फुटकी होती है। इसकी पत्र खड़ी और सदैव सीधी नहीं होती और उसकी गुलाब ४ फुटकी होती है इसके फलों में हई शाखें लगती हैं। इसकी छाल आर्ध-इच मोटी और कलि रंगकी होती है इसके छोटे पत्ते रफंदार होते हैं इसकी लताकिसीमें दोना और पत्ते लगते हैं परंतु वे सीधे और एक दूसरेके सामने नहीं लगते हैं कुछ अंतरसे लगते हैं इसके सुगंध युक्त सफेद दुग्ध लगते हैं। इसके पुरुष पुष्प इसके तक एक और लगते हैं और स्त्री पुष्प बड़े और अलग-अलग लगते हैं। इसके फूलकी मध्यरखा डबस दी, इच होती है कच्चे फल हरे और पकजानेपर कुछ सफेद पीले रंगके हांजाते हैं उनका चपदार गिरमें ५ से ८ तक बीज और २ गडहरहते हैं। पतभंडमें इसके पत्ते नहीं गिरते हैं।

फूलनेका समय—फागुनसे वैशाखतक इसके पुष्प लगते हैं, मृगशिर तक फल पकते हैं। यह पोये जानेके पीछे ८ वें वर्ष तक पूरा फलन लगता है।

पहिचान—इसके एक प्रकारका गोंद लगता है। इसके फल रंगतके काममें आते हैं।

प्रयोग—(१) यह कपेला, कफवा, स्तिरंधा, चण्डा, ग्राही और प्रचनेमें भारी है। इसके फल और छाल ग्राही हैं। (२) इसके फलोंको जल में थोटा नसे। तेल निकलता है। इसके तेलकी अदो सोंठके जलमें डालके पिलानेसे अतिसार मिटता है। (३) इसके फलके फाटके गोंदुष करानेसे मुखपाक और गलेके छाले मिटते हैं। (४) इसके बीजका किकी देनेसे अतिसार मिटता है। (५) इसके कच्चे फलोंसे एक प्रकारका गोदा, कपेला और शोनि प्रकारसे निकलती है जो ताजे घावोंपर लगाया जाता है। (६) इसके फलका ७॥ मासे रस २॥ पाव जलमें डालके खीके गुह्य स्थानमें प्रिचरुगी देनेसे वेद प्रदर मिटता है। (७) इसका कच्चा फल बहुत ग्राही होता है। ज्यों यह पकता है

त्यांही-इसका ग्राहापन आता रहता है और मीठा होजाता है ( ११ ) इसकी छाल का काथ पिलानेसे-वारीसे अःनेवाला ज्वर-छूट जाता है ( ६ )-इसका स्पर्स पिलानेसे-पेटके भीतरके-वंत्रोंमेंसे रुधिरका बहना बन्द होजाता है ( १० ) इस फे पके हुए फलको चिपदार गिर ग्राहकी दार काममें आती है ( ११ ) इसकी लकड़ीको घिसकर अन्न करनेसे नेत्रका ढलका बन्ध होजाता है ( १२ ) इसकी लकड़ीको घिसकर लेप करनेसे-गिलावेके धुंएसे-उत्पन्न हुई शोथ मिटती है ( १३ ) इसका फल खानेके काममें आता है । इसके पत्तोंका शरू बनाया जाता है । इसका पका आ फल बहुत मीठा होता है । इसमें कीड़े नहीं लगते हैं ।

संख्या ( २२५ )

( सं० ) त्रिपतिन्दुकः, काकेन्दु, कुशीलु, मुकटतिन्दुकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
कुचीला	कुचिला कुचली	कुचिला	कुचला	कुचिलागु	कुचले	कुचिलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
विपमुष्टि	विपमुष्टिज	कालुल	कुचला	Aux. vomica	The aux. vomical berry the tree vomitnut Poison for Quaker's nut	

स्थान--कुचीलेके वृक्ष हिन्दुस्थानके उष्ण भागमें होते हैं । ये बंगालमें बहुत कम होते हैं परन्तु मद्रास और तिनेसा रियमों बहुत होते हैं ।

पाहचान--इस वृक्षकी ऊंचाई ४० फुट तक होती है कुचीलांगोल और चिपटा होता है इसकी गोलाईकी मध्य रेखा इंच तक होती है । कुचीला चौथाई इंच मोटा होता है । इसके बीजमें एक विन्दुसा होता है कुशीलेके ऊपर से फेद चमरदार रूप होता है । इसकी गिरसफेद होती है चिपटेपनमें इसकी गिरके दो विभाग । करनेसे उसको बीचमें एक लंबे दांता पत्ता निकलता है उसको जीभी कहते हैं कुशीले स्वदमें बहुत कड़वे होते हैं यह रंगतके काममें आते हैं इसमें बीजोंको तेलमें घोटोंके तेल चनाते हैं ।

प्रयोग--१ कुचीला बहुत कड़वा, शीतल, अरपरा, उष्ण, पचनेमें

हल्का रूक्ष दीपन और भेदन है इसकी लकड़ीका काथ वनाके पिलानेसे बल  
 बढ़ता है ( २ ) कुचीलेको मन्दीग्नि मिटानेकी साथ दूसी औषधियोंके साथ  
 देनेसे मदीग्नि मिटती है ( ३ ) स्नायुजालके रोग मिटानेके लिये कुचीलेका प्रयोग  
 करते हैं ( ४ ) सर्पका विष उतारनेके लिये कुचीलेकी जड़का प्रयोग करते हैं  
 ( ५ ) कुचीलेकी लकड़ीको घिसकर पिलानेसे मन्दीग्नि मिटती है ( ६ ) कुचीलेको  
 जायफल, जात्रित्री आदिके साथ देनेसे शूल मिटती है ( ७ ) कुचीलेके  
 वृक्षकी एक गोलो सीधी लकड़ी लेंके उसके दोनों किनारों पर बरतन बांध  
 उस लकड़ीके बीचमें आच देनेसे जो दोनों किनारोंमें होके रस निकलता है  
 उस रसकी कुछ बूँद देनेसे विमूचिका मिटती है ( ८ ) मुरब्बेकी हरडकी गिर  
 पर उस रसकी बूँद डालकर खिलानेसे बहुत तीक्ष्ण अतिसार मिटती है  
 ( ९ ) इसके ताजे बीजोंसे बनाये हुए तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गठिया  
 मिटती है ( १० ) कुचीला एक प्रकारका नशा पैदा करता है ( ११ ) कई  
 मनुष्य पुरुषार्थके लिये इसको सदैव खानेका अभ्यास कर लेते हैं, जो लोग  
 सदैव ऐसे खाया करते हैं, वे धीरे २ मित्य १ या २ बीज तक खाने लग  
 जाते हैं । इसकी अधिक मात्रा लेनेसे नसे खिचने लग जाती है इसलिये इसका  
 प्रयोग करनेमें बहुत सावधानी रखनी चाहिये ( १२ ) पक्षाघातकी यह  
 बहुत उत्तम औषधि है ( १३ ) स्नायु जालकी शिथिलता मिटानेके लिये कु-  
 चीलेका प्रयोग बहुत अच्छा है ( १४ ) पुरानी गठिया मिटानेके लिये इसको  
 लशनेके अर्कके साथ देना चाहिये ( १५ ) शरीरकी निर्मलता मिटानेके  
 लिये इसकी फकी देके ऊपर दूध और घी पिलाना चाहिये ( १६ ) स्नायु  
 सम्बन्धी और पुरानी गठिया पर कुचीले, सोंठ और साभर के सींगका लेप  
 करना चाहिये ( १७ ) चूहेके दणप कुचीलेका लेप करना चाहिये ( १८ )  
 छीछेवाले घावों पर इसके पत्तोंका पुल्टिस बाधना चाहिये ( १९ ) जिन्  
 घावोंमें कीड़े पड़ गये हों उनपर इसका पुल्टिस बाधना बहुत उपकारी है ।  
 इससे कीड़ोंका घटना बन्ध होजाता है, और जो प्रायः जियादा ऊँठ कीड़े  
 होते हैं वे इसके पुल्टिसके बाधनसे मर जाते हैं ( २० ) इसकी जड़की छाल  
 को महीन पीस नीचूके रसकी साथ गोलिया बनाके विमूचिकावाले में देना  
 चाहिये ( २१ ) दृष्टाणु, जल और पृथ्वीके कारणसे आर्तव ज्वर ( श्रु-



सम्बन्धी (मन्दज्वर) होता है, उसको मिटानेके लिये कुचीलेका सत बहुत अच्छा है ( २२ ) स्नायुसम्बन्धी निर्वृता, मिटानेके लिये कुचीलेके सतको दूध और घृतके साथ खिलाना चाहिये ( २३ ) इसको कुनैनकी साथ खिलाने से चारीसे आनेवाला ज्वर छूटता है ( २४ ) नपुंसकता, मिटानेके लिये इसको पुष्टाईकी औषधियोंके साथ देना चाहिये ( २५ ) सोंठ, जायफल आदि चर परी, और सुगंधित औषधियोंके साथ इसके वृक्षकी छालकी नीचुके समें गोली बनाके विसृचिकामें देना चाहिये ( २६ ) निर्धूल-मनुष्यकी खांसी, मिटानेके लिये कुचीलेका सत बहुत उत्तम औषधि है ( २७ ) इसके प्रयोगसे शुष्क रसांगी मिटती है ( २८ ) कुचीले के फलकी गिर, जो कुचीले के चारों ओर होती है वह खानेके काममें आती है ( २९ ) १५ कुचीलोंको १५ दिन पानीमें भिगोके हर तीसरे दिन पानी बदल देवे ऐसे १५ दिन पीछे जब नरम पड़जावे तब उनका छिलका दूरकर सुखाके उनकी भस्म बरलेवे उस भस्ममें बराबर कालीभिरच मिलाके कालीभिरच प्रमाण-गोलिया, बनाकर अर्द्धांग, पचाघान, मस्तकके रोग आदि कई-रोगोंमें उचित मात्रा देनी चाहिये ( ३० ) कुचीलेकी धूनी देनेसे रक्तार्शका रुधिर और पीडा बन्ध होती है ( ३१ ) इसको मीठे तेलमें जलाके लगानेसे नाडीग्रण मिटता है ( ३२ ) कुचीले और महुवेका लेप करनेसे सांप का विष उतरता है ( ३३ ) एक भाग कुचीला और आधा भाग फिटकड़ीको घीमें मिलाके लेप करनेसे उजौता मिटता है ( ३४ ) कुचीले और सापकी कांचलीको पीस, बाल उखाड़कर इनका लेप करनेसे बाल देरीसे उगते हैं ( ३५ ) सांपके काटनेसे जो अचेत होजावे या जिसकी हिलने चलनेकी शक्ति न रहे परंतु मरा न होवे तो कुचीलेको पानीमें पीसके उसके कंठमें डालनेसे और थोडा उसकी गर्दन और शरीरपर मर्दन करनेसे सचेत होजाता है ( ३६ ) शुद्ध कुचीलेके चूर्णमें शकर मिलाके बलाबलेके अनुसार थोड़ी मात्रा देनेसे रक्तार्श, प्रमेह, त्वग्दोष और कृमिरोग मिटते हैं ( ३७ ) कुचीलेको घीमें भूनकर उसके चूर्णकी २ रतीकी मात्रा देनेसे कफका कास मिटता है ( ३८ ) कुचीलेको मनुष्य के मूत्रमें ओटाकर लेप करनेसे या मदिरामें ओटाकर छीलके उसके एक रती चूर्णकी नित्य मात्रा लेनेसे कुत्तेका विष उतरता है ( ३९ ) इसको पानीमें ओटा उसमें कंद मिलाके खानेसे कुत्तेका विष उतरता है ( ४० ) इसको और

कालीभिरचको पानीके साथ घिसके कुछ गुनगुना लेप करनेसे बह बंध जाताहै ( ४१ ) इसको कालीभिरचके साथ पीसके खिलानेसे सर्पका विष उतरता है ( ४२ ) कुचिलेको पानीके साथ पीस, राल उखाड उस ठौरपर लगानेसे बहा पर देरीस बाल उगतहै ( ४३ ) १५ रती कुचिला या इसका आध रती-सत प्राणनाशकहै ( ४४ ) जब किसी रचकमे विरेचन नहीं हुआ हो तो उसको कुचिलेके सतका एक रतीका चौथीसवा भाग एक २ घटेके अन्तरसे ३, ४ मात्रा में देनेसे विरेच होने लगताहै ( ४५ ) इसके सतको एक रतीके अन्सीवे भाग की मात्रा बल बढ़ानेवालीहै ( ४६ ) कुचिलेकी मात्रा आध रतीसे ढाई रती तककीहै ( लैटिन ) *Linn Strychnos colubina S minor* यहभी एक प्रकारका कुचलाहै ।

स्थान—इस कुचिलेके वृक्ष दक्षिण प्रायद्वीपके पश्चिमके भागमें और कोकनसे कोचीन तक होतेहैं ।

प्रयोग— ४७) इसकी जड़को पानीमें भिगोके पिलानेसे दाह युक्त सब प्रकारके ज्वर मिटतेहै ( ४८ ) सर्प आर नोलकी लड़ाईमें सर्प जब नोलको काट खाताह तब उसके विषको उतारनेके लिय नोल इसकी जड़को खालिया करताहै ( ४९ ) इसकी जड़का हिम पिलानेसे सब प्रकारके विष उतरतेहै ( ५० ) शरीरका उद्घापन मिथानेके लिये इसकी जड़का काथ पिलाना चाहिये ( ५१ ) इस काथपर हींग बुरकाके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहै ( ५२ ) दाया मेथीकी फकी देके ऊपर इस काथको पिलानेसे पेटकी शूल मरतेहै ( ५३ ) इसकी जड़ और सुनायको आठके पिलानेसे भिगड़े हुए दोष विरेचनके द्वारा निकल जातेहै ( ५४ ) इसकी जड़के चूखकी फकी देनेसे दुष्टवायु और जलादिकसे पैदा हुआ ज्वर छुटताहै ( ५५ ) तेजग और चौथेगा ज्वर छुटानेके लिय इसकी लकड़का काथ पिलाना चाहिये ( ५६ ) इसमें बह तत्व बहुतहै जो कुचिलेमें होताहै इसलिये इसको काममें लानमें साथ शनी रखना चाहिये ।

संख्या ( २५१ )

( सं० ), तिल, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पणम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मगहरी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
तिल	तिल	तिल	तिळ	तिल	तिल(ली)	तुळु
द्राविडी	कन्नड़	ओरिसी	फारसी	लॉटिन	अंग्रेजी	
एल्ल	एल्ल	निगुसिम	कुजुद	Sesamum Indicum S. Orientale	Gingelly Sesamum	

स्थान—तिल हिन्दुस्थानमें प्रायः तब देर वायें जाते हैं। ये कई प्रकारके होते हैं इनमें काले और धाले मुख्य हैं ये अलग अलग देशोंमें अलग अलग ऋतुओंमें बोये जाते हैं और अलग अलग ऋतुमें पकते हैं इनका तेल रंगतके काममें आता है।

प्रयोग—ये कड़वे, मीठे, कपले, पचनेमें भारी, सिग्ध और उष्ण हैं। इनमें काले तिल सबसे उत्तम होते हैं और शरीरको पुष्ट करते हैं (२) ये शरीरके कठोर पड़ने भागको शिथिल करनेके लिये काममें आते हैं (३) ये बल भूत्र और स्त्रियोंके दूधको बढ़ाते हैं (४) ये अशुके लिये बहुत उत्तम हैं क्योंकि आंतोंको ठीक करके बद्ध कोष्ठको भिटाते हैं (५) तिलको जलके साथ पीय मर्बलनमें मिलाके चाटनेसे रक्तशोका खुरेरे बन्ध होता है (६) इनको पुष्टिस धारण करनेवाला आँपधियोंमें तिल और इनका तेल मिलाके देते हैं (७) घाव और चाँदियों पर तिलके तेलका फीया विशेष करके उष्ण ऋतुमें बांधना चाहिए (८) जतूनके तेलका ठौर तिलका तेल काममें आसकता है (९) तिलका तेल खाने और जलानके काममें आता है (१०) तेलको अधिक मात्रा सारक है (११) कष्टसे मामिक धर्म होनेको मिटानके लिये तिलका काथ पिलाना चाहिये (१२) तिलके काथमें सोड, मिरच और पीपलका चूर्ण डालके पिलानेसे मासिक धर्मकी रुकावट मिटती है (१३) तिल और मिश्रीको आँटके पिलानेसे सूखी खाँसी मिटती है (१४) तिल और अलसीका काथ पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है (१५) तिलको पीसके उष्ण जलादिक पदार्थोंसे या अग्निसे जले हुए पर लेप करना चाहिये (१६) आँखोंके गोत्र रोग

मिटानेके लिये तिलपुष्पके ऊपर जो आंसके कण पढतेह वे बहुत उपकारी है इसलिये तिलोंके पुष्पका आंस एकत्र कर रखना चाहिये ( १८ ) इसके पत्तोंमें बहुत चेष होताहै इनको पानीमें भिगोनेसे इनका चेष पानीमें आजाता है जैसेकि यह चेष चुचोंकी विस्त्रिका अतिसार आमातिसार प्रतिश्याय और मूत्रकी ललीके रोग और कई प्रकारके रोगोंमें पिलाया जाताहै ( १९ ) इसके पूरे बड़े हुए १-यों २ तजे पत्तोंको पाव-यर-समापाय ठंडे पानीमें और खूब पत्तोंको गर्म पानीमें डालके पिलानेसे वह अच्छा गाढ़ा चेषदाह होजाताहै ( २० ) कोमल करुनेवाले लेपमें तिलोंके पत्ते मिलाये जातेहैं ( २१ ) आमातिसार मिटानेके लिये पानीमें तिलोंके पत्तोंका चेष निकालके पिलाना चाहिये जो इससे दस्त बन्दनहीं होतेतो इसमें थोडा अफीम मिलादेना चाहिये ( २२ ) गर्भाशयमें अधिरके जमावको विखरनेके लिये ५-५-३ती तिलोंका शूर्ण दिनमें २५ घेर देना चाहिये और इस रोगवाली स्त्रीको कमर अतन उष्णजलमें मिटाना चाहिये ( २३ ) गर्भवती स्त्रीको तिलीचूर्ण खिलाना चाहिये ( २४ ) इसकी जड़ और पत्तोंके काथसे बालोंको ओनेसे बालोंपर काला रंग पैदा होताहै ( २५ ) जब जागफनी थुहरका काटा खचामें लगजाता है और ओवह चिमटे या और किसी यंत्रसे न निकाला जावेतो उसठौर तिलीकातेला वा रुख लगानेसे कुछ समय पीछे वह कांटा चित्तोंपरेशमके निकाला जासकताहै इस तेलके प्रभाव से वह कांटा कोमल होजाताहै माय गेल जाताहै और स्थान छोड़ देताहै इसके काटेकी जगह एकछाला दीखने लगताहै । जब वह छाला फूट जाताहै तब काटेका चिन्ह नहीं दीखताहै ( २६ ) इसके पत्तोंको सिरके या पानीमें पीसके लेप करनेसे मस्तक पीडा मिटतीहै ( २७ ) इसकी कोंपलोंको ज्ञायामें सुखा उनकी भस्म बनाके ७ या १० मासे तक नित्य लेनेसे पथरी गलतीहै ( २८ ) इसके पुष्पोंके खारको मधु और दूधमें मिलीके पिलानेसे पथरी मिटतीहै ( २९ ) तिलोंको दूधमें चांत्कर लेप करनेसे सूर्यावर्त मिटताहै ( ३० ) तिलोंके काथमें गुड़ मिलाके पिलानेसे स्त्रियोंके प्रज उत्पन्न होताहै ( ३१ ) इनके सेवनसे धीर्य बढ़ताहै ( ३२ ) गर्भाशयका सर्दीकी पीडा मिटानेके लिये तिलोंको तेलमें पीस गर्म करके नाभके नीचे लेप करना चाहिये ( ३३ ) तिलोंको शिरसकी जाल

और सिरकेकी साथ पीसकर मर्दन करनेसे मुहासे मिटता है ( ३५ ) चोट और मोच पर दर्दकी खलको पानीसे पीस गम करके बांधनेसे लाभ होता है ( ३६ ) तिलोको पानीमें पीसकर लेप करनेसे थिलीकी विष उतरता है ( ३७ ) इनके कल्केकी घृत अथवा तिलके साथ लेनेसे विषमें ज्वर छूटता है ( ३८ ) तिलोके कल्कमें बरोबर मिश्री मिलाकर बरौरीके चांगुणे दूधके साथ पिलानेसे रक्त तिसार मिटता है ( ३९ ) ठण्डे जलके साथ काल तिलोका क्षणातिर सेवन करनेसे अर्श मिटता है ( ४० ) इनकी लकड़ीकी ७ मासेसे १४ मासे तक भस्म सिंकेके साथ पीनेमें पथरी मिटती है ( ४१ ) तिलोको सिरकेमें पीसके मलने से भिड़का विष उतरता है ( ४२ ) एक ताले तिल और एक ताले तिलओवरुको रातभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उनका चपनिकाले उसमें थोडा बुराडालके पिलानेसे बन्ध हुआ मोसिक धमे फिर जारी हो जाता है ( ४३ ) तिल और इंडोलीको अलग २ कूट दोनोंको पीठे लैचमें मिलाकर लेप करनेसे चोट नी पीडो मिटती है और सूखा हुआ अंग अपनी पूर्वेदशा मर आजाता है ( ४४ ) इनकी खल और इन्दीको पानीके साथ पीसकर मलनेसे मरडोका विष उतरता है ( ४५ ) तिल और मसखनको पीसकर मर्दन करनेसे भिलावेकी सूजन उतरती है ( ४६ ) तिलोको तेलमें पीस अर्द्धोष्ण मर नाभिकानिधे लेप करनेसे भलोकी सर्दीकी पीडा मिटती है ( ४७ ) काल तिल और जलभांगरे के मर्चोका क्षणातिर एक मासेतक सेवन करनेसे और उतक दिनोंमें केवल दूधकी अहार करनेसे कई प्रकारके रोग मिटते हैं और रसायनका अभ्यास होता है ।

संख्या ( ३५२ )

स्तुत्र, कुबेरकः, कच्छ, निन्दीवृक्षः प्रागप्य १५

प्राच्यवृक्षी	निन्दीवृक्ष	गुजसती	मरहटी	अद्वाली	संतात्री	तैलवृक्षी
वृष, वृषी	स्तुत्र, तृन्	नदीवृक्ष	नदीवृक्ष	तृनीगोष्ठ	वृषोम	नदिवृक्ष

विडी	बर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	नन्दवट्टे			Cedrela Toona.	The town of India Mahogany tree Mouline Cedar

स्थानः—तृणके वृक्ष हिमालयमें सिन्धु नदीसे पूर्वकी और मध्य और दक्षिण-हिन्दुस्थानके पहाड़ी-भागोंमें और बंगाल और अवधमें बहुत होते हैं।

परिचय—तृणका वृक्ष ६०, ७० फुट ऊंचा होता है इसकी पेंदब खड़ी होती है, उसकी गुलाई ६ से १० फुट तक और कहीं कहीं १५ से २० फुट तक होती है इसकी छाल चौथाई इंच मोटी और गहरे भूरे रंगकी होती है इसके डालियाँ बहुत होती हैं डालियोंकी सीकों पर बहुधा १० से २० पत्त एक दूसरे के सामने लगते हैं इसके मधु जैसी गंधवाले सफेद पुष्प लगते हैं इसके मक्के सब पत्ते एक साथ नहीं गिरते हैं शीतकालमें इसके पुराने पत्ते कुछ समय के अंतरसे गिरते रहते हैं। फागुन और चैतमें नवीन पत्ते निकल आते हैं यह टृक्ष बहुत जल्दी बढ़ता है इसके रालकी जातिका एक प्रकारका गोद लगता है इसके पुष्पोंमें लाल और पीला रंग निकला जाता है।

फूलने फलने का समय—फागुन चैतमें इसके पुष्प लगते हैं जेठ अषाढमें इसके बीज पकते हैं और खाली डोडे कई महीनों तक टृक्षके लगे रहते हैं ॥

प्रयोग—(१) तृण, कडवा, चरपरा, शीतल, पचनेमें हलकी, गीठा, और आही है (२) इसका काथ पिलानेसे मंद ज्वर छूटता है (३) मुँचोंका अतिसार और आम्रातिसार मिटानेके लिये इसकी छालकी काथी पिलाना चाहिये (४) जराकि अतिसार मिटानवाली दूसरी चीजें न मिलें तो इसकी छालको, उनेकी ठौर काममें लाना चाहिये (५) इसकी छालका सूखा साग बदनेसे मुँचोंका आम्रातिसार मिटता है (६) इसकी सूखी छालको मधा दोपु फाट, हिम या काथ बनाके पिलानेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है (७) इसकी छालको घिसके ठंडा या गर्म लेप करनसे कई प्रकारके फोड़े फुन्सी मिटते हैं (८) इसकी छाल और किलगंचकी मींगीकी फधी देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है और बल बढ़ता है (९) इसके पुष्पोंको ओटाके पिलानेसे मासिकधर्म ठीक होने लगता है (१०) एकाकी

फूलनेवाले ज्वर और आतिसारको रोकनेके लिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देनी चाहिये । यह ग्राही है ।

संख्या ( २५३ )

(सं०) तुम्बुरुः, सौरभः, तीक्ष्णफलः, स्फुटफलः

मराठी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तुम्बुरु, तुंबर	तुम्बरु	तुम्बरु	चिरफल	सेपालिधम	तुम्बरु	तुम्बुरुलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	तुम्बरु			Zanthoxylum alatum		

स्थान—इसके वृक्ष हिमालयमें यमुनासे भूटानतक होतेहैं ।  
 पहिचान—इसका भाङ या छोटा वृक्ष होताहै इसके पत्ते सुगंधयुक्त, चरपरे और सघनघन होतेहैं । चेत वेशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं ।  
 प्रयोग—(१) तुम्बरु कडवा उष्ण, चरपरा, पचनेमें हल्का और रोचकहै ( २ ) मिसरीके साथ इसके बीजोंकी फकी देनेसे पित्तकी मंदाग्नि मिटतीहै ( ३ ) बिलके श्वेतके साथ इनकी फकी देनेसे पित्तातिसार मिटताहै ( ४ ) इस वृक्षकी छाल सुगंधित और बल बढ़ानेवालीहै ( ५ ) छालको थोटाके पीनेसे गठिया मिटतीहै ( ६ ) इसके चूर्णकी फकी देनेसे तीव्र मंदाग्नि मिटती है ( ७ ) वृक्षकी छालकी अपेक्षा इसकी जडकी छालमें ये शक्तियां अधिकहैं ( ८ ) इसकी शाखा और कांटोंको थोटाकोट्टे करनेसे दांतकी पीडा मिटती है ( ९ ) इसकी जडकी छालका काय पिलानेसे विस्त्रुचिकामें लाभ होताहै ( १० ) इसके बीजोंसे जल शुद्ध होताहै ( ११ ) इसकी शाखासे दांतुन करनेसे दात निर्मल होजातेहैं और उनकी पीडा मिटजातीहै ( १२ ) इसका तेल लगानेसे जहरीली छूत मिटतीहै ( १३ ) इसके बीज उष्ण और रूक्ष हैं इसके बीजोंमें से तेल निकलताहै । इसकी छालमें से तेल और राल जैसा पदार्थ निकलताहै ।







प्रश्न १— ( १ ) निम्नी चरणी, कर्णी, देवी, जण, दीपन आर पत्र  
म कर्णी ( २ ) इस क पत्नी खसी निम्नी आर उनका रस पिना  
नस गतिरयण निम्नी ( ३ ) खसी निम्नी निम्नी इस क आर अहेम  
पत्नीका रस पिना— ( ४ ) इस क पत्नी मदन कानस देह आर  
रवाक इस रस निम्नी ( ५ ) पत्नीका कस निम्नीस आरयण म व  
शुन दीजाही इस का निम्नी निम्नी निम्नी काट पिना बाहि  
( ६ ) निम्नीका काट पिनास ववाक यक सत्वनी रस निम्नी ( ७ )  
पुनस्य ( नस्य दीपन यक सत्व ) का निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी  
यक ववाक नस्य दीपन ( ८ ) इस क ववाक नस्य दीपन नस्य  
निम्नीका देवी बाहि ( ९ ) ववाक पत्नी अले निम्नी निम्नी इस क  
पत्नीका रस मस ववाक निम्नीका पिना बाहि ( १० ) कानका पूजा निम्नीका  
सस ववाक नस्य ववाक निम्नीका रस कानस देहना बाहि  
य ( ११ ) ववाका मस देवी का क निम्नीका कानस देहना बाहि  
इस क पत्नीका काट पिना बाहि ( १२ ) इस क पत्नीका ववाक ववाक  
काट रस आर यक सत्व वदानस सवी खसी र दीजाही ( १५ )  
ववाका रस निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी  
बाहि ( १६ ) सुका निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी  
नर्णीका रस पिना बाहि ( १७ ) इस क पत्नीका काट पिनास पत्नीका  
इस क वर वरवाही ( १८ ) निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी  
निम्नी बाहि ( १९ ) वरम व ववाक देही देही देही देही देही देही देही  
निम्नीस निम्नी बाहि ( २० ) कपकसम व पणिस अहेम देहना  
ही इस का निम्नी निम्नी इस क पत्नीका रस पिना बाहि ( २१ ) इस क  
पत्नीका निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी निम्नी  
पत्नीका रस पिना बाहि ( २२ ) इस क रस आर अहेम निम्नी निम्नी निम्नी  
वागरीग निम्नी ( २३ ) इस क रस देहना रानी देहना रानी देहना रानी

(६) इनके फांटमें जायफलका चूर्ण घुरकाके पिलानेसे अतिसार मिटता है (७) मिश्री और घीमें तली हुई सोंफके चूर्णकी फकी देके ऊपर इसका फांट पिलानेसे आमातिसार मिटता है (८) बच्चोंके दांत आते समय जो अतिसार होजाता है उसको मिटानेके लिये इसका फांट पिलाना चाहिये (९) बच्चा होने के पीछेकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके बीजोंका हिम पिलाना चाहिये (१०) पौने चार मासेसे १ तांले भर तक बीजोंकी फकी देनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है (११) बिच्छूके दंशपर इसके पत्तोंका लेप करना चाहिये (१२) इसके सूखे पत्तोंका चूर्ण घावपर घुरकानेसे उसके कीड़े निकल जाते हैं (१३) इसके पंचांगका काथ पिलानेसे पसीना आने लगता है (१४) शीतज्वर चढ़नेके समय जो ठंड लगती है उसको मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें सोंठ और कालीमिर्च का चूर्ण घुरकाके पिलाना चाहिये (१५) जवान मनुष्यका अतिसार बन्ध करनेके लिये उसको पौने चार मासेसे ७॥ मास तक बीजोंकी फकी देनी चाहिये (१६) बच्चेका अतिसार मिटानेके लिये २, ३ रती बीज अनारशर्बतके साथ पिलाना चाहिये (१७) इसके धुपेहुए बीजोंको पीस उनका पुट्टिस बनाके विगडहुए घावापर बांधना चाहिये (१८) बुद्धकोष्ठकी प्रकृतिवालेको सारक शर्बतके साथ इसका बीजोंकी फकी देनी चाहिये (१९) गुदाके भीतरके अर्श की पीड़ा मिटानेके लिये इसके बीजोंकी फकी देनी चाहिये (२०) इसके पौने चार मास बीजोंका प्रावभर पानीमें भिगा उसमें कुछ शक्कर मिलाकर उन सब का पीजाने से मूत्र और वीर्य सम्बन्धी अर्शोंके रोग मिटते हैं। जबतक वे नहीं मिटते तबतक नित्य पीना चाहिये (२१) इसके बीजोंका शर्बत पिलानेसे ज्वरमें शान्ति होती है (२२) मूत्रवृद्धि करने के लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (२३) कम सुनना और कानकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस कानमें डालना चाहिये (२४) बच्चोंका विरचनके एक दो बेग लगा देनेके लिये इसका जड़का काथ पिलाना चाहिये (२५) इसके पत्तोंका स्वाद लवण जसा है। ये बहुधा शाकादिकमें वर्धार देनेके लिये काममें आते हैं (२६) इसके बीजोंको कभी २ पानीमें भिगाके या कहीं ३ रतीमें मिलाके खाते हैं। यह शीतल और बहुत पाण्डिक है।

संख्या (२५६) (सं०) गन्धतुलसी, तीक्ष्णगंधः, देवदुग्धिः, सुगन्धः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
रामतुलसी			मोटीतुलस	रामतुलसी		
द्राविडी	कर्नाटकी	श्रवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		फरजमुश्क	पलंगेमुश्क	Ocimum Gratissimum O Citronellum	The shrubby basil	

स्थान— रामतुलसीके वृक्ष बंगाल- चटगांव पूर्वी नेपाल और दक्षिण प्रायद्वीप आदि कई देशोंके बागोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान— तुलसीको जितनी जातेहैं उनमें सबसे अधिक सुगंध इसके पत्तोंको हायम मूलनेसे आतीहै एसे उत्तम सुगंध और किसी तुलसीके पत्तोंमें नहीं आतीहै।

प्रयोग— (१) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे मुत्रकृच्छ्र मिटताहै (२) इसके पंचांगके काथका तरुड़ा देनेसे अर्द्धांग और गठिया मिटतीहै (३) इसका बफारा देनेसे भी ये दोनों रोग मिटतेहैं (४) शरीर पुष्ट करनेके लिये इसके बीजांकी फकी दीजातीहै (५) पारसे पैदा हुई गठियाको मिटानेके लिये इसके पत्तोंके काथका तरुड़ा या इसके पंचांगके काथका बफारा देना चाहिये (६) वीर्य पुष्ट करनेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाया जाताहै (७) पत्तोंके काथके गड़प करनेसे पारके दोपसे मुखसे पानीका गिरना बन्ध होजाताहै (८) इसके पत्तोंके रसका खलाट और कनपटियोंपर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (९) स्नायु सम्बन्धी पीडा मिटानेके लिये इसके बीजांकी फकी देनी चाहिये।

संख्या (२६०)

(सं०) तुल, तुल, तुल, ब्रह्मकाष्ठमूली

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
शहतूत	सिंहतूत	शेतूत	तूत	तूत, तुत	शहतूत	(०००)
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लाटिन	अंग्रेजी	
		तूत श्यामी	तूत, शहतूत	Moula Indica		

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

पाहिचान—देश भेदसे यह कई प्रकारका होताहै अर्थात् मीठा खट्टा और

अलग-२ रंगका होताहै इस वृक्षकी ऊंचाई ३०, ४० फुट होतीहै इसकी पेड़ खड़ी और गुलाईमें ७, ८ कंभी कभी-१०, १२ फुट होजातीहै इसकी छाल सफेद या भूरे रंगकी होतीहै शीतकालमें इसके सब पत्ते गिर जातेहैं और आधे माघसे फगुन और कभी २ चैत तक नवीन पत्ते निकल आतेहैं इसके पत्ते गिरने और नवीन आनेमें एक ऐसी विचित्रताहै कि उसी जगलमें कई वृक्षों के पत्ते विलकुल गिर जातेहैं और उन्हींके पासके वृक्षोंके पत्ते वैसेके वैसेही घने रहतेहैं इसके पुष्प पुरुष और स्त्री जातिके भेदसे अलग-२ ढोलियोंपर लगतेहैं।

फूलने फलनेका समय—माघ फागुन और चैत में इतके पुष्प लगतेहैं चशाख और जठ में फल पकतेहैं जो वृक्ष पहाड़ी पर बहुत ऊंच होतेहैं उनके फल और भी देरसे पकतेहैं।

प्रयोग और गुण—(१) पकड़प तूत पचनेमें भारी, मीठे, ठंडे और खट्टे होतेहैं इसका रस मीठा और कूल लाल रंग का होताहै (२) गुले के छाले, मिटानेके लिये इसका रस पिलाना चाहिये (३) ज्वरवाले मनुष्यको सत्ताप और घबराहट मिटानेके लिये इसका रस पिलाना चाहिये (४) इसके पत्तोंके काथके गडूप करानसे गलक छाल मिटतेहैं (५) इसक शर्वतमें पीपल डालके पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै (६) पित्तका उन्माद मिटानेके लिये द्राक्षीके काथमें इसका शर्वत मिलाकर पिलाना चाहिये (७) इसकी छाल रेचकहै (८) इसका काथ पिलानसे कीड़े मरतेहैं (९) इसके पत्ते चवानेसे मुखपाक मिटतेहैं (१०) गलेकी खुश्की मिटानेके लिये इसका शर्वत

पिलाना, चाहिये—( ११ ) इसके रसमें कलमीशोरा पीसके नाभिके नीचे लेप करनेसे मूत्रकी रुकावट मिटती है ( १२ ) इसका शर्बत कुंदमाला, और जीभकी सृजनको मिटाता है । इसका शर्बत बनानेकी यह रीति है कि सहतूतके रसमें वरावर घूरा डालकर शर्बतकी जालनी बनाके काममें लाना चाहिये ( १३ ) इसके पत्ते जड़ और कौमल डालियोंको पानीमें थोड़ेके गरारा करनेसे चूंदकी सृजन मिटती है ( १४ ) सूखे हुए सहतूतको पीसकर उसकी रोटी बनाके खानेसे शरीर पुष्ट और मोटा होजाता है ( १५ ) इसके पत्ते १ सेर मात्राकाल और १ सेर सायकाल खिलानेसे गायके दूध बढ़ता है अर्थात् तीन हिस्सेका चार हिस्से हो जाता है—ताजे सहतूत खाने और मुख्यता बनानेके काममें आते हैं ।

संख्या ( २६१ )

लैटिन *Morus alba* अंगरेजी *The white mulberry*

स्थान—तूतके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे सिक्किम तक, बंगाल, आसाम, ब्रह्मा और राजपूताना आदि कई देशोंमें होते हैं ।

पहिचान—यह वृक्ष २०, २५ फुट ऊंचा होता है । इसके पेड़की गोलाई १५, २० इंच होती है इसकी कलियें और पत्तापर छोटि २-रूप होते हैं इसके पुष्प, पुरुष और स्त्री जातिके भेदसे अलग २ लगते हैं । फल छोटे २ लगते हैं जब वे पकते हैं तब वाले पड़जाते हैं । पत भडम इसके पत्ते गिरजाते हैं परंतु उत्तर हिन्दुस्थानमें शीतकालमें इसके पत्ते गिरजाते हैं । माघके महीनेमें इसके पत्ते निकलने लगते हैं जो चैत तक निकला करते हैं इसके एक प्रकारका गोद लगता है ।

शूलने फलनेका समय—फागुनसे चैत तक इसके पुष्प लगते हैं और वैशाख जित या अषाढ तक फल पकते हैं ।

प्रयोग—( १ ) सहतूतमें उत्तम सुगंधि और सदा स्याद होता है ( २ ) ज्वरवाले की तृपा वम करनेके लिये सहतूत खिलाना चाहिये ( ३ ) सहतूतके रसमें शुकर डालके खिलानेसे दाढ़ा मिटती है ( ४ ) सहतूत मारके ( ५ ) इसकी छालको मधुमें गिलाके चट्टानेसे पेटमेंसे कीड़े निकल जाते हैं ( ६ )

इसकी छालका काथ पिलानेसे विरेचन होता है (७) इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे आतोंके कीड़े निकल जाते हैं या मरजाते हैं ( ८ ) इसकी जड़ ग्राही है ( ९ ) इसके काथके गंठूप करानेसे लटकाहुआ काग सिमट जाता है ( १० ) मुखपाक मिटानेके लिये सहतूतका शर्वत पिलाना चाहिये ( ११ ) शब्द सम्बन्धी नशोंका मोटापन मिटानेके लिये और उनकी सूजन उतारनेके लिये इसके पत्तोंके काथके गंठूप कराने चाहिये ( १२ ) ये सहतूत अकालके सिवाय खानेके काममें कम आते हैं ।

संख्या ( २६२ ) ।

( सं० ) तैलं, अभ्यञ्जनं, स्नेहोत्तमं, स्नेहमुख्यम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
तेल	तेल	तेल	तेल	तेल, तैल	तेल	नूने
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
एलै	येलै			Oleum	Oil	

गुण—सब प्रकारके तेलोंकी अपेक्षा तिलोंका तेल वातनाशक अधिक है तिलका तेल कपेला स्वादिष्ट, सूक्ष्म, उष्ण, व्यवायी, सारक, दृष्य, विकाशी, सूक्ष्म कडवा, लखन, बल्य और पित्तकारक है ।

प्रयोग—( १ ) तिलोंके तेलमें सेमरकी छालकी राख मिलाके लेप करनेसे सूजन विखरजाती है ( २ ) कडवे तेलमें साबुन मिला उसमें रुईका फोया भिगोरकर गर्भाशय के मुंहपर रखनेसे स्त्रीकष्टसे छूटजाती है ( ३ ) तेल और पानी को ओटाकर धारा देनेसे नारु विना कष्टके निकलजाता है ( ४ ) जलमेंगरेके रससे सिद्धकियेहुए तेलके लगानेसे बाल काले होजाते हैं ( ५ ) तिलोंके तेलमें लशुनका कल्क और नमक मिलाके सेवन करनेसे विषमज्वर और सबप्रकारकी वातपीड़ा मिटती है ( ६ ) तैल, दही और थोड़े कपूरको मथकर पिलानेसे मदात्यय मिटता है ( ७ ) सरसोंके तेलको गोमूत्र, गोबर और चकरीके चौगुणे मूत्रमें पचाकर मलनेसे अपस्मार मिटता है ( ८ ) सैधानमक और झील हुए लशुन

को कूट तिलोंके तेलमें मिलाके खानेसे हनुस्तम्भराग मिटताहै ( ६ ) गर्दनपर तेलका मर्दन कर उसपर आऊ या एरंडके गर्म पत्ते बाधनेसे मन्यास्तम्भ मिटता है ( १० ) निर्गुडीके पंचांगके रसमें बराबर तेल मिला सिद्ध कर उसके लगानेसे दुष्ट नाडीव्रण मिटतेहै ( ११ ) तेलमें खार और संधानमक मिलाकर मर्दन करनेसे शीतापित्त मिटताहै ( १२ ) तेलमें फोया भिगोकर योनिमें रखनेसे उसकी कठोरता और पित्तके विकार मिटतेहैं ( १३ ) तिलोंके तेलकी कुछ बूदें कानमें टपकानेसे कानके कीड़े मरजातेहैं ( १४ ) तेल और सिरका मिलाकार कानमें डालनेसे कानकी खुजली मिटतीहै ( १५ ) कनखजूरेके दंश पर दीपककी जलतवाई लगानेसे उसका विष उतर जाताहै ( १६ ) तिलोंका तेल मलनेसे भिलावेके विषसे उत्पन्न हुई शोथ उतरतीहै ( १७ ) सरसोंके तेलको नस्य उबटना और मर्दनके काममें सदैव लानेसे उन्माद मिटताहै ( १८ ) शरीरपर कवल ओढा उसके भीतर कडवे तेल और सजूकी धूनी देनेसे परिणाम शूल मिटतीहै ( १९ ) पूतिकरंजके पत्तोंके ८ तोले रसमें सरसोंका ३ माशेसे १ तोलेभर तेल मिलाके बलानुसार पिलानेसे श्लीपद रोग मिटताहै ( २० ) २ तोले सिंदूर और ४ तोले जीरेको सरसोंके तेलमें पकाकर लगाने से पाव मिटतीहै ( २१ ) दोबके रसमें चोगुना तेल मिला, पकाकर मर्दन करनेसे विचचिका मिटतीहै ( २२ ) धतूरेके बीज और मानकंदके खारसे सिद्ध कियाहुआ तेल विपादिका को मिटाताहै ( २३ ) हल्दीके कल्क और आकके पत्तोंके रससे सिद्ध कियेहुए तेलके लगानेसे पाव और वीची मिटतीहै ( २४ ) गायके गोबरके ८ तोले रसमें १ तोला तेल सिद्ध कर उसकी नस्य देनेसे तिमिर रोग मिटताहै ( २५ ) मुलहटीका ४ तोले कल्क और सेरभर जलभंगरेके सेरभर रसमें पाव तेल मिला सिद्धकर उस तेलकी एक महीने तक नस्य लेनेसे बली और पलित रोग मिटताहै और दृष्टी बढ़तीहै ( १६ ) बचके चूर्णको तेलके साथ एक महीने तक लगातर लेनेसे स्मरण शक्ति और बुद्धि बढ़तीहै ।

संख्या ( २६३ )

( सं० ) त्रायमाणा, बलभद्रा, त्रायन्ती, कृतत्राणा ॥



मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
त्रायमाण	त्रायमाण(न)	त्रायमाण(न)	त्रायमाण	बलालता	देवना	कलुगानु

द्रीविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	नारंगव ह			Ficus heterophylla F. heterophylla	

स्नान—त्रायमाणकी बेल हि दुस्थानके अधिक उपलभागेमें बड़ो नदियोंके किनारेपर होती है।

प्रयोग—(१) यह कपली, शीतल, मधुर, सारक और रुडवी होती है। यह पित्त रोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रुधिरविकार, ज्वर, श्लेष्मी तृषा, हृद्रोग, रक्तपित्त, अश और त्रिदोष, इन सबकी मित्रता है (२) इसकी जड़का रस पिलानेसे पेटकी शूल मित्रता है (३) आमातिसार मिथानके लिये इसके पत्रोंका रस दूधमें डालके पिनाजा चाहिये (४) कास, श्वास, खातीके रोग और इसीप्रकारके दूसरे रोग मिथानके लिये इसकी जड़की बहुत कड़वा बाल और धनियके चूरेकी फकी देनी चाहिये।

संख्या—(२६४)

(सं०) त्रिवृता, श्यामा, सर्वानुभूति, सरला।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
निशोत	निशोत	नसोत्तर	निशोतर	तेडडी	निशोत	तेल्लतेगडनल्लतेग

द्रीविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शिवसे	करीतेगडे	तेरुवुदा		Ipomoea Turpethum Convolvulus	Type in root Katha Jalya

स्नान—निशोत हिन्दुस्थानमें प्रायः सुधु और अपने आप उगती है। और वागमें बोई जाती है। खाईके किनारे आद्र और छायादार ठौरमें इसकी बेलें बहुत अच्छी फलती है।

पहिले चाने—इसकी चौखंडी शाखा उच्चाधिक पर चढती है, वर्षा ऋतुमें इस के घंटेके आकारके बहुतसे सफेद पुष्प लगते हैं। उसकी जड़ लम्बी और कुछ गिरदार होती है जिसके बहुतगी शाखें फूटती हैं जवतक जड़ गीली रहती है तवतक उसमेंसे दूध या दूधिया रस निकलता है, वह तुरंत जमकर राल गैसा पदार्थ बन जाता है उमका स्वाद पाहिले कुछ मीठा और पीछे कुछ खट्टा लगता है सूखी जड़में कुछ विशेष स्वाद और गुंथनहीं होती है, जिम लकड़ीमें जूंमे बहुत होते हैं पीसनेसे अलग होजाते हैं उनको निकाल देना चाहिये। सफेद निसोतका रंग सफेद या कुछ लालाई लिये हुए सफेद होता है और कालीका रंग भूरा होता है। सफेद निसोतके टुकड़ेके अन्तमें कुछ गोंद लगा रहता है। सफेद निसोतकी जड़की छाल, काली निशोतकी जड़की छालसे कुछ मोटी होती है। ज्यों २ इसकी जेला पुरानी होती जाती है त्यों २ इसकी छालमें चूंसे बढते जाते हैं।

प्रयोग—( १ ) निशोत, चरपरी, कडवी उष्ण, रूत, मधुर, कपेली, रसमें तिक्त और पाकमें ऊड्डे ( २ ) सफेद निशोत औपधिके प्रयोगमें अच्छी है और सुहृत्कारक है ( ३ ) काली शीत, रेचक है, और इससे वमन, निर्वलना और चकर आने लगते हैं ( ४ ) कई प्रकारकी रेचक औपधियोंमें निशोत मिली जाती है ( ५ ) इसके लोचकी यह कीति है कि निशोतकी छिली हुई २॥ मासे छालको जलसे पीस उसमें थोड़ी सोंठ और सधा नमक मिलाके या शकर और कालीमिस्तक मिलाके लेना अथवा दूधमें थोड़ा छानके खेना चाहिये ( ६ ) ६ इंच लम्बी और छोटी अगुली जैसी मोटी, निशोतकी जड़ विरेचनकी एक साधारण मात्रा है ( ७ ) इसकी जड़की छालमें रेचकशक्ति है ( ८ ) सफेद निशोतकी जड़की रेचकशक्ति जुलाफेकी बराबर और रेचकत्वनीची से अधिक है, इन दोनोंसे इसको उत्तम संगभनेका कारण यह है कि इसके स्वाद और रास से हृत्पास नहीं होता है अर्थात् ज्वी नहीं भजलाता है। इसकी मात्रा जुलाफे से ५, ७ रती अधिक देनी पडती है ( ९ ) पीपल और सैंधे नामके कीस्राय सफेद निसोतकी छालको पीसके देनेसे अच्छा विरेचन लगता है ( १० ) काले दानेकी अपेक्षा इसमें रेचकशक्ति कम है। विरेचनके लिये निसोतका ५॥ मासे तक चूर्ण दे सकते हैं। इसका चूर्ण बनाते समय चूर्णको अलग करनेमें ध्यान न रखना जायता उस चूर्णकी विरेचन शक्ति कम हो जाती है इसलिये इसके

चूसोंको निकालदेना चाहिये ( ११ ) इसको कांजीके साथ पीसके लगानेसे  
जूब मरतीहै ( १२ ) विसर्पराग वालेको निशोतका जुल्लाव देना चाहिये ( १३ )  
इसक चूसोंको मधुके साथ चटानेसे विषमज्वर छूटताहै ।

संख्या ( २६५ )

( सं० ) दधि, क्षीरोद्भव, तक्रजन्म, दोग्ध्यम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलझी
दही	दही	दहि	दहि	दह	दही	पेरुगु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तैर	मोमरु	लबतुलहा जिम	मास्ते		- Curd Congulated milk	

प्रयोग—(१) दही—उष्ण, दीपने, स्निग्ध, कपेला, भारी, पचनेमें खट्टा, मेल  
रोधक, और बलवर्द्धकहै ( २ ) दही ( मठे ) का लगातार सेवन करनेसे  
रक्तार्शका रुधिर बन्ध होजाताहै ( ३ ) दहीमें पानी मिलाके कुत्ते कर्गनेसे  
जीभकी दाह मिटतीहै ( ४ ) दहीके तोडमें थूक मिलाके अंजन करनेसे रतौंधा  
मिटताहै ( ५ ) दहीमें २ मासे कतीरागोंद मिलाके पिलानेसे जमाल गोटेकी  
दन्त बन्ध होतीहै ( ६ ) आंवला पवांडके बीज और कत्थेको दहीकेसाथ पीसकर लेप  
करनेसे दाद और खुजली मिटतीहै ( ७ ) दहीके साथ बेरीके पत्ते पीसके लेप करनेसे  
दाह मिटतीहै ( ८ ) जायफलका मद उतारनेके लिये दहीमें शर्कर मिलाके खिलाना  
चाहिये ( ९ ) दहीमें से टपकेहुए पानी का लेप करनेसे दाह मिटतीहै  
( १० ) दहीके तोडमें शहद मिलाके चाटनेसे प्रवाहिका मिटतीहै ( ११ ) दहीमें शुद्ध  
मिलाकर खिलानेसे वादीकी तृपा मिटतीहै ।

संख्या ( २६६ )

( सं० ) दन्ती, शीघ्रा, निकुंभा, उदुम्बरपर्णी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
दावूणी	तिरिफळ	दातश्रेढलेने- पालानामून	लडुदती	दंती	दंदनदाना	दंतीचेट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		हनुलमुलुक	वेदश्रीजीर स्व- ताई	<i>Elaeagnus montanum Coton polyandrum.</i>		

स्थान-उत्तर और पूर्व बंगालसे दक्षिण हिन्दुस्थान तक इसके पेड़ होतेहैं।

प्रयोग—( १ ) दन्ती-चरपरी, गरम, दीपन, शोधन और सारकहै ( २ ) इसके बीजोंसे बहुत तीक्ष्ण विरेचन होताहै परन्तु अधिक मात्रा लेनेसे तीक्ष्ण विपका काम देतेहैं और ये असली जमालगोटेकी जगह काममें आतेहैं ( ३ ) इसके बीजोंके तेलसे तीक्ष्ण विरेचन लगताहै ( ४ ) इसके तेलके मर्दनसे गाठिया मिटतीहै ( ५ ) इसके पत्तोंका पीसके लेप करनेसे घाव भरताहै ( ६ ) इसकी जड़ रेचकहै ( ७ ) यह जलधर और पसों की जलयुक्त मूजनमें दी जातीहै ( ८ ) इसके बीजोंका लेप उत्तजकहै और उस ठौरकी चमड़ीका लाल कर देताहै ( ९ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे कामलारोग मिटताहै ( १० ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे श्वास मिटताहै ( ११ ) आधा रती से ५ रती तक इसके बीजोंकी गिरीकी मात्रा देनेसे अथवा इसके तेलकी एक से ३ बुद तक देनेसे तीक्ष्ण विरेचन होताहै ( १२ ) इसकी जड़का धूया पीनेसे कफका कास मिटताहै।

संख्या ( २६७ )

( सं० ) जयपालकं, दतीबीजं, रेचकं, कुंभीबीजम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जयपालयो	जमालगोटा	नेपाळो	जेपाळ	जयपाल	जमालगोटा	नेपाळप्रवित्त
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
नेरवाल	नेपालदवी- जा	इन्डोमसली- तीन, दद	तुलसवेद अं- जीरताहै	<i>Croton Tiglium. C. Pavana</i>	<i>Croton seeds The purging croton.</i>	

स्थान—जमालगोटेके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागमें बोये जाते हैं।

पहिचान—इसका वृक्ष १५, २०-फुट ऊंचा होता है।

प्रयोग—(१) जमालगोटा—तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरा, भारी, स्निग्ध, दीपन और रेचक है (२) इससे बहुत भारी विरेचन होता है और इसकी अधिक मात्रा तीव्र विषका काम देती है (३) इसके बीजोंमेंसे नारंजी, पीले रंगका तेल निकलता है उसका स्वाद कड़वा और छुलाफकी जैसी गंधवाला होता है इससे बड़ा भारी विरेचन होता है (४) यह जलंधर, अपस्मार और जो किसी औषधिसे न मिटे ऐसे बद्धकोष्ठमें बहुत उपकारी है (५) एक अजैपालकी मींगी विरेचनके लिये बहुत है (६) इसके छिलके और भीतरकी जीभीमें बहुत विष होता है इसलिये अजैपालके ऊपरका छिलका और भीतरकी जीभी निकालकर उसको दूध या गोबरमें ओटाके काममें लाना चाहिये ऐसे शुद्ध कियहुए अजैपालकी मींगीको मुनकामें रखके देनी चाहिये (७) इसकी मींगीका विरेचन लेनेसे आतमें एठन और छातीमें दाह बहुत होती है उसको मिटानेके लिये इसमें त्रिफला और कत्था आदि मिला देना चाहिये। इससे वमन और तीव्र विरेचन होने को रोकनेके लिये चूनेका पानी छटाकसे दो छटाक तक, जबतक बन्धन ना होवे तबतक हर आधघंटेमें पिलाना चाहिये (८) यह ज्वर, अतोंके कीड़े जलयुक्त सर्वांगशोथ और झीह आदि यंत्रोंका बढना इन सब रोगोंमें उपकारी है (९) आवश्यकतानुसार इसकी आधी या एक मींगीको एक मासे भर चावलके साथ पीसके फकी देना चाहिये या इसको केलेके फलके टुकड़ेमें लपटके खिला देना चाहिये (१०) इसकी मींगीको यंत्रमें दवाके निकाले हुए तेलको गठियाकी पीडा पर लगाना चाहिये (११) कई मनुष्य ऐसे मृदुकोष्ठवाले होते हैं कि उनकी जीभ पर अजैपालके तेलकी एक वृद्ध डाल देनेसे बहुत ढीले दस्त होजाते हैं और कड़ियोंके १० वृद्धोंसे भी दीबने जैसा असर ही नहीं होता है (१२) मिरगी, वाइटे और प्रमादमें अजैपालके तेलका विरेचन बहुत उपकारी है (१३) इसके लेनेकी रीति यह है कि बंबूलके गंद और शकरमें अजैपालका तेल मिला पाच सात विदामकी गुलीको जलमें पीस उसमें इस चूर्णको मिलाके देना चाहिये (१४) इस तेलके प्रयोगसे स्त्रियोंके मासिकधर्म ठीक होने लगता है

और विना समय-बन्ध हुआ, मासिक धर्म, फिर होने लगता है ( १७ ) अजैपालकी जड़को पीसके चूर्णकी अन्धवी-चुमटी-धरके नित्राये जलके साथ देनेसे भारी विरेचन होजाता है ( १८ ) इसके गुले पत्तोंको पानीमें पिगो मल छानके पिलानेसे विरेचन लगता है ( १९ ) इसके सूखे पत्तोंको पानीके साथ पीसके सर्पके दशपर लेप करते हैं ( २० ) इससे अधिक विग्नन घन पर शीत आजाना है ( २१ ) उपाड करनेवाली दूसरी औषधियाके साथ अजैपालकी मीमीको पीसके नपुंसकी इन्द्री पर लेप करा है ( २२ ) अजैपालको चगरकी लोयमें जलाके उसका धूआ नाकक द्वारा पीनेमें श्वास मिटन है ( २३ ) बच्चोंकी खांसी मिटानेकेलिये अजैपालके तेलकी एक ब्रूमें ६, १० दूद सगसोंके या जैतूनके तेलकी मिलाके छानीपर मर्दन करना चाहिये ( २८ ) मस्तक पीड़ा और नित्रपाडा मिटानेके लिये कनपटीपर अजैपालका लेप करना चाहिये ( २६ ) अजैपालका चराकेली लोयमें जलाके उसका चौथा भाग प्रतिदिन पानमें राबके गिल्लानेसे श्वास राग मिटता है ( ३० ) अजैपालको हुक्केमें भरकर पीनेसे चादीकी हिचकी बन्ध होती है ( ३१ ) अजैपालको पानीके साथ पीसके लेपनेसे नारू गलजाता है ( ३२ ) अजैपालको पानीमें पीसके जिस भागमें पीडा हो उसके सामनेके भागपर लेप करनेसे मस्तक पीडा मिटता है ( ३३ ) काले सांपके काटे हुएको ७ अजैपाल और दूसरी जातिके गोपके कटे हुएको २ या ३ अजैपाले खिलानेसे और रतीभरका अजैपाल करनेमें विष उतर जाता है ( ३४ ) इसका अजन करने और पीसके लेप करनेसे विच्छूका विष उतरता है ।

संख्या ( २६८ )

( सं० ) बृहदन्ती, दुग्धगर्भा, विषाप्रहा, एरुडपत्रा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुकी
रतनमोत	मुगलाईश्रद	रतनजोत	थोरधन्ती		मुगलाईश्रद	
द्राविडी	तर्नाटकी	अग्दी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	एरुडन्ती			Ja. Soph. Curcas J. Molucana		

स्थान—धनएरण्डके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुतसी ठौर पशु कारो मण्ड-  
लके किनारे और द्रावडोरमें बहुत घोये जातेहैं ।

पाहिचान—इसके पीले पुष्प लगतेहैं । इसके पत्ते एरंडके जैसे कोने-  
दार होतेहैं ।

इसका रस सूखजाने पर एक प्रकारका रसु जैसा पदार्थ धन जाताहै ।  
इसका रस रंगतके काममें आताहै । इसके १०० तोले बीजोंमें ३० से ३७।  
तोले तेल निकलताहै ।

प्रयोग—( १ ) इसके बीज एरंडके बीजसे अधिक रेचकहै और जमाल  
गोटेसे कम रेचकहै इनमें यह दोष है कि कभी-कभी इनसे तीव्रविरेचन होजाताहै  
और कभी बहुतही कम होताहै इसके तेलकी भी यही प्रकृतिहै ; ( २ ) विशेष  
करके इसके अंकुर ( नाकू ) में चरपरी-वामक और- बहुत रेचकाशक्तिहै जो  
वह नाकू इसमें से पूरा निकाल दिया जावे तो इसके ४,५-बीजोंसे भी साधारण  
निरुपद्रव विरेचन होताहै ( ३ ) इसके सावित बीज विपका काम देतेहै इनसे  
मुखमें दाह, पेटका फूलना और पीडा, हृद्वास, वमन, तीव्र विरेचन हाथपैरोंके  
अन्तमें दाह, छातीमें वफका जमाव, प्रलाप और अचैतपन आदि चिन्ह पैदा  
होतेहै ( ४ ) इसका उतार नीचका रसहै ( ५ ) इसका तेल पामा, त्वचाके रोग  
और पुरानी-गठियापर, मर्दन, करनेके काममें आताहै ( ६ ) इसके तेलको  
बिगड़े हुए घाव और चादीपर लगानेसे साफ होजातेहै ( ७ ) इसके पत्तों  
का काथ स्त्रीके स्तनोंपर लगानेसे दूधका संचार बढ़ जाताहै ( ८ ) इसके  
पत्तोंपर एरंडका तेल चुपड़ अग्निसे तपाके फोडेपर बांनेसे फोडा जल्दी  
पक जाताहै ( ९ ) बिगड़े हुए घाव और चादीपर इसके गाढे रसका लेप  
करनेसे बहुत उपकार होताहै और उसके ऊपर एक प्रकारका ढकनसा बनके  
रुधिरका बहना रुक जाताहै और घाव भरना प्रारम्भ होजाताहै ( १० )  
इसकी जड़की बालका लेप करनेसे गठिया मिटतीहै ( ११ ) फूले हुए  
मुसंडापर इसका गाढा रस लगतेहैं ( १२ ) इसकी कोमल शाखोंका दातुन  
करनेसे दांत दृढ होजातेहैं ( १३ ) इसकी जड़की बालको हींग और मक्खन  
निकाले हुए दूधके साथ पीसके पिलानेसे मदाग्नि और अतिसार मिटताहै ।

संख्या ( २६६ )

( सं० ) दाडिमः, कुट्टिमः, करकः, दंतबीजकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
दाडम	अनार	दाडिम	डाडिच	दाडिमगाछ	अनार	दानिम्मा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मादल	दालम्बि	रुम्मान	अनार	<i>Punica Granatum</i> P. Nana	Pomegranate	

स्थान—दाडिमके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोये जाते हैं ।

पहिचान—इसका कोई वृक्ष २० फुट ऊंचा होता है इसकी पेदड़ छोटी होती है उसकी गुलाई ३ ४ फुट होती है, इसकी छाल कुछ पीली या गहरे भूरे रंगकी होती है । माघ और फागुनमें इसके नवीन पत्ते निकलते हैं इसके पत्ते टहनियोंके आसने-सामने लगते हैं वे कुछ लम्बे, नोकदार और कुछ पिलास लिये हुए लाल होते हैं इसके पुष्प एक २ ठौर २ लगते हैं । इसके फलकी मध्यरेखा दोसे ३। इंच लम्बी होती है । इसके दाने लाल, नोकदार और किसी २ के सफेद होते हैं किसी २ के बीजोंमें लकड़ी होती है और किसी २ में बिलकुल नहीं होता है । अनार खट्टे, मीठे और खटमीठे स्वादके भेदसे तीन प्रकारकी होती है । खट्टे अनारके वृक्षके खट्टेही अनार लगते हैं और मीठेके मीठे लगते हैं । इसके पुष्प और छाल रगतके काममें आते हैं ।

फूलने फलनेका समय—इसके सब अंशोंमें पुष्प लगते हैं परन्तु चैत वैशाखमें बहुत लगते हैं । अषाढसे भादवे तक फल पकते हैं परन्तु देशान्तरमें पृथक् २ समय में पकते हैं ।

प्रयोग—( १ ) अनार-शीतल, खट्टा, ग्राही, दीपन, कपेला और रोचक है ( २ ) इसका ताजा रस ठण्डा, शीतल और शान्ति करनेवाला है ( ३ ) यह मंदाग्निको मिटाता है ( ४ ) अनारके फलका छिलका पुराने अतिसार और आम्रातिसार को मिटाता है ( ५ ) इसकी जड़की छाल बहुत ग्राही है ( ६ ) जड़की छालका काथ पिलानेसे आतोंके कीड़े निकल जाते हैं ( ७ ) अनार-



बढ़कर और अफारा पैदा करती है ( ७ ) इसकी जड़, कानमें बांधनेसे धारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाता है ।

संख्या ( २७२ )

( सं० ) दुर्गलभा, धन्वयास, ताम्रमला, कच्छुरा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
धमासो	धमासा	धमासा	धमासा	दुरालभा	धगाह	दुर्गाविल
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	सुकुकुमकेभद			<i>Fagonia arabica.</i> <i>F. mysorensis</i>		

स्थान—धमासा पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान सिन्ध पंजाब और पश्चिम प्राय-द्वीपके दक्षिणभाग आदि बहुतसे देशोंमें होता है ।

प्रयोग—( १ ) धमासा चरपरा, कडवा, उष्ण, खारा, खट्टा, मीठा शीतल और कपेला है ( २ ) इसके पत्ते और टहनियाँ शीतल होती हैं ( ३ ) शरीरके बाहिर और भीतरके पित्तके जितने रोग हैं उन सबमें यह बड़ा उपकारी है ( ४ ) उष्णकालमें गर्मीके जितने उपद्रव हैं उन सबको दूर करनेमें यह बड़ा समर्थ है ( ५ ) इसके प्रयोगसे ज्वर छूट जाता है ( ६ ) काटेके लग जाने से जो पीपदार फोड़े होजाते हैं उनको पकानेके लिये उनपर इसके पत्तोंका लेप या पुन्टिस बांधते हैं ( ७ ) इसको थोटाके बुल्ले करानेसे मुखपाक मिटता है ( ८ ) इसके रसमें मिश्री डालके मंद आंचसे इतनी देर तक थोटावे कि यह बिलकुल गाढ़ा होजावे इसमें से थोडासा मुखमें धरा रखनेसे मुखपाककी दाह मिटती है ( ९ ) खुले घावपर इसका अर्क लगानेसे पकना बन्द होजाता है ( १० ) इसका काथ पीनेसे रुधिर शुद्ध होजाता है ( ११ ) इसके काथको पिलानेसे पेटके बच्चोंके बहावकी रुकावट मिटजाती है ( १२ ) यह ग्राही है ( १३ ) इसका काथ पिलाने से शीतपित्त मिटता है ( १४ ) इसका श्वरस पिलानेसे मूत्रारोधका उदावर्त मिटता है ( १५ ) इसके काथमें घी मिलाके पिलानेसे श्रम रोग मिटता है ।

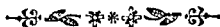
इतिश्रीत्रिपाठद्युपाख्यवैद्ययसुनाटारात्मज-भारतधर्ममहा-  
मण्डल तथायुर्वेदविद्यापीठनासिकवैद्यसभाप्राप्ता-  
युर्वेदपञ्चाननोपाधिभूषितगङ्गाप्रसादवैद्य-  
विरचितोऽनुभूतचिकित्सासागर-  
पूर्वार्धः सपूर्णः ।





ANUBHOOTA CHIKITSA SAGARA.

SECOND PART.



*A Magazine*

OF

WELL-TRIED

*Ayurvedic Medicines*

BY

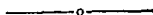
PANDIT GANGA PRASAD

DADHICH TRIPATHI

*Ayurveda-Panchanan*

and

Member of the Ayurveda Vidya—Pitha



AJMER,

**MEDIC PRESS**

FIRST EDITION

1908

( ALL RIGHTS RESERVED )

To be had of the author, Ajmer

*Price 3 Rupees only*



# संस्कृतशब्दानुक्रमणिका ।



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अ-		अमृतः	३७७	अश्मरीघ्नः	४७२
अक्षः	४९०	अमृतफलम्	३०८	अश्मरीहरः	४९९
अग्निज्वाला	२८२	अमृता	५९४	अश्मलाक्षा	५३१
अग्निमुखः	३६३	अमृतोत्था	५६७	अहिच्छन्ना	५२१
अग्रधान्यम्	५५९	अमृतोत्पन्नम्	४३२	आ-	
अग्निमा	४४७	अमोघा	३१७	आचरत्प्रियः	४९३
अङ्गारकः	३७२	अमोघा	४८७	आच्छकः	३८०
अङ्गारवल्ली	३६६	अम्बष्ठा	४३५	आच्छुरुः	३८०
अच्छुरुः	३८०	अम्बष्ठा	३१८	आतृप्यम्	५६५
अजकर्णः	५५५	अम्बुजः	६०२	आपस्तम्भिनी	५३२
अजदण्डी	३६०	अम्भःफलम्	३२५	आस्रगन्वा	५९०
अजया	४८६	अम्भःसारम्	४२४	आलम्	५८८
अजशृङ्गी	४२३	अयः	४६५	आवर्तकः	४४४
अतरुणदारुः	५०२	अरलुः	५४४	आवर्तमाणिः	४४४
अतिवला	३५५	अरिष्टः	२९८	आसुरी	४४५
अतिमुक्ता	४००	अरुष्करः	३६३	आस्फोटः	४९३
अतिमोदा	२८८	अर्थसाधकः	३३४	इ-	
अनन्ता	२७३	अर्शाघ्नः	५३७	इक्षुगन्धा	४८९
अनन्ता	५६१	अलक्तः	४५९	इज्जलः	६०२
अपुष्पफलदः	३१२	अल्पकेशी	३६८	इन्दीवरी	५१७
अधिकफ	५५३	अवदाहेष्टम्	४६०	इषुः	५१९
अध्विनारिकेलः	२९५	अवल्लुजः	४७८	इष्टिकापथिकम्	४६०
अभ्रनामक	४१४	अविद्धकर्णी	३१८	उ-	
अभ्रपुष्पः	५०५	अविप्रियः	५४२	उग्रगन्धा	३७४
अभ्ररोहम्	५०७	अंशुमती	५२५		
अमरः	४५०	अश्मघ्नः	३२४		
		अश्मजम्	५३१		

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
उग्रगन्धा	४२६	कण्डूल.	५३७	कार्मुकः	२९९
उग्रगन्धा	४६८	कदम्बकः	५५८	कालकूटम्	४९४
उच्चतरु	२९४	कदम्बकः	५९३	कालमेषी	४७८
उकटः	५१९	कनकम्	५७०	काला	३०७
उद्दालः	५४६	कनकाह्वयः	२७९	कालायसम्	४६५
उद्देगम्	३४१	कनकाह्वयम्	२८९	काष्ठशारिवा	५६०
उन्मत्तः	२७८	कन्थारी	५७९	कासघ्नी	३६६
ए-		कम्बुः	५१०	किशुकः	३१६
एकमूला	५२५	कम्बुजीरः	५११	किञ्जल्कम्	२८९
एकाष्टीलः	४७७	कम्बुपुष्पी	५१२	कितव	२७८
ऐरावतः	२९१	करघाटः	३८१	किरातक	३६९
ऐरावती	४७०	करच्छदा	५६४	कीटमाता	५९६
ओ-		करपर्णः	३७५	कुचन्दनम्	३१०
ओष्ठी	४९१	करुणः	३०२	कुटन्नटः	५४४
क-		कर्कन्धुः	३५०	कुनटी	३८६
कच्छरुहा	४१५	कर्चूरक.	५१३	कुनटी	२८३
कञ्चुकी	४२९	कपूरहरिद्रा	५९०	कुन्दुरुकी	५२२
कटंकटेरी	५९१	कर्पफल	४९०	कुमारक	४७२
कटिजः	३७६	कलशी	३४३	कुरुविन्दः	४०३
कटुफला	५४५	कलिद्रुमः	४९०	कुरुविन्दः	४१४
कटुमूलम्	३२९	कल्पकः	५१३	कुबेराक्षी	३१७
कटुवीरा	३९०	कल्याणी	५८५	कुसुमाञ्जनम्	३४०
कटुस्रैहः	५५८	कषाय	२८१	कुस्तुम्बरी	२८३
कटुवङ्गः	५४४	कस्तूरी	४१९	कृच्छ्रहरः	३२४
कण्टकिफलैः	३१२	कस्तूरीलतिका	४२०	कृमिघ्नः	४८७
कण्टकी	३५०	काक्षी	५७६	कृमिघ्नी	२८५
कण्टपत्रफला	३६०	काण्ड	५१९	कृमीलकः	३७७
कण्टवल्ली	५४५	काण्डतित्तः	३६९	कृष्णचूडा	५६२
कण्टालुः	४७३	काण्डपुङ्खा	५२०	कृष्णधत्तूरः	२७९
		कान्ता	३४७	कृष्णफला	४७८
		काम्बोजी	४०४	कृष्णमुषली	४१२
		कारवी	५१६	कृष्णमूली	५६१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
कृष्णराजिका	४४६	क्षेमकः	३६५	गोत्रपुष्पः	२८०
कृष्णलवणम्	५७७	क्षौद्रम्	३८२	गोधापदी	४११
कृष्णवीजम्	४४७	ख-		गोधावती	४७०
कृष्णवीजम्	५६५	खरपत्रः	५२३	गोपी	५६०
कृष्णसारा	५३३	खरपत्रकः	३२१	गोलीढः	४१३
कृष्णसारिवा	५६१	खर्षरीतुल्यम्	४३२	गोवन्दनी	३४७
कृष्णा	३२६	खर्वूजम्	५४९	गोस्तनी	२७६
कृष्णिका	४४६	ग-		गौरी	५८९
केतुरत्नम्	५०७	गजपिप्पली	३२७	ग्रन्थिकम्	३२९
केदारजम्	३११	गजोपणा	३२७	ग्रन्थिलः	४८५
केशमुष्टिः	२९९	गणिका	४३५	ग्रन्थिला	४१६
केशराजः	३७३	गणेशभृषणम्	५६३	ग्रहणीहरम्	४५६
केशी	३६८	गण्डगात्रम्	५६५	ग्रैष्मी	२८८
कैरातः	३६९	गन्धभद्रा	४०२	घ-	
कोमलवल्कला	४५७	गन्धरसम्	५०८	घूकावास	५२४
कोलमूलम्	३२९	गन्धिनी	३३१	घोण्टाफलम्	३४१
कौडिन्यः	२७७	गरागरी	२७५	च-	
कौसुमम्	३४०	गर्भकरः	३३४	चक्षुष्यम्	४३२
कक्रचपत्रः	५२३	गाङ्गेयम्	४१४	चणपत्री	४४९
कमुकः	४६२	गाङ्गेरुकी	३५६	चण्डा	५३२
कमुकम्	३४१	गालवः	४६१	चतुष्पुण्ड्रः	३७७
क्रीताकिका	३०७	गुच्छालः	३७१	चतुष्फला	३५६
क्षवकः	४४६	गुडपुष्पः	३८४	चन्द्रः	६०४
क्षवपत्रा	२७७	गुडफलः	३३२	चन्द्रवल्ली	४००
क्षारपत्रम्	४८४	गुरुत्नम्	३३९	चन्द्रहासम्	४३९
क्षितिबदरी	३५१	गुहा	३४३	चपल.	४४३
क्षीरशुक्ला	४८९	गृध्रपत्रा	२८५	चपल	३२०
क्षीरनाशनः	५२४	गृध्राणी	२८५	चपला	३२६
क्षीरपनसः	४५४	गैरिकाक्षः	३८५	चर्मी	३७०
क्षुद्रसहा	४१०	गोकर्णी	४१७	चवलः	४४३
क्षेत्रपर्पटी	३१४				
क्षेत्रेषुः	४३४				



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
चव्यजा	३२७	जलवल्ली	५३८	तीक्ष्णरसः	५६९
चाम्पेयम्	२८९	जलवेतसः	५०६	तुगाक्षीरी	४७६
चारः	३३०	जाली	३०९	तुङ्गः	३३७
चारुपर्णी	३५८	जिङ्गी	३७९	तुरुष्का	४२७
चारुफलम्	२९७	जुङ्गा	५०२	तूलवृक्षः	५२६
चित्रतण्डुला	४८७	ज्योत्स्ता	३०९	तृणध्वजः	४७४
चित्रफला	५३२	ज्वालामरिचम्	३९०	तृणभेरुः	४५०
चिरपुष्पः	३४९	झ-		तृणराजः	२९४
चीरितच्छदा	३२३	झपा	३५६	तृणशून्यम्	३९५
चुकाम्लम्	५०१	ड-		तृपापहा	४०५
चूलिकालवणम्	२८६	डहुः	४५४	तृष्णारिः	३१४
चेतकी	५९४	त-		तेजनी	४१७
छ-		तण्डुलः	५०९	तोयपिप्पली	३२८
छत्रा	२८३	तन्तुभः	५५८	त्रपुः	४६७
छत्रा	४०५	तरुरोहिणी	४७१	त्रिधारस्तुही	५८०
छागलान्त्री	५०२	तापीजम्	५७१	त्रिणादिका	५९६
छिद्राफलम्	३७८	ताप्यम्	५७१	त्रिवीजः	५४२
छुरिका	३२३	ताम्बूलवल्ली	२९२	त्र्यसः	५८०
ज-		ताम्बूली	२९२	त्वक्सारः	४७४
जटालः	४६९	तारम्	४३९	त्वक्सारः	५१४
जटालः	४१३	ताक्ष्यः	५६९	त्वग्गन्धः	२९१
जटाफलः	२९४	तालमूली	४११	द-	
जतु	४५९	तिक्तशाकः	४७२	दन्ताघातः	३०१
जन्तुका	६००	तिक्तशाका	४२२	दन्तीफलसमा-	
जलम्	३५९	तिक्ताङ्गा	३१९	कृतिः	४०६
जलगोजकम्	२९७	तिन्तिडीकम्	५०१	दरदम्	६०१
जलनीली	५४०	तिरीटः	४६१	ददुरच्छदा	३६२
जलपिप्पली	३२८	तीक्ष्णकण्टका	५७९	दशाङ्गुलम्	५४९
जलफलम्	५३८	तीक्ष्णगन्धा	४४५	दाडिमपुष्पकः	४५३
जलमूकः	३८५			दारुहरिद्रा	५९१
				दीपकः	४२६

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
दीप्तः	३०१	धवलः	२८१	नागरङ्गः	२९१
दीप्यः	४२६	वातकी	२८२	नागरमुस्ता	४१५
दीर्घपत्रकः	३८५	धातुपुष्पी	२८२	नागरोत्था	४१५
दीर्घपत्रिका	३३६	धान्यकम्	२८३	नागलता	२९२
दीर्घमूलम्	४६०	वारास्तुही	५८०	नागवल्ली	२९२
दीर्घरागा	५८९	धावनी	२८२	नागारिः	३५३
दुर्धर्षा	२९०	धावनी	३४३	नाडिका	२९३
दुर्धर्षा	५७९	धुरन्धरः	२८१	नाडीक	२९३
दुर्नामारिः	५३७	बूनराजः	२८४	नाडीशाकः	२९३
दुष्प्रवेशा	५७९	धूम्रपत्रा	२८५	नाडीहिंयुः	६००
दूर्वा	२७३	धूर्त	२७८	नादेयः	५०६
दृढकाण्डा	३१९	धृसरपत्रिका	५९७	नादेयम्	५७४
दृढप्ररोहः	३४८	ध्रुवा	५२५	नारङ्गः	२९१
दृढरङ्गा	५८२	ध्वजवृक्षः	३९८	नारायणी	५१७
दृढबीजम्	३४४	न-		नारिकेलः	२९४
देवकुसुमम्	४५६	नकुलेष्टा	५५६	नाही	२९६
देवजम्बकम्	४५२	नखरञ्जनी	४३७	निकोचकम्	२९७
देवदारु	२७४	नटमण्डनम्	५८८	निचुल	६०२
देवदाली	२७५	नरसारः	२८६	निद्रालु	५०२
देववल्लभः	३३७	नलः	२८७	निम्बः	२९८
देवी	३५३	नवमल्लिका	२८८	निम्बूकम्	३०१
द्राक्षा	२७६	नवमालिका	२८८	नीचभोज्यः	३१५
द्राविडकः	५१३	नवसार-	२८६	नीलकृणा	५५९
द्रुमामयः	४५९	नागकेशरः	२८९	नीलकण्ठम्	११८
द्रोणपुष्पी	२७७	नागम्	५६६	नीलनिर्गुण्डी	३०५
द्रोणा	२७७	नागजम्	५६३	नीलपुष्प	३७३
द्विजप्रिया	५७५	नागदमनी	२९०	नीलपुष्पी	३०५
ध-		नागपत्रा	२९०	नीलफला	५०३
धन्वनः	२८०	नागपत्रा	२९०	नीलभृङ्ग	३७३
धर्मनः	२८०	नागपुष्पी	२९०	नीलमणिः	३०६
धवः	२८१	नागपला	३५६	नीलसिन्दुक	३०५
		नागरम्	५३६	नीलाश्रमा	३

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
नीलिका	३०५	पलाशः	३१६	पिप्पलीमूलम्	३२९
नीली	३०७	पवनोम्बुजम्	३१३	पियालः	३३०
नृपावर्तः	४४४	पाक्यः	४३०	पिशाचद्रः	५२४
नेत्रोपमफल	४७९	पाटला	३१७	पीतकम्	५८८
न्यग्रोध	४६९	पाटला	३२५	पीतकाष्ठ	५९३
प-		पाठा	३१८	पीतदुग्धा	५८४
पक्करक्तफलः	५४८	पाण्डुफलः	३०८	पीतदृ	५५४
पंक्तिबीजः	४७३	पातालगरुडी	३१९	पीतपुष्पी	३५७
पचम्पचा	५९१	पादपरुहा	४७१	पीतपुष्पी	५१५
पटुपर्णी	५८४	पानीयफलम्	३९७	पीतफल	५५५
पटोल	३०८	पारदः	३२०	पीतमणि	३३९
पटोलिका	३०९	पारसीकयमानी	४२७	पीतमूली	३३१
पट्टरञ्जनम्	३१०	पारिजातक	३२१	पीतबीजा	४२१
पट्टिकालोधः	४६२	पारिभद्र	३२२	पीतवृक्षः	५५४
पतङ्गम्	३१०	पालक्यम्	३२३	पीतशिरीष	५३०
पत्राङ्गम्	३१०	पालक्या	३२३	पीतस्फटिकः	३३९
पद्मकम्	३११	पालाशः	३२२	पीतिका	५८९
पद्मकाष्ठम्	३११	पावनध्वनिः	५१०	पीलु	३३२
पद्मपत्रा	५९०	पाषाणभेदः	३२४	पीलुपर्णी	४९१
पद्मबीजाभम्	३९७	पाशुपतः	४७७	पुत्रजीवः	३३४
पद्मराग	३९९	पिचुमन्द	२९८	पुदीनः	३३५
पद्मा	३६६	पिच्चटम्	४६७	पुन्नागः	३३७
पनसः	३१२	पिच्छः	५२७	पुरुषः	३३७
परिव्याध	५०६	पिच्छिला	३२५	पुष्करज	३३८
परिव्राजी	४०८	पिच्छिला	५३३	पुष्करमूलम्	३३८
परुषः	३१३	पिण्डमुस्ता	४१५	पुष्कराह्वयम्	३३८
परुषक	३१३	पितृमिय	३७२	पुष्पकेतु	३४०
पर्कटि	३४८	पित्तकारिणी	३९०	पुष्पचामर	४५०
पर्जन्या	५९१	पित्तम्	४०६	पुष्पमृत्यु	२८७
पर्पट	३१४	पित्तारिः	३१४	पुष्पराग	३३९
पलाण्डु	३१५	पिच्य	४०३	पुष्पाञ्जनम्	३४०
		पिप्पली	३२६	पूगफलम्	३४१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
पूतिकाष्ठम्	५५४	वदरी	३५०	भार्गी	३६६
पृथ्वीतैलम्	३४२	वन्धुजीवकः	३५२	भावनम्	३६४
पृथ्विपर्णी	३४३	वन्धूक	३५२	भिक्षु	४०८
पेरजम्	३४५	वन्ध्याककाटकी	३५३	भुजङ्गमम्	५६६
पेरुकम्	३४४	वर्जरी	५५९	भुजङ्गाक्षी	५५६
पेरोजम्	३४५	वला	३५४	भूतकेशः	३६८
पोटगल	२८७	वलिका	३५५	भूतसारः	५४३
पौरम्	४५२	वल्पा	३५५	भूतहारिः	२७४
प्रतानिका	३५८	वहुपात्रिका	४२१	भूनिम्बः	३६९
प्रतिविष्णुक	४०७	वहुलवल्कल	३७०	भूपदी	३९५
प्रभट्टकः	३२२	वहुवारक	५४६	भूपलाशः	४९३
प्रवालः	३४६	वालकम्	३५९	भूवदरी	३५१
प्रसारणी	३५८	वेणी	२७५	भूरिफेना	५८१
प्रस्थपुष्प	३९३	ब्रह्मदण्डी	३६०	भूर्जपत्रः	३७०
प्राजक्त	३२१	ब्रह्मपादपः	३१६	भूस्तृणम्	३७१
प्राणदा	५६७	ब्रह्माण्डूकी	३६२	भृङ्गच्छली	३७४
प्रियंगु	३४७	ब्राह्मी	६०३	भृङ्गराजः	३७२
प्रियजीव	५४४	ब्राह्मी	३६१	भृङ्गाहा	३७४
प्रियाल	३३०	भ-		भेण्डा	३७५
पुक्ष	३४८	भङ्गा	४८६	भौमरत्नम्	३४६
पुवङ्गः	३४८	भण्डिलः	५२९	भ्रमरा	३७४
प्लीहशत्रु	४५३	भद्रमुस्तकम्	४१६	म-	
फ-		भद्रमुस्ता	४१६	मकायः	३७६
फणिज्जक	३९३	भद्रोदनी	३५४	मकुलः	३४९
फणिहन्त्री	५५६	भल्लक	५४३	मकुष्ठः	३७७
फलपूरः	४९७	भल्लातक	३६३	मखान्नम्	३९७
फलाम्लकम्	५०१	भवदारु	२७४	मङ्गल्यः	३८५
फलिनी	३४७	भवम्	३६४	मङ्गल्यः	३९६
फलेरुहा	३१७	भविष्यम्	३६४	मञ्जफलम्	३७८
ब-		भव्यम्	३६४	मञ्जिष्ठा	३७९
वकुल	३४९	भस्मगर्भा	५३३	माणिवरः	६०४
		भाण्डीरः	३६५		

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
मण्डूकपर्णः	५४३	मयूरकम्	३८७	मागधी	३२६
मण्डूकपर्णी	३६२	मयूरतुल्यम्	३८७	माडः	३९८
मण्डूरम्	४६६	मयूरशिखा	३८८	माणिक्यम्	३९९
मत्स्यादनी	३२८	मरिचम्	३८९	माणिमन्थम्	५७४
मदकारिणी	४२७	मरिचपत्रकः	५५५	मातुलानी	४८६
मदघ्नी	२९०	मरुत्तकः	३९३	मातुलङ्गकः	४९७
मदनः	३८१	मरुवकः	३९३	माधवी	४००
मद्यदुमः	३९८	मर्यादवल्ली	३९४	माध्याह्निकः	३५२
मद्यु	३८२	मर्यादा	३९४	मानकम्	४०१
मधुकम्	४३३	मल्लिका	३९५	मायिका	३७८
मधुकर्कटी	४९८	मसूरः	३९६	मायिफलम्	३७८
मन्धुगन्धः	३४९	महच्छदः	४०१	मार्कवः	३७२
मन्धुधातु	५७१	महाकन्दः	४१८	मार्जारगन्धिका	४१०
मन्धुपीलुः	३३३	महाकन्दः	४५८	मालती	४०२
मन्धुमल्ली	४०२	महाकायः	३७६	मालातृणः	३७१
मन्धुयष्टिका	४३३	महानादः	५१०	मालूरः	४९२
मन्धुरसा	२७६	महानिम्बः	२९९	माल्यपुष्पः	५१४
मन्धुरा	४०५	महानीलः	३७३	मापः	४०३
मन्धुबीजधूरः	४९८	महापत्रः	४०१	माषपर्णी	४०४
मन्धुगोषम्	३८३	महापीलुः	३३३	मांसरोहा	४५१
मन्धुस्रवः	३८४	महाफलः	३३३	मांसलम्	३४४
मन्धुस्रवा	४३३	महाफला	४९८	मिश्रेया	४०५
मन्धूकः	३८४	महावला	३५७	मीनाण्डी	५२१
मन्धूच्छिष्टम्	३८३	महामापः	४४३	मुकूलकम्	४०६
मन्धूली	४९८	महाशुक्ति	५३५	मुक्ता	४२४
मन्ध्यादिनः	३५२	महासहा	४०४	मुक्ताप्रसूः	५३५
मनःशिला	३८६	महेरुणा	५२२	मुक्ताफलः	५४८
मनोयुता	३८६	महोद्रेकः	२९९	मुक्तास्फोटः	५३५
मनोज्ञा	३५३	महौषधम्	५३६	मुत्तुकुन्दः	४०७
मनोहरा	४३६	महौषधम्	४५८	मुण्डी	४०८
मन्मथा	३९४	माक्षिकम्	३८२	मुद्गः	४०९
मयनम्	३८३	मासान्नम्	३९७	मुद्गपर्णी	४१०

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
मुपली	४११	यवक्षारः	४३०	रक्तापहम्	५०८
मुष्ककः	४१३	यवजः	४३०	रङ्गदा	५८२
मुष्टिप्रमाणवदरम्	५७३	यवनेष्टः	३१५	रङ्गम्	४६७
मुस्तकः	४१४	यवनेष्टम्	३८९	रजतम्	४३९
मूर्वा	४१७	यवनेष्टम्	५६६	रजनीगन्धा	४४०
मूलकम्	४१८	यवाग्रजः	४३०	रञ्जनद्रुः	३८०
मृगच्छदः	२८७	यशदम्	४३१	रञ्जनी	३०७
मृगनाभिः	४१९	यष्टिमधुः	४३३	रञ्जिका	४३७
मृगमदः	४१९	यष्टीपुष्पः	३३४	रत्नराद्	३९९
मृदुत्वक्	३७०	यावनालः	४३४	रविक्रान्ता	५७२
मृदुपुष्पः	५२९	यावनी	४२७	रविप्रीता	५७२
मृदुफलः	३१३	युक्तरसा	४४८	रसकम्	४३७
मेघाख्यम्	४१६	युगलाक्षः	४७३	रसगर्भम्	४४२
मेचकाभिधा	३१९	युगमफला	५०४	रसवातुः	३२०
मेथिका	४२१	यूथिका	४३५	रसाग्रजम्	४४२
मेथी	४२१	यूथी	४३५	रसाञ्जनम्	४४२
मेध्यः	४२९	र-		रसेन्द्रः	३२०
मेपवल्ली	४२३	रक्तकुसुमः	२८०	रसोद्भवम्	६०१
मेपशृङ्गी	४२३	रक्तपादी	४५५	रसोद्भूतम्	४४२
मोक्षकः	४१३	रक्तपादी	५९६	रसोनक	४५८
मोचरसः	५२७	रक्तपुनर्नवा	३३६	रस्या	४४८
मोचस्त्रावः	५२७	रक्तपुष्पः	३२२	रागगर्भा	४३७
मोच्चा	५२६	रक्तपुष्पा	५६४	रागदालिः	४९६
मोरटा	४१७	रक्तपुष्पा	५२६	रागपुष्पी	३२१
मौक्तिकम्	४२४	रक्तपुष्पिका	३३६	राजधान्यम्	५४२
म्लेच्छम्	६०१	रक्तप्रसवः	४०७	राजपीलुः	३३३
य-		रक्तबीजा	५६४	राजवला	३५८
यक्षद्वमः	४२५	रक्तमारिचम्	३९०	राजमापः	४४३
यज्ञिकः	३१६	रक्तरङ्गा	४३७	राजावर्तः	४४४
यमानी	४२६	रक्तवल्ली	४३८	राजिका	४४५
यवः	४२९	रक्तशृङ्गिकम्	४९४	राजी	४४५
				राटः	३८१

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
रामठम्	५९८	लामज्जकम्	४६०	वर्हिष्टम्	३५९
रामठी	६००	लोणा	४६३	वल्लीवदरी	३५१
रामफलम्	४४७	लोणी	४६३	वंशः	४७४
रास्ना	४४८	लोध्रः	४६१	वंशक्षीरी	४७६
रीतिहेतुः	४३१	लोभ्यः	४०९	वंशभेदः	४७५
रुचकः	४९७	लोहकिष्टम्	४६६	वंशरोचना	४७६
रुचकम्	५७७	लोहमलम्	४६६	वंशलोचना	४७६
रुचिष्यः	३३५	लोहम्	४६५	वसुः	४७७
रुदन्ती	४४९	व-		वसुकः	४७७
रुद्राक्षः	४५०	व-		वस्तुकम्	४८४
रोधः	४६१	वकः	४७७	वद्विवीजम्	३०१
रोधपुष्पः	३८४	वक्रकण्टः	३५०	वाकुची	४७८
रोमाञ्चिका	४४९	वङ्गम्	४६७	वाट्यालकः	३५४
रोहिणः	३७१	वचा	४६८	वाणपुङ्खा	५२०
रोहिणी	४५१	वज्रः	६०४	वातवैरी	४७९
रोहिपट्टणम्	४५२	वञ्जुलः	५०५	वातादः	४७९
रोही	४५३	वटः	४६९	वातामः	४७९
रोहीतकः	४५३	वटपत्री	४७०	वातामभेदः	४८०
ल-		वत्सनाभः	४९४	वातामभेदः	४८१
लकुचः	४५४	वनमुद्गः	३७७	वातामभेदः	४८२
लक्ष्मीफलः	४९२	वनमेथी	४२२	वानौर	५०६
लघुश्लेष्मान्तकः	५४७	वनयमानी	४२८	वान्तिहारी	३३५
लघुश्लेष्मान्तकभेद	५४८	वनवातामः	४८३	वाह्निकम्	५९८
लज्जालः	४५५	वनहरिद्रा	५९२	वासन्ती	४००
लताकस्तूरिका	४२०	वनारिष्टा	५९२	वास्तूकम्	४८४
लतामणिः	३४६	वन्दाकः	४७१	विकङ्कतः	४८५
लवङ्गम्	४५६	वपुषा	५९५	विकङ्कता	३५५
लवनी	४४७	वमनः	५१४	विकसा	३७९
लवली	४५७	वरुणः	४७२	विजया	४८६
लशुनम्	४५८	ववूरः	४७३	विजया	५९४
लाक्षा	४५९	वर्षपुष्पा	३५७	विटपी	४६९
		वर्हिचूडा	३८८	विडङ्गः	४८७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
विडम्भेदः	४८८	वृत्तकोशा	२७५	शतपदी	५१७
वितानकः	३९८	वृत्ततण्डुलः	४३४	शतपर्वा	२७३
वितुन्नरुम्	३८७	वृत्तधीजः	३७७	शतपर्विका	४६८
विदारणः	२८६	वृद्धदारकः	५०२	शतपुष्पा	५१६
विदारी	४८९	वृन्ताकः	१०३	शताक्षी	५१६
विटुलः	५०५	वृश्चिकाली	५०४	शतावरी	५१७
विडुला	५८१	वृश्चिपत्री	५०४	शताह्वा	५१६
विदूरजम्	५०७	वृषाकरः	४०३	शमी	५१८
विद्रुमः	३४६	वृहहलः	४६२	शमीपत्रा	४५५
विन्दुफलः	५४८	वृहद्वातः	४९९	शरः	५१९
विभीतकः	४९०	वेणुः	४७४	शरपुहसा	५२०
विम्बिका	४९१	वेतसः	५०५	शर्करा	५२१
विम्बी	४९१	वेधमुग्या	४१९	शल्यकः	३८१
विरेचनः	३३२	वेड्यम्	५०७	शल्लकी	५२२
विल्वः	४९२	वेशाखी	३३६	शस्त्रकम्	४६५
विशल्पकृत्	४९३	चोलम्	५०८	शाकः	५२३
विशालत्वक्	५५०	व्यञ्जनः	३३५	शाकपत्रः	५४१
विश्वम्	५३६	व्याघ्रपात	४८५	शाकराजः	४८४
विषग्री	५०४	घणारिः	५०८	शाकश्रेष्ठा	५०३
विषग्री	६०३	घ्रीहिः	५०९	शाखोटः	५२४
विषभेदः	४९५	श-		शान्ता	५१८
विषमच्छदः	५५०	शङ्कितः	३६५	शारदः	५५०
विषमण्डलः	४९६	शङ्खः	५१०	शारदा	५६०
विषम्	४९४	शङ्खजीरकम्	५११	शारदी	३२८
विषाणी	४२३	शङ्खधरा	६०३	शालपर्णी	५२५
विस्त्रा	५९५	शङ्खपुष्पी	५१२	शालिः	५०९
वीजगर्भः	३०८	शङ्खमालिनी	५१०	शाल्मली	५२६
वीजपूरः	४९७	शङ्खाह्वा	५१२	शाल्मलीवेष्टः	५२७
वीरकन्दः	५६७	शठी	५१३	शिखरी	४७१
वीरतरः	४९९	शणः	५१४	शिखरी	४३४
वीररुक्षः	४९९	शणघण्टिका	५१५	शिखालुः	३७६
वृक्षाम्लम्	५०१	शणपुष्पी	५१५	शिखित्रीवम्	३८७



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
हरितः	४०९	हवुषा	५९५	हिलमोचिका	६०३
हरितशाकः	५४१	हंसपदी	५९६	हरिकः	६०४
हरितालम्	५८८	हस्तिशुण्डी	५९७	हृद्यगन्धकम्	५७७
हरिताम्रम्	३४५	हियुः	५९८	हेमम्	५७०
हरित्पर्णम्	४१८	हियुनाडिका	६००	हेमसागरः	६०५
हरिद्रा	५८९	हियुलम्	६०१	हेमपुष्पी	४३६
हरिद्रुः	५९३	हिज्जलः	६०२	हेमपुष्पी	४११
हरिवल्लभः	४०७	हिण्डीरः	५५३	हेमवती	५८४
हरीतकी	५९४	हिरण्यम्	५७०	ह्रीवैरम्	३५९



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

## मारवाड़ीशब्दोंकी अकारादिअनुक्रमणिका ।

शब्द	स०	शब्द	स०	शब्द	सं०
अजवाण	४२६	खरबूजो	५४९	चिरायतो	३६९
अडकविदाम	४८३	खेरटी	३५४	चिलगोजा	२९७
आवाहलदी	५९०	खाड	५२१	छडछडीलो	५३९
आल	३८०	खरासाणीअज-		छिवरो	३१६
ईसवंद	५८७	वाण	४२७	जंगलीहलदी	५९२
उड़द	४०३	खेजडी	५१८	जलपीपल	३२८
कचूर	५१३	खेड़ी	४९९	जलभांगरो	३७२
कटहल	३१२	गजपीपल	३२७	जलवेत	५०६
कथीर	४६७	गरजनतैल	४२५	जैवार	४३४
करणो	३०२	गागरण	३५६	जस्त	४३१
कलमीसोरो	५६९	गुलतुरों	५६२	जहरीनारेल	२९५
कस्तूरी	४१९	गुलशब्बा	४४०	जामफल	३४४
काई	५४०	गूदा	५४७	जाल	३३२
कागदीनीबू	३०१	गूदी	५४८	जीयापोता	३३४
काजी	५४०	गोपीचंनण	५७६	जूही	४३५
काटी	४६६	गोरखमुण्डी	४०८	जो	४२९
कादो	३१५	गोरीसर	५६०	जोखार	४३०
कालीनगद	२९०	घाववेल	५५१	झडवोर	३५१
कालीमिरच	३८९	घासलेटतेल	३४२	डावी	३५५
कालीसर	५६१	धीयोभाटो	५११	डासरया	५०१
कालोजलभागरो	३७३	चकोतरो	३०३	डीकामाली	६००
किन्दूरी	४९१	चंवला	४४३	तिवारीयोर	५८०
कीड़ामार	२८५	चांदी	४३९	थोर	५७८
केसर	२८९	चारोली	३३०	थोरविशेष	५८१
खपरयो	४३२	चौवल	५०९	दाख	२७८

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
दारुहलदी	५९१	परेल	६०२	वरणो	४७२
दुपहारियो	३६२	परवल	३०९	वंवल	४७३
दूधियोसिगीभोरो	४९५	पवनपक	५११	वसलोचन	४७६
देवदारू	२७४	पाकड	३४८	वहेडा	४९०
दोवडी	२७३	पाषाणभेद	३२४	वाजरो	५५९
धणों	२८३	पाठ	३१८	वांझककोडो	३५३
धचूरो ( कालो )	२७९	पाडल	३१७	वादो	४७१
धचूरो ( सफेद )	२७८	पारो	३२०	वावची	४७८
धामण	२८०	पालखो	३२३	वायविडंग	४८७
धावडाफूल	२८२	पालस्या	३१३	वांस	४७४
धो	२८१	पिठवन	३४३	विच्छुडी	५०४
धोकडो	२८१	पितपापडो	३१४	विजोरो	४९७
धोलोकाजल	३४०	पिरोजो	३४५	विदाम	४७९
नरसल	२८७	पिस्ता	४०६	विन्दाल	२७५
नागकेसर	२८९	पीपल	३२६	विदारीकंद	४८९
नागफणीथोर	५७९	पीपलामूल	३२९	विही	३२६
नागरवल	२९२	पुखराज	३३९	वी	३२५
नागरमोयो	४१५	पोखरमूल	३३८	वीजाबोल	५०८
नारंगी	२९१	पोदीनो	३३५	वील	४९२
नारेल	२९४	फरहद	३२२	वीलो	४९२
निर्गुण्डी	३०५	फटकडी	५८२	वई	५००
नीम	२९८	फूलप्रियंगु	३४७	वूंटो	४८६
नील	३०७	फूलमखाणा	३९७	वूल्यो	४७३
नीउम	३०६	वकाण	२९९	वंत	५०५
नीलोगूथो	३८७	वंग	४६७	वैगण	५०३
नेगड	३०५	वच	४६८	वोर	३५०
नेतरवालो	३५९	वड	४६९	वोरडी	३५०
नोसादर	२८६	वडहर	४५४	ब्रह्मदण्डी	३६०
पटोल	३०८	वडीजाल	३३३	ब्राह्मी	३६१
पठाणीलोद	४६२	वथवो	४८४	ब्राह्मीभेद	३६२
पतंग	३१०	वधायरो	५०२	भांग	४८६
पदमाक ( ख )	३११	वनसण	५१५	भाडगी	३६६

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
भिडी	३७५	मेंदी	४३७	लामजक	४६०
भिलायो	३६३	भैण	३८३	लाल मिरच	३९०
भोजपत्र	३७०	भैणफल	३८१	लृणक्या	४६३
मकी	३७६	भैणसल	३८६	ल्हमयो	५४६
मय्या	३७६	मोखां	४१३	लोग	४५६
मर्जाट	३७९	मोचरस	५२७	लोड	४६१
मडूर	४६६	मोट	३७७	लोधान	४६४
मरवो	३९३	मोतियो	३९५	लोद	४६५
मलहदी	४३३	मोती	४२४	शिवलिंगी	५३२
भेहदी	६३७	मोयो	४१४	संख	५१०
मदवो	३८४	मोयोविशेष	४१६	सखावली	५१२
मदवाको भेद	३८५	मोम	३८३	संचललृण	५७७
मसूर	३९६	मोरसली	३४९	सण	५१४
मस्तगी	२८४	मोरमिखा	३८८	सतावर	५१७
मांजृफल	३७८	रंतनजोत	४४१	सत्वानासी	५८४
माणक	३९९	रसोत	४४२	सनाय	५८५
मानपात	४०१	राई	४४५	सफेदसामलो	५२८
मालती	४०२	राईभेद	४४६	संभालू	३०४
मीठानीम	३००	राठका पान	४४८	समदफल	५५२
मीडल	३८१	रामफल	४४७	समंदरझाग	५५३
मीडाक्षीगी	४२३	रुद्रवन्ती	४४९	मरकडो	५१९
मुचकुन्द	४०७	रुद्राक्ष	४५०	सरपंखी	५२०
सुरायली	६१७	रेड	४१६	सरसूं	५५८
मुठकदाणा	४२०	रेवत चीनी	३३१	सलाजीत	५३१
मूग	४०९	रोहण	४५१	सहत	३८२
मूग्या	३४६	रोहीडां	४५३	सहदेई	३५७
मूडापातो	२७७	रोहीसी घास	४५२	सहदेवी	३५७
मूली	४१८	रजाल	४५५	सहीजणो	५४१
मूसली ( काली )	४१२	ल्हसणियो	५०७	सागवान	५२३
मूसली ( सफेद )	४११	ल्हसण	४५८	साजी	५८३
मेथी	४२१	लाख	४५९	साटो	३३६
मेयो	४२२	लाजवर्द	४४४	सामलो	५२६

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
सालममिश्री	५६७	सुगंधितवासवि-		सोंफ	४०५
सांवा	५४२	शेष	३७१	सोमलता	५७५
सिगीमोरो	४९४	सुपारी	३४१	सोवा	५१६
सिघाड़ा	५३८	सुलतानचंपो	३३७	हरडै	५९४
सिदूर	५६३	सूठ	५३६	हरताल	५८८
सिन्दूरपुष्पी	५६४	सूरण	५३७	हलदी	५८९
सिरको	५३४	मूवा	५१६	हंसराज	५९६
सिरस	५२९	सेमल	५२६	हारसिगार	३२१
सीकाकाई	५४५	सेलो	५२२	हावूवोर	५९५
सीताफल	५६५	सेव	५७३	हीग	५९८
सीधोलूण	५७४	सोनजूही	४३६	हीगडो	५९९
सीपडी	५३५	सोनमक्खी	५७१	हीगलू	६०१
सीसम	५३३	सोनामुखी	५८५	हीरो	६०४
सीसो	५६६	सोनो	५७०	हुलहुल	५७२



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

## हिन्दीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अजवान	४२६	कालीमूषली	४१२	चिरायता	३६९
अनंतमूल	५६०	कालीराई	४४६	चिरोजी	३३०
अंवियाहलदी	५९०	किसमिस	२७६	चिलगोजा	२९७
अमरूद	३८४	कीड़ामार	२८५	चीड़ (र)	५५४
अरलू	५४४	खपरिया	४३२	चीनी	५२१
आल	३८०	खरबूजा	५४९	चूर्णहार	४१७
इजर	६०२	खांड	५२१	छतिवन	५५०
उड़द	४०३	खिरैटी	३५४	छिकुर	५१८
एनाना	४४७	खुरासानी अज-		छिरेटा	३१९
ओट	३६४	वाइन	४२७	छोकर	५१८
ककहिया	३५५	गजपीपल	३२७	छोटागूदा	५४७
कधी	३५५	गधेजघास	४५२	छोटीदूधी	५८६
कचूर	५१३	गरजन तेल	४२५	जरबमे हैयात	६०५
कटहर	३१२	गुलतुरा	५६२	जंगली बादाम	४८३
कंटाई	४८५	गुलशब्वा	४४०	जगलीहलदी	५९२
कंदूरी	४९१	गुलसकरो	३५६	जलकनेर	६०२
कन्ना	३०२	गुमा ( गोमा )	२७७	जलपीपर	३७८
करियासाड	५६१	गौदी	५४८	जलमहुवा	३८५
कस्तूरी	४१९	गोपीचन्दन	५७६	जलवेत	५०६
काई	५४०	गोरखमुंडी	४०८	जव	४२९
काडा	५१९	चकोत्रा	३०३	जवाखार	४३०
कालाधनूरा	२७९	चरेली	३६२	जस्त	४३१
कालानोन	५७७	चँवरा	४४३	जस्तफं फूल	३४०
कालाभंगरा	४७३	चांदी	४३९	जामफल	३४४
फालीमिरच	३८९	चांवल	५०९	जीवापोता	३३४

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
जूही	४३६	नीम	२९८	पोदीना	३३५
जू	४२९	नींबू	३०१	पोहकरमूल	३३८
ज्वार ( री )	४३४	नील	३०७	प्याज	३२५
झड़वेर	३५१	नीलमणी	३०६	फरहद	३२२
टटू	५४४	नीलसम्हालू	३०५	फालसे	३१३
टेसू	३१६	नीलाथोथा	३८७	फिटकडी	५८२
डीकामाली	६००	नेनिया	४६३	फिरोजा	३४५
ढाक	३१६	पटुआसाग	२९३	फूलप्रियंगू	३४७
तिधाराथुहर	५८०	पठानी लोद	४६२	वकायन	२९९
थुहर	५७८	पतंग	३१०	वकुची	४७८
दर्याईनारियल	२९५	पन्नाक ( ख )	३११	वचनाग	४९४
दारुहलदी	५९१	परवल	३०८	वड	४६९
दूधियावचनाग	४९५	पसरन	३५८	वडवती	४७०
दूब	३७३	पाकर	३४८	वडहर ( ल )	४५४
देवदार	२७४	पाखर	३४८	वडापीलू	३३३
दुपहरिया	३५२	पाखानभेद	३२४	वडाशाल	५५५
धनियां	२८३	पाठ	३१८	वथुवा	४८४
धामन	२८०	पाटर	३१७	वदाम	४७९
धामिन	२८०	पाढल	३१७	वन्दा	४७१
धावई	२८२	पारा	३२०	वनउर्दी	४०४
धावा	२८१	पालक	३२३	वनमेथी	४२२
धौ	२८१	पिडार	४९६	ववूर	४७३
नरसल	२८७	पित्तपापडा	३१४	वंबूल	४७३
नवसादर	२८६	पित्ति	४३८	वर	४६९
नागकेसर	२८९	पिस्ते	४०६	वरना ( णा )	४७७
नागदौन	२९०	पीतवन	३४३	वरंभी	३६१
नागफनीथुहर	५७९	पीपर ( ल )	३२६	वरवेल	४९९
नागरबेल	२९२	पीपलामूल	३२९	वहेडा	४९०
नागरमोथा	४१५	पीलावाला	४६०	वंशलोचन	४७६
नारंगी	२९१	पीलीजूही	४३६	वाजरा	५५९
नारियल	२९४	पीलू	३३२	वांझककोडा	३५३
नाही	२९६	पुखराज	३३९	वादाम	४७९

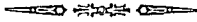
शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
वावची	४७८	भूरिछरीला	५३९	मेंहदी	४३७
वायविडंग	४८७	भेला	३६३	मैनफल	३८१
वास	४७४	भोजपत्र	३७०	मैनसिल	३८६
विछवावास	५०४	भ्रमरच्छली	३७४	मोरवा	४१३
विजौरा	४९७	मक्का	३७६	मोचरस	५२७
विदारीकंद	४८९	मखाना	३९७	मोठ	३७७
विधारा	५०२	मंजीठ	३७९	मोती	४२४
विषाम्विल	५०१	मंडूर	४६६	मोतीकी सीप	५३५
विही	३२५	मधु	३८९	मोथा	४१४
वीजाबोल	५०८	मरजादवेल	३९४	मोम	३८३
वेत	५०५	मरुवा	३९३	मोरशिखा	३८८
वेर	३५०	मसूर	३९६	मोलसरी	३४९
वेरीकांपंड	३५०	मस्तिकी	२८४	रतनजोत	४४१
वेल	४९२	महुआ	३८४	रसोत	४४२
वेलमोतिया	३९५	माजूफल	३७८	राई	४४५
वैगन	५०३	माड	३९८	रांग ( गा )	४६७
ब्रह्मदंडी	३६०	माधवी	४००	रान्ना	४४८
ब्रह्ममांडूकी	३६२	मानकंद	४०१	रुद्राक्ष	४५०
ब्रह्मी	३६१	मानिक	३९९	रेवटी	४४४
भंग	४८६	मालती	४०२	रेवतचीनी	३३१
भंगरा	३७२	मिट्टीकातेल	३४२	रोमफल	३६४
भटा	५०३	मीठानीम	३००	रोहिणी	४५१
भद्रमोथा	४१६	मीठापटोल	३०९	रोहेड़ा	४५३
भाग	४८६	मुगवन	४१०	लजालू	४५५
भागरा	३७२	मुचकुंद	४०७	लजावती	४५५
भांट	३६५	मुलहदी	४३३	लवनी	४४७
भारंगी	३६६	मुश्क दाना	४२०	लसोडा ( रा )	५५६
भारंगीभेद	३६७	मृंग	४०९	लहसन	४५८
भिंडी	३७५	मूंगा	३४६	लहसुनिया	५०७
भिलाषा	३६३	मूली	४१८	लाख	४५९
भुट्टा	३७६	मेढाक्षिगी	४२३	लाजवर्द	४४४
भूतकेश	३६८	मेथी	४२१	लाणा	४४९



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
लालमिरच	३९०	समुद्रफेन	५५३	सुलतानचंपा	३३७
लोग	४५६	सरल	५५४	सूरन	५३७
लोध	४६१	सरहटी	५५६	सेमर ( ल )	५२६
लोनी	४६३	सरफोका	५२०	सेव	५७३
ल्लेवान	४६४	सरसो	५५८	सैधानोन	५७४
लोविया	४४३	सरिवन	५२५	सोठ	५३६
लोह	४६५	सहत	३८२	सोना	५७०
शंख	५१०	सहदेई	३५७	सोनापाठा	५४३
शंखाहुली	५१२	सहिजना	५४१	सोनामाखी	५७१
शणहुली	५१५	सहोडा ( रा )	५२४	सोनिया	२७५
शतावर	५१७	सागवान	५२३	सोफ	४०५
शन	५१४	सांट	३३६	सोमलता	५७५
शिलाजीत	५३१	सातला	५८१	सोया	५१६
शिवालिगी	५३२	सालई	५२२	हड़	५९४
शोरा	५६९	सालममिश्री	५६७	हतियान	५२८
संगजराहत	५११	सांवा	५४२	हरताल	५८८
सब्जी	५८३	सिघाडा	५३८	हरफारेवडी	४५७
संतरा	२९१	सिन्दूर	५६३	हरमल	५८७
सत्यानाशी	५८४	सिन्दूरिया	५६४	हर्ड	५९४
सनाय	५८५	सिरका	५३४	हलदिवा	५९३
सफेदधतूरा	२७८	सिरस	५२९	हलदी	५८९
सफेदवच	४६८	सिवार	५४०	हंसपगी	५९६
सफेदमूसली	४११	सीकाकाई	५४५	हाउवेर	५९५
सफेदवसु	४७७	सीताफल	५६५	हाथीशुंडा	५९७
सभाजय	५५७	सीसम	५३३	हारसिगार	३२१
संभालू	३०४	सीसा	५६६	हियलू	६०१
समा	५४२	सुगंधरोहिष	३७१	हीग	५९८
समुंदरकापात	५५१	सुगन्धवाला	३५९	हीरा	६०४
समुद्रफल	५५२	सुपारी	३४१	डुरडुच	५७२

अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—

## गुजरातीशब्दोंकी अकारादिअनुक्रमणिका ।



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अजमा	४२६	कुकडवेल्य	२७५	चौल	४८४
अडद	४०३	कुबो	२७७	चुनी	३९९
अडवार अडदवेल	४०४	खडभरामी	३६२	चोखा	५०९
अडवारमगवेल	४१०	खपाट	३५५	चोला (ळी)	४४३
अरडुसो	५४४	खरवूज	५४९	छुवारी अजमोद	४२८
आंवाहळदर	५९०	खरेटी	३५४	जलजांबवो	६०२
आल	३८०	खाखरो	३१६	जलमडुडे	३८५
इसपन	५८७	खाजवणी	५०४	जलवेतस	५०६
ओटफल	३६४	खाटीआवळी	४५७	जव	४२९
कचूरो	५१३	खापरियुं	४३२	जवखार	४३०
कंटाळोथोर	५७८	खारीजाल्य	३३२	जसत	४३१
कडवापटोल	३०८	खीजडी	५१८	जामफल	३४४
कडवीनई	२९६	खुरासाणीअजमा	४२७	जुई	४३५
कथीर	४६७	गगेटी	३५६	जुवार	४३४
कारियातु	३६९	गजपीपर	३२७	जेठीमव	४३३
कलई	४६७	गर्जन	४२५	टाकों	४८४
कस्तूरी	४१९	गळी	३०७	डीकामारी	६००
कागदोळिबू	३०१	गुंदी	५४८	डुगली	३१५
कालीपाट	३१८	गुंदो	५४६	तरधारोथोर	५८०
कालीउपलसरी	५६१	गोपीचन्दन	५७६	तीरकांडा	५१९
कालीमुशली	४१२	गोरखमुडी	४०८	तोंडली	४९१
कालीराई	४४६	घडला	३४७	दारुडी	५८४
कालुनग	३०६	घोडावज	४६८	दारुहळदर	५९१
कालोधतुरो	२७९	चणियावोर	३५१	दूधियोवछनाग	४९५
कीडामारी	२८५	चरोली (ळी)	३३०	देवदार (रु)	२७४

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
देवदारु	५५४	पतंग	३१०	वपोरिया	३५२
धंतुरो	२७८	पथरफुल	५३९	वरधारो	५०२
धराख	२७६	पद्मकाष्ठ	३११	वहेकल	४८५
धाणा	२८३	परवाळा	३४६	वाजरो	५५९
वावडो	२८१	पलियो	४४५	वाझकटोलो	३५३
धावणी	२८२	पस्तां	४०६	वापची	४७८
वोळीउपलसरी	५६०	पाडल	३१७	वांव	६०३
वोळीमुशळी	४११	पांडेरवा	३२२	वावची	४७८
धोळीवसु	४७७	पारो	३२०	वावल	४७३
धोळोशेमळो	५२८	पालखनीभाजी	३२३	विजोरा ( रु )	४९७
ध्रामण	२८०	पापाणभेद	३२४	विली	४९२
ध्रो	२७३	पीतपापडो	३१४	विही	३२५
नगोड	३०४	पीपर	३४८	वीली	४९२
नवसार	२८६	पीपरीमूल	३२९	वेडां	४९०
नहानूंगुंदो	५४७	पीरोजो	३४५	वोरडी	३५०
नहानो समेरवो	३४२	पीलीजुई	४३६	वोलसरी	३४९
नागकेसर	२८९	पीलोवालो	४६०	ब्रह्मदंडी	३६०
नागदमनी	२९०	पुखराज	३३९	भटोर	३६५
नागदमनी	४९६	पुत्रजीवक	३३४	भद्रमोथ	४१६
नागरमोथ	४१५	पुन्नाग	३३७	भमरछाल्य	३७४
नागरवेल्य	२९२	पुष्पांजन	३४०	भांग	४८६
नारंगीलिंबु	२९१	पोकरमूल	३३८	भांगरा	३७३
नारियेल	२९४	पोपैयो	४९८	भांगरो	३७२
नारी	३५८	फटकी	५८२	भांग्य	४८६
नालानीभाजी	२९३	फणस	३१२	भारंगी	३६६
नाली	२८७	फालसा	३१३	भिलामा	३६३
निलम	३०६	फोदिनो	३३५	भीडा	३७५
नीलीनगड	३०५	वकान्य	२९९	भेंडो	३७५
नेतर	५०५	वधारणी	५९८	भोकोलुं	४८९
नेवरी	२८८	वछनाग	४९४	भोजपत्र	३७०
नोनियां	४६३	वड	४६९	मकाइ	३७६
पठाणीलोदर	४६२	वदामकडवी	४८३	मखाणा	३९७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
मग	४०९	मोती	४२४	बढवती	४७०
मजीठ	३७९	मोतीनीछीप	५३५	घताकडी	५०३
मड	३७७	मोय	४१४	व ( व ) दाम	४७९
मणशल	३८६	मोरयुधु	३८७	वनहलदर	५९२
मणशील	३८६	मोरशिखा	३८८	वरणो	४७२
मध	३८२	रगतरोहिडो	४३८	वरियाली	४०५
मरखो	४१३	रतबलियो	३२८	वंशलोचन	४७६
मरचो	३९०	रसवती	४४२	वांदो	४७१
मर्यादबेल	३९४	राई	४४५	वालो	३५९
मरमठन	५४३	रानोमेथी	४२२	वावाट्टिग	४८७
मरवो	३९३	रामफल	४४७	वांश (स)	४७४
मरि ( री )	३८९	रालनुझाड	५५५	वासनबेल	३१९
मसुर	३९६	रासना	४४८	विद्यावाह्ली	३६१
महुडो	३८४	रिशामणी	४५५	बेलतरु	४९९
माड	३९८	रुद्राक्ष	४५०	शख	५१०
माण्यक	३९९	रुपुं	४३९	शखजीरु	५११
माथवीलता	४००	रेवची	३३१	शंखावली	५१२
मांयां	३७८	रोश (स)	४५२	शण	५१४
मालती	४०२	रोहण्य	४५१	शणपुष्पी	५१५
मिठोलिवडो	३००	रोहिडो	४५३	शतावरी	५१७
मीठा पटोल	३०९	लकुच	४५४	शरघवां	५४१
मीढाळ	३८१	लताकस्तूरी	४२०	शरपुरा	५२०
मीण	३८३	लर्वाग	४५६	शरशडो	५२९
मुचकुन्द	४०७	लसण	४५८	शाकर	५२१
मूवां	४१७	लसणियो	५०७	शाग	५२३
मूला	४१८	लाख	४५९	शामो	५४२
भेडाशिंग	४२३	लिडीपीपर	३२६	शिगोडा	५३८
भथी	४२१	लिवडो	२९८	शियाली	३२१
भदी	४३७	लुणी	४६३	शिलाजित	५३१
भोगरी	३९५	लोढानु किट्ट	४६६	शिवलिगी	५३२
भोचरस	५२७	लोढुं	४६५	शीशम	५३३
भोटीजाल्य	३३३	लोदर	४६१	शीसु	५६६

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
सुवादाणा	५१६	साथेर	५८१	सोपारी	३४१
शेमळो	५२६	सालेडा	५२२	सोमवल्ली	५७५
शेवाल	५४०	सांवा	५४२	हडताल	५८८
संचल (ळ)	५७७	साहोडा	५२४	हरडे	५९४
सण	५१४	सिदूर	५६३	हळदर	५८९
संधेशरो	५६२	सिदूरी	५६४	हळदरवो	५९३
सप्तपर्ण	५५०	सिधालूण	५७४	हंसराज	५९६
समदरफल	५५२	सिकेकाई	५४५	हस्तीशुंडी	५९७
समुद्रफीण	५५३	सीताफल	५६५	हाथलोयोर	५७९
समेरवो	५२५	सुगंधरोस	३७१	हिग	५९८
सरलदेवदार	५५४	सुंठ ( सुंठ )	५३६	हिगळो	६०१
सरसव	५५८	सुरण	५३७	हिरा	६०४
सहदेवी	३५७	सुरोखार	५६९	हीराबोळ	५०८
साकर	५२१	सुर्यमुखी फुल	५७२	हिरो	६०४
साग	५२३	सेव	५७३	होश	५९५
साजीखार	५८३	सोना	५७०		
साटोडी	३३६	सोनामाखी	५७१		



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

मरहटीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अळसुदा	४४३	कालेद्राक्ष	२७६	घोल	४६३
आंवेहळद	५९०	कालेनारळ	२९५	चाफवत	४८४
आमट	५०१	किरमाणीओवा	४२८	चांदवेल	३५८
आल	३८०	किराईत	३६९	चारपृक्षबीज	३३०
उडीद	४०३	कुम्भा	२७७	जलापपळी	३२८
उडी	३३७	क्षुद्रफणस	४५४	जलमोहाचा वृक्ष	३८५
उन्हाली	५२०	खडवेल	४३८	जलवंतस	५०६
ऊद	४६४	खरबूज	५४९	जव	४२९
एडलिबू	३०२	खुरासानीओवा	४२७	जवखार	४३०
ओवा	४२६	खुलगुला	५१०	जस्त	४३१
फचोरा	५१३	गजपिंपळी	३२७	जोधले	४३४
फडवीनाई	२९६	गवाणी	२८५	ज्येष्टीमध	४३३
फडुनिव	२९८	गर्जन	४२५	डिकेमाली	६००
फडूपडवल	३०८	गहुला	३४७	ताग	५१४
कथील	४६७	गहूला	३४७	तानीचा वेल	३१९
कपूरमधुरा	५००	गामटी	३५६	तावडालोध्र	४६२
कलखापरी	४३२	गांजा	४८६	तिधारीनिवडुग	५८०
कस्तुरि	४१९	गुलघोटी	४८५	तिरकाडे	५१९
कांटेसांवर	५२६	गुलचेरी	४४०	तोडली	४९१
कादा	३१५	गुलतुरी	५६२	थोरपीलु	३३३
काळाचोत्रा	२७९	गळ (ळा)	३८१	थोरशेरणी	५९५
काळीकावळी	५६१	गोडमहालग	४९८	दगडफूल	५३९
काळीतिरिी	४४६	गोधणी	५४८	दारुहळद	५९१
काळीनिर्गुडी	३०५	गोपीचन्दन	५७६	दिडा	५४३
काळीमुसली	४१२	घेटुली	३३६	दुपारी	३५०

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
दूर्वा	२७३	पळश ( स )	३१६	पोवळ	३४६
देवकैली	५५७	पहाडमूल	३१८	प्रवाल	३४६
देवडांगरी	२७५	पांगारा	३२२	फटकी	५८२
देवदार	२७४	पाडल	३१७	फणस	३१२
देवनल	२८७	पांढरा धोतरा	२७८	फणीनिवडुंग	५७९
धणे	२८३	पांढरावाळा	३५९	फालसा	३१३
धामण	२८०	पांढरासांवर	५२८	वकाणानिव	२९९
घायटी	२८२	पांढरीकावळी	५६०	वकुली	३४९
धावडा	२८१	पांढरीमुशली	४११	बचनाग	४९४
नवसागर	२८६	पांढरीवसु	४७७	वडीशोप	४०५
नागकेशर	२८९	पारा	३२०	बदाम	४७९
नागदडन	४९६	पालक ( ख )	३२३	बरसवोडी	४०८
नागदवण	२९०	पाषाणभेद	३२४	बाजरी	५५९
नागवेल	२९२	पिठवण	३४३	बांझकटोली	३५३
नागरमाथा	४१५	पित्तपापडा	३१४	वादांगुळ	४७१
नाडीशाक	२९३	पितळेचें कीट	३४०	बावची	४७८
नारळ	२९४	पिपरीवृक्ष	३४८	बाभूल	४७३
मारळी	२९४	पिपळमूल	३२९	वालतशोप	५१६
नारिंग	२९१	पिपळी	३२६	बांभ	६०३
निंबू	३०१	पिवलाटेंदू	५५४	बांबू	४७४
निर्गंडी	३०४	पिवलीजुई	४३६	बेलफल	४९२
निवडुंग	५७८	पिसोळा	५८४	बेहेडा	४९०
नीलमणि	३०६	पिस्ते	४०६	बोर	३५०
नेवाळी	२८८	पीतदुग्धसेहुंडभेद	५८१	ब्रह्मदंडी	३६०
न्हीव	३६४	पीतवाळा	४६०	ब्राह्मी	३६१
पट्टीलोध्र	४६२	पुत्रजीव	३३४	ब्राह्मी	३६२
पडवल	३०९	पुदीना	३३५	भटीर	३६५
पतंग	३१०	पुष्पराग	३३९	भद्रमोथ	४१६
पञ्जकाष्ठ	३११	पेटारी	३५५	भवरसाली	३७४
पपनस	३०३	पेरू	३४४	भांग	४८६
परळ	६०२	पेरोज	३४५	भारग	३६६
परेळ	६०२	पोखरमूल	३३८	भुयकोहळा	४८९

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
भूयवार	३५१	मेदी	४३७	लवंग	४५६
भूर्जपत्र	३७०	मेखा	४१३	लसूण	४५८
भेर्लीमांड	३९८	मोचरस	५२७	लहानभोकर	५४७
मका	३७६	मोती	४२४	लाख	४५९
मक्का	३७६	मोत्यांचीशिंप	५३५	लाजाळू	४५५
मत्वाणे	३९७	मोथा	४१४	लाललाजाळूभेद	५९६
मंजिष्ठ	३७९	मोरचूक	३८७	लिंबू	३०१
मटक्या	३७७	मोरवेल	४१७	लोखंड	४६५
मठ	३७७	मोरशेडा	३८८	लोध्रवृक्ष	४६१
मध	३८२	मोहरी	४४५	लोहकोट	४६६
मधुमाधवी	४००	मोहाचावृक्ष	३८४	घट (ड)	४६९
मनशील	३८६	रक्त्रोडा	४५३	घटमोगरा	३९५
मरवा	३९३	रसांजन	४४२	घटवा	४८४
मर्यादवेल	३९४	रानउडीद	४०४	घडवती	४७०
मसूरा	३९६	रानवदाम	४८३	वरधारा	५०२
महावला	३५७	रानभेडी	३७५	वंशलोचन	४७६
महालुग	४९७	रानमुग	४१०	वांगी	५०३
माका	३७२	रानमेथी	४२२	वांगे	५०३
माणिक	३९९	रानहळद	५९२	वायवरणा	४७२
मानकंद	४०१	रामफळ	४४७	वावाडिंग	४८७
मायफल	३७८	राम्रा	४४८	विबवा	३६३
मालती	४०२	रुदती	४४९	वृश्चिकाली	५०४
मिरची	३९०	रुद्राक्ष	४५०	वेखंड	४६८
मिर	३८९	रुपे	४३९	वेत	५०५
मुगुसकांदा	५५६	रुमीमस्तिकी	२८४	वेलतूर	४९९
मुचकुन्दवृक्ष	४०७	रेवाचिनी	३३१	वेळू	४७४
मुद्रिका	३५५	रोहिणी	४५१	वैडूर्यरत्न	५०७
मुळा	४१८	रोहिसगवत	४५२	वोळ	५०८
मुसकदाणा	४२०	लघुचिकणा	३५४	शंख	५१०
भेडाशिगी	४२३	लघुनीली	३०७	शख्जरीरे	५११
मेण	३८३	लघुपीळू	३३२	शखोली	५१२
मेथी	४२१	लघुशेरणी	५९५	शतावरी	५१७



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
शमी	५१८	सब्जा	३९३	सुवर्णमाक्षिक	५७१
शिकंकाई	५४५	समुद्रफल	५५२	सुरण	५३७
शिगाडे	५३८	समुद्रफेण	५५३	सूर्यफुलझाड	५७२
शिरप	५५८	समुद्रशोख	५५१	सेवफल	५७३
शिरस	५२९	सरलदेवदार	५५४	सानामुखी	५८५
शिलाजित	५३१	सर्जवृक्ष	५५५	सोने	५७६
शिवालिगी	५३२	साकर	५२१	सोरा	५६९
शिवली	३२१	साखर	५२१	सोमवल्ली	५७५
शिसवा	५३३	साग	५२३	हरताल (ळ)	५८८
शिसे	५६६	सातविण	५५०	हरफररेवडी	४५७
शेंदरो	५६४	साल	५०९	हरमल	५८७
शेंदूर	५६३	सालंमिश्री	५६७	हळद	५८९
शोधेलोण	५७४	सालवण	५२५	हळदिवावृक्ष	५९३
शेलवट	५४६	सालई	५२२	हास्तिशुंडी	५९७
शेवगा	५४१	सावे	५४२	हिग	५९८
शेवाले	५४०	सावे	५४२	हिंगूळ	६०१
श्वेतजुई	४३५	सागसाहोडा	५२४	हिरवेमूग	४०९
सकोरणी	४५५	सीताफल	५६५	हिरा	६०४
सचललोण	५७७	सुगंवरौहिस	३७१	हिरडा	५९४
सजीखार	५८३	सुंठ	५३६		
सफरजन	३२५	सुपारी	३४१		



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धक-  
वङ्गालीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
आचेफुलेरगाछ	३८०	गंधतुलसी	३९३	जलमौल	३८५
आतागाछ	५६५	गधतृण	३७१	जलवेत	५०६
आमआदा	५९०	गधभादुल्या	३५८	जियापुता	३३४
आयापाना	४९३	गंधमालती	४०२	जुइ	४३५
आशुधान्य	५०९	गधरस	५०८	जुयारा	४३४
इसवंद	५८७	गधवाला	३५९	झनझनिया	५१५
ओल	५३७	गंधशडी	५१३	झिनुक	५३५
करुनालेवरगाछ	३०२	गर्जन	४२५	टावालेवुरगाछ	४९७
कागजीलवु	३०१	गाला	४५९	डहुयागाछ	४५४
काँचडादाम	३२८	गुगली	५५१	तालमूली ४११	४१२
काँटागाछ	५४५	गोयाललता	५९६	तित्काड्डी	३५३
काँटोल	३१२	गोरक्षचाकुले	३५६	पुते	३८७
कालधतूरा	२७९	गोलमिरच	३८९	तैतुल	५०१
किसमिस	२७६	घटापारुल	४१३	तेलाकुचा	४९१
कुन्दरुकी	४९१	घलघसा	२७७	थुलकुडि	३६२
कुलगाछ	३५०	घोडानिम	२९९	दस्ता	४३१
कृष्णचूड	५६२	चक्रपाठा	३१८	दारुहरिद्रा	५९१
कृष्णराइ	४४६	चय	५००	दूदिया	५८६
केशुरे	३७३	चाकुले	३४३	दूवा	२७३
क्षेतपापडा	३१४	चालता	५४६	देवदारु	२७४
खमूजा	५४९	चालतागाछ	३६४	धनियाँ	२८३
खापर	४३२	चिनि	५२१	वाइफुल	२८२
खुदेनुनी	४६३	चिरेता	३६९	घाउयागाछ	२८१
खोरासानीयमानी	४२७	छातिमगाछ	५५०	धामनागाछ	२८०
गजपिपुल	३२७	छोटोवहुयार	५४७	नल	२८७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
नागदना	२९०	पियाल	३३०	ब्रह्मीशाक	३६१
नागदौन	४९६	पीतघोषा	२७५	भांडीरफुलेरगाछ	३६५
नागरमुता	४१५	पीतवेडेला	३५७	भादलामुता	४१६
नागेश्वर	२८९	पीतवाकुलि	३५५	भीमराज	३७३
नारांगिलेबु	२९१	पीलुगाछ	३३२	भुङ्केश	३६८
नारिकेल	२९४	पुदिना	३३५	भुङ्कुमडा	४८९
नालिताशाक	२९३	पुनांगाछ	३३७	भूजिपत्र	३७०
निम	२९८	पुन्या	३३६	भेडा	३७५
निशादल	२८६	पुष्करमूल	३३८	भेला	३६३
निशिदागाछ	३०४	पुष्पांजन	३४०	मउ	३८२
नीलगाछ	३०७	पेयाज	३१५	मउलगाछ	३८४
नीलनिशिदा	३०५	पेरोजा	३४५	मजिष्ठा	३७९
नीलवर्णमनि	३०६	पोस्तागाछ	४०६	मडूर	४६६
नौयालफल	४५७	पोगराज	३३९	मधु	३८२
पटियालोध	४६२	प्रिययु	३४७	मनछाल	३८६
पटोल	३०८	फटाकिरि	५८२	मनसागाछ	५७८
पन्नकाष्ठ	३११	फनिमनसा	५७९	मनसाविशेष	५८१
पला	३४६	फलसा	३१३	मम्	३८३
पलाशगाछ	३१६	वक्काम्काष्ठ	३१०	मयनाफल	३८१
पाकुड	३४८	वकुलगाछ	३४९	मल्लिकाफुलेर-	
पातरकुचा	४७०	वडगाछ	४६९	गाछ	३९५
पाथरचुनी	३२४	वडपीलु	३३३	मसूरि	३९६
पानगाछ	२९२	वाडिलसोनुली	५८१	मारुना	३९७
पानशिडली	५५६	वहेडा	४९०	मांजूफल	३७५
पानिफल	५३८	वांदडा	४७१	माधवीलता	४००
पारा	३२०	वांधालिफुलेरगाछ	३५२	मानकचु	४०१
पारुलगाछ	३१७	वासतीफुल	२८८	मानिक	३९९
पालतेमानदार	३२१	विछुटी	५०४	माषकलाइ	४०३
पालंशाक	३२३	विहिदाना	३२५	मापानी	४०४
पालिदामादार	३२२	बेडेला	३५४	मुक्ता	४२४
पिपुल	३२६	बेल	४९२	मुग	४०९
पिपुलमूल	३२९	ब्रह्मदंडी	३६०	मुगा	३४६

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
मुगानी	४१०	रुपा	४३९	वासनागाछ	४७७
मुचकुन्द	४०७	रूमिमस्तकी	२८४	विडंग	४८७
मुंडीरी	४०८	रेडचिनि	३३१	विद्धडक	५०२
मुता	४१४	रोठा	४५३	विष	४९४
मुर्वा	४१७	रोहन	४५१	वीरतरु	४९९
मूला	४१८	लकामरिच	३९०	वेगुनगाछ	५०३
मृगनाभि	४१९	लताकस्तुरि	४२०	वेत	५०५
मेइदी	४३७	लवग	४५६	वेतांशाक	४८४
मेढोकुल	३५१	लशुन	४५८	वेत्र	५०५
मेढाशिमे	४२३	लसन	४५८	वैडूर्य	५०७
मेति	४२१	लाजुकलता	४५५	वोचफल	४८५
मोचरस	५२७	लामजकतृण	४६०	शंख	५१०
मोम	३८३	लालमोरगफुल	३८८	शंखाहुलुइ	५१२
मौरीगाछ	४०५	लाहा	४५९	शतमूली	५१७
यउयान	४२६	लोधगाछ	४६१	शनगाछ	५१४
यव	४२९	लोना	४४७	शरगाछ	५१९
यवक्षार	४३०	लोहा	४६५	शलई	५२२
यष्टिमधु	४३३	वैइचिगाछ	४८५	शाइगाछ	५१८
युइ	४३५	वच	४६८	शाक्	५१०
योयान	४२६	वननील	५२०	शालपानी (न)	५२५
रक्तपित्त	४३८	वनमुग	३७७	शिगाडा	५३८
रजनीगन्धा	४४०	वनमेति	४२२	शिमूलगाछ	५२६
रयना	४५३	वनयमान	४२८	शिरापगाछ	५२९
रसांजन	४४२	वनहरिद्रा	५९२	शिलाजित्	५३१
राइसरिपा	४४५	वरवटी	४४३	शिलिन्दा	३१९
रागा	४६७	वरुणगाछ	४७२	शिर्वालिगिनी	५३२
राइ	४६७	वंशलोचन	४७६	शिगुगाछ	५३३
राजावर्त	४४४	वाताविलेवु	४९८	शुक्कसारिवा	५६०
रामकपूर	४५२	वादाम	४७९	शुठि	५३६
राखा	४४८	वामनहाटी	३६६	शुल्फा	५१६
रुदन्ती	४४९	वाव्लागाछ	४७३	शेउडागाछ	५२४
रुद्राक्षगाछ	४५०	वांश (स)	४७४	शेगुनगाछ	५२३

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
शैहाला	५४०	सिद्धि	४८६	हरिद्रा	५८९
शैलज	५३९	सिन्दूर	५६३	हरीतकी	५९४
शोनागाछ	५४३	सिन्दूरपुष्पी	५६४	ह्युपफल	५९५
श्यामाधान	५४२	सीसा	५६६	हाकुच	४७८
श्यामालता	५६१	सुपारि	३४१	हातिशुंडा	५९७
श्वेतधुतूरा	२७८	सेउफल	५७३	हापरमाली	४९३
श्वेतशिमूल	५२८	सैधवलवण	५७४	हिगु	५९८
सचललवण	५७७	सोना	५७०	हिगुल	६०१
सजिना	५४१	सोनाखिरुइ	५८४	हिइ	५९८
समुद्रफल	५५२	सोनामुखी	५८५	हिचशाक	६०३
समुद्रफेन	५५३	सोमराज	४७८	हिजलगाछ	६०२
सरलगाछ	५५४	सोमलता	५७२	हिरे	६०४
सरिपा	५५८	स्वर्णजुइ	४३६	हीरक	६०४
सर्वजया	५५७	स्वर्णमाक्षिक	५७१	हुडहुडिया	५७२
साजिमाटी	५८३	स्वादुपटोल	३०९	हेमसागर	६०५
सालममिछरी	५६७	हरिताल	५८८		



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

## पञ्चावीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अजवाइन	४२६	खरबूजा	५४९	छोटिसण	५१५
अंवियाहलदी	५९०	खरैहटी	३५४	जंगलीमाह	४०४
अमरूद	३४४	खीप	३५८	जंगलीहलदी	५९२
अरयो	४४५	खुरासानी अज-		जड ( जंडी )	५१८
इटसिट	३३६	वाइन	४२७	जतर	४४८
इसवदलाहोरी	५८७	गंढा	३१५	जलपीपल	३२८
कंधी	३५५	गगेरण ( न )	३५६	जलवैत	५०६
कटहल	३१२	गजपीपल	३२७	जसद	४३१
कदूरी	४९१	गाधीघास ४५२	३७१	जाफर	५६४
कट्टू	३८०	गुमा	२७७	जिमीकद	५३७
करियासांड	५६१	गुलदुपहरिया	३५२	जियापोता	३३४
कस्तूरी	४१९	गुलशब्बो	४४०	जिस्तदाफुल्ल	३४०
कहुवा	२८१	गुँदी	५४८	जूही	४३५
काई	५४०	गौरखमुंडी	४०८	जौ	४२९
कालाधतूरा	२७९	घंटापाटली	४१३	जोखार	४३०
कालानमक	५७७	घा	२७३	ज्वार	४३४
कालीभिरच	३८९	चकोतरा	३०३	झाडोवेर	३५१
कालीराई	४४६	चौंदा	४३९	झोजरू	५२०
किंकर	४७३	चाँवल	५०९	डांसरा	५०१
कीटमारिका	५९६	चिरायता	३६९	थोम	४५८
कुकोया	४८५	चिरोली	३३०	दडेथोहर	५७८
कुलफा	४६३	चूरनहार	४१७	दाख	२७६
कौडियाली	५१२	छिरिटा	३१९	दारुहलदी	५९१
खंड	५२१	छुईमुई	४५५	दियार	२७४
सपरिला	४३२	छैलछलीरा	५३९	दूव	२७३

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
धतूरा	२७८	पालक	३२३	विजौरानिवू	४९७
धनियां	२८३	पाषाणभेद	३२४	विलैयाकन्द	४८९
धामन	२८०	पिठौनी	३४३	वीजाबोल	५०८
धौ	२८१	पित्तपापडा	३१४	वूर्डकल्लन	५००
ध्रक	२९९	पिप्पलामूल	३२९	वेर	३५०
नरकचूर	५१३	पिलखन	३४८	वेल	४९२
नरसल	२८७	पिस्ता	४०६	वैगन	५०३
नसादर	२८६	पीपल	३२६	वैत	५०५
नागकेसर	२८९	पीलु	३३२	ब्रह्मदंडी	३०६
नागदौन	२९०	पुखराज	३३९	ब्रह्मी	३६१
नागफनी	५७९	पुदीना	३३५	भंगरा	३७२
नागरमोथा	४१५	पोहकरमूल	३३८	भटोर	३६५
नागरवेल	२९२	फालसा	३१३	भाडंगी	३६६
नारंगी	२९१	फिटकिरी	५८२	भांग	४८६
नारियल	२९४	फिरोजा	३४५	भिधरा	५०२
निबू	३०१	फुल्लवाययुदे	२८२	भिलावे	३६३
निम	२९८	फूलमखाना	३९७	भोजपत्र	३७०
नीम	२९८	वच	४६८	मकई	३७६
नील	३०७	वडहल	४५४	मध	३२६
नीलम	३०६	वडीपीलु	३३३	मँजीठ	३७९
नीलायोथा	३८७	वधुवा	४८४	मधु	३८२
नेजे	२९७	वरगद	४६९	मनाशिल	३८६
नेत्रवाला	३५९	वंसलोचन	४७६	मरुआ	३९३
पदुशाक	२९३	वीहदाना	३२५	मसूर	३९६
पटोली	३०९	वहेडा	४९०	महुआ	३८४
पठानीलोद	४६२	वाजरी	५५९	मांजूफल	३७८
पञ्चाख	३११	वादाम	४७९	माधवी	४००
परवल	३०८	वादामकडवे	४८३	मालती	४०२
पलाश	३१६	वावची	४७८	मांह	४०३
पाडा	३१८	वांझखाखसा	३५२	मिट्टीकातेल	३४२
पाढल	३१७	वांस	४७४	मिट्टानिवू	४९८
पारा	३२०	विडुटि	५०४	मोडकी	३६२

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
सुंगवन	४१०	लहसुनियां	५०७	समुद्रझाग	५५३
सुगी	४०९	लाख	४५९	सर	५१९
सुलहटी	४३३	लाजवर्द	४४४	सरना	५८५
मुसकदाना	४२०	लाल	३९९	सरहटी	५५६
सूंगा	३४६	लालमरच	३९०	सरिवन	५२५
सूली	४१८	लिसूडा	५४६	सरो	५५८
मेढासिगी	४२३	लोधर	४६१	सर्जराल	५५५
मेथी	४२१	लोहा	४६५	सलई	५२२
मेदी	४३७	लोहैदामैल	४६६	सहदेई	३५७
मैनफल	३८१	लौंग	४५६	सहोड़ा	५२४
मोचरस	५२७	वकम	३१०	सागोन	५२३
मोठ	३७७	वटपत्री	४७०	सालम	५६७
मोतिया	३९५	वरना	४७२	सिगियाविष	४९४
मोती	४२४	वांदा	४७१	सिघाड़ा	५३८
मोथा	४१४	वाविडंग	४८७	सिंधूरा	५६३
मोम	३८३	शख	५१०	सित्था	३८३
मोरशिखा	३८८	शरीफा	५६५	सियाहमूशली	४१२
मौलसरी	३४९	शहत	३८२	सिरका	५३४
रतनजोत	४४१	शिगरफ	६०१	सिरस	५२९
रवांह	४४३	शिलाजीत	५३१	सीप	५३५
रस	४४२	शीशा	५६६	सीसम	५३३
रसौत	४४२	शोरा	५६९	सुंड	५३६
रहसन	४४८	सञ्जी	५८३	सुपारी	३४१
राई	४४५	सणी	५१४	सफेदमुशली	४११
रांगा	४६७	सताउर	५१७	सुवांक	५४२
राड़ा	३८१	सताना	५५०	सेमर	५२६
रामफल	४४७	सत्यानासी	५८४	सेलखडी	५११
रुदराळ	४५०	सनामकी	५८५	सेव	५७३
रुहेडा	४५३	सफेदसिम्बल	५२८	सैधानमक	५७४
रेओदचीनी	३३१	सम्हालू	३०५	सोत्रा	५७०
रोहिणी	४५१	सम्हालू	३०४	सोत्रेमखी	५७१
लटकण	५६४	समाकदाना	५०१	सोफ	४०५



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
सोमलता	५७५	हकीक	५५७	हलदी	५८९
सोयेकेबीज	५१६	हजारदाना	५८६	हाऊवर	५९५
सोरटामट्टी	५७६	हड	५९४	हिगे	५९८
सोहजना	५४१	हड़ताल	५८८	हीग	५९८
सौनैया	२७५	हरड़	५९४	हीरा	६०४
स्वर्णजुही	४३६	हरफारेवड़ी	४५७		



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

## तैलङ्गीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अडविपसुयु	५९२	कोम्मुपोटल	३०९	चेतिपोट्टला	३०८
अडिकमामिडि	३३६	कोलपोत्र	३४३	चेदिरमु	५६३
अंदुगु	५२२	खुरासानिवामसु	४२७	चेन्ननकरा	५४६
अलसंदुलु	४४३	गजपिप्पलि	३२७	जनुमु	५१५
अवलो	४४६	गटगलिजेरु	३७३	जम्मि	५१८
आरेपुवुवु	२८२	गटुभाडि	३६६	जनपटलु	३७६
आवालु	४४५	गट्टलाकचोरसु	५१३	जिजिलिकेचट्टु	३५६
आवालु	५५८	गाडिदेकडुपाकु	२८५	जिविलिकेचट्टु	३५६
इंगलीकमु	६०१	गुडुगुगडि	३७१	जीडिगिजा	३६३
इंगुव	५९८	गुण्टगलगर	३७२	जुट्टुपाकु	४१७
इनसु	४६५	गुरिगेजाचेट्टु	५५७	जुव्वि	३४८
इप्प	३८४	गौगुरु	५१५	जेसुडु	५७८
इरुवुडु	५३३	गोट्टेचट्टु	३५०	जोनलु	४३४
ईश्वरी	३५३	गोतेमगोरु	३५८	टेक	५२३
उलिमिरि	४७२	गोय्या	३४४	ट्टेकाइचट्टु	२९४
उल्लिगडु	३१५	चक्रवर्तीकूर	४८४	तमलपाकु	२९२
करकाय्	५९४	चागा	४१७	ताडिकाय	४९०
कारिवेयाकु	३००	चामलु	५४२	तिप्परेल्लु	५१९
कालिगुट्टु	३१७	चिक्काणिके	५८४	तुगगड्डा	४१६
कस्तूरि	४१९	चिट्टिमिट्टि	४२३	तुम्मचेट्टु	४७३
कस्तूरिपसुपु	५९०	चिट्टुसु	४६६	तैने	३८२
कारुमिनसु	४०४	चिट्टीडु	३१३	तैलुमुन्ना	५०४
किकस	२८७	चिनकारियुवा	६००	तैलुनेलुगुम्मडु	४८९
किच्चलिपण्डु	२९१	चिरवुदी	३१८	तैलुवूरुगु	५२८
कुरुवेरु	३५९	चीनगड्डा	३३१	तैलुलोडुगु	४६२

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
तेल्लवाविलि	३०४	पट्टिकारमु	५८२	वेदुरु	४७४
तेल्लसत्तु	४३१	पन्नकमु	३११	वोडतरुमु	४०८
तेल्लउम्मेत्त	२७८	पनसचट्टु	३१२	वोम्मजेमुडु	५७९
दनियालु	२८३	पर्पाटकमु	३१४	वोलमु	५०८
दानुरडंगि	२७५	पसुपु	५८९	ब्रह्मदंडि	३६०
दिरसेनमु	५२९	पारदमु	३२०	भंगि	४८६
दुन्दिलमु	५४३	पालुत्तमु	४३२	भुजपत्रमु	३७०
दुम्पगडु	५३८	पापाणभेदि	३२४	मंकेन	३५२
देवदारि	२७४	पित्तपीचर	५१७	भंगचट्टु	३८१
दोड	४९१	पित्तमुत्तवपुल		मंजिष्टि	३७९
दोडा	४९१	गमु	३५४	मंडूकब्रह्मकूराकु	३६२
द्राक्षा	२७६	पिप्पालिवेरु	३२९	मणगुदामर	४५५
ध्वामकमु	४५२	पिप्पल्लु	३२६	मणिशिल	३८६
नन्दिवट्ट	४३५	पिल्लपेसर	४१०	मयूरशिखि	३८८
नल्लअट्टुपु	५७७	पुत्रजीवमु	३३४	मरवमु	३९३
नल्लउम्मेत्त	२७९	पुदीना	३३५	मरि	४६९
नल्लगरिके	२७३	पुत्रे	३३७	मल्लेपुवु	३९५
नल्लवाविलि	३०५	पुल्लनील्लु	५३४	माक्षिकमु	५७१
नवक्षारमु	२८६	पुष्करमूलमु	३३८	माचकाया	३७८
नागकैसरालु	२८९	पुष्पांजनमु	३४०	मानुपसुपु	५९१
नागमुस्तेलु	४१५	पेहमानु	२९९	मामेन	५६०
नारदन्वा	४९७	पेहमुत्तवपुलगमु	३५५	मारिडु	४९२
नारिजचेट्टु	२८१	पेहमुल्लगि	४१८	मिडुद	५३४
निम्बपण्डु	३०१	पोक	३४१	मिनुमल्लु	४०३
नीलिचेट्टु	३०७	पोगडु (डा)	३४९	मिरपकाया	३९०
नेलताटिगड्डा	४११	प्रब्वहव्वे	५०६	मिरियालु	३८९
नेलपिप्पल्लु	३२८	प्रेकणमु	३४७	मुत्पमु	४२४
नेलसैम्पेग	४४०	बंगारमु	५७०	मुनग	५४१
नेलावेमु	३६९	वादासु	४७९	मुनगा	५४१
पगडमु	३४६	वावंचिवित्तुल्लु	४७८	मुय्याकुपोत्ता	५२५
पच्चपेसलु	४०९	बूरगुवंक	५२७	मुल्लुमोट्टुचेट्टु	४५३
पंचदार	५२१	वेडकाया	३७५	मुल्लुवम्पलि	५२०

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
मुलुबेलाम	४८५	लेका	४५९	सन्नरास्त्रा	४४८
मुल्लबूरगा	५२६	लोडुगु	४६१	समुद्रपानुरुगु	५५३
मुस्तेरु	४१४	वंगमु	४६७	समुद्रपुटेकाय	२९५
मुडधारजेमुड्ड	५८०	वदनिक	४७१	सम्बरेनु	५८१
मैतुलु	४२१	वरगोगु	३३२	सरलदेवदारु	५५४
मैनमु	३८३	वशलोचनमु	४७६	सहदेवि	३५७
मैलतुत्तमु	३८७	वस ( स् )	४६८	साम्ब्राणि	४६४
मोकमु	४१३	वसनाभि	४९४	सारपप्पु	३३०
मोदुगु	३१६	वसनाभि	४९५	सिमाजमूडु	६०५
मोलाम्पण्डु	५४९	वायविलगं	४८७	सीसमु	५६६
यरीचिकतली	४३८	वारिजमु	३२२	सूर्णगड्ड	५३७
यवलु	४२९	विरजाजि	२८८	सूराकारमु	५६९
यवक्षारमु	४३०	वेडि	४३९	सेपमानु	३१०
यष्टिमधुकमु	४३३	वेमु	२९८	सैधवलवणमु	५७४
यिप्प	३८४	वेल्लुल्लि	४५८	सोटि	५३६
येडाकुलपोत्र	५५०	शंखपुप्पि	५१२	सोपु	४०५
येनुगतुम्मि	२७७	शखमु	५१०	सौराष्ट्रिकमु	५७६
रसांजनमु	४४२	शालमु	५५५	हब्बे	५०५
रातिपुव्वु	५३९	शिलाजतु	५३१	हरिदलमु	५८८
लक्क	४५९	शीकाया	५४५	हंसपादि	५९६
लक्ष्मीनारायनचेड्ड	४९६	सजिकारमु	५८३		
लवंगमु	४५६	सदाप	५१६		



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके—  
द्राविडीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अतिमधुरम्	४३३	कल्याणमुरगै	३२२	जणपं	५१५
अरक्	४५९	कलालेमरं	३४८	जातिलिंगं	६०१
अरिदळं	५८८	कल्लिमरं	५७८	डिकामल्लि	६००
आडतीडापालै	२८५	कशिप्पुपडलं	३०८	तगं	५७०
आरंजिप्पळं	२९१	कस्तूरि	४१९	तलीरविट्टान्कि-	
आलं	४६९	कस्तूरिमंजळ्	५९०	डंग्	५१७
इलम्बु	४६५	काडवाडई	५२९	तानिक्काय्	४९०
इलुप्पं	३८४	काडिनीर	५३४	तिप्पली	३२६
उडंदु	४०३	काडुळंद	४०४	तिप्पलिमूलं	३२९
कंजा	४८६	कारामणि	४४३	तुत्तं	४३१
कडयो	४४६	कार्पोहअरिशि	४७८	तुत्तियलै	३५५
कडलनोरे	५५३	किट्टम्	४६६	तेगाइ	२९४
कडारानार्तकाय्	४९७	किराम्ब	४५६	तेन्	३८२
कडुक्काय्	५९४	कुन्दमनीशडि	५५७	तेलकोडि	५०४
कडुहु	५५८	कुरुवेर	३५९	तोट्टावाडि	४५५
कइह	४४५	कुरुशानिवोमं	४२७	द्राक्षी, क्षे	२७६
कम्पियुप्पु	५६९	कोजिशडि	३५२	नारिविलि	५४६
करंदै	४०८	कोत्तमलि	२८३	नवक्षारं	२८६
करप्पुनोच्चि	३०५	कोम्बुपुडला	३०९	नागकेसरं	२८९
करप्पूमत्तं	२७९	कोय्या	३४४	नाणल्	५१९
करशारकान्नि	३७२	कोरक्कडंगं	४१४	निलप्पनइकिलंग्	४११
करियपोळं	५०८	कोरै	४१६	नीरवंजि	५०६
करिवेपिलै	३००	कोवैयलै	४९१	नीली	३०७
करुनाहं	५६६	गंडुपरगि	३६६	नेलावेम्बु	३६९
कल्पाशि	५३९	चक्रवर्तीकीरै	४८४	पञ्चपयर	४०९

शब्द	सं०	शब्द	स०	शब्द	सं०
पञ्चवैअरुहंपिल्ल	२७३	मुकोणकालि	५८०	वंशलोचनं	४७६
पटिकारं	५८२	मुत्तु	४२४	वादुमै	४७९
पर्याष्टकं	३१४	मुरंगै	५४१	वायविलंगं	४८७
पवळं	३४६	मुळाकाय्	३९०	विल्व	४९२
पाक	३४१	मुळळांगि	४१८	विपमूगिल्ल	४९६
पादरसं	३२०	मूळरुट्टै	३३६	वेगायम्	३१५
पाल्लुत्त	४३२	मूगिल	४७४	वडैकाय्	३७५
पापाणभेदि	३२४	मैलुडु	३८३	वेत्तिलै	२९२
पिरुंगायं	५९८	मैलुत्त	३८७	वेदियं	४२१
पिरुम्मरं	२९९	मोळहा	३८९	वेपम्मरं	२९८
पुत्रजीविविरे	३३४	मोलांपळ	५४९	वेलम्मरं	४७३
पुदीना	३३५	यलदै	३५०	वेलिप्पारिन्ति	४१७
पुत्रे	३३७	यलवपिशिन्	५२७	वेळळ्ळि	४५८
पुष्करमूलं	३३८	यलवंमर	५२६	वेल्लेकुनरिकम्	५५५
पेलाप्पळं	३१२	यवं	४२९	वेल्लेयलवमरं	५२८
पेलाशं	३१६	यवक्षारं	४३०	शकळत्ति	४७१
पोडुदलै	३२८	यानैतिप्पलि	३२७	शख	५१०
ब्रह्मदडि	३६०	येलिमिच्चंपळ	३०१	शतकुप्पै	५१६
भुजपत्रं	३७०	रुमीमस्तकि	२८४	शप्पातकालि	५७९
भेदिक्किळ्ळ	३३१	लवंगं	४५६	शञ्जा	३९३
मंजल	५८९	वंगं	४६७	शम्मरं	३१०
मंजिष्टि	३७९	वंजि	५०५	शर्करै	५२१
मनोशिलइ	३८६	वदत्तिरुप्पि	४२३	शामै	५४२
मरमजल (ळ)	५९१	वसनाभि	४९४	शाम्त्राणि	४६४
मलैकळ्ळी	६०५	वन्निमर	५१८	शिरुनरुविलि	५४७
मल्लिहइप्पू	३९५	वल्लेळम्	४८५	शिलाजित्त	५३१
मळहि	३८३	वल्लारै	३६२	शिशपा	५३३
महळम्मरं	३४९	वल्लि	४३९	शीकाय्	५४५
मासिकं	५७१	वल्लेनोच्चिल	३०४	शुक्	५३६
मासिकाय्	३७८	वशम्बु	४६८	शरुणैकिलंगं	५३७

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
शेनाकोट्टै	३६३	सहदैवि	३५७	सरुतरप्पु	५७७
शोलं	४३४	सारवरुप्पु	३३०	सैधवलवणं	५७४
सञ्जीकारं	५८३	सिन्दूरं	५६३	सोपु	४०५
सत्त	४३१	सीरुपय्यर	४१०		
सन्नदुम्पराष्ट्रं	४४८	सुरलपट्टै	४३८		



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

कर्नाटकीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अगरुगिड़	५३३	कल्लुहुवु	५३९	चङ्केकापि	५४६
अगलुशोठि	३१८	कस्तूरी	४१९	चारपप्पु	३३०
अतिमधुरा	४३३	कस्तूरिअरिसिन	५९०	चिट्टहरळुगिड़	३५४
अरगु	४५९	काडुडु	४०८	चिन्न	५७०
अरळैकाय्	५९४	कामचिहुल्लु	४५२	जाजि	२८८
अरिसिन	५८९	कित्तलेहणु	२९१	जिविलिक	३५६
आडिके	३४१	किरीहेसरु	४१०	जेनुतुप्पा	३८०
आनेव्याल	५२०	कुरुटगे	४२३	जोळा	४३४
आलदमर	४६९	कैपडुल	३०८	डिकामल्लि	६००
आपाडि ( ठि )	५१७	कोत्तमरि	२८३	तवर	४६७
ईरुडि	३१५	फोन्नारि	४१४	तारेकापि	४९०
ईश्वरि	३५३	फोन्नारिभेद	४१५	तेगिनमर	२९४
उडु	४०३	कोम्मै	३३६	तेलुकोडीगिड	५०४
उप्पुशके	३७४	सुगसानिवोम	४२७	तोगडे	४९१
उलिमिरिवसलै	४७२	गजहिप्पालि	३२७	तोगरिमन्नु	५७६
ओणसुंठि	५३६	गंटकचोरा	५१३	त्याग	५२३
काड्डिउप्पु	५६९	गटुभाई	३६६	देवताळ	२७५
काव्विण	४६५	गरगडसप्पु	३७३	देवदारि	२७४
करिउमत्तै	२७९	गरगदसुप्पु	३७२	देवदारु	५५४
करिवेवु	३००	गुडपाल	५६१	देवनल	२८७
करिलक्कि	३०५	गुब्बच्चि	५१२	दोगलि	३१३
करिसासुवे	४४६	गेरुबीजा	३६३	दोडोगिड	४९१
करीगारिके	२७३	गोनुमर	३३२	द्राक्षेहणु	२७६
कर्बूज	५४९	गोब्बलि ( लि )	४७३	नवसागर	२८६
कालिमर	५७८	चक्रवर्तीसोप्पु	४८४	नागकेसर	२८९



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
नागकेसरी	२८९	वसारि	३४८	मुद्दिदमुनिय	४५५
नागदमनी	२९०	वागेमर	५२९	मुडिवाळ	३५९
निम्बेहणु	३०१	वादाम	४७९	मुत्तलु	४५३
नीरवानि	५०६	विदरु	४७४	मुत्तु	४२४
नीरहिप्पालि	३२८	विलपत्रि	४९२	मुत्तुगदगिड	३१६
नीरुवानि	५८१	विल्लिकि	३०४	मुल्लुव्याल	४८०
नीलीगिड	३०७	विळीउम्मत्ति	२७८	मूरुमूलकलि	५८०
नुग्गे	५४१	विळीनेलगुम्मड	४८९	मूरुयलहोत्रे	५२५
नेलताळिगेडे	४११	विळीवरलू	५२८	मूसाम्बर	५०८
नेलावेदु	३६९	विळीवूरगा	५२८	मेणा	३८३
नेलावारिके	५८५	विळीलोध्र	४६२	मेणिशिनकायि	३९०
पगडे	३४९	वेदुदवेवु	२९९	मेल्या	४२१
पगडेमर	३४९	वेदुहा	३१३	मैलवुत्त	३८७
पटिकारः	५८२	वेडेकायि	३७५	मोक्के	४१३
पडवलः	३०९	बेल्लुलि	४५८	म्याण	३८३
पतंग	३१०	वेवु	२९८	यरडुमलु	४५३
पद्मक	३११	वेवुमरा	२९८	यलचीगिड	३५०
पर्पाटक	३१४	वोडितर	४०८	यलवदमर	५२६
पादरस	३२०	भगि	४८६	यलवदहगिनु	५२७
पापासकलि	५७९	भद्रमुस्ता	४१६	यव	४२९
पालुवुत्ता	४३२	भुजपत्र	३७०	यवक्षार	४३०
पापाणभेदि	३२४	मंगारेगिड	३८१	येडुयलेहोत्रे	५५०
पुत्रजीवि	३३४	मांजिष्ट ( )	३७९	रुमीमस्तके	२८४
पुष्करमूल	३३८	मणिशिल	३८६	रेवांचिनि	३३१
पुष्पराग	३३९	मरदयारिसिन	५९१	लवग	४५६
पैरोज	३४५	मरवा	३९३	लाळीकड्डि	५१९
पैपलीचक्का	४३८	मल्लिगे	३९५	लूनाहडकनगिड	६०५
प्रेकरणगिड	३४७	माक्षिक	५७१	लोध्र	४६१
वजे	४६८	मादलदहणु	४९७	लोहाकिट्ट	४६६
वदनिके	४७१	मायफला	३७८	वंजि	५०५
वंदुगे	३५२	मारवळिहुल्लु	३७१	वत्सनाभि	४९४
वन्निमर	५१८	मिणसु	३८९	वंशलोचना	४७६

शब्द	स०	शब्द	स०	शब्द	स०
वायावलिग	४८७	समुद्रनोरे	५५३	हवुवेर	५९५
विल्लेदले	२९२	सहदेवि	३५७	रंसपादि	५९६
वेल्लि	४३९	साम्त्राणि	४६४	हालिवाणदमर	३२२
वेदेलगा	३६२	मासुव	४४५	हालुकोरदिग	४१७
शख	५१०	सासुवे	५५८	हिगु	५९८
शरपुखा	५२०	सन्दूरः	५६३	हिगुल	६०१
शामे	५४२	सन्दूरी	५६४	हिप्पलि	३२६
शिलाजितु	५३१	सिरिवरु	२८१	हिप्पालिमूल	३२९
शागियवलि	५४९	सीसा	५६६	हिप्पेमर	३८६
शांब	३४४	सूरुतउप्पु	५७७	हिरिचिट्टहरकु-	
सोठि	५३६	सूर्णगड्ड	५३७	गिड	३५५
सकरे	५२१	सैधवलवण	५७४	हुळिनीरु	५३४
सज्जरदमर	५५५	सोपु	४०५	हेगुगगटे	५४३
सज्जाखार	५८३	सौरणेगिड	३५८	हेतुम्बे	२७७
सणवुगिड	५१५	हरिदाळ	५८८	हेम्मुळंगि	४१८
सदापे	५१६	हलसुमर	३१०	हेसरु	४०९
सन्नराश्मे	४४८	हवळवु	३४६	होत्रे	३३७



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

# अरबीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

—>[०]←—

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अदस्	३९६	करनफल	४५६	जोजअलकै	३८१
अनव	२७६	कला	५८३	जोजमासले	२७८
अफूस	३७८	कसब	४७४	तम्बोल	२९२
अवकर	५६९	कस्बबोवा	३६९	तवाशीर	४७६
अबुस्सिनोवर	२९७	किन्नव	४८६	तुस्मरहा	४७८
अरअर	५९५	किलि	५८३	तुफ्फाह	५७३
अराक	३३२	कुजबुराह	२८३	तूतिया	४३२
असल	३८२	कुस्त	३३८	तूतियाहिन्दी	३८७
असलक	३०४	खरदल	४४५	तेरालबंज	४२७
असलकअसवद	३०५	खर्दलेअवियज	५५८	दव्क	५४६
असलुस्सुत	४३३	खल	५३४	दारफिलफिल	३२६
अहलोलज	५९४	खसियुस्सारव	५६७	नव्क	३५०
इजखर	४६०	खीरजा	५०५	नव्कसहराई	३५१
इस्फानाख	३२३	जकुमेहिन्दी	५८०	नारंज	२९१
उत्रज	४९७	जजफर	६०१	नारजील	२९४
उलुज	४९७	जंजबीलयाविस	५३६	नारजीलेबहरी	२९५
उम्मुगीलां	३७३	जदवार	५९२	नीलज	३०७
उरुज	५०९	जवीव	२७६	नोशादर	२९६
उरुकुस्सुफर	५८९	जरनीख	५८८	फाशरा	५८६
उशनाह	५३९	जरम्बाद	५१३	फिज्जाह	४३९
ऊदुलहैया	२९०	जहव	५७०	फिरीका	४४३
एलकरुमी	२८४	जाज	५८२	फिलाफिलअस-	
कत्फ	४८४	जावरस	५५९	वद	३८९
कमुसरा	३४४	जीवक	३२०	फिलफिलअहमर	३९०
कम्बूनेमुल्की	४२६	जुरत	४३४	फीरोज	३४५

शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
फुव्वाह	३७९	याकूत	३९९	सविस्ता	५४७
फूफल	३४१	रतेवाह	३३६	सुखतानुलअश-	
वकम	४५१	रावन्द	३३१	जार	५२९
वजरुलहुमका	४६३	रिसासेअवियज	४६७	सूम	४५८
वरस्यावेशा	५९६	रिसासेअसवद	५६६	सौद	४१५
वलैलज	४९०	लीम्	३०१	स्पजरेतुलजिन्	२७४
वसल	३१५	लोज्	४७९	हजरुलएरावी	५११
वाजंजान	५०३	लोजसहराई	४८३	हदीद	४६५
वारजद	५५५	लोलो	४२४	हवक	३८८
वित्तीख	५४९	वज	४६८	हव्वुलवान	२९९
मरकशीशा	५७१	वनुमाश	४०३	हव्वुलफहम	३६३
मरजनजोश	३९३	वीप	४९४	हव्वुसूसिमना	३३०
मरजान्	३४६	शंजरफ	६०१	हसीलुवानुल-	
मशतुलगूल	३५५	शमै	३८३	जावी	४६४
माष	४०९	शरीफा	५६५	हितरूमिया	३७६
मास	६०४	शवित	५१६	हिन्ना	४३७
मिस्क	४१९	शिव	५८२	हिलतीत	५९८
मुर	५०८	शयईर	४२९	हुजुज	४४२
मुरे	५०८	श्यातरज	३१४	हुजुल	४१८
मुश्कदाना	४२०	सना	५८५	हुरमुल	५८७
मूसलीअवियज	४११	सफरजल	३२५	हुलवह	४२१
मूसलीअसवद	४१२	सफरजलेहिन्दी	४९२		



अनुभूतचिकित्सासागरके उत्तरार्द्धके-

# फारसीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।



शब्द	सं०	शब्द	सं०	शब्द	सं०
अगरेतुर्की	४६८	जओ	४२९	नारगील	२९४
अंगुजा	५९८	जरुमैहैयात	६०५	नारगीलदर्याई	२९५
अंगूर	२७६	जंजवीलखुदक	५३६	नारवां	४९२
अजगार	५८३	जर	६७०	नीब	२९८
अमरुद	३४४	जर्दचोवाह	५८९	नीबू	३०१
अरजीज	४६७	जाकसफेद	५८२	नुकराह	४३९
धाहन	४६५	जीनान	४२६	नुकलेखाजा	३३०
इरकुलकापूर	५१३	जिमीकन्द	५३७	नौशादरकानी	२८६
इलमास	६०४	तवाशीर	४७६	पंजनकिश्त	३०४
इसबन्द	५८७	तम्बोल	२९२	पंजनकिश्तसि-	
इस्तिस्तसहराई	३३६	तातूराहसफेद	२७८	याह	३०५
इस्फनाख	३२३	तातूराहसियाह	२७९	परस्यावशां	५९६
ओरस	५९५	तिला	५७०	पिलपिलेगिर्द	३८९
काज	५६५	तुख्मकुरफाह	४६३	पिलपिलसुख	४९०
किशनीज	२८३	तुख्मेवंग	४२७	पीपलदराज	३२६
कुनार	३५०	तुतियाहिन्दी	३८७	पोपल	३४१
कुनारदश्ती	३५१	तुर्ब	४१८	प्याज	३१५
कुश्रा	३३८	दरख्तेजिकरिया	५२९	फल्कताज	४८६
खरपुजह	५४९	दरख्तेमिसवाक	३३२	फीरोजा	३४५
खिरजा	५०५	दरख्तेशानाह	३५५	वकूम	४२१
गदुममका	३७६	दोवालाह	५३९	बलादुर	३६३
गावरस	५५९	नएकवीर	४७४	बलैलाह	४९०
गावरसहिन्दी	४३४	नएनिहावन्दी	३६९	वादंजान	५०३
गोरग्याह	४६०	नानखाह	४२६	वादाम	४७९
चिलगोजा	२९७	नारंग	०९१	वादामदश्ती	४८३

शब्द	स०	शब्द	सं०	शब्द	स०
विचनाग	४९४	मुश्कजमीन	४१५	संगवसरी	४३२
विरंज	५०९	मेखक	४५६	संगेजराहत	५११
वेखेमहक	४३३	मोम	३८३	सना	५८५
वेह	३२५	रसोत	४४२	सपिस्तां	५४६
मरजनगोश	३९३	रुनास	३७९	सर्शफ	४४५
मरजान्	३४६	रेवन्द	३३१	सिचन्दानसुफीद	५५८
मरजूमक	३९६	रोदक	३७९	सिरकाह	५३४
मरवारीद	४२४	लीमूने-शरवती	४९८	सीम	४३९
मवीज	२७६	लोविया	४४३	सीमाव	३२०
मस्तगी	२८४	शखार	५८३	सुरवासियाह	५६६
माजू	३७८	शंगरफ	६०१	सेव	५७३
माप	४०९	शमवलीद	४२१	स्याहसफरं	४७८
मुगीलां	४७३	शहद	३८२	हजारफिशां	५८६
मुशलीसफेद	४११	शाहतराह	३१४	हलैलाह	५९४
मुशलीसियाह	४१२	शीर	४५८	हसनलुब्बा	४६४
मुश्क	४१९	शीरा	५६९		



AUCARCHAND BHAIRODAN SETHIA,  
JAIN LIBRARY,  
BIKANER, RAJPUTANA.



# INDEX OF THE LATIN WORDS OF THE ANUBHUTA CHIKITSA SAGAR

Words	No	Words	No
<b>A</b>		Andropogon Schœnanthus	452
Abelmoschus Esculentus	375	Anogeissus Lotifolia	281
Abelmoschus Moschatus	420	Anona Reticulata	447
Abutilon Indicum	355	Anon Squamosa	763
Acacia Arabica	473	Aleca Catechu	341
Acacia Concinna	545	Argemone Mexicana	584
Acacia Suisa	529	Argentum	439
Acetum	504	Argyria Speciosa	551
Achyranthes Lanata	500	Aristolochia Bracteata	285
Aconitum Ferox	494	Arsenicum Sulphidum	386
Aconitum Napellus	495	Artemisia Indica	290
Acorus Calamus	468	Atemisia Vulgaris	290
Adiantum Lunulatum.	596	Artocarpus Integrifolia	312
Adiantum Venustum	596	Artocarpus Lakoocha	454
Adina Cordifolia	593	Arum Campanulatum	537
Aegle Marmelos	492	Arum Indicum	401
Aerva Lanata	500	Arundo Karika	287
Agaveana Caryophyllata	402	Asclepias Acidia	575
Aglaria Roxburghiana	317	Asclepias Pseudosaria	560
Ailanthus Excelsa	544	Asparagus Racemosus	517
Albizia Lebbek	529	Asphaltum Punjabinum	531
Albizia Odoratissima	530	Aurum	570
Allium Cepa	315	Extractum Berberis	442
Allium Sativum	458	Azadirachta Indica	298
Alocasia Indica	401	<b>B</b>	
Alstonia Scholaris	550	Balsamodendron Myrrha	508
Ammonium Chloride	286	Bambusa Arundinacea	174
Amorphophallus Campanu- latus	537	Bambusa Orientalis	471
Amygdalus Communis. P	479	Bambusa Stricta	475
Andropogon Citratus	371	Barringtonia Acutangula	552
Andropogon Iwarancus	460	Bassia Latifolia	384
Andropogon Langer	460	Bassia longifolia	385
Andropogon Martini	452	Batata Paniculata	189
Andropogon Schœnanthus	371	Berberis Aristata	591



Words	No	Words	No.
Bergera Koenigii	M 300	Capsicum Fastigiatum	392
Beta Maritima	323	Capsicum Frutescens	391
Beta Vulgaris	323	Capsicum Minimum	392
Betula Bhojpattra	370	Carum Copticum	426
Betula Jacquemontii	370	Caryophyllus Aromaticus	456
Bignonia Surveolens	S 317	Caryota Uicens	398
Bignonia Undulata	453	Cassia Angustifolia	585
Bitumen Judaicum.	531	Cassia Lanceolata	585
Bixa Orellana	564	Cedrus Deodara	274
Bhixa Octandra	540	Celosia Cristata	388
Boerhaavia Diffusa	336	Cephalandia Indica	491
Boerhaavia Procumbens	336	Cera Alba	383
Bombax Malabaricum.	526	Cera Plumba	383
Bombax Pentandrum	E. 528	Chavica Betle	P 292
Boswellia Serrata	522	Chavica Roxburghii	P 326
Boswellia Thurifera	522	Chenopodium Album	484
Brassica Campestris		Chenopodium Viride	484
Var 1 Dichotoma.	558	Cicca Disticha	P 457
Brassica Juncea	445	Cissampelos Heinandifolia	318
Brassica Nigra	446	Cissampelos Patera	318
Bryonia Epigœa	C 296	Citrus Acida	301
Bryonia Laciniosa	532	Citrus Aurantum	291
Bryophyllum Calycinum	605	Citrus Aurantum. Var Li-	
Buchanania Lotifolia	330	monum	302
Butea Frondosa	316	Citrus Decumana	303
		Citrus Medica Var 3 Acida	301
C		Citrus Medica Var 4 Li-	
		metta	498
Coctus Indicus	O 579	Citrus Medica Var 2 Li-	
Cissampinia Pulcherrima	762	monum	302
Cissampinia Sappan	310	Citrus Medica Var 1 Medica	
Calamus Fasciculatus	506	propei	497
Calamus Rotang	505	Citrus Nobilis	498
Calamus Roxburghii	505	Clematis Triloba	417
Calophyllum Inophyllum	337	Cleome Pentaphylla	572
Calosinthes Indica	543	Clerodendron Infertunatum	365
Camarium Comune	180	Clerodendron Serratum	366
Canna Indica.	557	Clerodendron Siphonanthus	367
Cannabis Indica	486	Coccinia Indica	491
Cannabis Sativa	486	Cocculus Villosus	319
Capparis Trifoliata	472	Cocos Nucifera	294
Capsicum Annuum	390	Coleus Amboinicus	324

Words	No	Words	No
Colus Aromaticus	324	D	
Commelinæ Silicifolia	328	Dalbergia Sissoo	533
Conocarpus Latifolia A	281	Datura Alba	278
Coralium Rubrum	316	Datura Fastuosa	279
Corallocarpus Epigoea	296	Datura Hummata	279
Corchorus Olitorius	293	Dendrocalamus Strictus	475
Cordia Angustifolia	548	Desmodium Gangeticum	525
Cordia Latifolia	547	Dichrostachys Cinerea	499
Cordia Myra	546	Dillenia Elliptica	364
Cordia Obliqua	547	Dillenia Indica	364
Cordia Rothu	548	Dillenia Speciosa	364
Coriandrum Sativum	283	Dipterocarpus Levis	425
Corydalis Govaniana	368	Dipterocarpus Turbinatus	425
Costus Speciosus	338	Dolichos Dissectus P	377
Crataeva Marmelos	492	Dolichos Sinensis V	443
Crataeva Religiosa	472	Dolichos Trilobatus	410
Cressa Cretica	449	Dombeya Phœnicea P	352
Crinum Asiaticum	496	Doodia Logopioides U	343
Crinum Toxicarium	496	E	
Crotalaria Juncea	574	Echites Caryophyllata	402
Crotalaria Tenuifolia	514	Echites Frutescens I	561
Crotalaria Verrucosa	515	Eclipta Alba	373
Cucumis Melo	519	Eclipta Prostrata	373
Cupis Sulphas	387	Elaeocarpus Ganitrus	450
Cureuligo Orchnoides	112	Elatine Verticellata	602
Curcuma Amara	590	Embelia Basal	488
Curcuma Aromatica	592	Embelia Glandulifera	487
Curcuma Longa	589	Embelia Ribes	487
Curcuma Zedoaria	592	Embelia Robusta	488
Curcuma Zedoaria	513	Ehhydra Fluctuans	603
Curcuma Zeeumbet	513	Ehhydra Helonchi	603
Cydonia Vulgaris	325	Eriodendron Anfractuosum	528
Cymbidium Tesselloides V	448	Croum Lens L	396
Cynodon Dactylon	273	Erythrina Indica	322
Cyperus Bulbosus	416	Eugenia Caryophyllata C	456
Cyperus Hexastachyos	414	Eulophia Campestris	567
Cyperus Jemnicus	416	Euphorbia Antiquorum	580
Cyperus Pertenus	415	Euphorbia Foliat	586
Cyperus Rotundus	414	Euphorbia Ligularia	578
Cyperus Scariosus	415		

Words	No	Words	No
Euphorbia Nerifolia	578	Grislea Tomentosa W.	282
Euphorbia Thymifolia	586	Gymnema Sylvestre	423
Euphorbia Thucalli	578	Gynandropsis Pentaphylla	572
Euryale Ferox	397	H	
Euryale Indica	397		
Evolvulus Alsinoides	512	Hibiscus Odoratus P	359
Evolvulus Hirsulus	512	Hedysarum Gangeticum D	525
F		Heliotropium Indicum	597
Ferri Peroxidum	466	Hemidesmus Indicus	560
Ferri Sulphuretum	571	Herpestis Mouniera	361
Ferrum	465	Herpestis Spathulata	361
Ferula Alliacea	598	Hibiscus Abelmoschus	420
Ferula Assafoetida	598	Hibiscus Esculentus	375
Ferula Foetida	599	Hiptage Madabola	400
Ferula Scorodosma	599	Holcus Sorghum S	434
Ficus Bengalensis	469	Hordcum Hexasticum	429
Ficus Infectoria	348	Hydnocarpus Inebrians	483
Ficus Venosa	348	Hydnocarpus Inebrians	481
Flacourtia Ramontchi	435	Hydnocarpus Venenata	481
Flacourtia Sapidia	485	Hydnocarpus Wightiana	483
Foeniculum Panmorium	405	Hydrargyrum	320
Foeniculum Vulgare	405	Hydrargyrum Sulphuretum	601
G		Hydrargyrum Sulphuretum	582
Gartnera Racemosa H	400	Hydrocotyle Asiatica	362
Galega Purpurea T	520	Hydrocotyle Whightiana	362
Gucima Indica	501	Hymenodictyon Excelsum	374
Garcinia Purpurea	501	Hymenodictyon Thirsiflorum	374
Gardenia Arborescens	600	Hyoscyamus Niger	427
Gardenia Gummifera	600	Hyperanthera Moringa M	541
Gendarussa Vulgaris	304	Hyrcalis Orchioides C.	412
Gentiana Chirayita S.	369	I	
Gentiana Chirayita S	"		
Glycyrrhiza Glabra	433	Ichnocarpus Frutescens	561
Gmelina Asiatica	502	Indigofera Tinctoria	307
Gmelina Parvifolia	502	Ipomoea Biloba	394
Grewia Arborescens	280	Ipomoea Digitata	489
Grewia Asiatica	313	Ipomoea Pes-caprae	394
Grewia Subinaequalis	313	J	
Grewia Trifolia	280	Jasminum Arborescens	288
		Jasminum Auriculatum	435

Words	No	Words	No
Jasminum Montanum	288	Momordica Dioica	353
Jasminum Sambac	395	Momordica Miss-ionis	353
Jasminum Zimbac	395	Morinda Citrifolia	380
Juniperus Communis	595	Morinda Tinctoria	380
Juniperus Nana	795	Moringa Pterygosperma	341
Justicia Gendarussa	301	Murraya Koenigii	300
K		Muskus	419
Kalanchoe Pinnata	B 605	N	
L		Nauclea Cordifolia	A 593
Lapis Lazuli	144	Nyctanthes Arborescens	321
Lawsomia Alba	137	O	
Lawsomia Inermis	137	Oldenlandia Biflora	314
Leus Esculenta	396	Oldenlandia Corymbosa	314
Lettosmia Neroosa	A 551	Onosma Echioides	441
Leucas Linifolia	277	Onosma Hispidum	441
Ligusticum Ajawain	126	Ophiorrhiza Mungos	556
Ligusticum Indicum	S 428	Oplismenus Frumentaceum	542
Lodicea Scellarum	295	Opuntia Dillenii	579
Loranthus Bicolor	111	Origanum Marjorana	395
Loranthus Longiflorus	171	Oroxylum Indicum	543
Luffa Bindaral	275	Oryza Sativa	509
Luffa Echinata	275	P	
M		Pædaria Fœtida	358
Marjorana Hortensis	O 393	Pædaria Ovata	358
Mel	382	Panicum Dactylon	O 273
Melia Azedarach	298	Panicum Frumentaceum	542
Melia Azadirachta	299	Panicum Spicatum	539
Melia Sempervirens	299	Parmelia Kamtschadalis	539
Melilotus Parviflora	422	Parmelia Perforata	539
Mentha Sylvestris	335	Parmelia Peilata	539
Mesua Ferrea	289	Pavonia Odorata	399
Mesua Speciosa	289	Pegonium Harmala	587
Mimosa Arabica	A 473	Pennisetum Typhoideum	559
Mimosa Cinerea	499	Pentapetes Phœnicia	352
Mimosa Odoratissima	500	Pentapetes Sylvestris	G 423
Mimosa Pudica	455	Petroleum	312
Mimosa Sensitive	455	Peucedanum Gravesiens	516
Mimusops Elengi	349	Peucedanum Sowa	516

Words	No	Words	No
Phaseolus Acontifolius,	377	Pyrus Malus,	573
Phaseolus Max	409	Q	
Phaseolus Mungo	409	Quercus Infectoria	478
Phaseolus Mungo Var. Radialis	403	R	
Phaseolus Roxburghii	403	Randia Dumetorum	381
Phaseolus Tilobus	410	Rapbanus Sativus	418
Phragmites Roxburghii	287	Rheum Australe	311
Phyllanthus Distichus	457	Rheum Emodi	331
Pinus Deodara C	274	Rheum Emodium	331
Pinus Gerardiana	297	Rubia Cordifolia	379
Pinus Longifolia	554	Rubia Munjista	379
Piper Betle	292	Rubinus,	399
Piper Longum	326	S	
Piper Nigrum	389	Saccharum	521
Piper Trilocum	389	Saccharum Ciliare	519
Pistacia Lentiscus	284	Saccharum Sars	519
Pistacia Narbonensis	406	Saffirus	306
Pistacia Vera.	406	Salamalia Malabarica B	526
Plumbi Oxydum Rubrum	563	Salvadora Indica	333
Plumbum	566	Salvadora Oleoides	333
Poincerna Pulcherrima C	562	Salvadora Persica	332
Polygonum Tuberosa	440	Salvadora Wightiana	332
Posoqueria Dumetorum R	581	Sarcostemma Brevistigma	575
Portulaca Oleracea	163	Scribita Scabi N	421
Portulaca Tervis	463	Schrebera Swietenoides	413
Potissium Nitras	569	Somdapus Officinalis	327
Pothos Officinalis S	327	Semecarpus Anacardium	363
Prosopis Spicata	518	Semecarpus Latifolius	363
Prosopis Spicigera	518	Sepia Officinalis	553
Prunus Amygdalus	479	Serratophyllum Submersum	540
Prunus Cerasoides	311	Serratula Indica T	360
Prunus Puddum	311	Seseli Indicum	428
Psidium Guyava	344	Sida Alba	356
Psoralea Corylifolia	478	Sida Alnifolia	356
Pterospermum Crnescens	407	Sida Canariensis	357
Pterospermum Suberifolium	407	Sida Cordifolia	354
Putranjiva Roxburghii	334	Sida Herbacea A.	354
Putranjiva Sphulocarpa	334	Sida Indica	355
Pyrus Communis	573		
Pyrus Cydonia C	325		

Words,	No	Words	No
Sida Rhombifolia	357	Tricholepis Glaberrima	360
Sida Spinosā	356	Trichosanthes Cucumerina	308
Silicate of magnesia	511	Trichosanthes Dioica.	309
Sinapis Dichotoma B	558	Trichosanthes Laciniosa	308
Sinapis Juncea B	415	Trifolium Indicum	422
Sinapis Nigra B	446	Trifolium Unifolium P	478
Siphonanthus Indica C	367	Trigonellæ ænium græcum M	121
Soddi Chloridum.	574	Trophus Aspera S	24
Solanum Esculentum	508	Turchestius Larchina	345
Solanum Melongena	503	U	
Sorghum Vulgare	434	Unaqua Soddi Chloridum	577
Soynda Febrifuga	451	Uraria Lagopoides	345
Sphæranthus Indicus	408	V	
Sphæranthus Mollis	108	Vallis Dichotoma	193
Spinacia Oleracea.	323	Vallis Heynei	493
Spinacia Tetrandra	323	Vallisneria Spirales	510
Stannum	467	Vallisneria Spiraloidea	540
Stereospermum Suaveolens	317	Vandæ Roxburghii	448
Streblus Asper	524	Vateria Indica	555
Styrax Benzoin	464	Vateria Malabarica	555
Swertra Ohirata	369	Ventilago Bracteata	438
Sweetema Febrifuga	451	Ventilago Madraspatana	438
Symplocos Cratagoides	462	Verbesina Calendulacea W	372
Symplocos Nervosa	451	Vigna Catring	443
Symplocos Racemosa	461	Vitex Arborea	305
T		Vitex Negundo	305
Tecoma Undulata	456	Vitex Vinifera	276
Tectona Grandis	523	Volkameria Infortunata C	365
Tephrosia Purpurea	520	W.	
Terminalia Bidamia.	490	Wedelia Calendulacea	372
Terminalia Celerica.	482	Woodfordia Floribunda	282
Terminalia Catappa	482	Y	
Terminalia Chebula	594	Yellow Sulphidum	
Terminalia Reticulata	594	Arsenicum	588
Tiaridium Indicum. H	597	Zea Mays	376
Topagio	339	Zinci Oxydum	940
Tragra Involucrata	504		
Trapa Bispinosa	538		
Trapa Quadrispinosa	538		

Words	No	Words	No
Zinci Sulphidum	432	Zizyphus Lotus	351
Zincum	431	Zizyphus Mauritiana	350
Zizyphus Glabrata	470	Zizyphus Nummularia	351
Zizyphus Jujuba	350	Zizyphus Trinervia	470

THE ALPABETICAL  
INDEX OF THE ENGLISH WORDS OF  
THE ANUBHUTA CHIKITSA SAGAR

Words	No	Words	No
A.			
Acacia tree	473	Bamboo cane	474
Aconite.	495	Bamboo manna	476
Aconite leaved kidney bean	377	Banyan tree	469
Adans apple	497	Baberry	591
Ajava seeds	426	Barilla	583
The Alexandrian laurel	337	Barley	429
Almond	479	Bastard cedar.	451
Alum	582	Bastard teak	316
Apple	573	Baysalt	574
Arabian jasmine x	288	Bead tree.	299
Areca nut	341	Beal fruit tree.	492
Arnotto. x	564	Beet root	323
Arnotto dye x	564	Bel fruit tree	492
Ash colored flea bane	357	Belleric myrobalan	490
Asiatic penny wort	362	Bengal kino x	316
Asphalt x	531	Bengal maddei	379
Assifoetida	598	Bengal quince	492
B			
Babool tree	473	Benzoin tree	464
Babieng	487	Betel leaf	292
Bael fruit tree	492	Betel nut	341
		Bird's eye chill.	392
		Bishop's weed	426

Words	No.	Words	No.
Bivalve shell	335	Cocoanut palm	294
Black datum	279	Common Indian	
Black juck	432	purslane	463
Black mustard	446	Couch	510
Black myrobalan	594	Copper sulphate	387
Black pepper	589	Coral	346
Black wood	533	Coriander	283
Blue stone	387	Couch grass	273
Blue vitriol	387	Country borage	324
Bow string hemp	417	Country senna	583
Breached bristwort	285	Creeping panic grass	273
Burjal	503	Creeping panic doowra	273
Bristly luffa	275	Cumboo nullet	559
Brown hemp	514	Curry leaf tree	300
Bryony	532	Custard apple	565
Bulrush x	559	Cattle fish bone	353
Bulluck's heart	447	D	
Bushy gardenia	381	Deodai	274
Butea gum	316	Dekamalle gum	600
Butter tree	384	Dill	516
C.		Diamond,	601
Cane	505	Dita bark	550
Carbonate of potash	130	Double cocoanut	295
Carbonate of soda	583	Duury branch butea	316
Cat's eye	507	Dry ginger	536
Cayenne pepper x	391	Dyeis' oak	378
Cedrat tree	497	E	
Chebulic myrobalan x	594	Edible hibiscus	375
Chillies	591	Edible pine	297
Chinese date	350	Egg plant	503
Chirata	369	Elephant creeper	551
Chiretta	369	Esculent okra	375
Chowlee of India	443	Extract of the root of	
Cinnabar	601	barberry	442
Citron	197	F	
Cloves	456	False hemp	574
Clustered hiptage	400	False pareira brava	318
Cobra's saffron x	289	Fenuel	405
Cochin lumeric	592		
Cocoa nut	294		



Words	No	Words	No.
Fenugraec	421	" , almond.	482
Fenugreek	421	Indian birch tree	370
Flame tree of the woods	352	" , copal	555
Flax hemp	511	Indian coral tree	322
Eleuthane	290	Indian corn	376
Forbidden fruit	303	Indian gum arabic tree	173
G		Indian hemp.	186
Gail	378	" "	514
Gall nut	378	Indian jujube	350
Gamboge	331	Indian madder	379
Garden spinach	323	Indian millet	431
Gurlic	458	Indian mulberry	380
Geranium grass	452	Indian mustard	445
Goat pepper	391	" " oak	352
Gold	570	Indian ohivnum tree	522
Gorgon fruit	397	Indian paper birch	370
Grape	276	Indian penny wort	361
Great millet	434	Indian red wood	451
Green gram	109	Indian sairsaparilla	560
Gurva	344	Indian senna	585
Guinea coin	431	Indian shot	557
Gum of silk cotton tree x	527	Indian spinach	323
Gummy gudina	600	Indian tree	585
H		Indian worm wood	290
Hemp	486	Indigo plant	307
Henbane	427	Iron	165
Heuna	437	Iron rust	466
Herba schoenanthi of Phai-		Iron sulphide	571
mists	460	J	
Hill palm	398	Jack fruit tree	312
Himalayan cedar x	274	Java almond	480
Honey	382	Jew's mallow	293
Hornbeam leaved sida	351	Jew's pitch	531
Horse radish tree	541	Juniper	595
I		Juncus odoratus	160
Impure calamine	432	K.	
Impure red oxide of iron	466	Kali saison	558
Indian aconite	494	Kanyin oil	425
		Kapok floss	528
		Keosine	342

Words	No	Words	No
Kidney bean	403	Musk	419
L		Musk mallow,	420
Lac	459	Mustard tree of scripture,	332
Lead	566	Myrrh	508
Lemon	302	N	
Lemon grass	371	Native sulphuret of arsenic	
Lentil	396	Ncem tree	298
Lichens	559	Neosin	297
Liquorice root	433	Nitre	569
Lode tree	461	O	
Lodhi tree	461	Ochro of West Indies	375
Long leaved pine	554	Onion	315
Long pepper	326	Orange	291
Long and round zedovy	513	Orpiment	588
Lovage	426	Oyster shell	535
M		P	
Maddei root	379	Paradise apple	303
Mahur tree x	384	Pearl pepper	424
Mahua tree x	385	Persian lilac	299
Maize	376	Piney varnish	555
Male bamboo	475	Pistichis nut x	406
Mango ginger	590	Pompelmos	303
Maine cocornut	295	Prickly pear	579
Marjoram	581	Prickly poppy	581
Mugosa tree	298	Pumelo	303
Musking nut	363	Purple flea bane	478
Mastic tree	284	Purslane	163
Mastiche	284	Q	
Melon	549	Quince	325
Mercury	320	R	
Mexican poppy	584	Radish	418
Milk bush	578	Rai	415
Milk hedge	578	Raisins	276
Net	559	Realgar	386
	573	Red arsenic	986
	335	Red coral	316
	322	" " lead	568
	76	Red neriny of Madras	477
		Red orpiment	386
		Red pepper	390
		Red sulphuret of mercury	601
			331

Words	No	Words	No
Rice	509	Sweet melon	519
Root of Piper longum	329	Sweet marjoram,	117
Rock salt	574	Teak. T	523
Rose wood	533	Teak tree	523
Ruby,	399	Three leaved pine	554
Rusa oil grass	152	Three lobed kidney bean	410
Rust of iron	466	Tin	467
Sago palm S	398	Tinnevely senna	585
Sal ammoniac	236	Togari wood of madras	380
Salep	567	Tooth brush tree,	473
Salep	568	Topari	339
Saltpetre	569	Torn leaved caryota	398
Sampeen wood	310	Tow cok of China	143
Suppan wood	310	Trailing coldenia ×	596
Sapphire,	306	Trailing eclipta ×	372
Sea cocoa nut	295	True cuspid apple of West Indies	447
Sebestan	546	True monk's hood	495
Senna	585	True mustard,	416
Sensitive plant	455	Turkoi	345
Shaddock	303	Turmeric ×	589
Silicate of alumina ×	576	Utricum beard tree U	450
Silk cotton tree	526	Vermillion V	601
Silver,	439	Vine	276
Shrubby capsicum	391	Vinegar ×	534
Singhara nut	538	Vitriol white	582
Siris tree	529	Water caltrop × W	538
Sissoo	533	White cotton tree,	523
Soop stone	511	White dammar ×	555
Sou lime	301	White datura	278
Spiked millet	569	White goose foot	481
Spiny bamboo	174	White wax	383
Spreading hog weed	336	Wild cherry of the Himalayas	311
Spu pepper ×	391	Wild turmeric	592
Sugar	521	Wolves bane aconite	495
Sulfate of copper	387	Yellow arsenic Y	588
Sulpheret of iron	571	Yellow sulphide of arsenic	588
Sunn,	514	Yellow zedoary	592
Sunn hemp ×	514	Yellow wax	383
Surinam medlu	349	Zinc Z	431
Sweet flag	468	Zinc ore	432
Sweet lime of India	498	Zinc oxide ×	540
Sweet marjoram	393		

संख्या २७३२३ ३९, (सं०) दूर्वा, शैतलपर्वा, सहस्रवीर्या, अनन्ताभा

सारवादी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	संजाबी	तैलशी
दोन्डी	दूर्वा	शैतल ( ६ )	दूर्वा	शैतल	दूर्वा	नक्षत्रिके
दात्रिही	कुलीटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पञ्चमरुहपि	अरबी	शैतल	शैतल	Shilphum B	Shilphum B	Shilphum B

स्थान—दूब हिन्दुस्थानमें सब ठौर होती है ।

प्रयोग—( १ ) यह मधुर, शीतल, भिन्नुय और कपेली है ( २ ) इसका ताजा रस ग्राही है ( ३ ) नकसीर बन्ध करनेके लिये इसका ताजा रस सुंघाते हैं ( ४ ) घावका रुधिर बन्ध करनेके लिये इसको पीसके लेप करना चाहिये ( ५ ) आमामित्सार मिटानेके लिये दूबको साँफ और साँठके साथ ओटाके पिलाते हैं ( ६ ) दूबके रसमें सफेद चन्दनका बुरा और मिश्री मिलाके पिलाने से रक्तमदर मिटता है ( ७ ) अर्ध दूबका रस पिलानेसे पित्तकी वमन मिटती है इसको पैरोंकी अंगुलियोंके घाव पर लेप करना चाहिये ( ८ ) दूबको काली मिरचके साथ पीसके पिलानेमें मूत्रवृद्धि होती है ( ९ ) इससे जलधर और सर्वांग जलमय शोथ मिटता है ( १० ) हरी दूबके रसका लेप करनेसे आंख का देखना और गोंडाका वृद्ध आना मिटता है ( ११ ) मूत्रमें रुधिर आनेको रोकनेके लिये दूबको मिश्रीके साथ पीस दानके पिलाना चाहिये ( १२ ) इसके रसमें अतीसके चूर्णको दिनमें दो तीन घेर चदानेसे नारीसे आनेवाला रुधिर रुद्धता है ( १३ ) इसके कायके कुल्ले करनेसे मसूरोंके बाले मिटते हैं ( १४ ) स्वपदंशके बन्धजानेसे सब शरीरमें जो चाटे पड जाते हैं उनको मिटानेके लिये दूबकी जड़का काय पिलाना चाहिये ( १५ ) इसकी जड़का काय मूत्रवर्द्धक है ( १६ ) इसका उद्भिन्ना काय पिलानेसे रक्तार्श, का रुधिर मूत्र होता है ( १७ ) दूबको घोट दूबमें दानके पिलानेसे मूत्र सम्बन्धी अगोंकी दाह मिटती है ( १८ ) दूबको ११ मासे जड़को महीन पीस दहीके साथ चदानेसे पुराना

मूत्रकृच्छ्र मिटती है ( १६ ) श्मशानम उत्पन्नहर्ष बूबकी जड़को सूतसे लेपेटकर हाथमें बांधनेसे सत्र प्रकारका ज्वर छूटता है ( २० ) बूब और बूबके का बराबर ले पानीमें पीस ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटती है ( २१ ) इसका रस चावलके धोवणके साथ पीनेसे पित्तकी बमन मिटती है ( २२ ) इसके रस से सिद्ध किया हुआ तेल व्रणनाशक है ( २३ ) इसके रसकी चूस्य देवसे नकसीर बन्ध होता है ( २४ ) इसके रसके लगानेसे खुजली मिटती है ( २५ ) इसके रससे तेल बनाके मर्दन करनेसे खुजली और दाद मिटता है ( २६ ) बूब और हलदीको पीसके लेप करनेसे खुजली, पांव और दाद मिटते हैं ( २७ ) शीतपित्त में भी यह लेप उपकारी है ।

सख्या ( २७४ )

( स० ) देवदारु, शिवदारु, भूतहारि, भवदारुः ।

मौरवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	मालवी
देवदारु	देवदार	देवदार (रु)	देवदार	देवदारु	दिआर	देवदारि
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	देवदारि	स्यजरुलुजि		Cedrus Deodara. Pinus Deodara.	Doodar	

स्थान— देवदारुके वृक्ष हिमालयके पश्चिमोत्तर भागमें अर्थात् अफगांनी स्थान और विलोचीस्थानके उत्तरमें और दोली नदी ( जो अलक नदीमें गिरती है ) के पूर्वतक होते हैं ।

( ० ) परिचय— इसके वृक्ष बहुत बड़े और बहुत ऊंचे होते हैं इसमें से एक प्रकारका चपदार अथ निकलता है उसके निकलनेकी यह रीति है—जिसमें तीन चार सेर जल माता हो ऐसी एक चौड़े झुंडकी हड्डी लोके जमीनमें गाड़े देते हैं और जिसमें १२, १३ सेर जल माता हो ऐसे एक घंटेके पैदेमें छोटे ( २ ) छेद कर उसमें देवदारुकी लकड़ीके छोटे ( २ ) टुकड़े भर उसके झुंड पर एक ढकने रखसपर कपड़े मिठी कर देते हैं पीछे इस घंटे को जमीनमें गड़ी हुई हड्डी

पर जमाके ज्वर, दोतोंके कूपड़, मिट्टी, करदेतेहैं। पीछे टुकड़े भरेहुए उस घड़ेके चारों तरफ कड़े (छाण) और छोटी २ लकड़ियें चुनके उनमें अग्नि लगा देतेहैं ४ से ८ घटे तक अग्नि लगी रखते हैं उस समयमें उन टुकड़ोंसे वह द्रव निकलके जमीनमें गडी हुई हंडीमें चला जाताहै, एक सेर टुकड़ोंमें ढाई छटाक द्रव और सवाचार छटाक कोयले बैठतेहैं। सवा छः सेर लकड़ीमें से सेर भर द्रव निकलताहै।

(२०) देवदारू-पचनेमें हल्की, स्निग्ध, तिक्त, उष्ण, पात्रमें चरपरी और रूखहै-(२)-इसकी लकड़ी पेटकी वातपीडा मिटानेवाली, पसीना लानेवाली और भूत्रवदकहें ज्वर, अफारा, पित्तशोध, जलघर और मूत्र, सम्बन्धी रोगोंमें उपकारीहै (३) इन सब रोगोंको मिटानेवाली जो २ आपधियें उन २ के साथ देवदारूको मिलाके देनी चाहिये (४) फोड़े और त्वचाके रोगोंमें इसके द्रवका लेप करना चाहिये (५) देवदारूका तेल पिलाने और लगानेसे पारकें उपद्रवास बिगडा हुआ रुधिर सुधर जाताहै (६) इसका तेल पिलानेसे त्वचाके दूसरे रोगभी मिटतेहैं (७) देवदारूकी लकड़ीको पानीके साथ घिसकर कनपटियोंपर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै (८) देवदारूकी लकड़ी कड़वा होतीहै (९) यह वदकाष्ठ, अश और फुफुस सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये अच्छीहै (१०) इसके तेलको पानिचारमास को मात्र देनी चाहिये (११) इसके पत्त और छाटी डालियामेभी इसके

इसमें २७५ से ३२० तक औषधी संख्या अशुद्ध छप गई है उसको शुद्ध कर लेवे ॥

देवदाली, देवली, शरोगरी, वृत्तकोशा

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
विंदाळ	सौनैया	कुडवेल्स	देवडांगरी	शीतघोषा	सौनैया	दाउरडमि
द्राविडी	कनाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मौड	नदेवताळ	गण्ड	तन्नी	सफन्नी	Luffa ochinata	L. hindsal
						Edibly Juice

स्थान - विन्दाळकी बेल गुजरात, सिन्ध, पुनियां आर बाका आदि कई देशों में होती है।

प्रयोग—(१) विन्दाळका-डोडा जलधरकी एक उत्तम औषधी है (२) यह अच्छा विरचक है (३) यह कड़वा-होता है (४) इसके फलके भीतरके कड़वे तन्तु या जालका हिम या फाट सपके काटे हुएका पिलाते हैं (५) विरचिका के हरेक विरचक के पीले यह हिम पिलाना चाहिये (६) पित्त ज्वर में इसके हिमका सब शरीर पर लेप करना चाहिये (७) कामला रोगवालों के शिरपर इसके हिमका लेप करना और पिलाना भी चाहिये (८) इसका काथ पिलानसे पेटकी शूल मिटती है (९) इसकी जड़ कान्ठ धोने से रात्रि ज्वर छूट जाता है (१०) इसकी पुरान गुडम पिला लम्बी बत्ती बना के गुदाम रखनेसे रक्षाश मिटता है (११) इसकी आटाक बफारा लनेसे अश मिटता है (१२) इसका पानीम भिगा मल छानकर दो बूंद नाकमें टपकाने से जल बहकर आधाशोशी मिटती है (१३) ऐसे ही २, ३ बूंद नाकमें डालनेसे कामला राग मिटता है (१४) इसका आर सधेनुमकको काजीसे पीसके लेप करनेसे अशकी शूल मिटती है (१५) इसके काथ या हिमसे गुदाको धोनेसे अश पैदा नहीं होता है (१६) इसके पचगके चूर्णकी दूध या पानीके साथ महीने तक फकी लनेसे मादुरोग मिटता है (१७) इसके ३ फलोंको आधपाव जल में रात्रिभर भिगा प्रात काल मल छानकर पिलानसे उपदेश मिटता है (१८) इसके तोले भर चूर्णकी फकीसे गर्भसाव होजाता है इसलिये गर्भवतीको नहीं देनी चाहिये (१९) यह रस खौर प्राकमें कड़वी, चरपरी, उष्ण और वाम

कहै (२२) शरीर, कफ, शोफ, कामला, आम, ज्वर, कास, अरुचि, श्वास, हिचकी, पाँह, ज्वर, कृमि, भूतवाधा, विष, और मूषके-विषको मिटाती है (२३) इसकी मूलद्रव्य और कड़वी न होती है और शुष्क, कृमि, कफ, शूल, अर्श, कामला, और बादीको मिटाती है (२४) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०) (३१) (३२) (३३) (३४) (३५) (३६) (३७) (३८) (३९) (४०) (४१) (४२) (४३) (४४) (४५) (४६) (४७) (४८) (४९) (५०) (५१) (५२) (५३) (५४) (५५) (५६) (५७) (५८) (५९) (६०) (६१) (६२) (६३) (६४) (६५) (६६) (६७) (६८) (६९) (७०) (७१) (७२) (७३) (७४) (७५) (७६) (७७) (७८) (७९) (८०) (८१) (८२) (८३) (८४) (८५) (८६) (८७) (८८) (८९) (९०) (९१) (९२) (९३) (९४) (९५) (९६) (९७) (९८) (९९) (१००)

मारवादी	हिन्दी	गुजराती	मुरही	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
दाल	किसमिस	धिराख	कालेद्रा	किसमिस	दाख	दाख
दाखी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
दाल (ली)	दाखेहस	अरबी	मूज (मूखे) अंगूर (नर)		The vine The grape	

गर्भस्थान—इसकी मूल हिन्दुस्थानके बहुतसे बागोंमें लगाई जाती है।  
 पहिचान—इसके सुगन्धयुक्त हरे पुष्प, लागते हैं; अलग-अलग देशोंमें अलग-  
 २० अलग-अलग नामोंसे पुकारते हैं। बिन बीजवाली, दाखको किसमिस कहते हैं।  
 (२०) अर्श, कफ, शोफ, कामला, आम, ज्वर, और उबड़ी होती है (२१)  
 तथा शरीरकी लज्जा, कास, स्वरभंग और राजयक्ष्माको मिटाती है (२२) यह  
 कठोर भागको कोमल करता है (२३) काली, दाख, उष्ण और रूच है (२४) बिन  
 बीजकी दाखभी कठोर भागको कोमल करता है और फोड़े, फुन्सियोंको पकाती  
 है (२५) मूलका बहुत मात्रक, कृमि, कफको शुद्ध करने और नष्ट करनेवाली है (२६)  
 इसकी लकड़ीकी सखको पानीमें सोलका पीनेसे मूत्राशयमें पथरीका पैदा  
 होना बन्ध हो जाता है (२७) इसका लोप करने और पिलानेसे अङ्गुलीकी बादीकी  
 शोथ विखर जाती है (२८) अर्शकी सृजनके लिये भी यही उपचार लाभकारी है (२९)  
 कच्ची दाखकारस ग्राही है (३०) गलेके रोगोंमें इसके रसके गूँघप कराना बहुत अच्छा  
 है (३१) इसका शर्बत बनावे पीनेसे शरीरमें उबड़ाई होती है (३२) पित्तज्वर  
 और उसकी तथा मिटानेके लिये इसका शर्बत पिलाना चाहिये (३३) मूत्र



और मूत्रनीलीके पित्तसम्बन्धी विकारों मिटानेके लिये इसको शर्वत पिलाना चाहिये ( ११५ ) पित्तसम्बन्धी भेदाग्नि मिटानेके लिये इसके शर्वतमें पीपलकफ चूर्ण बुरकोके पिलाना चाहिये ( ११६ ) भेदाग्नि, आमातिसार, अतिसार और जलधर सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इनको मिटानेवाली औषधियोंको इसके शर्वतके योगसे देना बहुत लाभकारी है ( १७ ) वसतश्चतुर्षु काटीहुई इसकी टहनियोंमें से एक प्रकारको मूद निकलता है जो त्वचाके रोगोंकी चिकित्सामें काम आता है और हृदयकीहुई आख परांभी लगाया जाता है ( १८ ) अंगूरके रससे सिरका बनाया जाता है ( १९ ) अजीर्ण और शूल मिटानेके लिये अंगूरका सिरका पिलाना चाहिये ( २० ) विमूचिकामें भी इसका प्रयोग करना अच्छा है ( २१ ) इसके सिरकेमें नमक डालके पिलानेसे चमत् होती है ( २२ ) इसका रस पिलानेसे दाह और तृषा मिटती है ( २३ ) इसके रसमें चन्दन घिसकर मलनेसे बहुत पसीना आना बन्ध हो जाता है ( २४ ) दाख और आत्रलेका कल्क खानेसे पित्तज्वरकी दाह मिटती है ( २५ ) इसको रसमें शकर मिलाकर पीनेसे पित्तशूल मिटती है ( २६ ) दाख और अइसेका काथ बनाके पीनेसे कफकी शूल मिटती है ( २७ ) इसके रसमें हरडका चूर्ण और गुड़ मिलाके पिलानेसे पित्तगन्ध मिटता है ( २८ ) दाख शकर और हरडके चूर्णकी फकी ठण्डे पानीके साथ लेनेसे पित्तज्वरदोग मिटता है ( २९ ) दाख और मिश्रीकी पीस दहीके पानीमें मिलाके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ३० ) दाख और शीतलाको जवान पीस मधु मिलाके चटानेसे ज्वरयुक्त मूच्छ्रा मिटती है ( ३१ ) इसकी लकड़की भस्मको सिरकेमें मिलाकर लगानेसे कुष्ठकी विष उत्तरता है ( ३२ ) पृथरी मिटानेके लिये इस द्वा मासे भस्मको गोखरूके रसमें मिलाके पिलाना चाहिये ( ३३ ) दाखके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होता है ( ३४ ) इस रसकी नाफके द्वारों पीनेसे तृषा मिटती है ( ३५ ) इसके रसमें हरडका चूर्ण मिलाके पीनेसे मलग्रन्थी मिटती है ( ३६ ) दाखके काथसे कुष्ठ करनेसे मुखरोग मिटता है ।

। संख्या (३८१) ।

( सं० ) द्रोणापुष्पी, कौडिन्यः, चर्वपत्रा, द्रोणा ।

भारवाही	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
सुंदापाली	गूमा, गोमा	कुंबो	कुम्भा	अमलपसा	अगुमापसा	येनुगंतुमि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	लिहियुमो	अरब ( ३ )	फिजी	Education	अंग्रेजी	

स्थान—दड़गल ( गुमा ) के पोथे हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होते हैं ।  
 प्रयोग—( १ ) यह पचनेमें भारी, मधुर, रूक्ष, उष्ण, चरपूरी, सलानी कड़वी, रात पित्त-वदानेवाली और रेचक होती है । ( २ ) कफ, आम, कामला, शोथ, तमक, आस, अरुचि, मदाग्नि, पक्षाघात और कुमिको मिटाती है । ( ३ ) इसके पत्ते पीठे, कड़वे, रूक्ष, पचनेमें भारी, पित्तकारक और रेचक है । कामला शोथ, मूत्रह और ज्वरको मिटाती है । ( ४ ) इसके पत्तोंका पुटपाक कर जमक मिलाके खिलानसे ज्वर छूट जाता है । ( ५ ) इसके पत्तोंका ताजा रस पिलानसे मस्तक-पीड़ा और सर्दीका असर मिटजाता है । ( ६ ) इसके पत्तोंके रसमें मिर्च मिलाके पिलानसे विषमज्वर छूटता है । ( ७ ) पत्तोंके रसका अजून करनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटता है । ( ८ ) इसके रसके अजूनसे कामला रोग मिटता है ॥

संख्या ( ३८२ ) प्रकभा ।  
 ( सं० ) श्वेतधतुरः, उन्मत्तः, कितवः, धृतः ।

भारवाही	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
सफेदधतुरा	सफेदधतुरा	धतुरा	पादराधातरा	श्वेतधतुरा	धतुरा	ताम्रावभिते
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	विलियमेट	अरब ( ०८ )	सोतुराईस	Datura-Alba	White Datura	

और मूत्रनोलीके पित्तसम्बन्धी विकारों मिटानेके लिये इसका शर्वत मिलाना चाहिये ( ११५ ) पित्तसम्बन्धी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसके शर्वतमें पीपलकी चूर्ण औरकोके पिलाना चाहिये ( ११६ ) मंदाग्नि, आमातिसार, अतिसार और जलधर सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इनको मिटानेवाली औषधियोंको इसके शर्वतके योगसे देना बहुत लाभकारी है ( १७ ) वंसतश्चतुमें काटीहुई इसकी टहनियोंमें से एक प्रकारकी मंदा निकलता है जो त्वचाके रोगोंकी चिकित्सामें काम आता है और दुखतीहुई आँख पर भी लगाया जाता है ( १८ ) अंगूरके रससे सिरका बनाया जाता है ( ११९ ) अजीर्ण और शूल मिटानेके लिये अंगूरका सिरका पिलाना चाहिये ( २० ) विमूर्च्छिकामें भी इसका प्रयोग करना अच्छा है ( २१ ) इसके सिरकेमें जमक डालके पिलानेसे चमन होती है ( २२ ) इसका रस पिलानेसे दाह और तृषा मिटती है ( २३ ) इसके रसमें चन्दन घिसकर मलनेसे बहुत पसीना आना बन्ध होनाता है ( २४ ) दाख और आंबलेका कल्क खानेसे पित्तज्वरकी दाह मिटती है ( २५ ) इसके रसमें शकर मिलाकर पीनेसे पित्तशूल मिटती है ( २६ ) दाख और अइसेका काथ बनाके पीनेसे कफकी शूल मिटती है ( २७ ) इसके रसमें हरडका चूर्ण और गुड़ मिलाके पिलानेसे पित्तग्लम मिटता है ( २८ ) दाख शकर और हरडके चूर्णकी फकी ठण्डे पानीके साथ लेनेसे पित्तज्वर हृद्रोग मिटता है ( २९ ) दाख और मिश्रीकी पीस दहीके पानीमें मिलाके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ३० ) दाख और आंबलेको जबान बसि मधु मिलाके चूटानेसे ज्वरयुक्त मूर्च्छा मिटती है ( ३१ ) इसकी लकड़की भस्मको सिरकेमें मिलाकर लगानेसे कुष्ठका विष उतरता है ( ३२ ) पृथरी मिटानेके लिये इस द्रव्यमें भस्मको गोखरूके रसमें मिलाके पिलाना चाहिये ( ३३ ) दाखके रसकी नस्य देनेसे नकसीर बन्ध होता है ( ३४ ) इस रसकी नाकके द्वारा पीनेसे तृषा मिटती है ( ३५ ) इसके रसमें हरडका चूर्ण मिलाके पीनेसे मलग्रन्थी मिटती है ( ३६ ) दाखके काथसे कुष्ठ करनेसे मुखरोग मिटता है ( ३७ )

। रोगो हि मांसा-... संख्या (२८१) ।

( सं० ) द्रोणपुष्पी, कौडिन्यः, चर्वपत्रा, द्रोणा ।

भारवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
मुंडापोली	गूमा, गोमा	कुबो	कुम्भी	लषसा	गुमा	येनुगुत्तुमि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	विलियमस	कुम्भी ( ३ )	श्रीशा	Alouca's Hibbottia		

स्थान—दहगल ( गुमा ) के पोषे हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होते हैं ।

प्रयोग—( १ ) यह पचनेमें भारी, मधुर, रूक्ष, उष्ण, चरपरी, सलोनी कड़वी, वात पित्त-वदानवाली और रूचक होती है ( २ ) कफ, आम, कामला, शोथ, तमक, श्वास, अरुचि, मदाग्नि, पक्षाघात और कुम्भिका मिटाती है ( ३ ) इसके पत्ते मीठे, कड़वे, रूक्ष, पचनेमें भारी, पित्तकारक और रूचक है । कामला शोथ, मूत्रह और ज्वरको मिटाते हैं ( ४ ) इसके पत्तोंका पुटपाक कर जमक मिलाके सिलानसे ज्वर छूट जाता है ( ५ ) इसके पत्तोंका ताजा रस-पिलानसे मस्तक-पीड़ा और सर्दीका असर मिटजाता है ( ६ ) इसके पत्तोंके रसमें मिरचु मिलाके पिलानसे विषमज्वर छूटता है ( ७ ) पत्तोंके रसका अजन करनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटता है ( ८ ) इसके रसके अजनसे कामला रोग मिटता है ॥

संख्या ( २८२ ) ।

( सं० ) श्वेतधतुरः, उन्मत्तः, कितवः, धतः ।

भारवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
सफेदधतुरा	सफेदधतुरा	धतुरा	पादराधातरु	श्वेतधतुरा	धतुरा	ताल्लाउमिते
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	विलियमस	कुम्भी ( ०५ )	सितुराहस	Datura-Alba	White Datura	

स्थान—सफेद धतूरा हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होता है ।

पहचान—इसका पेड़ ८, १६ फुट तक ऊंचा होता है ( ०८८ )

प्रयोग—(१) धतूरा कपेला, मधुर, कड़वा, उष्ण, भारी, चरपरा और अग्निदीपक है (२) इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान करानेसे ऐसा तेज श्वास मिटती है कि जिसमें बाईटे आतेहों (३) इसके पत्तोंका सारः क्षय रोगमें श्वासी भरी दिया जाता है जिससे दुःखसे श्वास आना मिटती है (४) इसका लेप और पुण्डिस बांधनेसे हड्डीकी पीड़ा मिटती है (५) गाठियासे फूला हुई जाड़ा पर इसके पत्तोंका पुण्डिस बांधना चाहिये (६) इसके पत्तोंका लेप करनेसे

- (७) मिटती है (७) बाहिरके अर्शपर इसके पत्तोंका लेप चाहिये (८) श्वासमें और पुराने हृद्रोगमें छातीपर इसका लेप करना
- (९) स्त्रियोंके वृषका निकास बन्द्य करनेके लिये इसके पत्तोंको
- (१०) इसमें से एक तत्व निकाला जाता है जो दुःखती हुई
- संग्राह्य जाता है (११) धतूरे के पत्तों के रस के प्रयोगसे
- कैल जाती है (१२) घावके कारणसे जो हनुस्तम्भ होजाय
- बांधने चाहिये (१३) जिस घाव पर गहरा पीप या
- बसका गने पानीकी धारसे धीके दिनमें ३, ४ बर
- (१४) धतूरेके अर्शका पृष्ठ अर्श पर
- (१५) उन्माद रोग मिटानेके लिये ध-
- अपस्मार ( मिरगी ) और बुद्धि श्रेश

**इसका प्रयोग**

पूर्वकपमें जो वस्तुपरिष्कृत होती है उसको मिटानेके लिये इसका प्रयोग धतूरेकी जड़के चूर्णका तैलक बड़ा देना चाहिये

अर्शपर मिटानेके लिये ( १६ ) पत्तोंके रस में गैरीक गठिया सम्बन्धी रोग और प्रयोग

गोली घनाके दांतकी खोखलमें रखनेसे दांतकी पीड़ा मिटती है ( २१ ) धतूरेका १ तोला रस/ताजे-दहीमें मिलाके बारीसे आनेवाले श्वरको वेग, मारम्भ होनेके कमसे कम दो घंटे पहिले पिलाना चाहिये ( २२ ) धतूरेके सारकी १ रतीके १६ वें भागकी मात्रा देनेसे, गृध्रसी मिटती है परन्तु इसकी मात्रा धीरे २ आध रती तक बढ़ा देना चाहिये ( २३ ) धतूरेके तेलका मर्दन करनेसे गठिया और पांव मिटती है ( २४ ) धतूरेके पत्ते और चावलोंके आटे का पुण्डिस घनाके बाधनेसे नारू जल्दी निकल जाता है ( २५ ) इसी कामके लिये कभी २ धतूरेके पत्तेको मूसतेभी है ( २६ ) धतूरेमें बहुत विप है ( २७ ) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे मनुष्य मलाप करने लग जाता है ( २८ ) इसके मुखे पत्तोंका धूम्रपान बहुत कम किया जाता है और कियाभी जाता है तो केवल रोग मिटानेके लिये किया जाता है ( २९ ) इसके गीले पत्ते लेप और पुण्डिसके काममें आते है ( ३० ) इसके बीज कई रोग मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके अच्छे सहायक हैं ( ३१ ) इसकी जड़भी इसी रीतिसे काममें लाई जाती है ( ३२ ) पागल कुत्ता काटनेके पीछे, जो मनुष्य भड़क जाता है उसके भड़कान पैदा होनेके पहिले उसको इस रोगकी दूसरी औषधियोंमें इसकी जड़ मिलाकर देना चाहिये । इससे वह मनुष्य मलाप करने लगता है और उन्मत्त हो जाता है जैसे कि कभी कभी पागल कुत्तेके विपसे हो जाया करता है । इसके देनेमें पूरी सावधानी रखना चाहिये और इसकी पूरी मात्रा देनी चाहिये । कुत्तेके विपसे भड़कजाने के बाद इस औषधिका देना बर्धा है ( ३३ ) गठियाकी सूजनपर धतूरेके पत्ते रख उनके ऊपर एरुदके पत्ते बाध देना चाहिये ( ३४ ) पैरोंके पसीने मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पानीमें पीसके लेप करना चाहिये ( ३५ ) इसके २, ३ बीज नित्य निगलनेसे पुरानी मस्तकपीड़ा मिटती है ( ३६ ) इसके बीज और कालीमिरच दोनों धराधर ले पीस उबदके बरानर गोली घनाके साँफके नित्य लेनेसे पुराना प्रमेह मिटता है ( ३७ ) इसके स्वरसमें मधु ~~का~~ ~~से~~ कीड़े मर्त है ( ३८ ) इसके रससे यनाये-शुण तेलका मर्दन ( ३९ ) इसकी जड़ किंगरमें बांधे रहनेसे बिना समय गर्भ ( ४० ) इसके पंचाग के ३ तोले रसमें तिल सरसों

के तेल, दाल घंट आंचमें पका उसका मर्दन

कर परएड या आकके पत्ते गर्मकर उसपर बांधनेसे बादीकी पीड़ा मिटती है ( ४१ ) इसके बीजोंकी भस्म बनाके उसकी ४ मासे जवानको और ४ रतीकी मात्रा बालकको देनेसे शीतज्वर छूटता है ( ४२ ) इसके पत्तोंको तपाकर बांधने से बादीकी पीड़ा मिटती है ( ४३ ) रविवारके दिन उखाड़ेहुए धतूरेको दाहिने हाथमें बांधनेसे ज्वर छूटता है ।

संख्या ( २८३ )

( सं० ) कृष्णधतूरेः, शिवः, सचिवः, केनकाह्वयः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कालेधतूरे	कालेधतूरे	काळोधतूरे	काळोधतूरे	कालधतूरे	कालधतूरे	नल्लउमै
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
करप्पुमत्त	करिउमत्तै		सातूरहसियाह	Datura fastuosa, D Hummata	Black Datura	

स्थान— काले धतूरेके पेड़ हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें और निःकम्पी ठारमें होते हैं ।

प्रयोग— ( १ ) श्वेत धतूरेसे काले धतूरेमें अधिक गुण होते हैं ( २ ) पागल कुत्तेके काटनेसे मनुष्य बहुधा ४० दिन पीछे भडके जाता है इसलिये भंडकनेके पहिले उसकी चिकित्सा करनी चाहिये, अर्थात् काटनेके १५ वें दिनसे २० वें दिनके भीतर २ उसकी चिकित्सा करनी चाहिये उसकी यह रीति है कि उसको काटनेके पीछे १५ वें दिनके आतःकालके ६ बजे चादकी लकड़ीके कोयलोंके ७॥ मासे चूरणकी फकी देनी चाहिये जिससे उसको धतूरेका खर नहीं चढ़े, इसके आधघंटे पीछे उसको काले धतूरेके पत्तोंका २॥ तोले रस पिलादेना चाहिये, फिर थोड़ी देर पीछे उसको ताड़का गुड़ या और कोई चीज खिलादेना चाहिये कि जिससे उसको वमन न हो, फिर उसको रम्तीसे बांधके दुपहर तक ४ या ५ घंटे धूपमें रखना चाहिये जिससे वह आदमी घीरे २ उन्मत्त होजायगा और पागल कुत्ते जैसी कई चेष्टा करने लग-

यगाजब ये लक्षण दीखने लगें तो यह प्रगट होजाता है कि इस मनुष्यको द्य-  
 श्य पागल कुत्तेके काटा है और यह नैरोग्य भी होजायगा फिर दुपहर पीछे  
 उठे जलकी कई मटफियें उसको शिरपर डालना चाहिये, इससे उस रोगीको  
 बड़ा क्रोध होता है, पीछे उसको विगना और चणका पथ्य देना चाहिये जो  
 तुमसो भडके हुए मनुष्यकी चिकित्सा करनी होवे तो तुम उसके शिरके साम-  
 नेके भागको लुरीसे छीलके रुधिर निकालदो और उस ठौर काले धतूरेके  
 पीसे हुए पत्तोंका मर्दन करो और पत्तोंको रस उसको पिलावो ( ३ ) इसके  
 ताजे पत्तोंका रस मर्दन करने या पत्तोंका पुलिटम बांधनेसे पीड़ायुक्त शोथ  
 मिटजाती है ( ४ ) पत्तोंके ताजे रसका आंख पर लेप करनेसे आंख दुःखती  
 रहजाती है ललाई फट जाती है शोथ और दाह मिटजाती है ( ५ ) इसके सूखे  
 पत्ते और टहनियोंका धूम्रपान करनेसे श्वासके बेग मिटते हैं ( ६ ) वाइटे-मि-  
 टानेके लिये इसके सूखे पत्तोंका धूम्रपान कराना चाहिये इसका अधिक धूम्र-  
 पान करानेसे उस मनुष्यको चकर आने लगते हैं और निर्मलता होजाती है ( ७ )  
 पांगल कुत्तेके काटनेसे भडके हुए मनुष्यके लिये धतूरेके बीजोंका प्रयोग अच्छा  
 है ( ८ ) विमूचिकामें इसकी केसरका प्रयोग करना चाहिये ( ९ ) इसकी  
 सूखी हुई जड़का धूम्रपान करानेसे श्वास मिटता है ( १० ) पत्तोंके ताजे रस  
 की १ या २ बूंद कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है ( ११ ) इसके पत्तों  
 के रसका लेप या मर्दन करनेसे छोटे जोड़ोंकी सूजन, गठिया, पेशीका बढाव  
 और उसकी शोथ मिटती है ( १२ ) इसके पत्तोंका पुलिटस बांधनेसे स्त्रियोंके  
 स्तनोंकी शोथ बिखर जाती है ( १३ ) जिसे स्त्रीके अधिक दूध होनेसे स्तनमें  
 गाठ होजानेका भय हो तो उसके दूधको रोकनेके लिये स्तनपर इसके पत्ते  
 बाधना चाहिये ( १४ ) इसके पत्ते बांधनेसे पीडा मिटती है ( १५ ) इसके  
 बीज पुष्पार्थ विटानेके लिये काममें आते हैं ( १६ ) पुरानी खांसी मिटानेके  
 लिये इसके पत्तोंका धूम्रपान कराना चाहिये ( १७ ) इसकी चौथाई रती  
 सूखी जड़को पानमें रखके खिलानेसे उपद्रुश सम्बन्धी रोग मिटते हैं ( १८ )  
 इसके १७ फलोंके सूखे बीजोंको पीस गायके १० सेर दूधमें आंटा उसका  
 दही जमा विलो घी निकाल कर उसको वीर्य सम्बन्धी अगोंपर दिनमें दो  
 बेर मर्दन करनेसे और २ रती घी पानमें लगाके दिनमें एक बेर खिलानेसे



नपुंसकता मिटती है और पुरुषार्थ बढ़ता है, ( १९ ) पत्तोंके रसको घी निकाले हुए दूधमें मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( २० ) पत्तोंके गाढे किये हुए रसका लेप करनेसे कर्णामूलकी शोथ मिटती है ( २१ ) इसके पत्तोंको पानीमें ओटा पुलिटस बनाके सादे और पीपदार फोडोंपर बांधनेसे उनकी पीड़ा घट जाती है और वे जल्दी प्रक जाते है ( २२ ) इसके बीज अकलकरा और लोंगोंकी गोलियां बनाके खिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( २३ ) धतूरेके पत्ते और हलदी का लेप करनेसे स्त्रियोंके स्तनकी पिच शोथ मिटती है ( २४ ) धतूरेके पत्तोंका रस "बिलेडोना" की ठौर काममें आता है ( २५ ) इसके पुष्पोंको सुखा पीस चने प्रमाण गोलियां बना एक गोली नित्य खानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( २६ ) इसके पत्ते, नागरवेलके पान और काली मिर्च प्रत्येक गिनतीमें बराबर ले पीसे उबड़ समान गोलियां बना दिनमें दो बेर एक २ गोली देनेसे ज्वर छूट जाता है ( २७ ) इसके बीजोंकी एक मासे भस्म नित्य ७ दिन तक खिलानेसे पसीना आना बन्ध होजाता है ( २८ ) इसके बीजोंके चूर्णकी ४ चावलभर मात्रा ज्वर चढ़ने के एक घंटे पहिले देनेसे शीतज्वर छूटता है ( २९ ) इसके पुष्पोंके चूर्णको घी और मधुके साथ चटानेसे स्त्री गर्भको धारण करती है ( ३० ) इसके बीजोंके चूर्णकी आधी रतीसे एक मासे तक मात्रा सात दिन तक देनेसे पुस्तवाय ( हथेली और पगतलीमें पसीना ) आना मिटता है ।

संख्या ( २८४ )

( सं० ) धर्मनः, रक्तकुसुमः, गोत्रपुष्पः, धन्वनः ।

मौरवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	मैथिली
धामण	धामन	धामण	धामण	धामनागळ	धामन	धामन
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				G. arborea		

स्थान—घामणके वृक्ष हिमालयमें यमुनासे नैपाल तक मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें ब्रह्मा और सीलोनमें होतेहै ।

पाहचाने—इसकी ऊंचाई ३०, ३५ फुटकी होतीहै । इसकी पेदड़ खड़ी और सीधी होतीहै उसकी गुलाई ४, ५ फुटकी होतीहै । इसकी छाल आध इंच मोटी और खरदरी होतीहै इसकी कोमल डोलियोंपर या पत्तोंपर रूप होतेहैं । इसके मटर जितने बड़े फल लगतेहैं फागुनमें इसके पंचे गिर जातेहैं फिर पीछे चत्रमें नवीन आजातेहै ।

फूलने फलनेका समय—चत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं और जेठसे आसोज तक इसका फल पकतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) धमेन—चरपरा, उष्णा, कपेला, ग्राही, पीठा और रूक्ष है ( २ ) इसकी अंतर छालको दरगज पानीमें भिगो मल छान गाढा जप निकाल उस ५ तोले चत्रमें चीनारूके २ तोले आटेको मिलाके खिलानेसे आमातिसार मिटताहै ( ३ ) इसकी लकड़ीके चूर्णकी फकी देनेसे वमन होती है ( ४ ) अहिफेनके विषको उतारनेके लिये इसकी लकड़ीके चूर्णकी फकी देके वमन कराना चाहिये ( ५ ) कोंचकी फलीको छूनेसे जो दाह और खुजली होजातीहै उसको मिटानेके लिये इसकी छालका लेप करतेहैं ( ६ ) इसके छोटे फल जो अच्छे खट्टे होतेहैं वे खानके काममें आतेहैं ।

संख्या ( २८५ )

( सं० ) धवः, धुरंधरः, कषायः, धवलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धो, धोकड़ो	धावा, धौ	धौवदो	धावड़ा	धाउयागाछ	धौ, कहुवा	नारिजचेट्टु
द्राविड़ी	कनारिकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
	सिरिवह			<i>Avicennia latifolia</i> <i>Conocarpus latifolia</i>		

स्थान—यह मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, हिमालयमें रावीसे पूर्वकी

और मेलघाट, गोदावरीके ऊपरके भाग, और राजपूताना आदि कई देशोंमें होता है।

पहिचान—इसका वृत्त बड़ा और सुन्दर होता है, इसके पत्ते चौड़े और दोनों ओर से तीखे होते हैं, इसका फल एकजानेपर चिकना और चमकदार हो जाता है। इसके एक प्रकारका गोंद लगता है यह साफ, कुछ पीला, कभी मधुके रंगका जैसा और इसमें मेल मिल जानेसे भूरे रंगका और मूलके गोंदसे अधिक चपदार होता है। यह चैत्रमें इकट्ठा किया जाता है।

प्रयोग—(१) यह कड़वा कपेला, पित्तकारक, रोचक, दीपन, मधुर और शीतल है (२) विमूचिकाम इसका प्रयोग बहुत लाभकारी है (३) इसके गोंदको दरदरा पीस घीमें तल खाद्यमें जमाके खिलानेसे श्वेतप्रदर मिटता है (४) इसके पुष्प और समयका गोंद बराबर ले औंटा के पिलानेसे अतिसार मिटता है (५) पांडु, प्रमेह, कफ, पित्ताश और घातके रोगोंको मिटाता है (६) इसका फल ठण्डा, मीठा, कपेला, रुच्य, मलस्तम्भक और घातल है (७) इसके प्रयोगसे कफ और पित्तके रोग मिटते हैं (८) इसकी जड़ कड़वी, कपेली, पित्तकारक और दीपन है।

संख्या (२८६)  
( सं० ) धातकी, धालुपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
धावडाफल	धावई	धावणी	धायटी	धाइफुला	कुल्लधागुंदे	आरेपुवु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Woodfordia floribunda Grislea tomentosa		

स्थान—धायके वृत्त हिन्दुस्थानमें प्रायः सर्वत्र होते हैं।  
पहिचान—इसका बड़ा भांड होना है इसके लम्बी फैलनेवाली डालियें लगती हैं, इसके पत्ते एक दूसरेके सामने लगते हैं। इसके पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं। इसकी जंवाई १० फुटकी इससे भी कुछ अधिक होती है।

फूलने फूलनेका समय— माघसे चैत्र तक इसके पुष्प लगते हैं। इसकी कलिये और पत्ते रंगतके कषममें आते हैं इसके एक प्रकारका गोंद लगता है वह पानीमें फूल जाता है इसको "धावडी" गोंद कहते हैं। हाडोंती और मेवाड़में इस गोंदका संग्रह बहुत करता है।

प्रयोग—( १ ) यह चरपरी, उष्ण, शीतल, कपेली और स्तंभिनी है इसके सूखे पुष्प उच्चैजक और ग्राही है ( २ ) इति सार और आमातिसार मिटानेके लिये इसके सूखे पुष्पों के ७॥ मासे चूर्णकी मट्टके साथ फकी देनी चाहिये ( ३ ) रक्तप्रदर मिटानेके लिये इसके पुष्पोंको मधुके साथ चटाना चाहिये ( ४ ) घाबोंका पूय बंध करनेके लिये और उनमें अकुर पैदा करनेके लिये उनपर इसके पुष्पोंका चूर्ण बुस्काना चाहिये ( ५ ) पित्तके रोग मिटानेके लिये नोगीके मुंहमें तिखीका तेल भरके उसके शिरमें तालुकी ठौर पर इसके पत्तोंका रस लगा देना चाहिये इससे वह तेल पित्तको सोसके पीला हो जाता है जब वह तेल पीला होजाय तब उस तेलको मुहमें से निकालके फिर दूसरा तेल मुहमें भरलेवे जब तक तेल मुहमें पीला पड़ता जाय तब तक यह क्रिया करते रहना चाहिये। जब तेल पीला होना बन्ध होजाय तब छोड़ देना चाहिये ( ६ ) इसके पुष्प दण्डे ग्राही और उच्चैजक है ( ७ ) इसको पुष्पोंका शर्वत पिलानेसे रक्तार्श मिटता है ( ८ ) पुष्पोंके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है ( ९ ) पुष्पोंका शर्वत पिलानेसे दाह मिटती है ( १० ) पुष्पोंका काथ ३ दिन पिलानेसे रक्तप्रदर मिटता है ( ११ ) इसके पुष्पोंका बहेडे जितना कल्क तिलानेसे प्रदर रोग मिटता है ( १२ ) इसके पुष्पोंका गुलकंद बनाया जाता है ( १३ ) इसके चूर्णको अर्लसीके तेलमें मिलाकर लगानेसे आग्निदग्ध व्रण और मर्माश्रित नाडीव्रण और विपैत कीडोंके दंशके व्रण मिटते हैं ( १४ )

( सं० ) धान्यक, छत्रा, कुस्तुम्बरी, कुन्टी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धनिया	धनिया	धोणा	धिया	धनिया	धनिया	धनिया

द्राविदी	कर्नाटकी	‘अरबी’	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
कोत्तमलि	कोत्तमरि	“	किशनीज	Coriandrum Sativum	Coriander

स्थान—धनियां हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोयी जाती है यह अलग २ देशों में अलग २ अस्तुओंमें खेतोंमें बोयी जाती है।

पहिचान—इसके गुल्मकी ऊंचाई २, २॥ फुट होती है, इसके पत्ते कोमल और कटवां होते हैं, इसकी टहनियां और पत्तोंमें सुगंध होती है, इसके पुष्पोंका रंग सफेद होता है।

प्रयोग—(१) धनियां—मीठा, शीतल, कषेला, पित्तनाशक, दीपन, लघु, ग्राही, रोचक, हृद्य, नेत्रोंको हितकारी है, घबराहट और पेटकी बादीको मिटाता है। मूत्र, बल और पुरुषार्थको बढ़ाता है (२) सूखा धनियां या इसका तेल पेट की शूलको मिटाता है (३) इसको खानेसे श्वासकी दुर्गंध मिटती है (४) इसको सेककर खानेसे अतिसार मिटता है (५) उष्णकालके दिनोंमें जो ठंडाई बनाके पिया करते हैं उसमें धनियां मिलाना चाहिये (६) यह श्वासरोग में अच्छी उपकारी है (७) शीतलामें अखिमें जो अर्ली होजाते हैं उनको इसके काथसे धोते हैं (८) नेत्रके सफेद भागकी पुरानी सूजन मिटानेके लिये नेत्रोंको इसके काथसे छ्वाटते हैं (९) मदिराका मद और दुर्गंध कम करनेके लिये इसको काममें लाते हैं (१०) इसको और जौको पीस पुन्डिस बनाके देरीसे अच्छी होनेवाली सूजनपर बांधते हैं (११) मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीडा मिटानेके लिये इसका लेप करते हैं (१२) पुराने फोडे और अदीठपर इसका पुन्डिस बांधते हैं (१३) इसके हिम फाट या काथके कुल्ले करनेसे बच्चोंके मुंहके सफेद आले मिटते हैं (१४) भिलावेका तेल लगानेसे शरीरमें जो दाह, सूजन और ज्वोटीर अलाइयां होके बड़े २ घाव पड जाते हैं उनपर इसके गीले बूटेका रस लगाते हैं (१५) धनियोंको दूध और मिश्रीके साथ ओटाके पिलानेसे रक्तार्शका रुधिर बंध होता है (१६) इसको सेक, कूट, फटक, गुली निकालके खिलानेसे शरीरमें ठण्डाई और उचेजना पैदा होती है (१७) पित्तके रोगोंमें धनियेका प्रयोग किया जाता है (१८) इसका हिम पिलानेसे बच्चोंकी शूल मिटती है (१९) इसका ७ मासे अवलेह नित्य लेनेसे मस्तकपीडा, भ्रूल और चक्र मिटते हैं

( २० ) धनियां चवानेसे गलेकी पीडा मिटतीहै ( २१ ) इसको सिरकेके साथ पीसके लेप करनेसे गंज मिटतीहै ( २२ ) इसको औटाकर पीनेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका बहना बन्ध होताहै ( २३ ) धनियां हृदयका बल बढ़ाताहै ( २४ ) धनियां और आवलोंको रातभर भिगो उनको प्रातःकाल घोट द्यान मिश्री मिलाके पिलानेसे गर्मीकी मस्तकपीडा मिटतीहै ( २५ ) इसके चवानसे भिडका विप शान्त होजाताहै ( २६ ) धनियां और चांवल रात्रिमें भिगो प्रातःकाल उनका काथ कर मधु मिलाके पिलानेसे अंतरदाह और पित्तज्वर मिटता है ( २७ ) इसका कल्क वनाके खानेसे दाह शान्त होतीहै ( २८ ) धनिया, नेत्रवाला और पाठके काथसे बनाया हुआ भोजन खिलानेसे अतिसार, दाह और तृषा मिटतीहै ( २९ ) इसका और सोंठका काथ पिलानेसे पाचनशक्ति बढ़तीहै ( ३० ) धनिया, सोंठ और एरण्डकी जडका काथ पीनेसे आमवात मिटतीहै ( ३१ ) धनियेके पानीमें मधु और मिश्री मिला के पिलानेसे रोगसे पैदा हुई तृषा मिटतीहै ( ३२ ) इसको रातभर पानीमें भिगो उसको घोट द्यान मिश्री मिलाके पिलानेसे अंतरदाह मिटतीहै ( ३३ ) शीतपित्तके समय इसका काथ पिलाना बहुत लाभकारीहै ( ३४ ) गर्भवती स्त्रीकी वमन बन्ध करनेके लिये इसके कल्क और मिश्रीको चावलोंके पानीमें मिलाके पिलाना चाहिये ( ३५ ) बालकोंका कास और श्वास, मिटानेके लिये चावलोंके पानी के साथ धनियां और मिश्री पीसके पिलाना चाहिये ( ३६ ) धनियां और जौका सत्तू नित्य लगानेमें कठमाला मिटतीहै ( ३७ ) इसका अर्क सिरकेमें मिलाके लगानेसे भिडका विप उतरताहै ( ३८ ) ३॥ मासे धनियेमें १० मासे घूरा मिलाके खानेसे जोड़ोंकी पित्तकी पीडा मिटतीहै ( ३९ ) धनियां पीसके लगानेसे मस्त और तिल मिटतेहै धनियेके हरे पत्तों को कोथमीर कहतेहै इस की जटनी बनातेहै और कई शाकोंमें डालतेहै । १०० तोले हर धनियेका अर्क खैचनेसे ६ मासेसे तोलेभर तक उडनेवाला तेल निकलताहै ॥

मिटर

२५०

००

संख्या ( २८८ )

( सं० ) धूनराजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मस्तगी	मस्तिकी		रुमीमस्तगी	रुगिमातकी		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
			मस्तगी	<i>Pistacia Lentiscus.</i>	The mastle tree or Masticho	

स्थान—रुमी, मस्तिकीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होते हैं।

प्राहिधान—इसके वृक्षमें एक प्रकारका राल जैसा पदार्थ निकलता है जो पालि रंगका चमकदार और हल्की उत्तम सुगंधयुक्त होती है इसको रगड़ने से या अग्निकी ऊष्मा देनेसे इसकी सुगंध बढ़ती है।

प्रयोग—(१) मस्तकी ग्राही, कफनाशक और पौष्टिक है रक्तप्रदर, प्रमेह और दूत रोगको मिटाती है यह बहुधा साल्व मिश्रीके साथ दीजाती है (२) दांतोंकी रक्षा और श्वासका सुगंधित करनेके लिये इसको मुहमें रखते हैं (३) धातु बढ़ानेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग किया जाता है (४) यह उत्तजक और मूत्रवर्द्धक है (५) एक मासे मस्तिकीको १॥ ताले कंदकी चांसनीमें मिलाके दिनमें दो बेर घटानेसे मुहसे ज़ाबका गिरना बन्ध होजाता है।

संख्या ( २८६ )

( सं० ) घूम्रपत्रा, कृमिघ्नी, गृध्राणी, गृध्रपत्रा, स्त्रीमलापहा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कीडामार	फौडामारी	कीडामारी	गंधाणी			गाडिलेकडुपक
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आहुतिडा- पालि(इ)				<i>Aristolochia bractea.</i>	The bracted Birthwort	

स्थान—कीड़ामार यमुना और गंगाजीके किनारों पर और दक्षिण आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै, यह काली मिट्टीकी पृथ्वीमें बहुत होतीहै।

पहिचान—इसका हरेक अंग बहुत फड़वा होताहै।

प्रयोग—( १ ) यह-रसमें कंडवा, उष्ण, रोचक, दीपन, और कुमिना शकट ( २ ) इसके पत्तोंको बालककी नाभिपर बांधनेसे उसका बद्धकोष्ठ मिटताहै ( ३ ) इसके पत्तोंके काथमें एरंडका तेल डालके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै(४)इसके रसको घावमें निचोड़नेसे कीड़े मरजातेहै(५) इसका काथ पिलानेसे चारीसे अग्नेवाला, ज्वर छूट जाताहै ( ६ ) इसके पत्ते समुद्रफलके बीज, मालकैंगुनी और कालीमिरच इन सबको पीसके सब शरीरपर मर्दन करनेस दुष्ट वायु आदिमें पैदा हुआ ज्वर छूट जाताहै ( ७ ) इसकी जड़के चूर्णकी ६ मासकी फकी देनेसे गर्भाशयका मुख सुकड़ जाताहै ( ८ ) इसके पत्तोंको कूट पुन्डिम बनीके बांधनेसे फोड़के कीड़े मरतेहै ( ९ ) इसके सर्वा तौले पांगको २५ तौले आदत हुए पानीमें डालके दो तीन घंटे पड़ा रखे फिर उसको मसल ज्ञानके २॥ से ५ तौले तककी मात्रा देनेसे चारीसे आनेवाला ज्वर मिटजाताहै ( १० ) इसके २ ताजे पत्तोंको थोड़े पानीमें पीस २४ घंटोंमें १ बेर पिलानेमें मठोटीके साथ दस्तका होना बन्द होजाताहै ( ११ ) कीड़ोंके कारणसे जो बच्चोंके आतोंमें उपद्रव होजातेहैं उनको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये ( १२ ) विरचनके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये।

संख्या ( २६० )

( सं० ) नरसारः, नवसार, चूलिकालवणं, विदारणः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नोसादर	नवसादर	नवसार	नवसागर	निरादल	नसादर	नवक्षारमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
नवसार	नवसागर	नोसादर	नोशादर कानी	Ammonium Chloride		Bal Ammoniac



प्रयोग—( १ ) नोसादर, तीष्ण, पाचक, सारक और अत्यन्त उष्ण है ( २ ) पेशियोंकी सृजन पर इसका लेप करतेहैं ( ३ ) नारुकी सृजन पर इसका लेप करना चाहिये ( ४ ) इसके खिलानेसे नारु मिटताहै श्वासकी नलीके रोगोंको मिटानेके लिये इसको पानमें रखके खिलाना चाहिये ( ५ ) ५ से १० रती तक इसकी मात्रा देनेसे आधाशीशी मिटतीहै ( ६ ) इसकी १। मासे की मात्रा तीन २ घंटे के अन्तरसे तीन बेर देनेसे मस्तककी स्नायु सम्बन्धी पीडा मिटतीहै ( ७ ) यकृतके पित्त शोथमें नोसादरका प्रयोग बहुत उपकारीहै ( ८ ) ग्वोरपाठकी गिर पर नोसादर बुरकाके खिलानेसे तिष्ठी मिटतीहै ( ९ ) स्वरभंग मिटानेके लिये इसको कुल्लिजनके साथ पानमें रखके खिलाना चाहिये ( १० ) अइसेके काथ पर इसको बुरकाके पीनेसे कुत्ताधांसी मिटतीहै ( ११ ) इसको गोखरूके काथमें बुरकाके पीनेसे मूत्रकी नलीके रोग मिटतेहै ( १२ ) इसको कुटकीके साथ पीसके कनपटी और ललाट पर लेप करनेसे अधाशीशी मिटतीहै ( १३ ) इसकी ५, ५ रतीकी मात्रा दिन में ३, ४ बेर देनेसे यकृत सम्बन्धी कई रोग मिटतेहै ( १४ ) इसका लेप करनेसे कठकी सृजन विरर जातीहै ( १५ ) इसकी जवार जितनी मात्रा रूई में लपेट दांतोंके नीचे दवाके लाल टपकानेसे दंतपीडा मिटतीहै ( १६ ) नोसादर और हलदी मिलाके सूंधनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( १७ ) इसको महीन पीसकर अजन करनेसे मोतिया विन्द मिटताहै ( १८ ) ३ रती नोसादर और २ काली मिरचको पीसके बारीके दिन देनेसे ज्वर छूटताहै ( १९ ) इसको मधुमें मिलाके लेप करनेसे सफेद कोढ़ मिटताहै ( २० ) २ रती नोसादर और दो रती कालेदानेको पानीके साथ पीसके नाकमें टपकानेसे आधाशीशी मिटतीहै ( २१ ) नोसादर और फिट्करी दोनोंको महीन पीसके अजन करनेसे नेत्र रोग मिटतेहै ( २२ ) इसको तेलमें पीसके लगानेसे विच चिका मिटतीहै ( २३ ) इसको हरतालके पानीके साथ पीसकर दुग्धपर लगानेसे विच्छुका विष उतर जाताहै ( २४ ) इसको सिरकेमें पीसके गरारा करानेसे कंठमें चिपी हुई जोक गिर जातीहै ( २६ ) इसकी १॥। मासेकी मात्रा मूलीके जलमें मिलाके पिलानेसे या मूली और तिल बराबर पीसके वापनेसे तिली मिटजातीहै ( २७ ) नोसादर, सोहागा और चूना बराबर ले हथेलीमें

मलकर 'मुंघानेस' विच्छेका विप-उतर जाता है ( २६० ) इसको तेलमें गलाकर लेप करनेसे सफेद कोढ़ मिटता है ।  
 ( सं० संख्या ( २६१ ) )  
 ( सं० संख्या ( २६२ ) ) नलः, पोडगलः, पुष्पमृत्युः, मृदुच्छदः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नरसल	नरसल	भाली	देवनळ	नल	नरसल	किफस
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	देवनल			Phragmites, Roxburghii. Arunda, Karika		

स्थान—नरसल—छोटी नदी और नालोंके किनारोंपर और आर्द्रभूमिमें होती है । इसकी ऊंचाई २० सें. तक फुटते रहती है ।

नरसलके गुण—यह मीठी, कड़वी, कपेली, उष्ण, शीतल, रोचक, दीपन, वीर्यवर्द्धक और मूत्रशोधक है । योनिरोग, दाह, विसर्प, पित्त, मूत्रकृच्छ, रुधिरविकार, कफ, हृद्रोग, वस्तिशूल और रक्तपित्तको मिटाती है । इसकी जड़को पीस तेलमें मिला कुछ उष्णकर मर्दन करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है ।

संख्या-(२६२)

( सं० ) नवमालिका, अतिमादा, अण्मी, नवमालिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
		नेवरी	नेवाळी	वासतीफल		विरजाजि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	जाजि			Jasminum arborescend J. mutanum	The Aratrans Jasmine	

स्थान—ग्रह-दक्षिण हिन्दुस्थानके उष्ण और नीचे-पहाड़ोंमें और कमा-जंसे बंगालतक और सीलोन आदि बहुतसे देशोंमें होती है ।

प्रयोग—( १ ) नवमल्लिका, शीतल, मधु, लघु, वीर्यमें उष्ण और रसमें कड़वी है । मासिक धर्मके कई उपद्रवोंमें इसके प्रयोग किये जाते हैं ( २ ) गाढे चेपदार कफसे जो श्वासकी नली रुक आती है उसकी रूकावट मिटाने के लिये इसके ७ पत्तोंके रसमें कालीमिरच, और लहसन आदि दूसरे उष्ण जक पदार्थोंको मिला, पिलाके वमन कराना चाहिये ( ३ ) छोटे बच्चेके लिये इसके आधे पत्ते और अगस्तिके ४ पत्तोंके रसमें १ रत्ती कालीमिरच और २ रत्ती सूखा सोहागा मिलाके मधुके साथ चटाना चाहिये ( ४ ) इसके पत्ते थोड़े कड़वे, ग्राही, बलवद्धक और पेटकी शूल मिटानेवाले हैं ( ५ ) इसमें से एक प्रकारका उड़नेवाला तेल निकाला जाता है ।

## संख्या ( २६३ )

( सं० ) नागकेशरः, किञ्जल्कः, कनकाह्वम्, चास्पेयम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
केशर	नागकेशर	नागकेशर	नागकेशर	नागेश्वर	नागकेशर	नागकेशरालु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
नागकेशर	नागकेशररी			Mesua Ferrea M. Speciosa.	Cobra's saffron.	

स्थान—नागकेशरके वृक्ष पूर्वी बंगाल, पूर्वी हिमालय, आसाम ब्रह्मा, दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन आदि हिन्दुस्थानके कई भागोंमें पाये जाते हैं ।

इसके कोमल फूलके नीचे चरपरी सुगंधवाला रसल जैसा एक पदार्थ लगता है और इसकी छाल या जड़में छेद करनेसे भी वही पदार्थ निकलता है इसके पुष्पाकी कलियें रंगतके काममें आती हैं ।

फूलने फलनेका समय—चैत्र, वैशाखमें इसके पुष्प लगते हैं, अषाढ़ और श्रावणमें कुछ लाल और सल पड़े हुए फल लगते हैं ।

प्रयोग—( १ ) नागकेशर-थोड़ी उष्ण, लघु, कड़वी, रुच और कफ-

शक है और इसके सूखे पुष्प आही हैं (१२) आमामशय की पीडा, तृषा, आमामशयकी दाह और अधिक प्रसीना आना आदि रोगोंको मिटानेके लिये काममें आते हैं (३४) रक्तार्शका रुधिर बन्ध करनेके लिये नागकेशर और शकरको पीस मस्खनमें मिलाके लगाना चाहिये (४) इस लेपको पगथली पर लगानेसे परोंकी दाह मिटती है (५) इसको चटानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध होजाता है (६) जिसके बहुत कफ गेरता हो उसको नागकेशरके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (७) नागकेशर और इसके पत्तोंको पीस सर्पके दंश पर लेप करनेसे विप उत्तरता है (८) नागकेशरके वृत्तकी छाल थोड़ी आही है (९) इसके वृत्तकी छालको सोंठके साथ देनेसे प्रसीना आता है (१०) इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटती है (११) इस तेलको घाव पर लगानेसे घाव भर जाता है (१२) प्रामा और त्वचाके दूसरे रोग मिटानेके लिये इस तेलका मर्दन करना चाहिये (१३) पांव और धिगड़े हुए जिन घावोंमेंसे दुर्गंध युक्त पीप निकलता हो उसपर इसका तेल लगाना चाहिये (१४) शरीरको कुश करनेवाले रोग छूटनेके पीछे की निर्बलता मिटानेके लिये इसकी छाल और जड़का प्रयोग करना चाहिये (१५) नागकेशरके चूर्णको आद्यके साथ पीने और तक्रोदन भोजन करनेसे श्वेतप्रदर मिटता है (१६) गतासरे महीनेमें गर्भ गिरनेका भय होवे तो इसकी चूर्णमें मिश्री मिलाकर दूधके साथ फकी देनी चाहिये (१७)

संख्या (३६४) हिन्दी (सं०) नागदमनी, नागपत्रा, नागपुष्पी, मदघनी, दुर्धषी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कालीनगद	नागदमनी	नागदमनी	नागदवण	नागदनी	नागदीन	
श्राबिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	नागदमनी			<i>Artemisia vulgaris</i> India	Indian worm wood Flea-bane	

इस स्थान पर यह विदुषा हिन्दुस्थानके पहाड़ोंमें होती है । प्रयोग (१७) नागदमनी, कड़वी, लण्डा और चरपरी है । निर्बलताके

कारणसे पैदा हुई रगोंकी ऐठन या बाइटे मिटानेके लिये इसके पत्ते और कोंपलोंका काथ पिलातेहै ( २ ) फोड़ोंके भी इसी काथका बफारा देतेहै ( ३ ) छोड २ के अनेवाले ज्वरको मिटानेके लिये इसका काथ पिलातेहै ( ४ ) इसके काथसे मन्दाग्नि मिटतीहै ( ५ ) इसके काथपर हींगबुरकाके पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहै ( ६ ) दालचीनीके साथ इसका काथ करके पिलानेसे पेटका दर्द मिटताहै ( ७ ) इसका काथ पिलानेसे बच्चोंकी खांसी मिटतीहै ( ८ ) इसका अर्क बच्चोंके शिरपर चुपडनेसे उनकी कंफवायु मिटतीहै ( ९ ) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसके काथमें मधु मिलाके पिलातेहै ( १० ) शतावरी के साथ इसका काथ करके पिलानेसे बल बढ़ताहै ( ११ ) यकृतके रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसको लेप करना चाहिये और उनकोही काथका बफारा देना चाहिये ॥

संख्या ( २६५ ) । ( ५९ ) स्थान प्रायतः हिन्दुस्थान । ( ६० ) ( ६१ ) ( ६२ ) ( ६३ ) ( ६४ ) ( ६५ ) ( ६६ ) ( ६७ ) ( ६८ ) ( ६९ ) ( ७० ) ( ७१ ) ( ७२ ) ( ७३ ) ( ७४ ) ( ७५ ) ( ७६ ) ( ७७ ) ( ७८ ) ( ७९ ) ( ८० ) ( ८१ ) ( ८२ ) ( ८३ ) ( ८४ ) ( ८५ ) ( ८६ ) ( ८७ ) ( ८८ ) ( ८९ ) ( ९० ) ( ९१ ) ( ९२ ) ( ९३ ) ( ९४ ) ( ९५ ) ( ९६ ) ( ९७ ) ( ९८ ) ( ९९ ) ( १०० )

मारवादी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नारंगी	नारंगी, संतरा	नारंगीलिबु	नारंगी	नारंगीलिबु	नारंगी	किच्चलिपरुडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आरंजिप्लं	कित्तळेहसु		नारंग	Citrus-Aurantium	Orange	

स्थान—नारंगीके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं ।  
 फूलने फलने का समय—हिन्दुस्थानमें बहुधा मार्गशीर्षसे फागुन तक नारंगी पकतीहै, परंतु नारायणपुरमें नारंगीके एक प्रकारके ऐसे वृक्षहैं जो बारह महीनेमें दो बार फलते फूलतेहैं अर्थात् माघमें पुष्प निकलके जो फल लगतेहैं वे फागुन और चैत या वैशाखमें पकतेहैं और जो अषाढमें पुष्प निकलके जो फल लगतेहैं वे काती से पोष तक पकतेहैं यह दो प्रकारकी होतीहै । एक खट्टी और दूसरी मीठी, जिसका नारंगीका, खिलकाना पतला और चिकना हो और

जितनी अधिक बड़ी हो उतनी ही सबसे अच्छी होती है नारंगीके वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगता है ।

प्रयोग—(१) नारंगी-उष्ण, खट्टी, पचनेमें भारी, सारक, मीठी, रूक्ष, हृद्य, रोचक, दीपन और पाचन है (२) नारंगीकी फाकका छिलका पेटकी शूल मिटाता है और बल बढ़ाता है । यह साधारण मंदाग्नि और सब शरीर की निर्वलताको इसी कामकी दूसरी औषधियोंके योगसे मिटाता है (३) नारंगीके छिलकेका हिम, फाट, काथ और शरवत काममें आते है (४) नारंगीके पुष्पोंका खंचा हुआ २॥ या ५ तोले अर्क पिलानेसे मांडटे मिटते है (५) स्नायु जालकी ऐठन और स्त्रियोंके आवेशका रोग मिटानेके लिये नारंगीके पुष्पोंका खंचा हुआ अर्क पिलाना चाहिये (६) पीनेकी चीजोंको स्वादिष्ट करनेके लिये नारंगीके पुष्पोंका शरवत काममें आता है (७) नारंगीका छिलका और पुष्प उष्ण और रूक्ष होते है (८) नारंगीकी गिरी ठडी और रूक्ष होती है (९) सर्दीके कारणसे जो ज्वर हुआ हो और जिसमें खासी कफ हो उसको मिटानेके लिये थोड़ी २ नारंगी खिलानी चाहिये (१०) नारंगीकी फाकका गुदा निकाल उस पर चूरा बुरका उसको सेक कर पिलानेसे ज्वर और खासी आदि रोग मिटते है (११) इसका अर्क पिलानेसे पित्तके विकार मिटते है (१२) इसका शरवत पिलानेसे पित्तका अतिसार मिटता है (१३) नारंगीकी खटाई उपद्रव नहीं करती है (१४) इसके छिलकेका चूर्ण चटानेसे वमन मिटती है (१५) इसके काथमें हींग बुरकाके पिलानेसे पेटके कीड़े मरते है (१६) नारंगीका पुण्डिस बाधनस त्वचाक रोग जस कि शरीरपर एक प्रकार के दाद जिनके भीतरका भाग सफेद होता है और ऊपर खरूंट रहता है वे मिटते है (१७) नारंगी त्रिपका और दुग्धस जो उपद्रव होते है उनको मिटाती है (१८) नारंगी का खंचा हुआ अर्क पीने से उत्तेजना बढ़ती है और चित्त प्रसन्न होता है (१९) चिरायते के अर्क में नारंगी का शरवत मिलाके पीनेसे रुधिर शुद्ध होता है (२०) ज्वरकी वृषा मिटानेके लिये जलमें थोड़ा नारंगीका शरवत मिलाके पिलाना चाहिये (२१) नारंगीकी फाकपर सोंठ बुरकाके खिलानेसे भूख बढ़ती है (२२) नारंगीके छिलके का काथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटता है (२३) उष्णकालमें नीचूके शरवतकी अपेक्षा

नारंगीका शरवत पीना अच्छाहै क्योंकि इससे कोई उपद्रव नहीं होताहै और नींबूके शरवतसे हानिकारक विसूचिका होनेका भयहै ( २४ ) नारंगीकी छालका काथ पिलानेसे पेटकी वादीकी पीड़ा मिटतीहै ( २५ ) इसकाथपर सोंठ और कालानमक दुरकाके पिलानेसे मंदाग्नि और अफारा मिटताहै ( २६ ) नारंगीकी गिरको सेकके विगडे हुए फोड़ेपर बाधतेहैं ( २७ ) नारंगीके ताजे छिलके को गुंहर पर मलनेसे मुखदूषिका मिटतीहै ( २८ ) इसके छिलके को पीसके जलके साथ मर्दन करनेसे एक प्रकारकी फुन्सियां मिटतीहै ।

संख्या ( २८६ )

( सं० ) जाम्बूवल्ली, ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागलता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुड़ी
नागरवेल	नागरवेल	नागरवेल्लय	नागवेल	पानगाठ	नागरवेल	तमलपाकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
वोचिलै	विलेदेलै		तम्बोल	<i>Elter Belle</i> <i>Chavice Belle</i>	Bétel leaf	

स्थान—नागरवेल हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और अधिक आद्र भागों में बोई जातीहै । इसकी मुख्य तीन जातेंहैं, बगला, संची और कपूरी ।

प्रयोग—(१)नागरवेलके पान-कड़वे, चरपरे, मधुर, सलौन, कपले, रोचक, तीक्ष्ण, सारक, बल्य, हृद्य, दीपन, पाचक और निदोपनाशकहै पान बहुधा बीड़ी वनाके खानेके काममें आतेहै । कई मनुष्य इनमें चूना, कत्था, सुपारी रखके और कई इनके सिवाय लोंग, जायफल, इलायची, भीमसेनी कपूर आदि कई प्रकारके सुगन्धित पदार्थ रखकर खातेहै पानबीड़ा खानेसे एक प्रकारकी उत्तेजना और चित्त प्रसन्न होताहै जिनके पान खानेका व्यसन होजाताहै उनको नहीं खानेसे वायुद आन लग जातीहै और एक प्रकारकी निर्बलता प्रतीत होतीहै ( २ ) पान पेटकी वादी मिटानेवाला उत्तेजक और ग्रन्थी है इससे श्वासमें मिठास होजाताहै । बोली स्पष्ट होजातीहै और मुखकी

सर्वप्रकारकी दुर्गन्ध मिट जाती है ( ३ ) यह पुरुर्पाथ बढ़ाता है वफके रोगोंमें नागरवेलके पानोंका प्रयोग बहुत अच्छा है ( ४ ) इसके रसमें खासी मिटाने वाली औषधियोंको रखकरके गोलियां बनाके देनेसे खासी मिटती है ( ५ ) पानकी हंडीके ऊपर तेल चुपडके बालफकी गुदामें देनेसे दन्तकी रुकावट मिट जाती है ( ६ ) बच्चेका आत्मान मिटानेके लिये भी यह प्रयोग किया जाता है ( ७ ) कनपटियों पर नागरवेलके पान बांधनेसे मस्तककी बायुकी पीड़ा मिटती है ( ८ ) मांसपिंडोंकी सृजन और पीड़ा मिटानेके लिये उन पर पानको तेलसे चुपड आग्नि पर तपाके बांधना चाहिये ( १० ) स्तनों पर नागर वेल के पान बांधनेसे दूधका संचार मिटजाता है ( ११ ) विगडे हुए फोड़ों पर पान बांधना चाहिये ( १२ ) इसके फलको मधुके साथ चगनेसे खासी मिटती है ( १३ ) गर्भ रहना बन्ध करनेके लिये इसकी कोमल जड़ोंको काली मिर्चके साथ पीसके प्रयोग करना चाहिये ( १४ ) पानोंका ३॥ मासे उष्ण किया हुआ अर्क दिनमें २, ३ घेर पिलानेसे ज्वरका आन्ध बन्ध होता है ( १५ ) बच्चेका अजीर्ण मिटानेके लिये पानका अर्क पिलाना चाहिये ( १६ ) स्त्रियों का आवेशका रोग मिटानेके लिये पानका अर्क दूधमें मिलाके पिलाना चाहिये ( १७ ) पानके अर्कमें कपासकी जडकी लुगदी बना उसमें हीरेको रख करहु मिट्टी देके गजपुटकी आंच देनेसे हीरेकी भस्म हो जाती है ( १८ ) बच्चोंका प्रतिश्याय और हृदय सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये पानको तेलसे चुपड आगसे तपाके उसको छातीपर रख फिर उराके ऊपर ५, ७ पान रखकर पट्टी बाधदेना चाहिये ( १९ ) इसी प्रयोगसे बच्चेकी खासी और कठिनतासे श्वास लेना मिटजाता है हृदय और यकृतमें जो रुधिरका जमाव हो वह बिखर जाता है और अन्य रोगभी मिट जाते हैं ( २० ) पेटकी शूल मिटानेके लियेभी उक्त रीतिसे पान बांधने चाहिये ( २१ ) आर्द्र पृथ्वी और देशके दूषित जल वायुसे होनेवाले विकार पान खा देनेवालेके नहीं होते हैं ( २२ ) निर्बल मनुष्योंको पानका सेवन कराना चाहिये ( २३ ) यह सब शक्ति आर्द्र पानोंमें हाती है- सूखजानेसे सध जाती रहती है- क्योंकि इनमें उड़नेवाली एक तेल है उसमें रोग मिटानेवाली ये सब शक्तियाँ हैं ( २४ ) पानका अर्क भगकेमें खंचनेसे इसका तेल अर्कके ऊपर तैर आता है। इनमेंसे दो प्रकारके पीले तेल निकलत हैं एक भारी और दूसरा हलका। इन तेलोंमें पान-



कीसी एक विशेष भांतिनी, सुगंध होतीहै परन्तु हल्के तेलमें अधिक सुगंध होतीहै ( २५ )-पानोंमें से एक प्रकारका जार और लवण निकालतेहैं वे कुछ कडवे होतेहैं और उनके सेवनसे मुंहसे, पानीका वहना बढ जाताहै हृदयका धडकना कम हो जाताहै और विरेचन लग जाताहै ( २६ ) आंखमें पानके अर्ककी बूटें डालनेसे उसकी वादीकी पीडा मिटजातीहै ( २७ ) मस्तिष्कमें रुधिरके जमावको विखेरनेके लिये, पानका अर्क सुंघाना चाहिये, ( २८ ) पान खानेसे तृषा कम पड़ जातीहै ( २९ ) पानका रस उत्तेजकहै ( ३० ) पानके रसका अजन करनेसे रतांधा, और आंखके सफेद भागके रोग मिटतेहैं ( ३१ ) गलेकी पीडा मिटानेके लिये पानपर, कडवा तेल चुपड़, अग्निसे तपाकर वांधना चाहिये ( ३२ ) भासकी नलीको शुद्ध करनेके लिये बंगला पानका प्रयोग बहुत अन्धाहै, ( ३३ ) पानकी जड़ और मुलाहटीको पीस मधुके साथ चटाने से प्रतिश्यायसम्बन्धी रोग मिटतेहै ( ३४ ) गवैये लोग अपनी राग साफ करने और सुधारनेके लिये इसकी जड चूसा करतेहै ( ३५ ) पानके रसको मधुके साथ चटानेसे बच्चोंकी सूखी, खांसी मिटतीहै ( ३६ ) पानोंके शर्वतमें दूसरी चरपरी चीजें अर्थात् उष्ण वेसवार मिलाके या उष्ण वेसवारके साथ पानका शरवत बनाके ढाई ढाई तोले दिनमें तीन त्रेर पिलानेसे सब शरीरकी निर्वलता मिटतीहै ( ३७ ) इसके रसमें, कबूतरकी बीट मिलाके पिलानेसे गर्भसाव बन्ध होजाताहै ( ३८ ) तांबूल भक्षण करनेसे जटम्भाका वेग रुकताहै ( ३९ ) इसका शरवत पीनेसे हृदयका बल बढताहै कफ और मन्दाग्नि मिटतीहै

संख्या ( २७६ )

( सं० ) नाडिका, नाडीशाक, नाडीकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	पटुआसाग	नालनिभांजी	नाडीशाक	नालितशाक	पटुशाक	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Corchorus oleratus</i>	<i>Jem mallow</i>	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत और कोई जाती है।  
 प्रयोग—( १ ) इसको सूखी या गीलीको जला उस भस्मको थोड़ी मधुके साथ चटानेसे तिल्ली आदि यंत्रोंके बहावकी रुकावट मिटजाती है ( २ ) इसके पत्तोंका हिम या फांट-पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटती है—( ३ ) इसके पत्तोंका हिम-पिलानेसे बल बढ़ता है ( ४ ) तीव्र आम्रातिसार-मिटनेके पीछे-भूख, ल-गाने और शक्ति-बढ़ानेके लिये इसका प्रयोग निरुपद्रव उपकारी है ( ५ ) इसके तीन रती, चूर्णमें तीन रती हल्दी, मिलाके फकी देनेसे तीव्र आम्रातिसार मिटता है ( ६ ) इसके पत्ते शाकके काममें आते हैं ॥

संख्या—( २६६ )

( सं० ) नारिकेलः, उच्चतरः, जटाफलः, तुणाराज ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलड़ी
नारेल	नारियल	नारियर	नारळी/नारळ	नारिकेल	नारियल	टेकाईचट्टु
द्रविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तेगाई	तेगिनमर		नारगील	<i>Cocos nucifera</i>	The cocoanut palm. Cocconut.	

स्थान—इसके वृक्ष सिन्धुके नीचेके भाग बंगाल और मैसोर आदि बहुतसे देशोंमें होते हैं।  
 फूलने फलने का समय—उष्णकालमें इसके पुष्प लगते हैं। भादवेसे कार्तिकतक इसके फल-पकते हैं।  
 इसके एक प्रकारका गुँदा लगता है, नारियलकी ढाढी और पत्तोंकी इन्डियोंमेंसे एक प्रकारका रस निकलता है।  
 प्रयोग—( १ ) नारियल-पचनेमें भारी, सिग्ध, शीतल, वृष्य, बल्य, रस और विपाकमें मधुर, हृद्य और मदकारक है। नारियलका कच्चा खोपरा बगदा होता है ( २ ) इसके पुष्प-ग्राही होते हैं ( ३ ) नारियलकी ताजी गिरी मेंसे निकाला हुआ तेल काढमंडलीके तेलकी और काममें आसकता है ( ४ )

नारियलका दूधिया पानी अच्छा स्वादिष्ट, ठण्डा और शान्ति करनेवाला है (५) इसको ज्वरमें पिलानेसे ज्वरकी तीव्रतासे पैदा हुई घबराहट मिटती है (६) इसके पिलानेसे अधिकतृप्ता मिटती है (७) मूत्रसम्बन्धी उपद्रवों को मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है (८) इसकी मात्रा नियत नहीं है इसके सेवनसे रुधिर शुद्ध होता है (९) इसका अधिक सेवन करनेसे अंडकोषमें पानी भरकर शोथ पैदा होजाती है (१०) कच्चा खोपरा ठण्डा शरीरको पुष्ट करनेवाला और मूश्वर्द्धक है (११) पका खोपरा कड़ा और पचनेमें भारी होता है (१२) पके खोपरेको महीन कूट थोड़े जलसे पीस दवा के निचोडनेसे एक दूध जैसा पदार्थ निकलता है उसका स्वाद दूधसे बहुत मिलता हुआ होता है और दूधकी ठौर काममें आसकता है । इस दूधको आध पावसे प्रावभर तक दिनमें दो तीन बेर पिलानेसे शरीरकी, निर्बलता और बिगडी हुई दशा मिटती है (१३) कफजन्तके प्रारम्भमें इस दूधका पिलाना बहुत उपकारी है (१४) इस दूधको काफीमें गांयके दूधकी ठौर काममें ला सकते हैं (१५) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे यह सारकषणका काम करता है और कभी २ अधिक विरेच लगा देता है इसलिये इसको परंढके तेल और दूसरे उत्क्रेद करने वाले (जी मचलानेवाले) विरेचनकी ठौर काममें लाते हैं (१६) पके खोपरेका नारिकेल खंड बनाते हैं जिसके सेवनसे मंदाग्नि, हृदयकी पुरानी दाह और स्वन रोग मिटता है (१७) नारेलीके टुकड़े कर उनको हंडीमें भर पाताल यन्त्रसे उनका चौवा निकालते हैं वह दादके ऊपर लगानेके काममें आता है (१८) नारियल के तेलसे एक सफेद बड़ा साबुन बनता है जो मोलमें सस्ता पड़ता है । इसका पलस्तर और लेप बनाते हैं (१९) पके खोपरेमें से निकाले हुए दूधमें तेल डाल ओटाकर एक प्रकारका तेल बनाते हैं उसको अग्निसे जले हुए पर और गंज पर लगाते हैं (२०) इसकी गिरीको कूट पानीमें ओटाके तेल निकालते हैं या गिरको महीन पीस किमी यंत्रमें दवाके तेल निकालते हैं परन्तु यह तेल मृगफली और तिल्लीके तेलसे गुणमें हल्का होता है खोपरेमें से निकाला हुआ अपके तेल नहीं खिलाना चाहिये (२१) इसकी सवा सवा तोलेकी मात्रा दिनमें तीन बेर दे सकते हैं, यह मर्दन करनेसे जल्दी मूख जाता है (२२) इस तेलमें आमलीके बीजाका तेल मिलाके या बडी कालीमिरच मिलाके गठिया

की सृजन पर लगाने चाहिये ( २५ ) इस तैलके लगानेसे बाल बढ़तेहैं, या जिसके बाल खिरतेहैं, उसको चाहिये कि यह तेल बालोंके लगाया करे ( २६ ) ज्वर छूटनेके पीछे-या-शरीरको निर्वन करनेवाले, रोगों-में जिसके बाल खिरतेहैं, उसको चाहिये कि यह तेल बालोंके लगाया करे ( २७ ) मेद-रोगवालेको, यह तेल-पिलाना चाहिये ( २८ ) इसके पिलानेसे कीड़े मरतेहैं ( २९ ) जिसको दस्त लगतेहैं-उसको भूखा रख इस तेलको गर्मकर, कुछ शक्कर-मिलाके, पिलाना चाहिये ( ३० ) खांसीवालेको खोपरेका दूध, बनाके पिलाना, और खोपरा खिलाना चाहिये ( ३१ ) फेफड़ेके रोगोंमें बहुधा ये दोनों प्रयोग अच्छे उपकारीहैं ( ३२ ) यंत्रमें दूधके निकाले हुए तेलसे खोपरेका-जलके साथ निकासना हुआ दूध अच्छाहै और इस दूधके सेवनसे कफ-क्षपके १००-रोगियोंमें से कम से कम ६६ रोगी अच्छे होजातेहैं और उनका शरीर पुष्ट होजाताहै ( ३३ ) बिना प्रयोजन बहुत दिनों तक इसका लगातार सेवन करनेसे पाचनशक्ति विगड जातीहै और अतिसार होजाताहै ( ३४ ) जहरी सपोंके काटेहुए मनुष्योंको इस तेलका सेवन कराना चाहिये ( ३५ ) इसका खैचाहुआ ताजा रस शान्ति और मूत्रवृद्धि करताहै ( ३६ ) इसकी कोमल-जड़ और सोंठको छोटा छान, नमक घुरकाके पिलानेसे ज्वर छूट जाता है ( ३७ ) नारियलकी, शाखाके तीचेके भागमें बाहिरकी ओर रुई जैसा एक कोमले इन्के भूरे रंगका पदार्थ चिपका रहताहै इसको नारियलकी रुई कहते हैं-उसको रुधिर-बन्ध करनेके लिये घाव, चोट और-जोंकके डंक, पर लगातेहैं ( ३८ ) इसकी जड़, मूत्रवर्द्धकहै और गर्भाशयके रोगोंमें उपकारीहै ( ३९ ) इसकी जड़के कायके कुल्ले करानेसे गलेका दर्द - मिटताहै ( ४० ) इसके पत्तोंकी भस्म और इसका सार, औषधीके-प्रयोगमें काम आतेहैं ( ४१ ) नारियलकी डाढी-ओंदाके भोजन किये पहिले-पिलानेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै ( ४२ ) नारियलके कच्चे-फलका रस खट्टी-डकार और पकाशय की-दाहको मिटाताहै ( ४३ ) नारेलीका चौरा लगाने से पांव और त्वचाके दूसरे कृमि सम्बन्धी रोग मिटतेहैं ( ४४ ) विमूचिकाकी तृपा मिटानेके लिये नारियलका जल पिलाना चाहिये ( ४५ ) विमूचिकाकी वमन दूसरी औषधियोंसे बन्ध नहीं होवे तो नारियलका जल पिलानेसे श्वश्रय बन्ध होजातीहै ( ४६ ) ताजे खोपरेमें

से निकाले हुए तेलकी मात्रा २० से ३० बूंद तक दिनमें तीन बेर देना चाहिये पीछे उसको धीरे २ पौने चार मासे तक बढ़ा देना चाहिये ( ४७ ) खोपरेकी भस्म अम्लपित्तको मिटाती है और पाचनशक्ति बढ़ाती है ( ४८ ) इसके वृक्षमें से एक प्रकारका मीठा मादक रस निकाला जाता है वह बहुत शान्तिकारक और सारक है ( ४९ ) यह रस गर्भवती स्त्रीको हर समाहमें दो तीन बेर लगातार ६ महीने तक देते रहनेसे गर्भम बालकका रंग पलट जाता है अर्थात् काले रंगके मा बापोंके बालकका रंग पका होजाता है और पके रंगवालोंके बालकका रंग गौरा और गौरे रंगवालों के बालकका रंग विलायतिया जैसा हो जाता है ( ५० ) नारियलके पुष्पोंके गुल्फुदमें खस और सफेद चन्दनका चूरा और कुछ पानी मिलाके पिलानेसे पित्तज्वर में बहुत लाभ होता है, वमन मिटती है, कलेज में शीतलता ( ठंडाई ) होती है, अतिसार, आमोतिसार और मुखपाक मिटता है ( ५१ ) नारियलकी डाँडीकी भस्मको पानीमें घोल उस नितरे हुए पानीको पिलानेसे हिचकीका आना बन्ध होजाता है ( ५२ ) चोटकी पीड़ा मिटानेके लिये और चोटकी गाँठकी शोथ उतारनेके लिये उसपर महीन कूटी हुई पुराने नारियलकी गिरमें चौथा भाग पीसी हुई इल्दी मिला गमकर पीटली बांधके सेक करना और उसीको बांध देना चाहिये ( ५३ ) नारेलके पानी की नस्य लेनेसे सूर्यावर्त मिटता है ( ५४ ) दूध पीनेवाले बालककी माको नारियल की गिर ७ दिन खिलानेसे उस बच्चेको शीतला कम निकलती है ( ५५ ) बालक होनेके पीछे गर्भाशयमें पीडा होती हो तो खोपरा खिलाना चाहिये ( ५६ ) नारेलीके टुकड़ोंका पाताल यंत्रसे जो तेल निकालते है उसको नारेलीका चौवा कहते है । यह त्वचाके रोगोंमें काम आता है ( ५७ ) इसके १ तोले ताजे तेलमें एक मासा सैधानमक मिलाके नस्य देनेसे मस्तकपीडा मिटती है । नारियलकी १०० तोले गिरोंमेंसे ३० से ५० तोले तक तेल निकलता है यह तेल सफेद और मीठा होता है इसके ताजे तेलमें अन्डी सुगन्ध आती है यह थोड़े दिनोंके पीछे बिगड़ जाता है परन्तु साफ करनेसे जल्दी नहीं बिगड़ता है ।

संख्या ( २६६ )

( सं० ) आधिनारिकेल ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	भरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
जहरी नारेल	दर्याई नारियल		जहरी नारेल			समुद्र पुटेकाय
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
			नारगील नारजील	Lodicea sechellarum Lodicea mychellarum	The sea coconut. The double or marine coconut	

स्थान—दर्याई नारियलके वृक्ष मंडैगैस्करके उत्तर पूर्वके शिसुली समूहके दो तीन पहाड़ी टापुओंमें होतेहैं ।

पहिचान—इसकी वृक्ष बड़ा होताहै इसके शिर पर १२ से २० तक बड़े पत्ते होतेहैं इसके २० से २५ सेर तक बहुत बड़ा फल लगताहै जो बहुत वर्षामें पकताहै ।

प्रयोग—( १ ) दर्याई नारियल विपनाशक और बल वर्द्धकहै ( २ ) इसकी गिरीको स्त्रीके दधम विसके दिनमें दो बेर देनेसे मातीजरा छूटताहै ( ३ ) इसकी गिरीको लेप करनेसे मसूडाके रोग मिटतेहैं ( ४ ) इसको कुचिले की जड़के साथ भिलाकर पिलानेसे बच्चोंकी शूल मिटतीहै ( ५ ) इसको पानीमें पीस कर पिलानेसे हेजेकी दस्त और उल्टी मिटतीहै ( ६ ) इसके कच्चे फलका पानी पीने या कच्चे दर्याई नारियलकी गिरी खानेसे पित्तके विकार मिटतेहैं ( ७ ) भोजनके पाछे इसकी कच्ची गिरी खानेसे खट्टी डकार आना बन्ध होताहै ( ८ ) इसका पका हुआ फल साउकहै ( ९ ) यह फल जब तक कच्चा रहताहै तब तक इसके भीतरका उपदार गुदा खानके काममें आताहै ( १० ) इस वृक्षके अन्तका ऊपरका भाग खानेके काममें आताहै ( ११ ) उपदंशकी टांकी पर इसका लेप करतेहैं ( १२ ) इसकी एक मासा गिरी पीसके पिलानेसे सब प्रकारके विप उतरते है ।

संख्या ( ३०० )

(- सं० ) नाही ( १०० )

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
	नाही	कडवीनई	कडवीनाई			
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Corallocarpus epigoea.		
				Bryonia epigoea.		

स्थान—नाहीकी वेलें पंजाब, सिन्ध, गुजरात और दखन प्रायद्वीपमें वेलगांव तक होती है।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होती है एक मोठी और दूसरी कडवी। इसकी जड़की मोटाई और लम्बाई सब ठौरसे एकसी नहीं होती है यह बांध करले की जडसे बहुत मिलती है और शलगमसे बहुत बड़ी होती है उसपर ऊपरस कुछ पिलास लियेहुए सफेद कुछ उठेहुए गोल चकर होते हैं। यह स्वादम कडवी चपदार और खट्टी होती है जब इसको काटते हैं तब इसमें से गाढा रस निकलता है वह तुरन्त गाढ जैसा कड़ा होजाता है। इसके पत्ते नागरवलके पत्ते जैसे होते हैं कडवीके फल भडबरे से कुछ बड़े और मोठे फल नीचे जैसे होते हैं उनका रंग जर्द कुछ श्याही लिये होता है जडमेंसे एक प्रकारका कंद निकलता है इसका भी रंग फलों जैसा होता है इसके पुष्पाकी मजरीसी लगती है इसका फल मधकी गरजकी आवाजसे फटता है और तबही उगता है इसके फलको गरजफल कहते हैं।

प्रयोग—(१) नाही-कडवी, कपेली, चामक, रेचक और उष्ण है (२) रुधिरको शुद्ध करके उपदंश मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है। इसके ४ मासे चूर्णकी फकी दिनमें एक बर देनी चाहिये (३) उपदंशकी पिडली अस्थामें इसकी ४ मासेकी फकी दिनमें एक बर १० दिन तक देनेसे मल के एक या दो ढाले दस्त होके उपदंशकी चांटी मिट जाती है (४) जीरा, प्याज और नाहीके कदको एरडके तेलमें पीसके लेप करनेसे पुरानी गठिया

मिटती है ( ५ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी लेनेसे और उसको घिसके सर्प के दंश पर लगाने से सर्प का विष उतरता है ( ६ ) वायविद्ग और इसके चूर्णकी फकी देनेसे पेटके कीड़े मरतेहै ( ७ ) कड़वीनाहीका कंद चामक, रेचक और शोथ नाशकहै ( ८ ) भीठी नाहीके फलोंका शाक बनातेहै ( ९ ) कड़वीनाहीके फंदको घिसकर पीने और लगानेसे शोथ उतरतीहै ।

संख्या ( ३०१ )

( सं० ) निकोचकं, जलगोजकं, सकोचं, चारुफलम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चिलगोजा	चिलगोजा		-- --	- -	नेत्रे	
द्राविडी	कर्नाटकी	अम्बी	फारसी	लैटिन -	अंग्रेजी	
			चिलगोजा	Pinus Gerardiana	The Nut or Edible pine	

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिमालयमें कुनवारसे पश्चिमकी ओर और गढ़वालमें होतेहै ।

पहिचान—इसका वृक्ष ३०-४० और कभी ५०-६० फुट ऊंचा होता है इसकी पत्रें छोटी और सीधी होतीहै और गुलाईमें ६-७ कभी कभी १२ फुट होजातीहै । यह वृक्ष ८-१० फुट ऊंचा बढ़जानेके पीछे इसमें शाखा फूटतीहै, इसके गहरे हरे रंगके पत्ते और चिकनी शाखा लगतीहै और भर रंगके गोले लगतेहै उनमें फल रहतेहै । ये गोले पकजाने पर ६-८ इंच लम्बे होजातेहै इसकी जड़फ पासकी मध्यरेखा ४-५ इंच लम्बी होतीहै । इसके फल एक इंच लम्बे, गोल और एक ओरसे कुछ चिपटे होतेहै ।

फूलने फलनेका समय—जेठ अषाढ़में इसके पुरुष पुष्प लगतेहै, फलों के तिस्रूटे गोले दूसरे वर्षमें भादवे और आसोजमें पकतेहै ।

प्रयोग—( १ ) चिलगोजा—पचनेमें भारी, स्निग्ध, वृष्य, वृंहण, उष्ण



मीठा और बल्य है ( २ ) इसकी मींगीको पीस, लेप करके नपानेसे बाढीकी पीडा मिटती है ( ३ ) इसकी मींगी खानेसे शरीरका आलस्य मिटता है और फुरती बढ़ती है ( ४ ) इसको तेलको क्षत और पिटिकापर लगानेसे वे शीघ्रतासे भरजाते हैं ( ५ ) इसके तेलके लगानेसे मस्तकपीडा मिटती है ( ६ ) इसकी मींगी और मुनक्का एक दिनरात पानीमें भिगो थोड़ा घूरा मिलाके खानेसे शरीरकी निर्बलता मिटती है ( ७ ) इसकी मींगीको आटेमें मिला रोटी बनाके खाते हैं । एक मनुष्य एक वृक्षके फलोंसे शीतकाल विता सकता है। इसके बीजों में से एक प्रकारका तेल निकाला जाता है वह औषधिकी रीतिपर काममें आता है । इसके राल जैसे पदार्थमें से एक प्रकारका तेल निकलता है ।

संख्या ( ३०२ )

( सं ) निम्बः, अरिष्टः, सर्वतोभद्रः, पिचुमन्दः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नीम	नीम	लिवडो	कहु निव	निम	निम नीम	वेमु वेपचेट्टु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वेपम्पर	वेवु, वेवुमरा		नीव	Melia Azadirachta. A. India.	The Neem or Margosa tree.	

स्थान—निम्बके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुत से भागोंमें बहुधा लगाये जाते हैं और अपने आप उगते हैं ।

पहिचान—नीमका वृक्ष ४०, ५० फुट या इससे भी ऊंचा होता है, इसकी पेड़ छोटी सीधी और उसकी गुलाई ६ से ६ फुट तक होती है इसकी छोटी शाखाके अंतिम ६ से १५ इंच लम्बी बहुतेसी सीकें लगती हैं उनके ६ से १३ तक पत्तोंके जोड़े लगते हैं पत्ते कटया कगरेदार किनारोंके और मुडवां अनीके एक ओरसे कुछ चौड़े और एक ओर से तंग और हरे रंगके होते हैं । इसके सफेद पुष्पोंकी मंजरी लगती है उसमेंसे रात्रीमें मधु जैसी तीव्र गंध आती है । उसके बहुतेसे हरे बीज लगते हैं वे फरनेपर पीले पड़ जाते हैं । उनकी गिरी मीठी होती है फलमें एक खाना और

एक बीज होता है इसके फलको मारवाडीमें " निवोली," कहते हैं-इसके पुराने पत्ते सब गिर जानेके पहिले ही, फाल्गुन, चैत्रमें नवीन पत्ते निकल आते हैं।-इसके एक प्रकारका गोंद लगता है जो कड़वा नहीं होता है और ठण्डे पानीमें भलीभांति गल जाता है यह गोंद साफ उजला और कहरवेके रगका होता है इसके छोटे, २ टुकड़े होते हैं। नीमकी छाल और गोंद रगतके काममें आते हैं।

फूलने फलनेका समय फाल्गुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगते हैं अथाह श्रावणमें निवोलिया पकती है।

प्रयोग—(११) इसके बीजोंमेंसे कड़वा, चरपरा, गहरापीला, नहीं उड़नेवाला और बहुत बुरे स्वादवाला तेल निकलता है। तेल निकालनेके लिये निवोलीमेंसे मींगीको निकाल उसको महीन कूटके पानीमें श्रोतानेसे तेल ऊपर तैर आता है या इसकी मींगीको घाणीमें डालके, पेरनेसे तेल निकल आता है (२) विंगड़े हुए धावों पर यह तेल लगानेसे उनकी शिथिलता मिटकर वे मिटजाते हैं (३) स्त्रियोंका दूध बन्ध करनेके लिये नीमके पत्तोंका कल्क बनाके उनके स्तनों पर लेप करते हैं (४) नीमकी छालमेंसे एक कड़वा तत्व निकालते हैं जो ज्वर छुड़ानेमें बड़ा प्रबल है (५) जो ज्वर छुड़ानेवाली दूसरी औषधियां ज्वर नहीं छुड़ा सकें तो नीमकी छालका अष्टमांश या दशांश काथकर निरंतर रहनेवाले ज्वरको छुड़ानेके लिये हर घंटेमें देना चाहिये (६) फोड़े और त्वचाके रोगोंपर दुष्ट और दुर्गन्धयुक्त वायुका असर नहीं होनेके लिये नीमके पत्तोंका पुण्डिस बांधते हैं-या नीमकी डाली उस मकानके दरवाजेपर बाध देते हैं (७) बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी छालका काथ दिनमें ३ बेर पिलाते हैं (८) नीमकी छालका काथ पिलानेसे ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटती है और पेटके कीड़े मरते हैं (९) नीमकी अंतरछालके चूर्णकी फकी देनेसे बारीसे आनेवाला ज्वर छूटता है (१०) इसके बीजोंका तेल लगानेमें झूँए, लीखें मरती हैं (११) पिच्छीवालेके इसके तेलका मर्दन कराना चाहिये (१२) बच्चोंके ऐसे फोड़े कि जो नीचेसे हरे रहते हैं और ऊपर खुरंट आजाते हैं उनपर इस तेलको लगाना चाहिये (१३) थोड़े वेगवाले शीतज्वरको मिटानेके लिये नीमकी अंतरछालका काथ दिनमें २ बेर पिलाना चाहिये (१४) जो विंगड़े हुए फोड़े दूमरी औषधियोंसे नहीं मिटते हैं उनपर नीमके

पत्तोंका पुलिटिस बांधतेहै ( २१५ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे त्वचाके रोग मिटतेहै ( १६० ) फोड़ और त्वचाके दूसरे रोगोंमें नीमके पत्तोंके ताजे रसका मर्दन करनेसे बहुत लाभ होताहै ( १७ ) २२ वर्ष पर्यंत नीमके वृक्षके नीचे रहनेसे पित्तका गलित कुष्ठ मिटताहै ( १८ ) नीमकी कोमल डालियोंसे लगातार दांतुन करनेसे मुखके कई रोग मिटजातेहै मुख और श्वास शुद्ध और मीठा होजाता है ( १९ ) नीमके पत्तोंको पीस उनकी छोटी २ टिकड़िया बना मन्द आंचसे घीमें तलते २ जत्र वे जलजावें तब निकाल देवें और उस घीमें बराबर मोंम डाल पिघलाके पानीसे भरेहुए बरतनमें डाल देवें जत्र वह घी जम जावे तब उसको पानीपर से उतारके रख छोड़े । शीतकालमें इसकी हाथ पैरों पर लगानेसे कोमल घने रहतेहै और फटते नहींहै ( २० ) नीमके पत्तोंको घीमें जला महीन पीस मोंममें मिलाके शिथिल पड़ेहुए फोड़ोंपर लगातेहै ( २१ ) नीमके तेलकी ३० बूंद से पौने चार मासे तक की मात्रा लेके ऊपर पान चाबनेसे श्वास मिटताहै ( २२ ) नीमकी छालकी भस्मको बहुत बहनवाले फोड़ों पर लगाना चाहिये ( २३ ) जिस ज्वरमें बांटे चलते हों या पैरोंमें शीत आगयाहोवे तो उस दशा में नीमके तेलको मर्दन बहुत उपकारीहै ( २४ ) विमूचिकामें भी इन दोनों उपद्रवोंको मिटानेके लिये इसके तेलका मर्दन बहुत उपकारीहै ( २५ ) नीमकी जो कूटकी हुई ५ तोले अंतरछालको अढ़ाईपांच पानीमें आधे घंटे तक ओटा के छान लें, फिर उसी छालको उतनेही पानीमें ओटाके उसका पावभ पानी रखके छान लें, फिर इन दोनों काथोंको मिलाके उसमें से पांच पांच तोले काथ दिनमें दो तीन बेर पिलानेसे अतिसार मिटताहै ( २६ ) इसके पत्तोंका पुलिटिस बांधनेसे और पत्तोंको ओटाके वफारा देनेसे फोड़ोंकी दाह मिटतीहै ( २७ ) दुष्ट पृथ्वी वायु जलादि और सड़ेहुए फलोंकी दुर्गंधसे जो ज्वर होता है उसको छुडानेकेलिये नीमकी छालका काथ पिलाना चाहिये ( २८ ) नीम की छालका हिम, फाट या काथ यथा दोष पिलानेसे रुधिर शुद्ध होके फोड़े फुन्सी मिट जातेहै ( २९ ) इसके तेलको पानमें लगाके खिलानेसे या रास्नादि काथमें इसकी ३० बूंदें डालके पिलानेसे बांटे और कई प्रकारके वायुके वेग मिटतेहै ( ३० ) गहरी शीतला निकल जाने पर इसके तेलको सब शरीर पर उपड़ेनेसे बहुत उपकारहोताहै । इस काममें इसका प्रभाव तिल्लीके तेलसे या नारि-

यलके तेलसे या कारबोलिकएसिडसे भी बहुत घंढकरहै ( ३१- ) त्वचाके ऊपर के मात्रामकारके छोटे या दृष्टिमें नहीं आनेवाले कीड़ोंको मारने या उनको दूर करनेके लिये नीमके तेलका मर्दन करना चाहिये ( ३२ ) बिगडेहुए फोडे या धावोंको नीमके पत्तोंके काथसे धोना चाहिये ( ३३ ) नीमके कोमल पत्ते पित्त सम्बन्धी विकारोंको मिटातेहै ( ३४ ) नीमके तेलका मर्दन करनेसे खुजली मिटतीहै ( ३५ ) पुराना ज्वरातिसार मिटानेकेलिये नीमकी छालका काथ पिलाना चाहिये ( ३६ ) नीमकी कोपला और कालीपिरचको घोट छानके पिलानेसे बारीसे आनेवाले ज्वरका वेग बन्ध होजाताहै ( ३७ ) इसकी छाल के काथसे फोडेको धोनेसे जहरीली छूतका असर नहीं होताहै ( ३८ ) इसके कोमल पत्तोंको पीसके लगातांर पिलानेसे कोठ मिटताहै ( ३९ ) इसकी कोमल कोपलोंका वैंगनके साथ शाक बनाके खानेसे ( ४० ) इसके पत्तोंका बफारा देनेसे मोचकी और गिल्टियोंकी सूजन मिटजातीहै ( ४१ ) गठियाकी सूजन मिटानेके लिये नीमके तेलको मर्दन करना चाहिये ( ४२ ) इसके पत्तोंको घीमें भून पीस आवायन कर्ता होता है उनमें फिर घी मिलाके छीछडेदार धावोंपर और सड़ीहुई हड्डियोंपर लगाताहै ( ४३ ) नीमके पुराने वृक्षमेंसे जो दूधिया रस निकलताहै उसको सेवन करानेसे रुधिर शुद्ध होकर बल बढ़ताहै ( ४४ ) खोपरीपर रंगड़े लगानेमें जो घाव होजाताहै उसपर निंबोलीका तेल लगाना चाहिये ( ४५ ) नीमके और पीपवाले फोडोंपर इसके पत्तोंका गुल्टिस बांधनेसे बड़ा लाभ हीताहै ( ४६ ) नीमकी छालके काथके कुत्ते करनेसे या नीमका तेल लगानेसे मसूडोंके असाध्य रोग मिटतेहैं ( ४७ ) रात्रीमें नीमके नीचे सोनेसे ज्वर नूट जाताहै ( ४८ ) इसके पत्तोंकी भस्मको घीमें मिलाके उन चार्डोंपर लगाताहै कि जो नीचेसे लाल रहतेहैं और उनके ऊपर सिफेद छिलकोंके कई पंढर जम रहतेहैं ( ४९ ) नीमके पत्तोंके काथसे धोनेसे छालोंकी जलन मिटजाती है ( ५० ) इसका तेल लगानेसे या इसके काथमें धोनेसे कच्चे खुरंद उतर जातेहैं ( ५१ ) कच्चे फोडे पर इसके पत्तोंका गुल्टिस बांधनेसे या तो वैज- ल्दी पकजातेहैं या उनकी सूजन बिखर जातीहै ( ५२ ) वैंगन या दूसरे शाकके साथ इसके पत्तोंको छोंकके या शाक बनाके खानेमें पेटके की- डे मरतेहैं ( ५३ ) कोटीके शरीर पर इसके तेलका मर्दन करनेसे बहुत उप-

कार होता है ( ५४ ) इसका तेल लगानेसे दाह मिटती है ( ५५ ) इसके पत्तों को कपड़े और कितान आदिमें रखनेसे उनमें कीड़े नहीं लगते हैं पत्तोंको घेर २ बंदलते रहना चाहिये, क्योंकि इनमें कीड़ोंसे बचानेकी शक्ति कपूर जितनी नहीं है ( ५६ ) नीमका दूधिया रस नीममेंसे अपने आप निकलता है या चुकि करके निकालते हैं। अपने आप निकलने वाला दूधिया रस महीन धारसे निकलता है या उसकी बूंदें २ गिरती हैं यह रस ४ से ७ सप्ताह तक ३ या ४ ठौरसे निकला करता है यह स्वच्छ सफेद और पतला होता है किसी २ नीममेंसे हरतीसरे चौथे वर्ष २-४ वे रस निकलके पीछे यह वृक्ष सूखजाता है। जब नीमका मद निकलने वाला होता है तब उसमें से एक प्रकारका शब्द होने लगता है जब उसमेंसे मद बहना शुरू होता है तब वह शब्द बन्ध होजाता है ( ५७ ) मद निकालनेकी रीति-हरे एक वृक्षमेंसे दूधिया रस नहीं निकाला जा सकता है। नदी नालों या तालाबके किनारे जो वृक्ष अच्छे जवान और बड़े होते हैं उन वृक्षोंकी एक साधारण मोटाईकी ताजी जड़परसे मिट्टी अलग करके उस जड़के बीजमें छेद करके उस ठौर नलिका लंगाके अथवा उसकी गोलाईमेंसे आधी काटके उसके नीचे एक पात्र रख देते हैं उसमें महीन धारसे रस आने लगता है यह मदभी विसाही गुणकारी है जैसाकी अपने आप निकलने वाला है इस रीतिसे बहुत कम मद निकलता है अर्थात् २४ घंटोंमें २ से ६ बोटल तक निकलता है ( ५८ ) नीमके इतने अंग-औपधिके काममें आते हैं जैसे नीमकी जड़, पेड़की अंतरझाल कच्चे फल, तेल, बीज, पत्ते, पुष्प, गोंद और दूधयारस आदि। इस के फले फलको मारबडीमें गुट्टा कहते हैं इनकी गीली गिर खानेके काममें आती है ( ५९ ) नीमके तेलमें मधुमिला उसमें पत्ती भिगोकर कानमें रखनेसे कानका पूय बंध होता है ( ६० ) इसके पत्तोंका बफारा देनेसे कानका मैल निकलके उसकी पीड़ा मिटजाती है ( ६१ ) नीमके पत्तोंको सस्पुटमें रख कर पड़मिट्टी लगाके आग्निमें रखदेवें जब उनमें भस्म होजाय तब निकाल उस भस्मको नींबूके रसमें खरलकर नेत्राजन करनेसे खुजली और जलन आदि नेत्ररोग मिटते हैं ( ६२ ) पत्तोंका रस निकाल पीठे तेलमें मिलाके नाकमें टपकानेसे मस्तकके कीड़े मरजाते हैं ( ६३ ) नीमकी लकड़ीका दांतुन करनेसे दांतोंमें कीड़े नहीं पडते हैं ( ६४ ) नेत्रपीडा मिटानेके लिये इसकी कोमल

कोपल्लोका रस निकाल निवायाकर जिस और पीड़ा हो उसकी दूसरी ओर के कानमें डालना या दोनों नेत्रोंमें हो तो दोनों कानोंमें डालना चाहिये ( ६५ ) इसके पत्तोंका २ मासे खार खानेमे पथरी गलजाती है ( ६६ ) नकसीर बन्ध कानकेलिये इसके पत्ते और अजवाइन दोनोंको महीन पीसके कनपट्टियों पर लेप करना चाहिये ( ६७ ) पत्तोंका रस नेत्र में लगानेसे बांफनीका गलना और दाह मिटतीहै ( ६८ ) २ तोले कोमल कोपल्लोंको पीस छानके १५ दिन तक पीनेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटतेहैं ( ६९ ) इसके फूल, फल और पत्ते, ये सब बराबर २ ले पीसके दो मासेसे लेना प्रारभ करे, पीछे ६ मासे तक बढ़ा लेना चाहिये इस रीतिसे ४० दिन तक लेनेसे सफेद कोड़ मिटताहै ( ७० ) इसकी ४ मासे छाल जोकूटकर २ तोले गुड़के साथ डेढ पाव पानीमें ओटा आधपाव रखकर पिलानेसे बन्ध हुआ मासिकधर्म फिर-होने लग जाताहै ( ७१ ) इसकी छालका काथ पिलाने से, सिकता और इलु प्रमेह मिटताहै ( ७२ ) छालका काथ पिलानेसे शीतपित्त मिटताहै ( ७३ ) इसका शर्बत पिलानेसे तृषा मिटतीहै ( ७४ ) अत्यन्त तृषा को मिटानेके लिये इसके पत्तोंको मिट्टीमें मिला, उसका गोला बना, उसको आगमें लालकर पानीमें बुझाकर उस पानीको पिलाना चाहिये ( ७५ ) नीम के २१ पत्ते और २१ साबित कालीमिरचों की महीन वस्त्रमें पोटली बांध उस को आधसेर पानीमें डाल, ओटा आधपाव रखकर दोनों समय ७ दिन तक पिलानेसे ज्वर छूटताहै ( ७६ ) जिस ज्वरमें दाह हो उसमें इसके कोमल पत्तोंको नीचूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाह मिटतीहै और ज्वर छूटजाताहै ( ७७ ) इसके पत्तोंके रसके फेनका लेप करनेसे दाह मिटतीहै ( ७८ ) पत्तोंका केवल रस अथवा उसमें मधु मिलाके पिलानेसे पेटके कृमि मिटतेहैं ( ७९ ) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कामला रोग मिटताहै ( ८० ) इसके फलोंके तेलका मर्दन करनेसे पक्षाघात मिटताहै ( ८१ ) इसके पत्ते और लोद को पानीसे पीस, रस निकाल, गुनगुना कर नेत्रोंमें डालनेसे घातज, रक्तपित्तज, अभिर्षण आदि कई प्रकार के नेत्र रोग मिटतेहै ( ८२ ) इसके पुष्पोंको छाया में सुखा उनमें बराबर कलागीशोरा मिला, पीसके अजन करनेसे बुंध और फुली कटके नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै ( ८३ ) इसके और बेरीके पत्तोंको पीसके गिरमें

लगा ४ घड़ी पीछे धो डालनेमें बाल लम्बे बढ़ते हैं ( ८४ ) इसकी अंतर छात को पीस अर्द्धोष्ण गाढ़ा २ लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है ( ८५ ) इसमें पत्तोंका खार लगानेसे कोढ़, दाद और खुजली मिटती है ( ८६ ) इसमें पत्तोंको दहीमें पीसके लंगानेसे दाद मिटता है ( ८७ ) इसके पत्तोंके कण्ठके घी मिलाके खानेसे शीतपित्त, उदरद, रक्तपित्त, व्रण, विस्फोटक और कंदू आदि रोग मिटते हैं ( ८८ ) नीमके १ मासे तेलकी एक गहीने तक नित्य नस्य लेनेसे और उन दिनों में केवल गायका दूध पीने से बली और पलित रोग मिटता है ( ८९ ) नाकके रोगमें यह तेल सुघाना चाहिये ( ९० ) इसके रससे सिद्ध किये हुए घीका सेवन करनेमें पद्मनीकृत्तरोग मिटता है ( ९१ ) इसके रसमें बमन करानेमें पद्मनीकृत्तरोग मिटता है ( ९२ ) इसके बीजोंकी भीगीके जल भांगरेके रसकी ७ या २१ भावना देके उनका तेल निकाल कर उसकी नित्य नस्य लेनेसे और उन दिनोंमें दूध चावलोंकी खीरका भोजन करनेसे बली पलित रोग मिटता है ( ९३ ) इसका रस घावमें डालनेसे उसके कीड़े मरजाते हैं ( ९४ ) जिस गांवके चारों ओर नीमके वृक्ष बहुत होते हैं उस गांवमें ज्वरादिक कई रोग बहुत कम हुआ करते हैं ।

संख्या ( ३०३ )

( सं० ) महानिम्बः, महोदिकः, कार्मुकः, कश्मुष्टिः

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बकाया	बकायन	बकान्य	बकायी निंब	षोडानिम	भेक	पेद्गानु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन-	अंग्रेजी-	
पिरुम्बर	वेदुदवेड	)	)	Melia Azadirach M sempervirens	The Persian Lilac Head tree	

स्थान—बकानके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत और बोये जाते हैं और अपने आप ऊँचे हुएभी बहुत मिलते हैं ।

पाहखान—यह प्राय ४० फुट ऊँचा होता है । इसके पेड़की गुलाई

६-७ फुट ली होती है यह, सीधी झंर, छोटी होती है इसके ऊपर बालिया व फूली हुई होती है और इसकी बाल, चौड़ाई इंच मोटी होती है । इस वृक्ष छोटे भाग, कुछ रूएदार, होते हैं । इसकी सीकें ६ से १८ इंच लम्बी और पर-आधने सामने ३ से ५ या ७, जोड़े पत्तोंके लगते हैं । इसके मधुगंधी लगते हैं इसके फलकी, मध्य, रेखा आधसे प्रौन इंच लम्बी होती है यह पके पीले रंगका, होजाता है, इसमें १-२ खाने-और ५-६ बीज होते हैं शीतकालमें ३-४ महीने तक बिलकुल पत्ते नहीं रहते हैं फागुनसे वैशाख तक यह पत्तोंसे सघनघन होजाता है, उस समय यह सुन्दर दीखने लगजाता है ।

७-८ फूलने फलने का समय—फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प-लगते हैं, बहुत, बहुतोंमें फल, पकते हैं जब तक इसके पत्ते नहीं आते तबतक फल रहते हैं । इनको बुलबुल-आदि कोई जन्तु नहीं खाते हैं । इसके गोंद जैसा सुधरे-रंगका चपदार गोंद लगता है जो दीखनेमें कैथके-गोंद जैसा होता है इस पत्तोंमेंसे एक प्रकारका नीला रंग निकाला जाता है इसके बीजोंमेंसे नहीं निकाला, तेल निकाला जाता है जो नीमके तेलमें मिलता हुआ होता है अजसकरुणाभी उसमें मिलते हुए होते हैं यह औषधिके प्रयोगमें बहुत कम आता है ।

प्रयोग—(१) बकायने-शीतल, रुद्ध, कड़वी, ग्राही, कपेली, अजसपरी, है । इसकी अड़की बाल, फल, पुष्प और पत्ते उष्ण और रुद्ध (२) पेटमें जो तिब्बी और रुद्ध आदि यत्र हैं उनके घडावकी मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाता है (३) स्नायुसम्बन्धी पीड़कों, मिटानेके लिये इसके पुष्प और पत्तोंका गुण्डिस बांधाजाता है (४) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे पेटके कीड़े मरते हैं (५) उसमें मिश्री लानेसे मूत्रवृद्धि होती है (६) उसमें जोखार डालके पिलानेसे शर्करा मिटती है (७) अकलकरेका चूर्ण उस रसमें मिलाके पिलानेसे स्त्रियोंका सिरुधर्म शुद्ध होने लग जाता है (८) इसके रसको गर्भकर लेप कसर्दीकी सूजन मिटती है (९) इसका रस पिलानेसे वे सब उपद्रव किं जिनसे सूजन पैदा होती है (१०) इसके पत्तोंका काथ स्त्रियोंके रोगमें पिलाया जाता है (११) अतिसर मिटानेके लिये इसके पत्तोंका पिलाते हैं (१२) इस काथमें सोंठ बुराके पिलानेसे पेटकी शूल



( १३ ) इसके पत्ते और छालका काथ पिलानेसे कोढ़ और गंडमाला मिटता है, इन पर काथका लेप भी करना चाहिये ( १४ ) इसके पुष्पोंका पुष्पिका वांधनेसे घावोंके कीड़े मरतेहैं ( १५ ) इसके पुष्पोंको पीसके लेप करने फोड़े फुन्सी और त्वचाके खुजली आदि रोग मिटतेहैं ( १६ ) इसके फलोंके विष होताहै तब भी ये कोढ़ और गंडमालाकी चिकित्सामें काम आतेहैं ( १७ ) इसके फलोंकी माला पहिरनेसे संक्रामक रोगोंका असर नहीं होताहै ( १८ ) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे गठिया मिटतीहै ( १९ ) इसके बीजोंको खुवाणीके साथ पीसके लेप करनेसे गठियां मिटतीहै ( २० ) जब कभी एकाएक फैलनेवाला रोग पैदा होताहै उसको रोकनेके लिये दरवाजोंके और बरान्दोंके इसके फलोंकी माला बांध देतेहै ( २१ ) बकाणके वृक्षमें से भी एक प्रकारका दूधिया रस निकलताहै ( २२ ) तिल्लीके ऊपर इसके गोंदका लेप करना चाहिये ( २३ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं ( २४ ) इसका स्वाद कड़वा और उन्क्लेद करनेवालाहै ( २५ ) इसकी १० तोले ताँबे के छालको सवा सेर पानीमें ओटा २॥ पात्र रखकर उसमें से सवा २ तोले दूधिया रस तीसरे घंटे बच्चेको पिलाना चाहिये कि जबतक उसकी आंतों या आमाशय पर स्पष्ट पभाव दिखलाई न देने लगे, या ७ दिन तक साभ्र सबेरे इतनी मात्रा पिलाके पीछे कोई विरेचन देना, इससे किसी २ के कुमिनाशकपनेके प्रभाव कम होताहै ( २६ ) इसके सूखे फलोंको भिरकेमें पीसके पिलानेसे पिटोट और चुरणे ( कड़ूदाने ) आदि कई प्रकारके कीड़े पेटमेंसे निकल जातेहैं या मरजातेहैं ( २७ ) इनको सिरकेमें पीसके लेप करनेसे त्वचाके कुमिनाशकपनेके रोग मिटतेहैं ( २८ ) इसके फलोंकी गिरको खोपरेके तेलमें पीसके शिरकेउन जतोंपर लगातेहै कि जो बहुत उष्ण जल, घृत या तेलसे उत्पन्न हुए हों ( २९ ) इसकी छालका शर्बत या द्रवसार फान्गुन और चैत्रमें नहीं बनाना चाहिये, क्योंकि इन दिनोंमें इसका दूधिया रस वृक्षके ऊपर चढ़ाकर रताहै इन महीनोंमें इसकी छालमें से निकाले हुए सार और जड़के काथसे या जड़के रससे बनाये हुए शर्बतमें मदकारी दोष रहतेहैं ( ३० ) इसकी छालके पत्ते और फलोंकी अधिक मात्रा लेनेसे एक प्रकारका विष चढ़ जाताहै जिससे मनुष्य अचत होके मर जाताहै ( ३१ ) इसके ६ से ८ तक बीज खिलाने

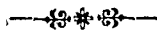
खाली उबाक, बाँटे और हजे जैसे लक्षण होते मनुष्य कभी मर जाता है ( गजरोग मिटानेके लिये इसके बीजोंको रुद्धव तेलमें जलाके लेप करना चा (३३) इसकी दो ताले छाल २ सर पानीमें ओटा, तीन पाव पानी रख, में थोड़ा गुड़ मिलाकर तीन दिन तक पिलानेसे पेटके कीड़े मरते हैं ( ३४) इसकी छाल और सफेद कत्था, दोनों बराबर ले चूर्ण बनाकर बुरकानसे मुँ छाले मिटते हैं ( ३५) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिट ( ३६) पेटपर एरुका तेल चुपड़ इसके पत्तोंको गर्म कर पेटपर बाँधनेसे पे पीड़ा मिटती है ( ३७) बकानके पाव भर पत्तोंमें २ तोले नमक मिला कर भड़वेरकी बराबर गोलिया बनाके खिलानेसे बवासीर मिटता है ( ३८) बवा की मींगी और सौंफको पीस उसमें बराबर चूरा मिला दो मासेकी फकी दे बवासीर मिटता है ( ३९) इसकी छालको छायामें सुखा कूट बची बन योनीमें रखनेसे बड़े संकीर्ण होजाती है ( ४०) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बन नेत्रोंपर बाँधनेसे पित्तसे पैदा हुआ अभिष्यंद मिटता है ( ४१) इसकी प तोले कोमल कोपलोंको घोट छानके पिलानेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधि रुधिरका जाना बन्ध होजाता है ( ४२) इसके एकसे ७ तक बीज बंदा २ नित्य देनेसे नारू गल जाता है ( ४३) इसके बीजोंको चांबलोंके पानीमें पी धी मिलाके खानेसे बहुत समयका प्रमेह मिटता है ( ४४) इसकी जड़की छ का कच्क गृधसीको मिटाता है ( ४५) इसके सारको पानीके साथ पीसके पि नेसे गृधसी मिटती है ।

संख्या ( ३०४ )

( सं० ) सुरभि निम्बः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मीठानीम	मीठानीम	मिठोलिबडो				
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Murrays Koenigii Bergera N		The curry leaf tree

नेत्रके आसपास पतला २ लेप करनेसे नेत्र पीड़ा मिटती है ( १२ ) नींबूका शर्बत पिलानेसे पित्तज्वर छूटता है ( १३ ) इसके रसमें अविर्लाको पीसकर बालोंमें मलनेसे उनका गिरना बन्ध हो जाता है और लम्बे बढ जाते हैं ( १४ ) प्रतिदिन दादको खुजलकर उसपर इसका रस लगानेसे दाद मिटजाता है ( १५ ) इसका रस गर्मीकी मद्राग्निको मिटाता है ( १६ ) इसका रस नेत्रमें लगानेसे कामला मिटता है ( १७ ) इसके शर्बतमें दुगुना पानी और लौंग मिरच डालके पीनेसे अरुचि मिटती है ( १८ ) इसके रसमें हरे काचकी चूड़ा को पहीन पीसके अंजन करनेसे फूली और जाला कटता है ( १९ ) इसका रस विच्छूके दंशपर टपकानेसे उसका विष उतरजाता है ( २० ) इसका शर्बत रुधिरकी दाह और विदग्ध दोषोंको मिटाता है ( २१ ) इसके ३ छटांक रसको सेर भर घूरेमें शर्बतवनाके वायुकी वमन बंध करनेके लिये पिलाना चाहिये ( २२ ) इसके रसमें बूरा मिलाके मस्तक पर लेप कर दो प्रहर पीछे धोवा-लनेसे खोरा मिटता है ( २३ ) इसका और प्याजका पोने दो तोला रस मिलाके १४ दिन तक पिलानेसे तिल्ली मिटता है परन्तु उनदिनोंमें दाल चावल आदिका द्रव भोजन करना चाहिये ( २४ ) इसके बीजोंकी ६ मासे मींगी और ८ मासे सैधेनमककी फकी देनेसे विच्छूका विष उतरता है ( २५ ) नींबूके कईतरहके अचार बनाये जाते हैं और कईतरहके अचारोंमें इनके रसकी खटाई डालते हैं ।



संख्या ( ३०६ )

( सं० ) करुणः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
करुणो	करुणा		एडलिनू	करुणा लेखुरगाछ		
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Citrus Medica. Var 2 Lemonum C Aduantum Var Limonum	The lemon	

स्थान—कन्ना, हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोया जाता है कन्नेके छिलके को दवानेसे या भभके में अर्क खींचनेसे उसमेंसे जो एक प्रकारका तेल निकलता है उसको Essence of lemon—एसैन्स आफ लीमन—कहते हैं ॥

प्रयोग—( १ ) यह उष्ण है कफ, वायु, आम और पेदके रोगोंको मिटाता है कन्नेके तीन भाग विशेष करके काममें आते हैं, एक तो छालका बाहिर का भाग, दूसरा—छालका—तेल और तीसरा पके हुए फलोंका रस ( २ ) इसकी छाल पेटकी शूल और वादीको मिटाती है ( ३ ) इसके श्वेतको जलमें मिलाके पीनेसे शीतलता हो जाती है ( ४ ) निद्रालानेवाले तीक्ष्ण विषोंको उतारनेके लिये इसका रस पिलाते हैं ( ५ ) विषैल जीवोंके काटनेसे जो विष चढ़ जाता है उसको उतारनेके लिये इसको अर्क पिनाते हैं ( ६ ) इसके रसमें कुनन बुरकाके पिलानेसे पित्तज्वर और बारीसे आनेवाला ज्वर छूट जाता है ( ७ ) सायंकालको इसका ताजा रस पिलानेसे वह मदाग्नि मिटती है कि जिसमें भोजन करनेके पीछे उल्टी होजाया करती है ( ८ ) इसके रसमें जोखार और मधु मिलाके पिलानेसे छातीकी पीड़ा, गृध्रसी, कटिशूल और मूले के जोड़की पीड़ा मिटती है ( ९ ) २॥ तोले नींबू के तिजावमें १६ गुना पानी मिला उसमें कुछ बूंदें कन्नेके तेलकी डालके इसके रसकी ठौर काममें ला सकते हैं ( १० ) कन्नेका रस जल्दी विगड जाता है इसलिये इसके रसकी सुरत काममें ललेना चाहिये, इसको बहुत दिनों तक नहीं विगडने देनेकी सुरत उच्चम रीति यह है कि कन्नेका रस निचोकर उसको कुछ देर तक पंढा रहने दें जब उसका जमजानेवाला पदार्थ अलग होजाय तो उसको कागजमें छान के काचकी शीशीमें नाली तक भर देये और उसके ऊपर बाँटामका या दूसरा मीठा तेल तिरा देवे, अथवा पोंतलाको ओटते हुए पानीमें १२ मिनट तक रखके फिर उनके काक लगाया जाये तो और भी उत्तम है, अथवा हल्के आंचसे इसका पानी उढाके रमको गाढा कर लेये, या रमका एसी मर्दमें रखे कि जिससे इसके पानीका भाग जम जावे और केवल अर्क रह जावे, इसका गुण पाहेले से भी अधिक बलवान् हो जाता है ( ११ ) इसकी जडकी छालका काय पिलाने से ज्वर छूटता है ( १२ ) इसके बीजाँती फली देनेने

कीड़े मरते हैं ( १३ ) इसका रस और चारु के लगानेसे खुजली मिटती है ( १४ ) कच्चे का अचार बनाके खिलाने से तिखी कटती है ।

संख्या ( ३०७ )

चकोत्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
चकोतरा	चकोत्रा		पपनस		चकोतरा	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Citrus decumana.		Paradise apple 1 The ash- dock 2 Pomeo Pemp-lao The forbidden fruit

स्थान—ये बंगाल दक्षिण हिन्दुस्थान और संयुक्त प्रदेश आदि देशोंमें होते हैं ।

पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ३०-४० फुट की होती है । इसके बड़े पत्ते ६ से ६ इंच तक लंबे होते हैं इसके बड़े और सफेद पुष्प लगते हैं । चकोत्रा बहुत बड़ा और गोल होता है, कभी २ पाच सेरसे दश सेर तक तोलमें होजाता है इसका छिलका चिकना और थोड़े पीले रंगका होता है, चकोत्रे दो प्रकार के होते हैं एककी गिर कुछ सफेद और दूसरेकी कुछ लाल होती है । इनकी गिर खट्टी होती है देशकाल और पृथ्वीके कारणसे चकोत्रे छोटे बड़े भी होजाते हैं इस वृक्षके बारह महीने ही फल लगते रहते हैं, पुष्प, कच्चे और पके फल, एक साथ लगे रहते हैं ॥

प्रयोग—( १ ) चकोत्रा शरीरको पुष्ट करने वाला और शीतल है ( २ ) उसकी छालमें शकर, खट्टा तिजात्र और बहुतसा सुगंधित तेल होता है ( ३ ) इसके पत्ते अपस्मार, विस्मृचिका और सूखी खांसीमें बहुत उपकारी है ॥

संख्या ( ३०८ )

( सं० ) श्वेतनिर्गुण्डी, सिन्दुवारः, सुरसः, सिद्धकः ।

मारवादी	हिन्दी	गुजराती	मगही	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
संभालू	संभालू	नगद्व्य नगोड	निर्गुडी	गिभि-दा- गाछ	सम्भालू	तेल्लनाविली
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वहेनाचिह्न	विल्लिकि		पजनकिश्त	Joelle's. Gendrusa. O vulgaris.		

स्थान—सम्भालूके वृत्त हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होतेहैं ।

पट्टिचान—सम्भालू नीले और पिलास लिये हुए नीले पुष्पोंके भद्रसे दो प्रकारकी होतीहै । यह रंगनके काममें आतीहै ॥

प्रयोग (१) सफेद निर्गुडी-कड़वी, उष्ण, रूक्ष, चरपरी, कपेली और अग्नि-वर्द्धकहै (२) इसकी जड़ बलवर्द्धक, ज्वर नाशक और सूखी खासीको मिटातीहै (३) इसके पत्तं सुगन्धयुक्त, चरपरे, बलवर्द्धक और कीड़े मारनेवालेहै (४) वादी मिटानेवाली कई आप, धयाके इसके पत्तोंके रसकी भावना टेके गोलियां बनातेहैं (५) इसके पत्तोंके काथपर पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे प्रतिशयायका ज्वर, मस्तरुका भारीपन और कप सुनना मिटताहै ( ६ ) मस्तरुपीडा मिटानेके लिये इसके पत्तोंस तक्रिया भरके मस्तरुके नीचे रखना चाहिये ( ७ ) इसके पत्तोंके रसका घावपर लेप करनेसे उसमेंसे सडताहुआ पीप निकलना बन्ध होजाताहै और कीड़े मरजातेहैं ( ८ ) इसके पत्तोंके रसका तेल बनाकर लगानेसे हड्डियोंके जल्म और गंडमालाके फोडे मिटतेहैं ( ९ ) यह पीडा मिटानेवाली, सूत्रवर्द्धक और मासिक्रधर्मको शुद्ध करनेवाली है (१०) इसके बफारेसे या इसके ओटाये हुए जलम षठा रखनेसे ऊमरके नीचेके भागकी वादीकी पीडा मिटतीहै (११) दूषित हाथेर आदि कहीं एकत्र होगये हों उनको विखेरनेके लिये इसके पत्तोंको ओटाके राधने चाहिये (१२) तेज गठियासे जोड़ों में पित्तशोध होगया हो उस को मिटानेके लिये इसके पत्तोंको ओटाके जवतरु सूजन न मिटे तबतक दिन में दो तीन बेर बांधना चाहिये ( १३ ) स्त्रियोंके बालक होने के पीछे आवश्यकता होती इसके पत्तोंके काथसे स्नान कराना चाहिये ( १४ ) इसक पत्तोंके चूर्णकी फकी जलके साथ देनेसे वारी से आनेवाला ज्वर

छूटाह, ( १५ ) इसके फल के चूर्णकी फकी, देनेसे स्नायु और मस्तक सम्बन्धी रोग मिटतेहै ( १६ ) जिस स्त्रीको रुष्टसे मासिकधर्म होताहो या बहुत कम होताहो, उसका इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे मासिकधर्म ठीक होने लगजाताहै ( १७ ) इसकी जड़ कड़वी और ज्वरमें हितकारीहै ( १८ ) इसके पत्तोंके रसका लेप करनेसे त्वचाके रोग और मृजन मिटतीहै ( १९ ) इसके मुखे पत्तोंका धूम्रपान करनेसे मस्तकपीडा और प्रतिश्याय मिटताहै ( २० ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेमें ज्वर चूटताहै ( २१ ) इसके पत्ते, लहसन, चाबूल और गुड इन सबको पीस गोली बनाके देनेसे गठिया मिटतीहै ( २२ ) इसके पत्तोंको ओटाके बफारा देनेसे ज्वर, प्रतिश्याय और गठियाके रोग मिटतेहै ( २३ ) इसके मुखे फलोंकी फकी, देनेसे भीड़े मरतेहै ( २४ ) इसके पत्तोंको आगपर तपाके बाधनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( २५ ) इसके पत्तोंको पीसके लेप, करनेसे ललाटकी पीडा मिटतीहै ( २६ ) इसके पत्तोंको कूट टिकिया बनाके कनपटीपर बांधनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( २७ ) इसकी जड़ और पत्ते पीसीना लानेवाले, मूत्र और बलवदोष वालेहै ( २८ ) इसके पंचागके रससे तेल बनाके लगानेसे दुष्ट व्रण और नाडीव्रण मिटतेहै ( २९ ) इसके पत्तोंका ताजा रस कात्तम डालनेसे कान के कीड़े मरजातेहै ( ३० ) इसकी जड़, बालकके गलेमें लटकानेसे दांत सुगमतासे निकल आतेहै ( ३१ ) इसके पत्तोंके रससे तेल बना गुनगुना २ मल कर ऊपर इसीके पान बाधनेसे जोड़ोंकी पीडा मिटतीहै ( ३२ ) इसके बीजोंको दूध निकलनेके समय बालकके गलेमें लटकानेसे दांत जल्दी निकलतेहै ( ३३ ) इसके पत्तोंको गर्म करके बाधनेसे त्वद विखर जातीहै ( ३४ ) इसके काथमें पीपलका चूर्ण घुसकाके पिलानेसे कफज्वर चूटताहै ( ३५ ) इसकी जड़का पानीमें घिसके नस्य देनेसे गंडमाला मिटतीहै ( ३६ ) इसका रस लगानेसे कीड़े मरजातेहै ( ३७ ) पहिले थोड़ा २ घी तीन दिन तक पिलाके फिर इसका रसरस पिलानेसे नारू मिटताहै ( ३८ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे उरुस्तम्भ और शुद्धमी मिटतीहै ( ३९ ) इसका भेक और लेप करनेसे वातव्याधि मिटतीहै ( ४० ) इसको और मूसली कदको चिगलनेसे जीभकी पीडा मिटतीहै ( ४१ ) निर्गुडीको पीस कर नाभि, वास्त और योनी पर लेप करनेमें मुखसे प्रसव हो जाताहै ।

संख्या ( ३०६ )

( सं० ) नीलानिगुडी, नीलसिन्दुक., नीलपुष्पी, नीलिका ।

मारवाटी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
निगुडी नेगड	नीलसन्हालू	नीळानगडय	काळीनिगुडी	नालानिशि- न्दा	संभाळू	नल्लवाविलि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
करप्पुनाधि	करिन्नाकि	अमलक असुवदा	पंजनकिशत गिनयोह	Afex Negundo arbores		

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बंगालसे सीलोन तक सब भान्तोंमें सब ठौर याग और दूगरोंमें होती है ।

पहिचान—इसका आड २ से ३ फुट ऊंचा होता है । इसका पेड सदैव हरा रहता है, इसके पत्ते तूफके पत्तों जैसे होते हैं, एक एक डंठलपर पाच २ पत्ते होते हैं, जो लम्बे, ऊपरसे नीले और नीचेसे सफेद होते हैं । इसके पत्ते और कोमल कोंपनोंको मलनेसे उनमें से तीव्रगन्धा आने लगती है; यह दो प्रकार की होती है एक सफेद पुष्पों की और दूसरी नीले पुष्पों की, फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगते हैं ।

प्रयोग—( १ ) नीली निर्गुडी-तिक्त, रूच, उष्ण, कपेली, चरपरी और सूक्ष्म है ( २ ) इसके पत्ते और कोमल कोंपलोंका काथ पिलानेसे पुरानी गठिया मिटती है ( ३ ) इसके पंचामके काथसे ज्वर का आना बन्द होजाता है ( ४ ) इसके पत्तोंसे तैल बनाके लगानेसे वे फुन्सिया मिटती हैं कि जो शरीरमें किभी किसी ठौर बहुतसी पास २ हो जाया करती हैं और बहुतधा आपममें मिल भी जाती हैं ( ५ ) पत्तोंका काथ पिलानेसे स्नायु सम्बन्धी मस्तकपीडा, पक्षाघात और अदित रोग मिटती है ( ६ ) ताजे पत्तोंका स्वरस कानमें डालनेसे कानकी पीडा मिटती है ( ७ ) मस्तकके बायें भागमें पीडा होवे तो दहनी नकतोडीमें और दहने भागमें पीडा होवे तो बाई नकतोडीमें इसके धरसकी पाच २ बूदे पांच २ पंटेके अंतरसे चार पांच बूदे डालनी चाहिये ( ८ ) इसकी जड़ कमरमें बायेंसे सब प्रकारके ज्वर छूटते हैं ( ९ ) एक तोला निर्गुडी गायक मूत्रमें



पीसके पीनेसे श्वास, कास और शीताग्न्यायु मिटती है ( १० ) एक तोला नि-  
गुंडी गौघृतके साथ खानेसे कफ, पित्त और वायु मिटती है ( ११ ) १४ दिन  
तक पीठे तेलके साथ इसका सेवन करनेसे दंष्ट्र प्रकारकी वायु मिटती है ( १२ )  
इसके पत्त पीसके दंशपर लगानेसे कुत्तेका विष उतरता है ।

संख्या ( ३१० )

( सं० ) नीलमणिः, सौरित्तं, नीलाश्मा, सुनीलकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नीलम	नीलमणी	नीलम कालु नग	नीलमणि	नीलवर्णमनि	नीलम	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Saffron	Sapphire	

नीलमके गुणः ( १ )—यह कडवी और उष्ण होती है श्वास, कास, त्रिदोष,  
विषमज्वर, और अर्शको मिटाती है । वीर्य और अग्निको बढ़ाती है ।

संख्या ( ३११ )

( सं० ) नीली, काला, क्लीतकिका, रञ्जनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
नील	नील	गळी	लघुनीली	नीलगाछ	नील	नीलिचेट्टु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
नीली	नीलीगिर्ह			Indigofera tinctoria	The Indigo plant.	

स्थान—यह पंजाबके दक्षिण और पूर्वके भागमें, बंगाल, सिन्ध, दक्षिण  
हिन्दुस्थान, और राजपूताना आदि कई देशोंमें बहुत बोई जाती है ।

पहिलानं—इसका गुल्म छोटा होता है इसकी ऊँचाई प्रायः दो ढाई फुट होती है इसकी १, ४ इंच लम्बी, सीधी, सींकपर ४-६ जोड़े पत्तोंके लगते हैं जो सूखनेपर काले पड़जाते हैं। कुछ नीले गुलाबी रंगके २०-२० पुष्पोंकी मंजरियां लगती हैं। एक ढेढ़ इंच लम्बी, मोटी, कुछ गोल और सीधी फलियां लगती हैं। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाता है।

प्रयोग—( १ ) नील-रेचक, कड़वी, उष्ण, चरपरी, और सारक है। ( २ ) इसका सत अपस्मार और रनायु सम्बन्धी उपद्रवमें दिया जाता है ( ३ ) खासीमें इसको मधुके साथ चटाते हैं ( ४ ) यह घावोंके मरहममें मिलाया जाता है ( ५ ) मस्तिष्कके पुराने रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाता है ( ६ ) धातुओंके विपकी उतारनेके लिये यह एक मुख्य उपाय है ( ७ ) नीलके पत्तोंके लेप करनेसे बाल बढ़ते हैं ( ८ ) पेटके ऊपर इसका लेप करनेसे अफारा और मूत्राघात मिटता है ( ९ ) अग्निसे या और किसी प्रकारसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये इसका लेप करते हैं ( १० ) संखियेका विप उतारनेके लिये इसकी जड़का काथ पिलाते हैं ( ११ ) इसके ताजे पत्तोंके रससे तेल बनाकर लगानेसे अर्श मिटता है ( १२ ) इसकी जड़को कानमें बांधनेसे सन प्रकारकी ज्वर छूटजाती है।

मुख्या ( ३१२ )

( सं० ) पटोलः अमृतफलं, पाण्डुफलः, बीजगर्भः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
पटोल	परवल	कडवापटोल	कडू पडवल	पटोल	परवल	चेति पोटली
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कोम्बुपुडुल	कैपडल			Trichosanthes cucumerina. & Dolios		

स्थान—परवलकी बेलें हिंदुस्थान और सीलोनमें कई ठौर होती हैं।

प्रयोग—( १ ) परवल-कडवा, चरपरी, उष्ण, भेदक, पाचक, अग्निवर्द्धक ज्वरनाशक और सारक है ( २ ) इसकी कोमल छोटी डालियें और सूखे हुए फलके छिलके बहुत कडवे और सारक होते हैं ( ३० ) ये आमा

शय की पीड़ा मिटती है। इनका पांच-पांच-तोले काथ, दिनमें दोबेर देना चाहिये ( ४ ) आमाशयके उपद्रवोंको मिटानेकेलिये इसके बीजोंका प्रयोग किया जाता है ( ५ ) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे, आंतोंके फकीड़े मरते हैं ( ६ ) चिरायतेके अर्कके साथ इसके बीजोंकी फकी देनेसे ज्वर छूट जाता है ( ७ ) इसकी कोमल टहनिया और फलके मूखे छिलकेको खुरेके साथ थोड़ा कपिलानेसे पाचन शक्ति बढ़ती है ( ८ ) इसमें पत्तोंका अर्क कामरु है ( ९ ) इसकी जड़ रेचक है ( १० ) इसकी डंडीका काथ पिलानेसे मूवी, खासी ( तर होजाती है ) ( ११ ) इसके पत्रांग, सोंठ और चिरायतेको ओषध, मधुमिल्लाके पिलानेसे ज्वर छूटता है ( १२ ) यह हृदयका बल बढ़ाता है ( १३ ) इसके पत्तोंका ओषध, मधुमिल्लाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है ( १४ ) यकृत्यासव शरीर पर इसके पत्तोंके अर्कका मर्दन करनेसे निरन्तर रहनेवाला ज्वर छूट जाता है ( १५ ) इसके पत्ते और फलके रसका मर्दन करनेसे यकृतमें जमा हुआ रुधिर विखर जाता है ( १६ ) इनके रसका ललाट पर लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटती है ( १७ ) इसके पत्ते हुए फलोंका अचार बनाया जाता है। वह बहुत कड़वा होता है। इसलिये उसको अधिक नैरोग्यकारी मानते हैं ( १८ ) इसका स्वरस लगानेसे इन्द्रलुप्त मिटता है ( १९ ) पटोल नीमकी छाल और मैनफलका काथ बना उसमें मधु और सैधानमक मिल्लाके पिलानेसे वमन होके अम्लपित्त मिटता है ( २० ) इसके पत्तोंका यूप बनाके पिलानेसे पित्त और कफज्वर छूटता है ( २१ ) इसके फलोंके यूपसे वातके रोग मिटते हैं ( २२ ) मलहटीके साथ इसका काथ बनाके गुदाको धानेसे अतिसार मिटता है ( २३ ) इसके कल्कसे इसीकी बराबर घी बनाके सेवन करनेसे कफपित्तकी वमन बन्द होती है ( २४ ) पटोल और सोंठका कल्क बना उसमें बराबर घी, मिला, घी, सिद्ध करके सेवन करनेसे कफ और पित्तकी वमन मिटती है ( २५ ) पटोल और धनियेका यूप बनाके पिलानेसे पित्त, कफज्वर छूटता है ( २६ ) पटोल और अदरकका काथ पिलानेसे पित्त और कफज्वर छूटता है ( २७ ) पटोल और अदरकका काथ पिलानेसे

संख्या ( ३१३ )

( सं० ) पटोलिका, स्वादुपटोली, ज्योत्स्ना, जाली

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलजी
परवल	मीठापटोल	मीठापटोल	पड़वली	स्वादुपटोल	पटोली	कोम्बुपुद्दल
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कोम्बुपुद्दल	पडवल			Trichosanthes dala		

३॥ स्थान—परवलकी बेल उत्तर हिन्दुस्थानमें पंजाबसे आसाम और पूर्वी बंगाल तक होती है। इसके कच्चे फलका रंग हरा और पकनेपर पीला या नारंगी हो जाता है।

प्रयोग—( १ ) मीठापरवल—मधुर, रोचक, ज्वरनाशक, पौष्टिक, दीपन और पाचन है ( २ ) इसके पत्त और धनियेका काथ पिलानेसे पित्तज्वर छूटता है। यह काथ सारक है ( ३ ) इसकी जड़ बहुत रोचक है ( ४ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे जलंधर मिटता है ( ५ ) इसके अंकुरोंका काथ बलवर्द्धक और ज्वरनाशक है ( ६ ) इसके कच्चे फलोंका ताजा रस ठंडा और सारक है ( ७ ) रुधिरशुद्ध करनेवाली औषधियोंके साथ इसके कच्चे फलका ताजा रस दिया जाता है ( ८ ) जिस जगहके बाल उडगये हों वहां इसके पत्तोंका ताजा रस लगाना चाहिये ( ९ ) इसकी जड़के कंदका भाग तीव्र विरेचक है ( १० ) इसकी बेल कड़वी और निरोगतादायक है ( ११ ) इसके फलका सेवन करनेसे कोढ़ मिटता है ( १२ ) इसके पत्तोंको आटेमें लपेट धीमे तलकर खानेसे बल बढ़ता है ( १३ ) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटाने के लिये इसके फलोंका शाक और अचार खिलाना चाहिये। इसके फलोंका शाक और अचार बहुत अच्छा बनता है।

सख्या ( ३१४ )

( सं० ) पत्तंग, कुचन्दनं, पट्टरंजनं, पत्रांगम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
पतग	पतग	पतग	पतग	वरुम्काष्ट	वरुग	सेपगानु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
शुम्भर	पतग			'Cae alj inia sappen	'Sappen or sappeen wood	

स्थान—पतङ्ग के वृक्ष मध्य हिन्दुस्थानमें बोये जातेहैं। और पूर्वी और पश्चिमी प्रायद्वीपमें मिलतेहै।

पहिचान—इसकी लकड़ी, फलियों और छालमें से लाल रङ्ग निकाला जाताहै। इसकी जड़में से पीला रंग निकाला जाताहै।

प्रयोग—( १ ) इसकी लकड़ीका काथ पिलानेसे मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै ( २ ) पेटके भीतरकी सृजनको मिटानेके लिये इसका काथ पिलातेहैं और घिसके ऊपर भी लेपकरतेहै ( ३ ) इसका हिम या फांट पिलाने से रुधिर शुद्ध होताहै ( ४ ) अतिसार और आनातिसार मिटाने के लिये इसके काथ पर अतीसका चूर्ण बुरकाके पिलातेहै ( ५ ) शकर और मधुके साथ इसका लेपकरनेसे पिचका मुखरोग भिटाहै ( ६ ) यह तिक्त, शीतल, रुक्ष, अम्ल, मधुर और कडवा होताहै ( ७ ) वातपित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृन्ध, कफकी पथरी, रुधिरविकार, भूतवाधा और व्रण को भिटाताहै ( ८ ) शरीरके रंगको सुभारताहै। इसमें उत्तम सुगंध होतीहै।

संख्या ( ३१५ )

( सं० ) पद्मकं, केदारजं, पद्मकाष्ठं, शीतवीर्यं ।

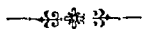
मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
पद्माक(ख)	पद्माक ख)	पद्मकाष्ट	पद्मकाष्ट	पद्मकाष्ट	पद्माख	पद्मपुचेववा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
	पद्मक			Prunus Puddum Cerasoides	The wild cherry of the Himalaya.	

स्थान—पञ्जाबके वृक्ष हिमालयमें गढ़वालसे सिक्किम और भूटान तक होते हैं।

पहिचान—जल, वायु और पृथ्वीके कारणसे यह वृक्ष कहीं साधारण उचाई का और कहीं बड़ा होता है, वसंत ऋतुमें इसके पत्ते गिर जाते हैं, इस वृक्षके एक प्रकार का गोंद लगता है, इसके बीजोंमें से कड़वे वादाम जैसा तेल निकलता है।

फूलने फलनेका समय—आश्विन और कार्तिकमें इसके पुष्प लगते हैं और वसंत ऋतुमें इसके छोटे फल लगते हैं जिनमें पीली, थोड़ी नागंजी या कुछ लाल गिर निकलती हैं।

प्रयोग—( १ ) पथरी और मूत्रके साथ जो चमकती हुई रेत निकला करती है उसको मिटानेके लिये इसकी गिर काममें लाई जाती है ( २ ) पञ्जाब, शीतल, कपेला, कड़वा, पचनेमें हल्का और वातल है, विसर्प, टाह, विस्फोटक कुष्ठ, रुफ, रक्तपित्त, वमन, अरुचि, तृषा, ब्रण, मोह और भ्रमको मिटाता है और गर्भ स्थापन करता है।



सरुया ( ३१६ )

( सं० ) पनसः, कंटकिफलः, अपुष्पफलदः, स्थूलकंटफलः ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
कटहल	कटहर	फणस	फणम	कॉटोल	कटहल	पासचट्ट
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
पेलाप्यळ	हलसुमर			Artocarpus integrifolia.	The jack fruit tree	

स्थान—कटहरके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जाते हैं, इसके वृक्ष सबाद्रिके जंगलोंमें बोयेहुए और विन बोयेहुए दोनोंही प्रकारके मिलते हैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ४०-५० फुट उचा होता है, इसकी पेदद छोटी खड़ी और मोटी होती है, इसकी डाल बहुत मोटी और उसपर गहरी दरारें होती हैं। इसकी नई डालियाँके कड़े रंग होते हैं इसके पत्ते ऊपरसे चिकन और नीचेसे खरदने होते हैं, इसका फल बड़ा, कुछ लम्बा और गिग्दार होता है,

सकी लम्बाई एकसे डेढ़ फुट तक और मध्य रेखा क्षेपे ८ इंच तक लम्बी होती है इसके एक प्रकारका गोंद लगता है वह प्रानीमें भाल जाता है, इसकी लकड़ोंके चूरेको थोटेनेसे पीलो रंग निकलता है।

फूलने फलनेका समय—मृगशिरसे माघतक इसके पुष्प लगते हैं पेशाब अघाट तक इसके फल लगते हैं।

प्रयोग—( १ ) यह शीतल, वातल, कपेला, पचनेमें भारी, रोचक, मधुर, वल और वीर्यवर्द्धक, हृद्य, ग्राही और पिच्छल है। ( २ ) पेशीकी मृजन और जल्दी बखेरनेके लिये इसके पत्तोंका अर्क लगाते हैं। ( ३ ) इसके कोमल पत्तोंका पीसके त्वचाके रोगोंपर लेप करते हैं ( ४ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे प्रातिसाग मिटता है ( ५ ) इसका कच्चा फल ग्राही और पक्का फल सारक है। यह शरीरको पुष्ट करनेवाला होने पर भी कठिनतासे पचता है ( ६ ) गाठको जल्दी पकानेके लिये उसपर इसके पत्तोंका लेप करते हैं ( ७ ) इसकी जड़को थोटा छानके नाकमें टपकानेसे मस्तक पीडा मिटती है ( ८ ) कठैल पीसके जल के साथ पिलानेसे वमन होकर सापका विष उतरजाता है ( ९ ) कठैलका चूर्ण प्रतिदिन एक २ मासा बढा २ के लेनेसे विरेच और वमन होकर उपद्रव मिटता है।

सख्या ( ३१७ )

( सं० ) परूपः, परूपकः, पवनोम्बुजम्, मृदुफलः ।

मराठा	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
फालसा	फालसा	फालसा	फालसा	फालसा	फालसा	चिह्नीडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	वेङ्कटादोगलि			Grewia Asiatica G. Subfetnaequalis.		

स्थान—फालसेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ही बोंमें जाते हैं।

पश्चिम—इस वृक्षकी ऊँचाई २५ फुट होती है, इसकी छोटी पेदबकी गुलाई ३-४ फुटकी होती है इसकी छाल एक तिहाई इंच मोटी, गहरे भूरे रंग की

और साफ होती है उसमें खड़ी-दरारें होती हैं इसके पत्ते २ से ७ इंच लम्बे प्रायः उतनेही चौड़े होते हैं। इसके ३-५ तक्र, पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं इसके फल पकनेके पीछे गहरे-भूरे-रंगके होजाते हैं। फाल्गुनके अन्त तक इसके नवीन पत्ते निकल आते हैं।

फूलने फलनेका समय — माघ, फाल्गुनमें इसके पुष्प लगते हैं और वैशाख जेठमें फल पकते हैं।

प्रयोग — (१) फालसे खट्टे, कपले, पचनेमें हल्के, उष्ण, मधुर और पित्तकारक है, (२) इसका शर्वत पीनेसे दाह मिटती है (३) अजवानकी फकी देकर ऊपर फालसेका उष्णरस, पिलानेसे पेटकी शूल मिटती है (४) इसमें पत्तोंको पकने वाले फोड़ोंपर बाधना चाहिये (५) औषधियोंकी चरपराहट मिटानेकेलिये इसकी छालका हिम पिलाना चाहिये (६) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे गठिया मिटती है (७) इसकी १४ मासे जड़को जोड़ूट कर पावभर, पानीमें रातभर-भिगो प्रातःकाल मल ध्यानकर ७ दिन तक पिला नेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (८) इसकी जड़को पीसके नाभि वस्ति और भगपर लेप करनेसे मूढगर्भ निकल जाता है (९) काले रंगके मीठे फालसेके रसमें गुलाब जल और दुगुना घूरा मिला शर्वत बनाके पिलानेसे वादीकी वमन, रुधिराविकार और उदरकी निर्बलता मिटती है (१०) पके हुए फालसे, मीठे, रुच्य, शीतल, रोचक, विष्टम्भी, हृद्य, और वृंहण है।

( सं० ) पर्पटः, पित्तारि, तृष्णारि, ज्ञेयपर्पटी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलड़ी
पित्तपापड़ा	पित्तपापड़ा	पातपापड़ा	पित्तपापड़ा	क्षेतपापड़ा	पित्तपापड़ा	पर्पटकमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
पर्पटक	पर्पटक		शाहतराह	<i>Oldenlandia Corymbosa</i>		

स्थान — पित्तपापड़ा हिन्दुस्थानमें सब और होता है।



पाहिचान—इसका लुप दो प्रकारका होता है एकके नीले पुष्प और दूसरे लाल पुष्प/लगते हैं। लाल पुष्पके पित्तपापड़ेमें गुण अधिक होता है।

प्रयोग—(१) पित्तज्वरको मिटानेकेलिये पित्तपापड़ेका काय पिलाना चाहिये (२) ज्वर मिटानेवाले कई कार्योंकी औषधियोंमें पित्तपापड़ा मिलाया जाता है (३) कामला रोगमें पित्तपापड़ेका फाट पिलाते हैं (४) इसके रसका लेप करनेसे हथेली और पगनलीकी दाह मिटती है (५) इनके रसमें दूध और शकर मिलाके पिलानेसे पाकस्थलीकी दाह मिटती है (६) दूषित जल वायु, घृत्नी आदिके कारणसे जो ज्वर होता है उसको मिटानेके लिये पित्तपापड़ा, कटेली और गिलोयका काय पिलाना चाहिये ७) पित्तपापड़े और वायविडंगको थोड़ाके पिलानेसे कीड़े मरते हैं (८) धनिये और पित्तपापड़ेका काय पिलानेसे जीर्णज्वर छूटता है (९) इसका अवलेह बनाके चटानेसे खुजली आदि त्वचाके रोग मिटते हैं (१०) इसका अर्क पिलानेसे खुजली मिटती है (११) इसका काय पिलानेसे पित्तकी वमन बन्ध होती है (१२) इसके काय में मधु मिलाके पिलानेसे वमन बन्ध होती है (१३) पित्तपापड़ा शीतल, तिक्त, वातल, लघु और पाकमें चरपरा है पित्त, कफ, रक्तदाह, अरुचि ज्वर, मर्द, और ग्लानिको मिटाता है।

संख्या ( ११६ )

( सं० ) पलाण्डु, नीचभोज्य, सुकन्दक, यवनेष्टः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कादो	प्याज	हुगळी	कादा	पेंयोज	गडा	उल्लिगडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अग्नेजी
वेंगाय	ईरुहि	बसल	प्याज	Allium C. pa.		Onion

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सबवैर बोयाजाता है परन्तु बड़े शहरोंके आस पास बहुत बोया जाता है। यह सफेद और ल लके भेदसे दो प्रकारका होता है।

प्रयोग—( १ ) यह शीतल, स्निग्ध, अग्निदीपक, पचनेमें भारी, चरपरा, मधुर, कुछ उष्ण, पित्तल, वृष्य और बलकारक है। विपैलकीड़ेके दश पर इसका अर्क लगानेसे खुजली और दाह मिटती है ( २ ) कादेके बीचका भाग उष्ण करके कानमें रखनेसे कानकी पीड़ा मिटजाती है ( ३ ) ताजे कादेका अर्क निकाल उष्णकर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है ( ४ ) कादे को ओटानेसे उड़नेवाला चरपरा तेल निकलता है ( ५ ) बिना समयमें रुका-हुआ मासिकधर्म कच्चा कादा खानेसे फिर होने लगजाता है ( ६ ) इसकी तेज गंधसे सर्प आदि विपैल जन्तु पास नहीं आते हैं ( ७ ) कादेको कूटके मुँघानेसे अचेतपन और स्त्रियोंके आवेशके रोगका वेग मिटाता है ( ८ ) कादेका पीसके बिच्छूके देश पर लेप करनेसे विष उतरता है ( ९ ) त्वचा सम्बन्धी रोगों पर इसका लेप करनेसे दाह और खुजली मिटती है ( १० ) क्षयरोगमें कफ घटाने के लिये इसका रस पिलानेसे ( ११ ) इसको सिरकेके साथ पीसके चटानेसे गलेका रोग मिटता है ( १२ ) इसका काथ पिलानेसे कफ मिटता है ( १३ ) कादेका रस और राईका तेल बराबर मिलाकर मर्दन करनेसे गठियाकी पीड़ा मिटती है ( १४ ) कादेसे पाचन शक्ति बढ़ती है ( १५ ) कादेके रसमें घी मिलाके पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( १६ ) यह दूसरे पदार्थकी दुर्गंधको मिटाता है ( १७ ) यह हवाके उपद्रवोंको मिटाता है ( १८ ) विमूचिको या ऐसे शीघ्र फैलनेवाले रोगोंके उपद्रवोंसे बचनेके लिये कादेको पाममें रखना चाहिये और घरके दरवाजेमें लटकों रखना चाहिये ( १९ ) मूत्रवृद्धि करनेके लिये कच्चे कादेका रस पिलाना चाहिये ( २० ) इसको सिरकेके साथ पका के खिलानेसे मंदाग्नि मिटती है ( २१ ) नावले कुत्तेके काटनेसे जो घाव होजाता है उस घाव पर ताजे कादेका अर्क लगाना चाहिये और उसको कादेको रस पिलानेसे जल्दी आराम होनेकी सुरत होजाती है ( २२ ) कादे खानेवालेके शीतादरोग नहीं होता है ( २३ ) इसके आधपाव से पावभर रसमें ५ तोले शकर मिलाके दिनमें एक बेर पिलानेसे रक्तार्थ मिटता है ( २४ ) मझौली मोटाईका एक कादा दो तीन कालीमिरचके साथ दिनमें दो बेर खानेसे बुध वायु आदिसे पैदा हुआ ज्वर छूटजाता है ( २५ ) कादेका काथ पिलानेसे

मूत्रकी दाह और पीड़ा मिटती है ( २६ ) कादेको काट-उसके कोटहुए भगपर चुभाया, हुआ चूना लगाकर, विच्छूके, दंशपर रगड़ने से विष तुरन्त-उतरता है ( २७ ) कादेके अर्कका लेप करनेसे- विच्छूका विष उतरता है ( २८ ) कच्चा कांदा खानेसे नींद आती है ( २९ ) निर्बलतासे अचेत होनेकी दशमें चैतन्य करनेके लिये कादेका रस नाककी नथनीके द्वार लगायाना चाहिये ( ३० ) कादे को किसी बरतनमें भरकर, फिर उसका मुंह ऐसा मजबूत बन्द करे कि उसमें हवा न-आनेजान-पावे, फिर उसमें चैतन्यको जहा गायबन्धती बैठतीहो, वहां चार महीनेतक गढा रखकर प्रीछे, उसको निकाल उसमेंसे बलाग्निके अनुसार एक कांदा खिलानेसे पुरुषार्थ बहुत बढ़ता है ( ३१ ) एक कादेमें आधरती अफीम रख उसको भूभलमें सेकर, खिलानेसे, आमा-तिसार मिटता है ( ३२ ) मझोली मोटाईके तीन कादे और एक तोले इम्ली के पत्तोंको पीस गोली बनाके खिलानेसे विरेचन लगता है ( ३३ ) कादेके ताजे रसको शरीरपर मर्दन करनेसे लूका असुर तुरन्त मिटता है ( ३४ ) बच्चेको कांदेकी माला बनाके छातीतक पहिरानेसे लूका असुर नहीं होता है ( ३५ ) कांदेको सेक उसका अर्क निकालके पिलानेसे बच्चेके पेटका दर्द मिटता है ( ३६ ) इसका तेल उचेजक, मूत्रवर्द्धक और कफानिः सारक है ( ३७ ) ज्वर, जलधर, प्रतिश्याय और पुरानी खासीमें कादेका प्रयोग उपकारी है ( ३८ ) इसके रसमें हींग और कालानमक डालके पिलानेसे शूल और अफारा मिटता है ( ३९ ) इसका रस सुंघानेसे नकसीर बन्ध-होती है ( ४० ) कांदा और क्लोजी समान भागले त्रिलममें भर उनका चुआ प्रीकर मुंहसे लाल टपका देनेसे मसूडोंकी सूजन और दंतपीड़ा मिटती है ( ४१ ) कादेका रस कानमें डालनेसे कानको कीड़े मरते हैं ( ४२ ) कां देका रस नेत्रमें लगानेसे नेत्र पीड़ा मिटती है ( ४३ ) कादेको रसका मर्दन करनसे गंज मिटती है ( ४४ ) कादेको बालकके मूत्रमें पीस-तेलमें तलकर बद् पर बांधनेसे बद् बैठ जाती है ( ४५ ) कांदा खानेसे सर्पका विष उतरता है ( ४६ ) कादेको शहदमें मिलाके लगानेसे घाव नहीं भरने पाता है ( ४७ ) कांदा और लसखेको पीसके लगानेसे कनखजूरका विष उतरता है ( ४८ ) कांदेके रसमें मधु मिलाके अंजन करनेसे नेत्रपीड़ा नजला आदि रोग मिटते हैं और ज्योति बढ़ती है ( ४९ ) कादेका जीरा मलनेसे विच्छूका विष उतरता है ( ५० )

तिली-बालके गलेमें कादा लटकानेसे उसका प्रकोप कम हो जाता है। (१५१)  
 इसके बीजोंमेंसे सफेद स्वच्छ तेल निकलता है। प्याज-यूरोप और हिन्दुस्थान  
 वालोंके खानेके काममें आता है।

संख्या (३२०)

( सं० ) पलाशः, किंशुकः, ब्रह्मपादपः, यज्ञिकः।

भारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलश्री
छिबरो	दाक टेम्	खालरो	पळश(स)	पलाशगाछ	पलाश	नीमोदुग
द्राविडी	कनीटकी	थरवी	फारमी	लैटिन	अंग्रेजी	
पेताश	मुत्तुगदगिह			Butea frondosa	Bastard teak Bengal (keno Butea gum) Doury branch Dutea.	

स्थान—हाके वृक्ष हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होते हैं।

परिचय—इसका वृक्ष १० वर्षसे अधिक नहीं जीता है। इसकी ऊंचाई  
 प्रायः ४०, ५० फुट तककी होती है। इसकी पदड़ मुठी हुई और बहुधा पेड़ाल  
 और गुलाईमें ६ से ८ और कभी २ दश स बारह फुटकी होजाती है। इसके  
 थोड़ी मुठी हुई शाखे लगती हैं, इसकी छाल आवेसे एक इंच मोटी थोड़ी भरी  
 और खरदरी होती है। इसके नवीन भाग रुपदार होते हैं। इसके एक एक  
 डंटीपर तीन २ पत्ते लगते हैं जिनमें बीचका पत्ता प्रायः गोल और आस पास  
 के दोनों पत्ते कुछ लम्बे होते हैं। इसके पुष्प खाल कुछ पीले और अन्तमें  
 कुछ काले होते हैं। प्रायः आमज लगी डंटीपर पुष्पोंकी छुट लगी रहती है  
 और इनके गिरजानेके पीछे लम्बी चिपटी और पतली फलिया लगती हैं  
 इसके बीज पतले चिपटे और प्रायः गोल होते हैं उनमें स्वाद और सुगन्ध बहुत  
 कम होती है। इसके पुराने पत्ते पोष और माघमें गिरजाते हैं, चैत्र, वैशाखमें  
 नवीन पत्ते आजाते हैं।

फूलने फलने का समय—नवीन पत्ते आनेके पहिले ही नारंगी रंगके  
 पुष्प निकलने लगते हैं। जेठ और अषाढमें इसकी फलिया पकती हैं। छुटिया नाम-

पुर, मध्य हिन्दुस्थान, दखन, बरोदा और गुजरात आदि देशोंमें छिन्नक एक प्रकारका लाल गोंद लगताहै उसको चुनिया, चूनी, खाग्वरेषा० टाकका या पलाशका गोंद और कमरकस कहतेहै, इसके पुष्पोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै। इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—( १ ) यह कपला, उष्ण, टीपन, वृष्य, सारक, कड़वा, चरपरा स्निग्ध और ग्राहीहै ( २ ) इसके गोंदकी ५ रतीसे १५ रती तककी फकी देने से अतिसार मिटताहै। इसमें कुछ दालचीनी मिला देनेसे यह अधिक गुण करताहै ( ३ ) चूनी गोंद, दालचीनी और अफीमकी गोली बनाके खिलाने से अतिसार तुरन्त मिटताहै ( ४ ) इसका ताजा रस पिलानेसे राजयच्मा मिटताहै ( ५ ) इसके ताजे रसमें मिथ्री मिलाकर पिलानेसे मुख आदिसं रुधिरका निकलना बंध होताहै ( ६ ) इस रसके लगानेसे गलेके घाव मिटतेहै ( ७ ) फोड़ोंपर इसका ताजा रस लगाया जानाहै ( ८ ) इसका ताजा रस पिलानेसे अतिसार मिटताहै ( ९ ) इसके रसमें मोंठ बुरकाके पीनेसे मंडाग्नि मिटतीहै ( १० ) ज्वरातिसार मिटानेकेलिये इसका रस पिलातेहै ( ११ ) चूनीगोंद, लोद और अफीमका लेप करनेसे आंखका अर्मरोग और मैलापन मिटताहै ( १२ ) इसके बीजोंको पानीमें भिगो छिलका उतार उनकी गिरको सुखा पीस कपड़ बानकर सवा मासेकी मात्रा दिनमें तीन बेर लगातार तीन दिनतक देकर चौथे दिन एरंडका तेल पिलाना चाहिये, इस प्रयोगसे आंतोंके लम्बे कीड़े निकल जातेहै, जो इनकी गिरकी फकीसे विरेचन होजावे, तो कीड़े नहीं निकलतेहै। इससे कभी वमन और वृक्कमें जलन होजातीहै ( १३ ) बीजोंकी गिरको पीस मधुके साथ चटानेसे आंतोंके कीड़े मरतेहै और मृदुरचन भी होताहै ( १४ ) इसके बीजोंको नीबूके रसके साथ पीसके मर्दन करनेसे पांच मिटतीहै ( १५ ) इनको नीबूके रसके साथ पीसके दाद पर लेप करतेहै ( १६ ) इसके पुष्पोंका पुष्टिस बनाके बाधनेसे शोथ विखर जातीहै ( १७ ) पुष्पोंको ओटाके नलोंपर सेक करनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै ( १८ ) इनको ओटाके नल और कमर पर बाधनेसे मासिकधर्म खुलासा होने लगताहै ( १९ ) इसके पुष्पोंको ओटाके गोशेकी सूजन पर बाधतेहै ( २० ) इसके पत्तोंको गर्म करके बाधनेसे फोड़े फुन्सी बँठ

तातेह ( २१ ) इसकी बाल और, सोंठको थोटा छानकर पिलानेमे सर्पका  
 विष उतरताहै ( २२ ) अफीमके सतको सफेद करनेके लिये ढाफका कोयला  
 काममें आताहै ( २३ ) इसके बीजोंकी गिरकी दो मासेसे चार मासे तक की  
 मात्रा कीड़े निकालनेके लिये दी जातीहै । परन्तु चार वर्ष तकके बच्चेको दो  
 मासे तक देनी चाहिये ( २४ ) इसका गाढ़ा कियाहुआ रस अच्छा ग्राहीहै  
 और इसके गोंदकी ठौर काममें आसकता है परन्तु इसकी मात्रा उससे कुछ  
 अधिक अर्थात् एक मासेसे २॥ मासे तक देनी पड़तीहै ( २५ ) इसके पत्तों  
 का पृष्ठिस बाधनेसे गांठ ( जैम अर्श और वद ) बिखर जातीहै ( २६ ) इसके  
 गोंदकी २ मासेसे ४ मासे तककी फकी देनेसे आमाशय और मूत्राशयमें से  
 अधिक निकलना बन्ध होताहै ( २७ ) इसके गोंदको पानीमें गलाके लेप  
 करनेसे चोटकी और मुखके ऊपरकी असाध्य पित्तशोध मिटतीहै ( २८ ) इस  
 की जड़की अन्तरछाल को दूधके साथ पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( २९ ) इसके  
 बीजोंको पीसकर जलके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ३० ) इसके पुष्पोंका  
 श्लेष्मि वांधनेसे मूत्राशयके रोग मिटतेहै ( ३१ ) इसके गोंदकी फकी देनेसे मंदज्वर  
 मिटताहै ( ३२ ) इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे अफारा और शूल मिटतीहै  
 ( ३३ ) पुष्पोंको पानीमें ओटाके नाभिके नीचे तरेरा देनेसे मूत्रकी रुकावट  
 मिटतीहै ( ३४ ) इसके पुष्पोंको ओटाके अंडकोपकी मूजनपर तरेरा देनेसे  
 और इनका फोक बाधनेसे उनकी मूजन उतर जातीहै ( ३५ ) इसकी जड़को  
 पानीमें घिसकर वेगके समय नाकमें टपकानेसे मिरगी दूर होतीहै ( ३६ )  
 इसकी सूखीहुई कोंपलें, गोंद बाल और पुष्पोंको कूट छान उसमें बराबर  
 मिलाके १ मासे की फकी दूधके साथ नित्य लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है  
 ( ३७ ) इसकी जड़की बालके ७ मासे चूर्णकी पानीके साथ फकी देनेसे  
 मंदज्वर मिटतीहै ( ३८ ) इसकी कलियों को छायामें सुखा चूर्ण बना उसमें  
 बराबर शफर मिला २ से १० मासे तककी फकी १४ दिन तक देनेसे भ्रू  
 संकोचन होतीहै ( ३९ ) इसके बीजोंको पीसकर बिच्छूके दशपर लगानेसे  
 इसका विष उतरताहै ( ४० ) इसके कोंमल पत्तोंको नीपूके रसमें पीसके लेप  
 करनेसे दाहज्वर शान्त होताहै ( ४१ ) इसके बीजोंके स्वरसमें मधु मिलाके  
 पिलानेसे कुमि नष्ट होजातेहै ( ४२ ) इसके बीजोंका कर्क तक्रम मिलाके पीने

से कीड़े मरते हैं ( ४३ ) इसके ३ रती बीजोंको थूहरके दूधके माथ पीसके खानेसे पेटके कृमि मरके निकल जाते हैं ( ४४ ) इसके पुष्पोंके कणक या काथे में शकर मिलाके पिलानेसे मक्तापित्त मिटता है ( ४५ ) इसके पुष्पोंसे वस्तिपर सेक या स्वेद करनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ४६ ) इसके पुष्पोंको आंटा वस्ति पर उस पानीकी धारा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ४७ ) इसके पुष्पोंके काथेमें शकर मिलाके पिलानेसे प्रमेह मिटता है ( ४८ ) इसकी जड़को घिसकर कान के नीचे लेप करनेसे गलगंड मिटता है ( ५६ ) इसकी मुंडमुंडी कोंपलोंको सुखा कूटवान, गुडमें मिला, अखरोटकी बरार गोलियां बनाके एक गोली प्रातः काल नित्य लेनेसे प्रमेह मिटता है ।

संख्या ( ३२१ )

( सं० ) पाटला, अमोघा, फलेरुहा, कुवेराची ।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
पाडल	पाडल, पाडर	पाडल	पाडल	पारुल	पाडर	कलिंगुट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>S. erocarpum suaveolens. Begonia S</i>		

स्थान—पाडलके वृक्ष हिन्दुस्थानके आर्द्र भागोंमें, हिमालयकी तराई, देवनकोर और देनसरमितक और सीलोनमें होते हैं ।

परिचान—यह वृक्ष ३६ से ६० फुटतक ऊंचा होता है इसकी पेड़ लम्बी, सीधी, ३० फुटतक बड़जानपर उसके शाखे फूटने लगती हैं इसकी गुलाई ६ फुटकी होती है इसकी एक से दो फुट लम्बी, टहनियों पर २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००

। फूलने फलनेका समय—इसके चित्तों पुष्प आजातेहै और कार्तिक  
। गर्शीर्षतक इसके फल पक जातेहैं ।

प्रयोग—(१) पांढले-कसैली, कडेवी, रसमें चरपरी और उष्णहै (२) इसके  
पुष्पोंके चूर्णको मधु में मिलाने चटाने से हिचकी मिटतीहै (३) यह शीतल,  
मृत्र और बेलवर्द्धक है (४) यह बहुधा दूसरी औषधियोंके साथ मिलाने दी-  
जातीहै (५) इसकी भस्ममें पाननारका पानी बनाया जाताहै (६) चमेड़ी  
को जलाने वाले लोयमें इसकी भस्म मिलाई जातीहै (७) इसके फलोंको रस  
में मधु और सुवर्णभस्म मिलाने पिलानेसे सब प्रकारको हिचकी बन्धे होतीहै  
(८) इसके फल और पुष्पोंके चूर्णकी पानीके साथ फलों देनेसे हिचकी मि-  
टतीहै (९) इसके साथ साठको पीस कुछ गर्मकर ठंढा करके पिलानेसे गर्भ-  
वर्तीकी वातपीड़ा मिटतीहै (१०) इसके काँथसे बनायेहुए कडेके तेलके लगाने  
से दुग्धव्रण, व्रणस्राव, दाह और विस्पोटक मिटतीहै ।

संख्या (३२२)

(सं०) पाठा, अम्बघा, स्थापनी, अविद्धकरीणी ।

मौरवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	मैलवी
पाठा	पाठा	कालिपाठा	पहाडमूल	चकपाठा	पाडा	चिरबुही
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	भगलशाठि			<i>Clasiopelos Pariera</i> <i>C. bernandifolia</i>	<i>Falae Pariera Drava</i>	

स्थान—पाठकी बेलें सिन्ध और पंजाबसे, सीलोनतक, और शिमलोकें  
नीचे भी होती है ।

पहचान—इसका छोटा भौंड होताहै । वह बेलकी भांति वृत्तोंपर चढ़-  
ताहै । इसकी पदक छोटी होतीहै जिसमेंसे कई लम्बी शाखें निकलतीहैं वे  
वृत्ताक लिपट जातीहैं । इसका पुष्प पुरुष और स्त्रीजातिके भेद से अलग २  
होतेहैं ।



फूलने फलनेका समय—फागुनसे आसाजतक इसके पुष्प लगतेहै ।  
 प्रयोग—( १ ) पाठ उष्ण, चरपरी, कड़वी, पचनेमें हल्की और तीक्ष्ण  
 है ( २ ) इसकी मूखीहुई जड़ और छाल थोड़ी बलवर्द्धकहै ( ३ ) मूत्राशय  
 की पीड़ा युक्त पुरानी मूजनको मिटानेके लिये इसका काथ या सार बनाके  
 देना चाहिये ( ४ ) इसके पत्ते शीतल होतेहै और गाठपर बांधे जातेहै ( ५ )  
 औषधिके प्रयोगमें इसकी जड़ही बहुधा काममें आतीहै । यह कुछ कड़वी  
 होतीहै ( ६ ) इसकी जड़के चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै ( ७ )  
 पथरीवाले रोगीको इसकी जड़का काथ पिलातेहै ( ८ ) इसकी जड़को घी के  
 साथ घिसकर पिलानेसे विप उतरताहै ( ९ ) इसके पत्ते और जड़का शर्बत  
 बनाके पिलानेसे खैररोग मिटताहै ( १० ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे आ-  
 माशयकी पीड़ा और निर्बलता मिटतीहै ( ११ ) बिगड़े हुए घाव और हड्डियोंके  
 त्रणोंपर इसकी जड़का लेप करतेहै ( १२ ) सर्प और बिच्छूके दशपर इसकी जड़का  
 लेप करतेहै ( १३ ) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाके पिलानेसे खांसी मिटती है  
 ( १४ ) जड़के काथपर पीपलका चूर्ण बुरक के पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै ( १५ )  
 अतीसके चूर्णकी फकी देके ऊपर इसकी जड़का काथ पिलानेसे अतिसार मि-  
 टताहै ( १६ ) कोयलकी जड़को इसकी जड़के साथ ओटाके पिलानेसे जल-  
 न्धर मिटताहै ( १७ ) पाठकी जड़के प्रयोगसे मूत्रवृद्धि होके मूत्राशयकी पुरानी  
 मूजन मिटजातीहै ( १८ ) इसका प्रयोग करनेके लिये बहुधा इसका काथ बनाके  
 या गाढ़ा सार बनाके देतेहै ( १९ ) जिस स्त्रीकी योनी निकल जावे उसको  
 इसके काथसे धोनी चाहिये और उस स्त्रीको इसका काथ पिलाना चाहिये  
 ( २० ) इसकी जड़को चांवलोंके पानीके साथ पीसके पीनेसे अतविद्रधी मि-  
 टतीहै ( २१ ) इसकी जड़को पीसके गर्भवती स्त्रीकी नाभि, वस्ति और भगपर  
 लेप करनेसे उसके बच्चा मुखसे पैदा होजाताहै ।

संख्या ( ३२३ )

( सं० ) पातालगरुडी, तिकांगा, दृढकाण्डा, मेचकाभिधा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	छिरेटा	वासनवेल	तानीचावेल	गिलिन्दा	छिरेटा	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Cocculus villosus		

स्थान—सिन्ध, पंजाब, दक्खन, मद्रास और बंगाल आदि निर्जल देशों में इसकी बड़ी बेलें होती हैं।

पहिचान और फूलने, फलने का समय—इसके तन्तु बड़े हठ होते हैं, इसके छोटे फलोंके भूमके, लगते हैं वे परुनेपर, काले होजाते हैं इसकी, जड़ कड़वी होती है, इसके पत्तोंके स्वरससे पानी जम जाता है और उसका हरा रंग-होजाता है। माघ और फागुनमें इसके पुरुष और स्त्रीजातिके पुष्प अलग २, लगते हैं।

प्रयोग—( १ ) पातालगरुड़ी ( छिरेटा )—वृष्य, मधुर, रोचक, तिक्त और वृत्तिकारक है ( २ ) इसके पत्तोंके रसको पानीमें डालनेसे वह जम जाता है, इस जमेहुए पानीको शरीरके ऊपर लगानेसे दाह मिटती है ( ३ ) इसमें मिश्री मिलाके खानेमे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ४ ) इसकी ताजी जड़के २॥ छटांक, काथ में बकरीका ढाई छटाक दूध मिला उसपर वालीमिरचोंका, कुछ चूर्ण बुरकाके भागःकालके समय पिलानेसे गाठिया और उपदश सम्बन्धी पुरानी पीड़ा मिटती है ( ५ ) इसकी, जड़ उष्ण, सारक और पसीना लाने, वाली है ( ६ ) यह उश्वेकी भाति रुधिरको शुद्ध करके शरीरकी पीड़ा और ब्रणादिकको मिटा देती है ( ७ ) इसको क्णगचकी गिरके साथ पानीमें पीसके पिलानेसे बच्चोंके पेटकी पीड़ा मिटती है ( ८ ) पित्तसम्बन्धी मन्दाग्निमें, इसके ६ मासे चूर्णमें सोंठ और शर्करा मिलाके देना चाहिये ( ९ ) ज्वर मिटानेवाली कड़वी और चरपरी चीजोंके साथ इसको मिला, गोली बनाके देनी चाहिये ( १० ) इसमें गिलोय जैसा कड़वापन और बलकारक शक्ति है ( ११ ) इसको पीस गर्भ करके लेप करनेसे शिरकी पीड़ा मिटती है ( १२ ) इसको पानीके साथ पीसके पिलानेसे स्नायु रोग मिटता है।

( सं० ) पारदः, रसधालुः, रसेन्द्रः, चपलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मगहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पारो	पारा	पारो	पारा	पारा	पारा	पारदमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पादरस	पादरस	जीवक	सीमाव	Hydrargyrum	Mercury	

पारोमें नाग, वंग, मल, अग्नि, चपलता, पर्वतका विष और अग्निका नहीं सहना, ये सांसर्गिक दोषह, इन्हींको कई आचार्य सात वंचुकी कहतेहैं इन सांसर्गिक दोषोंको दूर किये बिदून पारोका भक्षण करनेसे शरीरमें कईप्रकारके रोग होजातेहैं । इस वास्ते इसको शुद्ध करना चाहिये ॥

तप्तखल्वकी रीति—जमीनमें गढा खोदके उसमें बकरीको मूंगनी और नाजक तुस डाले; उनकी भूमल पर लोकी खरले रखनेसे जब वह उष्ण हो जावे उसको तप्तखल्व कहतेहैं पारोके संस्कार करनेके लिये उसको इस खरलेमें मर्दन करना (घोटना) चाहिये; जिन आपधियांके साथ पारो घोटाने जावे उनमेंसे हरेक औषधि पागेको सोलहवां हिस्सा लेनी चाहिये ।

पारोको छद्म रीतिसे शुद्ध करनेकी रीति—( १ ) नागदोष दूर करनेके लिये ईट और हल्दीके चूर्णके साथ ( २ ) वगदोष दूर करनेके लिये इन्द्रवीरणी और अङ्गुलिके चूर्णके साथ ( ३ ) मलसम्बन्धी दोष मिटानेके लिये अमलतासके गदेके साथ ( ४ ) अग्निदोष मिटानेके लिये चित्रककी जड़का छालके साथ ( ५ ) चंचलपन मिटानेके लिये काले धत्तुरके रसके साथ ( ६ ) पर्वतके विषसम्बन्धी दोषको मिटानेके लिये साठ, मिरच पीपल और त्रिफलाके चूर्णके साथ ( ७ ) अग्निका नहीं सहना मिटानेके लिये गोमयके चूर्णके साथ, इस रीतिसे हरेक दोष दूर करनेके लिये उक्त दोषोंका मिटानेवाली जो आपधियां हैं उनके साथ पारोको तप्तखल्वमें जम्बरीका रस डाल ३ के एक एक दिन घोटना चाहिये और उष्णकाजी ( उष्ण धान्याम्लक )

याग्निरहेसाधोते जाना चाहिये ॥ अथवा श्री ग्वार, चित्रकनी, जड़की, झाल,  
ऊभी, कंदाली, राई और त्रिकला, इन सबके कावके साथ तप्तखरलमें पारेको  
तीन दिन तक मर्दन करके उक्त रीतिसे धोलेनेसे इसके सप दोष दूर हो  
जातेह ॥

पारेको स्वेदन करनेकी रीति—जितने प्रकारके अन्न मिलसके उन  
सबके तुल्य अलग करके उनको जलकी भांडीमें डाल रखके जवाबह जल खटा  
होनाय तब नागरमोथा, गोखमुंडी, शखाटुली, साटा, मच्छेडी, सहदेवी,  
सताचर, पापीनी, इरड, चण्डे, धातले, काली, कोयल, हंसराज और चित्रक,  
इनमेंसे जो और औषधी मिलजावे उनको सूटकर उस खटे पानीमें डाल देवे।  
उसको धान्याम्लक रहतेहै इसके पारेका स्वेदन करने और धोनेके काममें  
लाना चाहिये जो इसके बनानेको योग नहीं बने तो इसके और सिरका काममें  
लाना चाहिये। सांठे, मिरच, पीपल, नोन, राई, हलदी, हरड, चण्डे, धातले,  
अदरक, सहदेवी, गोगन, चोलाई, साटा, मंदासिर्गी, चित्रक और अनोसादर इनमें  
से जितना औषधियां मिलजावे उनको उक्त काजीसे पीस चक्कड़े पर इनका  
एक अंगुल मोटा लेप करके उसमें पारेको चांफकर उक्त काजीसे भरई हाडी  
के बीचमें इस मोटलीको लटकके प्रकृत अंशसे तीन दिन तक स्वेदन करना  
चाहिये, और जो आवश्यकता हो तो इस हाडीमें काजी फिर डालुदिना चां  
दियो। अथवा सांठ, मिरच, पीपल, नोन, कलमीशोरा, चित्रक, अदरक  
और मूली इनमेंसे हरेका औषधि पारेका सोलहवां भागले उक्त रीतिसे पीस  
कपडे पर एक अंगुल मोटा लेप करके उसमें पारेको धी प्रकृत रीतिसे तीन दिन  
तक स्वेदन करके फिर उसमें से पारेको आगिले तप्तखरलमें डालकर धूमसां  
ईट, दही, गुड, नोन, राई ये हरेका चीज पारेका सोलहवां भागले उसमें डाल  
जम्पेरीके रसके साथ तीन दिन तक मर्दन करके उक्त काजीसे धी लेना  
चाहिये।

मर्दन करनेकी रीति—ईट, हलदी, ऊनेकी भस्म और धूमसेके साथ  
उक्त खरलमें जम्पेरीके रससे एक या तीन दिन तक मर्दन करके वैसी धी  
लेना चाहिये। इस पारेकी नीचकी रसमें डालके दिन भर धूपमें पड़ा रखना  
चाहिये।

पातनकी रीति—तीन भाग पारेको नींधूके रसमें एक भाग तांधेके बूर के साथ इतनी देर तक खरल करे कि जबतक उसकी गोली बन जावे फिर उस गोली को खरल कर हंडीके पेंदे में धिछा उस हंडी के मुँह पर जलसे भरी हुई दूसरी हंडी रख कपड़मिठी लगा चून्हे पर बदाकर, चार पहर तक मंद अंच देवे, ठंडी होनेके पीछे उसकी खाम खोल उस हंडीके लगेहुए पारेको उतार लेवे, अथवा तिगुने पात्रमें एक भाग नीलातूथा और सोनमखड़ी मिला मर्दनकर गोला बना डमरुयंत्रसे उडालेवे, इसको गाढे कपड़ेमें कईबेर ध्यान २ के इसकी कालस निकाल कर शुद्ध कर लेवे, इन रीतियोंसे शुद्ध किया हुआ पारा औषधिके काममें लाने योग्य होजाता है।

षड्गुण गंधक जारण करनेकी रीति—ऐसे शुद्ध कियेहुए पारेमें कच्छपयंत्र, अथवा नलिकायंत्र, अथवा रससिंदूर बनानेकी रीतिसे ६ गुणा गंधक जारण करदेना चाहिये। कच्छपयंत्र बनानेकी यह रीति है कि मट्टीका एक कूंडा ले उसके बीचमें, खडीकी एक इंच ऊंची डोली बना, उसके बीचमें एक सरावा जमादेवे, उस सरावेमें शुद्ध गंधक धिछा उसमें शुद्ध कियाहुआ पारा रख उसको पीसेहुए गंधकसे ढककर उसपर लोहेकी एक बड़ी कटोरी आधी ढक, नमक और कंडेकी राख महीन पीसकर उससे उसकटोरी और कूडेकी सन्धिको बन्धकर पानीसे भरेहुए बरतनमें उस कूडेको आधा ईवाहुआ रखकर उस कूडेमें अग्नि भर देना चाहिये। अग्नि बुझ जानेपर उसकी खाम खोलकर देखना चाहिये कि उसमें, से कितना गंधक जला, जैसे २ गंधक जलता जावे वैसे २ गंधक फिर डाल दियाकरे। ऐसे ६ गुणा गंधक जला देनेसे वह षड्गुण गंधक जारण किया हुआ पारा कहलाता है। यह अंतर्धूमकी रीति है। बहिर्धूमकी रीति यह है कि सिकता यंत्रमें एक सगवा रख उसमें पारा डाल उसपर थोड़ा गंधक बुरका देवे जब, वह गंधक पिघलकर जलने लगे तब थोड़ा २ गंधक बुरकाता रहे, ऐसे ६ गुणा गंधक जल जावे तब उसमेंसे उस पारेको निकाललेवे। अथवा छाण (कंडे) की भूभलपर एक सरावा रख उसमें कड़वी तूंबीके बीजोंका तेल और मकोयका रस ये दोनों बराबर डाल उनमें पारा और गंधक डाल दूसरे सरावेसे बन्न, करके उसपर थोड़ीसी अग्नि जला देवे जब वह ठंडा होजाय तब उसको खोलकर देखेंकि ये तीनों चीजें अर्थात् तेल रस और गंधक

जल गयेहें या नहीं, जो वे बिलकुल नहीं जले हों तो फिर वैसेही बन्ध करके आंच देवें, जो उनमें से थोड़ी बहुत बाकी रहगई होतो वे तीनों चीजें फिर ढालके वैसेही आंच देवे, इस रीतिसे जबतक ६ गुना गंधक नहीं जल चुके तबतक उक्त तेल और रस ये दोनों गंधकके साथ ढालतारहे इस रीतिसे भी पारेमें ६ गुना गंधक जलाया जाताहै ।

केवल पारा औषधिके प्रयोगमें बहुतही कम आताहै । बराबर शुद्धगंधकके साथ अथवा दुगुने गंधकके साथ इसकी कजली बनाके काममें लातेहैं । जिस रोगको मिटानेवाली जो औषधिहै उसमें इसकी कजली मिला देनेसे उसकी उस रोग को नाश करनेवाली शक्ति बहुत बढ़ जातीहै इसलिये ऐसा कोई भी रोग नहीं है कि जिसको पारा नहीं मिटा सके । पारद भस्म, हरगौरी, मकरध्वज और हेमगर्भ आदि रस बनानेकी विधि यहाँ नहीं लिखनेका कारण यहहै कि जबतक ये रस गुरूके सामने नहीं बनाये जावें तबतक इनका बनाना बहुत कठिन और असंभवहै । क्योंकि ऐसा लिखाहै—“अध्यापयन्ति यदि दर्शयितुं क्षमन्ते सूतेन्द्रकर्मगुरवो गुरवस्त एव । शिष्यास्त एव रचयन्ति गुरोः पुरो ये शेषाः पुनस्तदुभयाभिनयं भजन्ते” इसका अर्थ यहहै कि पारेके कर्मका गुरू वहही है जो पारेके संस्कार करके दिखला देवे और शिष्य वहहीहै जो गुरूके सामने पारेके संस्कार कर लेवे । बाकी वे दोनों नाम मात्रके गुरू शिष्यहैं ॥

संख्या ( ३२१ )

( सं० ) पारिजातकः, प्राजक्तः, रागपुष्पी, खरपत्रकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हारसिंगार	हारसिंगार	शियाली	शिवली	पालतेमोंदार		
शाबिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Nyctanthes Arborescens. asabita scabra.		

स्थान—हारसिंगारके वृक्ष हिमाचल और तराईकी घाटियोंमें, मध्य हिन्दु-

स्थान ब्रह्मा और सीलोनमें होतेहैं और बहुत या वागोंमें पाये जातेहैं।  
 - १२ - प्राचिन और फूलने फूलनेका समय इसके पुष्प सायंकालको  
 खिलतेहैं और प्रातःकाल होने पर गिर जातेहैं। इसका बड़ा गुल्म ह्या छोटा  
 वृत्त। ११ १/२, २० फुट ऊंचा होताहै । इसके कुछ सफेद रंग होतेहैं, इसके पुरान  
 पत्ते माघमें गिर जातेहैं और चैत वैशाखमें नवीन आजातेहैं, इसके बहुधा वर्षा-  
 ऋतुमें पुष्प लगतेहैं, परन्तु बारह महीनेही लगते रहतेहैं।  
 प्रयोग (१-) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे गठिया मिटतीहै (२-)  
 जीर्णद्वर मिटानेके लिये पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पि्लाना चाहिये (३-)  
 मूत्र आचसे इसके पत्तोंका काथ बनाके पिलानेसे किसी औषधिको न मानने  
 वाली मूत्रसी मिटतीहै (४) पित्रविचार मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें त्रिशी  
 मिलाके पिलाना चाहिये (५-) इसी रसमें मधु मिलाके पिलानेसे सूखी खासी  
 मिटतीहै (६-) मुनका और इसके पत्तोंका फाड़ पिलानेसे पित्तज्वर मिटताहै  
 (७-) इसके पत्तोंके रसमें नमक डालके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं (८-)  
 इस पत्तोंका रस पित्तकारक, सारक, कुछ कड़वा और बलवद्दकहै (९) इसके  
 पत्तोंका फाड़ पत्तोंको पिलानेसे पसीना होकर ज्वर उतर जाताहै (१०) इसके  
 पत्तोंके रस पिलानेसे मज्जुद्धि होतीहै (११) इसके ताजे पत्तोंको दाल या  
 कढी बनाते समय उनमें दालतड़ (१२) इसके खानस बल बढ़ताहै (१३)  
 इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे उदर प्रमह मिटताहै (१४) इसके सफेद पुष्पों  
 की डंडी अलग कर उनमें दुग्धनाच्युग मिला शीशीमें भरकर ४० दिन कोठे  
 पर रख देवे। इस गुल्मका ३ तोले नित्य प्रातःकाल खानेसे हृदयका बल  
 बढ़ताहै और गर्मीका हलादिल मिटताहै (१५) इसका कापल और ७ काली  
 मिरच पीस द्वातके पिलानेसे मासिकरूपमें अधिक रुधिर हा जाना बन्ध होता  
 है (१६) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे दाद मिटताहै (१७) इसकी  
 छालको तेल, काजी और सधे नमकके साथ पीसकर लेप करनेसे नेत्ररोग  
 मिटतेहैं (१८) इसके एक तोले बीजा और ३ मासे काली मिरचको पीस द्वात  
 गोलियां बनाकर ३ मासे तक मात्रा शीतल जलके साथ देनेसे अर्थ मिटताहै  
 (१९) इसके सुगंधयुक्त पुष्पोंमें से सुगंधित तेल और पात्रा रंग निकाला  
 जाता है।

(सं०) पारिभद्र, पालाशः, रक्तपुष्पः, प्रभद्रकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
फरहद	फरहद	पाडेरवा	वागरो	पालिदामोदी		वारिजमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	स्लोटीनी		अग्रजी
कल्याणपुरी	हार्दिकवाण	फारसी		<i>Erythrina fuclea</i>		<i>Gudlac cor si tree</i> Gochi wood

इसका नाम फरहदको अथवा हिन्दुस्थानमें लग ठार होते है और बहुधा वागोंमें बोये जाते है। यह भी एक प्रकार का फल है।

पहिचान—यह एक साधारण ऊचाई का शीघ्रतासे बढ़नेवाला वृक्ष है। यह दो प्रकार का होता है एक जोया हुआ और दूसरा अपने आप उगनेवाला। इसकी पेटके सी गी होती है जब तक यह वृक्ष जवान होता है तब तक बहुधा

इसकी पेटके में कटि लगे लहते बोये हुए एक कटि नही होते है। इसकी छाल पतली, कुछ पीली या कुछ नीली और चमकदार होती है इसमें कुछ सफेद दाग होती है। उसके प्रारम्भम इसका पुरान पत्ते गिरकर फाल्युन चत्रम नवीन ननिकल आते है। इसकी एक डंडी पर तीन पत्ते लगते है इसके पुष्पों का रंग लाल होता है।

फलन फलने का समय—माघ, फाल्गुनम इसके पुष्प लगते है। और वैशाखसे अषाढा तक इसकी फलियां पकती है अपने आप उगनेवाले भी फली २, ३ इंच और चौथे ६, ७ इंच लम्बी होती है इसके एक प्रकार का मोद लगता है, इसके मुखे लाल पुष्पोंमें से लाल रंग निकाला जाता है। इसकी छाल रंगतके काममें आता है।

प्रयोग—(१) यह कपिला, चरपरा, उदक, मोचक, अग्निबद्धक और पाकम कटु है (२) पित्तविनाश मिटानेके लिये इसकी छालका हिम पिलाना चाहिये (३) इसकी छालका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (४) इसके पत्तोंका ५ तोले रस पिलानेसे पेटके कीड़े निकले जाते है (५) विरग-



नके लिये इसके पत्तोंका रस पिलाना चाहिये ( ६ ) उपदश सम्बन्धी गाँठें मिटानेके लिये उनपर इसके पत्ते बांधने चाहियें ( ७ ) इसके पत्तोंपर इरंड का तेल चुपड़ उनको तपाके बांधनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है ( ८ ) इसकी अन्तर छाल पर घृत चुपड़ उसपर दीपककी लोयसे कज्जल पाड़के आंखके भीतर और नीचेकी पलकपर अंजन करनेसे उसमेंसे पानीका बहना बन्ध हो जाता है ( ९ ) आंखके सफेद भागके रोग मिटानेके लिये इसके पत्तोंके ताजे रसका लेप करना चाहिये ( १० ) उक्त ७ वें प्रयोगके अजनसे बांफनीके रोग मिटते हैं ( ११ ) इसके पत्तोंका ताजा रस कानमें डालनेसे कर्णपीड़ा मिटती है ( १२ ) इसके पत्तोंके काथके गंधूप करनेसे दातोंकी पीड़ा मिटती है ( १३ ) इसकी जड़को स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे बालक सुखसे और शीघ्रतासे पैदा हो जाता है ( १४ ) इसके पत्तोंके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे कुमि रोग मिटता है ।

संख्या ( ३२३ )

( सं० ) पालक्यं, पालक्या, चीरितच्छदा, छुरिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलड़ी
पालखो	पालक	पालख नीभाजी	पालख (फ)	पालशाक	पालक	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		इस्फानाख	इस्फनाख	<i>Epinacia oleracea</i> & <i>tetrandra</i> . <i>Beta maritima</i> . <i>B vulgaris</i>	Indian or garden spinach. Beet root	

स्थान—पालकका शाक हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोया जाता है ।

प्रयोग—( १ ) पालक—शीतल, पचनेमें भारी, विष्टंभी, सारक, पिच्छल, कुछ चरपरा, मधुर, ग्राही, और बातल है ( २ ) इसके बीज शीतल और सारक हैं ( ३ ) ये कष्टसे श्वास आनेको मिटाते हैं—( ४ ) पित्तके उपद्रव मिटानेके लिये ठंडे जलके साथ इसके बीजोंकी फकी देनी चाहिये ( ५ ) मूत्रकी पयरीको मिटानेके लिये इसका ताजा रस पिलाना चाहिये ( ६ ) खट्टे पालकके बीजोंको पीस द्धानके योनि में मलनेसे उसका दीलापन मिटता है । इसके बीजोंमेंसे गाढा तेल निकलता है ।

संख्या ( ३२४ )

( सं० ) पाषाणभेदः, अश्मघ्नः, शिलाभेदः, कृच्छ्रहरः ।

मारवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी-
पाषाणभेद	पाषाणभेद	पाषाणभेद	पाषाणभेद	पाथरचुनी	पाषानभेद	पाषाणभेदि
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पाषाणभेदि	पाषाणभेदि			Colens aromaticus C Ambointcus	Country Borage	

स्थान— पाषाणभेद हिन्दुस्थानमें सब ठौर बागोंमें बोया जाताहै ।

पहिचान— इसकी सुगन्ध उत्तमहै और स्वाद चरपरा होताहै ।

प्रयोग— ( १ ) पाषाणभेद—शीतल, कड़वा, कपेला, मधुर्, तिक्त, सा-

रक, और वस्तिशोधकहै । श्वास, पुरानाकास, अपस्मार और बाईटोंके रोम

में काम आताहै ( २ ) इसका काथ पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै, ( ३ ) ब-

च्चोंके पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसमें शकर मिलाके पिलाना

चाहिये ( ४ ) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे पुरानी मदाग्नि मिटतीहै ( ५ )

इसके पत्तोंका बहुत रस पीनेसे नशा आजाताहै ( ६ ) इसके पत्तोंका रस ग्राही

है ( ७ ) पत्तोंके रसमें सौठ बुरकाके पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटतीहै ( ८ ) आंख

के बाहिर चारों और पत्तोंके रसका लेप करनेसे उसके सफेद भागकी पीड़ा

मिटतीहै ( ९ ) मूत्राशयके रोग मिटानेके लिये पाषाणभेदका काथ पिलाना

चाहिये ( १० ) स्त्रियोंकी योनिके स्राव-आदि और पुरुषके मूत्र सम्बन्धी रोगोंको

मिटानेके लिये इसके काथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये ( ११ ) इसका

काथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरी मिटतीहै ( १२ ) इसके काथमें मधु और

शिलाजीत मिलाके पिलानेसे पित्ताश्मरी मिटतीहै । इसके पत्तोंको मक्खन और

रोटीके साथ खातेहैं ।

संख्या ( ३२५ )

( सं० ) पिच्छिला, अंभःफलं, पाटला ।

मारयाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बी, बिही	बिही	बिही	सफरजन	बिहिदाना	बाहिदाना	
द्राविडी	कनीटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
			वेह	Cordia alligator Ficus donia	The guinea	

**स्थान**—यह अफगानिस्थान आदि देशों में पैदा होता है। पेशावर की घाटी कश्मीर सिक्किम भूटान और खासिया पहाड़ कांगडाम इसके पड़े बहुत बोये जाते हैं।

**पहिचान**—इसके सफेद लाल पुष्प लगते हैं। पंजाब में जेठ अपाहम इस के फल पकते हैं।

**प्रयोग**— १) इसके बीजाँ का हिम या काथ पिलानिस मूत्रकृच्छ्र मिटता है (२) बिहीदानेको भिगो उनका चप निकाल उसमें मिश्री मिलाके पिलानिस मूत्रमालोको दाह मिटती है (३) चार मास बिहीदानेका चप निकालके पिलानिस सूखा खोमी तर हो जाती है (४) रातु पुष्ट करनेवाली आपथियोंकी फकी लेके ऊपर इसके चपका शर्वत पीनेसे धातु पुष्ट होता है (५) बिहीदानेको रातिभर पानीमें भिगो प्रातःकाल उनका चप निकाल मिश्री मिलाके पिलानिसे बालक जवान और बुद्ध मनःका अतिसार मिटता है (६) इस शरबालकी फकी देके ऊपर इसका चप पिलानिस आमातिसार मिटता है (७) इसका शर्वत पिलानिस गलेके छाले मिटता है (८) पित्तज्वरकी तृपा और दाह मिटानेके लिये इसके बीजाँको मुहमें रखनी चाहिए (९) बिहीका मुरब्बा खिलानिसे यकृत और हृदयको निबलता मिटता है (१०) बिहीका लप करनेसे पित्तके छाले और आग्निसे जलहुएकी दाह मिटता है (११) आपथिकी चरपरोहट कम करनेके लिये उसका इसके शर्वतक साथ चटाते है या पिलाते (१२) इसका मुरब्बा खिलानिसे चार बार दस्तको शकाका होना बन्द हो जाता है (१३) इसका शर्वत पिलानिसे पित्तकी बमन बन्ध होती है (१४) इसका पानी पीनेसे बमन और तृपा मिटती है (१५) इससे पित्तकी प्रकृतिवालेका उदरका बल बढ़ता है इसका पकाहुआ फूल मीठा कड़ खटा और रसदार होता है और इसको मुरब्बा बनातेहोयिह खानेके काममें आता है।

संख्या ( ३२६ ),  
( सं० ) पिप्पली, सागधी, कृष्णा, चपला ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलड़ी
पीपल	पीपर ल	निढीपीपर	पिपळी	पिपुल	पीपल	पिप्पलु
द्रानिडी	कनरिडी	अरबी	फारसी	लेटिन	अंग्रेजी	
तिप्पलि	हिप्पालि	दारफिताफिन	पीपलदराज	Up r bhgan Chavfen. Rozbhgt ti	Long pi per	

स्थान—पीपल—हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें नेपालके पूर्वसे आसामके पूर्व, कासियापहाड और बंगाल तक पश्चिमकी ओर बम्बई अर्थात् तम्र, दक्षिण की ओर दैवन्कोर और सालोन तक होती है ॥

फूलने फलनेका समय—श्रावण, भादवेमें इसके पुष्प लगते हैं, पीपल तक फल पकते हैं ॥

प्रयोग—( १ ) पीपल—टीपन, वृष्य, पाकमें मधुर, अत्यन्त उष्ण, चरपरी, सिग्ध, पचनेमें लघु, पित्तल, रेचक, उत्तजक, पेटकी वायुकी पीड़ा मिटाने वाली, रुधिर शुद्ध करनेवाली और सारकह—( २ ) फफ, गलेका भारीपन, श्वास, मन्दाग्नि और पक्षाघात आदि रोगोंमें बहुत उपकारी है, ( ३ ) नई पीपलों से पुरानी पीपल अधिक गुणकारी है, ( ४ ) पीपलका चूर्ण मधुक साथ चटाने से फ, श्वास, गलेका भारीपन, हिचकी और निद्रानाश मिटता है ( ५ ) पीपल, पीपलामूल, कार्त्तमिरच और साठ इन सबको उराधर ले चूर्ण बना यथादोष, बल, एक मासे से ४ मासे तककी फकी देनेसे या मधुके साथ चटानेसे प्रतिश्याय, और गले का भारीपन मिटता है ( ६ ) वर्द्धमान पिप्पलीके प्रयोगसे रक्त शुद्ध होके शरीरका बल बढ़ता है और विषमज्वर छूटजाता है, उरुस्तम्भ और पुरानी खासी मिटजाती है और तिल्ली आदि पेटके भीतरके बद्धहूए यत्र अपनी र योग्य दशामें होजाते हैं ( ७ ) वर्द्धमान पिप्पलीके प्रयोगकी यह रीति है कि रोगीकी शक्तिके अनुसार पहिले दिन ३ पीपलको आधपाव दूध और आधपाव जलमें डालके अग्निपर चढ़ा देवे जिन पानीजलजावे तब उसको अग्नि परसे उतार, उरुग

कर दूधसे पीपलोंको निकाल, रोगीको खिलाके ऊपर धह पिलादेवे, जो उसकी शक्ति होवे तो ३ पीपल और छत्रांशु भर दूध और छत्रांशु भर जल उक्त रीतिसे नित्य बढ़ाते हुए जबतक आवश्यकता हो सेवन करावे जब बढ़ानेकी आवश्यकता नहीं रहे तब बंदही उनको घटादेवे और घटाके ३ तक लाके छोड़ देवे परन्तु किसी २ को दूधसे बढ़कोष्ठ होजाताहै अर्थात् मल गाढा होके गाठें बंध जातीहैं, इस लिये उसका मल ढीला रहनेको उपाय करते रहना चाहिये ( ८ ) पीपलको पानीमें घिसके अंजन करनेसे मूर्च्छा मिटतीहै ( ९ ) मूर्च्छा मिटानेवाली कई प्रकारकी नस्यकी औषधियोंमें पीपलका योग किया जाताहै ( १० ) पीपल और सोंठके योगसे तेल घनाके मर्दन करनेसे उरुस्तंभ और गृध्रसी मिटतीहै ( ११ ) पीपल कफकी गांठोंको विखेतीहै ( १२ ) तिल्ली और यकृतमेंसे उनके रसके बहावकी रुकावटको मिटातीहै ( १३ ) मधुके साथ पीपलका चूर्ण चटानेसे पाचनशक्ति बढ़तीहै ( १४ ) यह पुरुषार्थ बढ़ातीहै, मूत्रवृद्धि करतीहै और कष्टसे मासिकधर्म होनेको मिटातीहै ( १५ ) पक्षाघात, छोटे जोड़ोंकी सूजन, कपूरकी पीड़ा और इसी प्रकारके दूसरे रोगोंमें पीपल और पीपलामूलका प्रयोग बहुत उपकारीहै ( १६ ) रसोधा मिटानेके लिये आंखमें पीपलका अंजन करना चाहिये ( १७ ) पीपलको घिसके घिपल जीवोंके दंशपर लगाना चाहिये ( १८ ) प्रतिरियायसे जिसकी छाती कफसे भर गईहो उसको पीपलके काथमें मधु मिलाके पिलाना चाहिये ( १९ ) पीपल, कालीमिरंच और सोंठके चूर्णकी फकी देनेसे हाथपैरोंका ठढापन और निर्बलता मिटतीहै ( २० ) पेट के कृमि निकालनेके लिये पीपलका प्रयोग करना चाहिये ( २१ ) कालेनयक के साथ पीपलके चूर्णकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटतीहै ( २२ ) मधु और पीपल चटानेसे ज्वरके पीछेकी ऊष्मा मिटजातीहै ( २३ ) च्वा होनेके पीछे रुधिरको रोकनेके लिये पीपलके चूर्णको घीमें चटाना चाहिये ( २४ ) बच्चेका प्रतिश्याय मिटानेके लिये पीपलके चूर्णको मधुमें चटाना चाहिये ( २५ ) पीपलको पानीसे पीसके लेप करनेसे मन्तकपीडा मिटतीहै ( २६ ) पीपलके चूर्णकी नस्य देनेसे सर्दीकी मस्तरुपीडा मिटतीहै ( २७ ) इसके कल्कको दूधके साथ पीनेसे प्रवाहिका मिटतीहै ( २८ ) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटताहै ( २९ ) इसके चूर्णमें शकर मिलाके फकी देनेसे हिचकी बन्ध होतीहै ( ३० )

पीपलके बेर धूरके दूधकी २१ भावना देकर १ या २ पीपल खिला देनेसे उदर रोग मिटतेह ( ३१ ) पीपलके प्लासके खारकी भावना देके उसका सेवन कगनेसे गुल्म, प्लीह और मंदाग्नि मिटतीहै ( ३२ ) कंठ शुद्ध होनेके लिये इनका चूर्ण मधुके साथ चटाना चाहिये ( ३३ ) घी और मधुमें इसका चूर्ण मिलाके मुखमें रखनेसे दंतशूल मिटतीहै ( ३४ ) एक भाग पीपल और दो भाग हरड़को जलके साथ पीस बत्ती बनाके आगमें फेरनेसे तिमिर, अर्बुद और पटल दूर होताहै और नेत्रसाव बन्ध होताहै ( ३५ ) पीपलको चिलममें भरकर तमाख की भांति पीनेसे पुगनी खांसी मिटतीहै ( ३६ ) पीपलका चूर्ण कुछ- गर्म दूधके साथ लेनेसे दूध बढ़ताहै ( ३७ ) पीपल और बचके चूर्णकी फकी देनेसे मर्यावर्त मिटताहै ( ३८ ) पीपलका कल्क गुड और दूध इनसे मिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे अम्लपित्त मिटताहै ( ३९ ) दूधमें इसका कल्क और घी डाल गर्म करके पिलानेसे मंदाग्नि और उदरक रोग मिटतेहै ( ४० ) दूधमें पीपलका चूर्ण डालकर पिलानेसे प्लीह मिटताहै ( ४१ ) पीपलके सेवनसे नपुंसकता मिटतीहै ( ४२ ) पीपल और आंधीभाडेके चूर्णकी लस्य देनेसे कठ कुब्ज सन्निपात मिटताहै ( ४३ ) इसके चूर्णकी दुगुने गुडमें गोली बनाके देनेसे जीर्णज्वर और मंदाग्नि मिटतीहै ( ४४ ) पीपलके कल्क से घृत सिद्ध करके उसका सेवन करानेसे राजयक्ष्मा और क्षयरोग मिटताहै ( ४५ ) पीपल और अद्रक को बेर २ चाव २ के धूकनेसे और गर्म जलसे कुल्ले करनेसे हनुस्तम्भ मिटताहै ( ४६ ) इसके और कटालीके चूर्णको मधु और आंवलेके रसके साथ चटानेमे या शकरके साथ फकी देनेसे हिचकी मिटतीहै ( ४७ ) गोमूत्र और एरंडके तेलमें पीपलका चूर्ण डालके पिलानेमे कफ और वातमे पैदा हुई गृध्रपी मिटतीहै ( ४८ ) छात्रमें पीपलका चूर्ण और मधु डालके पिलानेसे प्लीहोदरी को लाभ होताहै ( ५० ) बर्द्धमान पिप्पलीका मधुके साथ सेवन करनेसे उरुस्तम्भ मिटताहै ( ५१ ) बकरीके दूधके साथ पीपलके दो मासे चूर्णकी फकी देनेसे पुगनी प्रवाहिका मिटतीहै ।

संख्या ( ३२७ )

( सं० ) गजपिप्पली, गजोपणा, चव्येजा, श्रेयसी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गजपीपल	गजपीपल	गजपीपर	गजपिपळी	गजपिपुल	गजपीपळ	गजपिप्पलि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	ग्रीकी	
यानेतिप्पलि	गजद्विप्पलि			Strind p u con, malle Folhos, D		

स्थान—गजपीपल हिन्दुस्थानके बहुतसे भागमें और विशेष करके दक्षिण हिन्दुस्थानमें होती है ।

पहिचान—इसकी बेल वृक्षापर चढ़ती है । इसकी जड़ मोटी होती है ।

प्रयोग—( १ ) गजपीपल—उष्ण, चरपरी, कडवा, रुक्ष, तीक्ष्ण, कषेयी ग्राही, अग्निवर्द्धक, उच्चेजक, कीड़े मारनेवाली और पसानी लानेवाली है । कफ, वादी, अतिसार, श्वास, कुमि, कंठराग काग और ज्वरको मिटाती है । मलका शो गन करती है । स्तन, कर्णपाली और इन्द्रिको बढ़ाती है ( २ ) इसके चूर्णको फकी देनेसे पेटकी वादीको पीडा मिटती है ( ३ ) इसके चूर्णको पानमें रखके खानेसे श्वास मिटता है ( ४ ) इसके चूर्णको अदरखके रस और मधुके साथ चटानेसे कफके रोग मिटते हैं ( ५ ) आमकी गुठलीके साथ इसको घिस, गर्म करके पिलानेसे अतिमार मिटता है ( ६ ) इसको घिस, गर्म करके लेप करनेसे गुठिया मिटती है ( ७ ) इसके रसमें कालीमिरच मिलाके पिलानेसे साधारण विपल सर्पका विष उतरता है ( ८ ) इसके रसमें करला मिलाके सर्पके दशपर लेप करना चाहिये ।

संख्या ( ३२८ )

( सं० ) जलपिप्पली, शारदी, तोयपिप्पली, मत्स्यादनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जलपीपल	जलपीपरि	रतबलियो	जलपिपळी	काँलडादाम	जलपीपळ	नेलपिप्पल्लु





उसका चूर्ण बनाके मधुके साथ चटानेसे गठिया मिटतीहै ( ८ ) बच्चेके फुफ्फुसके रोगमें पीपलामूलके आधी गती चूर्ण हो मधुके साथ चटाना चाहिये। इससे क्रफ निकलने लगताहै ( ९ ) इसका चूर्ण गुडके साथ देनेसे बहुत दिनोंसे नष्ट हुई निद्रा आने लग जातीहै ( १० ) इसको पीसके दूध और अदूसेके रसमें मिलाकर पीनेसे ऊर्ध्वजात मिटतीहै ।

संख्या ( ३३० )

( सं० ) पियालः, प्रियालः, चारः, सन्नकद्रुः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
चार ला	चिरोंजी	चारोली(ळी)	चारवृक्षबीज	पियाल	चिरोली	सारपपुः
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मारपरुपु	चारपपु	हबुस्मिमना	नुरूलोखवाजा	Duchanania-Jalifolia	( ८ )	

स्थान चिरोंजीके वृक्ष हिमालयमें अतलजसे पूर्वकी ओर और हिन्दुस्थान के अधिक उष्ण और शुष्क भागमें होतेहैं ।

पहिचान -- इसका वृक्ष ४०, ५० फुट ऊंचा होताहै । इसकी सीधी पेदड़ की गुलाई ४ फुटकी होतीहै । इसकी छाल १ इंच मोटी गहरी, सफेद या कुछ काली और खरदरी होतीहै । इसके पत्तेके नीचे बीच की नस लंबे रेशमी रू-आंसे ढकी हुई होतीहै । इसके पत्ते ६ से १० इंच लम्बे होतेहैं वे उष्णकाल में प्रायः सब गिर जाते हैं और थोड़े दिनों पीछे नवीन पत्ते निकल आते हैं पूरे षडेहुए पत्ते गहरे हरे रंगके होतेहैं । इसका पकाहुआ फल आधइंच लम्बा और काले रंगका होताहै । इसका छिलका कठोर होताहै । इसके एक प्रकारका गोंद लगताहै ।

फूलने फलनेका समय -- पोपसे फागुनतक इसके पुष्प लगतेहैं । चैत्र वैशाखमें इसके फल पकतेहैं, बहुधा ज्येष्ठमें वृत्तसे तोड़ लिये जातेहैं । चिरोंजी मेंसे पीले रङ्गका मीठा और नैराग्यकारक आधा तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) चिरौजी-पचनेमें भारी, चरपरी, खट्टी पाकमें मधुर, स्निग्ध शीतल, विष्टंभी, वृंहण और धृष्य है (२) इसका गोंद अतिसारको मिटाता है (३) गर्दनकी पेशियोंकी सूजन पर इसका तेल लगाया जात है (४) चिरौजीके खाने कलेजे, फेफड़े और मस्तककी सर्दी मिटती है (५) औषधियोंको स्वादिष्ट करनेके लिये उनमें चिरौजी मिलाई जाती है (६) यह सारक है । इसको दूसरी सारक औषधियोंमें मिलानेसे उनकी सारकशक्ति षट् जाती है (७) मिश्रीके साथ इसकी फकी लेनेसे प्यास कम हो जाती है ( ८ ) ज्वर मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसका प्रयोग करने से ज्वरकी ऊष्मा और शरीरकी दाह कम होजाती है ( ९ ) ताजी चिरौजी स्वादिष्ट, उलवर्द्धक और स्वास्थ्यकारक है ( १० ) इसका तेल वादामके तेलकी ठौर और यह वादामकी ठौर काममें आसकता है ( ११ ) दूधमें इसकी खीर घनाके खाते है ( १२ ) चिरौजीके खानेसे मूत्र तिल और चिरौजीको, भैसके दूधके साथ पीसके खानेसे भिलावेकी सूजन मिटती है ( १३ ) चिरौजीको तेलके साथ पीसके मर्दन करनेसे मकड़ीका विष दूर होता है ( १४ ) यह उष्ण है ( १५ ) इसको सेकके खाते है ( १६ ) इसमें मांगी सूधे फलोंको पीस धूपमें सुखाके रख छोड़ते है उनको आटेमें मिल रोटी बनाके खाते है ।

संख्या ( ३३१ )

(- सं० ) पीतमूली, गन्धिनी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रेवतचीनी	रेवतचीनी	रेवचिनी	रेवाचीनी	रेवाचिनी	रेआँदचीनी	चीनगड्ड
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
भेट्टिकिलगु	रेवचिनि	रावद	रेवन्द	Rheum emodi " R. Anstrale " R. emollum	Rhubarb Camboge. (K 11)	

स्थान—रेवतचीनीके वृक्ष नेपाल और सिक्किममें होते है ।

पहिचान—इसका पेड़ ५-६ फुट ऊँचा होता है, इसकी जड़ मुड़ी हुई

या गोल, अकार और मुट्ठीमें कई प्रकार की होती है, इसका स्वाद कड़वा और शोषक होता है।

प्रयोग - (१) र्वतचीनी - कड़वी, चरपरी, मृदुचक और बलकारक है। यह अजीर्ण, अतिसार मन्दाग्नि, अरुचि विबन्ध शीतपित्त और दुग्त्रणों को मिटाती है (२) हिमालयकी र्वतचीनी रचक होती है। र्वतचीनीसे किसी को विरेचन हो जाता है (३) इसकी डंडीको कालीमिर्चके साथ पीसके चटनी बनाते हैं (४) इसमें भिस्सी पिलाके मंजरे कंगनेसे दांत साफ और दृढ़ रहते हैं (५) पानीसे पीसके इसको दोनों कंगोंके बीचमें लेप करने से वादीका होलदिल मिटता है।

संख्या (३३२)

(सं०) पीलुः, गुडफलः, खंसी, विरेचनः

मार्वाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जाक	पीलु	खारीजाक्य	लघुपीलु	पीलुगाळ	पीलु	तरगंगु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	गोनुर	अराक	दरख्तेमिस-वाक	Salvadora persica. S. Wightiana.	The tooth brush tree Mustard tree of scripture

स्थान - जालके वृक्ष - हिन्दुस्थानके अधिक - शुष्क भागोंमें होते हैं अर्थात् पंजाब और सिन्धसे पटने तक, देवखनकी आर कोकन, सर्कार और सीलोन के उत्तरभाग तक होते हैं।

पहिचान - इसका वृक्ष - ३०-४० फुट ऊचा होता है इसकी पेदङकी उचाई ८, १० फुटकी और गोलाई ४-५ या ६-८ फुट तक होती है। इसकी पेदङ बहुधा मुड़ी हुई होती है और उसके फैली हुई, बहुतसी, शाखें लगेती है इसके अन्तः की डालिया झुकी हुई रहती हैं, पेदङकी छाल सफेद या कुछ भूरे रंगकी होती है। इसके पत्ते चैत्रमें गिर जाते हैं और उनके पीछे ही नवीन पत्ते निकल आते हैं, ये कुछ गोल और नोकदार होते हैं परंतु देश भेदसे आकारमें बदल जाते हैं

इसके कुछ हरे मफेद पुष्प लगते हैं और छोटे गिरदार, कुछ हरे पीले रंगके फल लगते हैं वे पकनेपर लाल रंगके होजाते हैं ।

फूलने फलनेका समय— कार्तिकसे वैशाख तक इसके पुष्प लगते हैं । अलग अलग देशोंमें अलग-अलग समयमें इसके फल पकते हैं । इसके पत्ते और बीजोंमेंसे बहुत सुगन्धित तेल निकलता है ।

प्रयोग— ( १ ) पीलू-चरपरा, कपेला, मधुर, खट्टा, सारक और दीपन है ( २ ) यह पेटके यंत्रोंकी रुकावट और पेटकी पीडाको मिटाता है, और सूत्र-बद्धक है ( ३ ) सर्पका विष उतारनेके लिये इसकी गीली लकड़ीको घिस उसमें सोहागा मिलाके पिलाना चाहिये । इसकी सूखी लकड़ीमें गुण बहुत कम रहता है ( ४ ) पीलू रेचक है ( ५ ) इसकी टहनीकी छाल उष्ण और चरपरी होती है ( ६ ) मंदज्वरमें इसकी छालका काथ पिलाना चाहिये ( ७ ) यह उत्त-जक है ( ८ ) इसका सवा छ छ तोले काथ दिनमें दो बर पिलाना चाहिये ( ९ ) इसकी कोमल टहनियाँ और पत्ते चरपरे होते हैं और सब प्रकारके विष उतारनेके लिये काममें आते हैं ( १० ) इसके पत्तोंके रसके लेप से मसूड़ोंका रोग मिटता है ( ११ ) इसके पत्तोंके रसको उष्ण करने लेप करनेसे गठियाँ मिटती हैं ( १२ ) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़ आगसे तपाने गठियाँकी सूजन पर बांधना चाहिये ( १३ ) इसकी जड़की छाल चरपरी होती है उमको बाधने से छाला होजाता है ( १४ ) इसकी लकड़ीका दातुन करनेसे दात, साफ और दृढ़ बने रहते हैं और पाचनशक्ति बढ़ती है ( १५ ) इसके पत्तोंको गोमूत्रके साथ पीस लेपकर उसके ऊपर पान बाधनेसे कठमाला मिटती है ( १६ ) इसके तेलमें वृत्ती, भिगोके गुदामें रखनेसे अर्श मिटता है ( १७ ) इसकी कोमल टहनियाँ और पत्ते शारक काममें आते हैं ( १८ ) इसके छोटे लाल फल खानेके काममें आते हैं । इनमें अच्छी सुगन्ध होती है और राई जैसा स्वाद आता है ।

संख्या ( ३३३ )

( स० ) महापीलूः, मधुपीलूः, राजपीलूः, महाफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
बड़ी जाल	बड़ा पीलु	मोटी जाल्य	थोर पीलु	बड पीलु	बडी पीलु	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Salsola oleoides. S India		

स्थान—बड़े पीलूके वृक्ष सिन्ध पंजाव और राजपूताना आदि कई देशों के रेतीले जंगलोंमें होतेहैं ।

परिचय—यह वृक्ष २०, २५ फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेड़छ छोटी बहुधा मुड़ीहुई और गुलाईमें ५, ६ फुटकी होतीहै यह वृक्ष बढ़ा होनेपर बहुधा खोखला होजाताहै । इसकी छाल चौथाई इंच मोटी और सफेद रंगकी होतीहै । चैत्रतक इसके नवीन पत्ते आजातेहै, इसके छोटे पत्ते बहुधा गहरे कुछ हरे भूरे रंगके होतेहैं परन्तु पूरे बड़े होनेपर उनका रंग पलट जाताहै । इसकी शाखें खाखी या कुछ लाल भूरे रंगकी और कड़ी होनीहैं, इसके पुष्प कुछ हरे सफेद रंगके होतेहैं, इसके फल छोटे होतेहै पकनपर पीले रंगके और सूखनेपर गहरे भूरे या लाल रंगके होजातेहैं ।

फूलने फलनेका समय—फागुन और चैत्रमें इसके पुष्प लगतेहैं और ग्रीष्म ऋतुके प्रारम्भमें इसके फल पक जातेहै ।

प्रयोग—( १ ) बड़ा पीलु—मधुर, वृष्य, रोचक और टीपकहै ( २ ) इसका फल ठंडा और मीठा होता है और पुरुषार्थ बढ़ानेवाली औषधियों के साथ काममें आताहै ( ३ ) इसका फल इकट्ठा खानेसे मुखमें चरपराहट और छोटे छाले होजातेहैं ( ४ ) इसके बीजोंका तेल उत्तेजकहै ( ५ ) इसका मर्दन करनेसे गठियाके रोग मिटतेहैं ( ६ ) बच्चा होनेके पीछे स्त्रियोंके इस तेलका मर्दन करनेसे बहुत लाभ होताहै ( ७ ) इसकी जड़की छालको पीसके लेप करनेसे छाला हो जाताहै ( ८ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे विरेचन लगताहै ( ९ ) चौपायोंको इसके फल खिलानेसे दूध बढ़ताहै और मीठा होताहै ( १० ) इसके फलोंको संग्रह करके सुखा रखतेहै । इसके बीजोंमेंसे तेज नीले रंगका मक्खन जसा गाढ़ा तेल निकलताहै ।

संख्या ( ३३४ )

( सं० ) पुत्रजीवः, गर्भकरः, यष्टीपुष्पः, अर्थसाधकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुगी
जीयापोता	जीयापोता	पुत्रजीवक	पुत्रजीव	जियापुता	जियोपोता	पुत्रजीवमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	थरवी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
पुत्रजीवि विरे (इ)	पुत्रजीवि			Putranjiva Roxburghii P. sphaerica pa.		

स्थान— जीयापोताके वृक्ष हिमालयके नीचेके भागसे कमाउमें पूर्व और दक्षिणकी ओर पीगू और सीलोन तक होतेहैं ।

प्राक्चिन्तन— यह वृक्ष ४०, ५० फुट ऊंचा होताहै, इसकी पेदब सीधी और खड़ी हातीहै, उसकी गुलाई ४ से ५ कभी कभी ६ फुटकी होतीहै। इसकी छाल आध इंच मोटी, भूरे रंगकी और चिकनी होतीहै। चत्रमे इसके नवीन पत्रे निकल आतेहैं वे गोल और कुछ लम्बे होतेहैं। इनके पुरुष और स्त्री जातिके पुष्प लगतेहैं; पुरुष जातिके पुष्प छोटे और पीले रंग के होते हैं। इसका फल ऊपर से चिकना श्वेत प्राय आध इंच लम्बा और बहुत कठोर होता है इसमें एक खाना होताहै उसमें बीज निकलताहै ।

फूलने फलने का समय— फागुनसे वैशाखतक इसके पुष्प लगतेहैं पोषसे जेठतक फल पकतेहैं ।

प्रयोग— (१) पुत्रजीव-पचने में भारी, रुक्ष, शीतल, मधुर, चरपरा और सलौना होताहै ( २ ) गर्भ धारण करने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है ( ३ ) यह कफ वात और वीर्यको बढ़ाताहै, नेत्रोंको दिनकारीहै। मल मूत्रको अलग २ करता है। पित्त दाह और टूपाको मिटाता है ( ४ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है ( ५ ) प्रतिश्याय मिटानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये ( ६ ) इसके बीजोंकी माला बनाके बच्चों को पहिनातेहैं ( ७ ) इसकी छालको मान्सीसे पीसके लेप करनेसे पीड़ायुक्त फोड़े और गांठें मिटतीहैं ( ८ ) इसकी ४ भासे छाल पीसके दूधके साथ पिलानेमे उत्र विषकी

शान्ति होती है (६) इसका रस/सरसों के तेल में मिलाकर पीनेसे श्लीषद् रोग मिटता है। इसके बीजों की गिरमें से जो तेल निकलता है उसमें सड़ी हुई गंध आती है।

संख्या ( ३३५ )

( सं० ) पुदीनाः, व्यंजनः, वांतिहारी, रुचिष्यः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पोदीनो	पोदीना	फो(दि)दीनो	पुदिना	पुदिना	पुदीना	पुदीना
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पुदीना				<i>Mentha sylvestris</i>	Mint	

स्थान—पोदीना हिन्दुस्थान में बहुधा बागों और घरों में, घमलों में लगाया जाता है।

प्रयोग—( १ ) पोदीना—रौचक, मधुर, भारी, हृद्य और आह्वी है। जिस काम में पेपरमेट आता है उसी काम में पोदीना भी आता है। ( २ ) पोदीनेका काथ पिलानेसे पेटकी पीड़ा मिटती है ( ३ ) इसके पत्तों को मधुके साथ चटाने से अतिरस मिटता है ( ४ ) गदियांकी पीड़ा मिटाने के लिये इसका काथ पिलाना चाहिये ( ५ ) सर्दीकी ज्वर को मिटाने के लिये सोंठ और पोदीनेका काथ पिलाना चाहिये ( ६ ) ज्वर भाले रोगीके मुंहका स्वादासुधारनेके लिये इसकी ज्वरनीवनाके खिलाना चाहिये ( ७ ) बमन बन्ध करनेवाली औषधियोंमें पोदीना मिलाया जाता है ( ८ ) इसके ताजे पत्तोंकी सुगंधसे मूर्च्छा मिटती है और उनके रसका लेप करनेसे प्रस्तरुपीड़ा मिटती है ( ९ ) बच्चोंके पेटकी पीड़ा मिटानेके लिये पोदीनेका हिम पिलाना चाहिये ( १० ) हृत्प्रास मिटानेके लिये पोदीनेके अर्कपर छोटी इलायची का ज्वर घुंरकाके पिलाना चाहिये ( ११ ) पोदीनेके चूर्णका मजन करनेसे दातोंकी पीड़ा मिटती है ( १२ ) इसका शर्बत पिलानेसे ज्वरकी उष्मा कम हो जाती है और घंघराहट मिट जाती है ( १३ ) पोदीने और कालीमिरचको, घोट

छान मिश्री पिलाके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है (१४) । पोदीना-उत्तेजक है और कामला रोगको मिटाता है (१५) । पोदीनेको घूरेके साथ चवानेसे हिचकी बन्ध होती है (१६) । पोदीनेका अर्क पिलानेसे रुधिरका जमाव बिखर जाता है (१७) । सूखे पोदीनेको पीसके फकी लेनेसे रुधिरका जमना बन्द होजाता है (१८) । पोदीनेको खाने और लेप करनेसे बिल्लीका विष शान्त होता है (१९) । पहाडी पोदीनेको आटाके पिलानेसे बालक होनेके पीछेकी गर्भाशयकी पीड़ा मिटती है (२०) ।

संख्या (३३६)

(सं०) रक्तपुनर्नवा, वैशाखी, शोफघ्ना, रक्तपुष्पिका ।

श्वेतपुनर्नवा, श्वेतमूला, दीर्घपत्रिका, सितवर्षाभू ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
साटा	साट	साटेही	वेटुली	पुन्या	इटसिट	अधिकमामिडि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन-		अंग्रेजी
मुकुन्दह	कोम्मे	रतेगह	इतिहासह	Boerhaavia diffusa. B. procumbens.		The spreading hog wood

स्थान - साटा हिन्दु धानमें सत्र और होता है ।  
 पहिचान - यह श्वेत, लाल और नीले पुष्पोंके भेदसे तीन प्रकारका होता है ।  
 प्रयोग - (१) इसकी जड़का काथ, सारक, मूत्रवर्द्धक, रुधिरनाशक और शीतल है (२) इसकी जड़के चूर्णमें शकर मिलाके फकी देनेसे सुखी खासी तर होजाती है (३) इसकी जड़के २ मासे, चूर्णमें ४ रती हर्डी मिलाके देनेसे श्वास मिटता है (४) इसकी अधिक मात्रा देनेसे ज्वरन होती है (५) इसकी जड़ बहुत बामरु है (६) इसके पत्र और कालीमिर्चोंको बोट छानके पिलाने से मूत्रवृद्धि होके मूत्रकृच्छ्र मिट जाता है (७) इसके पचागको पीसके जलधर के रोगीके पेटपर लेप करना चाहिये (८) गाठके ऊपर इसके पत्तोंका पुल्डिस बांधना चाहिये (९) सर्वांग जलप्रय शोधको मिटानेके लिये चिगयना, सौंड और साटेकी जड़का काथ पिलाना चाहिये (१०) कामला रोग में निगके



सर्वांग जलमय शोध होवे तो शोधको मिटानेवाली औषधियोंमें साटेकी जड़ मिला, उनसे तेल बनाके उसपर मर्दन करना चाहिये ( ११ ) साटेके हिममें जोखार मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १२ ) कांसयुक्त श्वासको मिटाने के लिये इसकी जड़का काथ पिलाना चाहिये और उसरोगीका धूम्रपान ( तमाखू पीना ) बन्ध कर देना चाहिये ( १३ ) इसकी जड़का शीश्या (ध तेल) काथ पिलानेसे बाँट मिटताहै ( १४ ) सूखे साटेके फांटमें शोरा डालके पिलानेसे जलंधर मिटताहै ( १५ ) जलंधरके प्रारभमें साटेके पत्तोंके शाकरसे रोटी खिलाना चाहिये ( १६ ) साधारण निर्बलता और शोध मिटानेके लिये साटे की जड़को पानीमें पीसके पैगंपर लेप करना चाहिये ( १७ ) इसके पत्तोंके रस को दूधमें मिलाके पिलानेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै ( १८ ) सफेद साटेकी जड़का छायामें सुखा, पानीमें घिसकर अंजन करनेसे वाफनीका गलना और पलकोंकी खुजली मिटतीहै ( १९ ) इसकी जड़को चूर्ण पानमें रखके खानेसे कास और श्वास मिटताहै ( २० ) इसकी जड़ और सोंठको इमके रसमें पीसके वांधनेसे स्नायुक मिटताहै ( २१ ) इसकी जड़की मात्रा दूधके साथ देनेसे पित्तज चतुर्थिक ज्वर छूट जाताहै ( २२ ) इसकी जड़ और सैधा नमकदोनों बराबर ले कलक बनाके घृतके साथ चटानेसे गुल्म रोग, और मधुके साथ चटानेसे जलोदर मिटताहै ( २३ ) इसकी और वायवरणकी जड़के पिलानेसे अपक विद्रधि मिटतीहै ( २४ ) इसकी जड़को दूधके साथ घिसके अंजन करनेसे खुजली, मधुके साथ नेत्रलाव, ( आखका भरना ) घृतके साथ फूला, तेलके साथ तिगिर रोग, और काजी या बरूरीके मूत्रके साथ अंजन करनेसे रतौधा मिटताहै ( २५ ) इसकी जड़को छायामें सुखा चूर्ण कर घृतमें मरुरो बांसी पानीमें गोली बना उसको पानीके साथ घिसकर अंजन करनेसे परवालौका आना बन्ध होताहै ( २६ ) रविवार के दिन उखाड़ी हुई इसकी जड़को चवानेसे विच्छ्रका विप उतरताहै ( २७ ) पीपलके साथ खानेसे भूख लगतीहै ( २८ ) दूधके साथ खिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै ( २९ ) शकरके साथ देनेसे पित्त गल जाताहै ( ३० ) पानके साथ खानेसे स्तंभन होताहै ( ३१ ) सहदेउके साथ पित्त मिटताहै ( ३२ ) स्वरके कलकके साथ हड फूटनी मिटतीहै ( ३३ ) सुपा रीके साथ खानेसे कोढ़ मिटताहै ( ३४ ) गो घृतके साथ अंजन करनेसे बुख

ती हुई आख अच्ची होजातीहै ( ३५ ) पवाड़के बीजोंके साथ खानेसे दाद मिटताहै ( ३६ ) जल भांगरेके रसके साथ खानेसे मदर मिटताहै ( ३७ ) जीरेके साथ खानेसे पेटकी दाह मिटतीहै ( ३८ ) इसके पत्तोंके रससे इसकी जड़को पीसके बांधनेसे स्नायुक ( नारू ) की पीडा मिटतीहै ( ३९ ) इसके पत्ते और आंधी भांडेकी टहनियोंको पीसके मलनेसे विच्छका विष उतरताहै ( ४० ) २ तोले पुनर्नवा नित्य दूधके साथ पीवे ऐसे ६ महीने तक लगानार पीनेसे आयु बढ़तीहै । लाल फूलके साटेसे सफेद फूलके साटेमें गुण अधिकहै ।

संख्या ( ३३७ )

( सं० ) पुन्नागः, पुरुषः, तुंग, देववल्लभः ॥

भारवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लतानचंपा	सुलतान	पुन्नाग	उडो	पुनौगाव		पुने
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अग्नेयी
पुने	होत्रे			Calophyllum inophyllum.		The Alexandria Javrel

स्थान—पुनागके वृत्त ओडीसा दक्षिण हिन्दुस्थान सीलोन, ब्रह्मा और हिन्दुस्थान भरमें बहुत करके समुद्रके किनारे बोये जातेहैं । इसको समुद्रके किनारेकी सूखी बालू रेतकी पृथ्वी बहुत अच्ची मानतीहै ।

फूलने फलनेका समय—वर्षमें ६ महीनेसे अधिक समय तक इसके पुष्प और फल लगतेहैं । यह एक वर्षमें दो बेर फलता और फलताहै ।

प्रयोग—( १ ) पुन्नाग, मधुर, शीतल और पित्त नाशकहै ( २ ) इसके फलोंमेंसे जो तेल निकाला जाताहै वह गठिया पर लगाया जाताहै ( ३ ) शिथिल पदों हुए फोड़ों पर इसके राल जैसे पदार्थका लेप करतेहैं ( ४ ) इसके गोंदकी फकी देनेसे अथवा इसके फल खिलानेसे वमन और विरेचन होतेहैं ( ५ ) इसके गोंदको जो दाल और पत्तोंपर चिपका रहताहै पानीमें डालनेसे उसका तल पानीपर

तेर आता है। इसको दुखती हुई आख पर लगाते है। ( ६ ) इसका वृक्ष मूत्र-वर्द्धक है ( ७ ) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो सूजी हुई आख पर बाधते है। ( ८ ) इसकी मागीका तेल लगानेसे फोडे फुन्सी मिटते है ( ९ ) इसकी छाल ग्राही है ( १० ) छालके चूर्णकी फक्की देनेसे शरीरके भीतरके किसी भागमेंसे बहता हुआ रुधिर-बन्ध होजाता है ( ११ ) इसकी छालको घिसकर लगानेसे फोडे फुन्सी मिटते है ( १२ ) इसकी छालका रस रेचक है ( १३ ) इसमेंसे एक प्रकारका राल जैसा प्रदार्थ निकलता है, वह कुछ पीलापन लिये हरे रंगका होता है, उसमें अच्छी सुगंध आती है। माघ और श्रावणके महीनेमें इसके फल इकट्ठे किये जाते है। इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ६० तोले तेल निकलता है वह सुगंध युक्त और धुंगले हरे रंगका होत है।

संख्या ( ३३८ )

॥ ( सं० ) पुष्करमूल, श्वासारिः, पुष्कराह्वसं, पुष्करजः ॥ ३३९ ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पोखरमूल	पोखरमूल	पोकरमूल	पोखरमूल	पुष्करमूल	पोहकरमूल	पुष्करमूलमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पुष्करमूल	पुष्करमूल	कुस्त	कुश्राः	<i>Coelus speciosus</i>		

स्थान—पुष्करमूल हिन्दुस्थानमें हरेक ठौर-होता है, परन्तु बंगाल, कान, र और कारोमण्डलमें आर्द्र और छायादार ठौरमें बहुत होता है।

प्रयोग—( १८ ) यह कडवा, ग्राही और पाचक होता है। अतिश्याय सम्बन्धी ज्वर, श्वास, कास, त्वचाके रोग और वात कफके कई रोगोंमें काम आता है। पोखरमूल पुष्टाईकी औषधियोंमें मिलाया जाता है ( २ ) चूर्णको शुद्ध करनेके लिये इसके काथसे धोना चाहिये ( ३ ) ब्रणपर इसका चूर्ण चुरकानेसे कीड़े मरते है ( ४ ) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे निर्बलता मिटती है ( ५ ) मज्जा सम्बन्धी पीडा मिटानेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये ( ६ ) पोखरमूल

का मुखवा घनाके खानेसे शरीर निरोग होजाताहै और भूख बढ़तीहै ( ७ ) पोखरमूल, जोखार और मिग्च इनके रूल्को गर्म जलके साथ लेनेसे श्वास और हिचकी बन्ध होतीहै ( ८ ) इसको महीन पीसके मलनेसे अधिक पसीना आना बन्ध होताहै ( ९ ) इसका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे श्वास, कास, हिचकी और हृद्रोग मिटताहै ( १० ) पोखरमूल और सहिजनेके बीजोंके चूर्णसे बालकके पेटके कृमि ( जुरणे ) मिटतेहै ।

सख्या ( ३३६ )

( सं० ) पुष्पराग , पीतमणि , पीतस्फटिकः, गुरुरत्नम् ।

मरावाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
पुखराज	पुखराज	पुखराज	पुष्पराजगणि	पोखराज	पुखराज	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	पुष्पराग			Topazio		Topaz

गुण—( १ ) यह खट्टा, शीतल, पचनेमें लघु और दीपन होताहै । विष, वमन, कफ, वात, मंडाग्नि, टाह, कुष्ठ, रुधिरविकार और अर्शको मिटानाहै । आयु, शरीरकी कान्ति और बुद्धिको बढ़ाताहै ।

सख्या ( ३४० )

( सं० ) पुष्पाञ्जनं, पुष्पकेतु, कौसुमं, कुसुमाञ्जनम् ।

मरावाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बोलाकाजल	जस्तकेफूल	पुष्पाञ्जन	जस्ताकेफूल	पुष्पाञ्जन	जिस्ताफूल	पुष्पाञ्जनम्
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Zinc oxydum		Zinc oxide

गुण—(१) यह शीतल, स्निग्ध और नेत्रोको हितकारी है। पित्त, हिचकी, दाह, विष, कास, ज्वर और नेत्रके मध रोगोंको मिटाता है।

संख्या ( ३४१ )

( सं० ) पूगफलं, उद्वेगं, क्रमुकं, घोंटाफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुड़ी
सुपारी	सुपारी	सोपारी	सुपारी	सुपारि	सुपारी	पोक
झाड़ि	बर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पाक	आडिके	फूफल	पोपल	Areca Cateolus	The betel or areca nut.	

स्थान—सुपारीके वृक्ष बंगाल, आसाम, सिलहट, पश्चिमी घाट मैसूर, कनारा, मलबार और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि कई देशोंमें होते हैं।

पहिचान—यह बहुत जातिकी होती है जिनमें सफेद और लाल मुख्य हैं।

प्रयोग—(१) सुपारी-पचनेमें भारी, रुच, कपेली, शीतल, दीपन, पाचन, रोचक, मधुर, स्निग्ध और कुछ सागक है। कच्ची सुपारी बहुत ग्राही होती है और अतिसारको मिटाती है (२) विगड़े हुए फोड़ोंको सुपारीके काथसे धोते हैं (३) दांतोंके मंजनके लिये सुपारीकी राख काममें आती है (४) निर्बलतासे पैदा हुए अतिसारको मिटानेके लिये सुपारीका चूर्ण ५ रतीसे एक मासेतक हर तीसरे चौथे घटेमें देना चाहिये (५) मूत्रसम्बन्धी उपद्रवोंमें सुपारी बहुत उपकारी है (६) सुपारी पाकके खानेसे स्त्रियोंके योनी और रज सम्बन्धी बहुत रोग मिटते हैं (७) सूखी सुपारीको चाबते रहनेसे शरीरपर एक प्रकारकी उत्तेजना और प्रसन्नता पैदा होती है (८) दूधके साथ सुपारीके चूर्णकी सर्वा तालेसे २ तोलेतक फकी देनेसे गोल और चिपटे कीड़े मरते हैं (९) इसके पाकसे नसोंका बल बढ़ता है (१०) इसका लेप करनेसे आंखकी मूजन मिटती है (११) इसके कोमल पत्तोंका रस निकाल तेलके साथ मर्दन करनेसे कमरकी स्नायु पीड़ा मिटती है (१२) इसके चूर्णके मंजनसे अथवा इसके छोटे २ टुकड़े करके मुंहमें रखनेसे मसूढ़ासे रुधिरका निकलना बंध होजाता है (१३) इसके चूर्णकी

पोटली बांधकर योनिमें रखनेसे रसमेंसे पानीका बहना बंध होजाताहै (१४) कोई सुपारी ऐसी होतीहै कि जिसका चबाके उसका रस निगलानेसे बहुधा कानोंमें एक प्रकारकी चित्त प्रसन्न करनेवाली उष्णता प्रतीत होने लगतीहै और कोई ऐसी होतीहै कि जिसका रस निगलनेसे गले और छाती में पंथन मालूम होने लगतीहै और मुहसे बहुतसा पानी पड़ने लगताहै (१५) इसकी अंतरछालकी फकी देनेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जातीहै (१६) सुपारीके ४ मासे चूर्णको मक्खनके साथ चटानेसे पेटके कीड़े निकल जातेहैं (१७) रेतीले जंगलमें लम्बी सफर करते वक्त तिसको मिटानेके लिये सुपारीके टुकड़े मुखमें रखने चाहिये (१८) सुपारीके कोयलेकी राख एक भाग और चाक मिट्टी ३ भाग मिलाके मजन करनेसे दांत माफ रहते हैं (१९) गीली कच्ची सुपारी बहुत ग्राही होतीहै। जब इसको धूपमें सुखातेहैं तो इसका ग्राहीपन कुछ कम पड़जाताहै। इसके बीचका श्वेत भाग थोड़ा मीठा होताहै (२०) कच्ची बिनसूखी सुपारीमें एक प्रकारका पदार्थ रहताहै जिससे अधिक सुपारी खानेसे कुछ समयके लिये चकर आने लगतेहै (२१) सुपारीका सार बड़ा ग्राहीहै (२२) सुपारी और हल्दीके चूर्णमें शकर मिलाके फकी देनेसे घमन बन्ध-होतीहै (२३) सुपारी और खैरके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे सौद्र ममेह मिटताहै (२४) इसका चूर्ण बुरकानेसे उपदश मिटताहै (२५) सुपारी और बड़ी इलायची इन दोनों की भग्मको बुरकानेस मुखपाक मिटताहै (२६) नागरबेलके पानमें कुछ चूना, कत्था लगाके उसमें इलायची, लोंग और सुपारीके टुकड़े रख, घंटा बना चाबके उसका रस निगलनेसे जी मचलाना बन्ध होताहै। आमाशयकी शक्ति और भूख बढ़तीहै (२७) पकी सुपारियोंको मिट्टी या कलईदार पात्रमें कुछ घंटों तक ओटानेसे चपदा और गाल जैसा सार निकलताहै, उसको अपने आप सुखाके या ओटाके गाढ़ा करलेना चाहिये।

संख्या (३४२)

( सं० ) पृथ्वीतैलं ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
वासलेट तेल	मिट्टीका तेल				मिट्टीका तेल	
द्रोविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Petroleum		Kerosine

स्थान—यह तेल हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर निकलता है।

प्रयोग—(१) इस तेलका मर्दन करनेसे वादीकी पीडा मिटती है (२) कूपर और गंधक बराबर ले उनको इस तेलमें पीसके लगानेसे दाद मिटता है (३) इसका फोया भरके ब्रणपर, वायनेसे उसके कीड़े मरजाते हैं (४) यह जलानेके काममें आता है (५) इसका धंआन्वासके साथ पेटमें जानेसे फुफ्फुसको बिगाड़ता है (६) इसकी तीक्ष्ण ज्योति नेत्रोंको हानि कारक है।

संख्या (३४३)

(सं०) पृश्निपर्णी, कलशी, धावनी, गुहा

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
पिठवन	पीतवन	नहानो समेरयो	पिठवण	चाकुले	पिठौनी	कोलपोल
द्रोविडी	कर्नाटकनी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Uraria ligonoides or Decal. L.		

स्थान—पिठवन—नैपाल और बंगालसे ब्रह्मातक और हिन्दुस्थानके बहुतसे दूसरे भागोंमें होती है।

प्रयोग—(१) यह वृष्य उष्ण, मधुर, सागक, चरपरी, बडवी, दुग्ध खट्टी और पचनेमें हल्की होती है। दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, वृषा, वमन कास, उन्माद, ब्रण, वातरोग और त्रिदोष आदि रोगोंको मिटाती है (२) पिठवन दशमूलकी औषधियोंमें है और बहुधा दूसरी औषधियोंके साथ काममें आती है।

३.) यह बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनीहै (४-) निर्वल, मनुष्यको इसकी  
 जका काथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जड़ और मिश्रीको ओटोके  
 बनानेसे प्रतिश्याय मिटताहै (६) इसकी जड़को दूधके साथ ओटोके गर्भवती  
 कीको सातवें महीनेमें पिलानेसे बालक पैदा होजाताहै (७) इसका नाभि  
 बन्धि और योनीपर लेप करनेसे बालक सुखसे शीघ्र पैदा होजाताहै ।

संख्या ( ३४४ )

( सं० ) पेरुक, वृद्धबीज, मांसलम् ।

गारवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जामफल	जामफल अमरूद	जामफळ	पेरु		अमरूद	गोठ्या
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कोठ्या	शीवे	कमुसरा	अमरूद	<i>Psidium Gwyana</i> Var. <i>pyroferum</i> Var. <i>pon Iternm.</i>	Guwa.	

स्थान—जामफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बौये जातेहै ।  
 पहिचान—इसका वृक्ष छोटा होताहै । यह ५-७ वर्षका होनेके पीछे  
 इसके फल लगने लगतेहै और प्रायः ६, ७ वर्षतक फलताहै पीछे यह सूख  
 जाताहै । यह दो प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—( १ ) इसका फल ग्राहीहै ( २ ) कच्चे जामफल खिलानेसे  
 अतिसार मिटताहै ( ३ ) इसकी जड़की छाल ग्राही होतीहै ( ४ ) बच्चेका पुराना  
 अतिमार मिटानेके लिये इसकी स्या तोले जड़को १५ तोले जलमें ओटा ७।  
 तोले रख, ६-६ मासेतक दिनमें दो तीन घेर पिलाना चाहिये ( ५ ) जिसकी  
 गुदा बाहिर निकलतीहो उसकी गुदापर गाढ़ेकिये हुए इस काथका लेप करना  
 चाहिये ( ६ ) इसके पत्ते इससे कुछ कम ग्राही होतेहैं ( ७ ) इसके पत्तोंको पीस  
 उनको पुल्टिस बनाके बिगडे हुए घावपर बाधतेहैं ( ८ ) इसके पत्तोंके  
 काथके गूँड़प करनेसे मसूडोंकी शोथ मिटतीहै ( ९ ) निपूचिका बालेको  
 ( १० ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे वृमन और विरेचन बन्ध होजातेहैं



इसका पका हुआ फल मारक होता है ( ११ ) इसकी जड़की छाल या कोमल पत्तोंका काथ पिलानेसे पुराना अतिसार मिटता है ( १२ ) इसके कोमल पत्ते, अनारकी कटी और बंधूलके पत्तोंका फांट करके पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटता है ( १३ ) कच्चे जामफलको ओटाके पिलानेसे अतिसार मिटता है ( १४ ) जामफल सफेद या कुछ लाल गिरवाले चमकदार और पीली पतली छालके अच्छे होते हैं । ये खाने और शाक बनानेके काममें आते हैं ।

संख्या ( ३४० )

( सं० ) पेरोज, हरिताश्म, परजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पिरोजो	फिराजा	पीरोजो	पेरोज	पेरोजा	फिरोज	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	पेरोज	फीरोनज	फीरोजा	Turchesins Turckina.	Turkols Turkols.	

गुण— १ ) यह कषेला, मधुर, दीपन और सारक है, शूल, प्रतवाधा और स्थावरः जंगम और कृत्रिम विषको मिटाता है ।

संख्या ( ३४६ )

( सं० ) प्रवालः, विद्रुमः, लतामणिः, भौमरत्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मुगा	मुगा	परवाळा	प्रवाल पोंवल	मुगा, पला	मुगा	पगडुमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पवल	हवळवु	मरजान्	मरजान्	Corallium rubrum	Coral. Red coral.	

प्रवालको शुद्ध और भस्म करनेकी रीति—इसके छोटे छोटे टुकड़े कर कपड़ेकी थैलीमें बाध, कांजी, नींबूके रस, गोमूत्र और दूधमें क्रमसे एक

एक एक पहर स्वेदन करना चाहिये, फिर उसमेंसे निकाल उष्ण जलसे धो, सराबमें अग्निसे लालकर ग्वारपाठके और चौलाईके रसमें क्रमसे सात सात बेर बुझानेसे इसकी भस्म हो जावेतो ठीक, नहीं तो ग्वारपाठकी गिर और इसको सराब सम्पुटमें कपडमिट्टीसे बन्दकर गजपुटके आघमें फूंक देना चाहिये।

प्रयोग--( १ ) प्रवाल - मधुर, खटा दीपन, रोचक और पाकमें लाजुह और शरीरको पुष्ट करताहै ( २ ) क्षय, -पांडु, श्वास, कास, ज्वर मेद, रक्तपित्त भूतादिबाधा, विष और नेत्ररोगोंको मिटाताहै। वीर्य और कान्तिको बढ़ाताहै ( ३ ) मूत्रसम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै ( ४ ) इसको मसूवन और मिश्रीके साथ चटानेसे खैन गोग मिटताहै ( ५ ) शरीरको पुष्ट करनेके लिये मलाईके साथ इसका सेवन करना चाहिये ( ६ ) ३ मासे धिसे हुए लाल चन्दन पर प्रवाल भस्म बुरकाके चटानेसे रक्तार्श मिटताहै ( ७ ) ६ मासे काले तिलोंके साथ प्रवाल भस्मका सेवन करनेसे मूत्रातिसार मिटताहै ( ८ ) इसको मधु और पीपलके साथ चटानेसे जर्णज्वर छूट जाताहै ( ९ ) मूत्रकी रुकावट मिटानेके लिये एक रती मूंगा पानीमें धिसके पिलाना चाहिये ( १० ) पके हुए केलेकी साथ प्रवाल भस्मका सेवन करनेसे क्षयरोग मिटताहै ( ११ ) बूध और मिश्रीके साथ पित्तका प्रकोप मिटताहै ( १२ ) पानमें रखके खानेसे खांसी मिटतीहै ( १३ ) प्रवालके चूर्णका मंजन करनेसे दात निर्मल और दृढ रहतेहैं ( १४ ) त्रिफला और मधुके साथ चटानेसे मूत्रकृच्छ मिटताहै ( १५ ) घृत और मिश्रीके साथ चटानेसे घाह पुष्ट होतीहै ( १६ ) धारोष्ण बूधके साथ लेनेसे रक्तप्रदर मिटताहै ( १७ ) अदरकके रसमें मिश्री और प्रवालभस्म मिलाके चटानेसे शुष्क कास मिटताहै ( १८ ) तुलसीके रसमें बूहेकी मींगनी और प्रवालभस्म मिलाके अजन करनेसे रतौधा मिटताहै ( १९ ) इसको चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे कफका मूत्रकृच्छ मिटताहै ( २० ) प्रवाल और मिश्रीको महीन पीसके अजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़तीहै ( २१ ) इसको महीन पीसके बुरकानेसे घावसे रुधिरना निकलाना बन्ध होताहै ( २२ ) इसकी अड़को पानीके साथ पीस पात्रोंपर उसका लेप करके थोड़े समय पीके धोडालनेसे वे कोमल बने रहतेहैं।

संख्या ( ३४७ )

( सं० ) प्रियंगुः, गोवंदनी, कांता, फलिनी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
फूलप्रियंगु	फूलप्रियंगु	घउला	गहला, गहुला	प्रियंगु	( ९ )	प्रेकणमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	प्रेकणागड			Aplasia Rostk, hana		

स्थान - प्रियंगुके वृक्ष पश्चिम प्रायद्वीपमें कोकन और मिटानापुरसे दक्षिणकी ओर सीलोन तक होतेहै ।

पहिचान - इसके फलकी मध्यरेखा पौन इच होतीहै । इसके पाच पांच कभी सात २ और कभी तीन २ की पत्त लगतेहै ।

प्रयोग - ( १ ) यह शीतल, कड़वी और कपेली होतीहै । वसन, दाह, पित्तज्वर, रुधिरविकार, शरीरकी दुर्गंध, पसीना, गुल्म, तृषा, विष, मोह, भ्रम कुष्ठ, प्रमेह, मुखके चिकनेपन, चादी और मेढको मिटातीहै । मुखकी कान्ति, बल और वीर्यको बढ़ातीहै ( २ ) इसके बीज मीठे, शीतल, रुच, कपेले, ग्राही, पचनेमें भारी, बलवर्द्धक, आध्मानकारक पित्त और कफनाशकहै ( ३ ) इसके फल खानेसे अतिसार मिटताहै और शरीरका बल बढ़ताहै ( ४ ) इसके पत्तोंको पानीमें भिगो मूल छान मिश्री मिलाके पिलाने से सूत्रनाली की दाह मिटती है ( ५ ) इसके पत्तोंका फाट पिलाने से शरीरकी दाह मिटतीहै ( ६ ) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुके साथ चटातसे रक्तपित्त मिटताहै ।

संख्या ( ३४८ )

( सं० ) मूचः, पर्कटिः, मूवङ्गः, वृद्धप्ररोहः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
पाफड	पाखर, पाकर	धीपर	विपरी वृक्ष	पाकुड	पिलखन	मूवङ्ग

विड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
लेमर	बसरि			Ficus infectoria F. venosa	

स्थान—पाकड़ के वृक्ष बंगाल; आसाम, ब्रह्मा, मध्य हिन्दुस्थान आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे देशोंके जंगल और पहाड़ोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष ४०-५० फुट ऊचा होता है, इसकी पेदड़ छोटी और आकारमें बेडौल होती है, इसकी छाल सफेद और साफ होती है। इसके तने चमकदार होतेहैं। इसके फलकी मध्यरेखा चौथोई इंचतक होती है जब फल कूट जाता है तब उसका रंग सफेद होजाता है पतझड़में इसके पत्ते गिर जाते है, माघसे बैत्रतक नवीन पत्ते निकल आतेहैं।

फूलने फलने का समय—वैशाख जेठ तक इसके फल पकतेहैं। आगामी वर्षमें जबतक इसके नवीन फल नहीं आने लगतेहैं तबतक वे वृक्षके लगे रहते हैं।

प्रयोग—( १ ) पाकड़-कपेला, चरपग और मधुरहै। शोथ, दाह, पित्त, रक्तपित्त, मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापको मिटाता है ( २ ) इसकी छालके काथ को गंदूप करनेसे मुंहमें से पानीका बहना बन्ध होजाता है ( ३ ) छालके काथ से रक्तको धोनेसे साफ होजाता है ( ४ ) इसके काथकी पिचकारी योनीमें देनेसे श्वेतपदर मिटाता है ( ५ ) इसके अंकुरोंका शाक बनाया जाता है।

संख्या ( ३४६ )

( सं० ) बकुलः, चिरपुष्पः, मकुल, मधुगंध ।

आरवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
औरसली	मौलसरी	बोलसरी	बकुली	बकुलगाठ	मौलसरी	पोगड, पोगडा
आविड़ी	कर्नाटकी	अग्नी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
हळंगर	पगडेमर पगड			Mimusops Elengi	Surinam medlar	

स्थान—मोरसलीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोये जाते हैं ।

पाहिचान और फूलने फलनेका समय—यह वृक्ष ४०-५० फुट ऊंचा होता है, इसकी पेदङ्ग छोटी होती है, इसके वारह महीनेही पत्ते बने रहते हैं । इसके पूरे वट्टेहुए पत्ते चिकने होते हैं । उष्णकालमें इसके अच्छी सुगंधवाले छोटे २ बहुतसे पुष्प लगते हैं उनके गिर जानेपर फल लगते हैं जो प्राय एक इंच लंबे और ऊपरसे माफ होते हैं, पकनेपर पीले रंगके होजाते हैं, इनमें कुछ मीठी गिर और एक-बीज-निकलता है । इसके एक प्रकारका गोंद लगता है । इसकी छाल रंगतके काममें आती है ।

प्रयोग—( १ ) मोलसरी-शीतल, मधुर, कपेली, विपनाशक और हृद्य है ( २ ) इसका कच्चा फल ग्राही है । इसको मुंहमें चबाते रहनेसे दात दृढ़ हो जाते हैं ( ३ ) इसकी छाल ग्राही होती है ( ४ ) इसके काथके गंडूप- ( कुझे ) करनेसे मसूडे और दांत दृढ़ हो जाते हैं ( ५ ) इसकी छालका हिम पिलानेसे मूत्राशय और मूत्रकी नालीकी भिल्लीका निस्त्राव बन्ध होजाता है ( ६ ) छाल का काथ पिलानेसे ज्वर छूट जाता है ( ७ ) इसके फल और पुष्पोंका दूसरी ग्राही औषधियोंके साथ काथ बनाके उससे चांदी और धावोंको धोते हैं ( ८ ) पुष्पोंके चूर्णको सूंघनेसे नाकमेंसे बहुतसा दूषित जल बहके मस्तकपीड़ा मिटजाती है ( ९ ) स्त्रियोंके गर्भ रहनेके लिये इसकी छालका प्रयोग बहुत किया जाता है ( १० ) भभके में इसके पुष्पोंका अर्क निकालते है वह बहुत सुगंधयुक्त और उत्तेजक होता है ( ११ ) इसके बीजोंको पीस बत्ती बनाके गुदामें देनेसे स्वाभाविक वद्धकोष्ठ मिटता है ( १२ ) बच्चोंका वद्धकोष्ठ मिटानेके लिये इसके बीजाकी मीगी की बत्ती देनी चाहिये जो आवश्यकता होतो इस बत्तीमें पुराना घी मिला देना चाहिये, इस बत्तीको गुदामें देनेके १५ मिनट पीछे मलकी कठोर गांठें दस्तके साथ निकल जाती है ( १३ ) इसके पकेहुए फलकी गिर कुछ मीठी और ग्राही है इसलिये पुराने आम्रातिसारको मिटानेकेलिये काममें आती है ( १४ ) इसके फलका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटती है ( १५ ) इसकी लकड़ीके कोयलों का मंजन करनेसे दात साफ और दृढ़ रहते हैं ( १६ ) इसके फलकी गुठनी मुंहमें रखनेसे दात दृढ़ होजाते हैं ( १७ ) इसकी छालके चूर्णमें बराबर घृा मिलाके फकी देनेसे गर्भाशयसे पानीका बहना बन्ध होता है ( १८ ) इसके

पंथुर, शीतल, कपेले, स्निग्ध, ग्राही, विषद और वातलह ( १६ ) इसके तोंका मुरब्बा बनाया जाता है। इसके बीजोंको यंत्रमें दवाके तेल निकालते हैं। तेलसे भोजनके पदार्थ बनाये जाते हैं। इसके पुष्पोंमेंसे चढ़नेवाला तेल कलता है।

संख्या ( ३५० )

( सं० ) वटरी, कंटकी, कर्कन्धूः, वक्रकण्टः ।

खाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दी, वोर	वेर बुराका पट्ट	बोरडी	वेरी चेझाड	कुलगाछ	वेर	गाट्टेच इट्ट
विडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसा	लैटिन	अंग्रेजी	
यन्द	यलचीगिड	नक्क	कुनाफ	Zizyplus juba Z mauritiana	The Indian jujube or chinese date Zizyplus	

स्थान—वेरीके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जाते हैं और अपने आप उगते हैं।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका वृक्ष ३० से ५० फुट ऊंचा होता है। इसकी पेदड़ छोटी, खड़ी परन्तु बहुत सीधी नही होती है, इसकी गुलाई ३ से ८ और कभी कभी १० फुटकी होती है, इसकी बहुतसी शाखें चारों ओर फैलती हैं। इसकी छाल आध इंच मोटी गहरी, भूरी और प्रायः काल रंगकी होती है, उसमें छोटी २ दरारें होती हैं, जो छालके पार निकल जाती हैं, फागुन और चैत्रमें इसके पुराने पत्ते गिरते जाते हैं और नवीन निकलते जाते हैं। अगस्त और श्रावणमें इसके पत्ते दुबारा निकलते हैं बहुधा चैत्रसे जेठ तक इसके पुष्प लगते हैं परन्तु दूसरी ऋतुओंमें भी पुष्प लगते हैं मृगशिर से फागुन तक इसके फल पकते हैं। इसकी छालियोंके अन्तके भाग लटक जाते हैं, इसकी छोटी और बड़ी टहनियोंमें दो दो कांटे लगते हैं ननमें एक सीधा और दूसरा मुड़ा होता है। इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे बहुधा गहरे हरे रंगके और चिकने होते हैं और नीचेकी ओरसे कुछ सफेद होते हैं आकारमें कुछ लम्बे, गोल होते हैं।

है। इसके कुछ हरे, पीले, पुष्प लगते हैं। इसके फल गोल, और कुछ लम्बे हरे रंगके होते हैं, ये पक जाने पर नारंगी, या लाल रङ्गके हो जाते हैं, फलोंकी गुठली कठोर होती है और उसमें बहुत धा दो मींगी निकलती है। इसके एक प्रकार का गोंद और लाख लगती है। इसकी छालमेंसे लाल रंग निकाला जाता है। इसकी मींगीमेंसे तेल निकलता है।

प्रयोग—( १ ) वेर—मीठे, कपेले, खड़े, रोचक, उष्ण, ग्राही, पचनेमें भारी और कुछ सारक है ( २ ) रूक्षता (खुश्की) और थकावट, मिटानेके लिये पुराने वेर खिलाने चाहिये। ये पचनेमें लयु है ( ३ ) पित्तसम्बन्धी रोग मिटानेके लिये इनकी मींगी खिलानी चाहिये ( ४ ) भित्रीकी चासनी में लौंग और वेरकी मींगी मिलाके चटानेसे खाली होवड या जी मचलाना मिटता है ( ५ ) ज्वरमें पित्तकी तृपा मिटानेके लिये इसकी मींगी और गलहटीके चूर्णको थोडा र मुहमें डालते रहना चाहिये ( ६ ) धूपमें सुखाये हुए वेर और इसीकी जड़को अंठके पित्तज्वरमें पिलाना चाहिये ( ७ ) पेमली वेर खानेसे रुधिर शुद्ध हो जाता है ( ८ ) आधे पके हुए वेरोंके नोन, मिरच और जीरा लगाके खानेसे पाचन शक्ति बढ़ती है ( ९ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे अतिसार मिटता है ( १० ) ज्वर मिटानेके लिये भी छालका काथ पिलाना चाहिये ( ११ ) ब्राह्मीके साथ इसकी जड़की, छालका काथ बनाके पिलानेसे मलाप मिटता है ( १२ ) पुराने ज्वर और फोडोंपर छालका चूर्ण चुगकाते हैं या लेप करते हैं ( १३ ) मूत्र निकलते समय जो पीडा होती है उसको मिटानेके लिये इसके पत्तोंको पीस नल, इन्दी और पीठके नीचे कमरमें लेप करना चाहिये ( १४ ) अतिसार मिटानेके लिये कच्चे वेर खिलाना चाहिये ( १५ ) गूलर और वेरीके कोमल पत्तोंको पीसके लेप करनेसे विच्छूका विष उतरता है ( १६ ) फोडे, पीपदार फोड़े और अदीठको जन्दी पकानेके लिये इसके कोमल पत्ते और टहनियोंको पीस गर्म करके लेप करना चाहिये ( १७ ) इसकी और बंधूलकी जड़की, छालका हिम, फाट या काथसे कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है ( १८ ) इन दोनोंका क्वाथ पिलानेसे अतिसार मिटता है ( १९ ) उपदशसे या रसरूप आदि औषधियों जो मुखपाक होता है उसको मिटानेके लिये चक्र दोनोंकी छालके हिम, फांट या काथसे कुल्ले कराते हैं ( २० ) इसके

पत्तोंको पीस कतपाट्टियों पर लेप करनेसे नकसीर बन्ध होती है (२१) इसके और नीमके पत्तोंको पीसके लगानेसे बाल बढ़ते हैं (२२) इसके कोमल पत्तोंको लीवूके रसके साथ पीसके लेप करनेसे दाहज्वर छूटता है (२३) इसके पत्तोंके कल्कमें सैधानकम मिला उसको घीमें तलके खिलानेसे स्वरभंग, श्वास और कास मिटता है (२४) इसके पत्तोंपर मैन्सिलका लेपकर धूपमें सुखा वृधमें भिगोके उनका धूपपान करानेसे कास और कुत्ताधासी मिटती है (२५) इसके और नीमके पत्ते पीसके लगानेसे नासूर मिटता है (२६) इसके ३ मासे पत्ते और २० मासे ज़ीरा पानीसे पीसके पिलानेसे अतिसार मिटता है (२७) बेरकी गुठलीकी मींगीको गुड़के साथ खानेसे वीर्य्य पुष्ट होता है (२८) इसके पत्तोंको पीसके मलनेसे पुस्तबाय मिटती है (२९) इसकी कोमल कांपलोंको दहीके साथ पीसके कई बेर मलनेसे अग्निदग्धका दाग मिटता है (३०) बेरकी गुठली के बाहिर के भागको गुड़के साथ खानेसे सब प्रकारकी प्रसूरिका पक जाती है।

संख्या ( ३५१ )

( सं० ) भूवदरी, सूक्ष्मवदरी, वल्लीवदरी, चितिवदरी ।

माराठी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
शहबोर	शहबेरी	चणियाबोर	भूयबोर	मेटोकुल	शाडीबेर	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		नूक्क सहराई	कुनार, दशती	<i>Zizyphus nummularia</i> <i>Z'Lotus</i>		

स्थान—भूवदरीके भांड पंजाब, सिंध, गुजरात, दखन, राजपूताना और पश्चिमोत्तरांडिदुस्थान आदि कई प्रदेशोंमें होते हैं। सूक्ष्मवदरी—इसके भांड, सिंध, और कभी कभी १५ फुट ऊंचे बढ़ जाते हैं। इसके सबके सब पत्ते नहीं गिरते हैं। लष्णकालके प्राग्भयमें इसके पुराने पत्ते, बहुधा गिर जाते हैं, और गिरनेके पीछेही नवीन पत्ते निकल आते हैं।



इसका फल गोल होता है जो पकने पर लाल रंगका और चमकदार होजाता है। इसकी कठोर गुठलीमें दो खानें और उनमें दो मींगी होती है इसकी छोटी डालियों के दो दो तीखे कांटे लगते हैं जिनमें एक सीधा और दूसरा मुड़ा हुआ होता है। इसके पत्ते कुछ गोल और छोटे होते हैं। इसके १० से २० तक पुष्पोंके बटुतसे गुच्छे लगते हैं।

फूलने फलनेका समय—फागुनसे जेठतक इसके पुष्प लगते हैं आसोजसे पोषतक इसके फल पकते हैं।

प्रयोग—(१) इसके फल खट्टे, कपले, कुछ मधुर, सिन्धु, रोचक, तिक्त शीतल और ग्राही है और पित्तके रोगोंको मिटाते हैं (२) विगड़े हुए ब्रेणों पर इसकी जड़की छालका पुन्टिस बांधते हैं (३) इमकी जड़ की छाल के काथसे कुल्ले करने से सध प्रकारका मुखपाक मिटता है (४) मीठे तेलके साथ इसके पत्तों को पीसके अग्नि दग्धपर लगाना चाहिये (५) बेरकी राखको जलके साथ शरीरपर मलने से रंग सुधरता है (६) बंबूलकी और इसकी जड़की छालको ओटाके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है।

संख्या (३५२)

( सं ) बंधूक, वन्धुजीवक, मध्यन्दिन, माध्याह्निकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुड़ी
दुपहरिया	द्वोपहरिया	बपोरिया	दुपारी	बाधुलिफुलेर गाछ	गुलदुपहरिया	मकेन
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कौजिशदि	बदुगे			Pentapetes phoenicia. Dombey, p	The flame tree of the woods.	

स्थान—इसका भाड़ हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें बहुत होता है।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसके चमकदार किरमिची रंगके दो इंच लम्बे पुष्प लगते हैं। इसके पत्ते कुछ लम्बे होते हैं। इसके बारह महीनेही पुष्प लगते हैं, परन्तु वर्षा ऋतुमें तो अवश्य लगते हैं।

प्रयोग—( १ ) दुपदारिया-ग्राही, लघु, कुछ उष्ण और ज्वरनाशक है ( २ ) इसके पुष्पोंकी पखड़ियोंका रस नाकमें टपकानेसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( ३ ) इसके दो तोले, पुष्पों को घीमें तल, ४ रती जीरा और ४ रती नागके-शरके साथ पीस उनमें मखन और मिश्री मिला, गोली बनके दिनमें दो, बर देने से, आमातिसार मिटता है ( ४ ) इसकी २, २॥ मामे ताजी जड़को-थोड़ी पीपलके साथ पीसके तीन-२ चार २ घंटेके अंतरसे देनेसे तीव्र आमातिसार मिटताहै, ( ५ ) इसकी जटका स्वाद अच्छाहै, ।

—३५३—

संख्या ( ३५३ )

( स० ) चंध्याककोटकी, देवी, मनोज्ञा, नागारिः ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
भाङ्गकोडा	भाङ्गकोडा	भाङ्गकोटोला	भाङ्गकोटोली	तित्काँकड़ी	भाङ्गखान्गसा	ईश्वरी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
	ईश्वरी			Momordica dioica. M. tilastonia.		

स्थान—बांभककोटकी बेलें हिन्दुस्थानमें बहुधा सबठौर होतीहै ।

प्रयोग—( १ ) बांभककोडा-कड़वा, चरपरा, लघु, उष्ण, शोधन और विप-नाशकहै ( २ ) इसका कंद बहुत चपदार होताहै स्त्री जातिकी बेलका कंद पुरुष जातिकी बेलसे अधिक चपदार होताहै ( ३ ) इसके कंदका मुरब्बा खिलानेसे रक्तार्श मिटताहै ( ४ ) इसकी मात्रा ७॥ मासे या कुछ अधिक दिनमें दो घेर देना चाहिये ( ५ ) आतोंके रुई रोगोंमें इसके कंदको मुरब्बा दिया जाताहै ( ६ ) मस्तके सम्बन्धी रोगोंकी यह बहुत उत्तम औषधिहै ( ७ ) नारियल की गिरी, कालीमिरच रक्तचदन और दूसेरी औषधियोंके साथ इसके कंदको पीसके, लेपकरनेसे मस्तककी सब प्रकारका पीडा मिटतीहै ( ८ ) बिल्वके (विपकिली) के मूत्रसे जो शोथ हो जातीहै उसको मिटानेके लिये इसकी

के रसका लेप करना चाहिये ( ६ ) इसके सूखे फलके चूर्णको सुंघनेसे छीक बहुत आतीहै ( १० ) स्त्रीजातिके कंदकी फकी देनेसे मुखी खासी तर हो जातीहै ( ११ ) सर्पके काटनेसे जो घाव हो जातेहै उनपर पुरुषजाति की बेल के कंद का लेप करना चाहिये ( १२ ) ज्वर छटनेके पीछे उस रोगीको इसके कच्चे फलकी शाक खिलाना चाहिये ( १३ ) इसके कंदको पानीके साथ घिसके लेप करनेसे सर्प, विच्छू और विल्ली आदिका विष उतरताहै इसके १ तोले कंदको मधु और शक्करके साथ घटानेसे पथरी गलजातीहै ( १४ ) इसके कंद के छालीके मूत्रकी भावना दे काजीके साथ पीसके सुंघानेसे विषकी मूच्छी भिटती है ।

। ६

संख्या ( ३५४ )

( सं० ) बला, वाट्यालकः, भद्रोदनी, समंगा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खरैटी	खिरैटी	खरेटी	लघुचिकणा	वेडेल	खरैहटी	पिल्लमुचवपुलगुमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	विट्टहरळु मिड			<i>Sida cordifolia</i> & <i>herbacea</i>	<i>The "horn" bean leaved sida.</i>	

स्थान—इसके बूटे हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतेहैं ।  
 प्रयोग—(१) बल-कडवी, अत्यन्त मीठी, चरपरी और उष्णहै बल और वीर्यको पुष्ट करतीहै (२) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पसीना आताहै, पेटकी पीडा मिटतीहै और शरीरकी शक्ति बढ़तीहै (३) इसकी जड़के काथमें पीपल बुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटतीहै (४) रोग मिटनेके पीछे जो निर्बलता रहती है उसको मिटानेके लिये इसकी जड़की छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला फकी देके ऊपर धूरे पिलाना चाहिये ( ५ ) इसका हिम पिलानेसे पसीना आताहै ( ६ ) सोंठके साथ इसका फांट करके पिलानेसे ज्वर उतरताहै ( ७ ) इसकी जड़के काथमें जायफल घिसके पिलानेसे आतिसार मिटतीहै ( ८ ) इसके

पत्तोंको कालीमिरचके साथ घोट छानके पिलानेसे दाह, और मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्र सम्बन्धी रोग मिटतेहै ( ६ ) इसकी जड़की छाल, लौंग, जावित्री और मिश्रीको पीस दूधमें छानके पिलानेसे स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटतीहै ( १० ) इसकी जड़को कचूरकी वींठके साथ पीसके लेप करनेसे फुंसियां फट जातीहै ( ११ ) इसके पत्तोंके तिल्लीका तेल चुपड़ अग्निपर तपाके बांधने से फोड़े शीघ्रतासे पकतेहै ( १२ ) इसके और बंबूलके पत्तोंका पीस टिन्डी वनाके दुखती हुई आंखपर बांधना चाहिये ( १३ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे मूत्र अधिक लौंग कर गठिया मिटतीहै ( १४ ) इसके पत्तोंको भिगो, मल छान, मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १५ ) इसकी जड़ गलेमें बांधनेसे ज्वर छूट जातीहै ( १६ ) बलवीजका पाक वनाके खानेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( १७ ) बलवीजके जूरेमें मिश्री मिलाके दूधके साथ फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( १८ ) बलवीजोंका काथ पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै ( १९ ) मुरब्बेकी हरड़ खिलानेके ऊपर बलवीजका काथ पिलानेसे दस्तकी बार २ शंकाका होना मिटताहै ( २० ) इसकी जड़का हिम पिलानेसे दाह मिटतीहै ( २१ ) इसके हिमकी साथ अतिसकी फकी देनेसे अतिसार मिटताहै ( २२ ) इसकी जड़को सोंठकी साथ ओटाके पिलानेसे धारीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै ( २३ ) इसकी जड़के काथपरसेकी हुई हींग और सैधानमक धुरकाके पिलानेसे पक्षाघात और अर्दित मिटताहै ( २४ ) वातव्याधि मिटान के लिये जो तेल बनाय जातेहै उनमें इनकी जड़ मिलाई जातीहै ( २५ ) इसकी जड़की छालके चूर्णको फकी लेके ऊपर मिश्री मिलाकर पानीमें चिनग मिटतीहै ( २६ ) इसकी जड़की छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला, २ तालकी फकी लेके ऊपर दूध पिलानेसे श्वेतप्रदर मिटताहै ( २७ ) इस चूर्णको मधु और दूधके साथ लेनेसे भी श्वेत प्रदर मिटताहै ( २८ ) इसके काथमें बराबर दूध मिलाकर पिलानेसे अर्दित मिटताहै ( २९ ) इसकी ५ मास जड़ पानीके साथ पीसके पिलानेसे त्रिपूचिका मिटतीहै ( ३० ) इसके चूर्णको मधु और शकर के साथ लेनेसे स्वरभंग मिटताहै ( ३१ ) इसका काथ पिलानेसे श्वराहक रोग मिटताहै ( ३२ ) इसके रस या काथमें सिद्ध किये हुए परहके तेलको दूधमें डालके पिलानेसे आध्मान, शूल, और अडवृद्धि मिटतीहै ( ३३ ) इसका मूष

वनाके पिलानेसे-वातरोग मिटताहै ( ३४ ) इसका-काथ और कल्क एक भाग वृष चारभाग, इनसे तेल सिद्ध कर, ऐसे दश बेर सिद्धकिये हुए तेलके सेवनसे वातरक्त और रक्तपित्त मिटताहै (३५) पुष्प नक्षत्रके दिन इसकी जड़का हाथमें बांधनेसे चातुर्थिक ज्वर छूटताहै।

संख्या ( ३५५ )

( सं० ) अतिवला, बल्या, बलिका, विकंकता ।।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मगहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
डाबी	कंधी, फकहिया	खंपात्र्य	विकंकती	पीतवाकुलि	कंधी	पेहमुत्तघनगुवेंड
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तुत्तियलै	हिरिचिट्टहर- लुगिड	मंस्तुलगूल	दगस्तेशानाह	Abuliton indicum sida indica		

स्थान— इसके छोटे गुल्म हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें सब ठौर होतेहैं । इसके बीजोंमेंसे चप बहुत निकलताहै ।

प्रयोग— ( १ ) अतिवला-तित्त, चरपरी, मधुर, खट्टी और कृमिनाशक है ( २ ) इसके पत्तोंमेंसे चपदार गाढ़ा रस निकालके औषधियोंकी तीक्ष्णता मिटानेके लिये पिलातेहै ( ३ ) इसकी जड़का हिम पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटतीहै ( ४ ) कुष्ठके रोगीको इसका हिम पिलाना चाहिये ( ५ ) इसके बीज सारकहै और अर्शकी पीड़ा मिटानेके लिये इनकी फकी दीजातीहै ( ६ ) इसके बीजोंका चप चरपरान्दहको मिटाता है ( ७ ) इसके बीज और अद्दुसेकी ओटाके पिलानेसे सूखी खांसी मिटतीहै ( ८ ) अतिसार मिटानेके लिये इसकी झालका काथ पिलाना चाहिये ( ९ ) इसके हरेक अंग छातीके रोग मिटानेके काममें आतेहै ( १० ) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसके पत्तोंका हिम पिलाना चाहिये ( ११ ) इसकी झाल और बीजाका हिम सूत्रवर्द्धकहै ( १२ ) इसकी झालके काथसे कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा और

मसूडोंका ढीलापन मिटताहै ( १३ ) उष्ण दूर्धका इसकी टहनीसे हिलानेसे जम जाताहै जम जानेके पीछे उससेसे जो जल निकलताहै उसको पिलानेमे अर्श मिटताहै ( १४ ) इसके बीजोंका पाक बनाके खानेसे पुरुपार्थ बढ़ताहै ( १५ ) इसके पत्तोंको पकाके खानेसे रक्तार्शका रुधिर बन्ध हो जाताहै ( १६ ) इसकी जड़का हिम पिलानेसे दाढ़के साथ वार २ मूत्र आना बन्ध होजाताहै ( १७ ) इसके पत्तोंके हिममें मिथ्री मिलाके पिजानसे मूत्रके साथ रुधिरका आना बन्ध हो जाताहै ( १८ ) २ से ७॥ मासे इसके बीजोंको दूसरी सारक औषधियोंके साथ देनेसे वे सारकपनका काम करतेहै ( १९ ) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( २० ) पुगानी खासीको मिटानेकेलिये इसके पत्तोंका क्वाथ पिलाना चाहिये ( २१ ) इसके पत्तोंका क्वाथ पिलानेसे मूत्राशयकी सूजन उतरतीहै ( २२ ) बच्चोंकी गुदाके इसके बीजोंकी धूनी देनेसे सफेद, छोटे और गोल कीड़े, ( जिनको मारवाडी में चुरणिय कहतेहै ) मर जातेहै ( २३ ) कन्याके हाथसे कते हुए मूतसे इसकी जड़को स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे गर्भका गिरना बन्ध हो जाताहै ( २४ ) इसके ७ पत्तोंको पानीके साथ पीस उनका रस निकाल वूरा मिलाके पिलानेसे पित्तोन्माद मिटताहै ( २५ ) इसका ७ मासे चूर्ण शहदके साथ चाटनेसे और दाल चावलका पथ्य खानेसे कामला रोग मिटताहै ( २६ ) घावपर इसके पत्ते बांधनेसे वह भर जाताहै ।

संख्या ( ३५६ )

( सं० ) नागवला, चतुःफला, गांगेरुकी, भया ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गंगेरण	गुलशकरी	गंगेटी	नागवला	गोरक्षना-कुल	गंगेरण(न)	जिजि(वि)लिके चट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	जिबिलिक			Sida spinosa S Alba & unifolia		

स्थान—गंगेरन हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागमें अर्थात् पश्चिमोत्तर देशसे सीलोन तक होती है।

प्रयोग—(१.) गंगेरन-खट्टी, मधुर, कपेली, पचनम भारी, चरपरी और उष्ण है (२.) इसके पत्त और पत्रियोंकी चरपराहटको मिटाता है और ज्वर में शान्ति पैदा करता है (३.) इसके पत्तोंको कालीमिरचके साथ पीसके पिलानेसे नया और पुराना मूत्रकुल्ल मिटाता है (४.) मूत्रको टाह मिटानेके लिये इसकी जड़का हिम पिलाना चाहिये (५.) इसकी जड़का काथ पिलानेसे पसीना आता है (६.) इसकी जड़की छालके चूर्णमें बराबर मिश्री मिला एक तोल भरकी फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे शरीरकी निर्बलता मिटती है (७.) इसके पत्तोंको जलमें भिगो मल छानके पिलानेसे प्रमह मिटाता है (८.) इसकी जड़का काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (९.) इसकी जड़का पानीके साथ पीसके स्तनोंपर लेप करनेसे स्तन कठोर होजाते हैं (१०.) इसकी जड़को दूधमें ओटाके पीनेसे हृद्रोग, श्वास और कास मिटाता है (११.) जड़के चूर्णकी दूधके साथ फकी देनेसे श्वास और कास मिटाता है।

संख्या (३५७)

(सं०) महाबला, वर्षपुष्पा, पीतपुष्पी, सहदेवी।

मागवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुगी
सहदेवी(ई)	सहदेवी(ई)	सहदेवी	महाबला	पीतवेडेला	सहंदई	सहदेवि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिना	ग्रेजी	
सहदेवि	सहदेवि			Sida Rombifolia S. canariensis	The ash colored flea bane	

स्थान—महाबला हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होती है।

प्रयोग—(१) सहदेवी मधुर, बल्य, वृष्य और त्रिदोषनाशक है (२) इसके पंचांगका काथ पिलानेसे पसीना होके ज्वर उतर जाता है (३) इसकी बीजोंका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे पेटके कीड़े मरते हैं (४) इसके बीजोंको

घोट छानके पिलानेमें विष (उतरताहै ( ५ ) इसके पचागको घोट छानके पिलानेसे चिनग मिटतीहै ( ६ ) इसको आटाके पिलानेसे मूत्राशयकी नशाकी एंटन मिटतीहै ( ७ ) आंखोंके ऊपर इसके पुष्प वाधनेसे आखकी ललाई मिटतीहै ( ८ ) इसकी जड़को आटा छानकर पिलानेमें गठिया मिटतीहै ( ९ ) इसकी जड़को सोठके साथ आटाके पिलानेसे विषमज्ज्ग छूटताहै ( १० ) इसकी जड़के काथपर पीपलका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे शीतघ्नत, कपवात और दाह मिट जातीहै ( ११ ) इसको अतु समयमें पिलानेसे स्त्री गर्भको धारण करतीहै ( १२ ) कंठमें वाधनेमें कंठमाला मिटतीहै ( १३ ) कपिलागोंके दूधके साथ इसका सेवन करनेसे वन्ध्यापन मिटताहै ( १४ ) घृतके साथ इसका सेवन करनेसे शुन्यवाय मिटतीहै ।

संख्या ( ३५८ )

( सं० ) राजबला, प्रसारणी, चारुपर्णी, प्रतानिका ।

मरवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
पसरन	नारी	चादनेल	गधभादल्या	खीप	गतिमगोरु	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लटिन	अंग्रेजी	
सौरणेगिड				Paederin foetida P. Verta	( ८ )	

स्थान—यह मध्य और पूर्वी हिमालय, बंगाल, आसाम आदि देशोंमें होतीहै ।

परिधान—इसकी बड़ी भारी बेल होती है ।

प्रयोग—( १ ) राजबला, सारक, उष्ण, दृष्य, चरुपरी, कडवी, लघु, पत्रनेमें भारी और उष्णवीर्य है ( २ ) रोग मिटनेके पीछेकी निर्बलता मिटाने के लिये और रोगीकी नीरोगता बढ़ानेके लिये इसके पत्तोंको आटाके उनका भोल पिलाना चाहिये ( ३ ) इसके पंचागको आटाके पिलानेसे और मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै ( ४ ) इसकी जड़वामरुहै ( ५ ) इसके पत्तोंका ३॥।। मासे



स्वरसः पिल नेसे त्रच्चोंका अतिसार मिटताहै ( ६ ) इसके पत्तोंका शाक बनाके खानेसे निर्वलता मिटतीहै और नीरोगता बढ़तीहै ( ७ ) इसके पत्तोंको रोगके बिना भोजनके काममें नही लाने चाहिये ।

संख्या ( ३५६ )

( सं० ) बालकं, ह्रीवेरं, बर्हिष्टं, जलम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलद्वी
नेत्रवालो	सुगंधवाला	धोकोवाळा	गधवाला	गधवाला	नेत्रवाला	कुरु वेरु-
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
कुरु वेर	मुडिवाळ			<i>Pavonia odorata</i> <i>Hibiscus odoratus</i>		

स्थान सुगंधवालेके पेड़ पश्चिमोत्तर देश, सिन्ध, बांदा, पश्चिममाय-द्वीप और सीलोनतक पैदा होते हैं । यह उत्तम सुगंधकेलिये भागोंमें बोया जाताहै ।

प्रयोग—( १ ) सुगंधवाला—मधुर, कडवा, दीपन, पाचन, शीतल, लघु और रूक्ष होता है । फफू, पित्त, वमन, तृषा, कुष्ठ, अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, वृद्रांग, लालास्राव, रुधिरविकार, रक्तपित्त और कंडूको मिटाताहै ( २ ) इसकी सुगंधित जड़ चरपरी ठण्डी और पेटकी दर्द मिटानेवालीहै ( ३ ) ज्वर, पित्तशोथ और भीतरके यंत्रोंमेंसे रुधिरके बहनेको रोकने के लिये इन रोगोंकी दूसरी औषधियोंमें इसको मिलाके देना चाहिये ( ४ ) सुगंधवाला और बीलागिरकी फुकी देनेसे आम्रातिसार मिटताहै ( ५ ) इसके पानीसे निर्वल मनुष्यकी तृषा शान्त होतीहै ( ६ ) सुगंधवालेको शकर और मजुके साथ चूटके चावलके पानी पिलानेसे बालकोंका रक्तातिसार, श्वास और कास मिटताहै ( ७ ) तैले नेत्रवाले को ३ पाव जलमें आटा, आधा रख, छानके पिलानेसे संग्रहणी मिटतीहै ( ८ ) इसको बकरीके ताजे दूध में पीसके इन्द्रोपर मलनेसे उसकी शक्ति बढ़तीहै ( ९ ) शीतला निकलने के पहिले इसको नाजूके रसके साथ चटानेसे शीतला कम निकलतीहै ।

संख्या ( ३६० )

( सं० ) ब्रह्मदण्डी, अजदण्डी, कंटपत्रफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी	ब्रह्मदण्डी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
ब्रह्मदण्डी				Tricholpis glaberrima, Betratula Indica.		

गुण—(१) ब्रह्मदण्डी-चुरपरी, उष्ण, वृष्य और कड़वी है वातरोग, शोथ और कफको मिटाती है और स्नायुजालकी शक्तिको बढ़ाती है ।

संख्या ( ३६१ )

( सं० ) ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्यनामा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
ब्राह्मी	बरभी, ब्राह्मी	विद्याब्राह्मी	ब्राह्मी	ब्राह्मीशाक	ब्राह्मी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Herpestis monnieri H spathulata	Indian penny wort	

स्थान—ब्राह्मी हिन्दुस्थानमें पंजाबसे सीलोन और सिंधुपुर तक नदी नालोंके पास या तालाबके किनारे आर्द्र स्थानोंमें होती है ।

प्रयोग—( १ ) ब्राह्मी-शीतल, कपली, कड़वी, सारक, पचनेमें हल्की, रस और विपाकमें मधुर, और पिच्छल है आयु, बुद्धि, स्मृति और मूत्रवद्धक है ( २ ) औषधी लेनेतक जो बद्धकोष्ठ भिड़ता रहे ऐसे बद्धकोष्ठसे निम्बका मूत्र बन्ध हो जावे ऐसी दशामें विशेष करके इसका प्रयोग करना चाहिये, ( ३ ) ब्राह्मीके रसको घासके तेलमें मिलाके गठियाकी पीड़ापर मर्दन करना

चाहिये ( ४ ) ब्राह्मी स्नायुजालकी शक्ति बढ़ाती है ( ५ ) ब्राह्मीका क्वाथ पिलानेसे गलेका भारीपन मिटता है ( ६ ) उन्माद और अपस्मार मिटानेके लिये ब्राह्मीके योगसे कई प्रकारके घृत बनाये जाते हैं ( ७ ) इसके पत्तोंके ६ मासे ताजे रसमें २॥ मासे कूठ और मधु मिलाके पिलानेसे उन्माद मिटता है ( ८ ) इसके पत्तोंको घृतमें तलके खिलानेसे स्वरभंग मिटता है ( ९ ) धातुओंका विप-उतारनेके लिये इसकी जड़का प्रयोग किया जाता है ( १० ) इसके पत्तोंको ३॥ मासे रस पिलानेसे बच्चोंको वमन और विरेचन होके प्रतिरियाय और तीव्र कास मिट जाता है ( ११ ) इसके स्वरसमें मधु मिलाके पिलानेसे मसूरिका मिटती है ।

संख्या ( ३६२ )

( सं० ) मंडूकपर्णी, ब्रह्ममंडूकी, सुप्रिया, ददुरच्छदा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
ब्राह्मीमिदा	ब्रह्ममंडूकी चगेली	खडभरामी	ब्राह्मी	गुलकुडि	मंडूकी	मंडूकमूल कुराकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वत्तारइ	वदलगा			Hydrocotyle nas- tica Wight &	Asiatic pennywort	

स्थान - मंडूकपर्णी हिन्दुस्थानके आद्रस्थानोंमें बहुत और पैदा होती है ।

पाहचान—इसके ताजे पत्तोंमें किसी प्रकारकी गंध नहीं आती है परंतु जब उनको हाथसे मले तो उनमें मंद सी चरपरी सुगंध आने लगती है ।

प्रयोग—( १ ) यह—शीतल, लघु, सारक और रस और विपाकमें मधुर है ( २ ) इसको सूर्यकी धूपमें अथवा अग्निके योगसे सुखानेसे इसमें जो उड़ने-वाला तेल है वह उड़ जाता है, इस औषधिमें प्रयोगका मुख्य प्रदार्थ तेल ही है । इसलिये बहुत सावधानीसे छायामें सुखाय हुए इसके कवले पत्तोंके चूर्णको औषधि के काममें लाते हैं । इनके चूर्णको किसी शीशिये ऐसा बन्द करना चाहिये कि उसमें शील नहीं पहुंचने पावे । १/४ सर ताजे पत्तोंका प्रायः २ सर चूर्ण कुछ पिलारा हर रंग

का होता है (३); इसके ताजे पत्तोंका स्वाद कड़वा और बुरा होता है, परंतु भली भांति सूखजाने पर वह भी नहीं रहता है (४) कोढ़ और उपदंशके प्रारम्भमें यह औषधि गुण करती है परंतु बढीहुई दशामें विशेष गुण नहीं करती है यह केवल उस कुष्ठमें गुण करती है कि जिसमें छोटी-२ फुन्सियां होके फैलती जाती है (५) बहुत से रोगोंमें मूत्रवृद्धि करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है (६) रजो र्म को शुद्ध करनेके लिये बहुधा इसका प्रयोग किया जाता है (७); जो रोग सब शरीरमें हो और एक अंगमें विशेष हो तो इस औषधिको खिलाने पिलाने के सिवाय इसके चूर्णका त्रस ठौरपर मर्दन करना, पुन्टिस बाधना या लेप करना चाहिये (८) विगडे हुए फोडेपर इसका चूर्ण बुरकाना चाहिये और २॥ से ४ रती तक चूर्णकी फकी नित्य देना चाहिये और इसका पुन्टिस भी बाधना चाहिये (९) पानीसे बुलीहुई और अच्छे हवादार मकानमें छायामें पूरी सुखाई हुई जड़ और पत्तोंका ५-५ रती चूर्ण दिनमें दो तीन बेर देना चाहिये (१०) २० से ४० वर्षकी आयुवाले कोढी मनुष्यको इसके १०-१० रती चूर्णको नित्य दो सप्ताह तक देके फिर २॥ रती बढाके एक सप्ताह तक देना चाहिये ऐसे हर सप्ताहमें २॥-२॥ रती चूर्ण बढाते हुए ३० रती तक बढाके एक महीने तक ३०-३० रती देना चाहिये फिर उसी क्रमसे २॥-२॥ रती प्रति सप्ताहमें घटाते हुए ५ रती तक लाके छोड़ देना चाहिये और एक महीने तक बन्द रखना चाहिये इस रीतिसे एक प्रयोग कर फिर दुबारा ऐसे ही कराना चाहिये इस चूर्णको सोते समय उष्ण जलके साथ लेनेका प्रारम्भ करे जब वह १५ रती तक पहुँच जावे तब इसीके दो वगवर विभाग करके एक प्रातःकाल और दूसरा सायंकालको लियाकर इसी रीतिसे घटाते हुए उक्त प्रमाण तक बढाना चाहिये और उसी रीतिसे घटाके छोड़ देना चाहिये (११) इसका लेप बनानेकी यह रीति है कि पत्तोंका ठंडे जलसे महीन पीसकर लेप करनेयोग्य भाँटा कर लेना चाहिये, लेप बहुत पतला नहीं रखना चाहिये (१२) इसका शर्वत बनानेकी यह रीति है कि इसके ८ तोले चूर्णको सवासेर पानीमें बहुत मंद अंचसे आटा छाने उसमें सेरभंग घृग मिलकि शर्वत बना लेना चाहिये इस शर्वतकी सर्वा तोलेकी मात्रा है और इसका प्रयोग भी उक्त रीतिसे करना चाहिये, त्वचाके रोगोंमें स्थिर, शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग बहुत उत्तम है (१३)

इसका द्रवसार बनानेकी मष्ट रितिहे कि इसके २॥ तोले चूर्णका २॥ तोले द्रवसार बना लेना चाहिये और उसकी मात्रा ५ से ७॥ रती तक दिनमें तीन बेर देना चाहिये ( १४ ) इसका कार्य बनानेकी यह रीति है कि इसके सूखे पोथेके ८ तोले पंचांगको सर्वांसर जलमें थोड़ाकर थोड़ाई पावे रख लेना चाहिये ( १५ ) स्नान करनेके लिये इसका जल बनानेकी रिति—इसके ५ थेर ताजे पोथेको गर्म जलमें थोड़ा छाने उस जलमें बैठनेमें त्वचा सम्बन्धी रोगों में बहुत उपकार होता है ( १६ ) इसके पत्ते और मक्खनको जलमें थोड़ा सब पानी जलाके उनको चटानेसे मस्तिष्क सम्बन्धी और उन्मादके रोग भिद्यते है ।

संख्या ( ३६३ )  
( सं० ) भल्लातकः, अरुणकरः, अग्निमुखः, रफोटहेतुः

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजावी	तैलुडी
भिलावो	भिलावा भमला	भिलामा	बिनवा	भेला	भिलावे	जीडिगिवा
द्राविडी	कर्नाटकनी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंगरेजी	
शेना कोट्टे	गेरुवीजा	दन्वुलफ़हम	बलादुर	<i>Semecarpus Anacardium</i> <i>S latifolius</i>	Marking nut.	

स्थान—भिलावेक वृक्ष हिमालयमें मतलज से पूर्व की और आसाम तक और हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होते है ।

पहिचान—इसकी ऊंचाई ३० फुट तक होती है । इसकी पेदड खड़ी होती है उसकी गुलाई ४ फुटकी होती है । इसकी छोटी शाखाओंके नीचे कुछ तीखे रूप होते है । इसके ६ से १२ इंच लम्बे पत्ते डालियोंके अन्तमें लगे रहते है उनका शिरा गोल होता है । इसके पुराने पत्ते माघमें गिरजाते है और फागुनमें नवीन आजाते है । इसकी छाल एक इंच मोटी छुपके रंगकी सफेद और कुछ काली होती है । इस वृक्षके एक प्रकारका गोंद लगता है । फूलने फलने का समय—इसके पत्ते निकलनेके पीछे ही बहुधा पुष्प लग जाते है परन्तु इसके सिवाय और भी कई बेर पुष्प लगते है प्राकृतीसे

माघतक इसके फल पकते हैं। इसके फलका छिलका रंगतके काममें आता है।  
१०० ताल भिलावेकी गिरमेंसे ३२ ताल तेल निकलता है।

प्रयोग—( १ ) इसका पका हुआ फल—कपेला, रस और विपाक में चर-  
परा, मधुर, उष्ण, उत्तेजक, पाचक, स्नायु बलवर्द्धक और फफोले पैदा करने  
वाला है। मंदाग्नि, त्वचाके रोग, प्रशं और स्नायु जालकी निर्वन्तता मिटानेके  
लिये काममें आता है ( २ ) गंडमाला, उपदंश और कुष्ठ सम्बन्धी रोगोंमें इस  
की बहुत थोड़ी मात्रा देने चाहिये ( ३ ) भिलावेके छिलकेका रस चरपरा  
होता है उसमें छाला उठानेकी बड़ी शक्ति है ( ४ ) चोटके झूठे चिन्ह पैदा क  
रनेके लिये यह त्वचापर लगा दिया जाता है, परन्तु चोट लगनेसे जो नील  
पड़जाता है उसमें और इसके लगानेसे जो चिन्ह होते हैं उनमें यह अन्तर है कि  
त्वचापर जिस ठार यह लगाया जाता है वहांपर छोटे-छोटे फफोले पैदा होजाते हैं  
और चोट लगनेसे जो नील पड़ती है उसपर फफोले नहीं होते हैं ( ५ ) गठिया  
और मोचपर इसका तेल लगाया जाता है ( ६ ) तालू की छत ( काग ) लटक  
जानसे जो खासी पैदा होती है उसको मिटानेके लिये चराककी लोयमें भिला-  
वेको जलानेसे जो तेल निकलता है उसको पावभर दूध में मिलाकर पिलाना  
चाहिये ( ७ ) भिलावे के छिलकेका रस उष्ण और रुच है ( ८ ) वह सब  
प्रकारके त्वचा के रोग, पक्षाघात, अपस्मार और स्नायु जालके दूमरे रोगों  
में दिया जाता है ( ९ ) इसकी मात्रा १ मासेसे २ मासे तककी है ( १० ) इस  
को तेल या पिघलाये हुए घीमें मिलाके देना चाहिये ( ११ ) ठंडी शोथपर  
इसका बफारा लगाया जाता है ( १२ ) मुहकी लाल बन्ध करनेके लिये इसके  
काथस गंडूप ( कुल्ले ) कराने चाहिये ( १३ ) नपुंसकता मिटानेके लिये इसकी  
धुनी दनी चाहिये ( १४ ) काजूके तेलके गुण इसके तेलसे मिलते हैं ( १५ )  
इसको त्वचा पर लगानेसे १२ घट्टेमें फफोले पैदा होजाते हैं ( १६ ) इस के  
तेलकी अधिक मात्रा देनेसे पीडाके साथ बार बार मूत्र आने लगता है और  
कभी कभी मूत्र के साथ रुधिर भी आने लगता है। इसकी थोड़ी मात्रा देने  
से कुछ असर नहीं मालूम होता है ( १७ ) छोड़की गर्भाशयमेंसे निकालनेके लिये  
भिलावेका चरपरा रस गर्भाशयके मुहपर लगा देते हैं ( १८ ) दाढकी पीडा  
मिटानेके लिये भिलावेकी राखस मंजन करना चाहिये ( १९ ) उपदंशकी

टाकियोंपर भिलावेके मरहमकी चुगती लगाना चाहिये (१२०) भिलावेका पाक खानेसे पुरुषार्थ बढताहै, (१२१) किसी रूके इससे बड़ी खुजली चलने लगतीहै चमडी लाल होके, उसमें दाह पैदा हो जातीहै और झोटी, २ अलाइयां होके फुन्सियां हो जातीहै, ये सब उपद्रव धीरे २ सब शरीरमें फैल जाते हैं। इनको मिटानेके लिये, नारियलका तेल या इम्लीका जल लगाना चाहिये (२२) जोडोंपर भिलावेका तेल लगाके, उनपर इसीके बुगटेकी धूनी देनेसे उन जोडोंपर शोथ हो जातीहै, धोखे वाज लोग तब कहतेह कि हमारे गठिया हो गई।

संख्या (३६४)

( सं० ) भव्यं, भवं, भविष्यं, भावनम्।

मरिवाडी	हिन्दी	गुजराती	मगधी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	रोमफलओट	ओटफल	ओटीनिझाड़	चालुगाछ		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>D. speciosa / elliptica</i>		

स्थान—भव्यके वृक्ष बंगाल, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, ब्रह्मा और पूर्वी द्वीपमें सिलहटसे सिंग्रापुर तक, कमाऊ और गढ़वालमें, पूर्वकी ओर, तक पहाडोंकी तलहटीमें और दक्खन कनारासे दक्खनकी आरु-बहुत होतेहै, परन्तु हिन्दुस्थानके उत्तरी या पश्चिमी मैदानोंमें कम होतेहैं।

पहिचान—यह एक साधारण ऊर्चाका वृक्ष होताहै। इसकी पेदड़ छोटी, खडी, और मोटी होतीहै। इसकी शाखें, चाँडी फैलतीहै। इसकी पेदड़ की और बडी डालियोंकी, छाल चौथाई इंच मोटी, खुरदरी, अमकदार होतीहै उसमें बहुतमी छोटी २ दरारें होतीहै। इसके पत्ते २, १० इंच लम्बे और कटवां किनारेदार होतेहै, जबवे पुराने हो जातेहै तब करडे पड़जातेहै। इसके पत्ते बसन्त ऋतुमें नहीं गिरतेहै। इसके सुगंधदार पुष्प लगतेहैं। इसका फल बडा होताहै उसकी मध्य रेखा ३, ४ इंच

लम्बी होती है, उसका छिलका कड़ा होता है इसकी चेपदार गिरमें बहुतसे बीज ठौर ठौर गड़े रहते हैं।

फूलने फलने का समय—जठ अपाठमें इसके पुष्प लगते हैं, पाँच मासमें फल पकते हैं।

प्रयोग—( १ ) यह फल खट्टा, चरपरा और उष्ण होता है। पक्का फल रुचिकारक है ( २ ) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसके फल के रसमें मिश्री और जल मिलाके पिलाना चाहिये ( ३ ) इसके फलके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे खांसी मिटती है ( ४ ) इसकी छाल और पत्ते ग्राही है ( ५ ) अतिमार मिटानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये ( ६ ) इसका फल सारक है, परन्तु बहुत खानेसे अतिसार हो जाता है। यह कच्चा या उबाला हुआ दोनों रीतिसे खानेके काममें आता है।

सख्या ( ३६५ )

( सं० ) भांडीरः, चोरकः, शंकितः, जेमक ।

मारवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	भाट	भटोर	भटोर	भांडीरफुलेर गाछ	भटोर	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Clerodendron infortunatum.</i> <i>Volkameria infortunata.</i>		

स्थान—भांडीरके भाड हिन्दुस्थानमें दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थान बंगाल, ब्रह्मा, अरब, खेडी और शालके जगलोंमें बहुत ठौर पैदा होते हैं।

परिचय—फूलने फलनेका समय—इसका भाड १० फुट ऊंचा होता है। इसकी, डालियोंपर और पत्तोंके नीचे कोमल फूल होते हैं; इसके पत्ते हिसै हरेच लम्बे और तीखे कटवा किनारेके होते हैं। इसके लाल छिटेदार सफेद पुष्प लगते हैं। इसके कुल्ले द्रवहृण गोल गिरदार फलकी मध्या रेखा तिड़ाई इचकी होती है, यह एकजानेपर, चमकदार, और काले रंगका होजाता है। मृगशिर से चैत्रतक इसके पुष्प लगते हैं।



प्रयोग—( १ ) यह मधुर, कटु, उष्ण, तिक्त, पाकमें कटु, लघु, ताक्ष्ण और शीतलहै ( २ ) इसके पत्ते चिरायतेकी ठौर काममें आतेहै ( ३ ) इसके पत्तों का काथ पिलानेमें वारीसे आनवाला ज्वर छूटजाताहै ( ४ ) पत्तोंके ताजे रसको घावपर लगानेसे कीड़े मरतेहै ( ५ ) दूषित प्रायु आदिसे पैदाहुए बहुधा बच्चों के ज्वरको रोकनेके लिये इसके पत्तोंका ताजा रस पिलाते हैं ( ६ ) इसकी छाल भी औषधिके प्रयोगमें काम आतीहै ( ७ ) इसका निचोड़ा हुआ ताजा रस अच्छा साररुहै ( ८ ) इस रसके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहै और पित्त बढ़ताहै ( ९ ) गुदाके कीड़े मारनेके लिये गुदामें इसको पिचकारी लगातेहै ( १० ) खुजली मिटानेके लिये इसी रसका मदन करतेहै ( ११ ) दुष्ट वायु आदि से पैदाहुए ज्वरका लुडानेके लिये सरखियेको इसके पत्तोंके काथमें घोटके गोलियां बनाके देना चाहिये ( १२ ) यकृतकी शिथिलता मिटानेके लिये इसके पत्तों का ताजा रस पिलातेहै ।

संख्या ( ३६६ )

( सं० ) भार्गी, पद्मा, अंगारवल्ली, कासघ्नी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
भाइंगी	भारंगी	भारंगी	भारंग	वामनहाटी	भाइंगी	गुंभाई
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
गण्डुपरगि	गण्डुभाई			<i>Clerodendron scratum</i>		

स्थान—यह हिमालयमें सतलजसे खासिया पहाड़ और आसाम तक और नीलगिरी, पश्चिमी घाट, दक्षिण हिन्दुस्थान और ब्रह्मामें होतीहै ।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसके नीले पुष्प लगतेहै । इसके फलकी मध्यरेखा चौथाई इंचकी होतीहै, जब वह पक जाताहै तब चमकदार काले रंगका हो जाताहै । इसके पत्ते चिकने एक ओर से गोल और दूसरी ओरसे लम्बे, एक २ सीकपर तीन तीन और ढंडीके आमने सामने

लगतेहै, उनकी-कोरें कठवां कगूरेदार होतीहै । भारंगीमें गंध और स्वाद नहीं होता है । वैशाखसे श्रावण तक इसके पुष्प लगतेहै ।

प्रयोग—(१) भारंगी-चरपरी, कडवी, रूक्त, उष्ण, रोचक, पाचन, दीपन, कपेली और पचनेमें हल्कीहै (२) भारंगीका काथ पिलानेसे- प्रतिश्याय और ज्वर मिटताहै (३) इसके पत्तोंको तेलमें ओटाकर लगानेमें आंखके गोलोंकी सृजन उत्तर जातीहै और गीठोंका आना बन्द होजाताहै (४) भारंगी, सोंठ और धनियेंको पानीमें ओटाके पिलानेमें खाली होवड मिटतीहै (५) इसके बीजोंकी फक्की देनेसे हल्का विरेचन होताहै (६) इनका मूट्टेमें ओटाके पिलानेसे जलंधर मिटताहै (७) इसको और सोंठको समान भाग ले, चूर्ण बनाके गर्म जलके साथ फक्की देनेसे श्वास और कास मिटताहै (८) इसके चूर्णमें बराबर सोंठ, मिलाकर अदरकके रसमें चटानेसे श्वासरोग मिटताहै (९) भारंगी और सोंठका काथ पिलानेसे श्वास मिटताहै (१०) इसकी जड़का चावलोंके धोवनके साथ लेप करनेसे गलगंड और कुण्डरोग मिटताहै ।

संख्या ( ३६७ )

हिन्दी-भारंगीभेद L Clerodendron siphonanthus S. indica

स्थान—इसका बड़ा झाड़ होता है । इसकी शाखें पोली-होतीहै, इसके ६ से ६ इंच लम्बे पत्ते एक सीकपर ३ से ५ तक लगतेहै वे नीचेसे चन्द-नियां रंगके होतेहैं, इनका रंग पहिले सफेद होताहै और पीछे-धीरे २ पलट जाताहै । इसके गहरे नीले जड़में जुड़ेहुए १ से ४ तक बीज लगतेहैं । उष्ण-काल और वसंतमें इसके श्वेत पुष्प लगतेहै । इसके एक प्रकारका गोंद जैसा पदार्थ लगताहै ।

प्रयोग—(१) बंगालियों का यह निश्चय है कि इसकी लकड़ीको गुलेमें बांधनेसे कई प्रकारके रोग नहीं होतेहै (२) इसकी जड़ राजयुच्चा, कास और गंडमालामें लाभकारी है (३) इसकी जड़के कल्क और सोंठके चूर्णको उष्ण जलमें घोलके पिलानेसे राजयुच्चा मिटताहै (४) फुफफस के रोगोंके कई काथोंमें यह मिलाई जातीहै (५) इसकी जड़के कल्क और काथ से तेल बनाके मासपत्रवाले बच्चोंके मर्दन करना चाहिये (६) इसका वृत्त कुड कड़वा और ग्राही होताहै (७) इसका गोंद जैसा पदार्थ उपदंश सम्बन्धी

गठियाम काम आताहै ( ८ ) इसके पत्ते और कोमल डालियोंका निचोडा हुआ रस घागें मिलाके छत्तेदार फुन्सियोंपर लगाना चाहिये ( ९ ) जिस ज्वरमें फोडे फुन्सी होते हों उस ज्वरमें भी यहही लेप करना चाहिये ( १० ) इसकी पोली डालियोंके छोटे डुकडों की माला बनाके घघाको पहिरानसे और इस वृत्तकी सुगंधसे ८ वें और ९ वें प्रयोगके रोग मिटतेहैं ।

संख्या ( ३६६ )

( सं० ) भूतकेशः, केशी, अल्पकेशी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगी
	भूतकेशी			भूहकेश		
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Corydalis Gorniana</i>		

स्थान—भूतकेशी प्रविचमोत्तर हिमालय और शिमलेके पास हिन्दू और चोरपर होतीहै ।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) भूतकेशी—ग्राही, चरपरी, कडवी, ठडी और अग्निवृद्धक है । ( २ ) इसकी जड़ बहुत कडवी होतीहै, उसका काथ पिलानसे चारस आठवाला ज्वर छूटताहै ( ३ ) इसकी जड़के ५ से १५ रती तक चूणको फकी देनेसे उपदेश मिटताहै ( ४ ) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाके पिलानसे लचाके रोग मिटतेहैं ( ५ ) इसकी जड़को पानीके साथ पीसके पिलानसे मूत्रवृद्धि होतीहै ।

संख्या ( ३६६ )

( सं० ) भूनिम्बः, किरातकः, कार्णटिकः, कैरातः

खाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रायते	चिरायता	फरियातु	फिराईत	चिरेता	चिगायता	नेलायेमु
विही	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
लावेमु	नेल बेवु	कस्यबोवा	नएनिहावंदी	Swertia Chirata, Gentiana Chirayta, Justicia	Chirata, Chire ta.	

स्थान-चिरायता हिमालयमें कश्मीर से भूटान तक और खासिया पहाड़, प्रादि स्थानोंमें होताह ।

प्रयोग-(१) चिगायता-कड़वा, शीतल, पचनेमें इल्का, रूक्ष, वातल, सारक, मलवर्द्धक तथा ज्वर और कुमिनाशकहै (२) यह सब प्रकारके ज्वरोंमें कई रीतिमें, और ज्वर मिटाने वाली दूसरी औषधियोंके साथ, दिया जाताहै (३) चिरायतेके काथमें दूसरी औषधियें सरसोंका तेल और मट्टा डालके पकातेहैं जब सब औषधियें जलके तेल बाकी रह जाताहै तब उसको छान लेतेहैं इस तेल का मर्दन करनेसे जीर्णज्वर ( जिसमें शरीर कृश होगया हो और रुधिरमें लाल नहीं रहीहो ) छूट जाताहै (४) सर्दी, पित्तविकार, शरीरकी दाह और सक्षिपात ज्वरमें इसका प्रयोग किया जाताहै (५) कास और श्वास रोगको मिटानेके लिये चिरायतेका काथ पिलाना चाहिये (६) पेटकी शूल मिटानेके लिये चिरायता और परण्डकी जड़ औंटाके पिलाना चाहिये (७) बीलगीर की फकी देके ऊपर चिरायतेका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (८) चिरायता और नीमगिलोय बराबर ले औंटाके पिलानेसे, अथवा, दोनोंको रातभर ठंढे पानीमें भिगो प्रातःकाल मल छानके पिलानेसे चारीसे अनिवाला ज्वर छूटताहै (९) ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता, मन्दाग्नि और उदर मिटानेके लिये चिरायतेका फाट पिलाना चाहिये (१०) मदाग्नि वालेको चिरायत का फाट पिलानेसे उसकी पाचन शक्ति बढ़तीहै (११) हल्के क्रियेहुए गंधक के तिजाबकी कुछ बूंद या आधीसे १ रती तक कुनाइनके साथ चिगायतका हिम पिलानेसे ज्वर बहुत शीघ्रतासे छूटताहै । ये दोनों चीजें चिरायतेके हिम या फाट में मिलानेसे इनकी शक्ति बढ़ जातीहै (१२) चिरायतका औंटानेसे इसका गुण कम होजाताहै इस लिये इसको ठंढे पानीमें भिगोक देना चाहिये (१३)

चिरायते और सोंठके कल्कको पुनर्नवाके काथके साथ पिलानेसे सर्वांग शोध  
उतरतीहै- ( १४ ) चिरायतको पीस मधुमे मिला गर्भकर लेप करनेसे कुवड़ापन-  
मिटता है ।

सख्या ( ३७० )

( सं० ) भूर्जपत्र, चमी, बहुलवल्कलः, मृदुत्वक् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मगही	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
भोजपत्र	भोजपत्र	भोजपत्र	भूर्जपत्र	भुजिपत्र	भोजपत्र	भुजपत्रम्
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
भुजपत्र	भुजपत्र			Betula Bhojpattra. ( B Jacquenopli )	The Indian birch tree Indian paper Birch	

स्थान—भोजपत्रके वृक्ष हिमालयमें बहुत ऊंची २-३और पंजाब,  
सिक्कम और भूटानमें होतेहैं ।

पहिचान—यह एक साधारण उंचाईका वृक्ष ५०-६० फुट ऊंचा होताहै ।  
इसकी पेटड खड़ी कुछ मुड़ी हुई और गुलाइमें ६-७ कहीं कहीं १०-१२ फुट  
होतीहै । इसकी शाखें खड़ी और ढालियें लटकती हुई होतीहैं । इसके पत्ते  
कटवां कोरके होतेहैं उनकी बीचकी नसके दोनों ओर रूप होतेहैं । इसके स्त्री  
और पुरुषजातिके पुष्प अलग २ लगतेहैं । श्रावणमें इसके पुराने पत्ते गिर  
जातेहैं, चैत्र वैशाखमें नवीन आजातेहैं ।

प्रयोग—( १ ) यह—चरपरा, कपला और उष्ण, होताहै ( २ ) भूतवाधा  
त्रिदोष, पित्त, रुधिरविकार, कफ, कर्णरोग, मेद और विषको उतारताहै  
( ३ ) भोजपत्रकी छाल वायुके विषैल कीड़ोंको मारतीहै ( ४ ) इसकी छालके  
काथकी पिचकारी देनेसे कानका ब्रण साफ होजाताहै ( ५ ) जहरी घावाका  
शुद्ध करनेके लिये इसकी छालके काथसे धोतेहैं ( ६ ) इसकी छालका हिम या  
फ्राट पिलानेसे पेटका अफारा मिटताहै ( ७ ) स्त्रियोंका आवेशका रोग मिटा-  
नेके लिये इसका प्रयोग करतेहैं ।

संख्या ( ३७१ )

( सं० ) भूस्तृणं, रोहिणः, गुच्छालः, मात्स्यतृणः ।

मारवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सुगंधितघास विशेष	सुगंधरोहिण	सुगंधरोम	सुगंधरोहिंस	गंवतृण	गाधीघास	गुडुगुगडि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	सारवाहिन हुल्क			<i>Audropogon citratus</i> <i>A. schoenanthu</i>	The Lemon grass	

स्थान— यह घास हिन्दुस्थानमें कई ठौर होता है ।

पहिचान— कहीं इसके पुष्प लगते हैं और कहीं नहीं लगते हैं ।

इसमेंसे एक प्रकार का तेल निकलता है । उसमें जब तक दूसरा तेल नहीं मिलाया जावे, तब तक वह तेल पारदर्शक रहता है । इस तेलका स्वाद चरका होता है और उसमें नींबू जैसी सुगन्ध होती है ।

प्रयोग— ( १ ) स्तृण— कड़वा, चरफरा, उत्तेजक, उष्ण, रोचक, दीपन, विदाही, रुक्ष और लघु है ( २ ) थोड़े ज्वर में इसके पत्तोंका फाट पिलानेसे पसीने-डोंकर ज्वर उतर जाता है ( ३ ) इसके पत्तोंका ओटाके बफारा देनसे पसीना-डोंके ज्वर उतर जाता है इस कामके लिये- इसमें पोदीना मिलाया करते हैं ( ४ ) इसका चासके जैसे दूधमें या जलमें ओटाके पिलानेसे शरीरका आलस्य मिटता है, अर्थात् शरीर चैतन्य होजाता है ( ५ ) इसके काथकी भाफ को सुगते-रहनेसे-या पेटमें पीनेसे पनीना होता है ( ६ ) इसकी जड़ और कोमल पत्तोंको काली मिर्चके साथ पीसके पिलानेमें मासिक रूप में ठाक समय पर होना लगजाता है और मासिकधर्मके रजके जमावको मिटाने के लिये भी यहहा प्रयोग करना चाहिये ( ७ ) इसके तेलकी कुछ रुई सोंफके अर्कमें डालके पिलानेसे आफरकी शूल मिटती है ( ८ ) इसके तेलका मर्दन करनेमें पुरानी गठियाँ आदि वायुकी पीड़ा मिटती है ( ९ ) इसका तेल अतड़ियाकी वायुको निकालके उनको बलवान कर देता है ( १० ) इसका काथ पिलानेसे वमन और विरचन बन्ध हो जाता है ( ११ ) इसके तेलकी कुछ रुई राठके काथकी

साथ पिलानसे अंतर्द्वियोंकी। एदन मिटतीहै। ( १२ ) इसका तेल स्निग्धम-  
 लेपांम पड़ताहै ( १३ ) बच्चेके पेटकी पीड़ा मिटानेके लिये इसका काथ पि-  
 लातेहै ( १४ ) दादपू इसके तेलका मर्दन करतेहै ( १५ ) इसके तेलसे "अ-  
 इडो फार्मकी" दुग्धवमट जातीहै ( १६ ) हमके गालोंका फांट पिलानेसे प्रति-  
 श्याय मिटताहै ( १७ ) इसके तेलका कुछ घूँदें सांफके और पोदीनेके अर्कके  
 साथ पिलानेसे विमूचिका मिटतीहै ( १८ ) इसको सिरकेकी सिकंजी के  
 साथ पिलानेसे अनीणसे पैदा हुई दाह मिटतीहै ( १९ ) पसीना करानेके लिये  
 इसके पत्तोंको दूधमें छोटाके पिलाना चाहिये ( २० ) कमरकी पीड़ा मिटाने-  
 के लिये इसके तेलका मर्दन बहुत देर तक करना चाहिये ( २१ ) कबूठे दूधमें  
 इसकी घूँदें डालके पिलानेसे पाकस्थलीकी दाह मिटतीहै ( २२ ) इसके एक  
 तोले पत्तोंको २॥ पाव छोटे छोटे पानीमें चारों पहर भिगो ज्वरवाले बहुधा  
 निर्मल मनुष्य को इसमें से २॥ से ५ तोले तक पिलानेसे पसीना आता है  
 ( २३ ) मोतीज्वरवाले मनुष्यको भी यही पिलाना चाहिये।

संख्या ( ३७२ )

( सं० ) भृङ्गराजः, मार्कवः, अङ्गारकः, पितृप्रियः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलश्री
जलभांगरो	भागरा भंगरा	भागरोडा	भांभाका	भांभाराज	भांभरा	गुण्टगलगर
द्राचिडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
करशारकानि	गरमदमपु			Wedelia Calendulacea Verbesina, calendulacea	Trilling colpla	

स्थान—जलभंगरेक गुल्म, हिन्दुस्थानमें जलके पास, पासः सबदौर-होतेहै।  
 प्रयोग—( १ ) जलभांगरा—कडु, तिक्त, उष्ण, रुच और तीक्ष्ण है।  
 ( २ ) खांसी, मस्तकपीड़ा, ज्वर, गतिश्याय और त्वचाके रोगोंमें काम आता  
 है ( ३ ) इसके पत्ते जलबद्धक और रक्तशोधक है, मस्तकपीड़ा मिटानेके लिये

इसके रसकी नस्य देना चाहिये (१४) कई औषधियोंका इसके रसकी भावना दी जाती है (१५) बालोंको रंगने और बढ़ानेके लिये इसके पत्तोंका रस लगाते हैं (१६) इसके पत्तोंका रस गुदामें तीन चार घेर मलनेसे पेटके कीड़े मिटते हैं (१७) इसके और धतूरेके पत्तोंके रसमें रुई भिगा उसकी बत्ती बना, झायामे सुखा, उसको मोठे तेलमें जला काजल पाइके वासी पानीके साथ उसको अजन करनेसे नेत्रोंकी पलकोंका रोग मिटता है (१८) इसके स्व ससे तेल सिद्ध करके बालोंमें लगानेसे बाले काले और कोमल रहते हैं (१९) पुष्प नक्षत्रमें इसकी जड़ हाथमें बांधनेसे चातुर्थिकज्वर छूटजाता है (२०) इसके स्वरससे घृत सिद्ध करके पिलानेसे बिगड़े हुए कंठ और स्वर सुधरते हैं (२१) इसके स्वरस और चिरमके कण्कसे सिद्ध किये हुए तेलके मलनेसे कण्डू, दारुण, कुष्ठ और मस्तकपीडा मिटती है (२२) इसकी जड़ और हन्दीका लगातार लेप करनेसे सूकरदंष्ट्रा और विसर्परोग मिटता है (२३) इसका रस और झालीका दूधे बराबर ले मिला उसको सूर्यकी धूपमें रखके उष्ण होनेपर उस की नस्य लेनेसे सूर्यावर्त मिटता है (२४) इसके रससे ब्रणको घानेसे उपदेश मिटता है (२५) एरु महीने तक इसका स्वरस पानसे और उन दिनोंमें केवले बर्षका आहार करनेसे बल, विदिये और आयु बढ़ती है, और रसायनका गुण होता है।

संख्या (१२७३)

( सं० ) केशराजः, महानीलः, नीलपुष्पः, नीलभृङ्गः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मैरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
कालोपल भागरी	भगरा	भागरा	माका	केशुरे		गंटगालिजरु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	गगरहडाम प्य			Elypta. alba E. prosifata.		

स्थान-केशराजके गुल्म हिन्दुस्थानमें बहुत और होते हैं ।



प्रयोग-(१) केशराजका रस पीने और लगानेमें बाल काले होजातेहैं ।  
 ( २ ) इसका रस बच्चोंके कुल्ल, भूरे केशोंपर अथवा सिरको मुड़वा के एक दो  
 बर लगानेसे केश काले हो जातेहैं, इसके रसमें केशोंको काले करनेकी शक्ति  
 है भृङ्गराजके रसमें नहींहै ( ३ ) त्वचाके पुराने रोग मिटानेके लिये इसके रस  
 का मर्दन करना चाहिये ( ४ ) -यकृत और झीठ बढ़ानेपर इसके पत्तोंका रस  
 पिलाना चाहिये ( ५ ) -नये बच्चेका कफ मिटाने के लिये इसके रस की दो  
 बूँदको ८ बूँद मधुमें मिला के चटाना चाहिये-(६) इसके स्वरस में अजवायन  
 आदि चरपरी और द्रावक चीजोंको मिलाके पिलानेसे तिल्ली आदि पेटके य-  
 न्त्रोंके बढ़ावकी रुकावट मिटजातीहै (७) मांस शिगाओंकी, एँठन, मिटाने वाली  
 जो औषधियाँहैं उनमें यह मिलाके दिया जाता है ( ८ ) -इसके ताजे गुन्मके  
 कल्कको तिलके तेलमें छोटा के गजचर्म कुट्टपर लगातेहैं ( ९ ) इसकी जड़का  
 स्वरस पिलानेसे वमन होताहै ( १० ) धीचनके लिये भी इसकी जड़का स्वर-  
 रस पिलातेहैं ( ११ ) -इसकी जड़को घिसके लेप करनेसे नेत्ररोग मिटतेहैं ( १२ )  
 इसका पौनेचार भासे रस पिलानेसे कामला रोग मिटताहै ( १३ ) -ज्वरको छु-  
 दाने के लिये इसका पौनेचार यास रस पिलाना चाहिये ( १४ ) इसकी १  
 तोले भर जड़को पीस थोड़ा नमक मिलाके पिलाने से मूत्रकी दाह मिटतीहै  
 ( १५ ) इसको तेल में पीसके ललाटपर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटतीहै  
 ( १६ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे वादीकी पीड़ा मिटतीहै ( १७ ) इसको  
 पीस गर्म करके लेप करनेसे शोथ उर्धतरतीहै ।

संख्या ( ३७४ ) : नामार्थ ( ८४ )

( सं० ) भृङ्गाहा, भ्रमरा, उग्रगंधा, भृङ्गच्छली ।

भारवाडी	हिंदी	गुजराती	मराहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
	भ्रमरच्छली	भ्रमरछाल्य	भ्रमरसाली			
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	उपशुक्के			Hymenodictyon		
				Excoelium		
				H. thalictroides		

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिम, हिमालयमें गढ़वालसे, नेपालतक, छुटिया नागपुर और मध्य हिन्दुस्थानसे दक्षिण-तक बहुत होतेहैं।

पहिलान—इसका वृक्ष ३०से ५० फुट तक ऊंचा होताहै इसकी पेड़की गुलाई ६से ८ फुट तक होतीहै परन्तु देश-भेदसे अरब और समुक्त प्रदेशमें इसकी ऊंचाई और गुलाई बहुत अधिक होतीहै। इसके पत्ते ६ से १२ इंच लम्बे, डंडीकी और से गोल और दूसरी ओर से कुछ लम्बे होते हैं। इसके कुछ हरे सफेद रंगके और सुगंध युक्त पुष्पोंके गुच्छे लगतेहैं। फातीसे वैशाख या जेठ तक इस वृक्षके सबके सब पत्ते गिरजातेहैं।

फूलने फलने का समय—जेठ अषाढमें इसके पुष्प लगतेहैं आसोजसे पोपतक इसकी डोडिया पकतीहै। इसके पत्ते और छाल रगतके काममें आतेहैं।

प्रयोग—(१) यह चरपरी, उष्ण, कड़वी, रीचक, और अग्निदीपकहै (२) इस वृक्षकी अंतर छाल शोषक, और सिनकोना जैसी कड़वी होती है (३) इसको ओटाके पिलानेसे तेजग छूट जाताहै (४) बारी से आनेवाले दूसरे ज्वरोंको छुड़ाने के लिये इसकी अंतर छालका काथ पिलाना चाहिये। (५) इसके प्रयोगसे त्रिदोष और कंठके रोग मिटतेहैं।

संख्या ( ३७५ )

संख्या ( ३७५ )

( सं० ) भेंडा, चतुष्पुण्ड, करपर्णी, वृत्तवीज ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भिण्डी	भिण्डी	भीडा, भैंडा	रानभैंडी	भेंडा		बेंडकाया
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बेंडे (इ)काय	बेंडेकायि			<i>Abelmoschus</i>	The edible Hibiscus Ochra of West Indies. Excellent Odra.	

स्थान—भिण्डीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं।

प्रयोग—(१) यह ग्राही, उष्ण, पिच्छल, रुचिकारक, वातल, वृष्य, बन्ध,

रसमें खट्टी और पचनेमें भारी है ( २ ) इसका और इसके बीजोंका चेष निकाल उसमें मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्रकी दाह मिटती है ( ३ ) मूत्र और वीर्य सम्बन्धी अगोंकी दाह मिटानके लिये भिण्डी और इसीके बीजोंका शर्वत बहुत उपकारी है ( ४ ) भिण्डी-शीतल पाण्डित्य और स्निग्ध है ( ५ ) यह पित्तकी प्रकृतिवाल मनुष्योंको बहुत गुणकारी है ( ६ ) इस वृत्तका हरेक अंग परन्तु विशेष करके इसका फल उन सब रोगोंमें काम आता है कि जिनमें दाह और तोद अर्थात् सूई चुबने जैसी पीड़ा होती है, जैसे दाह और कण्ठके साथ मूत्रका उतरना और मूत्रकृच्छ्र आदि ( ७ ) भिण्डी या इसके पत्तोंका प्लुष्टिसर्बाग्ने से दाह मिटती है ( ८ ) इसकी जड़में भी बहुत चेष निकलता है ( ९ ) इसकी सूखी जड़के चूर्णमें मिश्री मिलाके देनेसे प्रमेह मिटता है ( १० ) भिण्डीके शाक से अतिसार मिटता है ( ११ ) इसके मूत्रवर्द्धक प्रयोगमें जलधरमें बहुत उपकार होता है ( १२ ) इसकी जड़का पाक बनाके खानसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( १३ ) कच्ची भिण्डीके चूर्णमें मिश्री मिलाकर दूधके साथ फकी लानसे प्रमेह मिटता है ( १४ ) इसका शाक बहुत अच्छा होता है।

संख्या ( - ३७६ - )

( सं० ) मकायः, (महाकायः, शिखालुः, काटिजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मकी, मक्या	मका, भुट्टा	मकाई	मका, मका	मिका	मकई	जानिपटलु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		हितहल्मिया	गुडुम मका	Zea Mays	Maize Zea mays Idlah den Indian corn maize	

स्थान—मकी हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर बोई जाती है ।

इसके १०० तौले कच्चे तुकड़ोंको यंत्रमें दवानेसे १३ से १५ तौले तक तेल निकलता है। यह तेल कुछदिन पड़ा रहनेसे निर्मल हो जाता है। इसका स्वाद

फकीका होता है और इसमें सुगंध अच्छी होती है न-यह जन्दी भिगड़ता है और न यह सूखता है इस तेलके साधारण गुण जैतूनके तेलसे मिलते हैं ।

प्रयोग—( १ ) यह-वातल, विष्टभी, रूच, रोचक और पौष्टिक है ( २ ) क्षयरोगमें मक्कीकी रोटी पथ्य है, ( ३ ) इसके खानेसे आंतोंकी निर्बलता-मिटती है ( ४ ) निर्बल मनुष्य और बच्चोंके लिये मक्कीके आटेका भोजन गुणकारी है ( ५ ) तुक्याकी राखमें नमक मिलाके फकी देनेसे कुत्ताधासी और जुखाम की खांसी मिटती है ( ६ ) इसकी पांच पांच रतीकी मात्रा दिनमें दो तीन बेर देना चाहिये ( ७ ) मक्याके वालोंका काथ, हिम या फांट पिलानेसे मूत्राशयके रोग और मूत्रमार्गकी दाढ़ मिटजाती है और मूत्र अधिक आने लगता है ( ८ ) मक्कीके आटेका पुल्टिस बनाके वांधते है ( ९ ) मूत्राशयकी पथरी गलानेके लिये तुकेकी भस्मका द्रवद्वार निकालके पिलाते हैं ( १० ) इसके आटेका लपटा बनाके रोगीको पिलाना चाहिये यह लपटा बड़ा रोचक होता है परन्तु प्रकृति मानेतो पिलाना चाहिये ( ११ ) कच्चेभुटे सेरुके खानेसे किसी २ को तीक्ष्ण निरेच लगजाता है ( १२ ) मक्कीका तेल शरीरको पुष्ट करता है ( १३ ) उच्चम मक्की खानेसे शरीर पुष्ट होता है परन्तु जिसको मक्की नहीं मानती है उसको लगातार खिलानेसे संभव है कि अतिसार होजाता है । इसके परमल या सेके हुए फूले रोगीको कभी नहीं खिलाना चाहिये । पश्चिमोत्तर देश, पंजाब, अवध और राजपूताने आदि कई देशोंमें मक्की खानेका बड़ा चलन है । हिन्दुस्थानके कई देशोंमें मक्कीके आटेकी रोटी बनाके खाते हैं । कई देशोंमें इसकी घाट ( दलिया ) बनाते हैं । कहीं गीले मक्केको सेरुके या उबालके खाते हैं । कहीं पकी हुई मक्कीको सेरुके-दुपहरिया करते हैं । मक्कीका सच्चू बनाया जाता है-मक्कीकी कढ़ीसे शक्कर निकाली जासकती है परन्तु उसके दाने नहीं पड़ते हैं ।

संख्या ( ३७७ )

( ३० ) सकुष्ठः, वनमुद्गः, कृमीलकः, अमृतः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोठ	गोठ	मठ	गठ, मटक्या	वनमुग	गोठ	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
				<i>Phaseolus acutifolius</i> <i>Dolichos dissectus</i>	The azuki's leaves & kidney bean

स्थान—मोठ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहैं ।

प्रयोग—(१) मोठ कपेले, मधुर, रोचक, पचनेमें लघु, ग्राही और शीतल होतेहैं । रक्तपित्त, ज्वर, दाह, वमन, कफ, रुधिरविकार, अर्श और गुल्मको मिटातेहैं और वादीको पैदा करतेहैं (२) मदाग्निमें इनकी दाल पथ्यहै (३) यह ज्वरमें भी पथ्यकी रीति पर दी जातीहै (४) इनकी जड़ मादक और विपैलहै (५) इनकी दाल बनाके खानेसे आध्मान होना बन्ध होजाताहै (६) इनकी दालके कई प्रकारके भोजनके पदार्थ बनाये जातेहैं (७) इनको सेकके भोजनके काममें लातेहैं ।

संख्या ( ३७८ )

(सं०) मज्जफलं, मायिफलं, मायिका, छिद्राफलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
माजूफल	माजूफल	माया	मायफल	माजूफल	माजूफल	माचकाया
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
मासिकाय	मायूफला	अफस	माजू	<i>Quercus infectoria.</i>	The gall or dyer's oak The gall nut	

स्थान—माजूफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं । ये ग्रीस, एशिया माइनर और सिरिया आदि देशोंसे हिन्दुस्थानमें आतेहैं ।

प्रयोग—(१) माजूफल—बहुत ग्राही, चरपरा, उष्ण, शीतल, रुक्ष, कपेला, लघु, दीपन और विपाकमें कटुहै (२) यह वनस्पतिके चारोंके विपाकी रोकनेके लिये या उतारनेके लिये बहुत अच्छाहै (३) रुधिर को रोकने के लिये माजूफल या माजूफल और आहिफेनका मरहम बहुत अच्छाहै (४) मसूड़ों को दृढ़ करनेके लिये माजूफलका मंजन बहुत अच्छाहै (५) बल बढ़ानेवाली

औषधियोंमें मांजूफल मिलाया जाता है (६) बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेकेलिये मांजूफलका प्रयोग किया जाता है (७) अतिसार और आमालिसार मिटानेके लिये मांजूफलका प्रयोग बहुत अच्छा है (८) मांजूफलके चूर्णको थोड़े पानीमें भिगोके स्तनकी बीटलीके घावपर लगाते है (९) इसका मरहम बादीके अर्श पर लगाया जाता है (१०) श्वेतपदर और मूत्रकृच्छ्रम मांजूफलका प्रयोग बहुत उपकारी है (११) मांजूफल और अन्तारके छिलकेको पीसके घुरकानेसे कांचका निकलना बन्ध होता है (१२) इसको सिरकेमें घिस अंगुलिके लगा उससे बच्चेके लटके हुए कागको उठाते है (१३) इसको कूट सिरकेमें ओटा, छान कानमें टपकाने से कानका बहना बन्ध होता है (१४) मांजूफल पीसके नाकमें फूकनेसे नक सीर बन्ध होती है (१५) एक कच्चा और एक जलाहुआ मांजूफल और एक कच्ची और एक जली हुई सुपारीको पीस छानके मजन करनेसे दांत और मसूड़े दृढ हो जाते है (१६) मांजूफल और सुपारी ओटाके कुत्रे करने से दांतों से रुधिरका निकलना बन्ध होजाता है (१७) मांजूफल और सुपारीको पीसके दन्तमज्जन करनेसे दांत दृढ होते है और उनसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाता है (१८) मांजूफल और आसगन्धको पानीके साथ पीस, गर्मकर लेप करनेसे अंडवृद्धि मिटती है (१९) मांजूफलकी भस्मको घावमें घुरकानेसे उसमेंसे रुधिर का निकलना बन्ध होजाता है ।

संख्या ( ३७६ )

( सं० ) मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मजीठ	मजीठ	गजीठ	मंजिष्ठ	मंजिष्ठा	मंजिठ	मजिष्ठि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
मंजिष्ठा	मजिष्ठ (1)	फुव्याह	रोदक, रूनास	Rhubia cordifolia. R. nujjata.		The Indian Madder- Madder root. Rongal madder

स्थान—मजीठ हिन्दुस्थानके पहाड़ी भागोंमें सब ठौर होती है ।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होती है ।  
 प्रयोग—मजीठ—मधुर, चरपरी, कपेली, गुरु, उष्ण, कड़वी, और लघु है ( १ ) यह पेटके तिल्ली आदि यंत्रोंके वहावकी रुकावटको मिटाती है ( २ ) मूत्राघात और मासिकधर्मकी रुकावटको मिटानेके लिये मजीठको प्रयोग करना चाहिये ( ३ ) मजीठका फल हृदयकी रुकावटको मिटाता है ( ४ ) मजीठको पीस मधुमें मिलाकर लगानेसे त्वचाके पीले और दूसरी प्रकार के दाग मिटते हैं ( ५ ) मजीठका पंचांग विषनाशक है ( ६ ) मजीठको गलेमें बांधनेसे या घरकी छतमें लटकानेसे नजर नहीं लगती है ( ७ ) यह ग्रांही है ( ८ ) इसका लेप करनेसे पित्तशोथ मिटती है ( ९ ) त्वचा के रोग और घावोंको मिटानेके लिये इसके प्रयोग किये जाते हैं ( १० ) मजीठ और मुंलहठी को चावलोंकी झीलोंकी काजीमें पीसके लेप करनेसे आस्थिभंगकी शोथ और दाह मिटती है ( ११ ) वचा होनेके पीछे गर्भाशयमें जो दुष्ट रुधिरादिक रह जाते हैं उनको निकालनेके लिये मजीठका काय पिलाना चाहिये ( १२ ) मजीठको मस्तकपर बांधनेसे नजलेकी मस्तकपीडा मिटती है ( १३ ) इसको पीसके मजन करनेसे दंतपीडा मिटती है ( १४ ) इसके एक तोले चूर्णकी फकी देनेसे मासिकधर्मकी रुकावट मिट जाती है ( १५ ) मजीठ और मधुके को खटाईके साथ पीसके लेप करनेसे टूटी हुई हड्डी जुड जाती है ( १६ ) मधु के साथ इसका लेप करनेसे व्यंग रोग मिटता है ।

संख्या ( ३८० )

( सं० ) आच्छुकः, अच्छुकः, आच्छुकः, रुजनद्रुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आल	आल	आल	आल	आचफुलेर- गाछ	कहू	
द्राविडी	कर्नाटकी	थरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Morinda citrifolia M. Tinctoria	The Indian Mulberry The Togat wood of Madras	

स्थान—आलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जाते हैं अर्थात् सतलज से पूर्वकी ओर और दक्षिणकी ओर सीलोन तक होते हैं। इसकी लकड़ी, छाल, जड़, और जड़की छालमेंसे लाल रंग निकाला जाता है।  
 प्रयोग—(१) आलका फल—तिल्ली आदि व्यत्रोंके बहावकी रुकावट और मासिकधर्मकी रुकावटको मिटाता है (२) इसके पत्तोंका लेप करनेसे ज्वर और चांदी मिटती है (३) पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है (४) मूत्रबेदानेके लिये इसके पत्तोंका काथ पिलाना चाहिये (५) इसकी जड़का काथ पिलानेसे विरेचन लगता है (६) इसके पत्तोंके कोयलोंको थोड़ा ज्वान उसपर राई बुराके पिलानेसे बच्चोंका अतिसार मिटता है (७) मसूड़ोंको दृढ करनेके लिये इसके कच्चे फलके कोयले और नमक पीसके मंजन करना चाहिये (८) अतिसार मिटानेवाली औषधियोंके साथ इसके पत्तोंको थोड़ाके पिलानेसे अतिसार मिटता है (९) इसका कच्चा फल शाकके काममें और पका फल खानेके काममें आता है धाचमें इसका चूर्ण भरदेनेसे उसमेंसे रुधिर का निकलना बन्ध होजाता है।

संख्या (३८१)

(सं०) मदनः, शल्यकः, राठः, करघाटः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुड़ी
मैणफल मांडक	मैतफल	मडिळ	गेळ, गेळा	मयनाफल	मैतफल रांडा	मंगचट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	मंगारेगिड	जोनमलकै		Randia dumetorum Pasoqueria d	Dasy gardeni	

स्थान—मैतफलके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होते हैं।

पहिचान—इसके वृक्ष १५-२० फुट ऊंचे होते हैं। इसकी सीधी पेदड़की गुलाई २-४ फुटकी होती है। इसके बहुतसी पतली २ शाखें लगती हैं इसकी



छाल आध इंच मोटी कुछ भूरे श्वेत रंगकी खरदरी, सफेद छिंदेदार, और स-  
लपड़ी हुई होती है, यह कभी २ घूरी सफेद हो जाती है। देशभेदसे इसका  
आकार और प्रकृति बहुत बदल जाती है। इसके इंच अथवा डेढ़ इंच लम्बे कठोर  
कांटे लगते हैं, इसके पत्ते नॉकदार और दोनों ओर से खरदरे होते हैं, उनपर  
छोटे कठोर रूए होते हैं। कुछ हरे पीले या प्रायः श्वेत रंगके सुगंधवाले, इकल्ले  
या दो तीन पुष्प एक-दूसरे लगते हैं। इसका एक या डेढ़ इंच लम्बा फल  
ऊपरसे साफ होता है और मकनेपर पीला पड़ जाता है। इसके फल की गिरके  
बीचमें दो खाने होते हैं, उनमें बीज रहते हैं।

प्रयोग— ( १ ) मैनफल-चरपरा, उष्ण, कड़वा, वामक भेदी, लेखन  
लघु, रूक्ष, मयुर, शीतल, कषेला, और उष्ण वीर्य है। ( २ ) ज्वरमें जो हड-  
फूटन होती है उसको मिटानेकेलिये मैनफलके वृक्षकी छाल की फकी देनी  
चाहिये और इसका लेपभी करना चाहिये ( ३ ) इसको गोवरमें मिलाके  
लेप करनेसे चोटकी पीड़ा मिटती है ( ४ ) इसको मधु में मिलाके चटानेसे  
अतिसार और आम्रातिसार मिटता है ( ५ ) इसके फलकी छाल वामक नहीं है  
केवल थोड़ासा हृत्लास पैदा करती है ( ६ ) २ या ३ मैनफलकी गिर और  
बीजोंको थोड़ेसे पानीमें दस पन्द्रह मिनट पीस आठ या दस तोले जल में  
छानके पिलादेना चाहिये, पिलानेके पीछे प्रायः १० मिनटमें हृत्लास और वमन हो-  
ने लगेंगे, उष्णजलके पिलानेसे वमनकी संख्या बढ़ेगी। इससे अवश्य और निरुप-  
द्रव वमन होती है ( ७ ) इसकी गिरकी थोड़ी मात्रा देनेसे हृत्लास होता है ( ८ ) सूखी-  
खांसीमें कफ पैदा करनेकेलिये इसकी थोड़ीसी गिर देनी चाहिये ( ९ ) ज्वर  
का बेग निर्वल होनेके पीछे इसकी थोड़ीसी गिरकी फकी देनेसे पसीना होने  
ज्वर उतर जाता है ( १० ) इसकी गिरमें कुछ अफीम मिलाके देनेसे अतिसार  
और आम्रातिसार मिटता है ( ११ ) प्रयोगके लिये इसका चूर्ण बनानेकी यह  
रीति है कि मैनफलके छिलके को दूरकर गिर और बीजोंको थोड़े पीस मोटे  
कपड़ेमें या साधारण चलनीसे छान लेना चाहिये जिससे इसके बीजोंके छिल-  
के अलग निकल जायें, फिर उस चूर्णको बहुत महीन पीसके महीन कपड़ेसे  
छान, काकदार, शीशीमें भरदेना चाहिये वमन करानेके लिये इस चूर्णकी ७।  
रतीसे २।। मासे तककी मात्रा देनी चाहिये ( १२ ) आम्रातिसार मिटानेके

लिये ७॥ रती से १५ रती तक देनी चाहिये, (१३) हृत्सास, कफ और पसीना पैदा करनेके लिये २॥ से ५ रती तक देनी चाहिये (१४) कीड़े मारनेके लिये और गर्भाशयमें से छोड़-निकालनेके लिये इसकी गिरका प्रयोग किया जाता है (१५-) बच्चोंके दांत आनेके समयमें अकस्मात् कोई रोग अथवा ज्वर हो जाताहै उसको-मिटानेके लिये इसके मोटे चूर्णको जीभ और तालुपर लगादेना चाहिये (-१६-) गठियाकी शोथपर इसका लेप करनेसे शोथ, बिखर जातीहै (-१७-) पीपवाले फोड़ेपर मैनफल और, रेवतचीनीका लेप करनेसे जल्दी पकके फूट जातेहै (१८) मुखद्रुपिका और त्वचाके दूसरे रोगोंमें, इसका लेप बहुत उपकारीहै (१९) चावलोंके जलमें इसको पीसके, नाभिपर लेप करनेसे शूल मिटतीहै (२०) मैनफलके चौथाई टुकडेको एक बडी इलायची के दानोंके साथ नागरवेलके पानमें रखके वारीके दिन खिलानेसे तेजरा छूट जाताहै (२१) इसको गायके दूधमें घिसके नस्य लेनेसे आधाशीशी मिटतीहै (२२) इसको कुटकीके साथ या, काजीके साथ पीस नाभिपर लेप करनेसे शूल मिटती है ।

संख्या ( ३८२ )

( सं० ) मधु, माक्षिकं, सारधं, चौद्रम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सहत	मधु, सहत	मध	मध	मधु, गउ	शहत, मधु	तेन ।
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
तेन	जेनुतुप्प		शहद		Honey	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें प्रायः सबठौर होतीहै ।

मधुको मनुष्य बहुधा खानेके काममें लातेहै परन्तु किसी २ देश की मधु में विष होताहै उसका कारण यहहै कि जहां विषके वृक्ष बहुत होतेहैं उनके पुष्पोंमेंसे जो मधु मक्खियाँ मधु एकत्र करतीहैं उसमें बहुधा विष होताहै ।

प्रयोग—(१०) मधु शीतल, कपली, मधुर, लघु, दीपन, लेखन, शो-  
 धन, हृद्य और बलकारक है (२) नवीनमधु पौष्टिक, और सारक होती है  
 (३) यह एक वर्ष पीछे ग्राही हो जाती है और पुरानी कहलाती है (४)  
 सीछण पदार्थों की चरपराहट कम करनेके लिये उनमें मधु मिलाई जाती है  
 (५) मधुका लेप करनेसे क्षतदिक शुद्ध हो जाती है (६) कास मिटानेके लिये  
 इसका प्रयोग बहुत किया जाता है (७) गंडुपकी औषधियोंमें यह बहुधा  
 मिलाई जाती है (८) यह विपैल वायुका असर नहीं होने देती है (९) फलों  
 को इसमें डाल रखनेसे वे बहुत समय तक नहीं विगड़ते हैं (१०) बकरी के  
 कच्चे दूधमें आठवां भाग मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाता है जिन दिनों  
 में यह प्रयोग किया जावे उन दिनोंमें उस रोगीको साधर ज्ञान और लाल  
 भिरचके बदलेमें संधानमक और काली भिरच, दाल रोटीमें देना चाहिये ॥  
 इसको पाँच भेर दूधसे प्रारम्भ करके जो वह पचासके तो नित्य छटाक २  
 दूध और उसी प्रमाणसे मधु बढ़ाते हुए दो सेर तक बढ़ा देवे, (११) स्थूल  
 मनुष्यको कृश करनेके लिये उष्ण जलमें अष्टमाश मधु मिलाके पिलाना चाहिये  
 अथवा जो औषधिया कृश करनेवाली है उनके चूर्णकी फकी देके यह पिला  
 दिया करे (१२) ताजे कच्चे दूधमें मधु मिलाके पिलानेसे किसी २ को विरे-  
 चनके दो तीन अच्छे ज्वेग लग जाते हैं (१३) मधुके साथ मोरपंख के चंदवे  
 की या उसके तन्तुओंकी भस्म चटानेसे हिचकी वन्य होती है (१४) मधुको  
 खाने और लगानेसे विच्छका विष उतरता है (१५) गिलोयके ठड़े किये हुए  
 काथमें मधु मिलाके पिलानेसे वन्य वन्य होती है (१६) इसको पलासके बीजों  
 के स्वरसमें मिलाके पिलानेसे कृमिरोग मिटता है (१७) निंब, एरंड और  
 घतूरेके पत्तोंके अलग २ रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे कीड़े मरते हैं (१८)  
 इसको कांदेके रसमें मिलाके अंजन करनेसे नेत्रपीडा मिटती है (१९) इसके  
 खाने और मलनेसे भिडका विष उतरता है (२०) २ तोले मधुमें दुगुना पानी  
 मिला छोटाकर पिलानेसे जलोदर मिट जाता है (२१) मधुको बत्तीपर लगाके  
 गर्भाशयके मुँह तक पहुँचानेसे गर्भाशयका मलानिकल जाता है (२२) मधु  
 को नमक और सिरकेमें मिलाके मलनेसे भाई दूर होती है (२३) मधु और  
 जल मिलाकर पिलानेसे ज्वरसे पैदा हुई तृषा मिटती है (२४) इसको सुघाने

से तृपा मिटती है ( २५ ) इसमें 'गायका' घी मिला अजन करनेसे शिरोत्पात रोग मिटता है ।

संख्या ( ३८३ )

( सं० ) मधूच्छिष्ट, सिकथकं, मयनं, मधुशपम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मोम, मेण	मोम	मीण	मेण	मम्, मोम	मोम, सिस्था	मैनमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
मळहि, मेळहु	न्याण, मेणा	शमै	मोम	Cera alba. Cera plumba	White wax Yellow wax	

स्थान — मोम हिन्दुस्थानमें सब ठौर पैदा होता है पीले और सफेदके भेद से यह दो प्रकारका होता है ।

इसको मधुके छत्तेमेंसे निकालनेकी यह रीति है कि छत्तेमेंसे मधु निचो-  
दनेके पीछे उस छत्तेको ओढ़ते हुए जलमें डाल देनेसे मोम पिघल कर जलके  
ऊपर तैरने लग जाता है और उसमें जो कोई दूसरा पदार्थ मिला हुआ होता है  
वह नीचे बैठ जाता है फिर उस पानीके पात्रको अग्नि परसे उतारकर रख  
लेवे, जब वह ठंडा हो जाय तब मोमको पानीपरसे इकट्ठा लेवे और जबतक  
वह निर्मल नहीं हो जाय तबतक ऐसे करता रहे, जो उस ओढ़ते हुए पानी  
में थोड़ा शोरका तिजाव डाल दिया जाय तो मोम शीघ्रही निर्मल हो जाता  
है, यह मोम पीला होता है ।

मोमको सफेद करनेकी यह रीति है—कि पीले मोमकी घत्तियें बना,  
या पतली चकियें बनाके सूर्यकी धाममें रख देनेसे उनके ऊपरका भाग सफेद  
हो जाता है, फिर उसको मिला टिकडिया बनाके धूपमें रखनेसे उसके ऊपरका  
भाग फिर सफेद हो जाता है, ऐसे बेर बेर करनेसे वह सब मोम सफेद हो  
जाता है ।

प्रयोग—( १ ) मोम—स्निग्ध, मृदु, कटु, पिच्छल, मधुर, और द्रव्य

रोपणहै (२) घाव या कोमल त्वचा पर तीक्ष्ण पदार्थके स्पर्शसे जो चरपराहट होजातीहै वह मांमके लगानेसे अथवा उस पदार्थमें मोम मिलाके लगानेसे नहीं होतीहै (३) अतिसार और आम्रातिसार मिटानेवाली औषधियों में मोम मिला देनेसे उनकी शक्ति बढ जातीहै (४) मर्दनके तेल और लेपकी औषधियोंमें और गुदामें, देनेकी वस्तियोंमें मोम मिलाया जाताहै (५) ५ से १० रतीतक मोम किसी चपदार औषधि में मिलाके खानेके लिये देसकते है (६) स्नायु सम्बन्धी और गठियाकी पीड़ाको मिटाने के लिये मांम के तेलका मर्दन करते है (७) मोम मृदु रेचक है (८) ७ मासे मोममें २ मासे नमक मिला, बत्ती बना, घीसे चुपडकर गुदामें देनेसे दस्त आजाताहै और वायुशूल मिटजाती है, जो यह बत्ती बाहिर निकल आवेतो फिर पीछी गुदा में देदेना चाहिये ।

संख्या ( ३८४ )

( सं० ) मधूकः, मधुस्रवः, गुडपुष्पः, रोध्रपुष्पः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
महुवो	महुआ	महुडो	मोहाचावृत्त	मउलगाळ	महुआ	इप्प, थिप्प
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
इलुप्प	दिप्पेमर			Bassia latifolia	The butler of Mahwa tree	

स्थान—मध्य हिन्दुस्थान, कांगडा, कमाज, अवध, छुटिया नागपुरसे पश्चिमी घाटतक और बंबई अहातेके बहुतसे भागोंमें और विशेष करके गुजरातमें महुवेके वृक्ष बहुत होतेहैं । इसके पेड सूखी पथरीली जमीनमें अच्छे बढतेहैं ।  
 पहिचान—इसके वृक्षकी उंचाई ४०, ६०, फुटकी होतीहै इसकी पेड छोटी और गुलाईमें ६, ७ फुटकी होतीहै । इसके बहुतसी फ़ैलीहुई शाखें होतीहैं । इसकी छाल एक दो इंच मोटी सफेद भूरी या कुछ काले रंगकी होतीहै उसमें बहुतसे सल और दरारें होतीहैं । इसकी अतर छालमेंसे दूध निकलताहै उसका

रंग लाल होता है। इसकी डालियोंके अन्तमें ५-६ इंच लम्बे बहुतसे पुष्प एक ठौर लगते हैं। माघसे चैत्रतक इसके पुराने पत्ते गिरजातक और उनके पीछेही नवीन निकल आते हैं। इसके कच्चे फल हरे होते हैं और पक जानेपर ललाई लिये हुए पीले या नारजी रंगके हो जाते हैं; वे एक से दो इंच तक लम्बे और उनमें एकसे ४ तक बीज निकलते हैं; फलोंमें गिर होती है। पुष्प गिरजानेके पीछे प्रायः तीन महीने तक फल पका करते हैं। इसके सफेद दूधिया गोंद लगता है। इस की छालमें से एक प्रकारका रंग निकाला जाता है।

तेल—( १ ) इसके बीजोंकी गिर निकाल उसको दवाके तेल निकालते हैं वह उखड़ा तेल कहलाता है ( २ ) मध्य हिन्दुस्थानमें, इसकी गिरको पीस छोटा उसको कपड़े की दो तीन तहकी थैली में भरकर दवाके तेल निकाल लेते हैं। यह तेल जलाने और साबुन बनानेके काम में आता है और कभी २ उसको घीमें मिला देते हैं।

प्रयोग—( १ ) महुआ कपेला, कडवा, मधुर, शीतल, पाण्डिक और वीर्यवर्द्धक है ( २ ) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे कफ मिटता है ( ३ ) इसका तेल लगाने और मर्दन करनेसे मन्तककी स्नायु सम्बन्धी पीड़ा और त्वचाके रोग मिटते हैं ( ४ ) इसकी खल चामक है ( ५ ) इसकी खलका लेप करने से फोड़े साफ हो जाते हैं ( ६ ) इसकी मदिरा उष्ण, ग्राही, बलवर्द्धक और भूख लगानेवाली है ( ७ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे बहुतसे रोग मिटते हैं ( ८ ) इनको पीसके मर्दन करनेसे बादीकी पीड़ा मिटती है ( ९ ) इसके हरे फल और कोमल छालका दूध औषधिके काममें आता है ( १० ) इसकी छालका काथ ग्राही और बलवर्द्धक है ( ११ ) इसकी छालको पीस गर्मकर लेप करनेसे गठिया का पीड़ा मिटती है ( १२ ) इस की छाल को पीसकर मर्दन करने से पामा मिटती है ( १३ ) इसकी खलके धुएँसे चूहे और कीड़े मरते हैं ( १४ ) आतों के कीड़ोंके सबसे बच्चोंकी भजाभेजो बहुत खाज चला करती है उसको मिटाने के लिये यह तेल लगाया जाता है ( १५ ) सब शरीरकी निर्धलतासे पैदा हुए नपुंसकपनको मिटानेके लिये इसके २॥ तोले पुष्पोंको पावभर वधमें आटाकर पिलाना चाहिये ( १६ ) इसके सूखे पुष्पोंको आटाके बफारा देनेसे अदृष्टि मिटती है ( १७ ) इसके पुष्पोंको खानेसे शरीरके पसीनेमें एक मुख्य प्रकारकी

गंध पैदा होजातीहै (१८) गायको महुवे खिलानेसे उसके दूधमें महुवेकाभ्राद आताहै (१९) नीचे जातिके लोग इसके पुष्पोंको छोटाके, खाया करतेहै (२०) इसके पुष्पोंको अधिक खानेसे भयानक वमन होने लग जातीहै (२१) इसके फल खानेके काममें आतेहै (२२) इसके पुष्पोंको कच्चे या छोटाके और उनकी मिठाई बनाके खातेहै (२३) इसके पुष्पोंसे खांड बनाई जातीहै (२४) इसकी रसल और बीज खानेके काममें आतेहै (२५) ये उत्तेजक, उष्ण और पौष्टिकहै (२६) इसके रातका अजन करनेसे शुकुरोग मिटताहै (२७) कोल्हूसे निकालेहुए इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे वादीकी पीडा और सर्दीके रोग मिटतेहै (२८) इसके पुष्पोंसे बनायेहुए तेलका मर्दन करनेसे सर्दी और गर्मीकी मस्तकपीडा मिटतीहै (२९) इसके पत्ते और टहनियोंको कूट, रोटी बनाके अडकोप पर बांधनेसे उनकी शोथ उतरतीहै (३०) इसके पत्तोंके तेल लगा तपाके बांधनेसे फोडा मिटताहै (३१) इसके बीजोंकी मींगीकी वृत्ति बनाकर गुदामें देनेसे वायुशूल मिटतीहै (३२) एक बीजकी आधी मींगी और २॥ कालीमिरच पीसके सुंधानेसे मिरगीमें चेत आजाताहै ।

संख्या ( ३८५ )

जलमधकः, मंगल्यः, दीर्घपत्रकः, गौरिकाख्यः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
महुवे का मद	जलमहुवा	जलमहुडो	जेनमो- हाचावृक्ष	जलमौल		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Bassia longifolia.	The Mawa or Mahva tree	

स्थान-इस महुवेके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन और कनागामें होतेहै । इसके एक प्रकारका गोंद, लगताहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै वह आधा जमाहुआ और पिल रंगका होताहै । यह तेल जलाने और साबुन बनानेके काममें आताहै और जन्दी विगड जाताहै ।

प्रयोग—( १ )—जलमहुवा, मधुर, वृष्य, शीतल और प्लवर्द्धक है ( २ ) इसके गीजोंकी खल बाल धोनेके काममें आती है ( ३ ) इस महुवेका तेल त्रिचाके रोगोंके काममें आता है ( ४ ) इसके पुष्प हल्के-सारक है ( ५ ) इसके पत्ते, बाल, छालका रस और कोमल फलका आपाधिमें प्रयोग किया जाता है ( ६ ) यह ग्राही है और अंगकी कठोरताको ढीली करता है ( ७ ) इसमें भी उक्तमहुवे जैसे गुण हैं।

संरुगा ( ३२६ )

( सं० ) मनःशिला, कुनटी, मनोगुप्ता, सुरागा ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलंगी
मैणसल	मैनशिल	मणशिल मणशील	मिनशिल	मनछाल	मनुशिल	मणिशिन
द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मनोशिलह	मणिशिल			Arsenicum sulphidum	Realgar Rod orpiment (dited arsenic) Disulphide of *	

\* arsenic, native sulphuret of arsenic

स्थान—मैनशिल हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमें से निकलती है।

पहिचान—मैनशिल तीन प्रकारकी होती है ( १ ) श्यामांगी ( २ ) करवीरका

और ( ३ ) द्विखंडा, इनमें करवीरका सबसे उत्तम होती है।

इसको शुद्ध करनेकी रीति—( १ ) इसके छोटे २ टुकड़े कर, पोटलीमें बांध, हल्दीके काथमें दोलायंत्रकी भांति एक प्रहरतक प्रदाग्निसे ओटाना चाहिये। ( २ ) पूर्वोक्त रीतिसे बकरीके मूत्रमें तीन दिन तक पचाना चाहिये। ( ३ ) जलभंगरे और अगतियेके काथमें उसी रीतिसे एक प्रहर तक पचाना चाहिये। ( ४ ) अगतियेके पत्तोंके स्परसकी और अदरखके स्वेगसकी अलग २७ घेर भावना देनेसे शुद्ध होजाता है।

प्रयोग और गुण—( १ ) शुद्ध मैनसिल—पचनेमें भारी, सारक, उष्ण, लेखन, चरपरी, कडवी और भिन्ध होती है ( २ ) विष, स्वास, कांस, भूतबाधा और स्थिरनिकारको मिटाती है, और शरीरके रंगको सुधारती है ( ३ )



इसको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे दाद और खुजली मिटती है ( ४ ) इसको सरसोंके तेलमें मिलाके लगानेसे जूएं भरती है ( ५ ) इसको घोड़े की लाठमें घिसके अंजन करनेसे तन्द्रा दूर होती है ( ६ ) ३ तोले मैन्सिल को महीन पीस एक सेर गौके घीमें डालके आटावें, जब उसका धुआं निकलना बन्ध होजावे, तब एक पात्रमें पानी भरके उसमें डाल दें पानीके ऊपर तैरेहुए घीको उतार त्वचाके रोगोंके काममें लाना चाहिये ( ७ ) अशुद्ध मैन्सिलके सेवनसे मंदाग्नि, निर्बलता, कृमिरोग, बद्धकोष्ठ, मूत्रशर्करा, पथरी और मूत्र-कृच्छ्र होजाता है ।

संख्या ( ३८१ )

॥ ( सं० ) मयूरतुत्थं, वितुन्नकं, शिखित्रीं, मयूरकम् ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
नीलोत्थो	नीलाथोथा	मोरथुथु	मोरचूक	तुते	नीलाथोथा	मै इ)लतुत्तु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मैलतुत्त	मैलतुत्त	तुत्तियाहिन्दी	तुत्तियाहिन्दी	Copri sulphas	Sulphate of copper Copper sulphate-Blue stone. Blue stone Blue vitriol	

इसको शुद्ध करनेकी रीति—विल्ली और कचूरकी बीट समानभाग लें, इन दोनोंके बराबर मोरतूथों और मोरतूथेका १० वां भाग सोहागाले, सबको खरल कर, सरावसंपुटमें कपड मिट्टीसे बन्धकर, थोड़ी अग्निमें जलादेवें । ऐसे तीन आच देकर फिर दही और दूधकी साथ अलग २ आच देनेसे यह शुद्ध होजाता है ।

इसकी भस्म करनेकी रीति—शुद्ध मोरतूथेमें शुद्ध गंधके और शुद्ध टकण मिला, कटहरके रसमें खरल कर, कपड मिट्टीसे सरावसंपुटमें बन्ध कर, कुक्कुटपुटमें दो तीन बेर आच देनेसे बहुत उत्तम भस्म बन जाती है ।

प्रयोग—( १ ) यह बहुत अच्छा वामरुहै । खाने और लगानेके कामआता है ( २ ) पुराने आमातिसार और अतिसारमें मोरतूथेकी १ रतीके सोलवें हिस्सेसे

आठवें हिस्से तककी मात्राहै (३) ताबेके भिन्न पैसोंपर काट आगयो हो उनको इमलीकी खटाईमें घटे दो घटे रखकर पिंभीवालेके शरीरपर मर्दन करना चाहिये (४) नीलेतूथेको छाछमें बुरकाके विष खाये हुए मनुष्यको पिलानेसे वमन होकर उसका विष निकल जाताहै (५) खासी या छातीके दूसरे रोग मिटानेके लिये ताबेकी चद्दरके एक २ इंचके सम चौरस टुकड़े कटवाके उस रोगीकी छाती और पीठपर उन टुकड़ोंको जमाके बाध देतेहै (६) विगडे हुए फोड़ों पर ताबेके बरक लगा देतेहैं और उनको कई दिनों तक लगे रहनेके लिये उनपर पट्टी बांध देतेहै (७) नीलातूथा-संकोचक, रेचक और दाहकहै (८) यह नेत्र और त्वचाके रोगोंमें उपकारीहै और विष उतारताहै (९) शुद्ध करनेकी रीति-नीलेतूथेको घी और मधुमें खरल कर भूसभ डालके अचदेना चाहिये, फिर उसको दही के तोड़में २ दिन तक भिगो सुखाके खानेके लिये प्रमाणसे दिया जावेतो वमन नहीं होतीहै (१०) इसकी आधी रतीसे एक रती तक मात्रा दी जातीहै (११) इसकी अधिक मात्रा देनेसे तीव्र विष का काम देताहै (११) अफीम, धतूरा, कुचला, सिंगीमोहरा, सोमल और दूसरी चीजोंके विषको उतारनेके लिये नीलेतूथेकी २॥ रतीकी मात्रा निवाये जलसे देनी चाहिये जो इससे आध घंटेमें असर न हो तो उतनीही मात्रा फिर देनी चाहिये (१२) ७ मासे नीलातूथा और १० मासे त्रिफलेकी जो कूट कर रातभर पानीमें, भिगो प्रातःकाल उस जलकी पिचकारी देनेसे मूत्रकृच्छ मिटताहै (१३) इसको महीन पीसके घावपर बुरकानेसे रुधिरका निकलना बन्ध हो जाताहै (१४) इसके गुण—यह चरपरा, सलोना कपला, विशद, लघु, लेखन और भेदीहै, और नेत्रोंको हितकारीहै (१५) कृमि, कंडू और विषको मिटाताहै (१६) २ रती तृतीया और १ मासे कमलगट्टे पीसके निवाये जलके साथ पिलानेसे वमन होकर विष उतर जाताहै (१७) इसका जल नेत्रमें डालनेसे—शुक्र रोग—मिटताहै (१८) इसको अग्निपर चढाके लोहेके दस्तेसे महीन घोट फिर उतारके दांतों पर मलनेसे दंतपीडा मिटतीहै।

संख्या—(३८८)

( सं० ) मयूरशिखा, सहस्रा, शिखिनी, वहिचूडा।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
मोरशिखा	मोरशिखा	मोरशिखा	मोराचीशेडी	लाकमो- रगफुल	मोरशिखा	मयूरशिखि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
			हनक	<i>Celastrus cristata</i>		

स्थान—मोरशिखा-बंगाल हिन्दुस्थानके उत्तरके भाग और राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें सब ठौर पैदा होती है।

प्रयोग—(१) यह लघु, शीतल, कपेली और रस और विपाकमें खट्टी होती है (२) इसके पुष्प ग्राही है (३) इनका काथ पिलानेसे अतिसार मिटता है (४) इनका शर्वत पिलानेसे मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिरका निकलना बन्द हो जाता है (५) इसके बीज चरपराहट मिटानेवाले हैं (६) इसके बीजोंको घोट छानके पीनेसे मूतनेके समयकी पीड़ा मिटती है (७) उनके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे खांसी मिटती है (८) सौंफके अर्कके साथ इसके उनकी फकी देनेसे आमातिसार मिटता है (९) इसकी जड़को चांचलोंके धोवनके साथ पीने और उन दिनोंमें केवल दूध पीते रहनेसे पथरी गल जाती है।

संख्या (३२६)

( सं० ) मारिचं, श्यामं, यवनेष्टं, शिरोवृत्तम्, ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कालीमिरच	कालीमिरच	मरि (री)	मिर	गोलमिरच	कालीमिरच	मिरियालु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंगरेजी
मोळ्ह	मियासु	फिलफिल अस्वद	पिलापिलेगिर्द	<i>Capitum avinum</i> C frutescens - C minimum		

स्थान—सरकारके जंगलोंमें काली मिरचकी बेलें अपने आप उगती हैं और दक्षिण हिन्दुस्थानके उष्ण और आद्र भागोंमें काली मिरचकी बेलें बोई जाती हैं।

कालीमिरचोंको पूरी पके पहिले ही तोडके सुखा देतेहै ये पूरी पक जा नेसे इनका चरपराहट कम होजाताहै जब इनका रंग हरेसे लाल होने लगे तब जान लेना चाहिये कि अब ये तोडनेके लायक होगईहै, तब इनको तोडके सूर्यकी धूपमें अथवा मदअग्निमें सुखालेतैहै । इन कालीमिरचोंको जलके साथ पत्थर पर रगडनेसे इनका खिलका उतरके सफेद निकल आतीहै तब इनको सफेद मिरचे कहतेहै, सफेद मिरच कोई दूसरी चीज नहींहै ।

प्रयोग—(१) यह चरपरी, तीक्ष्ण, दीपन, पित्तकारक, उष्ण, रूक्ष और पेटकी पीडा मिटानेवालीहै ( २ ) विषमज्वर, अर्श और मन्दाग्निमें काम आतीहै ( ३ ) मस्तकमें किसी ठाँके वाल उडजातेहै तो उस ठौरपर कालीमिरचका लेप करतैहै ( ४ ) कालीमिरचका लेप करनेमे गांठ बिखरजातीहै ( ५ ) पेटके यंत्रोंके बहावकी रुकावट मिटानेकेलिये कालीमिरचकी फकी देते है ( ६ ) जहर उतारनेकेलिये कालीमिरचके चूर्णको घीमें मिलाके पिलाना चाहिये ( ७ ) स्नायुजालकी निर्धलता मिटानेकेलिये कालीमिरचका प्रयोग करतैहै ( ८ ) हाथ पैर या और किसी अंगकी शून्यता मिटानेकेलिये काली मिरचका लेप करतैहै ( ९ ) कालीमिरचके काथसे गहूप ( कुल्ले ) या इसके चूर्णसे दंतमञ्जन करनेसे दातांकी पीडा मिटतीहै ( १० ) कालीमिरच और खीराककडी के बीज जलके साथ पीस आनके पिलानेसे भ्रूणवृद्धि होतीहै ( ११ ) विपैल जीवांके काटनेसे जो मनुष्य मूर्च्छित होगया हो उसको चैतन्य करनेकेलिये कालीमिरचके चूर्णकी नस्य देना अथवा इसके चूर्णको उसके मुहमें बुझाना चाहिये ( १२ ) विमूर्च्छिणमें शरीरकी शिथिलता मिटानेकेलिये कालीमिरचके चूर्णकी फकी देनी चाहिये ( १३ ) ज्वरके पीछेकी निर्धलता, भ्रम, मूर्च्छा और आमाशयकी पीडा ( जो मदाग्नि और आभानमें होजातीहै ) उसको मिटानेकेलिये कालीमिरच बहुत अच्छीहै ( १४ ) दुष्ट वायु आदिसे उत्पन्न ज्वरकी दारीको रोकनेकेलिये और नीचेके अर्द्धांग और गठिया सम्बन्धी रोगोंको मिटानेकेलिये इसका प्रयोग बहुत गुणकारीहै ( १५ ) गलरोगमें गलेकी नशोंकी शिथिलता, अर्श और त्वचाके कई रोग मिटानेकेलिये कालीमिरचका लेप करना चाहिये ( १६ ) कफसे मस्तकके भारीपन को मिटानेके लिये काली मिरचकी नस्य देनी चाहिये ( १७ ) शूल और

विमूचिकामे कालीमिरचका काथ पिलाना चाहिये ( १८ ) २॥ रतीमे १।  
 मामे तक कालीमिरचका चूर्ण उच्चेजकहै, पेटकी शूल मिटताहै और वारीमे  
 आनेवाले पुरारको रोकताहै ( १९ ) साधारण निर्बलताका मिटानेकेलिये  
 और गुट्टाके बाहिर निकलनेको बन्ध करनेके लिये कालीमिरचका प्रयोग बहुत  
 अच्छाहै ( २० ) जब विमूचिकाके वमन-विरेचनादि सब बन्ध होजायें और  
 पेटमें आध्मान हाजावे उस समयमें काली मिरचका अष्टमाश तथा इमसेभी  
 अधिक शप काथ करके पिलाना चाहिये ( २१ ) कालीमिरचका लेप करने  
 से शोथ मिटतीहै ( २२ ) दांतों के मंजन में काली मिरचका मिलाई जाती है  
 ( २३ ) इसको पीसकर घीके साथ मर्दन करनेसे उदर रोग मिटताहै ( २४ )  
 फोडे फुन्सियों पर कालीमिरचका लेप करना चाहिय ( २५ ) अम्लपित्त  
 मिटानेकेलिये कालीमिरचका प्रयोग बहुत अच्छा है ( २६ ) मन्दाग्नि में  
 आध्मानको मिटानेके लिये हींग, कालीमिरच और कपूरकी गोली बनाके  
 देना चाहिये ( २७ ) इसको घीमें घिसके नाकमें टपकानेसे आवाशीशी मि-  
 टतीहै ( २८ ) कालीमिरचको घोड़ेकी लाळेमें घिसकर अंजन करनेसे अधिक  
 निद्राका आना बन्धहोताहै ( २९ ) इनको भूकमें घिसके आंजनेसे नेत्रपीडा  
 मिटतीहै ( ३० ) २१ कालीमिरच और २० नीमके पत्तोंको महीन नख्खमें पीटली  
 वाय आधसेर पानीमें ओटा ६ तोले रखके दोनां समय पिलानेमें जर हट  
 जानाहै ( ३१ ) इमके चूर्णको गुड और दहीके साथ पिलानेसे पीनस रोग  
 मिटताहै । परन्तु इमके खानेके समय घी युक्त गंदकी रोटीका पथ्य देना और  
 रात्रिको सोते समय ठंडा पानी पिलाना हितकारीहै ( ३२ ) ७। कालीमिरच  
 थोड़े पानीसे निगलानेमें प्रतिश्याय मिटताहै ( ३३ ) १२ काली मिरच और  
 शिरपके पत्ते घोट ब्रानके पीनेसे उदरपीडा मिटतीहै ( ३४ ) इसके चूर्णको  
 मधु और शक्कर के साथ चाटनेसे खास, कास और कफ मिटताहै ( ३५ )  
 दहीके तोडेमें काली मिरचको घिसके अंजन करनेसे गताधा मिटताहै ( ३६ )  
 भागेके रस अथवा चावलके पानीकी साथ इनको पीसके लेप करनेसे आवा  
 शीशी मिटतीहै ।

संख्या (२३६०)

( ३० ) रक्तमग्निं कटुवीरा, पित्तकारिणी. ज्वालामरिचम् ।

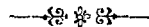
मा-गडी	मिन्नी	गुजगनी	पार्थी	पाना	पत्रावी	नैलडी
लालमिर्च	लालमिर्च	मरची	मिर्ची	नरामग्नि	लालमिर्च	मिरपकाग
द्राविडी	कनौटकी	अग्नी	फार्थी	लडिन	अग्नेजा	
मुलाकाय	मणिशिन कायि	फिलाफिलेअ-पिलापिलमूर्ख हम्भ				

स्थान लाल मिर्च त्रिन्दुस्थानमे सव ठोर वोट जातीहै ।

यह लम्बाई, गुलाई और, रंगके कारणसे सात प्रकारकी होतीहै पहाडपर पेडाहुई मिर्च बहुत चर्परी होताहै ।

— प्रयोग — ( १ ) लाल मिर्च खानेसे विगडी उं प्रायु और जलका असर कम होताहै, ( २ ) यह मिर्च उत्तेजकहै । ३ - इसकी गुडम गावी वनाके देनेसे पेटकीशूल, मिटतीहै ( ४ ) यह आग् वाढामके मोठके साथ इसकी गोली, वनाके देनेसे गयेये आग् ठमान्यान रनेवालोंका प्ररभग मिटताहै ( ५ ) इसके हिम फाट या हाथके कुल्ल करानसे गलके विगडेपुए प्राय ( चाहे वही पुए हों चाहे दूसरे स्थानके सम्बन्धमे हुए हो ) मिट जानेहै ( ६ ) इसकी प्राग् कुननकी गोली वनाके देनसे वागीभ आनवाला ज्वर नष्ट जाताहै ( ७ ) छोटि जोडोकी हल्की सेजिणको यह गोली मिट दतीहै ( ८ ) यह गाली उत्तेजक है ( ९ ) आमाशयकी निविलता मिटानेवाली, जितनी रुडवी, बलवर्द्धक और उत्तेजक चीजहै उनमे लाल मिर्च मिला देनेसे उनही प्राक्ति उठ जातीहै ( १० ) लालमिर्च, हींग और बचकी गोलीका वनाक विमुचिकाम देतेहै ( ११ ) मूत्रकृन्मालोको लालमिर्चसे पचना चाहिये ( १२ ) सर्पके काटेहुए का अचेतपन मिटानेके लिये लालमिर्चको महीन पीसकर उसके मूढमे पुग्माना चाहिये ( १३ ) विपचिकाम अर्फाम और सकीहुई हींगकी गोली वके उपर लालमिर्चका साथ पिलाना चाहिय ( १४ ) इसके हिम फाट या हाथ के कुल्ले करनसे मुखपान मिटताहै, ( १५ ) बीज निकाली दुई मिर्च ( मिर्च के

फ्रंतेरे) कोई हानि नहीं करती है ( १६ ) इसके बीज बहुत दाह करते हैं ( १७ ) मिरचको पीसके कुत्तेके दशपर लेप करते हैं ( १८ ) तीन पान ओटतेहुए पानोंमें १। तोले लालमिरच डाल, ठंडा कर छानके कुल्ले करानेसे तीव्र मुखपाक मिटता है ( १९ ) कंफवायु मिटानेकेलिये सवा मासे लालमिरचकी गोली बनाके देनी चाहिये ( २० ) त्रिपूचिकामें लालमिरच, कपूर और सेकी हुई हींगकी गोली देनी चाहिये ( २१ ) काग या तालुकी छत लटक जावे तो लाल मिरचको कुछ देरतक मुखमें रखके मुंहका पानी झार देना चाहिये ( २२ ) लालमिरच, रेवतचीनी और सोंठको बराबर ले गोलिया बनाके खिलानेसे मदाग्नि मिटती है ( २३ ) बद्धकोष्ठवालेको ये गोलियें लाभकारी हैं । और इन गोलियों से आंतों में उन्हेजना पैदा होती है ( २४ ) रक्तानिसार मिटानेके लिये इसके बीजके तेलकी १० वूटें २ मासे शकरमें मिलाके फकी देना चाहिये ( २५ ) उष्णकालमें शरीरपर जो फुन्सिया होती है उनपर यह तेल लगाना चाहिये ( २६ ) पित्तसे जिसकी भूख बंद होगई हो उसको शक्तिके अनुसार इसकी ५ से ३० वूटें तक्र शकर में डालके फकी देनी चाहिये ( २७ ) विच्छ्द के दशपर जो ठंडी हवा या ठंडा पानी अच्छा लगता हो तो उसपर इसतेल के लगानेसे शान्ति होती है ( २८ ) ईशरबोलकी ३ मासे भुम्सीपर इस तेलकी ५ से १० वूटें डालके फकी देनेसे पित्तका मूत्र कृच्छ्र भिटत है ( २९ ) इसके एक बीजकी मोसम गोली बनाके त्रिपूचिकामें देनेसे लाभ होता है ( ३० ) इस के २० तोले बीजोंसे २, ३ तोले तेल निकलता है ।



### संख्या ( ३६१ )

Latin Capsicum frutescens Eng. Spur papper Cayenne pepper Goat Pepper Chillies The shrubby capsicum

स्थान—लालमिरचकी यह जातिभी हिन्दुस्थानमें सब ठौर पाई जाती है । परन्तु बहुधा बंगाल ओडीसा और मद्रासकी बालू रेतकी हल्की पृथ्वीमें शीतकालमें पाई जाती है । जय यह पकजाती है तब इसका रंग चमकीला लाल होजाता है । यह सबसे बडी होती है ।

प्रयोग—( १ ) ज्वर मिटानेवाली औषधियोंमें लालमिरच मिलाके देने-

से पानीजरा और नारीका ज्वर नष्ट जाता है ( २ ) इसको आकड़के दूधमें खरल कर गोलिया बनाके देनेसे जलंधर मिटता है ( ३ ) हींग और गुडके साथ गोलियां बनाके देनेसे पेटका दर्द मिटता है ( ४ ) सेकके धोई हुई भंग और लाल मिरच बराबर ले, महीन पीस, दुग्धने गुडमें गोलिया बना, एक २ मास भर गोलिया, तीन तीन घंटेके अंतरसे शीतज्वरके आनेके पहिले, तीन बेर देनेसे ज्वर छूटता है ( ५ ) छोटे जाडोंकी सृजन, मंदाग्नि और विसूचिकामें इसका प्रयोग बहुत उपकारी है ( ६ ) इसके बीजोंके बहुत महीन पाच पाच रती चूराकी २॥ तोले गर्भ जलके साथ दिनमें दो तीन बेर फकी देनेसे हाथ पैरोंकी कंपवायु मिटती है ( ७ ) इनको तिल्लीके तेलमें जला छान उस तेलको मर्दन करनेसे छोटे जोडोंकी सृजन उत्तरती है ।

— ० —

### संख्या ( ३६२ )

Latin Capsicum minimum C. fr. stigmatum Eng Bird's eye chilli

स्थान— यह जातिभी हिन्दुस्थानभरमें बोई जाती है, परन्तु बहुत नहीं ।

परिचान— यह आकारमें छोटी होती है और पहिली संख्याकी मिरचसे बहुत मिलती है । इसके बीज छोटे, मिरच सीधी, प्रायः गोल और पकने पर पीली होजाती है ।

प्रयोग— ( १ ) २॥ तोले लाल मिरच और २॥ तोले नमक, इन दोनोंको पीस, ओटतेहुए सवा पाव पानीमें डाल देवे जत्र ठढा होजावे तब उसमें सवा पाव सिरका मिलाके छान लेवे इसमेंसे १। तोले हर चौथे घंटे पिलानेसे जवान मनुष्यके गलेकी पीडासे पैदाहुआ ज्वर नष्ट जाता है ( २ ) इसकी मात्रा बच्चोंकी आयुके अनुपार तथा रोगकी प्रकृताके अनुसार न्यूनाधिक कर देने चाहिये ( ३ ) गले सम्बन्धी और स्वर सम्बन्धी रोगोंमें इसके कुल्ले करनेसे बहुत लाभ होता है ( ४ ) यह मिरच तीव्र उत्तजक है ( ५ ) निरतर रहनेवाले पित्तक ज्वरकी बमनको रोकनेके लिये इसके चूर्णको सिरकेकी सिरकी और प्यपरामिष्ट के साथ पिलाना चाहिये ( ६ ) शब्दवाहिनी शिगाओंके शिथिल होजानेसे जो आवाजका भारीपन, स्वरभंग या गलेके दूसरे रोग



मिटानेके लिये इन्हीं रोगोंकी दमरी आपत्रियोंमें मिरचकां-मिला थोड़ाक, उस कायमे कुल्ले कराने चाहिये (७) राईके साथडम-मिरचको पीस, इसका पकुरवर वनाके लगानेसे राईका, गुण बहुतबढ़ जाताहै, (८) मदाग्नि, कामलासाहित ज्वर और रुभी २ अतिमार और अर्शमेंभी इसका प्रयोग कियुं जानाहै।

संख्या (३६३)

(सं०) मरुवकः, फाणिज्झकः, मरुत्तकः, प्रस्थपुष्पः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	मैजारी	तमिल
मरवा	मरुवा	मग्वा	मग्वा, मवी	गैवनुलसी	मरुआ	मरवमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज	
गग्वा	मग्वा	मग्जन, नोण मग्जन, गोश		Originum Mar. Pers. 218/191004	The sweet Mar. Pers.	

स्थान—मरुवक वृक्ष बहुता हिन्दुस्थानके बागोंमें बोये जातेहै।

प्रयोग—(१) यह चम्परा उष्ण, रम और पाक म चम्परा पचने में लघु, रोचक, कडवा, रुच, दीपन, हृद्य और पाचकहै। अग्नि बढ़ाताहै। दृ-  
शिकादिविष, रुफ, वात, कुमि, रुष्ट, रुधिरविकार, ज्वर, कडू, अर्शच, श्वास शोथ, हृदय, मज्जाकी गाठ, अध्मान शूल, मदाग्नि, तृष्णोप, मिलावेकी शोथ को मिटताहै इसके बीज प्राद्विहै (२) इसके बीजोंकी फर्की लेनेसे शूल मिटती है (३) मग्ज मुग्जी अग्नि इसके पत्तोंकी फर्की लेनेसे शूल मिटताहै (४) इसके पंचांगकी पुनी उतेजकहै (५) आयातिसारकी शूल मिटानेके लिये इसके बीजोंके कायका उफारा देना चाहिये (६) इसको पीसके अंडकोज-  
पर सीपनेमें उनका मूजन अग्नि पीडा मिटताहै (७) इसके रसका लेप कर-  
नेमें तंतपीडा मिटताहै। इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाताहै  
यह मुग्जके कायमें आताहै।

( सं० ) मर्यादवल्लि मर्यादा, सागर, मन्मथा ।

मर्यादा	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
मर्यादा	मर्यादा	मर्यादा	मर्यादा			
द्राविडी	कनारटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	

स्थान-मर्यादावल्ली की बेनी पंथमके किनारे रामुद्रक पाने होती है ॥  
 पौष्टिक-इसकी पेट्टी बेल होती है, इसके पत्ते कचनारिके पत्तोंके जैसे  
 दो दो जुड़े हुए होते हैं । इसके लाल रंगके पुष्प लगते हैं ।

प्रयोग ( १ ) यह शीतल, ग्राही, नारक, पचनेमें भारी और अन्तमें उष्ण  
 होता है । पेट्टी पेट्टी बरती है । विष्टिका, आम, शूल और वपन को मिटानी है  
 ( २ ) इसके पत्ते गटिया पर बाध जाते हैं ( ३ ) पेट्टी शूल मिटाने के लिये  
 इसके पत्ते पर छड़ का तेल गुड़, गुर्भ, इसके जापना चाहिये, ( ४ ) जेलवर  
 वाले के मृत्रग्राह करनेके लिये इसके पत्तोंका अक पिलाना चाहिये और  
 उनका पीस गम करके उसके पेट्टेपर लेप करना चाहिये ( ५ ) इसके प्रयोग  
 से स्त्री गर्भको पारण करती है ॥

( सं० ) मल्लिका, तृणानुष्य, शयदी, शीतभीरु ।

पारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
मोतियो	बलमोतिया	बेलय डोलर	बटमोगर	मल्लिकार्जुन रगाड	मोनिया	मल्लेपुडु
द्राविडी	कनारटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मल्लिहई	मल्लिगे					

स्थान—मोतिया हिन्दुस्थानके बागोंमें बोया जाताहै ।

पाहिचान—इसका भाड बहुधा वृत्तोंके आश्रय रहताहै इसकी प्रकृति बेलडी जैसी होतीहै, इसके २--३ इंच लम्बे पत्ते हंडीके आमने सामने लगतेहै, वे अण्डाकार और कुछ लम्बे होतेहै । चैत्र वैशाखमें इसके सुगंधवाले सफेद पुष्प लगतेहै इसके पुष्पोंसे तेल बनातेहै जिसमें बहुत सुगंध होतीहै ।

प्रयोग—( १ ) इसके पुष्पोंको पीस टिकिया बनाके दिन में एक दो बेर स्त्रीके स्तनोंपर बांधनेसे दुग्धका संचार बन्ना होजाताहै । किसी २ के एक दिन और किसी २ के तीन दिन बांधने पडतेहै ( २ ) सूखे पत्तोंको पानीमें भिगो पुष्टिस बांधनेसे पुराना और बहुत समयमें अच्छा होनेवाला व्रण मिटताहै ( ३ ) अपने आप उगीहुई मल्लिकाके जडका काथ करके पिलानेसे स्त्रियों का कष्टसे मासिकधर्म होना मिटताहै ( ४ ) इसके पुष्पोंका शर्वत पिलानेसे पित्तेन्माद मिटताहै ( ५ ) इसके काथसे आंखोंको धोनेसे अथवा इसके अर्क की बूंदे आंखमें डालनेसे ज्योतिकी निर्बलता मिटतीहै ( ६ ) इसके काथके गहूप करनेसे मुखपाक मिटताहै ।

संख्या ( ३६६ )

( सं० ) मसूरः, रागदालिः, मंगल्यः, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलड़ी
मसूर	मसूर	मसूर	मसूरा	मसूरि	मसूर	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		अदस्	मरजूमक	<i>Lens esculenta Ervum L</i>	The Lentil	

स्थान—मसूर शीतकालमें सब हिन्दुस्थानमें बोया जाताहै ।

प्रयोग—( १ ) मसूर-मधुर, शीतल, ग्राही, रूच, लघु, कपेला और विशदहै ( २ ) भिगड़ेहुए और बहुत समयमें अच्छे होनेवाले व्रणको साफ

करनेके लिये मसूरका लेप करना चाहिये, या उसका पुलिस बनाके बाधना चाहिये ( ३ ) आंतके रोग मिटानेके लिये मसूरका सेवन करना चाहिये ( ४ ) चंचक निकालनेके पीछे जो फोंडे हुआ करतेहैं उनके ऊपर मसूरकी फलीका लेप करना चाहिये या उसके पुलिस बनाके बाधना चाहिये ( ५ ) यह उष्ण है और इसका लगातार कई दिना तक सेवन करनेसे उष्माके कारण शरीर पर फोंडे फुन्सी दाने लगजातेहैं ( ६ ) मसूरकी भस्मका मंजन करनेसे दात साफ रहतेहैं ( ७ ) इसके पत्तोंको आंटाके गरारा करनेसे कठकी सृजन मिटती है ( ८ ) मसूरको जला भस्मके दूधमें मिलाकर नित्य दोनों समय लगानेसे असाध्य प्राव भर जाताहै ( ९ ) मसूर और अनारकी छाल ओटा, पीसके लगानेसे गर्मासे पैदाहुई अण्डकोपकी सृजन मिटतीहै ( १० ) इसके काथसे अगुलियोंको धोनेसे उनकी खुजली मिटतीहै ( ११ ) इसके तुसोंकी धुनी देनेसे ज्वरक रोग मिटतेहैं ( १२ ) इसके काथमें वीलगिरको सिजोंके खानेसे संग्रहणी मिटतीहै ( १३ ) इसकी दालको निवाये पानीसे पीसके लेप करनेसे पैरोंकी दाह मिटतीहै ( १४ ) इसको दूधसे पीस उसमें घी डालके मुखपर मलनेसे मुखकी कान्ति बढ़तीहै ( १५ ) मसूरकी राख और सफेद कृत्था दोनों बराबर ले, पीसके नुरकानेसे मुखके छाले मिटतेहैं ( १६ ) मसूर और अनारकी छालको पीसके लगानेसे नाडीव्रण मिटताहै ( १७ ) मसूर को मिरके में ओटा अर्द्धोष्ण लेप करनेसे पीठ और कटिकी पीडा मिटतीहै ( १८ ) मसूरको नाबूके रसके साथ पीस, लेप करने या मलनेसे मुखकी भाई मिटतीहै ( १९ ) मसूर और खरबूजोंके बीजोंकी मीगी, दोनों बराबर ले, पीसके उमटना करनेसे शरीरका रंग लाल और चमकदार होजाताहै ( २० ) मसूरके काथ और वीलगिरसे घृत सिद्ध करके सेवन करानेसे संग्रहणी मिटतीहै ( २१ ) घीके साथ मसूरका लेप करनेसे विसर्प रोग मिटताहै ( २२ ) इसके आंटेका उबट ना करनेसे शरीरका रंग सुधरताहै ( २३ ) मसूरका एक दाना आंग नीमके दो पत्तोंको मेपकी संक्रान्तिके दिन खानेसे एक वर्ष तक विषका भय नहीं रहता है ( २४ ) पुराने और स्वाभाविक बद्धकोष्ठको मिटानेके लिये मसूरका सेवन कराना चाहिये ( २५ ) १०० तोले मसूरमें ५८॥ तोले मैदा, सया तोले तेल, और पाने बागड तोले पानी होताहै ।

संख्या ( ३६७ )

( सं० ) माखान्नं, पानीयफलं, मखान्नं, पद्मबीजाभम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
फूलमखाना	मखाना	मसाणा	मखाणे	माखना	फूलमखाना	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन-	अंग्रेज़ी	
				Puryale ferax E. India.	The gorgon fruit	

स्थान—मखाने के वृक्ष पूर्वा बंगाल, आसाम, मनीपुर, अरुंध और कश्मीर आदि देशों में होते हैं ।

पहिचान—इस वृक्ष को गोखा नहीं होती है । ये पीठे पानी के बड़े तालाबों में होते हैं । इसके पत्ते गोल और मोठे या काटेदार होते हैं जिनकी मध्यरखा दो से तीन फुट तक होती है । इसके पत्ते पानी पर तैरते रहते हैं । इसके पुष्प नीले, गहरे नीले, नाफरमानी, या चमकीले लाल रंगके होते हैं । इसके फल गोल, काटेदार, नारंगी जितने बड़े और पकने पीछे वे कई ठौर से फूल जाते हैं, क्योंकि इसके बीज भीतर बड़े होजाते हैं । इसके बीज मटर जितने बड़े और काले रंगके होते हैं इनको चने या धानीकी जैसे उप्परतसे सेक लते हैं । इनको मारवाड़ी में फूलमखाने कहते हैं ये फलहारमें और खानेके काममें आते हैं ।

प्रयोग—(१) फूलमखाने—ग्राही, वल्य, विष्टम्भी, वृष्य रूक्ष, शीतल, मीठे, कपेले, तिक्त और गुरु है (२) इनको घीमें तलके खिलानेसे आतिसार मिटता है (३) इनकी खीरपर सोलमभिथ्रीका चूर्ण बुरकाके खिलानेसे प्रमेह मिटता है (४) ये पचनेमें हल्के हैं, इसलिये मंदाग्निवाले रोगीको इनका पथ्य देना चाहिये (५) रोग छूटनेके पीछेकी निवृत्तता मिटाने के लिये इनका सेवन कराना चाहिये (६) ये कफ और वातको पदा करते हैं (७) रक्तापित्त और दाहको मिटाते हैं और गर्भ स्थापन करते हैं ।

संख्या ( ३६८ )

( सं० ) माडः, ध्वजवृक्षः, वितानकः, मध्यद्रुमः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलडी
	माड	माड	भेलिमाड			
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Caryota urens	Hill Yam Sagol palm Torn leaved caryota	

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमी घाट पर महाबलेश्वर तक, ब्रह्मा, बंगाल, ओडीसा और सिक्कममें बहुत होते हैं ॥

प्रयोग—( १ ) यह शीतल, चरपरा, रोचक और कषेला है । तृषा और श्मको मिटाता है । पित्त, दाह, वादी और रुफको पैना करता है ( २ ) इसकी ताजी ताडीका एक गिलास प्रातःकाल पीने से बद्धकोष्ठ मिटता है ( ३ ) इसके फलको पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटती है ( ४ ) इस वृक्षमे से ताड़ी निकलती है जिसकी मदिरा बनाई जाती है ।

संख्या ( ३६९ )

( सं० ) माणिक्यं, पद्मरागं, रत्नराट्, शोणरत्नम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलडी
माणक	मानिक	माणक चुनी	माणिक	मानिक		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		याकृत		Rubrus	Ruby	

शुण—( १ ) माणक—मधुग, निगम, रसायन, दीपन शोण वृष्य है । कफ, भूतनाथा, यात, पित्त, अण और क्षयको मिटाना है ।

संख्या ( ४०० )

( सं० ) माधवी, वासन्ती, अतिमुक्ता, चन्द्रवल्ली ।

मार्वाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली-	पंजाबी	तैलड़ी
	माधवी	माधवीलता	मधुमाधवी	माधवीलता	माधवी	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Hiptage in odii 111a Gaertnerianum 111a	Chrestom h-niptage	

स्थान—माधवीकी बेलें हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होतीहै इसकी बेलें बहुधा शालके वृक्षपर चढतीहै ।

पहिचान—इसके ४—६ इंच लम्बे और अण्डके आकारके चिकने पत्ते लगतेहै । इसके पौन इंच लम्बे सफेद और पीले रंगके सुन्दर पुष्प लगतेहै । बेशाखमें उसके फल लगतेहै ।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे त्यचाके रोग मिटनेहै ( २ ) इसका अर्क पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहै ( ३ ) खुजली मिटानेकेलिये इसके अर्कका लेप करना चाडिये ( ४ ) इसके पंचागका तेल बनाके मर्दन करनेसे गठिया मिटतीहै ( ५ ) इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे श्वास मिटताहै ।

संख्या ( ४०१ )

( सं० ) फलकं, स्थूलकंदर, महापत्रः, महच्छेदः ।

मार्वाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
मानपात	मानकंद		मानकंद	मानकनु		
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Alor 111a indica Arum fo lloam		

स्थान—मानपात बंगालमें होता है, परन्तु हिन्दुस्थानमें सब बागोंमें लगाया जाता है। इसके वृक्ष ढीली पृथ्वीमें या राख भरे हुए गददेमें लगाये जावें तो बहुत अच्छे बढ़ते हैं।

प्रयोग—( १ ) मानकंद-शीतल, चरपरा, मीठा, गुरु और पाकमें लघु है ( २ ) यह सर्वांग जलमय शोथ में काम आता है ( ३ ) इसके पत्तोंकी सूखी डडियोंको पीस उनका आटा निकाल उसको चावलोंके आटेकी साथ इतना थोड़ावे कि उसका सत्र पानी जल जावे तब उसको उक्त शोथवाले रोगीको खानेकेलिये देवे और इसके सिवाय उसको और कुछ खानेको न देवे ( ४ ) इसका कंद हल्का सारक है ( ५ ) इसके प्रयोगसे सूत्रकी वृद्धि होती है ( ६ ) इसके खानसे बद्धकोष्ठकी प्रकृति मिट जाती है ( ७ ) अर्शवालेकेलिये इसका सेवन बहुत उपकारी है ( ८ ) इसके कंदको जला पीस मधुके साथ लगानेसे बच्चोंके मुहके सफेद झाले मिटते हैं ( ९ ) इसके पत्तोंकी डडिया जो २—३ फुट लम्बी होती है, और कुछ मूहानोंकेलिये निर्दोष पड़ी रहती है, उनको बंगाली लोग इस रीतसे खानेके काममें बहुत लाते हैं कि इसके कंद और पत्तोंकी डडियोंको ऊँचे झिलकेको दरकर उनकी गिरको पानीमें आटाके उस पानीको निकाल देते हैं, नहीं तो गले और तालूममें काटे जाते हैं ( १० ) निर्बल मनुष्योंके लिये इसकी पुरानी सूखी डडियोंके आटेका भोजन बहुत उपकारी है। इसका आटा अग्ररूट और सागूदानका बहुत अच्छा प्रतिनिधि ( बदला ) है। यह आटा पचनेमें चावलसे हल्का है। जिस सर्वांग जलमय शोथवाले रोगीको खानेके लिये अन्न जुड़ाके केवल दूध देते रहनेसे दूधही पचता है और अन्न पचना बन्द हो जाता है उसको इस कंदके आटेका पथ्य खानेका अभ्यास करानेसे उसको पीछा अन्न पचने लग जाता है ( ११ ) मदाग्निवाले के लिये कंद और डडियोंके आटेका पथ्य बनाके खिलाना बहुत उपकारी है क्योंकि यह पचनेमें हल्का, मास बढ़ानेवाला, चेष और रसदाग होता है ( १२ ) मानकंदका चूर्ण एक भाग और चावल दो भागकी दूध और जलमें खीर बनाके खिलानेसे वातादरका शोथ उतरती है ( १३ ) इस कंदके काथ और कल्कसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे तीनों दोषोंकी शोथ उतरती है।



संख्या (४०२)

(सं०) मालती, गंधभद्रा, मधुमल्ली, सुगंधा।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मालती	मालती	मालती	मालती	गंधमालती	मालती	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				<i>Agaloesma cathaphyllata</i> De l'Inde, C.	

स्थान—मालती बंगालके नीचेके भाग दक्षिण प्रायद्वीप और बहुरसे पे हाडी भागमें होती है।

प्रयोग—(१) मालती उष्ण, रेचक और बलवर्द्धक है (२) कफ, पित्त रुधिरविकार, त्वग्दोष, कृमि, कुष्ठ, व्रण, शोथ, कानका बहना और मुखपाकको मिटाती है (३) इसके पत्ते कफ और पित्तको मिटाते हैं (४) इसके पुष्प नेत्रोंको हितकारी है (५) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये (६) यह पित्तविकारको मिटानेवाली है (७) इसके पुष्पाके चूर्णमें ६ मास शक्कर भिलोकर फकी देनेसे मासिकधर्म में प्रमाणसे अधिक रुधिरका निकलना बन्ध होता है।

संख्या (४०३)

(सं०) माप, कुरुविन्दः, वृषाकरः, पित्र्यः।

मार्वाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
उडुद	उडुद	अडुद	उडुद	मापफलाई	माह	मिनुमुल

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
उडुद	उडु			<i>Phaseolus mungo</i> Var. <i>radiatus</i> I Roxb. <i>arghii</i>	Kidney bean

स्थान—उड़दोंकी खेती हिंदुस्थानमें, सब, ठौर होती है ।

पहिलान—उड़दों दो प्रकारके होते हैं, एक काले, जो वर्षा ऋतुके प्रा-  
रभमें बोये जाते हैं और सावन भादोंमें पकते हैं । दूसरे हरे रंगके जिनको  
कोचिये उड़दों कहते हैं ये भी वर्षाके प्रारम्भमें बोये जाते हैं और आसोज  
तीमें पकते हैं । कच्चीये उड़दोंको कभी-कभी, वसंत ऋतुमें बोते हैं अर्थात् माघमें  
ते हैं और वैशाखमें काटते हैं । १०० तोले उड़दोंमें ५६ तोले मैदा और सवा  
तोले तेल निकलता है ।

प्रयोग—(१) उड़द-स्निग्ध, पचनेमें भारी, रस और विप्राक्रमें मधुर, रो-  
रु, उष्ण, शुक्ल, तृप्ति और बलकारक, वृहण, शोषक, वृष्य, ज्ञातजाशक, कफ-  
रूपित्तकारकहं (२) उड़दोंको सोंठके साथ आटाके पिलानेसे अर्द्धगि घात  
मिटती है (३) परंठकी जड़की छालके साथ उड़दोंको आटाके पिलानेसे गठिया  
मिटती है (४) एक रती सफेद चिरमीके चूर्णको इनके काथ पंगुरकेके पिलानेसे  
नायुजालकी शक्ति बढ़ती है (५) घाटी मिटानेवाले कई तेलोंकी औषधियों  
उड़द मिलाने जो तेल बनाये जाते हैं, इन तेलोंके भर्दनसे गठिया, जुड़े  
ए घटने और कड़े पड़े हुए कप्रे आदिकी प्रादीकी पीड़ा मिटती है ।  
६) इसकी जड़ मादकहं (७) इसका काथ पिलानेसे हृद् फटन मिटती है  
(८) पीपवाले फोड़ोंपर इनका पुण्डिस बाधते हैं (९) इनकी दाल राधकर  
वानेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ता है (१०) उड़दोंको रात्रुर पित्तशोथमें बांधना चा-  
हिये (११) विषुचिकाकी प्रवृत्तिके दिनोंमें बंगालवाले उड़दकी दाल खाना  
श्रीकाममें भूते हैं क्योंकि ये इसको ठडी और लतु (भुरंत पचनेवाली) मोतीते हैं  
परंतु आयुर्वेदमें इनको उष्ण और गुरु लिखते हैं देशभेदसे गुणोंमें यह अंतर  
ही सकता है (१२) इनकी दाल, मोगर, रोटी, पाण्ड आदि कई प्रकार  
के भोजनके पदार्थ बनते हैं (१३) तालुपर इनके आटेके लेप करनेसे नरु-  
सीरे ग्रन्थ होती है (१४) हल्दी, शणैकी छाल और इनके चूर्णको घृन्नपान  
करनेसे दिक्की ग्रन्थ होती है (१५) इनके आटेके चडे तलेके मसखनेके माथ  
७ दिन तक खानेसे अदितरोग मिटता है (१६) इनके स्वरसकी चम्प देनेसे  
अपराधरु रोग मिटता है (१७) इनका हुकमें धरेके तमासूकी भाति इनका  
धुआँ पीतेसे दिक्की मिटती है ।

संख्या ( ४०४ )

( सं० ) मापपर्णी, महासहा, कावोजी, हयपुच्छी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	वनउर्दी	बहद्वेल	रानउर्दी	मापानी	जंगलीमाह	कारुमिनपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
काडुलड्ड	काडुडु					

गुण—( १ ) यह वृष्य, कड़वी, बलवर्द्धक पौष्टिक, शीतल, रूक्ष, मधुर, ग्राही और कफवर्द्धक है ( २ ) रुधिरविकार, त्रिदोष, ज्वर, पित्त, रक्तपित्त, क्षय, कास, शोष और दाहको मिटाती है ।

संख्या ( ४०५ )

( सं० ) मिश्रेयां, मधुरा, छत्रा, तृपापहा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोंफ	सोंफ	वरियाळी	बडीरोप	मौरीगाँछ	सोंफ	सोपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
सोंपु	सोपु			<i>Foeniculum vulgare</i> <i>F. Panmorium</i>	Fennel	

स्थान—सोंफ हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जाती है ।

प्रयोग—( १ ) सोंफका हिम-पिलानेसे ज्वरकी दाह मिटती है ( २ ) सोंफको घीमें तल मिश्रीके साथ दरगन्धके फकी देनेसे आमातिसार मिटता है ( ३ ) इसका फांट पिलानेसे पेटकी शूल और बच्चोंका अजीर्ण मिटता है ( ४ ) पेटकी शूल मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें इसके तेलकी १५ बूँदें डालके पिलानेसे उदाशूल मिटती है ( ५ ) इसके और बालागिरके चूर्णकी फकी लेनेसे

अतिसार मिटताहै ( ६ ) यह उत्तेजक, चरपरी और उच्चमगंधवाली है ( ७ ) इसकी जड़की फीथ पिलानेसे विरेक होताहै ( ८ ) इसके पत्तोंका रस या फांट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ९ ) ७ मासे सौफमें बराबर शकर मिलाके सोते समय फकी लेनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै ( १० ) ७ मासे सौफको घी में सेक उसमें बराबर मिथ्री, मिला, चूर्ण बनाके ँडे जूलके साथ फकी देनेसे कफका अतिसार मिटताहै ( ११ ) इसके प्रयोगसे उदरकी सर्दी और निर्लता मिटताहै ( १२ ) १०० तोले सौफमेंसे ३ तोले तेल निकलताहै वह उडनेवाला पीले रंगका और अचरी सुगंधवाला होताहै ।

संख्या ( ४०६ )

( सं० ) सुकूलकं, पित्तं, दन्तफिलसमाकृतिः

मरावाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पिस्ता	पिस्ते	पस्ता	पिस्त	पेस्तागाछ	पिस्ता	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Pistacia vera</i>	<i>The Pistachia nut</i>	

स्थान - पिस्तेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहै, ये अफगानिस्थान और परसियासे आतेहै । इस वृक्षके एक प्रकारका रसल जैसा पदार्थ लगताहै इसके पत्ते रंगतके काममें आतेहै । १०० तोले पिस्तोंमेंसे ६० तोले गाढ़ा हरे रंगका मीठा और सुगंधयुक्त तेल निकलताहै ।

प्रयोग - ( १ ) पिस्ते पाचक, उष्ण, मांसादिककी न्यूनताको पूर्ण करनेवाले; बलवर्द्धक और पुरुषार्थ बढ़ानेवालेहै ( २ ) इनका तेल चर्बीजोंकी चरपराहट मिटानेके लिये काममें आताहै ( ३ ) इनके तेलका सेवन करनेसे रुधिरमें जो किसी तत्वकी न्यूनता होतीहै वह मिटजाताहै ( ४ ) इसकी छालके चूर्णकी फकी देनेसे अजीर्ण मिटताहै ( ५ ) इसकी छालके चूर्णको घी और शकरकी साथ खानेसे बल बढ़ताहै ( ६ ) पिस्ते, हल्लास और वमनको रोकतेहै ।

संख्या ( ४०७ )

( सं० ) मुचुकुंदः, हरिचल्लभः, रक्तप्रसवः, प्रतिविष्णुकः ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुचुकुंद	मुचुकुंद	मुचुकुंद	मुचुकुंद वृक्ष	मुचुकुंद		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंगरेजी	
				<i>Pterospermum</i> <i>ambrofolium</i> <i>P. canescens</i>		

स्थान— मुचुकुन्दके वृक्ष उत्तरी सर्कार और कर्णाटकमें बहुत होतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) यह चरपरा, छिण और कडवाहै । स्वरभंग, कफ,

कास, त्वचाके रोग, शोथ, मस्तकपीडा, त्रिदोष, रक्तपित्त, व्रण और पावको

मिटाताहै ( २ ) इसके पुष्पोंको चावलोंकी काजीके साथ पीसके लेप करनेसे

आधाशीशी मिटतीहै ( ३ ) इसके केवल पुष्पोंका लेप मस्तकपीडाको मिटाताहै

( ४ ) इसके पुष्पोंके चूर्णका घी और शकरके साथ हलुवा बना नित्य एक तोला

खानेसे अर्शसे रुधिरका निकलना बन्ध होजाताहै ( ५ ) इसके पुष्पोंको पा

नीमें भिगोके बलनेसे पानी गाढा होजाताहै ।

संख्या ( ४०८ )

( सं० ) मुण्डी, श्रावणी, भिक्षुः, परिवाजी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोरखमुंडी	गोरखमुंडी	गोरखमुंडी	बरसबोडी	मुंडीरी	गोरखमुंडी	बोड़तरमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
करन्दै	बोड़तर			<i>Syrianthus indicus</i> <i>S. Indicus</i>		

स्थान— गोरखमुण्डी—सूखीहुई नाडियोंमें उचा करतीहै ।

यह छोटी बडीके भेदसे दो प्रकारकी होती है ।

प्रयोग—(१) गोरखमुडी-कडवी, विपाकमं चरपरी, उष्ण वीर्य, मधुर, पचने में लयु, कपेली, भेदक, बल और बुद्धिवर्द्धक है (२) पेटके कीड़े निकालनेके लिये इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनी चाहिये (३) इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे पेट ही पीड़ा मिटती है (४) इसके पुष्पोंके प्रयागसे रुधिर शुद्ध होता है (५) इसके पुष्पोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे बल बढ़ता है (६) इसकी जालके चूर्णको छाद्यके साथ पिलानेसे अर्श मिटता है (७) इसकी जड़के कल्कको पानीमें घोल उसमें तिली का तेल मिलाके ओटावे जब सब पानी छीज जाये तब तेलको छानकर रख द्याये, इस तेलको इन्द्री पर मर्दन करके नागरत्रेलका पान बांधनेसे अर्श उसकी १० से ३० वृद्धतके पानपर लिगाके दिनमें दो तीन बेर खानेसे नपुंसकता मिटती है ( ८ ) इसकी जड़को छायामें सुखा चूर्ण बना उसमें घराघर शोकर मिलाकर ७ मासेकी मात्रा नित्य खानेसे अथवा गो दुग्धके साथ फकी लेनेसे नेत्रोंके बहुत से रोग मिटते हैं ( ९ ) इसकी एक तोल जड़को पीस छाद्यके साथ छानके पिलानेसे गुल्म रोग मिटता है ( १० ) इसकी जड़को इसी के रससे पीसके लेप करनेमें गडमाला मिटती है ( ११ ) इसका ४ तोला रस पीनेसे गंडमाला मिटती है ( १२ ) इसके और कुटकीके चूर्णको मधु और घी के साथ चटानेसे वातरक्त मिटता है ( १३ ) इसके रससे घृत सिद्ध करके लगानेसे विपादिका आदि त्वग्दोष मिटते हैं ( १४ ) एक भाग मुंठी और आधा भाग समुद्रसोख, इनका चूर्ण बना एक मासे से ६ म मे तककी मात्रा लेनेसे सफेद कुष्ठ मिटता है ( १५ ) इसके ८ मासे चूर्णकी गर्म जलके साथ फकी देनेसे सन्धिवात मिटती है ( १६ ) बकर्रीके दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे पेटकी वादी मिटती है ( १७ ) इसके और लोंगके चूर्णकी फकी लेनेसे कंपवायु मिटती है ( १८ ) इसके चूर्णको गौंके दहीके साथ लेनेसे अर्श मिटता है ( १९ ) बकर्रीके दहीके साथ देनेसे मृतघत्सा रोग मिटता है ( २० ) नीमके रस के साथ लेनेसे नपुंसकता मिटती है ( २१ ) शकरके साथ लेनेसे वीर्य पुष्ट होता है ( २२ ) वासी पानीके साथ लेनेसे भगंदर और रक्तपित्त मिटता है ( २३ ) इसके चूर्णको घृतके साथ चटानेसे बल बढ़ता है ( २४ ) वासी पानीसे इसके चूर्णकी फकी लेनेसे श्वाभ और तेजरा मिटता है ( २५ )

गायकी छात्रके साथ इसका सेवन करनेसे, नित्य ज्वर छूटता है ( २६ ) खाँटे के साथ लेनेसे जलंधर मिटता है ( २७ ) सोपरेके साथ लेनेसे कई प्रकार के रोग मिटते हैं ( २८ ) सालमभिथ्रीके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होता है ( २९ ) जीरेके साथ लेनेसे दाह मिटती है ( ३० ) कालीपिरत्रके साथ लेनेसे ज्वर छूटता है ( ३१ ) काली बरुरीके दूधके साथ लेनेसे तेजरा छूटता है ( ३२ ) गायके दूधके साथ लेनेसे चित्तभ्रम मिटता है और बुद्धि बढ़ती है ( ३३ ) धनिःप्राके साथ लेनेसे आँख का रूला मिटता है ( ३४ ) गायके दूधके साथ लेनेसे धमेह मिटता है ( ३५ ) इसके और जायफलके चूर्णको, बरुरीके दूधके साथ लेनेसे स्त्री गर्भको धारण करती है ( ३६ ) सोंठके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होता है ( ३७ ) परंडके तलके साथ देनेसे जलंधर मिटता है ( ३८ ) रूपूरके साथ इसके चूर्णको लेनेसे अर्थ मिटता है ( ३९ ) अलमीके साथ देनेसे खैन रोग मिटता है ( ४० ) नीचूके रसके साथ देनेसे भिग्गी मिटती है ( ४१ ) गोमूत्रके साथ लेनेसे पेटकी पीडा मिटती है ( ४२ ) शृतके साथ लेनेसे अतिसार मिटता है ( ४३ ) जायफलके साथ लेनेसे नपुंसकता मिटती है ( ४४ ) नेत्र नही दुखते हैं अतः इसकी २० ग्रुंडियोंको एक दिनमें सिंगलनेसे एक वर्ष तक और ४० सिंगलनेसे दो वर्ष तक नेत्र पीडा नही होती है ।

संख्या ( ३७६ )

( ३७६ ) मुद्गा, सूपश्रेष्ठः, हरितः, लोभ्यः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलंगी
मुग्गा	मुग्गा	मुग्गा	हिरवेमुग्गा	मुग्गा	मुग्गा	पंचपेसाल
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पंचपेसर	हिमरु	माषि	माष	Lihaculus Mungo. F. Max.	Green Gram	

स्थान - ये हिन्दुस्थानमें सब ठौर पाये जाते हैं और अपने आपकी उग-

है। वज्रालम्बे ३ प्रकारके मूंग हातेहै ( १ ) सोन मूंग ( पीले ), ( २ ) कृष्ण मूंग ( काले ), ( ३ ) हरित मूंग ( हरे ) । परन्तु श्वेत और रक्त दो प्रकारके जा और लिखेहैं, वे इधर नहीं मिलतेहै १०० ताले मूंगोंमें ५४१ ताले मैदा और २१० ताले तेलहै ।

**प्रयोग**— ( १ ) मूंग-मधुर, कपल, कफ और पित्तनाशक, शीतल, लघु और दीपनहै ( २ ) हरे मूंग रोगोंके लिये पथ्यहै और नीरोगता बढ़ानेवाले है । इनकी दाल ज्वरमें पथ्यहै । यह ठंडी, लघु और ग्राहीहै ( ३ ) मात्र कठिन रोगोंसे मुक्त होनेके पीछेकी निवेलता मिटानेके लिये इनकी दालकी भौली पिलानी चाहिये ( ४ ) इससे नत्रोंकी ज्योति बलवान होतीहै ( ५ ) हरे मूंगों का आटा साबुनका काम देताहै और इसका उद्वचन ( पीठी ) करनेसे त्वचा स्निग्ध और फ्रामिले हाजाताहै ( ६ ) मूंगोंको मुहमें चाबके लगानेसे नाडी-व्रण ( नासूर ) मिटताहै ( ७ ) मूंग और साठी चाबलोका पीस गमेकर स्तनापर लेप करनेसे दूधका जमाव विखरताहै ( ८ ) मूंगोंको जला, पीसके मलनेसे बहुत पमीनेका आना बन्ध होताहै ( ९ ) मूंग और मूलेहटीका यूप बनाके पिलानेसे पित्तज्वर शान्त होताहै ( १० ) सिकेहुए मूंग और चाबलोंकी कीलोंका काथ बना उसमें सहत और शकर डालके पीनेसे अतिसार मिटताहै ( ११ ) यह काथ वमन, दाह और ज्वरको मिटाताहै ( १२ ) मूंगोंको पीस धीके साथ लेप करनेसे विसपेराग मिटताहै ( १३ ) इनका और चनेका पानी पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै ( १४ ) इनकी फलियोंका शाक बनाया जाताहै । भोजन के लिये मूंगोंके कई प्रकारके पदार्थ, जैसे, रोटी, पापड़, मोगर, मसालेदार बढ़िया इत्यादि बनाये जातेहैं-।

**सल्या ( ४१० )**

( सं० ) मुद्गपर्णी, जुद्रसहा, शिखी, मार्जारगन्धिका ।

मरवाही	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सुगवन	अडसाउ- मगवेल्य	रानमुग	सुगाणी	सुगवन	पिल्लपसर



द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
सीरपर	किरहिसरु			Phaseolus trilobus Dolichos trilobatus	The L-lobed Kidney bean

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जाती है और बिन बोई भी होती है।

प्रयोग—( १ ) यह शीतल, रूक्ष, कड़वी, स्वादिष्ट, वीर्यवदानवाली, ग्राही, हल्की और नेत्रोंको हितकारक है। कास, शोष, क्षय, वातरक्त, ज्वर, त्रिदोष, संग्रणी, कृमि, अतिसार, कफ, अर्श और पित्तको मिटाती है। ( २ ) रक्तको रोकती है। ( ३ ) विषमज्वरके लिये इसका काथ पिलाते है। ( ४ ) इसके पत्तोंके चूर्णकी फकी देनेसे बल बढ़ता है। ( ५ ) बुरेके साथ इसकी फकी देनेसे कलेजका धड़कना कम पड़जाता है। ( ६ ) इसके पत्तोंको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे नेत्रोंकी निर्बलता मिटती है। यह नीरोगता बढ़ानेके लिये बहुत उत्तम पदार्थ है। इसको नीचजाति के लोग भोजनके काममें बहुत लाते है।

संख्या—( ४११ )

( सं० ) मुषली, गोधापदी, तालमूली, हेमपुष्पी,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	प्रजावी	तैलगी
मूसली	सफेदमुषली	धोळीमूशली	पादरीमुसली	तालमूली	सुफेदमूसली	नेलताटिगड्डा

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
निलप्पन डीरुलग	नेलताळगंडे	मूसलीअवि यज	मुशलीसपेद		

स्थान—सफेद मूसली हिन्दुस्थान के बहुतसे अधिक उष्ण भागोंमें पैदा होती है।

पहिचान—यह दो प्रकारकी होती है एक सफेद और दूसरी काली होती है। इसके बोये हुए पेटके चारह महीने पुष्प लगते रहते है।

प्रयोग—( १ ) मुषली रस और विपाकमें मधुर, वृष्य, उष्णवीर्य, बृहण

शीतल, पिच्छल, भारी, पौष्टिक, अग्नि और बलवर्द्धक है ( २ ) मू-  
का अबलेह बनाके दिनमें दो बेर, चार-चार मासे चटानेसे बल बढ़ता है  
( ३ ) इसके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाके ८ मासेकी फकी दिनमें एक बेर  
ऊपर दूध पिलानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है ( ४ ) दो वर्षके पुराने पेड़की जड़ों  
नेकाल, जलसे धो, उनके महीन तन्तुओंको तोड़कर लकड़ीके चक्कसे  
२ टुकड़ेकर, छायामें सुखाकर काममें लाना चाहिये ( ५ ) इसके एक तोले  
में बराबर मिश्री मिला उसमें चन्दनके तेलकी ३० बूँद डालके रुबे दूधके  
उसकी दो बेरमें फकी लेनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ६ ) इसके या का-  
सलीके रसमें बराबर तेल डालकर आटावे, जब रस छीजके तेल मात्र रह  
तब उसको ठढाकर, कानमें डालनेसे कर्णरोग मिटता है ( ७ ) इसको व  
र दूधमें आटाके सब दूध छिजा देवे, फिर सुखा पीस चूर्ण बना उसमें  
बर शक्कर मिलाकर, २ तोलकी फकी लेकर, ऊपर गायका दूध पीनेसे  
र पुष्ट होता है ( ८ ) कांजीक साथ इसक चूर्णकी फकी देनेसे तेजरा  
ग है ( ९ ) इसके चूर्णको छाछ अथवा चावलके धोवनके साथ सेवन क-  
ने संग्रहणी मिटती है ( १० ) इसके नवीन कटके चूर्णमें भसका मखन  
कर उसको धानकी राशीमें सात दिन तक गढा रखकर कर्णपाली  
वालेके काममें लाना चाहिये ( ११ ) यह-रक्तशोधक, मूत्र और पुरुषार्थ  
क है । अर्श, निर्वलता, निपुंसकता, श्वास, कास, कामला, अतिसार, शूल,  
कृच्छ्र, और चरपराहटको मिटाती है ।

संख्या ( ४१२ )

( सं० ) कृष्णामुपली ।

ब्राह्मी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मशुली	कालीमुपली	काळीमुसळी	काळीमुसळी	तालमूली	स्याहमसली	
वेडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		मुस- लीआवियन	मुसलीस्याह	<i>Carcule orboides</i> <i>Hypoxis O</i>		

स्थान—काली मुपली हिमालयमें येमुनासे काशिया पहाड़ तक, इन सरीमें और केपेकपीरिनके दक्षिण तक होती है।

प्रयोग—(१) यह ग्राही, उष्ण और रूक्ष है। मस्तकपीड़ा, चंकर, ज्वर, कामला और बिहरापन आदि रोगोंको मिटाती है। (२) यह विषनाशक है। (३) इसके प्रयोगसे सर्पका विष उतरता है। (४) इसके चूर्णमें मिश्री मिलाके फकी लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ता है। (५) तुलसीके रसके साथ इसकी फकी लेनेसे या उसमें मिलाके चटानसे बृक्को पीड़ा मिटती है। (६) स्त्रीका स्मरण करनेसे जिसका वीर्य निकल जाता है उसको रोकनेके लिये इसके चूर्णको बंगके साथ देना चाहिये। (७) इसकी जड़को छालको छायामें सुखा, पानमें रखके खानेसे श्वास मिटता है। (८) इसका पाक बनाके खानेसे नपुंसकता मिटती है। (९) जायफलके साथ इसकी फकी देनेसे मूत्रातिसार मिटता है। (१०) दालचीनी के साथ इसकी फकी देनेसे पेटकी शूल मिटती है। (११) पागल कुत्तेके विष को उतारनेके लिये इसको पीपलके साथ देना चाहिये, और इसको पीपलके साथ पीसके कुत्तेके दंशपर लेप भी करना चाहिये।

संख्या (४१३)

(सं०) मुष्ककः, मोक्षकः, जटालः, गौलीर्ष्यः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
मोखा	मोखा	मरखो	मोखा	घंटापाकूल	घटापाटली	मोक्षमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	मोक्षे	किरा	मोक्षक	Schrebera awlstenfordia	मुष्कक	

स्थान—मोखाके वृक्ष कर्माऊके पहाड़पर, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होते हैं।

पाहवान—इसका वृक्ष २०-४० फुट ऊंचा होता है। इसकी पेटड़ खड़ी,

सीधी और गुलाईमें ४-५ फुटकी होती है, इसके बहुतसी डालिया हाताईं । इसकी छाल खाखी रंगकी होती है, बहुत महीनों तक इसके एकभी पत्ता नहीं रहता है, चैत्र वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकलते हैं और एक सीक पर ३-४ जोड़े पत्तोंके लगते हैं । इसकी छोटी डालियें भूरे रंगकी होती है । रात्रीके समयमें इसके पुष्पोंकी सुगंध अधिक आती है । इसकी डोडी दो इंच लम्बी और ऊपरसे खरदरी होती है । उस पर उठे हुए कुछ सफेद दाग होते हैं और वह डालीके लटकती रहती है । माघसे चैत्र तक इसके पुष्प लगते हैं ।

प्रयोग-(१) मोखा-चरपरा, खट्टा, रोचक, पाचक, ग्राही, उष्ण, सलौना और कड़वा होता है और प्लीह, गुल्म, उदररोग, विष, कफ, वात, भेद, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, खजली और कृमिको मिटाता है ( २ ) इसके पुष्प त्रिदोष और कुष्ठको मिटाते हैं ( ३ ) इसके फल अग्निको बढ़ानेवाले, भेदक और रोचक है ( ४ ) गुल्म, प्रमेह, अर्श, पादुरोग, शुक्रदोष और उदर रोगको मिटाते हैं ( ५ ) इसका गोद अत्यंत वीर्यवर्द्धक है, ( ६ ) यह गोद शोष, पित्त और वादीको मिटाता है ।

संख्या ( ४१४ )

( सं० ) मुस्तकः, गाङ्गेयं, कुरुविन्दः, अब्रनामकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मोथा	मोथा	मोथ्य, मोथ	मोथ	मुता	माया	मुस्तेरु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अब्रेजी	
कोरकडङ्ग	कोन्नारि			Cyperus po-un-lus Hexastachyos		

स्थान-मोथा हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होता है ।

प्रयोग-(१) मोथा-चरपरा, शीतल, ग्राही, कड़वा, दृपन, पाचन, पसीने लानेवाला, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धक है ( २ ) अदरक और मोथेको पीस मधु के साथ १० रती चटानेसे आमातिसार मिटाता है ( ३ ) ताजे मोथेको पीसक

स्त्रीके स्तनों पर लेप करनेसे दूध बढ़ताहै ( ४ ) दूधकी-लर्सेसीके साथ मोथेके चूर्णकी फक्की देनेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ५ ) इसकी गुंडमें गोली बना तिलोंके काथके साथ देनेसे स्त्रियोंका मासिकधर्म शुद्ध होने लगताहै ( ६ ) विच्छूके दंशपग इसका दोपानुमार उगढा या उष्ण लेप करतेहै ( ७ ) फैलनेवाले फोड़े पर इसका चूर्ण घुरकातेहै ( ८ ) सर्दीकी पीडा मिटानेकेलिये इसको जलमें पीस उष्ण करके लेप करतेहै ( ९ ) जलंधरमें अधिक मूत्रवृद्धि करनेकेलिये इसका प्रयोग करतेहै ( १० ) इसके चूर्णकी अधिक मात्रा देनेसे पेटके कीड़े मरतेहै ( ११ ) अजीर्ण मिटानेवाली दूसरी औषधियोंके साथ इसको मिलाके देतेहै ( १२ ) इसका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै ( १३ ) इसको दूधमें ओटाके पिलानेसे रक्तातिसार मिटताहै ( १४ ) इसका और गिलोयका काथ पिलानेसे ज्वर छूटताहै ( १५ ) पसीना लानेकेलिये मोथेको ताजे कंदको ओटाके बफारा देना चाहिये ( १६ ) मोथे और पित्तपापडेका काथ या फांट पिलानेसे शीतज्वर छूटताहै और पाचक शक्ति बढ़तीहै ( १७ ) इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलताहै, जो सुगंधके काममें आताहै । मोथा-रंगतमें सुगंध देनेकेलिये काममें आताहै । तरजमीनमें पैदा हुआ मोथा काममें लाना चाहिये ।

संख्या ( ४१५ ) ( ०८ )

( सं० ) नागरमुस्ता, कच्छरुहा, नागरोत्था, पियडमुस्ता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तेलुगु
नागरमोथा	नागरमोथा	नागरमोथ्य	नागरमोथ	नागरमुस्ता	नागरमोथा	नागमुध्तेलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	कोच्नारीभेद	सोद	मुश्कजमीन	<i>Cyperus scariosus</i> <i>C. pertenuis</i>		

स्थान—नागरमोथा—बगाल, अवध आदि देशोंकी आर्द्र पृथ्वीमें होताहै । यह पजावमें बहुतही कम होताहै । मोथेकी अपेक्षा नागरमोथेकी उत्पत्ति बहुत कमहै ।

पहिचान—नागरमोथा दो प्रकारका होताहै, एक भारी और अधिक सुगंधवाला, दूसरा—हल्का औररकम सुगंधवाला।

प्रयोग(१)नागरमोथा चरपरा कडवा, रूपेला और शीतलहै। अतिसार, पित्रज्वर, दाह, तृष्णा, अरुचि और हृदय और आमाशयके रोगोको मिटाताहै (२) यह बाले बानेके कापमें आताहै (३) इसके प्रयोगसे पसीना आताहै और मूत्रवृद्धि होताहै (४) यह ग्राहीहै और इसका काथ पिलानेसे अतिसार मिटताहै (५) मूत्रकृद्वालेको, इसका काथ पिलातहै (६) इसका और उश्वेका काथ पिलानेसे उपदश मिटताहै (७) ज्वरमें पसीना लानेकेलिये इसका काथ पिलातहै (८) इसको पीने और लगानेसे निच्छुका विप उत्तरताहै (९) नागरमोथा मुंहमें रखनेसे गले या पेटमेंसे जोक बाहिर निकल आतीहै (१०) इसका खानेसे वमन बन्ध होतीहै (११) एक भाग दूध और तीन भाग जलमें एक ताला नागरमोथा ओटाके जल छिजो केवल दूध रहे तब छान ठहा करके पिलानेसे आम और शूल मिटतीहै (१२) इसका फाट पिलानेसे तृषा और जीमचलाना मिटताहै (१३) इसकी उत्तर दिशाधी ओरकी जड़को शुभ दिनमें उपाह उसको पीसके बचेवाली एक रंगगी गौके दूधके साथ पिलानेसे भिरगीका आना बन्ध होजाताहै (१४) इसके काथसे धोनेसे मुहका रंग सुधरताहै।

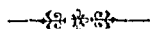
संख्या (४६)

(सं०) भद्रमुस्तक, मेघाख्यं, भद्रमुस्ता, ग्रन्थिला।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलझी
मौर्याविशय (रुह)	भद्रमोथा	भद्रमाथ	भद्रमोथ	भादलामुत्ता		तुगगड्डा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
कोरै (इ)	भद्रमुस्ता			Cyperus bulbosus C. bulbosus		

स्थान—भद्रमोथा सिन्ध, मद्रास और सीलोनमें समुद्रके किनारे सूखे रेतिले त्रासके जंगलोंमें होताहै।

प्रयोग—(१) भद्रमोथा-कपेला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, ग्राही, खट्टा और अग्निदीप्त करनेवाला है। पित्त, कफ, अनिसाग, रुधिरविकार, ज्वर, अरुचि, तृषा और कृमिरोगको मिटाता है और शरीरको पुष्ट करता है (२) इसको जलमें घिस गुनगुना कर पिलानेसे जीका मचलाना और तृषा मिटती है (३) कालके दिनोंमें इसकी जड़को सेक या उवाल कर खाते हैं जब ये सेके जाते हैं तब इनका स्वाद आलू जैसा होजाता है (४) यह खुराककी एक बहुत उत्तम वस्तु है। यह कंठ बहुत छोटा होता है और खानेमें बड़ा स्वादिष्ट लगता है। कई आदमी इसको धूपमें सुखाकर आटा पीसके रोटी बनाके खाते हैं।



संख्या ( ४१७ )

( सं० ) मूर्वा, मोरंटा, तेजनी, शोकर्णी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मुरायली	चूर्णाहार	मूर्वा	मोरबेल	मुर्वा	चूरनहार	चागाजट्टु पाकु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
वेलिपरिचि	हेगोरीटिंग			Clematis triloba.		The bow string hemp Sweet marjoran

स्थान—मुर्हीकी बेलें हिन्दुस्थानके पूर्वके किनारे, ऊपर बंगालसे मद्रास तक कारोमण्डलके किनारे और दंडीगल जिले आदिमें बहुत होती है।

प्रयोग—(१) यह कपेली, कडवी, स्वादिष्ट, उष्ण, भारी, विपाकमें कडवी और सारक है (२) त्रिदोष, रुधिरविकार, मेद, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, वमन, मुखशोष, भ्रम, कंठ, तृषा, हृद्रोग और विषमज्वरको मिटाती है (३) इसका कद कृमिरोग और विषनाशक है (४) इसकी जड़ स्वादमें कुछ उष्ण और उत्तम मृगधवाली होती है (५) क्षयरोगमें इसकी जड़का पाक बनाके खिलाना चाहिये (६) पुरानी खांसीमें इसकी जड़के ४ मासे चूर्णको मधुके साथ चटाना चाहिये (७) इसकी कोमल कोपलोंका रस पिलानेसे बच्चेके गलेका

कफ निकल जाता है ( ८ ) इसकी जड़ और पत्तोंका रस पिलानेसे सर्पका विष उतरता है ।

संख्या ( ४१८ )

( सं० ) मूलकं, हरितपर्ण, नीलकण्ठ, महाकंदः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मूली	मूली	मूळा	मुळा	मूला	मूली	पेदमुल्लगि
द्राविडी	कर्नाटकी	अंगवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मुल्लगि	हेम्बुल्लगि	हुन्ल	तुर्ब	<i>Raplanus sativus</i>	Rabian	

स्थान—मूली हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोई जाती है । यह शीतकालमें पैदा होती है परंतु पहाड़ोंमें १२ महीने रहती है । जल और पृथ्वीके कारणसे मूलीका आकार और स्वाद बदल जाता है ।

मूली और मूलीके बीजोंमेंसे एक प्रकारका तेल निकाला जाता है उसकी सुगंध अच्छी नहीं होती है, इसके बीजोंका तेल सफेद रंगका और पानीसे भारी होता है । मूली और मूलीके बीजोंका तेल जलाने और भोजनके पदार्थ बनानेके काममें आता है । मूलीके बीजोंके तेलमें गंधक बहुत होता है ।

प्रयोग—( १- ) कधीमूली-रोचक, उष्ण, पाचक और पचनेमें हल्की है ( २- ) मूलीके बीज मूत्रवर्द्धक और सारक हैं और मूत्राशयकी पथरीको गलाते हैं ( ३- ) इसके बीजोंकी फली देनेसे मासिकधर्ममें रज बहुत निकलता है अथवा मासिकधर्मकी रुकावट मिट जाती है ( ४- ) मूत्रसम्बन्धी और उपदंश सम्बन्धी रोगोंको मिटानेके लिये मूलीका सेवन करते हैं ( ५- ) मूलीके ताजे पत्तोंके रस में वेही गुण हैं जो इसके बीजोंमें हैं ( ६- ) मूली उचेजक और मूत्रवर्द्धक है, शर्कराशयरी और पेटकी शूलको मिटाती है ( ७- ) इसके बीज औषधियोंकी चरेपराहटको कम करते हैं ( ८- ) ये वामक नहीं हैं तत्रभी इसके बीजोंकी पूरी मात्रा चरे २ देनेसे कभी २ वमन होने लग जाती है ( ९- ) मूलीका रस चिनग और



कृष्टसे मूत्र उत्तरने को मिटाता है (१०) इसका रस पिलानेसे मूत्राशय में जो पथरी होती है वह गलने लग जाती है (११) वृकमें जो मूत्र का पैदा होना बन्ध होजाता है उसको फिरसे पैदा करनेके लिये इसका रस पिलाना चाहिये (१२) इसके सूखे बीजोंके चूर्णकी फकी लेनेसे चिनग भिट जाती है और मूतनेके समय कष्टका होना बन्ध होजाता है (१३) भ्रूज और पीत्रिन शक्ति बढ़ानेके लिये भोजनके पहिले मूली खाना चाहिये (१४) मूलीके बीजोंको पानीके साथ पीस कपडेमें छानके पिलाना चाहिये और मूलाका दरगच कपड में दबा रस निकाल के काममें लाना चाहिये । इसकी मात्रा ३॥ तोले से ७॥ तोले तक है जिस कामके लिये यह दिया जावे वह जवतक न हो तवतक २४ घंटोंमें चार बेर देना चाहिये (१५) पाने चार मासेसे ७॥ मासे तक बीजोंकी मात्रा दी जाती है (१६) मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये ३॥ मासे बीज काममें लाने चाहिये (१७) रक्तार्शका रक्त व्रन करनके लिये मूली खिलानी चाहिये (१८) आम्राशय को शूल मिटानेके लिये मूलीके खरसम नोन, भिरच डालके पिलाना चाहिये (१९) मूला कच्ची खाई जाती है । इसका शाक और अचार भी बनाया जाता है (२०) मूखी मूलीको ओटाके पिलानेसे श्वास और हिचकी मिटती है (२१) इसके बीजोंको आधी भांडिके खारके पानी से पीसके लेप करने से श्वेत कुष्ठ मिटता है (२२) मूलीके बीजोंको कूट गर्म जलके साथ खानेसे आवाज खुलती है (२३) इसके पत्तोंको छायामें सुखा पीस छान बराबर बरी मिलानेके ४० दिनतक लगातार फकी लेनेसे बवासीर मिटता है (२४) इसके पत्ते गर्म करके पागल कुत्तेके दंशपर बाँते है (२५) इसके बीजोंको तेलमें ओटाके इंद्रिपर मर्दन करनेसे उसकी शिथिलता मिटती है (२६) मूलीके पत्तोंके ३ तोले रसमें एक तोला तेल सिद्ध करके कानमें टपकानेसे कर्णपीडा मिटती है (२७) इसके बीजोंको बरुकीके दूधके साथ पीसके लेप करने से कंठमाला मिटती है (२८) इसके टुकड़के नोन लगाकर दंशपर रखनेसे विच्छूना विष उतरता है (२९) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे जलेधर मिटता है (३०) सिरके में डाली हुआ इसका अचार खाने से कामला रोग मिटता है (३१) इसके पत्तोंके ४ तोले रसके साथ ३ तोले अजमोदकी फकी देनेसे पथरी गल जाती है (३२) इसके बीजोंको नीचूके रसमें पीस गोलिया बनाके

लगानिस दाद मिटतीहै ( ३३ ) जो बहुधा मूली खाया करतेहैं उनके विच्छेदक विपका असर कम होताहै ( ३४ ) मूलीकी फलीको मारवाडी भाषामें मोगरी कहतेहैं और जो फली आधगज लम्बी होजातीहै उसको जयपुरके मान्त में संगरी कहतेहैं । मूली, मूलीकीगादल, पत्ते, मोगरी और-संगरीका शाक बनाया जाताहै ।

संख्या ( ४१६ )

( सं० ) मृगनाभिः, मृगमूदः, वेधमुख्या, कस्तूरी, ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तुरि	मृगनाभि	कस्तूरी	कस्तूरी
द्राविडी	बर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कस्तूरी	कस्तूरी	मिस्क	मुस्क			

प्रयोग—( १ ) कस्तूरी-कडरी, चरपरी, सलानी, उष्ण, शुक्ल, पचतेमें भारी, वृष्य, बहुत उत्तेजक और पुरुषार्थ बढ़ानेवालीहै ( २ ) यह मूदज्वर, पुगनी खासी, निर्बलता और नपुंसकताको मिटाती है ( ३ ) वाइटे मिटानेके लिये पानमें रखके कस्तूरी खिलानी चाहिये ( ४ ) मातीजरे, पानीजरे और निर्बलता सम्बन्धी दूसरे रोगोंको मिटानेकेलिये कस्तूरीका प्रयोग करना चाहिये ( ५ ) श्वास वालेको अद्रकके रसमें कस्तूरी देनी चाहिये ( ६ ) ममखतक साथ कस्तूरी देनेसे कुत्ताधांसी मिटतीहै ( ७ ) इसको मालकगुनीके तेलमें चटाने से अपस्मार मिटता है ( ८ ) शतावरकी घृतपर कस्तूरी घुरकाके पिलानेसे कंपवायु मिटतीहै ।

संख्या ( ४२० )

( सं० ) लताकस्तूरिका, कस्तूरीलतिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मुश्कदाना	मुश्कदाना	लताकस्तूरी	मुसकदाना	लताकस्तुरी	मुसकदाना	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		मुश्कदाना		Hibiscus Abelmoctus & moschatus	Musk melon	

स्थान—लताकस्तूरी हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें होती है।

पहिचान—इसके बीज सुगंधयुक्त, चरपरे और वृक्के आकारवाले होते हैं। इनको चुगटीमें मलनेसे इनमें तीक्ष्ण गंध उत्पन्न होजाती है। इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ६॥ तोले सुगंधयुक्त तत्व और राल जैसा पदार्थ निकलताहै।

प्रयोग—( १ ) लताकस्तूरी—मधुर, वृष्य, शीतल, कडवी, तीक्ष्ण और पचनेमें हल्कीहै। इसके बीज—शीतल, रूक्ष, बलवर्द्धक और पेटकी पीडा मिटानेवालेहैं ( २ ) इसकी जड और पत्तोंका चेष निकालके मूत्रकुच्छ्रवाले रोगीको पिलाना चाहिये ( ३ ) इसके बीज उत्तेजक और वाइटे मिटानेवाले हैं ( ४ ) स्नायुजालकी निर्वलता, स्त्रियोंका आवेशका रोग, थोड़ी मंदाग्नि आदि रोगोंमें यह काममें आतीहै ( ५ ) इसके ताजे पत्तोंका रस पिलाने से ज्वर छूटता है ( ६ ) इसके रस में मधु मिलाके पिलाने से सूखी खांसी मिटतीहै ( ७ ) खांसी मिटानेकेलिये इसके पंचाग को पीस पुन्डिस बनाके छातीपर बांधना चाहिये ( ८ ) औषधिका चरपरापन मिटानेके लिये इसके बीजोंका चेष अच्छाहै ( ९ ) ज्वरकी दाह मिटानेके लिये इसकी जडका चेष पिलाना चाहिये ( १० ) इसके पंचागका धूम्रपान करानेसे स्वरभंग मिटताहै ( ११ ) इसके बीजोंको चूसनेसे गलेका सूखना मिट जाताहै ( १२ ) खाडको साफ करनेके लिये इसके पत्ते काममें आतेहै।

—१०३—

संख्या ( १४२१ )

( सं० ) मेथी, मेथिका, प्रीतबीजा, बहुपत्रिका ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	उड़ाली	पंजाबी	तेलुगु
मेथी	मेथी	मेथी	मेथी	मेथी	मेथी	मेथुलु
द्वानिडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लटिन	अंग्रेजी	
वेदियं	मैथ्या	हुलमह	शमवलीद फरीकह	Trigonella Foenum graecum	The fenugreek or fenugraec	

स्थान—मेथी—हिन्दुस्थानके बहुत से भागोंमें बोई जाती है ।

प्रयोग—(१) मेथी—चरपरी, उष्ण, रसमें कड़वी, दीपन, रुक्ष, रोचक, हृद्य, वातनाशक और पचनेमें हल्की है ( २ ) यह मदाग्नि और पेटकी शूल मिटाती है, पुरुषार्थ और बल बढ़ाती है ( ३ ) बालरु होनेके पीछे स्त्रियोंका अतिसार मिटानेके लिये मेथीदानेको घी से चुपड सेरुके फकी देते है ( ४ ) गुडमें मेथीका पाक बनाके खिलानेसे गठिया मिटती है ( ५ ) मेथीके पत्ते और मेथीदाने उष्ण, रुक्ष, फोडेको पकानेवाले, साररु और मूत्रवर्द्धक है ( ६ ) कष्टसे मासिक धर्म होनेको अथवा मासिकधर्मके समय रजके रुम निकलनेको मिटाती है ( ७ ) जलंधर, पुराना, कास, तिल्ली और यकृतकी अनुचित वृद्धिको घटाती है ( ८ ) इसके पत्तोंका पुण्डिस बाधनेसे बाहिर और भीतरकी शोध उतरती है ( ९ ) अग्निसे जलेहुएकी दाह मिटानेके लिये मेथीके पत्तोंका लेप करना चाहिये ( १० ) इसका लेप करनेसे बालोंका गिग्ना बन्द होजाता है ( ११ ) मेथीदाने का तेल कई प्रयोगोंमें काम आता है ( १२ ) मेथीदानेको सेक, उनका फाय करके पिलानेसे आमातिसार मिटता है ( १३ ) मेथीदानेका बफारा देनेसे माटी की पीडा मिटती है ( १४ ) इनको गुडके साथ ओटाके पिटानेसे पेटकी शूल और आभान मिटता है ( १५ ) मेथीदानेका लपटा बनाके चटानेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ता है ( १६ ) इसके पत्तोंका ठंडा लेप करनेसे दाह मिटती है ( १७ ) पत्तोंको दर्दाईकी तरह घोट दानके पिलानेसे अन्तरदाह मिटती है ( १८ ) पत्तों के खरसमे सधानमरु मिलाके पिलानेसे प्रिरेचनके एक दो वेग होकर पित्तके विकार मिटजाते है ( १९ ) मेथीदानेका लपटा उत्तेजक और बलवर्द्धक है ( २० ) मेथीदानेको दूधमें ओटाके पिलानेसे अर्शका खरि बन्द होता है ( २१ )

मेथीके पत्तोंको घीमें तलके खिलानेसे आम्रातिसार मिटताहै ( २२ ) पत्तोंका पुल्टिस बनाके बाधनेसे चोटकी सूजन उतरतीहै ( २३ ) मेथीदानेके आटेका उद्घर्तन ( पीटी ) करनेसे शरीरका रंग सुधरताहै ( २४ ) मेथीदानेका काथ पिलानेसे अर्श मिटताहै ( २५ ) इसको दूधमें पीस छान गुनगुना करके कान में टपकानेसे कानसे पीपका बहना बन्ध होताहै ( २६ ) मेथीदाने और जौके आटेको सिरकेके साथ पीस गालों पर पतला लेप करनेसे सूजन उतरतीहै ( २७ ) मेथीदाने और असालूको पीसके लेप करनेसे वद बैठ जातीहै ( २८ ) मेथीदानेके काथमें शहद मिलाकर पीनेसे छातीके पुराने रोग मिटतेहैं ( २९ ) मेथीदानेका कढीमें छोंकन देतेहैं और अचार आदिके मसालेमें ढालतेहैं । इस के बीजोंमें से पीला रंग निकाला जाताहै । १०० तोले मेथीदानेमें से ६ तोले गाढा तेल निकलताहै ।

संख्या ( ४२२ )

( सं० ) वनमेथी, तिक्तशाका, स्वर्णपुष्पी, शेलुका,

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मनुहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मेथो	वनमेथी	रानी मेथी	रान मेथी	वनमेति		
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Melilotus parvifloral		
				Trifolium indicum		

स्थान—वनमेथी—चम्बई, बंगाल अहाता, संयुक्त प्रदेश, राजपूताना और पंजाब आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै ।

प्रयोग—( १ ) अँतोंके उपद्रवमें बहुधा बच्चोंके अतिसारमें इसका लपटा बनाके पिलातेहैं ।

संख्या ( ४२३ )

( सं० ) मेपशृङ्गी, अजशृङ्गी, विपाणी, मेघबल्ली ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मीढाशिगी	मेढाशिगी	मेढाशिग	मेढशिगी	मेढाशिगे	मेढासिही	चिट्टिमुट्टि
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
वट्टचिरुप्पि	कुरुटगे			Gymnema sylvestre Periploca sylvestris		

स्थान-मेढाशिगी-मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें कोंकनसे द्रावनकोर तक होती है।

प्रयोग-(१) सर्पके काटे हुए मनुष्यको इसकी जड़का काथ पिलाते है (२) इसकी जड़को घिसके सर्पके दंशपर लगाते है (३) इसके पत्तोंको चाबके चूसनेसे जीभ ऐसी होजाती है कि उसको मिट्टासका ज्ञान नहीं रहता है और जबतक इसके पत्तोंका जीभ पर पूरा असर न हो तब तक जीभ पर नोन जैसा स्वाद बना रहता है, इसमें जीभको किसी पदार्थके कड़वापनका भी ज्ञान नहीं होता है। जो कुनैन आदि कड़वी चीजभी खिलाई जाये तो उसका स्वाद मिट्टी जैसा आता है, अर्थात् इससे जिह्वाको किसी रसका ज्ञान नहीं रहता है।

संख्या (४२४)

( सं० ) मौक्तिकं, मुक्ता, शौक्तिक, अम्भः सारम् ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गोती	गोती	गोती	गोती	मुक्ता	गोती	मुत्त्यमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
मुत्तु	मुत्तु	लोलो	मरवारीद		Pearl	

प्रयोग--( १ ) ये मधुर और शीतल होते हैं, नेत्ररोग, विष, राजयक्ष्मा कफ, पित्त, क्षय, कास, श्वास, मंदाग्नि, दाह और निर्वलताको मिटाते हैं ।

बल वीर्य और आयुर्दाको बढ़ातेहैं और शरीरको पुष्ट करतेहैं । अम्लपित्तमें इनका प्रयोग कियाजाताहै ( २ ) इनको पीसके अजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योतिबढ़तीहै ( ३ ) जब ये सीपमें गर्भकी तौरपर रहतेहैं तब इनका लेप करनेसे कोष्ठ भिटेजाताहै ( ४ ) इनको पीसके कुचलेके साथ देनेसे कंषवायु मिटतीहै ( ५ ) इनको सोनेके बर्कके साथ चटानेसे हृदय का अधिक धडकना भिटे जाताहै ( ६ ) इनको गिलोय सतके साथ चटानेसे पित्तविकार मिटतेहैं ( ७ ) इनको हीरादिवखनके साथ चटानेसे तथा इलायचीके अर्कके साथ देनेसे रक्तस्राव मिटताहै ।

संख्या ( ४२५ )

( सं० ) यक्षद्रुमः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलज्ञी
गरजन तेल	गरजन तेल	गर्जन	गर्जन	गर्जन		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Dipterocarpus tumbinatus D laevis	Kanyin oil	

स्थान—गरजनके वृक्ष पूर्वी बंगाल, चटगांव, ब्रह्मा और सिंधुपुर, आदि कई स्थानोंमें होतेहैं ।

पहिले दान—हिन्दुस्थानमें यह सबसे ऊंचा वृक्षहै । इसकी ऊंचाई प्रायः २५० फुटतक होतीहै । इसकी पेदबकी गुलाई १५ से २५ फुटतक होतीहै । इस वृक्ष के पत्ते पतझड़में नहीं गिरतेहैं ।

गरजनका तेल कई प्रकारका होताहै । इसका गाढसे गाढा तेल मधु नैसा और पतलेसे पतला तेल तेल जैसा होताहै । गाढे तेलका रंग पीलापन लिये हुए भूरा और पतले तेलका रंग थोडा भूरा, लाल, ललाई लिये हुए भूरा या चन्दनिया होताहै । इनमें पतला कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंगका तेल सबसे अच्छा होताहै ।

प्रयोग—( १ ) नवीन और पुराने मृत्रकृच्छ्र में इसके तेलकी १० से ३० तक वृद्ध दूध चाबलोंके मांड, या पतले लपेटमें, अथवा किसी चपदार चीजमें, डालके, दिनमें दो तीन बेर देना चाहिये ( २ ) कई प्रकारके कोठों में इसका प्रयोग इस रीतिसे करना चाहिये कि प्रातःकाल उठकर शरीरपर जहा जहा दाग हों उनको सूखी मिट्टीसे खूब रगड़ना चाहिये, पीछे ७ बजे इसके तेलका दूधिया पानी बना, उसको पिलाकर सब शरीर पर दो घंटे तक इसके तेलका मर्दन करना चाहिये, फिर भोजन करके दुपहर पीछे ३ बजे उक्त दूधिया पानी पिलाके वैसेही दो घंटे तक इसके तेलका सब शरीर पर मर्दन करना चाहिये। जो इसके पीनेसे अधिक विरेचन होजाय तो इसकी मात्रा कम कर देनी चाहिये। इसके लगानेकी औरभी कई रीतियाहैं परन्तु सबसे उत्तम रीति यहीहै जो ऊपर लिख आयेहै। यह मर्दन चट्टोंको साफ करनेके लिये सावुन और भुंसे से अच्छाहै इस प्रयोगमें जो दूधिया पानी बनाके नहीं भी पिलाया जावे तबभी रोगी निरोग हो जाताहै। यह इकल्ला काम नहीं देवेतो इसके पीने चार मासे तेलमें चालमुगरेके तेलकी ५ से १० वृद्ध तक मिलाके देना चाहिये ( ३ ) इसके तेलका दूधिया पानी बनानेकी यह रीतिहै कि बंबूलके गोंद को पानीमें गला उसमें इस तेलको मिलाके खूब हिलानेसे पानीके रूप हो जाताहै अथवा इसके तेलमें बराबर चूनेका पानी मिलाके हिलानेसे दूधिया पानी बन जाताहै। यह लेप करनेके काममें आताहै अथवा सवा सवा तोले दूधिया पानी दिनमें दो तीन बेर पिलाना चाहिये ( ४ ) एक तोले गरजनके तेलमें ३ तोले चूनेका पानी मिलाके त्वचाके पुराने रोगों पर और कोढ़पर लगाना चाहिये ( ५ ) यह तेल कृमि सम्बन्धी कुष्ठमें बहुत उपकारी है ( ६ ) चर्म दल कुष्ठ पर इसका मर्दन करनेमें बहुत लाभ होताहै ( ७ ) इस तेलमें रस कपूर और गंधक मिलाके मर्दन करनेसे दाद मिटताहै ( ८ ) इस तेलके लगानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहैं ( ९ ) त्वचाके सब रोगोंमें इस तेलका प्रयोग किया जाताहै, परन्तु जिन लाल चाठोंपर सफेद छिलकोंके पुड़तके पुड़त जम जातेहैं या जो सफेद चाठे होतेहैं, उनपर इस तेलके मर्दनसे बहुत लाभ होताहै। केवल इसी तेलके मर्दन करनेसे ये दोनों रोग मिटभी जातेहैं। ( १० ) इस तेलके लगानेसे खजली मिटतीहै ( ११ ) कुष्ठरोगके आरम्भमें



इस तेलको पिलाने और लगानेसे उसका बढ़ना रुक जाता है और 'बढी हुई हालतमें भी लगाने और पिलानेसे उसकी शान्ति हो जाती है' ( १२ ) धीर्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंमेंसे किसी प्रकारके उपद्रववाले बहावको रोकनेके लिये इसको 'घनेके पानीके साथ लगाना और पिलाना चाहिये ।'

संख्या ( ४२६ )

( सं० ) यमानी, दीपकः, दीप्यः, उग्रगंधा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलज्ञी
अजवाण	अजवान	अजगा	अँवा	यजवान अँयान्	अजवाइन	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		कमूनेमुलूकी	ननख्वाह जीनान	Carum Gopticum, Lignisticum, Ajoain	Lorage, Bishop's wood Ajoain seeds	

स्थान—अजवान हिन्दुस्थानमें सब ठौर बौई जाती है ।  
इसका तेल निकालनेकी यह रीति है कि इसको पानीमें ओटानेसे, अथवा भभकेमें इसका अर्क खींचनेसे उस अर्कके ऊपर, इसका-२५-वाँ-भाग तेल निकल आता है और उसी अर्कपर एक पदार्थ आके जम जाता है उसको अजवाइन के फूल कहते हैं ।

प्रयोग—( १ ) अजवायन-इण, तीक्ष्ण, दीपन, पाचन, रोचक, चर-परी, कडवी, पचनेमें हल्की, हृद्य और सारक है; ( २ ) इसके तेलकी दो बूंदें नागरवेलके पानमें लगाके खानेसे मन्दाग्नि भिदती है और आवश्यकता होवे तो इसकी मात्रा बढ़ा देनी चाहिये; ( ३ ) दालचीनीके एक मासे चूर्णमें इसके तेलकी बूंदें डालकर फकी देनेसे शून भिदती है ( ४ ) १॥ मासे लशुनाएकमें इसके तेलकी बूंदें डालके फकी देनेसे अजीर्णसे पैदा हुई त्रिपूचिका भिदती है ( ५ ) अजवानके एक या दो रती फूल सोंफके अर्कके साथ देनेसे अफारा भिदता है और इसीमें सोंफके तेलकी ५ बूंदें डालके पिलानेसे पेटकी शूल भिदती है ( ६ ) इसके फूल और इसका तेल मिलाकर मर्दन करनेसे वाईटे भिद-

तेहें ( ७ ) विपूचिकासे पैदाहुई शरीरकी शिथिलताको मिटानेके लिये इसका अर्क पिलाना चाहिये ( ८ ) इसके साथ दूसरा उतेजक अर्क मिलाके पिलाने से अधिक लाभ होताहै ( ९ ) इसका अर्क पिलानेसे आमोतिसार मिटताहै ( १० ) पेटका अफारा मिटानेके लिये इसका अर्क पिलातेहै ( ११ ) विपूचिकाके प्रारम्भमें इसका अर्क पिलातेहै ( १२ ) १॥ मासे अजवाइनकी आगपर गर्मकर मलमलके कपडेमें ढाली बांधके सूंघनेसे डीकें आकर और नाक बढकर मस्तकका भारीपन मिटकर प्रतिश्यायका वेग कम हो जाताहै ( १३ ) ३ मासेसे ६ मासे तक अजवाइनमें एक या १॥ मासे काला नमक मिलाके उष्ण जलके साथ फकी देनेसे अफारा मिटताहै ( १४ ) इसको और सोंठकी चार पहर भिगो पीस ज्ञान गर्मकर नमक डालके पिलानेसे मन्दाग्नि मिटतीहै ( १५ ) अजवायन, कालीमिरच और नमकको पीस गर्म जलके साथ प्रातःकाल फकी देनेसे पेटकी शूल, अफारा और मन्दाग्नि मिटतीहै ( १६ ) लवें बच्चेके पेटकी शूल मिटानेके लिये और चैतन्य रखनेके लिये इसका अर्क पिलातेहै ( १७ ) गठिया मिटानेवाली औषधियोंमें अजयान अवश्य मिलाना चाहिये ( १८ ) लवें बच्चेकी उल्टी और दस्त मिटानेके लिये उसकी माके दूध के साथ अजवान देने चाहिये ( १९ ) अजयानकी फकी लेनेसे आलस्य मिटताहै ( २० ) मदकारी, पदार्थोंके सेवनका स्वभाव और कामोन्माद मिटानेके लिये अजवाइन खिलाया करतैहै ( २१ ) अजवानको पानमें रख, चाव २ के पीरुनिगलनेसे सूखी, खांसी मिटतीहै ( २२ ) आवश्यकता अनुसार इसकी फकी देनेसे, या हिम, फाट या काथ बनाके पिलानेसे अतिसार मिटताहै ( २३ ) ३-मासे अजवानकी, नित्य फकी लेनेसे कोयले या मिट्टी खानेका स्वभाव छूट जाताहै ( २४ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे जोंडोंकी पीडा मिटतीहै ( २५ ) घी, खांड या पुराने, गुडके साथ इसके मोदक बनाके खानेसे जुधा और पाचन शक्ति बढतीहै ( २६ ) जितनी अजवान खा सके उतनी दोनों समय खिलाने से तिखी कम होजातीहै ( २७ ) अजवानको पीस ज्ञानःशहदमें मिलाके लेप करनेसे पाटलकी पीडा मिटतीहै ( २८ ) जो औषधियें अपने बुरे स्वादसे खाली होउह या पेटमें मरोडी (मठोठी) पैदा करतीहैं, उनमें अजवान मिलाके देनेसे उनके ये दोनों उपद्रव मिटजातेहैं ।

संख्या ( ४२७ )

(सं०) पारसीकयमानी, तुरुष्का मदकारिणी, यावनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खुरासाणी अजवाण	खुरासानी अजवायन	खुरामाणी अजमा	खुरामुनी आवा	खोरामानी यमानी	खुरासानी अजवाइन	खुरासानिवागमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कुरोशानि बोम	खुरासानि बोम	तेरालबज	तुरुम्बंग	<i>Hyoscyamus niger</i>	<i>Manbante</i>	

स्थान—खुरासानी अजवायनके वृक्ष हिमालयमें कश्मीरसे गढ़वाल तक होते हैं ।

प्रयोग—( १ ) यह उष्ण, पाचक, रुच्य, पचनेमें भारी, ग्राही, चरपरी, मोदक, मूर्च्छा पैदा करनेवाली और पीड़ा मिटानेवाली है ( २ ) रक्तपित्तकी शोथ, गठिया, छोटे जोड़ोंकी सूजन और दुखती हुई आंख पर इसका लेप करना चाहिये ( ३ ) इसको रालके साथ पीसके दुखते हुए दांतकी खोखलमें रखना चाहिये ( ४ ) गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेकेलिये इसकी बत्ती बनाके योनीमें रखना चाहिये ( ५ ) इसके रसकी या इसके बीजोंको १६ गुने जलमें थोटा एक भाग रख छान उसकी बूंदें आंखमें डालनेसे आंखकी पीड़ा मिटती है ( ६ ) यह उत्तेजक, ग्राही और पाचनशक्ति बढ़ानेवाली है ( ७ ) इसके पंचागमेंसे पत्ते, हेरीटहनिये और बीज औपधिके प्रयोगमें आते हैं ( ८ ) इसके पत्तोंका टिंचर बनाके उसकी २० से ६० बूंद तक देनी चाहिये । और उनका सार २॥ से ५ रती तक देना चाहिये ( ९ ) उन्मादके वेग, निद्रानाश और स्नायुसम्बन्धि शिथिलता मिटानेकेलिये इसका प्रयोग करते हैं ( १० ) कास और श्वासके प्रारम्भमें इसका प्रयोग किया जाता है ( ११ ) यह सारक है ( १२ ) इसकी गुठमें गोली बनाके देनेसे पेटकी वायुकी पीड़ा मिटती है ( १३ ) वीर्य और मूत्र सम्बन्धी अंगोंकी दाह मिटानेकेलिये इसका प्रयोग करते हैं ( १४ ) स्नायु पीड़ा, पेशियोंकी सूजन, फोड़ोंकी दाह और अर्श पर

सका लेप करना चाहिये ( १५ ) इसका तेल बनाके मर्दन करनेसे वाइटे मि-  
तेई ( १६ ) प्रातःकालके समय पहिले थोडा गुठ खिलाके फिर इसकी फकी  
[सी प्राणीके साथ देनेसे पेटके कीड़े निकलजातेहैं ।

संख्या ( ४२८ )

( सं० ) वनयमानी ।

ारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलंगी
		छुवारीअज- माद	किरामणी आवा	वनयमान		
राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Seseli indicum</i> <i>Ligusticum</i> <i>indicum</i>		

स्थान—वनयमानी हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होतीहै ।

प्रयोग—(१)—यह कटु, तिक्त, उष्ण, दीपन, लघु, और वृष्यहै । त्रिदोष,  
मजीर्ण, कृमि शूल और आमका नाश करतीहै ( २ ) इसकी फकी लेनेसे  
पेटकी पीडा मिटतीहै ( ३ ) आंतोंके कीड़े मारनेकेलिये वनयमानीका प्रयोग  
बहुत अच्छाहै ( ४ ) इसकी मात्रा सवामासेसे ३॥॥ मासे तकहै ( ५ ) यह  
उत्तंजकहै और आमाशयकी पीडाको मिटातीहै ।

संख्या ( ४२९ )

(-सं० ) यव, मेध्यः, सितशूकः, कंचुकी ।

ारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जो	जौ, जव	जव	जव, यव	यव	जौ	यवलु
राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
यव	यव	श्यहर	जश्रो	<i>Hordium</i> <i>hexastichum</i>	Barley	

स्थान—हिन्दुस्थानमें इनकी खेती होती है। १०० तोले जवोंमेंसे ६३ तोले मैदा निकलती है। इनमें तेल बहुत कम निकलता है।

प्रयोग—( १ ) ये—कपेले, मधुर, शीतल, लेखन, सारक, मृदु, विपाक में चरपरे, पचनेमें भारी और रुचि है बुद्धि, अग्नि, वात, वल, कान्ति और मल को बढ़ाते हैं, रक्त और पित्तको सुधारते हैं। ये अभिष्यन्दी नहीं है ( २ ) स्वरभंग, कंठ और त्वचाके रोग, कफ, पित्त, मेद, पीनस, श्वास, कास, उरुभ्रंभ तृषा, प्रमेह और दाहको मिटाते हैं। ब्रणवालेके लिये पथ्य है और औषधियोंकी चरपराहट मिटाते हैं ( ३ ) ये शीघ्रतासे पचजानेके कारण रोगियोंके पथ्यमें बहुत काम आते हैं ( ४ ) जिसके पेटमें मन्दाग्निसे पीडा रहती हो उसको जवोंका लपटा पिलाते हैं ( ५ ) इनके पत्तोंकी भस्मके पानीका बनाया—दुग्धा—शर्बत ठंडा होता है ( ६ ) इनके पंचांगकी भस्मका जल अजीर्णमें पिलाते हैं ( ७ ) इनके आटेको पानीमें घोलकर मस्तकपर लेप करनेसे उसकी पित्तकी पीडा मिटती है ( ८ ) इनकी और गेंदूकी भस्मको ओटाके—कुल्ले करनेसे दंतपीडा—मिटती है ( ९ ) इनको कूट पानीमें भिगो दें जव पानी नितर जावे तब उस नितरेहुए पानीको गुनगुना करके गरारा करनेसे कंठकी सूजन उतरती है ( १० ) इनकी पतली खिचड़ी बना उसमें मधु मिला, ठही करके खानेसे ज्वर, छटि, पित्तशूल दाह और तृषामें बहुत लाभ होता है।

संख्या ( ४३० )

( सं० ) यवक्षारः, पाक्यः, यवजः, यवाग्रजः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जोखार	जवाखार	जवखार	जवखार	यवक्षार	जौखार	यवक्षारसु
डाविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
यवक्षार	यवक्षार				Carbonate of Potash	

प्रयोग—( १ ) यवक्षार—शीतल, स्निग्ध, पचनेमें हल्का, सूक्ष्म, सारक,

घरपरा और अग्नि दीपक है (२) हरड़की छालके चूर्णमें यक्ष्मर मिला, मधुके साथ चटानेसे अम्लपित्त मिटता है (३) जोखार और मिश्रीको सोंफके अर्क के साथ पिलानेसे मूत्रका विरेचन होता है (४) इसकी अधिक मात्रा लेनेसे विष जैसे उपद्रव पैदा करता है (५) ३ मासे सोंफके चूर्णमें १॥ मासे जोखार मिला गर्मजलके साथ फक्की देनेसे पेटकी पीडा मिटती है (६) हरड़के २ मासे चूर्णमें १ मासा जोखार मिला उष्ण जलके साथ फक्की देनेसे बद्धकोष्ठ मिटता है (७) हरड़ और रोहीडेकी ६-६ मासे छालका काथ कर उसमें ५ पीपलका चूर्ण और ३ मासे जोखार डालके पीनेसे तिखी और गुन्म मिटता है (८) ३ मासे जोखार और ६ मासे मिश्रीको पाव दूध और पाव पानीकी लस्सीके साथ लेनेसे मूत्रनालीकी दाह मिटती है (९) जखारमें बराबर मिश्री मिला के लेनेसे सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र मिटते हैं (१०) ३ से ७ मासे जोखार दहीमें पिलाके खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ।

संख्या ( ४३१ )

( सं० ) यशदं, रीतिहेतुः श्वेतपटलम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जस्त	जस्त	जस्त	जस्त	दस्ता	जसद	तेलसतु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
सस्त, तुच				Zincum	Zinc	

स्थान-यह मद्रास, बंगाल, राजपूताना और पंजाब आदि कई स्थानोंमें खानोंसे निकलता है ।

जस्ता शुद्ध करनेकी यह रीति है कि इसको गला २ के गायके दूधमें २१ बेर बुझानेसे शुद्ध हो जाता है ।

इसकी अस्म करने की रीति—चूल्हेपर मिश्रीका खपरा चढ़ा उसमें जस्तको गला, नीमकी लकड़ीके घोंटेमे घोंटे २ भस्म होजाय, तब अग्निपर

से नीचे उतार, कपड़ छानकर, तिन जला हुआ रहा होवेतो उसको फिर बैसे ही उक्त रीतिसे जला, कपड़ छानकर लेवे, जग सब भस्म कपड़ छान हो जावे तब उसको पत्थरकी खरलमें डाल त्रिफलाके काथ, गवारपाठे और जलभंगरे के रसमें खरलकर, टिकडी बना, सराव सुंपुटमें रख, कपड़ मिट्टीसे बन्धकर, गजपुटमें रखकर आंच देवे, ऐसे एक एक औषधिके रस तथा काथकी बचीस बचीस भावना और गजपुटकी आंच देवे, पीछे सब औषधियोंको मिलाके उनके रसकी एक भावना और एक गजपुटकी अंच देकर, फिर पंचामृतकी एक भावना और गजपुटकी अंचदे खरलमें घोट शीशीमें भरकर रखदेवे। इसकी मात्रा धरतीकी है।

प्रयोग—(१) इसकी भस्म-रूपेत्नी कडवी और शीतल है। कफ, पित्त, प्रमेह, पांडु और श्वारा रोगको मिटाती है और नेत्रोंको बहुत हितकारी है (२) इसको पानमें रखकर खानेसे पित्त और कफके प्रमेह मिटते हैं (३) अरणीकी जड़की छालके चूर्णके साथ खानेसे मन्दाग्नि मिटती है (४) तज, पत्रज, और छोटी इलायचीके दानेके चूर्णके साथ खानेसे त्रिदोष मिटता है (५) चांदलोंके धोवनके जल (तन्दुलोदक) में छुहारको घिस उसपर इसकी भस्म बुरकाके पिलानेसे पित्त ज्वर छूटता है (६) अजवान और लोंगके चूर्णके साथ देनेसे शीतज्वर छूटता है (७) अदरकके ६ मासे रसको गर्मकर ठंडा होने पर उसमें ६ मासे मधु मिला इसकी भस्म बुरकाके चाटनेसे श्वास रोग मिटता है (८) मुनक्काके साथ देनेसे रुधिर बढ़ता है (९) पुराने घृतके साथ इसका अंजन करनेसे आंखोंके पित्तके रोग मिटते हैं (१०) इसके फूलोंको घीमें मिलाकर गर्मीके फोड़े फुन्सी और रगडकी चांदीपर लगाते हैं (११) बच्चोंके फानोंके पीछे या नीचे जो चांदी पड़ जाती है अथवा हाथ पैरोंकी संधियों जो चांदी पड़ जाती है उसपर इसके फूल बुरकाते हैं (१२) सरसोंके तेलके साथ इसका लेप करनेसे पित्तकी सूजन उतरती है (१३) घन्दनके तेलके साथ इसकी भस्म देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (१४) गोखरू के शर्वतके साथ देनेसे मूत्र अधिक और शुद्ध हो जाता है (१५) काँचबीज और मिथ्री के साथ देनेसे प्रमेह मिटता है (१६) हीरा दक्खनके साथ देने से रक्ताशका रुधिर बन्ध होता है (१७) बिलके मुरब्बे या शर्वतके साथ देनेसे रक्तातिसार मिटता है।

संख्या ( ४३२ )

( सं० ) खपरितुल्यं, रसकं, चक्षुष्यं, अमृताल्पन्नम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
खपरियो	खारिया	खापगियु	कलखापरी	खापर	खपरिला	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		तूतिया	सगयसरी	Zinci sulphidum	Impure calamine Black jael Zinc ore	

खरपरियेको शुद्ध करनेकी रीति—इसके छोटे २ टुकड़े कर कपड़े की पोदलीमें बांध गोमूत्रमें ७ दिन तक ढोलायंत्रमें पचानेसे शुद्ध हो जाताहै ।

प्रयोग—( १ ) यह चरपरा, सलौना, कपेला, वामक, पचनेमें हल्का, लेखन, शीतल, भेदन करनेवाला और नेत्रोंको हितकारीहै । कफ, पित्त, विष, रुधिरविकार, रुग्ण, प्रमेह, क्षय, जीर्णज्वर, पाह, शोथ, गुल्म, योनीरोग, रक्त गुल्म, मटर, सोमरोग, अर्श, अतिसार और कड़को मिटाताहै ( २ ) अशुद्ध खपरियेका सेवन करनेसे विशेष करके वमन और चकर आतेहैं ।

संख्या ( ४३३ )

( सं० ) यष्टिमधु, मधुयष्टिका, मधुखवा, मधुकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
मलहटी	मुलहटी	जेठीमध	ज्येष्ठीमध	यष्टिमधु	मुलहटी	यष्टिमधुरुम्
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
आतिमधुर	आतिमधुरा	असलुसूस	येवेमहक	Glycyrrhiza glabra	Liquorice root	

परिचान—मुलहटीकी जड़ लम्बी और गोल होतीहै, उसमें कई शाखें फूटतीहैं, और उसकी गुलाई १ से २॥ या ३ इंच तक होतीहै, यह खरदरी



और लचकदार होती है, इसका बाहिरका भाग कुछ सफेदी लिये हुए भूरा होता है और भीतरका भाग पीला होता है, इसका स्वाद मीठा, कुछ चरपरा और कड़वा होता है, यह चपदार होती है, इसकी गंध अच्छी नहीं होती है। इसको छील के काममें लानी चाहिये।

प्रयोग—( १ ) यह औषधियोंकी चरपराइट मिटानेवाली, पचनेमें भारी, वृष्य, रोचक, शीतल और मीठी होती है ( २ ) पित्तशोथ, कफ, गलेका भारीपन, फुत्ताधासी और तृषा आदि रोगोंको मिटाती है ( ३ ) लाल चन्दनके साथ इसको घिसके लगाने से दाह मिटती है ( ४ ) काथ, तेल और घी बनाने की कई औषधियोंमें यह मिलाई जाती है ( ५ ) यह उष्ण, रूक्ष, फोडेको पकानेवाली, मूत्रवर्द्धक और रचक है विगडेहूए दोपको सुधारती है और श्वास, खांसी और मासिकधर्मके कष्टको मिटाती है ( ६ ) बादीकी शूलको मिटानेके लिये इसका काथ पिलाना चाहिये ( ७ ) नेत्रोंकी ज्योतिको धलवान करनेके लिये इसको काथसे आंखोंको धोनी चाहिये ( ८ ) सिरमें जलीहुई ठौरपर इसके पत्तोंका पुलिटस बांधना चाहिये ( ९ ) इसका पुलिटस बांधनेसे पैर या कांखकी दुर्गंध मिटती है ( १० ) इसका काथ पिलानेसे श्वासकी नलिका साफ हो जाती है ( ११ ) इसके पंचागमेंसे इसके बीजोंमें सबसे अधिक गुण है ( १२ ) मुंहके छाले मिटानेके लिये मुंहलटीको मुंहमें रखना चाहिये ( १३ ) रूक्ष खांसीमें कफ पैदा करनेके लिये मुंहलटीके सतको मधुके साथ चटाना चाहिये ( १४ ) इसको पानीसे पीस उसमें रुईका फोया भिगोके, नेत्रों पर बांधनेसे नेत्रोंकी लालाई मिटती है ( १५ ) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे दिक्की वन्ध होती है ( १६ ) इसको सुंघानेसे तृषा मिटती है।

संख्या—( ४३४ )

( सं० ) यावनालः, शिखरी, वृत्ततरुडुलः, चेत्रेजुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
जुवार	ज्वार, ज्वारी	जुवार	जोधळ	जुवारी	ज्वार	जोगलु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
रोल	जोळा	जुरत	गोवरसेइन्दी	Sorghum vulgare Holcus sorghum	The Indian or great millet-Guinea corn

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत वाई जातीहै।

प्रयोग—(१) सफेद ज्वार—मीठी, बल कारक, वृष्य और रोचकहै  
त्रिदोष, गुल्म, अर्श और ब्रणोंको मिटातीहै। (२) लाल ज्वार—कपेली, उष्ण,  
ग्राही और विदाही होतीहै। (३) यह वादीको मिटातीहै और मूजन पैदा करतीहै।  
(४) शरद् ऋतुमें पैदा होनेवाली ज्वार—पिच्छिल, पचनेमें भारी, शी-  
तल, मधुर, वृष्य और बलवर्द्धकहै और शरीरको पुष्ट करतीहै। (५) ज्वारकी  
गर्म रोटीको दहीमें चूर कर ढक रखें जब बिलकुल ठंडी होजावे तब खिला-  
आमातिसार मिटताहै। (६) रात्रीमें इसके आटेकी खड़ी बना रखे प्रातःकाल  
उममें कुछ सफेद जीरा और छाछ मिला कर पीनेसे अंतरर्दाह मिटतीहै। (७)  
इसकी फूली ठंडी और कफ बढ़ानेवाली और खानेके काममें आतीहै।

संख्या (४३५)

( सं० ) यथिका, गणिका, अम्बठा, चूथी ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजावी	तैलङ्गी
जूही	जूही	जूई	खतजूई	जूई, युइ	जूही	नदिवट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Jasminum auriculatum		

गुण—(१) जूही—मधुर, शीतल, कड़वी, विपाकमें चरपरी, पत्रनेमें  
हल्की, कपेली, हृदयको तल देनेवाली, घात और कफ पैदा करनेवालीहै।  
पित्त, दाह, तृषा, कई प्रकारके त्वचाके रोग, रुधिरविकार, मुख, दंत, नेत्र और  
मस्तकके रोग, त्रिप और शर्कराशमरीको मिटातीहै।

संख्या ( ४३६ )

( सं० ) स्वर्णयुथिका, स्वर्णयूथी, हेमपुष्पी, मनोहरा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनजूही	पीलीजूही	पीळीजूई	पिवळीजूई	स्वर्णजूइ	स्वर्णजूही	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	

स्थान—सोनजूही हिमालयमें कश्मीरसे नेपालतक, दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनमें होती है और हिन्दुस्थानके सब वागोंमें बोई जाती है। इसकी जड़में पीला रंग निकाला जाता है। इसके पुष्पोंसे सुगंधित तेल बनाया जाता है।

प्रयोग—( १ ) इसकी जड़का लेप करनेसे दाद मिटते हैं ( २ ) इसका दूधिया रस या इसकी छालमें छेद करनेसे जो दूध निकलता है उसको पुराने नामूर और बिगडी हुई हड्डी पर या खराब जखमोंके किनारे पर लगाना चाहिये ( ३ ) इसके पुष्पोंको पीसके मलनेसे योनीका ढीलापन मिटता है।

संख्या ( ४३७ )

( सं० ) रक्तरंगा रागगर्भा, रंजका, नखरंजनी, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गँहदी	गेहदी	गेदी	भेदि	भेइदी	भेदि	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		हिन्ना		- Lawsonia alba L. inermis	Henna	

स्थान—गँहदी हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जाती है और कहीं २ अपने आपभी उगती है।

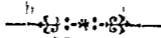
पहिचान—इसका भाड़ ६-७ फुट ऊंचा होता है, इसके पत्ते चमक-

दार होते हैं । इसकी छाँटी टहनियाँ गोल नहीं होती हैं । इसके कुछ हरे पीले रंगके बहुत सुगंध युक्त पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं । इसके २२ महीनेही पुष्प लगते रहते हैं । इसके पत्तेश्रंगतके काममें आते हैं ।

प्रयोग—(१) निर्वल मनुष्योंको मँहदीके पुष्प-सुघातेई और ललाट पर-उनका लेप करते हैं (२) इसके पत्तोंको पीसके फोड़ों पर-लेप करते हैं (३) इसके काथके कुल्ले करनेसे मुखके छाले मिटते हैं (४) पित्तशोथ और अग्नि दग्धपर मँहदीके काथमें भिगोया हुआ कपड़ा रखना चाहिये (५) मस्तककी पीड़ा मिटानेके लिये मँहदीको तेलमें पीसके लगाना चाहिये (६) जिसको शीतला निकली हो उसके पैरोंके तलवों पर इसका लेप करनेसे उसका असर आखों पर नहीं होता है (७) नख और केशोंपर मँहदी लगानेसे वे अच्छे-बढ़ते हैं (८) मँहदीके लेपमें घाव भरनेकी शक्ति बहुत अच्छी है (९) कामला और तिष्ठीरालेको इसकी छालके चूर्णकी फुकी देनी चाहिये (१०) इसकी छालका हिम मिलाने से पथरी मिटती है (११) कोढ़ और औषधि नहीं माननेवाले ट्यूब्राके रोगमें इसकी छालका काथ पिलाना चाहिये (१२) मस्तकके रोगोंमें मँहदीके बीजोंको मधुके साथ चूटना चाहिये (१३) इसके पुष्पोंका काथ पिलानेसे मस्तकपीड़ा मिटती है (१४) इसके पुष्पोंके लेपको उष्ण करके चोटपर लगाना चाहिये (१५) इसके पुष्पोंको तक्रियेमें भरके रोगीके सिरके नीचे रखनेसे उसको नींद आजाती है (१६) इसके पुष्पोंको पीसके चोटपर लगाते हैं (१७) इसके पीले और तीव्र गंधवाले पुष्प, पत्ते, और कोमल टहनियों का सार निकालकर उसकी दो मासेकी मात्रा कुष्ठी और शरीरकी प्रकृति भिगड़े हुए मनुष्योंको दिनमें दोबेर देनी चाहिये (१८) पत्तोंके स्वरसमें थोड़ा पानी मिलाके प्रमेहवालेको पिलाना चाहिये (१९) सर्दों और गर्मोंके वेगमें इसके पत्तोंका स्वरस दूधमें मिलाके पिलाना चाहिये (२०) पैरोंकी दाहमें मँहदीके पत्तोंका लेप करना चाहिये जो दूसरी औषधियाँ पैरोंकी दाह नहीं मिटासके तो इसका लेप तो अवश्यही थोड़ा बहुत शुण करेगा । इसके लेपकी यह रीति है कि ताजे पत्तोंको शिगकेके साथ पीस पुल्टिसकी तरह पैरोंके तलवोंपर बाधना चाहिये (२१) गठियाके तीव्र वेग को मिटानेके लिये मँहदीके ताजे पत्तोंको महीन पीस, रात्रिको सोनेके समय उस

औरपर गाढा लेप करना चाहिये, जबतक गाठिया नहीं मिटे, तबतक लगातार  
 लेप करते रहना चाहिये (२२) इसके पत्ते हरड़की छाल और कृत्थेको ४ पहर  
 भिगो, मल छानके, मूत्रकृच्छ्रवालेके पिचकारी देने चाहिये (२३) इसके  
 ताजे पत्तोंको नींबूके रसमें घोटके पैरोंके तलवोंमें लेप करनेसे उनकी दाह  
 मिटती है (२४) ताजे पत्तोंको पीस उनका पुल्टिस बनाके बांधनेसे सूजन  
 और पीडा मिटती है (२५) नये भरे हुए घावकी चमडीको मजबूत करनेके  
 लिये उसपर इसके ताजे पत्तोंकी टिकड़ी बाधनी चाहिये (२६) मसूडोंके असा-  
 ध्य रोगवालेको इसके पत्तोंके काथके कुल्ले कराने चाहिये (२७) सब प्रकार  
 के फोडे फुन्सियोंको इसके काथसे धोनेसे बड़ा लाभ होता है (२८) इसके  
 बीजोंकी फकी देनेसे प्रलाप मिटता है (२९) गीले या सूखे पत्तोंको पानीमें  
 पीसके शरीरपर लगानेसे शरीरकी चमचमाहट मिटती है (३०) इसके पत्तों  
 को जो कूट कर रातभर पानीमें भिगो, उनका नितग हुआ जल प्रातःकाल  
 ७ दिनतक पिलानेसे कामलारोग मिटता है (३१) इसके पत्तोंको मुंहमें रख-  
 ने और चावनेसे वादीका मुखपाक मिटता है (३२) इसके पुष्पोंको पीसकर  
 मस्तकपर लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीडा मिटती है (३३) मँहदीको पानीमें  
 भिगो उस पानीके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है (३४) इसके और एरंड  
 के पत्तोंको पीस गुनगुना कर घुटनोंपर लेप करनेसे उनकी पीडा मिटती है  
 (३५) इसके १॥ तौले पत्तोंको रातभर ऐसे पानीमें भिगो प्रातःकाल मल  
 छान उसमें थोडा चूर डालके नित्य ४० दिनतक पीनेसे कुष्ठ मिटता है (३६)  
 इसके पत्तोंको साबुनके पानीके साथ पीसकर सफेद बालोंपर लगानेसे वे काले  
 होजाते हैं (३७) इसके ४॥ मासे बीजोंको मधुके साथ चटानेसे मस्तक पुष्ट  
 होता है (३८) पत्तोंको साबुनके साथ पीसके लगानेसे घुटनेके जोड़की  
 पीडा मिटती है (३९) फटेदृष्ट हाथ पैरों पर मँहदी लगाना चाहिये (४०)  
 अग्निसे कम जलनेपर अर्थात् छाला न उटा हो तो उसपर मँहदी लगाना  
 चाहिये (४१) इसके आवसेर पत्तोंको सेर पानीमें ओटा, आधा पा-  
 नी रग छान उसमें आध सेर तिलोंका तेल डालकर ओटावे जब तेल सिद्ध  
 होजावे तब उनार लेवे। इसका मर्दन करनेसे जोड़ोंकी पीडा मिटती है (४२)  
 इसके पत्तोंका मस्तकपर लेप करनेसे आधा शीशी मिटती है (४३) इसके

बीज, शोषक और ग्राही है। इसके पुष्पोंका, इत्र खाया जाता है। इसके बीजोंमें, से तेल निकाला जाता है।



संख्या ( ४३८ )

( सं० ) रक्तवल्ली ।

भारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	पिप्पी	रगतसेहडो	खडनेल	रक्तपित्त		यरीचिरतली
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
सुरलपत्रे	पैपलीचक्का			Ventilago madraspatana V bracteata		

स्थान—रक्तवल्ली, पश्चिम प्रायद्वीपमें कोकनसे, दक्षिणकी ओर होती है।

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसका बड़ा भाड़ होता है वह बेलकी भांति वृक्ष पर चढता है। इसके छोटे पत्ते चिरने होते हैं। शीतकालमें इसके पुष्प लगते हैं। इसके एक प्रकारका गोंद लगता है। इसकी जड़की छालमें से लाल रंग निकाला जाता है।

प्रयोग—( १ ) पेट और आमाशय की पीडा मिटानेके लिये इसकी जड़की छाल, काममें आती है ( २ ) यह धलवर्दक और उत्तेजक है ( ३ ) इसका सेवन करने से मंदाग्नि निर्बलता और हल्का ज्वर मिट जाता है ( ४ ) इसकी मात्रा दस मासेसे ५॥ मासे तक की है ( ५ ) इसको कुनैनकी टौर भी देते हैं ( ६ ) इसकी छालको महीन पीस तिलोंके तेलमें मिलाके लगानेसे पाप्मा और त्वचाके दूसरे कई रोग मिटते हैं।

संख्या ( ४३९ )

( सं० ) रजत, तार, शुभ्र, चन्द्रहासम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चादी	चादी	रुपु	रुपु	रूपा	चादी	वाडि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वलिङ्ग	वेल्लि	फिज्जाह	सीम नकराह	Argentum	Silver	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंसे निकलती है।  
विना शोथी हुई चाँदी की भस्मका सेवन करनेसे पांडु, खुजली, गालग्रह, बद्धकोष्ठ और मस्त्वकशूल आदि कई प्रकारके रोग पैदा होते हैं और बल और वीर्यका नाश होता है। इसकी भस्म करते समय जो कच्ची रह जाय उसका सेवन करने से दाह, मलकी गाठ और प्रमेह आदि कई प्रकारके रोग पैदा होते हैं। और बल वीर्यका नाश होता है।

इसको शोधनेकी रीति—( १ ) इसके पतले २ पत्र करके उनको अग्निमें लाल करे। अगस्तिके पत्रोंके रसमें बुझावे, ऐसे तीन बेर बुझानेसे यह शुद्ध हो जाती है। ( २ ) रीति—इसके पत्रोंको अग्निमें लाल करे फिर इसके इमली और दाखोंके अलग अलग रसमें तीन २ बेर बुझाने से शुद्ध हो जाती है।

इसकी भस्म बनानेकी रीति—एक तोले शुद्ध हरतालकी नींबूके रस या और किसी खटाईमें एक पहर खरलकर उसको शुद्ध की हुई चाँदीके तीन तोले पत्रोंपर लेपकर देवे, फिर सुवर्ण भस्म बनानेकी रीतिके अनुसार सरावसम्बुद्धं चन्द्रकर २० जंगली कंदोंकी आंच देदेवे। जब वह बिलकुल ठंडी हो जावे, तब उसको निकाल, फिर पूर्वोक्त रीतिसे १४ बेर आंच देनेसे चाँदी की उत्तम भस्म हो जाती है। इसको खपरस कहते हैं। इसकी मात्रा ४ रत्नी तक की है।

प्रयोग—( १ ) इसकी भस्म कपेली और मधुर होती है। मन्दाग्नि, पांडु, क्षय, पित्त और कफके रोग, विष, प्रमेह, नेत्ररोग, मदात्यय, अपस्मार, शूल, प्लीह, वृष, उकृत् के रोग, शोथ, कास, त्रिदोष आदि कई रोगोंको अलग २ अनुपानमें मिटाती है। ( २ ) मिश्रीके साथ रूप रसका सेवन करनेसे दाह मिट-

तीहै (३) त्रिफलेके साथ सेवन करनेसे वात पित्तके विकार मिटतेहै (४) स्ना-  
युजालकी शक्ति बढ़ानेवाली औषधियोंमें चादीके बर्क मिलाये जातेहै ( ५ )  
उष्ण ऋतुमें हृदय का बल बढ़ानेके लिये मुग्धके आवलेपर चादीके बर्क  
लगाकर खातेहैं ( ६ ) शरीर की साधारण निर्वलता मिटानेके लिये चादी  
के बर्को-को मखन-और-मिश्रीके साथ खातेहैं ।

संख्या ( ४४० )

( सं० ) रजनगुन्धा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलङ्गी
गुलशब्दा	गुलशब्दा		गुलचेरी	राजनिगंधा	गुलशब्दी	नेलैसैभ्येग
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Polygonum tuberosum</i>		

स्थान—गुलशब्दा हिन्दुस्थानके बहुतसे-वागोंमें बोया जाताहै—

पहिचान—इसके पुष्पोंमें बहुत उत्तम सुगंध होतीहै ।

प्रयोग—( १ ) गुलशब्दा—रक्त, उष्ण, मूत्रवर्द्धक और आमकहै ( २ )

इसके कदको भुखा पीस दूधके साथ फकी देनेसे, अथवा उसकी ठढाईकी जैसे

पीसके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( ३ ) इसको हलदीके साथ पीस, मखन

में मिलाके लगानेसे नये बच्चेकी लालफुन्सियां ( अलाइया ) मिटतीहै ( ४ )

इसको दूबके रसमें पीसके गाठोंपर लेप करतेहै ( ५ ) इसके पुष्पोंका इत्र

निकाला जाताहै ।

संख्या ( ४४१ )

( सं० ) रतनजोत ।

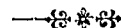
मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रतनजोत	रतनजोत				रतनजोत	



द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				<i>Onosme echinoides</i>	
				<i>O. hispida</i>	

स्थान—रतनजोता हिमालयमें कश्मीरसे कमाऊ तक होती है ।

प्रयोग—( १ ) त्वचाके ऊपर कई प्रकारके फोड़े फुन्सियों पर इसकी जड़का लेप करते हैं ( २ ) इसके पत्तोंके रसमें मद्य मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाता है ( ३ ) इसके पुष्प उचेजक है ( ४ ) इनको थोटाके पिलानेसे हृदय के रोग मिटते हैं ( ५ ) इनको तेलमें थोटाके उस तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटती है ( ६ ) रतनजोतको पीसके नाकमें टपकानेसे भिरगीवालेकी मूर्च्छा मिटती है । इसकी जड़मेंसे लाल रंग निकाला जाता है ।



संख्या ( ४४२ )

( सं० ) रसाञ्जनं, रसगर्भं, रसोद्भूतं, रसाग्रजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रसोत	रसोत	रसवती	रसाञ्जन	रसाजन	रसोत, रस	रसाञ्जनम्
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		हुजुज	रसोत	<i>Extractum berberis</i>	<i>Extract of Barberry</i>	

प्रयोग—( १ ) रसोत बनानेकी रीति—दारूहल्दीकी जोड़की हुई जड़ोंको पानीमें बहुत धीरे २ थोटावे, जब पानी गाढा पड़ जावे, तब छानकर फिर उसको बालुयंत्रमें बहुत मन्द आंचसे गोली बनने लायक गाढा करके उतार लेवे ( २ ) बच्चोंको रेच करानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है ( ३ ) आख दुखतीहो, और उसमें गीढ़ बहुत आतेहैं, तो उसपर रसोतका लेप करना चाहिये ( ४ ) रसोत और अफीमको नीबूके रसमें सिजोकर, आख की पीड़ा मिटानेके लिये बाहिर २ लेप करना चाहिये ( ५ ) ढेरीसे अच्छे

होनेवाले फोड़ोंके ऊपर रसोतका लेप करना चाहिये ( ६ ) रसोत, अफीम और फिटकड़ीका लेप करनेसे आखकी पुरानी पीड़ा मिटती है ( ७ ) पौने दो दो मासे रसोतको पानीमें घोल २ के दिनमें ३-४ बेर पिलानेसे ज्वर छूटता है ( ८ ) इससे लुधा और पाचन शक्ति बढ़ती है, और पेटके ऊपरके भागमें एक प्रकारकी सुहावनी उष्णता प्रतीत होती है ( ९ ) इसके लेनेसे मल ढीला हो जाता है ( १० ) इसके सेवनके समयमें शरीर निरंतर आर्द्रसा बना रहता है ( ११ ) एक भाग रसोत, एक भाग फुलाई हुई फिटकड़ी, और एकसे आधा भाग अफीम, इन सबको नींबूके रसमें अग्निपर गाढा करके, भंवार और पपोटापर लेप करनेसे आखकी पीड़ा मिटती है ( १२ ) रसोतकी ५ रती से १५ रतीतक मात्रा देनेसे रक्ताशका रुधिर बन्ध हो जाता है ( १३ ) नीमके काथका बफारा आखके लगाकर फिर उसपर इसका लेप करना चाहिये । ( १४ ) २॥ रतीसे ७॥ रतीतक रसोतको मक्खनके साथ चटानेसे रक्ताशका रुधिर बन्ध होता है ( १५ ) ४ मासे रसोतको ५० तोले पानीमें गलाके अर्श को धोना चाहिये ( १६ ) रसोत और कपूरको मक्खनमें मिलाके गर्मीके फोड़े फुन्सियों पर लगानेसे उनकी दाह मिटती है और वे आपभी मिट जाते हैं ( १७ ) वृद्ध मनुष्योंके हल्के ज्वरको मिटानेके लिये और उनके शरीर में बल बढ़ानेके लिये रसोत का प्रयोग बहुत अच्छा है ( १८ ) इसको नींबूके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे मुखपाक मिटता है ( १९ ) इसकी भस्म सुघानेसे नकसीर बन्ध हो जाती है ( २० ) रसोत और हाथी दातकी भस्मको ब्यालीके दूधमें पीसकर लगानेसे घाल रोग अति है ( २१ ) रसोतको स्त्रीके दूध और मधुमें मिलाकर कानमें डालनेसे उसमेंसे पूयका वहना बन्ध हो जाता है ( २२ ) इसको पिलाने और लगानेसे बच्चोंकी गुदाका पकना बन्ध हो जाता है ( २३ ) रसोतको मधुमें मिलाकर अजन करनेसे मस्तक पीड़ा और नेत्रके रोग मिटते हैं ( २४ ) रसोत, लाल चावलोंकी जड़ और मधुका चावलोंके धोवनमें मिलाके पीनेसे रक्त-प्रदर-मिटता है ।

सख्या ( ४४३ )

( सं० ) राजमापः, महामापः, चपलः, चवलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चवला	लाविया चवरा	चाळा, चाल	अळसुदा	वरवटी	रवाह	अलसंदुनु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कारामणि		फिरीका	लाविया	Vigna catiung Dolichos sinensis	The Okolec of India Torr col of China	

स्थान—चवले हिन्दुस्थानके बहुतसे भागमें बोन जातहै।

चवले—श्वेत, लाल और काले रंगके भेदसे तीन प्रकारके और छोट्टे बड़े के भेदसे भी दो प्रकारके होतहै, सफेद रंगके बड़े चवलोंको “डोलरचवले” कहतहै। १०० तोले चवलोंमेंसे ५६॥॥ तोले मैदा सवा तोल तेल और १२॥ तोल पानी निकलताहै।

प्रयोग—(१) चवले—ठंडे, रुक्त, पचनेमें भारी, मधुर, कपेले, शरीर सुभिकारक, वातल, रोचक, शिथिलके दुग्धवर्द्धक, उसाक, विशद, मल को बढ़ानेवाले, और वीर्य, मेद और कफको शोषण करनेवाले, रक्त पित्त और आमको भिदानेवालेहै। साबित चवलोंका या—इनकी दाल और कच्ची फलियोंका शाक बनाया जाताहै। चवलोंकी दाल और इनके आटेसे भोजन के कई प्रकारके पदार्थ बनातेहै।

संख्या (४४४)

(सं०) राजावर्तः, नृपावर्तः, आवर्तकः, आवर्तमणिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
लाजवर्द	लाजवर्द			राजावर्त	लाजवर्द	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Lapis lazuli		

सरल और नीलके भेदसे राजवर्त दो प्रकारका होता है जिसमें नीला भाग अधिक और श्वेत, चमकीला भाग कम होवे और तोलमें भारी होवे वह उत्तम होता है ।

इसको शुद्ध करनेकी रीति—इसको महीन पीस विजैरेके रसमें खरलकर फिर अम्लवर्ग अर्थात् खट्टे पदार्थोंके रसमें, फिर अद्रकके रसमें खरलकर नीम जलसे धोकर खटाई आदि निकाल देनेसे शुद्ध होजाता है ।

प्रयोग—(१) शुद्ध किया हुआ राजवर्त-चरपरा, कडवा, शीतल, ग्राही और चिंच प्रसन्न करनेवाला है । पित्त, वमन, प्रमेह और दिचकी को मिटाता है (२) फोड़े फुन्सियोंपर इसका लेप करते है (३) जुलाफा आदि दूसरी विरेचन की औषधियोंमें इसको मिलाते है ।

संख्या ( ४४५ ) ।

( सं० ) राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राई	राई	राई	मोहरी	राइसरिषा	राई, अरयो	आवाल
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कहू	सासुवे	खरदल	सर्षपे	Brassica Juncea Sinapis J	The Rai or Indian mustard	

स्थान—राई हिन्दुस्थानमें बहुत और बोई जाती है ।

प्रयोग—(१) राई-उष्ण, अत्यन्त तीक्ष्ण, चरपरी, कडवी, कुष्ठ रूच और अग्निवर्द्धक है (२) वायुकी पीडापर कई प्रकारसे राईका लेप किया जाता है । इसके लेपकी यह रीति है कि केवल राईको महीने पीस उसमें थोड़ी चीनी शकर डाल, थोड़ेसे पानीके साथ उसको ऐसी महीन पीसे कि उसमें चप पैदा होजावे पीछे एक मलमलका कपडा गीलाकर उसको सूख निचोड़ उसपर उसका लेपकर जहा दर्द हो वहा उस कपडेको राईको बाहिरकी ओर रखके चिपका देवे और ऊपरसे उसको सेक देवे, जब बहुत जलने लगे तब

उस, पट्टीको उतार लेवे। अथवा राई और पापड़को पीसकर उसका लेप करे (३) गठियाकी सूजनपर इसका लेप बहुत उपकारी है (४) स्नायु पीड़ा मिटानेके लिये इसका लेप करना चाहिये (५) राईमें लहसन मिलाके लेप करनेसे अधिक लाभ होताहै (६) राईकी फकी लेनेसे पाचनशक्ति बढ़ती है (७) राईका आटा करके पानीमें ओटानेसे उसमेंसे तेल निकल आताहै (८) राईके तेलमें वायुनाशक औषधियोंको ओटा छान उसका मर्दन करनेसे बाँटे मिटतेहै (९) एरंडके पत्तोंको इसके तेलसे चुपड आग्नि पर तपाके बांधनेसे शरीर में जमा हुआ रुधिर विखर जाताहै (१०) इसके चूर्णमें घूरा मिलाकर फकी लेनेसे मुँहसे लाळका गिरना बन्ध होताहै (११) इसका तेल कानमें डालनेसे बहिरापन और लगानेसे फोड़े फुन्सी मिटतेहै (१२) राईको पीस कर मंजन करनेसे दांत साफ और दृढ़ रहतेहै (१३) इसको पीस कर सुंघानेसे मिरगीका वेग दूर होताहै (१४) राई और कलौजी पीसके सुंघानेसे कंठमें चिपटी हुई जोंक गिर जातीहै (१५) इसके पत्तोंका शाक चनाया जाताहै।

संख्या ( ४४६ )

( सं० ) कृष्णाराजिका, कृष्णिका, सुतीक्ष्णः क्षवकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
राईभेद	काली राई	काली राई	काळी तिसी	कृष्णराइ	कालीराई	श्रवलो
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
फडयो	विलेमसिंव			Brassica nigra Sinapis n		The black or true mustard

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जातीहै।

१०० तोले राईमेंसे ३३ तोले तेल निकलताहै।

प्रयोग—( १ ) इसका पुन्डिस पीड़ा मिटाने और आला उठानेके लिये बाधा जाताहै ( २ ) पित्त शोधपर इसका पुन्डिस बहुत लाभ कारी है परन्तु चमड़ी लाल होजानेके पीछे इसके पलस्तरको उतार लेना चाहिये, नहीं तो

वहा पर बहुत दुखदाई छाले होजातेहै ( ३ ) इसका लेप करनेसे गठिया का दर्द मिटताहै ( ४ ) राईके आटेको पानीमें घोलके पिलानेसे शीघ्र और निरुपद्रव वमन होतीहै ( ५ ) अगर प्रमाणसे लिया जायतो राई या राईका आटा पाचक मसालाहै ( ६ ) राईको साधित निंगलनेसे सारकपनका काम करतीहै ( ७ ) बड़ेकोष्ठके कारणसे पैदा हुई मंदाग्निको मिटानेकेलिये राईकी फकी देतेहै ( ८ ) इसके ताजे शुद्ध तेलका मर्दन करनेसे शरीरका आलस्य मिटताहै ( ९ ) गलेकी हल्की सूजन पर इस तेलका मर्दन किया जाताहै ( १० ) शरीरके भीतर बर्हि, रधिर आदि जम जाने वहां इस तेलका मर्दन करकेसेक देना चाहिये ( ११ ) इस तेलका मर्दन करनेसे प्दोंकी पुरानी सूजन उतर जातीहै ( १२ ) इसका तेल खानेके काममें भी आताहै ( १३ ) स्नान करनेके पहिले शरीर पर इसका मर्दन करनेसे अधिक पसीना होना बन्ध होताहै और सूर्यकी किरणोंकी तीक्ष्णता और लूका असर नहीं होताहै ( १४ ) बच्चेके शरीरपर इसका मर्दन करके उसको कुछ देरतक धूपमें बैठा रखनेसे उसकी त्वचामें तेज गर्मी सहनेकी शक्ति होजातीहै ( १५ ) भोजनके पदार्थ बनानेमें इस तेलको बहुधा घीकी ठीग काममें लातेहै ( १६ ) भोजन करनेके पीछे इसकी कुछ घूँदें पीनेसे पाचनशक्ति बढतीहै ( १७ ) कुछ पित्त और मूत्रवृद्धि करनेकेलिये इसको पिलाना चाहिये ( १८ ) इस तेलमें कपूर मिला के मर्दन करनेसे नठियामें बहुत लाभ होताहै ( १९ ) पैरोंमें और नाकके ऊपर इस तेलका मर्दन करनेसे मस्तककी सर्दी और प्रतिश्याय एक रातमें मिटजाताहै ( २० ) बच्चोंकी छातीपर इसका मर्दन करनेसे खांसीके विकार मिटतेहै ( २१ ) गलेके साधारण गोगमें इसका मर्दन करना उपकारीहै ( २२ ) लूकामके कारणसे तेज ज्वर होनेपर पैरों पर इसका मर्दन करना तुरंत आराम दिखलाताहै ( २३ ) नाकपर मर्दन करनेसे नाकका बहना तुरंत बन्ध होजाताहै ( २४ ) कपासके पान और राईको पीसकर लेप करनेसे विच्छूका विष उतरताहै ( २५ ) राई और हींगके चूर्णकी फकी देनेसे मरा हुआ बालक गर्भमेंसे बाहर निकलजाताहै ( २६ ) राई और सहिजनेकी छालको गायकी छात्रके साथ पीसके लेप करनेसे वातशूल मिटतीहै ( २७ ) राई और नो-सांदरको पीस कर घरमें डालनेसे साँप भग जाताहै ( २८ ) सर्पका विष

उतारनेकेलिये बहुतसी राई खिलानी चाहिये ( २६ ) राई और बकरी की मँगनीको पीस, केश उपाडकर; उस ठौर पर लगानेसे केश देरसे उगते है ( ३० ) पेटमें जमे हुए रुधिर आदिके विकारको मिटानेकेलिये ८ मासे राईको पानीके साथ पीसकर पिलानी चाहिये ( ३१ ) जिह्वाका रसाज्ञान मिटानेकेलिये राई आदि तीक्ष्ण औषधि चवाना चाहिये ( ३२ ) राई और कबूतरकी बीटको पीसके लेप करनेसे आधाशीशी मिटती है ( ३३ ) राईको सिरकेके साथ पीसके लेप करनेसे दाद मिटता है ( ३४ ) राई और सैधनमरुको घोटकर कुल्ले करानेसे कंठ में चिपटी हुई जोक निकल जाती है ( ३५ ) राईको गर्म जलके साथ पीसके लेप करनेसे काखोलाई मिटती है ( ३६ ) इसका लेप करनेसे बदन बिखर जाती है ( ३७ ) आधी कच्ची और आधी सेकी हुई राईको पीस कढवे तेलमें मिलाकर लगानेसे गंज मिटती है ।

संख्या ( ४४७ )

( सं० ) रामफल, अग्निमा, कृष्णबीज, लवनी

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
रामफल	लवनी एनोना	रामफळ	रामफळा	लोनी	रामफले	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Anona reticulata	The bullet's heart or true custard apple of the West Indies.	

स्थान—रामफलके वृक्ष बंगाल, दक्षिण हिन्दुस्थान आदि और कई भागोंमें बोये जाते हैं ।

फूलने फलने का समय—इसके फल वर्षा ऋतुके अंतमें पकते हैं, वे खानेके काममें आते हैं ।

प्रयोग—( १ ) रामफल कपेला, मीठा और खटाई । कफ और बादी को यदाता है । रुचि, दाह, तृषा, पित्त, श्म और बुधाको मिटाता है ( २ ) इसकी झाल बहुत ग्राही है, और बलवर्द्धक औषधियोंमें मिलाई जाती है ( ३ ) इसका

फल आमातिसार मिटानेके लिये काममें आताहै ( ४ ) इसके फल खिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं। इसके रूचे सुगन्धे फलमसे काला रंग निकलताहै। इसके ताजे पत्तोंमेंसे एक प्रकारकी नील निकलतीहै।

संख्या ( ४४८ )

( सं० ) रास्ना, रस्या, सुगंधिमूला, युक्तरसा ।

मोरवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
राठकापान	रास्ना	रासना	रासना	रास्ना	जतर	सनरास्ना
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
सन्नदुम्पराथ	सन्नराशम			Vanda Roxburghii Cymbidium lesseilloidées		

स्थान—रास्ना—दक्षिण हिन्दुस्थानके, बंगाल और कोकन देश आदि बहुतसे देशोंमें होतीहै। दो, तीन वृत्तोंकी जड़ोंको रास्नाके काममें लातेहैं।

प्रयोग—(१) रासना—कड़वी पचनेमें भारी, उष्ण और पाचकहै। आम, वातरक्त, विप, श्वास, कास, विपमज्वर, शोफ, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, कंपवायु, उदररोग और सूत्र प्रकारकी वादीको मिटातीहै ( २ ) वातव्याधि मिटानेके लिये जो तेल बनाये जातेहैं उनमें रास्ना अवश्य मिलाई जातीहै ( ३ ) इससे बनाया हुआ तेल, स्नायुजालके रोगोंको मिटाताहै ( ४ ) उपदंश सम्बन्धी उपद्रव मिटानेके लिये इसका प्रयोग किया जाताहै ( ५ ) इसके पत्तोंको पीसके लेप करने से ज्वरकी दाह कम होतीहै ( ६ ) इसके पत्तोंका रस कानमें डालनेसे उसकी खुजली और वहना बन्द होतोहै ( ७ ) इसको उशबेकी ठौर भी काममें लातेहैं।

संख्या ( ४४९ )

( सं० ) रुद्रन्ती, चणपत्री, रोमाञ्चिका, सञ्जीवनी।



मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रुद्रवन्ती	लाणा	पलियो	रुदती	रुदन्ती		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Cressa cretula		

**स्थान**—रुद्रवन्ती बहुधा हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण भागोंमें समुद्रकी तटके पास २ गुलतान, सिन्ध, गुजरात, कारोमण्डलके किनारे और सीलोनमें होती है। वर्षा ऋतु पूरी होनेके पीछे यह खेतोंमें उगती है।

**पहिचान**—इसका छोटा खड़ा भाड़ होता है, इसके जने, जैसे खट्टे पत्ते लगते हैं, शिशिर ऋतुमें इसमेंसे पानीकी बूंदें टपकने लगती हैं, जब यह वृत्त वृद्ध होजाता है तब इसपर सफेद रूप पैदा होजाते हैं।

**प्रयोग**—( १ ) रुदती—कपली, चरपरी, कड़वी और उष्ण होती है त्तय, कृमि, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहको मिटाती है ( २ ) यह रसायनी और बलवर्द्धक है ( ३ ) इसके काथसे सूखी खांसी मिट जाती है।

संख्या ( ४५०६ )  
 ( सं० ) रुद्राक्षः, अमरः, तृणमरुः, पुष्पचामरः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्ष	रुद्राक्षगोष्ठ	रुद्राक्ष	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Flaco-carpus Gantris		'Utrāsūm bead tree

**स्थान**—रुद्राक्षके वृत्त नेपाल, आसाम और कोकन घाटपर बहुत होते हैं।  
**पहिचान**—इसका वृत्त बड़ा होता है इसकी टहनियों पर प्रायः ६ इंच लम्बे पत्ते बारी २ से लगते हैं, उनकी कोरें कुछ कटी हुई होती हैं। छोटे पत्तों पर

बहुत हल्के, रेशमीन रूप होते हैं, पत्ते बड़े, होने पर दोनों थोरसे चिकने होजाते हैं इसके फलमें पांच खाने होते हैं, और उन हरेकमें एक एक बीज रहता है।

फूलने, फलनेका समय—यह शतिकालमें फूलता है और बसंत ऋतु इसके फल पकते हैं।

गुण—(१), रुद्राक्ष-खट्वा, उष्ण और रोचक होता है। वादी, कफ, मस्त पीडा और भूतवाधाको मिटाता है।

संख्या (४५१)

( सं० ) रोहिणी, सुलोमा, मांसरोहा, सडामांसी।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
रोहन	रोहिणी	रोहणय	रोहिणी	रोहन	रोहिणी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		बकम	बकम	<i>Boymida febrifuga</i>	The Indian red wood Bastard Cedar	

स्थान—रोहनके वृक्ष पश्चिमोत्तर, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें दक्षिणीकी ओर ट्रेनकोर और सीलोन तक और राजपूताना, आदि-देशोंमें भी होते हैं।

पहिचान—इसका वृक्ष ७०--८० फुट ऊंचा होता है। इसकी पेठकी गुलाई ७, ८ फुट होती है और छाल धुंधले रंगकी और बहुत खरदरी होती है। इसके ६ से १२ इंच लम्बे पत्तोंके तीनसे छैतक जोड़े लगते हैं। इसके कुछ हरे और सफेद रंगके पुष्प लगते हैं। इसके चिकनी और एक दो इंच लम्बी-डांडी लगती है वह पकने पर काली पड़ जाती है। इसके पुराने पत्ते गिरनेके पहिले ही चत्र वैशाखमें नवीन पत्ते आजाते हैं।

फूलने, फलनेका समय—चत्र वैशाख में यह फूलती है और अपाठ श्रावणमें इसके बीज पककर गिरजाते हैं।

इसकी गहरी लाल छालमेंसे चपदार गाँद और राल जैसा सफेद रंगका एक पदार्थ निकलता है। इसकी छाल रंगतके काममें आती है।

प्रयोग—( १ ) रोहिणी—शीतल, कपेली, और कृमिनाशक है ( २ ) इसकी छाल ग्राही है और वारीसे आनेवाले वेगको मिटाती है ( ३ ) १। तोले से १॥ तोले तक इसकी छालका चूर्ण रात दिनमें देनेसे वारीसे आनेवाला ज्वर छूटजाता है परन्तु अधिक मात्रा देनेसे स्नायुजालमें विकार पैदा होके पहिले चक्कर आने लगते हैं और अन्तमें मूर्छा होजाती है ( ४ ) अतिसार और आमातिसार मिटानेकेलिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देनी चाहिये ( ५ ) इसकी छालके काथके कुल्ले करनेसे मुखपाक मिटता है ( ६ ) योनीके ग्रण मिटानेकेलिये उनको इसकी छालके काथसे धोते हैं ( ७ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे अथवा इसकी छालका पुष्टिस बाधनेसे गठियोंकी सूजन उतरती है ।

0

संख्या ( ४५२ )

(सं०) रोहिषतृणं, पौरं, सौगन्धिकं, देवजग्धकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
रोहिसोघास	गंधेजघास	राशु (स)	रोहिषगवत	रामकपूर	गांधीघास	ध्यामकू
द्राविडी	कर्नाटकी	आरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	कामचिहुल्लु			Andropogon schopenanthus A. Martini	The Glaniam grass. It is oil grass	

स्थान—रोहिसका घास संयुक्त प्रदेश, पंजाब, दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थानमें बहुत होता है । पंजाबमें रोहिसका घास दो प्रकारका होता है ।  
 प्रयोग—( १ ) रोहिसघास—कपला, कडवा, पाकमें चरपरा, सिग्ध, उष्ण और मधुर है ( २ ) इसके तेलको मर्दन करनेसे पुरानी गठिया मिटती है ( ३ ) शिरमें इसको लगानेसे भंज मिटती है ( ४ ) स्नायुजालकी पीडा मिटानेकेलिये इसका मर्दन करते हैं ( ५ ) इसका फाँट पिलानेसे पेटकी पीडा मिटती है ( ६ ) इसका तेल गुलावके तेलमें मिलाया जाता है ( ७ ) नलिका चंत्रसे इसका तेल निकालते हैं वह टंडा और ग्राही होता है ( ८ ) इस तेलको

मर्दन करनेसे त्वचाके, रोग भिटताहै ( ६ ) इसका काथ पिलानेसे ज्वर छूट-  
जाताहै ( १० ) फास्फुन और चत्रमें इसकी जड़ें खोदी जातीहैं। उनमें कुछ म-  
साले मिला, अर्क निकालके पिलानेसे अजीर्ण भिटताहै ( ११ ) इसका काथ  
पिलानेसे प्रतिश्याय ( जुकाम ) भिटताहै ( १२ ) ज्वरमें पसीने लानेकेलिये  
रोहिसा और चाइको बराबरले ओटाके पिलाना चाहिये ( १३ ) हाथ पैरोंकी  
गुन्यता भिटानेकेलिये, इसके तेलका मर्दन, उत्तेजकहै।

संख्या ( ३५१ )

( सं० ) रोहीतकः, रोही, प्लीहशत्रुः, दाडिमपुष्पकः ।

भारबाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलंगी
रोहिडा	रोहेडा	रोहिडो	रक्करोहिडा	रोडा, रयना	रुहेडा	मुलुमोटुगचेदट्ट
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	यरडमलु- मूतलु			Tecoma undulata Biguonia undulata		

स्थान—रोहेडके वृक्ष सिन्ध, पंजाब, गुजरात, खानदेश, कानपुर और  
राजपूताना आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष बहुत बड़ा नहीं होताहै। मायः १०—१५ फुट ऊंचा  
होताहै। परन्तु जो जमीन इसको मानतीहै, वहां खात और जल आदि इसको  
भली भांति दिया जावे तो यह ३०—४० फुट ऊंचा बढ़ जाताहै। तब इसकी  
पेदकी ऊंचाई १२—१५ फुट और गुलाई ५—८ फुटकी होजातीहै। इसकी  
खाल चौथाईसे आध इंच मोटी; कुछ ललाई युक्त, भूरे या पुधले-सफेद-रंगकी  
और खरदरी होतीहै। इसकी डालियोंके अन्तके भाग जमीनकी ओर झुक  
रहतेहैं। इसकी नवीन डालिया सफेद रंगकी होतीहैं। इसके पत्ते बहुधा  
एक दूसरेके सामने लगतेहैं, ये रूप और आकारमें बहुत पलटते रहतेहैं, इन  
पर बहुत छोटे २ रूप होतेहैं, पुराने पत्ते कुछ खरदरे हो जातेहैं। छोटी शाखा  
ओंके अन्तमें बिना सुगंधवाले, चमकीले और नारंगी रंगके १५ २० अच्छे  
बड़े पुष्प लगतेहैं। इसके ६ से ८ इंच लम्बी, मुड़ी हुई फलिया लगतीहैं। इसके

पत्ते सबके सब नहीं गिरतेहै । पोप और माहमें इसके नवीन पत्ते आतेहै । इस के एक प्रकारका भूरा गोंद लगताहै । फूलने फलने का समय—फागुन और चैत्रमें यह पूरा फूल जाता है; बंशाखसे अषाढ तक इसके फल पक जातेहै ।  
 (१) रोहेड़ा—चरपंरो, सिग्घ, कपेला, कडवा, सारक और शीतलहै ।  
 (२) इसकी छोटी टहनियोंकी छालका काथे पिलानेसे उपदेश मितताहै ।  
 रक्तघ्नी सन्निपात ( जिसको मारवाडी भाषामें गुजराती रोग कहतेहै ) मिटाने वाली औषधियोंमें इसकी छाल मिलाई जातीहै ।  
 इसकी और बड़की छालके गौसूत्रकी भावना देकर, उनके चूर्णकी फकी देनेसे तिल्ली आदि उदरके रोग मिततेहै । इसकी छालका घी बनाकर खानेसे तिल्ली मितती है ।  
 इसकी जड़के कल्कमें मधु और भित्री मिलाकर खानेसे श्वेत और रक्त दोनों प्रकारके प्रदर मिततेहै ।

संख्या ( ४५४ )

( सं० ) लकुचः, स्थूलस्कंधः, जुद्रपनसः, डहुः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पुंजाबी	तैलुगु
बडहर	बडहर ( ल )	लकुच	जुद्रफणस	डहुयागळ	बडहल	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Artocarpus		
				Lakoocha		

स्थान—बडहरके वृक्ष कमाऊ, सिकम, पूर्वी बङ्गाल, पश्चिमीबंग और सीलोन आदि कई देशोंमें होतेहैं ।  
 पहिचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ५०—६० फुट होतीहै । इसकी छोटी पेदड़की छाल बड़ी होतीहै, इसकी छालआध इंच मोटी हल्के रंगके धुंधले सफेद रंगकी और खरदरी होतीहै, उसमें नालियोंका दरार नहीं होतीहै । इसकी छोटी दालियों और पत्तोंके नीचे कोमल भूरे रंगके छेद होतेहै । पत्तोंके

ऊपरका भाग विकृत होता है, इसका फल पेड़ोल और कुछ गोल होता है, यह पकनेपर पीले रंगका हो जाता है। इसकी मध्य रेखा ३-४ इंचकी होती है।

फूलने फलने का समय—फागुनमें इसके पुष्प लगते हैं।

प्रयोग—(१) इसका कच्चा फल—उष्ण, पचनेमें भारी, अफारा पैदा करनेवाला, विषैर्य और अग्निनाश करनेवाला, और नेत्रोंको हानिकारक है। (२) इसका पका हुआ फल—मधुर, मखड़ा, रोचक, हृद्य, अग्निवर्द्धक विष्टुभी और वात पित्त नाशक है और कफ और अग्निको बढ़ाता है; यह खानेके काममें आता है। इसकी छालको सुपारीकी ठौर खाते हैं। इसके फल का शीकर बनाते हैं। इसकी जड़ और लकड़ीमेंसे पीला रंग निकाला जाता है।

(संख्या (४५५))

(सं०) लज्जालु, रक्तपादा, शमीपत्रा, सकोचनी

भारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
लज्जालु	लज्जालु	रिशामणी	लाजलू	लाजकलता	छुईमुई	मण गुदामर
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
तोहानटि	मुट्टिमत्तिग			Mimosa pudica M. sensitum	The sensitive plant	

स्थान—लज्जालुके छोट्टे-बूटे-हिन्दुस्थानके उष्ण प्रदेशोंमें होते हैं। ये दक्षिण हिन्दुस्थानके कुछ भागोंमें सड़कके किनारे-बहुत होते हैं अर्थात् खेतके खेतों लगे रहते हैं ॥ प्रयोग—(१) लज्जालु—शीतल, कड़वी, रुपेली, और चुरपरी होती है। (२) इसकी जड़का काय पिलानेसे पथरी गलजाती है (३) इसके पत्तोंको तोल मरुतक पूर्णको ईधमें पिलानेसे अर्श मिटने है—(४) इसकी जड़को मिसके लेप करनेसे नामूर मिटता है—(५) यह सूजन को विखेती है, रुधिरको शुद्ध करता है, और पित्तके रोगोंको मिटाता है। (६) नामूर पर इसके रसका लेप कः

रतेहै ( ७ ) किसी विशेष समयमें इसका संग्रह करना चाहिये और इसके प्रयोगभी विशेष रीति और युक्तिसे करने चाहिये । इसके प्रयोगके पहिले सप्ताहमें ज्वर और सब प्रकारके पित्तविकार मिटतेहै । दूसरे सप्ताहमें अर्श और कामला आदि रोग मिटतेहैं । तीसरे सप्ताहमें कोढ़, कल्लि और उपदंश आदि रोग मिटतेहै ( ८ ) इसके पत्तोंका लेप करनेसे मूत्रातिसार मिटताहै ( ९ ) इसकी जड़को गलेमें बांधनेसे खांसी मिटतीहै ( १० ) इसके पत्तोंके रसमें कपड़ेको भिगोके नामूर पर पट्टी बांधनी चाहिये ( ११ ) इसका रस पिलानेसे अपचि और गंडमाला मिटतीहै ( १२ ) लज्जालू और आसगंधकी जड़ पीस के लेप करनेसे स्तनोंका डीलापन मिटताहै ।

संख्या ( ४५६ )

( सं० ) लवंग, ग्रहणीहरं, देवकुसुमं, श्रीसंज्ञम् ।

भारवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लौंग	लौंग	लवंग	लवंग	लवंग	लौंग	लवंग
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
लवंग किराम्ब	लवंग	करनफल	मेखक	Caryophyllus aromaticus Lingenia caryophyllala	Cloves	

स्थान — लौंग पहिले मुलका टापूमें पैदा होतेथे, अब हिन्दुस्थानके दक्षिण के भागमें बोये जाने लगे है । लौंगके वृक्षके हरेक भागमेंसे तेल निकलताहै । भभकेमें लौंगोंका अर्क निकालनेसे उसके साथ इनका सुगंधित तेल निकल जाताहै । उसका कुछ पीला रंग होताहै, उसमें लौंगों जैसा स्वाद और बैसी ही बहुत तीक्ष्ण सुगंध होतीहै । १०० तोले लौंगोंमें १६ से २० तोले तक तेल निकलताहै ।

प्रयोग ( १ ) लवंग-चरपरा, कडवा, शीतल, दीपन, पांचन, रोचक रस और विपाकमें मधुर, स्निग्ध, तिक्त, उष्ण और पचनेमें लघु है ( २ ) सचारती लौंग और सर्वा रती जुलाफा की गोली बनाके देनेसे बड़कोष्ठ

मिटताहै (३) लोंगको पीस मिश्रीकी चाशनीमें मिलाके चटानेसे गर्भवती स्त्री की शीती शोबड मिटतीहै (४) लोंगोंको टण्डे पानीमें पीसके पिलानेसे तृषा मिटतीहै (५) लोंग और चिरायता दोनों बराबर ले टण्डे पानीमें पीसके पिलानेसे ज्वर छूट जाताहै और ज्वर छूटनेके पीछेकी निर्बलता मिटतीहै (६) इसमें दालचीनीका चूर्ण बुरकाके पीनेसे पांचनशक्ति बढ़तीहै और साधारण निर्बलता मिटतीहै (७) लोंगका तेल गट्टिया की पीड़ा पर लगाया जाताहै (८) यह तेल ललाट पर लगानेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै (९) इसको दांत के लगानेसे दंतपीड़ा मिटतीहै (१०) लोंग उष्ण और रुचहै (११) इनका जलमें पीस गर्मकर ललाट और कनपटियों पर लेप करनेसे मस्तककी स्नायुपीड़ा मिटतीहै (१२) इनको मुखमें रखनेसे मुख और स्वासकी दुर्गंध मिटतीहै (१३) लोंग, आककी चोफूली और काले नोनकी गोली बना सुत्वाके मुखमें चूसनेसे श्वास तथा श्वास नलिका सम्बन्धी रोग मिटते हैं (१४) लोंग, दालचीनी और मिश्रीकी फकी देनेसे पांचनशक्ति बढ़तीहै (१५) लोंगको मुखमें रखनेसे बहुत चिकना कफ छूटने लग जाताहै (१६) इनसे शरीरकी शिथिलता मिटतीहै (१७) ताम्बेके पात्रमें लोंगको पीस मधु मिलाके अंजन करनेसे नेत्रके श्वेत भागके रोग मिटतेहैं (१८) इनको टण्डे पानीमें घोट धान बूरा दालके पिलानेसे हृदयकी दाह मिटतीहै (१९) इनको दीपककी लोयमें सेककर या जलाकर खानेसे गलेकी दाह मिटतीहै (२०) इनको सेककर या इनकी भस्म मधुके साथ चटानेसे कुत्ताधांसी मिटतीहै (२१) बहुतसे लोंग एक साथ खानेसे जिह्वाकी स्वादशक्ति नष्ट हो जातीहै (२२) दो लोंग और ४ रती अफीमको पानीके साथ पीस गर्मकर ललाट पर लेप करनेसे नजलेकी मस्तकपीड़ा मिटतीहै (२३) लोंग और इच्छदीका लेप करनेसे गुहाजनी मिटतीहै (२४) लोंग और हरड़के काथ पर संधानमक बुरकाके पिलानेसे अजीर्ण मिटताहै और विरेच होताहै (२५) इनको पानीके साथ पीस धान निवाये करके पिलानेसे तृषा और नीमचलाना मिटताहै (२६) इनको पीसकर ताल पर लेप करनेसे प्रतिग्याय मिटताहै (२७) लोंग और इच्छदीको पीसके लगानेसे नासूर मिटताहै ।



(सं०) लवली, सुगन्धमूला, स्कंधफला, कोर्मलवल्कली

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
	हरफारेवडी	साटीआवली	हरपरेवेडा	नोयालफला	हरफारेवडी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Phyllanthus		
				Indigofera tinctoria		
				Cuca disticha		

स्थान— इसके वृक्ष दक्षिण हिन्दुस्थान के बागों में बहुत लगाये जाते हैं । पाह्लवान और फलने फलने की समय— यह एक छोटा सुंदर वृक्ष है इसके पत्ते फैसीदी के पत्तों के जैसे होते हैं । उष्णकालके प्रारम्भमें इसके छीटे २ बहुतसे लाल रंगके पुष्प आने लगते हैं, उनके पीछे गिरदार फल लगते हैं । इसके फल गुलारके फलकी जैसे डालीके चिपे रहते हैं । उनका स्वाद खटा होता है ।

प्रयोग— (१) इसके फल—आही, कपूले, राचक, खट्टे, कडवे, रुन्त, विशद, सुगन्धयुक्त, मीठे और पचनेमें हल्के हैं किफपित्त, वातपित्त, शर्करा, श्मरी और अर्शकों मिटाते हैं । (२) इसकी जड़के चूर्णको फकी देनेसे या फाथे करके पीनेसे या इसके बीजाके चूर्णको फकी देनेसे तीव्र विरचन लगता है । (३) इसके कच्चे और पके फल खानेके काममें आते हैं । इनका अचार और पुरखा बनाया जाता है ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
जिसण	लक्षन	खलसण	खसन	लखन, लसन	खथोम	खो वेखलि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
खलु खि	वेखलि	खसूमण	खरीखान	Alumina		

स्थानं--लहशनं हिन्दुस्थानमें सर्व ठौर बोया जाता है ।  
 प्रयोग--(१११) लहशन-स्निग्ध, लघ्ण, वृष्य, बल्य, रौक्षक, पाचन, सारक, रस और विप्राकर्म, चरपरा, तीक्ष्ण, मेथुर, प्रचनेमें भारी, पिच्छल और तातनाशक है (१२) इसके बीजोंमें से साफ, सफेद और पारदर्शक तेल निकलता है (१३) लहशनको भी देवाकर, तेल निकालते हैं, उस तेलके मर्दनसे शरीर उच्चैर्जित हो जाता है (१४) शीतज्वरके शीतको मिटानेके लिये इसको तेलकी मात्रा देते हैं (१५) इसका लेप करनेसे चमडी लाल हो जाती है (१६) इसके प्रयोगसे ब्रेर, र, आनेवाला ज्वर, छूटता है (१७) लहशनका मुरब्बा खिलानेसे गठिया मिटती है (१८) इसके अर्कका कानके बाहिर लेप करनेसे बहिरापत्र और कानकी पीड़ा मिटती है (१९) मूत्राशयकी निर्वलतासे पैदा हुई मूत्रकी रुकावटको मिटानेके लिये इसका पुलिटस बनाते हैं (२०) इसको कूट भभकेमें डालके इसका तेल निकालते हैं उसको साफ करनेसे उसमें कोई रंग नहीं रहता है लहशन में जितने गुण हैं वे सब इस तेलके हैं (२१) लहशन खानेवाले शरीरमें से निकलनेवाले पसीने आदि हरेक मलमें उसकी गंध आने लगती है (२२) इसको सिरकेमें भिगोकर खानेसे दुखते हुए गलेकी, ढीली, पड़ी हुई रगोंका संकोच हो जाता है और शब्द बाहिरी जोड़ियोंका ढीलापन मिट जाता है (२३) श्वास रोगवालेको लहशन बहुत लाभदायक है (२४) इसकी चट्टी बनाके खानेसे शूल युक्त अकारा मिटती है (२५) गठिया और स्नायुपीड़ा होनेसे बचनेके लिये वादीकी प्रकृतिवालेको शीतकालमें लहशन खिलाना चाहिये (२६) बाला उठानेके लिये इसका पुलिटस बहुत देर तक बाधे रहते हैं (२७) इसके खानेसे कई प्रकारकी मंदाग्नि मिटती है (२८) कादेके जैसे यह भी शरीरके स्वास्थ्यको ठीक रखता है (२९) यह खासीको अवरय मिटाता है (३०) सड़के तलमें इसको तलकर उस तेलके लगानेसे खुजली मिटती है (३१) जिस फोड़ेमें कीड़े पड़ जाते हैं उस पर यह तेल लगाया जाता है (३२) चोट और मुरड पर इसका रस और नीन लगाते हैं या लहशनकी गुलीको नोजके साथ पीस पुलिटस बनाके बाधते हैं (३३) लहशनके पास सांभान ही आता है (३४) इसका पुलिटस बाधनेसे गठिया मिटती है (३५) बच्चेकी छाती पर इसका तेल मर्दन करनेसे खासी मिटती है (३६) इसकी एक दो गुलीको सवा तोले

तिन्नीके तेलमें तल कर। उसकी एक दो बूंदें कानमें डालनेसे बहिरापत्त मिटता है (२७) बटे हुए या लटके हुए कागपर इसका अर्क लगाते है (२८) कुचा धांसीवाले घालकको इसकी छिली हुई गुलियोंको माला करके पहिनाते है (२९) आसवालेको उष्ण जलके साथ इसका रस पिलाते है (३०) इसका लगतार स्वाते रहना गठियावालेको लाभकारी है (३१) नारियलके या राईके तेलमें इसकी गुलियोंको तल कर उसका मर्दन करनेसे खुजली या कृमि संश्वन्धी त्वचाके रोग मिटते है (३२) इसका रस लगानेसे जूं और लीसं मरती है (३३) इसकी गुलीको धो पीस कनपटी पर लगानेसे आभाशीशी और दूसरे प्रकारके मस्तकुरोग मिटते है (३४) इसके तेलका मर्दन करनेसे गठिया और त्वचाकी शून्यता मिटती है (३५) इसकी धूनीसे भिड़ भाग जाते है (३६) इसका पाक बनाके खानेसे लकवा मिटता है (३७) लहशान और नोन पीसके दंशपर लगानेसे विच्छका विष उतरता है (३८) इसके खानेसे वायुशूलकी पीड़ा मिटती है (३९) जिह्वाको रसाज्ञानमें लहशन आदि तेज औषधिया चबानी चाहिये (४०) बहुत लहशन खानेसे पांगल कुत्तकी और सर्पका विष उतरता है (४१) जो कर्क डंक पके जाने पर इसको पीसके लगाना चाहिये (४२) लहशनकी सिरकेमें पीसके कुत्तेके दंशपर लगानेसे उसका विष उतरता है (४३) सूखा लहशन और अमचूर पीसके मलनेसे विच्छका विष उतरता है (४४) लहशनके एक तोले रसमें गायका एक तोला घी भिलाकर पिलानेसे आमवात मिटती है (४५) इसके कर्कको तेलके साथ खानेसे अर्दित वायु और विषम ज्वर मिटता है (४६) इसके कर्क और स्वरससे सिद्ध किये हुए तेलको सेवन करनेसे वातके रोग मिटते है (४७) इसकी पीसके लेप करनेसे विद्रेधी मिटती है (४८) शाकपत्र तडि (४९) सखिया (४५६) (४५७) (४५८) (४५९) (४६०) (४६१) (४६२) (४६३) (४६४) (४६५) (४६६) (४६७) (४६८) (४६९) (४७०) (४७१) (४७२) (४७३) (४७४) (४७५) (४७६) (४७७) (४७८) (४७९) (४८०) (४८१) (४८२) (४८३) (४८४) (४८५) (४८६) (४८७) (४८८) (४८९) (४९०) (४९१) (४९२) (४९३) (४९४) (४९५) (४९६) (४९७) (४९८) (४९९) (५००)

(स०) लाक्षा, अलक्तः, दुग्धामयः, जलुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलश्री
लाक्ष	लाख	लाख	लाख	लाक्षा, मोला	लाख	लेक, जेका

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
भारक	अरगु			Coccus lacca	Lac

स्थान—हिन्दुस्थानमें ४०-४५ वृत्तोंके लाख लगतीहै।

प्रयोग—( १ ) लाख—शीतल, स्निग्ध, कृपेली, पचनेमें हल्की और कड़वी, होतीहै। शरीरकी कान्ति और बलको बढ़ातीहै। कफ, वातरक्त, हिचकी, कास, ज्वर, उररक्त, वण, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, विप, रक्तविकार, विपम-ज्वर, शोष, नासारोग, त्वग्दोष, दाह और कफ पित्तको मिटातीहै और टूटी हुई हड्डीको जोड़तीहै ( २ ) यह कई प्रकारके तेल बनानेकी औषधियोंमें मिलाई जातीहै ( ३ ) यकृत रोग, जलंधर और फोडे आदिकेलिये इसका प्रयोग किया जाताहै ( ४ ) नारकी सूजन मिटानेकेलिये लाख और देशी साबुनको पीसगर्म करके लेप करना चाहिये ( ५ ) लाख और शकरकी फकी देनेसे कफके साथ रुधिरका आना और मासिक धर्ममें प्रमाणसे अधिक रुधिर का निरुलना बन्ध होजाताहै ( ६ ) लाखके चूर्णको मधु और दूधमें मिलाके पिलानेसे रक्तपित्त मिटाहै ( ७ ) लाखके चूर्णको घृतके साथ चाटनेसे रक्तप्रदर मिटाहै ( ८ ) घी, मधु और दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे शोष रोगसे पैदा हुई वमन मिटतीहै ( ९ ) दूधके साथ इसकी नस्य लेनेसे हिचकी मिटतीहै ( १० ) बकरीके दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे रक्तपित्त मिटाहै ( ११ ) लाख, हरड और जेलका लेप करनेसे प्राणदारी मिटतीहै ( १२ ) इसका पानी बना-चसमें मधु मिलाकर पिलानेसे रुधिरकी वमन बन्ध होतीहै। लाख रगतके काममें आतीहै।

संख्या ( ४६० )

( सं० ) लामज्जकं, इष्टिकापथिक, अवदाहेष्टम्, दीर्घमूलम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलगी
लामज्जकं	पीलोनालो	पीलोनालो	पीतवाळि	लामज्जकतुण		

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		इजवर	गोरग्याह	Andropogon laniger A Iwerancusa	The Juncus odoratus & Herba schoenanthi of Pharmacists.

स्थान—लामज्जूकके पेड़ हिमालयके नीचेके भाग, संयुक्त प्रदेश, पंजाब, और सिन्धमें होते हैं।

प्रयोग—(१) लामज्जूक-शीतल, कड़वा, मीठा, पाचक, स्तंभन और और पचनमें हल्का होता है। त्रिदोष, त्वग्दोष, प्रसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह, रक्त-पित्त, तृषा, श्रम, मूर्च्छा, ज्वर, शूल, वमन, ग्रण, विष और विसर्पको मिटाता है (२) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका हिम या फांट पिलाते हैं (३) इसका काथ पिलानेसे खांसी मिटती है (४) बच्चोंकी मंदाग्नि मिटानेके लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये (५) इसका क्वाथ उत्तजक है और प्रसीना लाके छोटे जाड़ोंकी पीड़ा और गठियाका मिटाता है और क्वरको उतारता है (६) चंदनके साथ इसका लेप करनेसे दाह मिटता है।

संख्या (४६१)

(सं०) लोधः, गालवः, रोधः, तिरीटः

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लोद	लोव	लोदर	लोधवृत्त	लोधगछ	लोधर	लोदुगु

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	लोध			Symplocos racemosa S nervosa	The lodh or lode tree

स्थान—लोधके वृक्ष-वझाल और आसाम आदि देशोंके जङ्गल और छोटे पहाड़ोंमें, कासिया पहाड़, सिक्किम, नेपाल और पश्चिमी घाटमें होते हैं।

पहिचान—इसकी ऊंचाई २० फुट होती है। इसकी छाल खरदरी, बहुत थिद्र युक्त और सफेद रंगकी होती है। इसके पत्ते ३ से ६ इंच लम्बे अण्ड

के आकारके और कंगूरेदार होते हैं। इसके सुगन्ध यक्त पीले पुष्प लगते हैं। इसके प्रायः आध इंच लम्बा गोल फल लगता है इसकी कठोर गुठलीमें एकसे तीन तक बीजों और उनमें एक या दो बीज होते हैं। इसके फल पक कर बैजनी-रंगके हो जाते हैं। इसकी छाल और पत्तोंमें से रंग निकालते हैं।

प्रयोग— (१) लोद प्राचीन पचनेमें हल्की, शीतल और कफप्ली है (२) यह आर्तकी शिकायत, नेत्ररोग और फोड़ोंके काममें आती है (३) इसके ब्याथके कुल्ले करनेसे मसूढ़ोंका ढीलापन मिटता है और उनमेंसे रुधिर का बहना बन्द हो जाता है (४) दिनमें दो तीन बर-४, ५ दिन तक सुवा सवा मासे लोदकी मिश्रीके साथ फकी देनेस गर्भाशय की शिथिलतासे पैदा हुआ रक्तमदर मिटता है (५) कलाधों (फिल्लियों) के ढीलेपनको मिटानेके लिये लोद बहुत उपकारी है (६) इसके चूर्णको घीके साथ गर्म कर उसका सेक करनेसे नेत्ररोग मिटते हैं (७) आठवें महीनेमें गर्भ गिरनेके उपद्रवको मिटानेके लिये लोद और पीपलके चूर्णको सहतमें चटाना या दूधके साथ फकी देना चाहिये (८) इसके कल्कका लेप करनेसे स्तनोंकी पीडा मिटती है (९) लोद, जीरा और भुनी हुई फिटकड़ीको पीस, चारपाठके गूदेमें मिजा, कपड़ेमें पाटली बांध उसको पानीमें भिगो भिगो के नेत्रों पर फेरनेसे नेत्रपीडा मिटती है (१०) इसके चूर्णको कानमें बुरकानेसे उसका बहना बन्द होता है।

संख्या ( ४६२ )

(सं० १) पाटिकालोधः, क्रमुकः, बृहदलः, शीर्णपत्रः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
पठाणी लोद	पठाणी लोद	पठाणी लोद	पट्टी लोध	पाटियालाध	पठानीलोद	तेरुलोदुग
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	मिन्डिलोध			Symplocos		
				teranegolles		

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		हसीलुव नु- लेजावी	हसनलुव्या	Styrax Benzoin	Benzoin-tree

स्थान—लोबान क वृक्ष मलाया, आरचीपिलेगामे होते है।  
 प्रयोग—(१) श्वास और राज्यच्चा रोगमें लोबान बहुत उपकारी है  
 (२) इसकी धूनी निगलनसे श्वास और राज्यच्चा रोग मिटती है (३) ३॥  
 रतीसे १। मासे तक लोबान दनमें पुरुपाथ बढ़ता है (४) इसका लप उत्तेजक  
 है (५) यह दूषित वायुका असर नहीं होने देता है (६) इसकी धूनीसे हवा  
 शुद्ध होती है (७) इसके प्रयोगसे मूत्राशयकी सूजन उतरती है (८) इसकी  
 धूनीसे मुर्छा मिटती है (९) इसका पाक घनाके खानसे उदरका बल और  
 पाचनशक्ति बढ़ती है जो इसके पाकको खड़ा करना होता उसमें नींबूका रस  
 जितना चाहिये उतना डाल देवे (१०) लोबानको पीसकर मालिश करने  
 और तपानेसे सर्दीकी बातपीड़ा मिटती है (११) १०० तोले लोबानमें से  
 १४ से १८ तोले तक लोबानके फूल निकालते है (१२) मात्रा २ से ४  
 तक (१३) सख्या (१४६५) १) राजाजि मही मोगर है  
 (सं०) लोह, अय, शिल्लक, कालायेसे

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
लेह	लोह	लोहु	लोसड	लोहा	लोहा	इगमु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
इलम्बु	काबिण	हदीद	निर्बाहन	Ferrum	Iron

हिन्दुस्थानमें लोह ३ प्रकारका होता है उसमें गसमें उत्तम कान्त लोह  
 होता है, उससे नीचे तीक्ष्ण होता है, औपधिक प्रयोगमें बहुधा तीक्ष्ण लोह  
 नाम आता है।

इसके शुद्ध करनेकी रीतिः— १६ तोले निकलेको, आठ गुणो जामे  
 थोटा, चौथाई रह जाति पर उसको छान २५ तोले तीछण लोहके पतले २ पत्रों  
 को अभिन्ने लाल कर २ के; उसमें ७ घेर युक्ताना चादिये ।  
 लोहभस्म बनानेकी रीति— ( १ ) उक्त प्रकारसे शुद्ध किये हुए लोह  
 का घूर तीन भाग, शुद्ध पारा एक भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, इन सबमें पाहिले  
 पार और गंधककी कजली कर, उसमें लोह घूर मिलाकर चौरपाठके रससे  
 दा पहल तक खरल कर, ताँबेके पात्रमें भर, उस पर परंठके पत्ते बांधकर, धूपमें  
 खूब देवे, जब वह अच्छा उष्ण होजाये तब उसको भानकी राशीमें ३ दिन  
 तक गाढ़ देवे, चौथे दिन निकाल कर काममें लावे— इस प्रकारसे बहुत उत्तम  
 लोह भस्म बन जाती है । इस भस्मको सोमायुत लोहभस्म कहते हैं ( २ ) लोहके  
 घूरको ७ घेर दाहिमके पत्रोंके रसमें खरल करके धूपमें सुखा दिया करे ।  
 फिर उसके गजुकी आंच देके स्वाग शीतल होने पर निकाल फिर उसीके  
 रसमें उक्त प्रकारसे आंच देवे जबतक कजल जैसा महीन न होवे तबतक  
 घुट दिया करे और खरल किया करे । इसी प्रकारसे बहुतसी औषधियोंके  
 घुट और आत्र देनेसे लोहभस्ममें कई रोगोंको नाश करनेकी शक्ति होजाती  
 है । शुद्ध लोहसारके गुण— यह कृमि रोग, प्राण्ड, वायु, वीर्यकी क्षीणता, पित्त-  
 विकार, शरीरका मोटापन, अश्वरोग, सग्रहणी, कफ, शोथ, प्रमेह, गुल्म,  
 प्लीह, विष, आमवात, कुष्ठ केशोंकी सफेदी, शरीरकी चमडीमें पसल पड़-  
 जाना, वातरक्त, कामला और क्षय आदि रोगोंको मिटाता है, चिल, वुरुपाथ और  
 हृदिको बढ़ाता है और रसियन है ।  
 प्रयोग— अशुद्ध लोहके सेवनसे नपुंसकता, कुष्ठ, हृद्रोग, शूल,  
 अश्मरी, हृत्पास आदि बहुतसे रोग उत्पन्न होते हैं । इससे एक प्रकारका  
 मद होजाता है । शरीर निबल और हृदय में रोग पैदा होने लगजाते हैं  
 ( ३ ) थोड़ी औषधिसे अथवा थोड़े घुटासे अथवा गंधक और पारके बिना  
 भस्म करनेसे जो लोह कच्चा रहजाता है उसको सेवन करनेसे आयुर्दाका नाश  
 होता है ( ४ ) इसके सेवनसे जो उपद्रव होते हैं उनको मिटानेकेलिये अगस्तके  
 रसमें बायबिदिगको पीसके चटाना और उसीरसके लेप शरीर पर करके बहुत  
 देरतक धूममें बिठा रखना चाहिये ( ५ ) लोहभस्म निवृत्त करनेवालेको पेठा



कोहला, तिलोंका तेल, उडद, गई, मंदिरा, खट्टाई, मच्छी, घृन्ताक, करले  
 आदि पदार्थ नहीं खाने चाहिये और कसरत नहीं करनी चाहिये ( ५ ) हींग  
 और घृतके साथ लोहसार देनेसे शूल मिटती है ( ६ ) मधु और पीपल  
 के साथ देनेसे पुराना ज्वर छूटता है ( ७ ) घृत और लहशानके साथ इसकी  
 भस्मका सेवन करनेसे वादी मिटती है ( ८ ) सोंठ, भिरच, पीपल और मधु  
 के साथ चटानेसे खास मिटता है ( ९ ) कालीभिरचके साथ पानम रखकर  
 खानेसे ठंडका लगना बन्ध होजाता है ( १० ) त्रिफला और मिश्रीके साथ  
 फकी लेनेसे प्रमेह मिटता है ( ११ ) अद्रकके रस और मधुके साथ चटानेसे  
 खासी मिटती है ( १२ ) घीके साथ चटानेसे वादी मिटती है ( १३ ) मधुके  
 साथ चटानेसे पित्त मिटता है ( १४ ) अद्रकके रसके साथ चटानेसे पित्त और  
 कफ मिटता है ( १५ ) निर्गुडीके रसके साथ लेनेसे शीत और वात मिटती है  
 ( १६ ) सोंठके साथ लेनेसे वादी मिटती है ( १७ ) मिश्रीके साथ लेनेसे  
 पित्त मिटता है ( १८ ) तज, पत्रज, इलायची और पीपलके साथ चटानेसे  
 कफ मिटता है ( १९ ) त्रिफलाके साथ देनेसे सन्धिगत रोग मिटते हैं ( २० )  
 बली और पलित रोगको मिटानेकेलिये त्रिफलेके साथ देना चाहिये ( २१ )  
 पारे और गंधककी फजली पीपल और मधुके साथ चटानेसे कफ रोग मिट-  
 ते हैं ( २२ ) मिश्री और चातुर्जातकके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटता है ( २३ )  
 साटेकी जड़के चूर्णके साथ फकी देकर गायका दूध पिलानेसे बल बढ़ता है  
 ( २४ ) साटेके रसके साथ चटानेसे पाण्डुरोग मिटता है ( २५ ) हलदी, पीपल और  
 मधुके साथ चटानेसे २० प्रकारके प्रमेह मिटते हैं ( २६ ) शिलाजीतके साथ चटा-  
 नेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( २७ ) अइसा, पीपल, मुनका और मधुके साथ चटा-  
 नेसे ५ प्रकारके कास मिटते हैं ( २८ ) मडाजि मिटानेकेलिये पानम रखकर  
 खाना चाहिये ( २९ ) मधु और घृतके साथ चटानेसे पाण्डु और कामला  
 मिटता है ( ३० ) इसकी और नागरपाथके चूर्णकी खीके साथ फकी लेनेसे  
 हलीमक रोग मिटता है ( ३१ ) खदिरसारके साथ इसकी नस्य लेने से नरुभीर बन्ध  
 होती है ( ३२ ) इसको सात राततक गोमूत्रमें भिगा, सुखाके दूधके साथ देनेसे  
 पडुरोग मिटता है ( ३३ ) इसको मधुके साथ चटानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ३४ )  
 लोहा रुझाया हुआ पानी पीनेसे आँनों के घाव भरते हैं और उदरका बल  
 बढ़ता है ( ३५ ) लोहेकी अंगूठी बनाकर पहिरनेसे पथरी मिटती है ( ३६ )

सख्या ( ४६६ )

( सं० ) मंडूरं, लोहकिट्टं, शिंघाणं, लोहमलं, सिंहाणम् ।

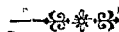
मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
मडी, मडूर	मडूर	लोढानु किट्ट	लोह कीट	मडूर	लाहेका मैल	चिट्टमु
दाविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
किट्ट	लोहकिट्ट			Ferri peroxidum	Rust or impured oxide of iron Iron rust	

लोहेको तीक्ष्ण अग्निमें धांकने से जो उसमेंसे एक प्रकारका पदार्थ (कीट) निकलता है उसको मडूर कहते हैं। यह जिस प्रकारके लोहेमेंसे निकला हो उसमें वैसेही, गुण होता है। जो भारी, चिकना, टोस तोड़नेपर अंजन जैसा और जिसमें बहुत गट्टे न हों वह उत्तम मडूर गिना जाता है। कमसे कम १०० वर्षका पुराना मडूर औपधिके प्रयोगके काममें लाना चाहिये, लोहेसे निकाले पीछे जो ८० वर्ष तक पृथ्वीमें पड़ा रहा हो वह मध्यमें गिना जाता है और साठ वर्षका अधम गिना जाता है। साठसे कम वर्षोंका मंडूर विष तुल्य गिना जाता है।

( १ ) इसको शुद्ध और भस्म करनेकी यह रीति है कि १०० या सौसे अधिक वर्षोंका मंडूर लेकर उसको बहड़ेकी लकड़ीके कोयलोंमें लालकर गोमूत्रमें बुझावे, ऐसे सात बेर बुझानेके पीछे उसको महीन पीस उससे दुगुने त्रिफलेको आठ गुने जलमें आठ घण्टा चौथाई रह जाने पर उसको छान, उस काथ में मंडूर को खरल कर, टिकिया बना, सुखा, सराव संपुटमें कपड मिट्टीसे बन्ध कर, गजपुट की आचमें फूंक देना चाहिये। फिर स्वांगशीतल होने के पीछे उसको निकालके देखना चाहिये जो वह टिकिया कठोर हो तो फिर उसी रसमें, खरलकर उक्त रीतिसे आच देना चाहिये, जबतक वह टिकिया उरुटीसे पिसनेके लायक नहीं हो जाय तबतक उक्त रीतिसे आच देते रहना चाहिये (२) मंडूरको महीन पीस लोहेकी कढाईमें डाल, आठ गुने गोमूत्रमें पचावे, जब वह गोमूत्र सूख जाय तब इसको महीन पीसकर फिर वैसेही

उक्त गोमूत्रमें पचावे, ऐसे सात बेर पचानेके पीछे उसकी टिक्रिया बनाकर गजपुटकी आंचमें जला लेवे, यह जबतक चुकतीसे पिसने लायक न हो तब तक उक्त रीतिसे आंच देते रहना चाहिये ।

प्रयोग—( १ ) यह—कपेला और शीतल होताहै पांडु, शोथ, हलीमक, कामला और कुम्भ कामला को मिटाताहै ( २ ) गोमूत्रमें पचाकर भस्म किये हुए मंडूरको गुडके साथ देनेसे पांडुरोग मिटाताहै ( ३ ) घी और मधुके साथ इसका सेवन करने से पांडु, शोथ और मंडाग्नि मिटतीहै ( ४ ) प्रथम रीतिसे बनाये हुए मंडूरको मधुके साथ चटाने से कुम्भकामला और पांडुरोग मिटाताहै ( ५ ) मृत्तिका के पात्रमें भँसके मूत्रमें एक महीनेतक मंडूर को पडा रखकर गजपुटमें उसकी भस्म बनाकर मधुके साथ सेवन करनेसे गलेगण्ड मिटाताहै ।



संख्या ( ४६७ )

( सं० ) वङ्ग, रङ्ग, त्रपु, पिचटम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वग, कथीर	राग, रागा	कलई, कथीर	कथिल	रागा, राड	रागा	वगमु
द्राचिडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वग	तार	रिसास अर्नि-यज	अरजीज	Stannum	Tin	

स्थान—बंग—हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंसे निकलताहै ।

पहिचान—रंग दो प्रकार का होताहै । एक खनिज और दूसरा मिश्रक । इनमें खनिज श्रेष्ठ है इसका दूसरा नाम खुरकहै । यह सफेद, कोमला स्निग्ध, जन्दी गलनेवाला, भारी और निःशब्द अर्थात् इसको मरोडने या कूटनेसे शब्द नहीं होताहै । मिश्रकका कुछ नीला रंग होताहै ।

यह—तिक्त, लौणिया सारक, पतला करनेवाला और कुछे पित्त बढ़ानेवाला होताहै । पाण्डुरोग कृमिरोग और वादीको मिटाताहै ।

इसको शोधनेकी-पहिली रीति--वंग को गला २ के तेल, छाछ, कांजी, गोमूत्र, कुलित्वके काथ और आकड़ेके दूधमें तीन २-वेर बुझाना चाहिये, और जो एक २ पदार्थमें सात २ वेर बुझाया जावे तो बहुतही उत्तम है। दूसरी रीति-अथवा सम्भालूके रसमें हल्दी डाल उसमें तीन वेर बुझाना चाहिये। इसको शुद्ध करनेकी और भी कई रीतें हैं परन्तु विस्तारके भयसे नहीं लिखी।

वंग भस्म करनेकी रीति--( १ ) शुद्ध वंगको मिट्टीके खप्पर (दीबरे) में चूल्हे पर चढा के गलावे। पीछे इसका चतुर्थांश अपामार्ग के पंचाग का चूर्ण लेके उसमें थोडा २ डालता जाय और नीमके घोटते घोटता जाय और खप्परके नीचे तीव्र अग्नि बनी रखवे। जब घोटते उस सबकी भस्म होजाय तब चूल्हमें से लकाड़ियां निकालके चूल्हमें अग्नि रहने देवे और खप्परको ऊपरही पढा रखवे जब वह स्वाग शीतल होजाय तब उसको खप्परमेसे निकाल, उष्ण जलसे धो डालेजिसमे अपामार्ग और नीमकी भस्म उसमेंसे निकल जावे और केवल वंग भस्म उसमें रह जावे। इसमें रहस्य यह है कि जिस रोगको मिटाना हो उस रोगको मिटानेवाली औषधियोंसे वंग भस्म बनावे अथवा ५, १० रोग मिटानेवाली औषधियोंसे वंग भस्म बनावे तो वह वंग भस्म उन रोगोंको अवश्य मिटावेगी। पीछे इस भस्मको आवश्यकरोगकी औषधिके रस अथवा काथमें खरल कर टिकिया बना सुखा सारावसम्पुटमें कपड़ मिट्टीसे बन्धकर गजपुटकी आच देवे जब बिलकुल ठण्डा होजाय तब निकाल कर उक्त रीति से केवल एक औषधिके अथवा जितनी औषधियोंसे जलाया हो, उन सबके रस या काथ में खरल कर, उक्त रीति से २५ आच दे कर खरल करके धर रखे। इस वंग भस्मसे बालकसे वृद्धतक कभी किसीके कोई विकार नहीं होगा।

रीति--( २ ) वंगके पतले २ पत्र कराके उनके छोटे २ दुम्बे कतर मिट्टीके तबेपर आवश्यक औषधिको बिछा उसपर उन दुम्बोंको कुछ कुछ चोडे बिखेर उन-पर उसी औषधिका एक अगुलका तह टेढेना चाहिये, एमें आवश्यकताके अनुसार उनके ५, ६ तह लगा गज भर आठे पान गमूमे जंगली कंठ भर, उन पर उस तबको रखकर उसके ऊपर फिर कंठ लगाके आग

लगादेवे जब वह स्वाग शीतल होजावे, तब ऊपरके कंडोंकी बानीको हटा उस तबको निकालके, उसमें जो वंगकी कतरण जलकर फूली जैसी होजातीहै उसको उस औषधिकी बानीमेंसे निकालकर फिर उसके उक्त रीतिसे गजपुट के २५, ३० आच टेनेमे बड़ी उत्तम भस्म होजातीहै इसको बनानेके पीछे कमसे कम एक वर्ष पाहिले नहीं खाना चाहिये । वंग भस्म बनानेकी और भी कई रीतियां है ॥

प्रयोग और गुण—( १ ) यह कास, श्वास, गुल्म, पीनिस, प्रमेह, भ्रम, कफ, क्षय, पाण्डु, शूल, वमन, प्रदर, कृमि, मन्दाग्नि आदि अनेक रोगों को पृथक् पृथक् अनुपानों से मिटाती है ( २ ) कपूरके साथ मुखकी दुर्गंध मिटातीहै ( ३ ) जायफलके साथ शरीरको पुष्ट करतीहै ( ४ ) तुलसीके साथ प्रमेहको मिटातीहै ( ५ ) घृतके साथ पाण्डु रोगको ( ६ ) सोहागेके साथ गुल्मको ( ७ ) हल्दीके साथ ऊर्ध्वश्वास और रक्तपित्तको ( ८ ) मिश्रीके साथ पित्तको ( ९ ) पीपलके साथ मन्दाग्निको ( १० ) चम्पाके स्वरसके साथ श्वासकी दुर्गंधको ( ११ ) नीबूके रसके साथ देहकी दाहको ( १२ ) सुपारीके साथ अजीर्णको ( १३ ) मक्खनके साथ हड्डीकी निर्बलताको ( १४ ) दूधके साथ वीर्यकी कमीको ( १५ ) विजियाके साथ वीर्यके जल्दी निकल जानेको ( १६ ) लहशुनके साथ वादीकी पीडा को ( १७ ) समुद्रफल अथवा निर्गुडीके साथ कुष्ठको ( १८ ) लौंगकी टोपियोंके साथ वमन को ( १९ ) गिलोयके स्वरस और मधुके साथ सब प्रकारके प्रमेहको मिटातीहै ( २० ) ब्राह्मीके साथ बुद्धिको बढ़ातीहै ( २१ ) फस्तूरीके साथ वीर्यको बढ़ातीहै ( २२ ) मधुके साथ बल बढ़ातीहै ॥

संख्या ( ४६८ )

( सं० ) वचा, शतपार्विका, पड्यन्धा, उग्रगन्धा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुकी
वच	सफेदवच	घोडा वज	वेखंड	वच	वच	वस, वस

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
वशम्बु	वजे	वज.	अगरेलुर्की	Acorus calamus	The sweet flag.

स्थान—वचके पेड़ हिन्दुस्थान में गीली और दल २ की जंगहमें बोये जाते हैं विशेष करके मनीपुर और नागा हिल्समें बहुधा खेतोंकी बाड़ोंपर होती है।

पहिचान—इसके पत्तोंमें से एक प्रकारका तेल निकालते हैं उसको बालोंके मसालेमें डालते हैं। इसकी जड़को ओटानेसे उसमेंसे गहरे पीले रंगका तेल निकलता है उसमें इसकी जड़ जैसी तीव्रगंध आती है, उसका स्वाद चरपरा, कड़वा और कपूर जैसा होता है।

प्रयोग—(१) वच-कड़वी, चरपरी, उष्ण, वामक, दीपन, रोचक और बुद्धिवर्द्धक है (२) इसके चूर्णकी थोड़ी मात्रा देनेसे पेटकी पीड़ा और अफारा मिटता है (३) अर्शकी पीड़ा मिटानेके लिये वच, भांग और अजवान इन तीनोंको बराबर लेके इनकी धूनी देते हैं (४) वचको आम्रातिसार में वच बहुत उपकारी है (५) २॥ तोले वचको ३५ तोले जलमें ओटा छान उसमें से २॥, २॥ तोले काथ दिनमें तीनबेर पिलानेसे सूखी खांसी मिटती है (६) ऐसेही इसका हिम या फांट बनाके दाई २ तोले दिनमें तीन बेर पिलानेसे पेटका अफारा और शूल मिटती है (७) वचको पानीमें घिसके पिलानेसे बच्चोंके जुकामकी खांसी मिटती है (८) इसको मुखमें रखनेसे एक प्रकारकी उष्णता प्रतीत होती है और मुखमें बहुतसा पानी छूट जाता है (९) इसको चिरायतेके साथ ओटाकर पिलानेसे वार २ आनेवाला ज्वर छूटता है (१०) इसके कपड़ छान किये हुए ५ रती चूर्णको निवाये दूधमें ढाल के पिलानेसे पीठा कफ टीला पड़ जाता है और गलेका दर्द मिट जाता है (११) इसकी जड़ को जो कूट कर काथ बनाके २॥ या ३॥ तोलेकी मात्रा पिलानेसे आम्रातिसार मिटता है (१२) मंदाग्नि मिटानेवाली आपथियों के साथ इसको मिलाके देनेसे भूख बढ़ती है (१३) वमन करानेके लिये वचके २ से ७॥ मासे चूर्णकी मात्रा देनी चाहिये (१४) श्वास रोग मिटानेके लिये पहिले इसकी एकसे सवा पासे तक मात्रा देनी चाहिये, फिर पांच पांच रतीकी

मात्रा हर दूसरे तीसरे घंटेमें देनी चाहिये ( १५ ) बच्चों, माके दूधमें, वच-  
 धिसके पिलानेसे उसका कफ और ज्वर मिटता है ( १६ ) जुकामकी खासी  
 और ज्वरको मिटानेके लिये एक भाग वचको २० भाग पानीमें ओटाके या  
 भिगोके देना चाहिये, इसमें मुलहठी मिला देनेसे अधिक लाभ होता है ( १७ )  
 बच्चोंका शूल युक्त अफारा मिटानेके लिये पेटपर वचका लेप करते हैं ( १८ )  
 वचके कोयलेको एरंडके तेल या खोपेरेके तेलमें पीसके वचके पेटपर लेप  
 करनेसे शूल युक्त अफारा मिटता है ( १९ ) वचको कुछ जला पीस उसकी  
 एक रतीसे ५ रती तक मात्रा देनेसे पेटकी शूल मिटती है और बल बढ़ता है  
 ( २० ) इसको सेकी हुई हींगके साथ देनेसे पेटके कीड़े निकल जाते हैं ( २१ )  
 इसके हिम, फांट या क्वाथको छिडकनेसे उस जगहके कीड़े भग जाते हैं ( २२ )  
 इसके कोयलेकी १० रती भस्मको पानामें घोल कर पिलानेसे जमालगोटेका  
 असर मिट जाता है इसलिये इसको जमालगोटेका दर्पनाशक कहते हैं ( २३ )  
 इसके चूर्णकी सवा मासेसे २॥ मासे तककी मात्रा है ( २४ ) ॥ तोले वचको  
 २५ तोले पानीमें ओटाके उसकी २५ तोलेसे ५ तोले तककी मात्रा देनेसे  
 पेटकी शूल और अफारा मिटता है और कीड़े मर जाते हैं ( २५ ) इसको जनी  
 कपडोंमें रखनेसे कीड़े नहीं लगते हैं ( २६ ) इसकी राख पिलानेसे बच्चोंका  
 अतिसार मिटता है ( २७ ) इसको काजूगुलीके तेलमें पीसके लेप करनेसे ग-  
 ठिया और चोटकी सूजन मिटती है ( २८ ) इसकी २॥ रती तककी मात्रा  
 उच्छेजक है ( २९ ) ललाटपर इसका लेप करनेसे मस्तक पीड़ा मिटती है ( ३० )  
 नाकपर मालिश करनेसे जुकामकी खासी और उससे पैदा होनेवाला तीव्र  
 ज्वर रुक जाता है ( ३१ ) कई प्रकारके ज्वर छुड़ानेके लिये इसको कुनैनके साथ देते हैं  
 ( ३२ ) आमामीर्णवालेको उब्टी करानेके लिये उष्ण जलमें नमक और वच-  
 का चूर्ण डालके पिलाना चाहिये ( ३३ ) १० मासे वचका पात्र बूरेके साथ  
 पाक बनाके नित्य तोला भर खानेसे भूलरोग मिटता है ( ३४ ) वच और  
 सोंठके बराबर चूर्णको मधुमें मिला नित्य दोनों वस्तु एक २ तोले चटानेसे  
 अर्द्धित रोग मिटता है, इसके सेवनके समय शहदका पानी पिलाना चाहिये  
 ( ३५ ) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे पुराना अपस्मार मिटता है ( ३६ )  
 इसके और पीपलके चूर्णको मधु या नीमके तेलके साथ, सुंघानेसे, गलगंदादि

रोगमिटते है ( ३७ ) वच, और पीपलके चूर्णको सुंघानेसे 'सूर्यार्चन' मिटाता है ( ३६ ) बालक होनेके पीछे गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेके लिये इसका काथ पिलाते है ( ३६ ) वच, हरिंड, और घृतकी धूप देनेसे विषमज्वर छूटता है ( ४० ) इसके चूर्णको कांजीके साथ पिलानेसे वमन बन्ध हो जाती है ( ४१ ) इसका और सरसोंको पीसकर लेप करनेसे सोई उतरती है ( ४२ ) इसके चूर्णकी वस्त्रमें पोटली बांधकर सुंघानेसे प्रतिशयाय मिटाता है ( ४३ ) घृत, दूध या जलके साथ एक महीने तक वचके चूर्णका सेवन करनेसे मनुष्यकी धारणाशक्ति बहुत बढ़ जाती है ।

संख्या ( ४६६ )

(-सं०५) वटः, न्यग्रोधः, जटालः, विटपी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी-
वड़	वड़, वरी	वड़	वट, वड़	वड़गाछ	वरगद	मरिं, (क्षीर) पालु
द्राविड़ी-	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन-	अंग्रेजी	
आल पाल	आलटमर			Ficus bengalensis	The banyan tree	

स्थान—वड़का वृक्ष हिन्दुस्थानमें सब ठौर होता है ।

पाहिचान—इसकी ऊंचाई ७० से १०० फुटतक होती है । इसकी पेदब की साधारण गुलाई २५, ३० फुटकी होती है । इसके घेरकी म-स रेखा २०० से ३०० फुटतक होती है इसकी शाखें बहुत फैलती है—उनमेंसे बहुतसी पतली-जटा निकलके जमीनतक पहुंच जाती है वेभी समय-पाकर पेदब बन जाती है । इसकी डालीके अन्तमें दोनों ओर बारी २ से पत्ते लगते हैं । इसके फलकी मध्य रेखा शुध इचकी होती है । फल सफ रूएदार और पकनेपर लाल रंग का होजाता है । फाल्गुन, चैत्रमें—इसके नवीन पत्ते निकल आते हैं ।

फूलने फलनेका समय—चैत्र वैशाखमें इसके फल पकजाते हैं ।

प्रयोग—( १ ) वड़-शीतल, ग्राही, मधुर, रुच, पचनेमें भारी और



कपेलाई ( २ ) इसका दूध पीड़ा और चोटपर लगाया जाता है ( ३ ) गठिया की सूजनपर इसका लेप करनेसे पीड़ा मिटती है ( ४ ) इसकी छालका काथ पीनेसे बल बढ़ता है और मधु प्रमेह मिटता है ( ५ ) पैरकी पगथली फट जानेपर इसका दूध लगाना चाहिये ( ६ ) दांत और मसूड़ोंके रोगोंमें बडकी छालके काथके कुल्ले कराने चाहिये ( ७ ) बडकी दूध लगानेसे डाढ़की पीड़ा मिटती है ( ८ ) इसके बीज ठंडे और बल बढ़ानेवाले हैं ( ९ ) इसके पत्तोंका पुल्टिस बनाके पीपदार फोड़ोंपर बाधना चाहिये । जब वे फोड़े पककर पीले पडजावें तब इसके पत्तोंको चावलोंके साथ ओटाके बफारा देना चाहिये ( १० ) इसकी जडकी छालको पीस ठंडाईकी रीतपर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ११ ) इसकी नरम डालियोंका फांट पिलानेसे रक्तकी वमन बन्ध होती है ( १२ ) इसकी जटाके अंगुरोंको घोट छानके पिलानेसे औपधिकी नहीं माननेवाली वमन-मिटती है ( १३ ) इसके काथ या रसको गाढा कर उसमें पुष्टाईकी औपधियां मिलाके खिलानेसे वीर्यकी क्षीणता और मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १४ ) इसकी कच्ची कलियें ग्राही है और अतिसार मिटता है ( १५ ) आम्रातिसार मिटानेकेलिये बडका दूध ३ मासे प्रातःकाल पिलाना चाहिये ( १६ ) इसके दूधका लेप करनेसे कमरकी पीडा मिटती है ( १७ ) इसका दूध दो बत्तासेमें नित्य भरकर तीन दिनतक प्रातःकाल खानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १८ ) इसकी कोमल कोपलोंको छायामें सुखा, पीस उसमें बराबर बुरा मिलाकर दूधकी लस्सीके साथ नित्य प्रातःकाल फकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १९ ) कंठमालापर बडका दूध लगाना चाहिये ( २० ) इसकी छालका चूर्ण दांतोंके नीचे रखनेसे दंतपीडा मिटती है ( २१ ) इसके फलोंको छायामें सुखा पीस गायके दूधके साथ फकी लेनेसे वीर्य गाढा होजाता है ( २२ ) इसके पत्तोंको जला उस भस्मको पानमें रखकर खानेसे उपदंश मिटता है ( २३ ) इसकी कोपलोंको गायके दहीके साथ पीसकर अग्निदग्ध पर लगाना चाहिये ( २४ ) इसका दूध त्रिवाईमें भरनेसे उसका घाव भर जाता है ( २५ ) इसके दूधमें सांपकी कांचलीकी राख मिला उसमें रुई भिगो कर उसको नासूरमें १० दिन रखनेसे ब्रण भरजाता है ( २६ ) इसके पत्तोंके कल्कमें मधु और शकर मिलाके खानेसे रक्त पित्त मिटता है

(२७) इसका दूध नेत्रमें भरनेसे जाला दूर होजाताहै, (२८) इसका दूध नाभिम भरने और उसके आस पास लगानेसे अतिसार मिटताहै (-२९) इसकी जटाकी राख खिलानेसे घमन बन्ध होताहै ( ३० ) इसकी कोपल और गुलर की छालके चूर्णम बगानूर घूरा मिलाकर, एक तालकी फकी लेकर ऊपर दूध पीनेसे वीर्यका पतलापन मिटताहै ।

संख्या ( ४७० )

( सं० ) वटपत्री, गोधावती, ऐरावती, श्यामा ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलकी
	वटपत्री	वडवती	वटपत्री	पातरकुचा	वटपत्री	
द्रोपिडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Zuzypus		
				Z. trinervis		

स्थान—वटपत्रीके वृक्ष बंगाल, भूटान और पश्चिम प्रायद्वीपमें होतेहैं।  
 प्रयोग—( १ ) यह—रूपेली, उष्ण, मधुर और क्लिबकारकहै। योनी और मूत्रके रोग, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पथरी, मूत्राघात और भगदरको मिटताहै ( २ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे उपदेश सम्बन्धी पुराने रोग मिटतेहैं ( ३ ) शरीरको पोषण करनेवाले दूषित पदार्थोंके सर्वनसे जो शरीर को प्रकृति धिगड़ जातीहै उस दशामें रुधिर शुद्ध करनेकेलिये इसके पत्तोंका काथ पिलातेहैं।

संख्या ( ४७१ )

( सं० ) चंदाक, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी ॥

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलकी
वादा	वादा	वादो	वादामुल	बौदडा	वादा	वदनिक

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शकळी	वदनिके			Loranthas longifolia L. bicolor	

स्थान—बंदाकका वृक्ष जम्बूसे भूटानतक, गंगाजीके जंगलोंमें अथवा  
आसामतक, और दक्षिणकी ओर द्रावनकोर और सीलोनतक होते हैं ।

पहिचान—इसके मोटे पत्ते बहुधा एक दूसरेके सामने लगते हैं । वे आ-  
कार और स्वरूपमें बहुत बदल जाते हैं । इसके डेढ दो इंच लम्बे बड़े पुष्पोंका  
नीचेका भाग लाल और ऊपरका हरा होता है । इसके फल तिहाईसे आधे इंच  
लम्बे और गिरदार होते हैं और इनकी गुठलीके चारों ओर गाढा चपदार प-  
दार्थ लगा रहता है ।

फूलने फलनेका समय—इसके बहुधा कातीसे जड़तक पुष्प लगा क-  
रते हैं, परन्तु कई ठौर वारह महीने ही पुष्प लगा करते हैं । इसके वृक्ष तीन प्र-  
कारके होते हैं । “अकैकिया” महुवा, कचनार, चारोली ( चिरौजी ) तेंदू “फी-  
फस” कपीला, आम, नीम, वकाइन, शहतूत “भूनस” सेव, नासपाती, मां-  
जूफल, “राट लेरा” आदि दूसरे कई वृक्षोंपर उगते हैं । जब कोई पखेरू इस  
के फलकी गुठलीको निगलकर किसी वृक्षके ऊपर बैठ करता है, उस बैठ में  
वह गुठली निकलके उस वृक्षके चिपक जाती है तब वही इसका वृक्ष उगजाता है ।  
यह जिस वृक्षपर उगता है उस वृक्षके सब रसको धीरे २ चूस लेता है और उस वृक्ष  
की जिस शाखापर यह लगता है, वह शाखा पहिले सूख जाती है, पीछे उसके  
पारकी दूसरी शाखा सूख जाती है ऐसे क्रमसे सब शाखा सूखकर अन्तमें वह  
वृक्ष जड़तक सूख जाता है और उस सूखे पेड़की लकड़ी ईधनके सिवाय और  
दूसरे काममें नहीं आती है ।

गुण—( १ ) बंदाक—शीतल, कड़वा, कपेला, रसमें मीठा, ग्राही, वृष्य,  
रसायन, त्रिप्रोषण, तथा कफ, पीत, श्रम, रुधिरविकार और विषको हरने-  
वाला है ( २ ) इस वृक्षकी एक जात जो ( फैलकटा ) होती है उसकी छालें  
सुपारीके ठौर काममें आती हैं ।

सख्या ( ४७२ )

( सं० ) वरुणः, कुमारकः, अश्मरीघ्नः, तित्तशकिः। ( ७ )

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
बरणो	वरना, (शां)	वरणो	यायवरणा	वरुणगाछ	कपरना	उलिभिरि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	उलिभिरिच मेल			<i>Crataeva diviosia</i> <i>Capparis trifoliata</i>		

स्थान—वरणोके वृक्ष रावीके पूर्वकी ओर आसामतक, मनी पुर, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान, बंगाल, बुदेलखड और राजपूताना आदि कई देशों में होते हैं।

पाहचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ३०, ४० फुट होती है इसके पेड़की गुलाई ६ फुट होती है। इसकी छाल धुधले सफेद रंगकी साफ और चिकनी होती है। इसकी डालियोंके अन्तमें तीन २ पत्तोंकी सीके लगती है। इसके सफेद रंगके बड़े पुष्प लगते हैं इसका फल सेवकी बराबर और गोल होता है उसकी पीली गिरमें चौथाई इंच लम्बे बहुतसे बीज होते हैं और उसका बिलका कठोर और खरदरा होता है, उस पर कुछ सफेद बहुतसे दाग होते हैं। जबतक इसके पुष्प निकलते हैं तबतक पुराने पत्ते लगे रहते हैं। इसके पुष्प निकलनेके साथ और उनके निकले पीछे तक नवीन पत्ते निकलते रहते हैं।

फूलने-फूलनेका मसय—चैत्र वैशाखमें यह वृक्ष फूलता है।

प्रयोग—( १ ) वरना—रूपेला, मधुर, कड़वा, चरपरा, रूक्ष, पचनेमें

लघु, लण, स्निग्ध, दीपन और भेदक है ( २ ) इसके पत्तोंको पीसके लेप करनेसे पैरोंके तलवोंकी दाह मिटती है और उष्ण करके लेप करनेसे पैरोंकी शोथ उतरती है ( ३ ) इसके पत्तोंके ६ भासेसे तीन ताले रसमें सुपारीके पत्तोंका रस और घी मिलाके पिलानेसे गठिया मिटती है ( ४ ) इसके पत्तोंको धुआं पेटमें पीके नाकके द्वारा निकालनेसे नाकके हाडका सडना या उस हाडका फोड़ा मिटजाता है ( ५ ) इसके पत्ते और छालको पीस पोदलीमें बांध तपाकर ले करनेसे गठिया मिट

ती है (६) इसकी पेदड़ या जड़की छालका काथ पिलानेसे शर्कराशर्करा मिटती  
 (७) इसकी १० तोले छालको २५ छटांक जलमें आटावे, जब १० छटांक  
 रह जाय, तब ठंडा हो जानेपर छान उसमेंसे ५ तोलेसे १० तोले तककी मात्रा  
 देनेसे मूत्रसम्बन्धी कई रोग मिटते हैं (८) इसके ताजे पत्तोंको सिरके, नींबू  
 के रस या उष्ण जलके साथ पीमके राईकी भांति लगानेसे ५ से १५ मिनट  
 में पूरा असर होनेपर वहांकी चमड़ी लाल हो जाती है और यह लेप अश्वि  
 समय तक चमड़ीपर लगा रहनेसे छाला होने लगजाता है (९) इसकी जड़  
 की ताजी छालकाभी यही प्रभाव है (१०) इसकी छालके काथपर पीपल  
 पुरकाके पीनेसे मंदाग्नि मिटती है (११) इसकी छाल और किरमालेकी गिर  
 को आटाके पीनेसे बद्धकोष्ठ मिटता है (१२) इसके फल और छालका लेप  
 करनेसे गठिया मिटती है (१३) छालके काथमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर  
 शुद्ध होता है (१४) रुधिरपिक्कारके जिन ० रोगोंमें सारसपरला काम  
 आता है उनमें यह भी काम आता है (१५) इसकी जड़के काथमें इसीका  
 फल मिलाके पिलानेसे पथरी मिटती है (१६) इसकी छालके काथमें जवखार  
 मिलाके पिलानेसे कफसे पदा हुई पथरी मिटती है (१७) इसके काथमें गुड़  
 मिलाके पिलानेसे वास्तु शूल और पथरी मिटती है (१८) इसके काथमें मधु  
 मिलाके पिलानेसे गंदमाला मिटती है ।

संख्या (१७३)

(सं०) चबुरः, युगलाक्ष, कंटालुः, पंक्तिबीजः ।

गारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बज्जाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बेलपो, चवल	चबुर, बंबल	बावळ	बाभुळ	बावलागाछ	किर्का	तुम्बचेदु
द्राविडी	किर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	ग्रीक	अंग्रेजी
बेलभोर	गोव्वलि (लि)	उम्मुगीला	मुगीला	Acacia arabica	Indran gum Arabi	Acacia tree
				Mimos		Babool tree

स्थान—बबूलके वृक्ष हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जाते हैं और अपने आपभी उगते हैं।

प्रविचान—इस वृक्षकी ऊंचाई ५०, ६० फुटकी होती है। इसकी पेठड़ २०, १५ फुट ऊंची और बहुत सीधी नहीं होती है उस पेठड़की गुलाई ५, ६ फुटसे १०, १२ फुट तक होती है। इसकी शाखें फैली हुई होती है। इसकी छाल मोटी, धुंगले भूरे-या-भायः काले रंगकी होती है उसमें छोटी-र-दरारें छालके आरपार निकल जाती है। इसकी डालियोंके आधेसे दो इंच लम्बी-सीधी चिकनी बहुधा कुछ सफेद रंगकी और बहुधा जमकीले भूरे रंगकी अथवा तीखी शूलोंके बहुतसे जोड़े लगते हैं। इसके हमली जैसे २०, २० पत्तोंके जोड़े एक सीकपर लगते हैं। इसके सुनहरी पीले रंगके पुष्प गोल धुंडीके आकारके लगते हैं पुष्प-खिलने पर उसमें से महीन रुखे निकलके फैल जाते हैं। इसकी पातड़ी ६ इंच लम्बी, त्रपटी और खानेदार होती है, उसके होंके खानेमें एक र बीज होता है। कच्ची पातड़ीमें बहुत जैप निकलता है और जड़ पकने पर सफेद रंगकी हा जाती है। इसके सबके सब पत्ते कभी नहीं खिरते हैं। फागुन और चैत्रमें नये पत्ते निकल जाते हैं। फागुन और चैत्रके महीनेमें इस वृक्षमेंसे सफेद और लाल गोंद निकलता है उनमें लालको ढीक नहीं समझते हैं।

प्रयोग—( १ ) बबूलके पेलोंके उष्ण, स्निग्ध, कृद्वत्, आर्द्र, शीतल और कफनाशक है ( २ ) इसके गोंदको घीमें तल-उसका प्राक यनाके गसूति स्त्रियोंको देनेसे बल बढ़ता है और पुरुषोंको खिलानेसे वीर्य बढ़ता है ( ३ ) इसके गोंदका पानी पिलानेसे अतिसार और आमामतिसार मिटता है ( ४ ) इसकी पातड़ीकी छाल और बादामके छिलके की आखमें जमक भिला मज्ज करके दांतोंकी पीड़ा मिटती है ( ५ ) इसके गोंदके पानीको पिलानेसे और आतोंका दर्द मिटता है ( ६ ) इसके गोंदमें कुतैन भिला कर देनेसे अतिसार और आमामतिसार मिटता है ( ७ ) इसके गोंदको पानीमें उसकी पिचकारी देनेसे मूत्राशयकी सूजन और सुजाककी ज्वलन और पी जाती है ( ८ ) इसकी छालके हिमत्या काष्ठके कुल्ले करनेसे साधारण पारेका मुखपाक समूहोंसे रुधिरका चहना और गलेकी पीड़ा नर्म पत्तोंको पीस रस निकाल कर आखमें टपकानेसे अथवा

फर बांधनेसे आंखकी पीडा और सजन मिटती है (११०) नर्म पत्तोंको शकर  
 और काली मिरचके साथ अथवा अनारके पत्तोंके साथ पीस छोनकर पिलानेसे  
 मुजाक मिटता है (१११) कोमल पत्तोंको काली मिरच और शकरके साथ पीस  
 छाननेसे पिलानेसे आमाशयमें से रुधिरका बहना बन्द्य होता है (११२) इसके  
 कोमल पत्तोंको घीमें तलकर बांधनेसे आंखोंकी पुरानी पीडा मिटती है (११३)  
 इसकी छाल अत्यन्त शोषक है (११४) इसकी छालके कांथकी पिचकारी  
 देनेसे अतिसार और आमातिसार मिटता है (११५) इसी कांथमें फिटकड़ी  
 डालके पिचकारी देनेसे श्वेतप्रदर मिटता है (११६) छालका कांथ पिलानेसे  
 उसकी पिचकारी देनेसे श्वेत और रक्तप्रदर मिटता है (११७) इसकी और  
 आमके वृक्षकी छाल प्रत्येक ६-६ मासे लेकर ढाई पाव पानीमें आध घंटे  
 आटा छानके छुले करानेसे पारेका मुखपाक मिटता है (११८) छालके चूर्ण  
 की बुरकानेसे हीठोंके छाले और उपदंश मिटता है और सर्पके दंश पर बुर-  
 कानेसे विष उतरता है (११९) इसकी पातड़ियोंको चूर्ण शोषक है और दंस्त  
 बन्द्य करता है (२०५) नवीन किण्वलोंके साथ अफीम मिलाकर खिलानेसे  
 विशेषकर बच्चोंको अतिसार और आमातिसार मिटता है (१२१) इसकी पत्ते  
 और छाल और बड़की छालके हिमसे क्ले करनेसे गलेका रोग मिटता है  
 (१२२) इसकी छालके कांथसे धोनेसे निर्वलताके कारणसे गर्भाशय और  
 कांठका बाहिर निकलना बन्द्य होता है और गुदा और गर्भाशयके दूसरे रोग  
 भी मिटते हैं (१२३) इसके गोंदके सेवनसे मद्यममेह मिटता है क्योंकि इसके  
 गोंदकी शकर नहीं धनती है (१२४) बंधूलकी छाल और बीजोंकी जलोंकर  
 उसका मजन करनेसे दांत दृढ होते हैं (१२५) पेट और आंतकी दाह मिटाने  
 के लिये इसके गोंदका चिप पिलाना चाहिये (२६) छालके कवाथके छुले  
 करनेसे दातोंका सडना मिटता है (१२७) इसके आमसे कोमल पत्तोंको पीस  
 छानकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (२८) इसकी कोमल फलियों (पात-  
 डियों) में से एक प्रकारका सार निकाला जाता है वह धीरे धीरे और कठोर होता  
 है और "अकेकिया" का नामसे मिलता है, उसकी सुगंध बहुत अच्छी होती है।  
 इसका टुकड़ेमें होके रेशमीकी तरफ देखनेसे बड़ टुकड़ा बाँतली मिले। रंगकी  
 दीखता है और सावित काले रंगका दीखता है (१२९) कोमल पत्तोंको घीमें

तल, आखके पपोटोंपर बांधनेसे आखके श्वेत भागमें जो बहुत दिनोंसे रुधिर जमा हो भिखर जाता है ( ३० ) इसकी कच्ची कलियोंको छायामें सुखा कूट छान, घीमें तल, शकर मिलाकर तोलेभर दोनों समय लेनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राशयके रोग मिटता है ( ३१ ) इसके गीले या सूखे काटे, आधमेर-पानीमें भोटा, आधा रख, उसमें मधु मिलाके पिलानेसे हिचकी मिटती है ( ३२ ) सेर पत्तोंको ५ सेर पानीमें भोटा चौथाई रख कर नित्य दोनों समय पलकों पर पतला २ लेप करनेसे बांफनीका गलना मिटता है ( ३३ ) इसकी कोंपलोंको पीसकर पीने और मलनेसे मुखपाक मिटता है ( ३४ ) इसकी कोंपलें, छाल, फलिया और गोंद, ये सब बराबर २ ले, कपड छानकर, उसमें बराबर बुरा मिला एक तोले प्रमाण नित्य फकी लेनेसे वीर्यका पतलापन और स्वप्नदोष मिटता है ( ३५ ) इसके पुष्पोंके चूर्णमें बराबर भित्री मिलाकर एक तोलेकी फकी नित्य लेनेसे पीलिया मिटता है ( ३६ ) इसकी छालके कांथसे उपदंशकी टाकीको धोना चाहिये ( ३७ ) इसकी छायामें सदैव बैठा रहनेसे शरीर दुबला होजाता है ( ३८ ) इसके पत्ते, जीरे और श्याहजीरेको पीसेकाएक तोलेकी फकी रात्रीके समय देनेसे कफातिसार मिटता है ( ३९ ) इसके पत्तोंका रस पिलानेसे अतिसार मिटता है ( ४० ) इसके पत्तोंको पीस मर्दन कर, फिर हरड़के चूर्णका मर्दन करके स्नान करनेसे बहुत पसीना होना बन्ध होजाता है ( ४१ ) इसके बीजोंके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे दृष्टी हुई हुई जुड़ जाती है ( ४२ ) बीजोंके चूर्णको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे स्नायुक मिटता है ( ४३ ) इसके १॥ मासे गोंदके चूर्णकी फकी नित्य १० दिन तक लेनेसे अतिसार मिटता है ( ४४ ) इसकी एक तोले कोंपल और एक तोले गोखरू इन दोनोंको लेप निकालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ४५ ) इसकी ३ तोले छालका हिम नित्य पीनेसे कुष्ठ मिटता है ( ४६ ) इसके सूखे पत्तोंको पीसकर हाथ पैरों पर मलनेसे पुस्तवायं मिटती है ( ४७ ) इसका भुजाहुआ गोंद साठे चार मासे और गैरु साठे चार मासे इनकी पीसके मातःकाल फकी देनेसे मासिकार्थमें प्रमाणसे अधिक कथिरका निकलना बन्ध होजाता है ( ४८ ) इस चूर्णके सेवन करनेसे या उसका लेप करनेसे उपदंश मिटता है ॥



संख्या ( ४७४ )  
 ( सं० ) वंशः, वणुः, त्वकसारः, तृणध्वजः ।

मरावाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
वाम	वास	वाश ( स )	वेळ, वाव	वास, वाश	वास	वेदुरु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मगिल	विदुरु	कसब	नएकवीर	Bambusa arundinacea B orientalis	The springy bamboo Bamboo cane	

स्थान—यह वास मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान संयुक्त प्रदेश और बंगालमें बहुत वार लगाया जाता है ।

परिचान—इसकी ऊंचाई २०, ६० फुटकी होती है । यह ३२ वर्षका होनेके पीछे इसके पुष्प लगते हैं । एक बीडेमें ३० से १०० तक वांस होते हैं । इनके जोड़की गांठोंकी मध्य रेखा ४ से ६ इंचकी होती है, इसमें छोटा छिद्र होता है, इसके दृढ़, तखे, मुड़वा एक एक या दो दोन्या तीन तीन कांटे लगते हैं उनमें डालीपर बीचका कांटा बड़ा होता है । इसके पत्ते ४ से ८ इंच लम्बे, एक तिहाई से दो तिहाई इंच चौड़े प्रतले, नोकदार ऊपरसे साफ और नीचेसे रूएदार होते हैं । बिड़लेके एक साथ पुष्प आजाते हैं और पुष्पोंके साथ बहुधा थोड़े पत्ते भी निकलते हैं । इस वासमेंसे वंसलोचन निकलता है ।

प्रयोग—( १ ) यह सारक, मधुर, छेदन, कसैला कुछ कडवा, शीतल, और खट्टा है ( २ ) इसके पत्ते या काँपलोंको काथ पिलानेसे रजोधर्म यथोचित होने लगता है ( ३ ) इसके कोमल पत्ते, काली मिरचा और सांभरे नीन को पीसके फली देनेसे अतिसार मिटता है ( ४ ) इसकी कोमल काँपलोंको पीसके फोडेपर पुल्टिस बांधनेसे उसके कीड़े निकला जाते हैं परन्तु पहिले इसका थोड़ासा रस कीडोंपर डालकर पीछे पुल्टिस बांधना चाहिये ( ५ ) कोठ, ज्वर और रुधिरकी वपनमें यह वांसाकाममें आता है ( ६ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे मस्तकपीडा मिटती है ( ७ ) इसकी छालके काथमें मधु मिलानेके

पिलानेसे कोठेमें रक्तके भर जानेसे उत्पन्न हुई दाह मिटती है ( ८ ) अकाल पद, जानेपर इसके पीछे आर-शंकु, गोंडो, गरीयु, लोम, खानेके रूपमें जाता है।

संख्या ( ४७५ )

( ८० ) वशभट्टः ।

Latin Daendrocalamus strictus Bambusa stricta The male bamboo

स्थान—यह बांस हिन्दुस्थानमें सेवाठार होता है विशेषकर उत्तर हिन्दुस्थान, आबू, बंगाल, और हिमालयकी तराईमें बहुत होता है।

पहिचान—पंजाबमें यह बांस २०, ४० दक्षिण हिन्दुस्थानमें ३०, ५०

ब्रह्माके सूके पहाड़ोंमें २०, ४० और आर्द्रस्थानोंमें २१ फुट ऊंचा बढ़ जाता है। वर्षा ऋतुके आरम्भमें थोड़े जसाहमें इस बांसकी पदङ्गपूरी लम्बी बढ जाती है, वैशाखमें इसके नवीन पत्ते निकलते हैं वे चमकीले हरे रंगके होते हैं शीतकालमें इसके पुगने पत्ते पीले पड़ जाते हैं, आर्द्रभूमिमें जो इस जातिके बांस होते हैं वे १२ महीने हर रहते हैं, इसकी टहनियां थोड़ी पोली या बिलकुल ठोस होती हैं, इसकी पदङ्गके नीचेका भाग ( बहुधा—कई भांतिसे मुड़ा हुआ होता है) इसकी पुरानी डालियोंके पत्ते बहुधा गुरखजाते हैं जो उनकी डालियां चारों तरफ फैली रहती हैं, बहुधा नीची झुकी रहती है। इसकी प्रेक्षित एकसे डेढ़ फुट लम्बी होती है, उनकी अभ्यरेखा से ३ इंच होती है, पत्ते दोनों ओरसे रूपादार और खरदरे होते हैं, उनका आकार बहुत बदल जाता है मसौले आकारके पत्ते इससे २ इंच लम्बे चौथाईसे एक इंच चौड़े होते हैं हर वर्ष इसको हरेका भेड़ेमें एक या थोड़े बांसों पर पुष्प आया करते हैं।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्तोंका प्रायः पत्तोंले काथ पिलानेसे बचा होनेके समय बहुत पीछा नहीं भोगनी पड़ती है। इसके पत्तोंका पत्तोंले अर्क आरुण्यभी प्रयोग इसी काममें आता है। ( २ ) बासकी गांठों या जोड़ोंके काथसे बचा होनेके समय बहुत दुख नहीं उठाना समझता है। ( ३ ) इसके पत्तोंके जूरासे खांसी मिटती है ( ४ ) पत्तोंके काथसे स्नान करानेसे रोग छटनेके पीछेकी निर्बलता मिटती है ( ५ ) गर्भाशयमेंसे आब्रलको निकालनेकेलिये इसके पत्तोंकी फुकी देनी चाहिये।

( ०९ )

संख्या ( ४७६ )

( सं० ) वंशरोचना, तुगांचीरी, वंशंचीरी, वंशलोचना ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचन	वंशलोचनम्
द्राविडी	कर्नाटकी	छरवी	फ़ारसी	लैटिन	— अंग्रेज़ी	
वंशलोचन	वंशलोचना	तवाशीर	तवाशीर		Bambocinnna	

बाजारमें दो प्रकारका वंशलोचन मिलता है । एक सुनहरी भाँई-दोर नीले रङ्गका और दूसरा सफेद रङ्गका, परन्तु ऐसा जान पड़ता है कि यह पहिला ही सूख जाने पर सफेद हो जाता है और इसको एक बेर जलमें डबोकर पीछा निकाल लेनेसे इसका रङ्ग वैसा ही हो जाता है जैसा कि ऊपर वर्णन किया है ।

प्रयोग—( १ ) वंशलोचन मधुर, शीतल, रूक्ष, कृपेला, ग्राही, उत्तेजक, विपनाशक, वृष्य, वन्य और वृंहण है । श्वास सम्बन्धीरोग तृषा, ज्वर, अर्द्धांग अफारा कामला और फैफड़ेके रोगोंको मिटाता है ( २ ) ज्वरमें तृषा मिटानेके लिये मधुके साथ इसको चटाना चाहिये ( ३ ) इसकी २॥ से १॥ मासे तककी मात्रा देनेसे सूखी खांसी मिटती है ( ४ ) मधुके साथ इसका लेप करनेसे मुखपाक मिटता है ( ५ ) गोखरू, वंशलोचन और मिश्रीके चूर्णकी फकी कच्चे दूधके साथ देनेसे मूत्रकी दाह मिटती है ( ६ ) साधारण विषको उतारनेके लिये इसको मधुके साथ चटाना चाहिये ( ७ ) पुराने ज्वरको मिटानेके लिये इसको गिलोयके काथके साथ देना चाहिये ( ८ ) इसको मधुके साथ चटानेसे बालकका श्वास कास मिटता है ( ९ ) मधु और मिश्रीके साथ इसका सेवन करनेसे रक्तपित्त मिटता है ।

संख्या ( ४७७ )

( सं० ) वसुकः, पाशुपतः, एकाशीलः, वसुः, वकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सफेदवसु	रातीवसु	पादरीवसु	वामनागात्र		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
					The red Nerany of Madras	

स्थान— वसुकके वृक्ष हिन्दुस्थानके जङ्गलोंमें बहुत ठौर होते हैं ।  
 प्रयोग— ( १ ) यह कटु, तिक्त, उष्ण, दीपन और पाकमें शीतल होता है । अजीर्ण, वात और गुल्मको मिटाता है ( २ ) इस वृक्षका रस भूत्रवर्द्धक है ( ३ ) इसके रसमें जल मिलाके गडूष कगनेसे शीताद रोग मिटता है ( ४ ) इसके रसमें मधु मिलाके पिलानेसे रुधिर शुद्ध होके उपदंशके पुगने रोग मिट जाता है ( ५ ) श्वेतवसुक रसायन है ( ६ ) इसके पत्ते बहुत रूक्ष होते हैं । कफ, श्यायु, मदाग्नि, गुल्म, प्लीह और शूलरोगको मिटाते हैं ।

संख्या ( ४७८ )

( सं० ) वाकुची, अवल्गुजः, कालमेषी, कृष्णाफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बावची	बावची घकुची	बापची यात्रची	बावची	सोमराज हाकुच	बावची	बावचिवितुलु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कापोहअरि- शि		तुल्मरेही	स्याहसफर	Paoralea corylifolia Tri- folium unifolium	The purple fleabane	

स्थान— बावचीके पेड़ हिन्दुस्थानमें सब ठौर होते हैं ।  
 इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाता है ।  
 प्रयोग— ( १ ) इसके बीज रूक्ष और उष्ण हैं कोई २ आघार्य्य इनको शीतल और रूक्ष मानते हैं ( २ ) ये सारक, उचेजक और पुरुषार्थ-वदानीवाले हैं ( ३ ) रक्तविकार से जो कुष्ठ और त्वचाके रोग होते हैं उनको मिटानेके

लिये इसके केवल बीजांकी या उनको मिटानेवाली दूसरी चीजांके साथ फकी दी जाती है या उनपर इसके बीजांका लेप करतेह ( ४ ) इसके बीजांकी फकी देके ऊपर चिरायतेका अर्क पिलानिस ज्वर छूटताह ( ५ ) इसकी फकी देके ऊपर नीमका रस और मधु पिलानिस पेटके कीड़े मरतेह ( ६ ) इसके पत्ते और पिलोयको पानीमें भिगो मल द्यन्नकर पिलानिस सूत्रवृद्धि होतीह ( ७ ) अजवीयनके अर्कके साथ वावचीकी फकी देनेसे पेटकी शल मिटतीह ( ८ )

तिन्नी आदि अङ्गोंके बहावकी रुकावट मिटानेके लिये वावचीका प्रयोग अच्छाह ( ९ ) वावचीके तेलको श्वतकुष्ठ पर कुछ दिनों तक लगानेमें सफेद चट्ट लाल हो जातीह । या उनपर फुन्सिया हो जातीह उनको बसीकी बसीही रहने देना चाहिये अर्थात् फाडना या मलना नहीं चाहिये, वे सूखके काल दाग हो जातेह, और उनके आस पासकी ठार, और बसीही उन सफेद चट्टाके किनारे काल पडने लगतेह अन्तमें वे सब आपसमें मिल जाते और तमाम सफेद चट्टाका रंग सादी चमडी जसा हो जाताह ( १० ) इसके लगानेसे ताजे चट्ट बढनेसे रुक जातेह किसी र के इस तेलका असर थोड़े दिन तक ही होताह ( ११ ) इसके लेपसे पिदिक्का मिटतीह ( १२ ) वावची एक भाग और तमक डेढ भाग ले कूटकर नित्य फकी लेनेसे श्वतकुष्ठ मिटताह, इसके सेवनके दिनोंमें अनवी रोटीके सिवाय और कुछ नहीं खाना चाहिये ( १३ ) वावचीको तीन दिनों तक देहीमें भिगो सुखा अतिसी शीशीमें उसका तेल निकाल उसमें थोड़ा नोसादर मिलाकर छुष्टके दागको खुजला कर लगानेसे श्वेत कुष्ठ मिटताह ( १४ ) वावचीको २१ दिन तक जलके साथ पीनेसे सफेद कुष्ठ मिटताह परन्तु इसके सेवनके समय केवल दध पीना चाहिये ।

संख्या ( ४७६ )

( सं० ) वातामः, वाताढः, नेत्रापमफलः, वातवरी ।

पारजाडी	हिन्दी	गुजराती	मैरठी	बंगाली	पंजाबी	जात्रैलडी
विद्वाम	बदाम	बदाम	बदाम	बदाम	बदाम	बदाम

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
बादाम	बादाम	लोज	बादाम	Prunus Amygdalus	Almond

इसके वृक्ष काश्मीर, पंजाब, अफगानिस्थान, और पर्सिया में होते हैं।

बादाम की कई जातें हैं उन हर एक के गुण लैटिन नामों के नीचे पृथक् लिखते हैं बादाम, मीठे और कड़े के दो प्रकार के होते हैं।

मीठे बादाम दो प्रकार के होते हैं एक पतले छिलके के उनको "कागजी" कहते हैं। दूसरे माटे छिलके के उनको "ठरडे" बादाम कहते हैं।

इसके वृक्ष का साधारण उचाई होती है। इसके कोपुले पत्ते हल्के हरे रंग के होते हैं पूरे बड़े जाने पर वे हल्के सफेद रंग के हो जाते हैं और पतझड़ में गिर जाते हैं। ये फगूरदार और कुछ लम्बे होते हैं इसके लाल छिटेदार सफेद पुष्प इकल या दो दो लगते हैं। इसका फल मखमली या रूपदार होता है, इसका छिलका सूखा होता है और जब पक जाता है उसको दूर करने से भीतर बादाम निकलता है जो आखके आकार का होता है, उसमें खोखले सल और छोटे २ बंद होते हैं उस छिलके को फोड़ने से इसमें से बादाम की गुली निकलती है।

इसकी गुली में से आधे से कुछ कम तेल निकलता है।

इसके तेल में तिर्ली, खस खस और सरसों का तेल मिला दिया करते हैं। कड़े बादाम की भुंगी में से तेल निकालने पीछे उसकी ११०० तोलें खल को केवल पानी तथा पानी और नमक में डालके अर्क खेचते हैं उसपर ६ मासे से तेल भरते तैरने लग जाता है, यह तेल बहुत विष युक्त होता है इसको काम में जाने से बड़ी सावधानी रखनी चाहिए। इस तेल का भाता दिया जाता है जो ११०० तोलें बादाम के तेल का भाता दिया जाता है जो ११०० तोलें तीर्थपत्रक है (२) बादाम के छिलकों की राख से दांतों का मजज करते हैं (३) मसूरों और धुंके बालों पर इसके कड़े फल की गुली को पीसकर लेप करते हैं (४) कड़े बादाम कथ और साफ करने बालों हैं और तद्वत्से लोगों में खाने

और लगानेके काममें आतेहै ( ५ ) बादामकी पीसीको सिरकेके साथ पीसके लगानेसे स्नायु सम्पन्नी पीड़ा मिटतीहै ( ६ ) इसके तेलसे कज्जल पाइके अंजन करनेसे दृष्टि बलवान होतीहै ( ७ ) इसके प्रयोगसे मूत्राशयमें पथरी गल जातीहै ( ८ ) ये अकृत और तिलीके रसके लहावकी रूकावटको मिटा देतेहै ( ९ ) कडवे बादामको पीस शिर पर लेप करनेसे लीखें मरतीहै ( १० ) इसकी बची बजाके योनीमें रखनेसे मासिकधर्महोतेसमयकी पीड़ा मिट जातीहै ( ११ ) इसका पुख्तिरस बांधनेसे फोड़ेकी खुजली और दाह मिटतीहै ( १२ ) छाले और खुजली मिटानेकेलिये कडवे बादामको पीस कर लेप करतेहै ( १३ ) इसकी जड़का लेप करनेसे सूजन बिखर जातीहै ( १४ ) इसकी जड़का काथ पीनेसे कथिर शुद्ध होजाताहै ( १५ ) इस फलका रस शकरके साथ मिलानेसे खांसी मिटतीहै ( १६ ) बादामकी अजीरके साथ खिलानेसे हल्का विरेचन होताहै और आंतोंकी पीड़ा मिटतीहै ( १७ ) बादामका पुराना तेल मलनेसे बाल गिरजातेहै ।

संख्या ( ४८० ) वातामभेदः ( १ )

L. Canarium cōmplanat. Eng. Java almond

स्थान— इस बादामके वृक्ष बंगालमें वीये जातेहैं ।  
 ( १ ) चित्रमें देवीकर इसके फलोंमेंसे आधा जमा हुआ तेल निकाला जाता है वह खोपरके तेल जैसा दीखताहै और स्वादिष्ट होताहै ।  
 ( २ ) इसकी छालमेंसे बहुतसा निर्मल तेल निकलताहै, उसमें खोपरी सुगंध आतीहै और वह जमकर मक्खिन जैसा होजाताहै । इसके एक प्रकारका रस जैसा गोंद लगताहै ।  
 प्रयोग— ( १ ) शिथिल घोषोपर इसके गोंदका लेप किया जाताहै ( २ ) इसको तेल बादामके तेलकी वीर काममें आसकताहै ( ३ ) खोपरीकी खोपराहट कम करनेकेलिये उसमें बादामका तेल मिला देतेहै ( ४ ) इसके ताने फलोंकी खानसे ग्या लगातार खाते रहनेसे अतिसरिका रोग होजाताहै ।

( ५ ) कई देशोंके मनुष्य इसके तजे तेलको 'खानिके' काममें लातेहैं । इसके फलके आटेकी रोटी बनाई जातीहै ॥

( सं० ) वातामभेदः ( २ )

Latin *Hydnocarpus venenata* H. inebrians

स्थान—इस वादामके वृक्ष सीलोंनमें नदियोंके किनारे और मलवार तिब्बेवल्ली, और द्रवार्नकोरमें भीहोतेहैं ॥

प्रयोग—( १ ) इसके बीजोंसे—तेल निकाला-जाताहै, वह मक्खन-जैसा गाढा होताहै और चालमुंगरेके तेलकी ठौर काममें आसकताहै ( २ ) खुजलीके रोगोंमें और विशेष करके कोढ़पर इस तेलका मर्दन किया जाताहै

( ३ ) इसके बीजोंको खानेसे चकर-अने लगतेहैं क्योंकि उनमें विषहै ।

संख्याः ( १४८३ )

( सं० ) वातामभेदः ( ३ )

Latin *Terminalia Catappa* T. Badiania

Eng. Indian almond

स्थान—इस वादामके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानसे सीलोंन तक हिन्दु-स्थानमें बहुत ठौर बोये जातेहैं ।

परिधान—इसका ८० फुट ऊंचा बड़ा वृक्ष होताहै । इसके पत्ते पत-भड़की श्रुतमें गिरजातेहैं । इसके एक प्रकारकी धुंधले रङ्गका गोद लागताहै, इसकी छाल आर पत्तोंमें से रङ्ग निकाला जाताहै ।

प्रयोग—( १ ) यह वादाम नीरोगता बढ़ानेवाला शरीर पुष्ट करनेवाला और स्वादिष्टहै ( २ ) इसकी छाल प्राणी और संकोचकहै जैसे ( १७६ ) संख्याके वादाम की बीजी और तेल काममें आतेहैं वैसेही इसकी गुली और तेल काममें आते हैं ( ३ ) इसके पत्तोंका अर्क पिलानेसे मस्तरूपीड़ा मिटतीहै ( ४ ) इस अर्क में कालानोन मिलाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै ( ५ ) खुजली, कोढ़ और त्वचाके दूसरे रोगों पर लगानेके लिये इसके कोमले पत्तोंके स्वरससे



एक प्रकारका, मलेप-वनतिहै ( ६ ) इसकी- गुलीको-सुरमाके-तेलके साथ पीसके लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( ७ ) इस-बादामकी गुलीका स्वाद असली बादामकी गुली जैसा होताहै । इसकी गुलीमें से आधा तेल निकलताहै वह स्वाद और रङ्गमें उक्त बादामके तेल जैसा होताहै, परन्तु यह तेल जल्दी नहीं विगड़ताहै । ( ८ )

संख्या ( ४६३ )

गणपत नाम के लिये आम्नाता नामक एक जगह पर - नाम

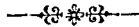
( मं० ) वनजातासिंह (पं०) नामक एक जगह - विगड़ने

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
अष्टक बिदाई	जंगली बादाम	बादाम फडवी	शनि बादाम	बादाम	बादाम के डबे	बादाम
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		लोजसहरहि बादामदस्ती		Hydnocarpus Wightiana H. integrans		

स्थान— इस जंगली-बादामके-वृक्ष-पश्चिम-प्रायद्वीपमें-कानकानमें-समुद्रके-तिनाररे-के-पहाड़ोंमें-होतेहै । इसकी- १००-तोल-गिरीको-यंत्रमें-दबाने-से अथवा पानीमें आटानेसे ४४ टोल तेल निकलताहै यह तेल स्वादिष्ट फीका और रङ्गमें सफेद होताहै ।

प्रयोग— ( १ ) इसके बीजांको पीसकर लेप करनेसे त्वचा और नेत्रके रोग मिटते हैं ( २ ) इसके फलको कुपड़े पर लगाके घाव और फोड़ों पर उसकी चुकतिमें लगातेहैं ( ३ ) इसके तेलकी बुराभर-मुगलाई परंडका तेल गंधक-कपूर और शीशुका रस मिलाके खुजलीकी फुंसियों पर लगातेहैं ( ४ ) इसका तेल चुनेका पानी मिलाके गर्म जल आदिसे जले हुए मस्तक पर लेप करतेहैं ( ५ ) कोदरागवालेको दो मासे तेल पिलाना चाहिये ( ६ ) जिलके सहित पण्डक बीज पीस इस तेलमें मिला पासा पर लेप करतेहैं इसके बीजोंमें औषधि सम्बन्धी जा गुणहै व सब इसके तेलके कारणसेहै

( ७ )-इसका तेल गठिया, मोच, चोट, गृध्रसी, छातीके रोग, खैन, नेत्र और त्वचाके कई प्रकारके रोगोंमें काम आताहै ( ८ ) कोढ़, त्वचासम्बन्धी रोग, सब शरीरमें फैले हुए उपदशके रोग और पुरानी गठियामें इस तेलकी १५ बूंदोंसे ७॥ मासे तककी मात्रा देनी चाहिये। इस तेलका सेवन सावधानीसे करना चाहिये। क्योंकि इससे कभी २ आमाशय और आतोंमें खुजली और दाह पैदा होके वमन और विरेचन होने लगजाताहै ।



संख्या ( ४८४ )

(: सं० ) वास्तूकं, चारपत्रं, वस्तुकं, शाकराजः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बथुवा	बथुवा	टाको, चील	चाकवत बठवा	वेतोशाक	धयुआ	चक्रवर्तीकूर
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजा
चक्रवर्तीकुरै	चक्रवर्ती- साप्यु	फत्फ		Chenopodium album C viride		The white goose foot

स्थान—बथुवा हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें खेतोंमें बोया जाताहै और जो, गेहूँके खेतोंमें अपने आपभी उगताहै ।

बथुवा दो प्रकारका होताहै एक बड़ा “मडबथुवा” बोया जाताहै, और दूसरा छोटा “चील बथुवा” जो गेहूँके खेतोंमें अपने आप उगताहै ।

प्रयोग—( १ ) बथुवा—रोचक, दीपन, पाचन, पचनेमें हल्का, सारक सलौना, विष्टभी, रसमें मधुर, स्निग्ध, विपाकमें भारी और कृमिनाशक है ( २ ) तिब्बती और पित्तके रोगोंमें बथुवेका शाक बहुत उपकारीहै ( ३ ) बथुवेका अर्क निकाल उसमें नमक डालके पिलानेसे पेटके कीड़े मरतेहैं ( ४ ) बथुवेके स्वरसमें मिथ्री मिलाके पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ५ ) बथुवेका शाक खिलानेसे अर्श मिटताहै क्योंकि यह सारकहै ( ६ ) पेटके बंत्रोंके रसके बहावकी रुकावट मिटानेके लिये बथुवेके स्वरसमें कालीमिरच और नमक मिलाके पिलाना चाहिये ( ७ ) इसके १॥ तोले बीजोंको आधसेर पानीमें

छोटा आधा रख खानके पिलानेसे बालक होनेके समय स्त्री कष्टसे छूट जाती है ( ८ ) इसके पत्ते और तमाखूके पुष्पोंको वांट धीमें मिलाकर लगानेसे नाडीत्रण मिट जाता है ( ९ ) इसके बीजोंके चूर्णको मधुके साथ चंद्रानेसे रक्तपित्त मिटता है ( १० ) गर्भ गिरनेके पीछे इसके बीजोंका काथ पिलाना गुणदायक है ( ११ ) इसके पत्तोंका शाक, रायता आदि बनाके खानेके काम में लाते है ।

संख्या ( ४८५ )

( सं० ) विकंकतः, सुवावृक्षः, ग्रन्थिलः, व्याघ्रपात् ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	कंटाई	वहेकळ	गुलबोटी	वोचमल अइचिंगोळ	कुकोया	मुलुबेलाम
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वज्जेवळम	मुल्लुव्याल			Flacoutia - Ramontchi - E isopida		

स्थान—इसके वृक्ष हिन्दुस्थानके सूखे पहाडोंमें होते है ।

पहिचान—इसका बहुधा छोटा भाड़ होता है परन्तु जो इसको खात जल आदि सावधानी से दिये जावे तो यह साधारण ऊर्चाई का वृक्ष होजाता है । इसकी छोटी पेदडकी गुलाई ४,५ फुटकी होती है इसकी शाखें फैली हुई और काटेदार होती है । डालीके अन्तमें काटे लगते हैं । इसकी पेदडकी छाल हल्के या धुंधले, सफेद या प्रायः काले रङ्गकी और कुछ खरदरी होती है । इसकी डालियों पर पत्ते वारीर से लगते हैं वे आकारमें कई भातिके होते है और वे नीचेसे ऊपर और ऊपरसे चिकने होते हैं, इसके कुछ हरे पीले रङ्गके छोटे पुष्प लगते हैं । इसका आध इंच लम्बा फल धुंधले, लाल या काले रङ्गका होता है उसमें ८ से १६ तक बीज दो तहमें होते है अर्थात् एकके ऊपर दूसरा तह होता है । पौष और मार्गम इसके पत्ते गिर जाते हैं और फागुनमें

नवीन, पत्ते निकल आते हैं परन्तु बहुधा जेटमं निकलते हैं, छोटे पत्ते पहिले लाल रङ्गके होते हैं परन्तु पीछे हल्के हरे रङ्गके हो जाते हैं ।

५) फूलने फलनेका समय—यह वृत्त कार्तिकसे फागुन तक फूलता है इसके फल वैशाख ज्येष्ठमें पकते हैं ।

७ प्रयोग—( १ ) यह—अत्यन्त उष्ण, कपेला, शीतल, दीपन, पाचन, पचनेमें हलका और त्रिपाकमें मधुर है ( २ ) शीतलाकी फुन्सियोंको नवें, दसवें दिन इसके काटोंसे फोड़ते हैं—( ३ ) बच्चा होनेके पीछे, जलयुक्त वायुके स्पर्शसे अथवा शीतल वायुके स्पर्शसे गठियाकी जो पीडा हो जाती है उसको मिटाने के लिये इसके बीज और हल्दीको पीसके सब शरीर पर मर्दन करना चाहिये ( ४ ) विपूचिका मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें इसका गोंद मिलाके देना चाहिये ( ५ ) बारीसे आनेवाले ज्वरको रोकनेके लिये इसकी और शिरप की छालको पीसके शरीरपर लेप करना चाहिये ( ६ ) इसका फल—मीठा, भूख, लगानेवाला और पाचक है यह शाक खानेके काममें आता है ।

संख्या ( ४८६ )

( सं० ) विजया, अजया, शृङ्गा, मातुलानी ।

मार्वाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
भाग, बूटी	भाग, भग	भाग्य, भाग	भाग, गाजा	सिद्धि	भाग	भगि
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कंजा	भगि	किन्नव	फल्कतान	Cannabis sativa C Indica	Hemp Indian hemp	

स्थान—चरस, गांजा, पत्ती, बीज और तन्तुओंके लिये भग-हिन्दु-स्थान में सब ठौर थोड़ी या बहुत बोई जाती है और अपने आप भी उगता है ।

पहिचान—इसके पके बीजोंमें से तेल निकाला जाता है अर्थात् १०० तोले बीजोंको यंत्रमें दबानेसे २५ से ३४ तोले तक तेल निकलता है उसका रङ्ग पहले कुछ हरा या भूरास लिये हुए पीला होता है परन्तु, जब इसा लग

जाती है तो उसका रङ्ग उक्त गहर रङ्गका हो जाता है। भंगका अर्क खेंचनेसे उसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलता है वह अर्कके ऊपर तैरता रहता है उसमें भंगके जैसी सुगंध आती है और उसका रंग कहकर जैसा होता है। कभी-कभी उस तेलमें कंदके जैसे छोटे-से बहुतसे टुकड़े जम जाते हैं।

प्रयोग—( १ ) भंग-तीक्ष्ण, उष्ण, कडवी, ग्राही, पाचक, लघु, दीपन, रोचक और मोहकारक है ( २ ) धनुस्तंभ और त्रिपूचिकामें इसका प्रयोग बहुत उपकारी है। क्योंकि इससे अन्तमें न भूख बन्ध होती है और न बद्धकोष्ठ होता है जैसे कि बहुधा अहिफेनके प्रयोगसे हो जाता है इसका असर भी वैसा ही होता है जैसा कि अहिफेनका ( ३ ) भंगके पत्तोंकी संवामासेकी मात्रा देनेसे शरीरकी पीडा और वांछटे-मिटते हैं और मूत्रवृद्धि होती है ( ४ ) तीव्र आमामितिसार मिटानेके लिये सोंफके अर्कके साथ भंगकी फकी देनी चाहिये ( ५ ) इसके ताजे पत्तोंका कल्क बना कुछ उष्ण कर आंखके ऊपर बांधनेसे आंखकी पीडा और टोंपक आदिकी ज्योतिका नहीं सहना मिट जाता है ( ६ ) इसके पत्तोंको दूधमें रांधकर अर्श पर उनका पुल्टिस बांधते है ( ७ ) इसके बीजोंके तेलका मर्दन करनेसे गठिया मिटती है ( ८ ) सेकी हुई भंगको धो, महीन पीसके मण्डके साथ चटानेसे अतिसार और आमामितिसार मिटता है ( ९ ) भंग और कालीमिरचके चूर्णकी गुड़में गोली बनाके देनेसे पेटकी शूल मिटती है ( १० ) इसकी अधिक मात्रा देनेसे पहिले चित्त कुछ प्रसन्न होता है पीछे सब इन्द्रियां शिथिल होजाती हैं ( ११ ) गंजेका लगातार बहुत समय तक सेवन करनेसे मनुष्य बहुधा विक्षिप्त होजाता है ( १२ ) जिन दशाओंमें अहिफेन निद्रा नहीं ला सकता है उन दशाओंमें भंगका प्रयोग बहुत अच्छा है क्योंकि इसके प्रयोगसे हृत्तास, बद्धकोष्ठ और मस्तकपीडा नहीं होती है ( १३ ) कफकी मस्तक पीडाको रोकनेके लिये भंगको प्रयोग बहुत अच्छा है ( १४ ) तेज पागलपनकी बेचेनी, कुत्ताधांसी, खास, मूत्राघात और कष्टसे मासिकधर्म होनेमें इसका सेवन करनेसे बहुत लाभ होता है ( १५ ) इलायची और लोंग आदिके साथ भंगको पीसके चटानेसे शरीरकी पीडा मिटती है ( १६ ) कालीमिरच और भंगके चूर्णको शहद के साथ चटानेसे भूख बढ़ती है ( १७ ) पुष्पार्थ बढ़ानेवाले कई पाक और गोलीयोंमें यह एक मुख्य पदार्थ है ( १८ ) यह मस्तिष्ककी शिथिलताको मिटाती है उनके विचार

बढ़ाती है और ध्यानमें मन बहुत लगाती है। इसके नशमें यह दूषण है, कि कई तरहके विचार मनमें पैदा होते हैं और मिटते जाते हैं और बिना कारणहीं हँसी आजाती है ( १६ ) बच्चोंका अतिसार और अजीर्ण मिटानेके लिये उनको मिटानेवाली दूसरी औषधियोंमें कुछ भग मिला देनी चाहिये ( २० ) भग के पत्तोंका सार निकालके औषधिके प्रयोग में लाना चाहिये ( २१ ) श्वास और धनुस्तभ मिटानेके लिये घीमें सेकी हुई एक रतीके अष्टमांशसे एक रती तक भंगमें कालीभिरच और मिश्री मिलाके देनी चाहिये ( २२ ) आम्रातिसार और पुराने अतिसारको मिटानेके लिये भङ्ग और पोश्तके दानोंका प्रयोग करना चाहिये ( २३ ) स्त्रियोंके आवेशके रोगमें हींगके साथ भङ्ग देना चाहिये ( २४ ) इसके गीले पत्तोंका पुल्टिस अण्डकोशकी सूजनपर बांधना चाहिये और सूखी भङ्गको ओटाकर वफारा देना चाहिये ( २५ ) आवेशके रोगोंमें यह बहुत काम देती है और पुरानी शूलको मिटाती है। भगका आध रती सूखा सार हींग के साथ देना चाहिये ( २६ ) शीतज्वर मिटानेके लिये पीसी हुई मासेभर भंगकी दो मासे गुडमें चार गोली बनाकर ठंड लगनेका प्रारम्भ होनेके पहिले दो २ घंटेके अंतरसे चारों गोलियोंको दे देना चाहिये ( २७ ) जिसके मूत्र की रुकावट नहीं रहती है उसको भंगका पाक खिलाना चाहिये ( २८ ) भंगकी पानीमें घोट छान कर पिलानेसे घृक्क पर प्रभाव होनेसे मूत्रवृद्धि बहुत होती है ( २९ ) इसकी सूखी कोमल टहनियों और पुष्पोंको शकर और कालीभिरच के साथ देनेसे आम्रातिसार मिटता है यदि आवश्यकता होतो इसमें अहिफेन मिलाके देना चाहिये ( ३० ) भग और खीरेकी मीगीकी ठंडाई पीस छानके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ३१ ) गाजा पीनेके व्यसनवाले मनुष्य बहुधा फुफ्फुसके रोग, जलंधर और सर्वांग जलमय शोथ इत्यादि रोग होके मरते हैं ( ३२ ) इसके पत्तोंको महीन पीसके सूवनेसे मस्तिष्क साफ हो जाता ( ३३ ) इसके पत्तोंके स्वरसका लेप करनेसे मस्तककी भुस्सी ( खोरी ) मिट जाती है और कीड़े मर जाते हैं ( ३४ ) इसके स्वरसको कानमें डालनेसे कीड़े मरते हैं और कानकी पीड़ा मिट जाती है ( ३५ ) इसके पत्तोंके चूर्णको ताजे घाव और जखम पर चुरकानेसे उनमें अरुण जल्दी आने लगता है ( ३६ ) स्नायुपीड़ा, पित्त शोथ और एक प्रकार की शोथ जो मुह पर होती है और

आस पास फैलती जाती है उसपर भंगके पंचागका लेप करते हैं ( ३७ ) भंगके पत्तोंकी मात्रा ३ मासे तक और आवश्यकतानुसार न्यूनाधिक भी दी जाती है ( ३८ ) उचम राजके सारकी एक रतीकी मात्रा देनेसे मूत्रनालीमें पित्तकी पथरीकी पीड़ाका होना मिटती है ( ३९ ) इसके पत्तोंका अर्क गर्भ करके कानमें डालनेसे गर्मी और खर्दीकी प्रसरूपीडा मिटती है ( ४० ) पानीमें भंगको भिगो के उस पानीमें अड़कोपोंको थोड़ी देर रखने और उसके फोकको उनपर बांधनेसे गर्मीसे उत्पन्न हुई अएउकोपोंकी सृजन उतरती है ( ४१ ) भंगकी जड़ गलेमें बांधनेसे ज्वर छूटता है ( ४२ ) इसको सायंकालको नूत आवे फिर उद-सरे दिन प्रातःकालके समय इसकी जड़ लाकर सिरमें बांधनेसे भूतज्वर छूटता है ( ४३ ) भंगको सेकर मधुके साथ चटानेसे नष्ट हुई निद्रा फिर आने लग जाती है ( ४४ ) इसके पत्तोंके रसमें बची भिगोकर कानमें रखनेसे उसकी पीड़ा मिटती है ( ४५ ) इसके बीजोंको पीस मोममें मिलाकर खिलानेसे विच्छका विष उतरता है ( ४६ ) जो मनुष्य नित्य अफीम खाया करता है वह यदि भंगकी अधिक मात्रा लेलेवे तो उसको हानिकार नहीं होती है ( ४७ ) भंग पीनेवालेको इसके नशेसे ऐसा विचार आता है कि मैं ऊपर चढ़ा चला जाता हूँ और नशेके समय जो २ बाँते होती हैं उन सबको भूलता जाता है और उसके मनके विचार ऐसे बढ़ते हैं कि देखते-वाले ऐसा विचार करने लगते हैं कि उसके ऊपर कोई देवी आवेश होगया है ( ४८ ) इसके बीजोंको सेक पीस आटेमें मिला रोटी बनाके खाते है ( ४९ ) भंगको शुद्ध करनेकी यह रीति है कि भंगको दूधमें ओटा पानीसे धो साफ करके काममें लाना चाहिये ( ५० ) यह यकृतके सिवाय और जगोंसे अ-पने २ द्रवके निवासको रोकती है ( ५१ )

संख्या ( ४८७ )

( सं० ) विडङ्गः चित्रतण्डुलाः अमोघाः कृमिघ्नः । ६६

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	सैलड़ी
वायविडंग	वायविडंग	वाविडंग	वाविडंग	विडंग	वाविडंग	वायविलङ्ग

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
वायविलङ्ग	वायविलंग			<i>mbellin jibes L glandulifera</i>	Babreng

**स्थान**—वायविडगकी बेलें हिन्दुस्थानके पहाडी भागोंमें अर्थात् मध्य हिमालयसे सीलोन और सिंघापुर तक बहुत होती है।

**पहिचान**—इसके पत्ते २, ३ इंच लम्बे ऊपरसे चमकदार, नीचेसे चन्दनिया, आकारमें अंडे जैसे और कुछ लम्बे होते हैं, इसके कुछ हरे पीले रंग के पुष्प और काले रंगके छोटे फल लगते हैं, जब वे सूख जाते हैं तब उनपर सब पड़जाते हैं उनमें एक २ बीज निकलता है उसमें गर्म मसाले जैसी सुगंध होती है और उसका स्वाद कुछ चरपरा होता है।

**प्रयोग**—(१) वायविडंग, बड्डी, चरपरी, लण, रोचक, हल्की, रुक्त, कीड़े मारनेवाली और बलवर्द्धक है (२) पेट और आमाशयकी वादीकी पीड़ाको मिटाती है (३) वृक्के रोगोंमें वायविडंगका प्रयोग किया जाता है (४) वायविडंगके दो तोले महीन चूर्णको आध पाव मट्टमें मिलाके प्रातःकाल पिलानेसे पेटके कीड़े मरते हैं (५) दाद मिटानेवाले और त्वचाके दूसरे रोग मिटानेवाले लेपोंमें वायविडंग मिलाई जाती है (६) दूधमें वायविडंगके दाने डाल गर्म कर, दान, छोटे बच्चेको पिलानेसे उसको पेट फूलना बन्ध होजाता है (७) रात्रिको सोते समय एक तोले वायविडंगके चूर्णको मखन निकालें हुए दूधके साथ देके फिर प्रातःकाल एंडको तेल पिलानेसे पेटकी पिटाटें निकल जाती हैं (८) सत्रा तोले वायविडंगके चूर्णको दहीमें मिलाके प्रातःकाल भोजनके पहिले लेनेसे पिटाटें निकल जाती है (९) वायविडंगका तमाखूके साथ धुन्नपान करनेसे पेट और आमाशयकी वादीकी पीड़ा मिटती है (१०) इसके चूर्णकी फकी लेनेसे साधारण मन्दाग्नि मिटती है (११) इसका फेन निकालके लगाने या मलनेसे होटोंको फटना मिटता है (१२) इसके काथमें इसीका चूर्ण सुरकाके पानेसे कीड़े मरते हैं (१३) इसके आधे या एक तोले चूर्णको मधुके साथ चटानेसे कृमिरोग मिटता है।



संख्या ( ४८८ )

( सं० ) विडंगभेदः ।

Latin *Limbelia Robusta*

L Basal

स्थान—इसके वृक्ष या झाड़ हिमालयमें यमुनासे पूर्वकी ओर बंगाल तक और दक्षिणकी ओर सीलोन तक होतेहैं ।

पहिचान—इसका बड़ा झाड़ या छोटा वृक्ष होताहै जो पृथ्वी, जल आदिक कारणसे आकारमें बहुत बदलजाताहै । इसकी छोटी शाखाओं पर और पत्तोंके नीचे लोहेके जंग जैसे रंगके रूँए होतेहैं, इसके पत्ते दो चार इंच लम्बे और कुछ गोल होतेहै इसके कुछ हरे रंगके सफेद पुष्प लगतेहै । इसके छोटे गोल फलकी मध्य रेखा प्रायः एक इंचके छठे भाग लम्बी होतीहै इसकी छोटी, सड़ी, पेदड़ और छोटी शाखाओं पर जले हुए, गोल या रेखा जैसे, धन्त्रे होतेहैं ।

फूलने फलने का समय—आसोजसे फागुन तक इसके फल पकतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) इसके बीज कृमिनाशक हैं ( २ ) इनकी फकी लेनेसे अर्शा मिटतेहैं ( ३ ) इसके कोमल पत्ते और सोंठके कायके गंड़ूप करनेसे गले के छाले मिटतेहैं ( ४ ) इसकी जड़की सूखी छालका मंजन करनेसे दंतपीडा मिटतीहै ( ५ ) इसके बीजोंके चूरणको मक्खनमें मिलाके ललाटपर लेप करनेसे पार्श्वशूल मिटतीहै ( ६ ) ये पेटकी बादी और बाइंटोंको मिटातेहैं ( ७ ) ओड़ी-सामें इसके फल खानेके काममें आते है । इनको कालीमिरचोंमें मिलाके बेच देतेहैं ।

संख्या ( ४८८ )

( सं० ) विदारी, इजुगंधा, चीरशुक्रा, स्वादुक्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
विदारीकंद	विदारीकंद	गोकोलु	भुय कोहळा	भूइ कुमडा	बिल्लैयाकंद	तेल्लनेलगुम्मुडु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
	विज्जिनिल गुम्मड			Ipoimena digitata Batatas-paniculata	( १५ )

स्थान—विदारीकंद हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें बङ्गाल और आसामसे सीलोन तक होताहै ।

विपहिचान—वर्षाऋतुमें इसके बैजनीपुष्प लगतेहै ।

प्रयोग—( १ ) विदारीकंद—मधुर, शीतल, स्निग्ध, भारी, वृंहण, वल्य और वीर्यवर्द्धकहै—( २ )—इसकी बड़ी जड़—हृदयको शुद्ध करनेवाली चरपरहित मिटानेवाली और दूध बढ़ानेवालीहै ( ३ ) विदारीकंदके चूर्ण की फकी दूधके साथ देनेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ताहै ( ४ ) विदारीकंदके रससे चूर्णको मधुके साथ चटानसे बच्चेकी निर्बलता मिटतीहै ( ५ ) विदारीकंद और पोपलकी चूर्ण मधुके साथ चटानसे बच्चेकी पाचनशक्ति बढ़तीहै ( ६ ) बालक को शरीर पुष्ट करनेके लिये विदारीकंदके चूर्णको मुनकाम मिलाके देना चाहिये ( ७ ) विदारीकंदके चूर्णको घी खांडके साथ चटानसे स्त्रियोंके मासिक धर्ममें रजका अधिक जाना बन्ध हो जाताहै ( ८ ) विदारीकंदके चूर्णको घीमें सूक, शक्कर मिलाकर उसकी फकी देके ऊपरसे दूध पिलानेसे शरीर पुष्ट होताहै ( ९ ) तिल्लीवालेको इसके चूर्णकी फकी देना चाहिये ( १० ) इससे पिरच होताहै ( ११ ) यकृत बढ़ानेमें इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होताहै ( १२ ) इसके रसमें मधु मिलाकर पिलानेसे पित्तशूल मिटतीहै ( १३ ) इसको दूधके साथ पीस, रस निकाल, उसमें शक्कर मिलाकर पिलानेसे स्त्रीके दूध बढ़ताहै ( १४ ) इसके रसमें दूध डाल आटाके पिलानेसे या इसके रसमें भैसका घा मिलाके पिलानेसे भस्मकरोग मिटताहै ( १५ ) इसके चूर्णके इसीके स्वरसकी भावना देकर घृत और मधुके साथ सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( १६ ) निवाये दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी नित्य लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै और बुढापा जल्दी नहीं आताहै ।

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतेसे भागमें बहुधा बर्हि जाती है ॥

पहिचान और फूलने फलनेका समय—इसकी बेल वर्षाऋतुमें उगती है और फूलती फलती है । यह फलनेके पीछे सूखजाती है । इसके पत्तों गहरे गहरे रंगके होते हैं । जबतक उसका फल कच्चा रहता है तबतक हरे रंगका रहता है और जब वह पक जाता है तब गिरदार चिकना, लाल रंगका और दो, द्वाइ इंच लम्बा और स्वादिष्ट मीठा होजाता है । इसके पत्ते रंगतके काममें आते हैं ।

प्रयोग—( १ ) त्रिम्बिका ( कन्दूरी ) के फल—पचनेमें भारी, मधुर, शीतल और लेखन होते हैं मलको स्थभन करते हैं, पेटमें वायु और त्रिधाके वृध बढ़ाते हैं । अरुचि, पित्त, रुधिरविकार, श्वास, सूजन, दाह और कासको मिटाते हैं बुद्धिका नाश करते हैं ( २ ) इसके पुष्पकण्डू, पित्त और कामलाको मिटाते हैं ( ३ ) इसके पत्तोंका शाक शीतल, मधुर, पचनेमें हल्का, ग्राही, कफपेला, कड़वा, पाकमें चरपरा और धातल है कफ और पित्तको मिटाता है ( ४ ) इसकी जड़ शीतल और धातु बढ़ानेवाली है प्रमेह, हाथोंकी दाह, भवर्ल और वमनको मिटाती है ( ५ ) बहुमूत्रकी चिकित्साको रसादिक औषधियों के इसकी जड़के स्वरसकी भावना देते हैं । उनकी नित्य प्रातःकाल एक गोली देके ऊपरसे इसका १ तोला स्वरस पिलादिया करते हैं ( ६ ) जब इसकी जड़को काटते हैं तो उसमेंसे कुछ चपदार रस निकलता है वह सूखने पर कुछ लाल गाँव जैसा जम जाता है । यह बहुत ग्राही है परन्तु फल जैसा कड़वा नहीं होता है ( ७ ) इसकी जड़की छालके दो भासे चूर्णकी फकी देने से अच्छा विरेचन होता है ( ८ ) इसके पत्तोंको घीके साथ पीसके घावों पर लेप करते हैं ( ९ ) छालोंपर इसके पत्तोंको बाधते हैं या उनका लेप करते हैं ( १० ) इसके पत्तोंका स्वरस मूत्ररूच्छवालेको पिलाते हैं ( ११ )—जिड़वाके ऊपरके घाव मिटानेके लिये इसके हरे फलको चूसते हैं ( १२ ) इसके हरे फलका शाक बनाके खाते हैं । पके हुए फल कबेही खानेके काममें आते हैं ॥

संख्या ( ४६२ )

( सं० ) विल्वः, श्रीफलः, सालूरः, लक्ष्मीफलः ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तेलुगु
बीलो, बील	बेल	विलिविली	बेलफल	बेल	बेल	गारेडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
बिल्व	विलपत्रि	सफरजले हिन्दी	नारवा	Aegle marmelos Caldern M	The Bacl'or' Bel fruit-tree -The Bengal' quinte	

**स्थान**—बीलके वृक्ष जिलम से आसाम तक, मध्य और दक्षिण हिन्दु-स्थान, अथवा, बिहार, बंगाल और ब्रह्मा आदि देशों में होते हैं और कहीं-२ जंगलके जंगल खड़े हैं।

**पहिचान**—इसकी उंचाई ३५ फुटकी और इसकी छोटी खड़ी पदङ्की गुलाई ७ फुटकी होती है इसके थोड़ी शाख लगती हैं डालियों के अंत बहुधा लटक हुए रहते हैं। इसकी पदङ्की और बड़ी डालियोंकी छाल आध या पौन इंच मोटी, साफ कुछ नीले, सफेद रङ्गी होती है। फागुन चैतमें इसके पुराने पत्ते गिर जाते हैं और चैत वशाखमें नवीन निकल आते हैं। इसके १-१॥ इंच लम्बे सीधे, दृढ़ और तीखे काटे लगते हैं इसकी डाली पर एक २ सीक पर तीन २ और किसी २ के पांच पत्ते लगते हैं इसके मधु जैसी, गंधवाले कुछ हरे श्वेत रंगके पुष्प लगते हैं। इसका फल कुछ गोल और उसकी मध्य रेखा २ से ५ इंचकी होती है और उसका छिलका कठोर, चिकना, सफेद या पीले रङ्गका और उसमें गिर-नारजी रंगकी होती है। इसके एक प्रकारका गोंद लगता है।

**फूलने फलनेका समय**—वशाखमें यह वृक्ष फूलता है, और आसोज कातीमें इसके फल पकते हैं। इसके फलके छिलकेमेंसे पीला रंग निकाला जाता है।

**प्रयोग**—(१) बील-मधुर, कपेला, सूक्ष्म, उष्ण, ग्राही, गुरु, कड़वा, चरपरा, अग्निवर्द्धक और पाचक होता है (२) बीलके कच्चे फलकी गिरीको ७ दिनतक तिथ्ठीके तेलमें रखकर स्नान करनेके पाहिले शरीरपर उस तेलका मर्दन करनेसे पैरके तलवोंकी जलन मिटजाती है। (३) बीलका फल-प्रतिश्याय और अतिसार

में बहुत उपकारी है परन्तु तीव्र आम्रातिसारमें इतना गुण नहीं करता है ( ४ ) कच्चे-फलका काथ पिलानेसे पुराना अतिसार मिटता है, यदि इसमें अफीम मिला दिया जायतो इसका गुण अधिक बढ़ जाता है ( ५ ) इसके कच्चे फलके गूदेको सेककर मिश्रीके साथ खिलानेसे पुराना अतिसार और आम्रातिसार मिटता है ( ६ ) इसके पके फलका शर्वत स्वादिष्ट होता है परन्तु पचनेमें भारी होता है इससे पित्त विगड़के खट्टी डकारें आने लगती है और हृदयमें दाह हो जाती है ( ७ ) इसके पके फलकी गिरको खांडके साथ खाते है ( ८ ) वील गिरका मुरब्बा बनाया जाता है और उसके खानेसे पित्तातिसार मिटता है ( ९ ) वील गिरको बहुत दिनों तक खाते रहनेसे अशरोग हो जाता है परन्तु उसको शकरके साथ खानेसे वह रोग नहीं होता है ( १० ) तीक्ष्ण रोगोंमें वील गिरका चूर्ण और पुराने रोगोंमें इसका शर्वत बहुत लाभकारी है ( ११ ) तीक्ष्ण आम्रातिसारमें इसके चूर्णकी बहुत अधिक मात्रा देनी चाहिये, इसका पहिला उत्तम गुण यह है कि इससे रुधिर तुरंत बन्ध हो जाता है, और दस्त में मल आने लगता है । इसका ऐसा प्रभाव प्रतीत होता है कि यह दस्तकी हालत पलट देता है और उनके वेगकी संख्या कम नहीं करता, वेगकी संख्या कम करनेके लिये इसमें कुछ अफीमका योग करना चाहिये ( १२ ) शीत ज्वर, व्रणादिकका ज्वर और जिस ज्वरका कारण निश्चय न हो उन सब ज्वरोंको मिटानेके लिये वील गिरके चूर्णकी फकी देनी चाहिये । इससे ज्वरका न्यूनाधिक वेग कम हो जाता है ( १३ ) आम्रातिसारमें इसके चूर्णकी सवामासेस चार मासे तककी मात्रा दिनमें तीन चार बेर या ६ बेर देनी चाहिये और दूसरे रोगोंके लिये ५ रतीसे सवामासे तककी मात्रा देनी चाहिये और इसके शर्वतकी ८ से १६ या २४ मासे तक मात्रा दिनमें तीन चार बेर देनी चाहिये ( १४ ) वील गिर, आमकी गुठली, कर्था, ईसरवेलकी भुस्सी, बिदामकी गुली और शकरकी फकी, पुराने अतिसार और आम्रातिसारमें बहुत उपकारी है ( १५ ) पके ताजे फलकी गिर-चेपदार, ग्राही और कुछ खट्टी होती है । यह अतिसारमें बहुत गुणकारी है ( १६ ) सूखे फलका चूर्ण या काथ इसकी ठौर काममें ला सकते हैं ( १७ ) इसका चूर्ण अरारूटके साथ बच्चोंके पेटकी शिकायतोंमें बहुत उपकारी है ( १८ ) जिस संग्रहणी या अतिसारमें ममूड़ोंका रोग होजाया करता है उसमें इसका द्रव सत्व

अच्छा काम देता है (१६) उसकी पकी गिरमें ग्राहीपनकी शक्ति बहुत कम होती है और कच्ची गिर पूरी ग्राही है। इसके कच्चे साबित फलको थोड़ा सेक उसमेंसे प्रायः आधा या तृतीयांश भाग एव मनुष्यको एक दिनमें एक बेर खिलाना चाहिये। इसको सेकनेसे इसकी गिर नर्म और पचनेमें बहुत हल्की हो जाती है (२०) कच्चे फलकी गिरको बनार धूपमें सुखा कुछ शकरके साथ ओटा छानके पिलाना चाहिये। उक्त दोनों क्रम हल्के ग्राही, मरोड़ोंको मिटानेवाले, नीरोगता बढ़ानेवाले, बेगोंकी संख्या और मवादको अवरय धीरे २ कम करनेवाले और पुराने अतिमार और आम्रातिसारको मिटानेवाले है (२१) इसके पके हुए फलका शर्वत हल्का सारक और ठरदा होता है और उसमें थोड़ा दिही या इमली और शकर मिलानेसे कुछ खटास आजाता है और उसकी ठरडेपन और सारकपनकी शक्ति बढ़ जाती है (२२) ताजे फलके गूदेको पीस दूधके साथ छान उसमें शीतल मिरचका चूर्ण बुरकाके पिलानेसे पुराना मूत्रच्छ मिटता है, मूत्रवृद्धि होती है, और मजोत्पादन इन्द्रियोंकी भिन्नो सुकड़ जाती है (२३) वीलके कच्चे साबित फलको भोभलमें कुछ सेक छिलके सहित कूट, उसमें चाहिये जितना जल और ताडेकी थोड़ी मिश्री मिला छानके पिलानेसे पुंगना आम्रातिसार मिटता है (२४) वीलगिरका सार बनानेकी यह रीति है कि वीलकी कच्ची गिर ६ रती पलासका गोंद एक रती, खांड २ रती इनको पीस जलकी साथ छान और मंद २ आंचसे ओटावे जध वह चाटने लायक या गोंदा हो जाय तब उतार लेवे। इसको छोटे बच्चे पुराने अतिसारमें देनेसे बड़ा लाभ होता है (२५) कच्चे फलकी गिरका अचार और मुरब्बा बनाते हैं जो बहुधा अतिसार और आम्रातिसारवालेको दिया जाता है (२६) विमूचिका और दस्तोंकी बीमारी फैलनेके समयमें पके फलका शर्वत काममें लाना बहुत अच्छा है (२७) कच्चे फलको सेक उसकी गिरको छानके सार बना लेवे। यह सार अतिसार और आम्रातिसारको मिटता है (२८) इसका पका हुआ ताजा फल अच्छा सारक है (२९) इसकी जड़ विपैल सांपके त्रिपको उतारती है (३०) बड़कोष्ठकी मज्जातिवालेको इसकी जड़की २॥ तोले बालको २५ तोले जलमें ओटाके उसमें से २॥ या ५ तोला देना चाहिये (३१) इसका पका हुआ फल कुछ पीठा, नीरोगता बढ़ानेवाला, शरीरको पुष्ट करनेवाला, स्वादिष्ट है और

सत्र प्रकारके मनुष्योंके खानेके काममें आता है ( ३२ )। इसके पके हुए फलके  
 गुदेको पानीमें छान, थोड़ी इम्ली और शकर मिलानेसे वह मधुर, दण्डा और  
 खटा प्राप्त करता है ( ३३ )। इसके पत्तोंको विदून् पानीके पीस, टिकिया  
 बनाके खराव फोड़ोंपर बांधते हैं ( ३४ )। इसके पत्तोंका ताजा रस हल्का सा  
 रकहै ज्वर और प्रतिश्यायमें दिया जाता है ( ३५ )। इसके पत्तोंके काथसे ज्वर  
 और सूखी खांसी मिटती है ( ३६ )। इसके द्रवसारकी पिचरकी देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है  
 ( ३७ )। इसकी पकी हुई गिरका गाढा किया हुआ शर्वत बहुत अच्छा और सदा सारक  
 है यह प्रभाव पैदा करनेके लिये ५ तोले शर्वतमें ५ तोले दूध गिलाजा चाहिये  
 शर्वत ऐसा गाढा होना चाहिये जो चम्मचसे खाया जावे, पीनेके लायक नहीं  
 होवे ( ३८ )। इस शर्वतमें बराबर दूध मिलाकर मूडकोंके असाध्य रोगमें पिलाना  
 चाहिये ( ३९ )। पके हुए फलकी ताजी गिर सारक होती है, परंतु सू  
 खनेपर कुछ ग्राही हो जाती है ( ४० )। कच्चे बीलकी धूपमें सुखाई हुई गिर  
 पाचक, पेटकी शूल मिटानेवाली और गुदाकी त्रिवलीकी भिल्लीका तल ब  
 दानेवाली है। जव इसका सेवन किया जावे तब भोजनका समय बढ़ल देना चा  
 हिये और भोजनकी मात्रा बढ़ा देनी चाहिये ( ४१ )। मन्दाग्नि और ज्वर  
 मिटानेके लिये इसका पक्का फल अच्छा है ( ४२ )। अतिसार और आमति सार  
 बन्ध होनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये प्रातःकालके समय धीलका मुर  
 ब्या भोजनके साथ खिलाना चाहिये ( ४३ )। इसकी जड़की छालके काथसे  
 छोड़ छोड़के आनेवाला ज्वर छूटा है ( ४४ )। इसकी जड़की छालका  
 काथ पिलानेसे हृदयका नियमसे अधिक फटकना और पागलपन मिटजा  
 ता है ( ४५ )। इसके पत्तोंका सुल्लिस वाधनेसे आखका दुखना और अधिक  
 गीठोंका आना मिटता है ( ४६ )। इसके कच्चे फलको सेक उसकी एक तोले  
 गिरमें शकर मिलाके खिलानेसे संग्रहणी मिटती है ( ४७ )। इसकी गुडके साथ  
 खानेसे रक्तातिसार मिटता है ( ४८ )। इसकी और आमकी गुडलीकी गिरमें  
 शकर और मधु मिलाकर खानेसे धमन और अतिसार मिटता है ( ४९ )। कच्चे  
 फलकी गिरी और तिल बराबर ले, कल्की बना, उसमें दही और स्नेही पदार्थ  
 मिलाकर खिलानेसे प्रवाहिका मिटती है ( ५० )। इसके पत्तोंके रसका मर्दनक  
 रनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटती है ( ५१ )। इसकी छालके काथमें मधु मिलाकर

पिलानेसे त्रिदोषकी वमन बन्ध होती है ( ५२ ) इसके फलकी गिरको पीस चाबलके पानीके साथ पिलानेसे गर्भवती स्त्रीकी वमन बन्ध होजाती है ( ५३ ) बीलगिर, और, ( अग्रणी ) का काथ ठण्डा करके पिलानेसे गर्भवतीके वात रोग मिटते है ( ५४ ) इसके फलकी गिरका अर्क पिलानेसे अतिसार, मिटता है ( ५५ ) बीलगिर, और कृथा पराधर ले पीसके देनेसे अतिसार, मिटता है ( ५६ ) इसके पत्तोंके रसमें कालीपिचुचा चूर्ण बुरकाके पिलानेसे पाण्डुशोथ, बद्धकोष्ठ, अर्श और कामलारोग मिटता है ( ५७ ) बीलगिरको गोमूनसे पीस, उससे जल और दूधके साथ तेल बना कर कानमें डालनेसे बधिरता मिटती है ।

संख्या ( ४६३ )

( सं० ) विशल्यकृत, आचरत्प्रियः, आस्फोटः, भूपलाशः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	गाली भायापाता हापरमाली	पजाबी	तैलड़ी
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन Vallisneria V Dichotoma		अंग्रेजी

स्थान—यह, बहुधा हिन्दुस्थानके बागोंमें बोया जाता है । दक्षिण और मध्य हिन्दुस्थान, बंगाल, ब्रह्मा, सीलोन, सीलहट और हिमालयमें कमाऊँ और गंगाके पश्चिमतरफ पैदा होता है ।

पहिचान—इसका वृक्षपर चढनेवाला बड़ा भाड होता है । इसकी छाल खाखी रगकी और लीकनी होती है । इसकी डंडीके दोनों ओर आगने सामने अंडेके आकारके लम्बे पत्ते लगते हैं । इसके सुगंध युक्त, श्वेत रंगके पुष्प लगते हैं । इसके कुछ लम्बा बड़ा फल लगता है उसमें दो खानें होती हैं उनमें लम्बे और रूणदार बहुतसे बीज होते हैं ।

फूलने फलनेका समय—यह मार्गशीर्षसे चैत्रतक फूलता है ।



प्रयोग—( १ ) इसका दूध घाव और पुराने फोड़ोंकी चांदियोंपर लगाया जाताहै ( २ ) भगंदरपर इसका लेप किया जाताहै ( ३ ) इसका रस लगानेसे चमडी जलजातीहै ( ४ ) पुराने घाव और दृष्टियोंको विगाड़नेवाले फोड़े और विशालीपर इसका दूधिया रस लगाया जाताहै ( ५ ) इसके लगानेसे शोथ घटके घाव जल्दी भरनेकी सूरत बनजातीहै ।

संख्या ( ४६४ )

( सं० ) विषं, वत्सनाभिः, कालकूटं, रक्तशृङ्गिकम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सिंगीमोरो	वचनाग	बछनाग	वचनाग	विष	सिंगियाविष	वसनाभि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वत्सनाभि	वत्सनाभि	वीप	विचनाग	Acentum forex	Indian aconite	

स्थान—वचनाग हिमालयमे सिकमसे गढ़वाल तक होताहै। यह २ से ५ इंच लम्बा और ऊपरकी तरफ आधे से डेढ़ इंच चौड़ा होताहै, इसकी जडही वचनागहै, दूसरोंकी जड इसकी प्रतिनिधिमे या धोखेमें देदेतेहैं—दक्षिण हिन्दुस्थानमें यह कई प्रकारका मिलताहै, जैसे, सफेद, लाल, काला और मीठा, इनमेंसे सफेद और लालको खानेकी औषधियोंके काममें लातेहैं ।

इसको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि इसके छोटे छोटे टुकड़ोंको एक थैली में बांध, दूधमें अंधर लटकाके आध घंटे तक अच्छी आंच देवे । ऐसे १७ बर ओटानेसे इसका विष क्रम हो जाताहै । शुद्ध किये हुए वचनागकी एक रीती के ४० वै. हिस्सेसे ३२ वै. हिस्से तककी मात्रा देनी चाहिये ।

प्रयोग—( १ ) वचनाग—अत्यन्त मधुर, चरपरा, कड़वा, कर्पेला, उष्ण, व्यवायी, विकाशी, योगवादी, मटकारी, रसायन, रूक्ष, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, निशद लघु, पुष्टिकारक और बलवर्द्धकहै । इसमें दूधिया वचनागसे गुण

अधिकहै ( २ ) दूधिया विपत्ती अपेक्षा इसमें विष अधिकहै इसलिये इसको लेपादिकके काममें लाना चाहिये ( ३ ) यह उत्तेजकहै और दिलकी हरकतको कम करताहै ( ४ ) ज्वर, और स्नायुसम्बन्धी मस्तकके रोगोंमें उपकारीहै ( ५ ) गलरोग, मंदाग्नि और गठियाको मिटाताहै ( ६ ) स्नायुपीडा और फोडे फुन्सियों पर इसका लेप करतेहै ( ७ ) इसके प्रयोगसे जीर्णज्वर छूट जाताहै ( ८ ) गठिया और छोटे जोड़ोंकी सूजन पर इसके तेलका मर्दन करतेहै ( ९ ) हृदयके बड़े हुए धड़कनेको घटानेके लिये यह दिया जाताहै, ( १० ) वातघ्न, औषधियोंके साथ गठिया की पीडा मिटात्रेके लिये इसकी मात्रा देतेहै ( ११ ) दालचीनी, गंधक, सोहागा और दूसरी चम्परी सुगंधित चीजोंके साथ इसकी बहुत थोडी मात्रा देनेसे वार २ आनेवाला ज्वर, छूट जाताहै ( १२ ) स्नायु और पट्टे सम्बन्धी गठियामें इसका लेप करतेहै ( १३ ) शरीरका बल बढ़ानेके लिये और वारीसे आनेवाले वेगको रोकनेके लिये इसका एक रतीके ८० वें भाग से ६० वें भाग तक देना चाहिये ( १४ ) यह पुरुषार्थ बढ़ाताहै ( १५ ) इसका तेल निकाला जाताहै, जो वादीकी पीडामें मर्दन के काममें आताहै ( १६ ) ज्वरमें बद्धकोष्ठवालेको बचनाग देतेहै ( १७ ) रसकपूर और त्रिगुलू के साथ इसकी दस्तावर गोलियां बनातेहै ( १८ ) इसकी ताजी जडकी बहुत कम मात्रा देनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटाताहै ( १९ ) हृदय का धड़कना, कम करनेके लिये और स्नायुजालकी शक्ति बढ़ानेके लिये बहुत थोडी मात्रा देनेसे यह बहुत गुणकारीहै परन्तु अधिक मात्रा देनेसे तीव्र विपत्ती काम देताहै ( २० ) यह मूत्रातिसार और मधु प्रमेहमें बहुत उपकारी है। जिस दिनसे इसको लेनेका प्रारम्भ किया जाताहै, उसी दिनसे मूत्रका तोल और उसी प्रमाण से उसका मिटास कम होने लगताहै ( २१ ) यह स्वतः वीर्य निकल जानेको बहुत रोकताहै और पक्षाघात और कुष्ठमें बड़ा उपकारी है। यह अपना प्रभाव दिखानेमें चूरता नहींहै, दूसरी ललाई लिया हुआ सफेद बचनाग भी ऐसा ही गुणकारीहै। एक तोले सफेद या लाल जातिके बचनागमें ७ तोले अरारूट या गेहूका आटा मिलाके त्वरलमें खूब महीन घोट करके एक से तीन रती तक की मात्रा धीरे धीरे बढ़ाना चाहिये और दिनमें तीन बेर देना चाहिये ( २२ ) साप और विच्छूका विष उनादनक

लिये उत्तेजक औषधियों के साथ इसकी कुछ अधिक मात्रा देनी चाहिये ( २३ ) जो कूट किये हुए ढाई तोले बचनागको अलसीके आधसेर तेलमें ओटाकर उस तेलका मर्दन करनेसे मात्र प्रकारकी वादीकी पीड़ा मिटतीहै और खासी और श्वास मिटानेके लिये भी इसी तेलको पानपर थोड़ासा लगाके खिलातेहै ( २४ ) जिसके मूत्रकी शंका न रुकती हो उसको बचनाग सेवते कराना चाहिये ( २५ ) ज्वरकी उष्मा कम करनेके लिये यह बहुत उपकारीहै ( २६ ) इसको नीचूके रसके साथ पीस लेप करनेसे गढमाला मिटतीहै ( २७ ) इसका लेप करनेसे विच्छ्वा विष उतरताहै ( २८ ) इसको मनुष्यके मूत्रमें पीस, अचेत मनुष्यको चैतन्य करनेके लिये उसके मस्तकके केश मुडवा, पछने लगाके मलना चाहिये ।

संख्या ( ४६५ )

( सं० ) विषभेदः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तैलुङ्गी
दूधियो नी गीमोरो	दूधिया बछनाग	दूधियो बछनाग				विषमनासि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		वीष		Aconitum Napellus	This is the true Monks' hood of Wolfe's base Aconite	

स्थान—दूधिया बचनाग मनीपुरके उत्तरमें, आसामके आस पास और हिमालयमें बहुत ऊंचा पैदा होताहै ।

पहिचान—यह चार प्रकारका होताहै ।

प्रयोग—( १ ) लू की गर्मी कम करनेके लिये इसकी बहुत कम मात्रा देनी चाहिये ( २ ) फेफड़ेके रोग अर्थात् गुजराती रोगमें इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होताहै ( ३ ) मुखकी स्नायुमम्बन्धी पीड़ामें इसका लेप करतेहै ।

संख्या ( ४६६ )

विषमडलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलज्ञी
	पिंढार	नागदमनी	नागदहन	नागदान		लक्ष्मीनार यन चेद
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ्रांसी	लैटिन	अंग्रेजी	
विषमगिल				Crinum asiaticum C toxicarium		

स्थान—विषमडलके वृत्त हिन्दुस्थानके बहुतेसे भागमें बोये जातेहैं।  
 प्रयोग—( १ ) इसके रसदार कुब्ज कडवें पत्तोंको ( जो प्रायः दो  
 इंच चौड़े और तीन फुट लम्बे होतेहैं ) कूटकर थोड़े परंठके तेलमें मिलाके  
 लगानेसे विपैली अथवा दूसरे प्रकारकी पित्तशोथ ( जो अंगुली या अंगूठेके  
 अंतके परेवेमें होतीहै ) मिट जातीहै ( २ ) इसके पत्तोंका अर्क कानमें डालनेसे  
 कानकी पीड़ा मिटतीहै ( ३ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे वमन होतीहै  
 ( ४ ) इसकी जड़को चूस थोड़ासा रस निगलनेमें वमन हांतीहै ( ५ )  
 इसकी साठे सात मासेसे सवा तोले तक ताजी जड़ या शाखाको महीन पीस  
 उसको अर्क निकालके पिलानेसे थोड़ा देग पीछे वमन होतीहै ( ६ ) इसकी  
 थोड़ी मात्रासे हृत्लास और पसीना होताहै। इसके प्रयोगसे कोई उपद्रव नहीं  
 होताहै ( ७ ) कतरके मुख्याये हुए कंदके चूर्ण हीफकी देनेसे वमन होतीहै  
 परन्तु गीले कंद से सूखे कंदकी मात्रा दुगुनी लेनी चाहिये ( ८ )  
 इसके शर्बतमें ताजेपोधे जितने गुणहैं ( ९ ) इसके पत्तों पर सरसोंका  
 या नारियलका तेल चुपड़कर सूजी हुई जोड़ों पर बांधना चाहिये ( १० )  
 इसके पत्तोंको अग्निपर तपा हथेलीमें मल, उनका अर्क लेप करनेसे वादीकी  
 कानमें निचोड़ देनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै ( ११ ) इसके पत्तोंके रसका  
 पीड़ा मिटतीहै।

संख्या ( ३६७ )

( सं० ) बीजपूरः, फलपूरः, रुचकः, मातुलुङ्गकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बिजारी	बिजौरा	बीजौरा(रु)	महाळंग	टावालेवुरगा छ	बिजौरानिबु	नारदव्य
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कडारानार्त काय	गादळहणु	उत्रज, उत्रुज		Citrus medica	The Citron called tree Adam's apple Citrus	

स्थान—विजोग हिन्दुस्थान के उष्ण और आर्द्र देशोंमें बहुत बोया जाता है इस वृक्षक एक प्रकारका गोंद लगता है ।

( १ ) इसका तेल निकालनेकी यह रीति है कि इसके पुष्पोंका भभकेमें अर्क निकालनेसे उसके साथ बहुत सुगन्धयुक्त तेल निकल आता है ( २ ) विजौरके छिलकेमेंसे भी ऐसेही या किसी यंत्र ( सांचे ) में दबाकर तेल निकालते हैं ।

प्रयोग—( १ ) विजौरा खट्टा रसमें मधुर, दीपन, पचनेमें हलका, रोचक, उष्ण और तीक्ष्ण है ( २ ) विजौरके छिलका उष्ण, रुच और खलवर्द्धक है ( ३ ) इसकी गिरी, रुच और शीतल है ( ४ ) इसके बीज पत्ते और पुष्प उष्ण और रुचते हैं ( ५ ) इसका रस चित्त प्रसन्न करनेवाला है ( ६ ) विष खाये हुए मनुष्यको इसका फल खिलानेसे उसकी आंतों पर ऐसा भारी प्रभाव होजाता है कि जिससे विष बाहिर निकल जाता है ( ७ ) इसका सेवनसे श्वासकी दुर्गंध मिटती है ( ८ ) इसके फलका अर्क खेचके पिलानेसे शरीर शिथिल होजाता है ( ९ ) इसके छिलकेका अचार वनाके खानेसे मसड़ोंका असाध्य रोग मिटता है ( १० ) आमातिसार मिटानेकेलिये इसका अचार खिलानेसे ( ११ ) इसके ८० बीजोंकी गिर निकाल उसमें ५ तोले शकर मिलाकर खानसे हिचका मिटती है ( १२ ) इसका ४० बीजोंकी गिरीमें दुग्ना गुड़ मिला, गोली बनाके, मासिकधर्मके दिनोंमें तीन दिन तक खिलानेसे गर्भ रहता है । इसमें दूध चावलोंका पथ्य देना चाहिये ( १३ ) ४० बीजोंकी गिरको

हड्डके साथ खानेसे बद्धकोष्ठमिटताहै ( १४ ) इसके २१ बीजोंकी गिर वा लरुकों खिलानेसे दांत जल्दी निकल आतेहैं ( १५ ) ८० बीजोंकी गिर और १० मासे पीपलको पीस गोलिया बना २१ दिन तक खानेसे श्वास मिटताहै ( १६ ) १०० बीजोंकी गिर और १०० मालीमिरचको खरलकर नीचके रसके साथ पिलानेसे मद्य गकारके विष उतरतेहैं ( १७ ) ६ बीजोंकी गिर और ४ मासे सोंठको सवातीन तोले अदरकके रसमें खरल कर गोलिया बनाके खिलानेसे अफारा मिटताहै ( १८ ) ५० बीजोंकी गिर और ५० पीपलको सवातीन तोले घृतमें ४८ दिन तक पीनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढतीहै ( १९ ) इसकी केसर और सैधानमकको मधुके साथ चटानेसे जीभ तालु और गलेका सुखना मिटताहै ( २० ) इसकी जड़ या पुष्पोंको पीसकर चाबलोंके धोवनके साथ पिलानेसे नकसीर बन्द होतीहै ( २१ ) इसकी जड़, चाबलोंकी खीले, सैधानमक और पीपलके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे वमन बन्द होतीहै ( २२ ) इसके रसमें कालानमक और मधु मिलाके पिलानेसे हिचकी मिटतीहै ( २३ ) इसकी केसरमें बराबर सैधानमक या मधु मिलाकर एक तोले भर खानेसे मुखकी विसरता मिटतीहै ( २४ ) इनके रसमें मधु मिलाकर पीनेसे दाह मिटताहै ( २५ ) इसके रस में गुड़ मिलाके पीनेसे कफ और वातकी शूल मिटतीहै ( २६ ) इसके रसमें, दूध और मधु मिलाकर पिलानेसे पार्श्व, हृदय, वस्ति और कोष्ठ इन सबकी वातशूल मिटतीहै ( २७ ) इसके रसमें सैधानमक मिलाके पिलानेसे पथरी मिटतीहै ( २८ ) इसकी केसरको काजीके साथ पीसके लेप करनेसे मसूरिका पक जातीहै ( २९ ) इसकी केसरका रस कानमें डालनेसे कर्णशूल मिटतीहै ( ३० ) इसका जड़ और मुलहट्टीको मधु और घृतमें मिलाकर चटानेसे बालक सुखसे पैदा होजाता है ( ३१ ) निजोरे का अल्लेह चटानेसे उदरक रोग और वादका उन्माद मिटताहै ।

संख्या ( ४६८ )

( सं० ) मधुकर्कटी, मधुबीजपूर, मधुली, महाफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
		पापैयो	गोढमहालुग	वाताविलेवु	मिठ्ठानिचू	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
			लीमूनेशरवती	-Citrus Var 4 Limetta C nobilis		The sweet lime of India

स्थान—यह हिन्दुस्थानके बहुतमे भागोंमें बोया जाताहै, विशेषकरके दक्षिण हिन्दुस्थान और नीलगिरी पहाड़में हांताहै।

प्रयोग—( १ ) ज्वरकी घनाइट मिटानेकेलिये इसकी केसर खिलोतेहैं ( २ ) इसके प्रयोगसे कामला राग मिटताहै ( ३ ) इसका ताजा फल खानेके काममें आताहै। इसका अचार और मुरब्बा बनातेहैं।

संख्या ( ४६६ )

( सं० ) वीरवृक्षः, अश्रमरोहरः, वीरतरः, वृहद्वातः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
(अजमेरमें खड़ी)	विलान्तर वरचल	बेलतरु	बेलतूर	वीरतरु		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
				Dichrosta Chyse mimosa C		

स्थान—खैडीके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थान, पश्चिम और मध्य हिन्दुस्थान, राजपूताना, मद्रास अहाता और सीलोनके सूखे पथगलि पहाड़ोंमें होतेहै। गंगाके किनारे फतेहगढ़ तक, जेपुरके पास आर टाटगढ़के पास मेरवाड़ेके हंगराम भी होतेहैं।

पहिचान—(१) इसका भाड़ यो छोटा वृक्ष होताहै, इसके सीधे, दृढ़ और तीखे कांटे लगतेहैं। इसके छोटे पत्तोंके १२ से १५ जोड़े लगतेहैं। इसके ऊपरके उपजाऊ पुष्प पीले रंगके और नीचेके बंजड़ पुष्प सफेद, बैजनी या गुलाबी

रंगके होतेहैं। इसके २ से ८ फलियोंके गुच्छे लगतेहैं। वे फलियां २, ३ इंच लम्बी, चौथाई इंच चौड़ी और विना क्रम मुड़ी हुई होतीहैं। १ फलीमें १०, १५ बीज निकलतेहैं। इसमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाताहै।

उष्णकालमें इसके पुष्प लगतेहैं।

प्रयोग—( १. ) यह—चरपरा, उष्ण, पचनेमें कडवा, ग्राही, और अग्निवर्द्धकहै। मूत्रकृच्छ्र, पथरी, सधियोंकी शूल, योनी रोग और मूत्राघातको मिटाताहै ( २ ) इसकी नर्म दहनियोंको कूट पीसके दुखती हुई आखपर लेप करतेहैं।

संख्या ( ५०० )

वूई ॥

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
वूई			रूपूर मवुरा	चय	वूई कल्लन	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Aerua lanata Acyranthes lanata		

स्थान—वूई हिन्दुस्थानके बहुतसे जगलोंमें होतीहै।

इसके पुष्पोंमें मीठी गंध आतीहै।

प्रयोग—( १ ) ललाट पर इसकी जडका लेप करनेसे मस्तकपीड़ा मिटतीहै ( २ ) एक थैलीमें वूईकी कलियों भर कर उसको पैरके नीचे बिछी हुई रखनेसे पैरकी फूटनी मिटतीहै ( ३ ) चूहोंको इसके बीज अतिप्रियहै।

संख्या ( ५०१ )

( सं० ) चूनाम्लं, फलाम्लकं, तिनित्डीकं, चुक्राम्लम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
डांसरचा	विषाग्धिल		आमटै	तैतुल	डांसरा रमाकराना	



द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
				Garcinia indica G purpurea	

प्रयोग—( १ ) पके हुए ढासरे-खट्टे, पचनेमें भारी, ग्राही, चरपरे, कपेले, लघु, उष्ण, रोचक, दीपन, रूक्ष, कफ और वातवर्द्धक और कुमिनाशक है। तृषा, संग्रहणी, शुष्म, शूल, हृद्रोग और अर्श को मिटाते हैं ( २ ) इसके कच्चे फलका स्वाद खट्टा होता है और पके हुएका खट्टमीठा होता है।

संख्या ( ५०२ )

( सं० ) वृद्धदारकः, छागलांघ्री, जुंगा, अतरुणदारुः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
विधायरो	विधारा	वरधारो	वरधारा	विद्धडक	भिधारा	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Gmelina asiatica G parvifolia Ronrea santaloid		

स्थान—विधारा-दक्षिण हिन्दुस्थान और सीलोनके जंगलोंमें होता है और बंगालमें बोया जाता है।

पहिचान—इसका बड़ा भाड होता है। इसके बहुतसी शाखें फूटती हैं। इसकी छोटी, डालियोंके कांटे लगते हैं। इसकी डालियोंके अन्तमें पीले पुष्प लगते हैं। इसके आध इंच लम्बा फल लगता है।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीने पुष्प लगते रहते हैं।

प्रयोग—( १ ) यह चरपरा, कडवा, कपेला, उष्ण, रसायन और सारक है ( २ ) गठिया और स्नायुजालके रोगमिटानेके लिये विधारेका प्रयोग किया जाता है ( ३ ) विधारेमें चप बहुत होता है ( ४ ) इसके प्रयोग से रुधिर शुद्ध होता है ( ५ ) शरीरकी विगडी हुई प्रकृतिको सुधारनेके लिये दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी देनी चाहिये ( ६ ) इसके पत्तोंको पानीमें

भिगोनेसे पानी गाढा होजाताहै। उसमें मिथ्री डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र अथवा वैसेही दूसरे रोग मिटतेहै ( ७ ) मूत्राशयकी दाह और प्रतिश्याय मिटानेकेलिये इसका काथ पिलाना चाहिये ( ८ ) शतावरके साथ विधारेका काथ करके पिलानेसे गठिया मिटतीहै ( ९ ) त्रिफला और विधारेका काथ पिलानेसे उपदंश मिटताहै ( १० ) इसके चूर्णको काजीके साथ पीनेसे श्लीपद मिटताहै ( ११ ) इसकी जड़के चूर्णक शतावरीके स्वरसकी ७ भावना देकर उसमेंसे एक तोले भर घृतके साथ नित्य १ महीने तक चाटनेसे स्मरणशक्ति और बुद्धि बढ़तीहै ( १२ ) दूसरी आपधियोंसे भी पानी जमकर गाढा होजाताहै परन्तु उसको हिलानेसे ढीला पड जाताहै इससे जमाया हुआ पानी ढीला नहीं पडताहै ।

— ० —

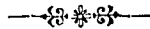
संख्या ( ५०३ ) -

( सं० ) वृन्ताकः, निद्रालुः, शाकश्रेष्ठा, नीलफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
वैगण	वैगन, भटा	वताकटी	वागें, वागी	वेगुनगाद्य	बैगान	-
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेजी
		बाजजान	बादजान	Solanum melongena. S. Elaeagnum		Egg plant Brinjal

स्थान—वैगन हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जातेहै ।  
 पहिचान—वैगन ४ प्रकारके होतेहै, इसके पत्ते जहरी होतेहै ।  
 प्रयोग—( १ ) वैगन मीठा, चरपरा, कंठवा, उष्ण, पचनेमें चरपरा, सलौना, दीपन, रोचक और पचनेमें हल्का है । वीर्य, रुधिर और हृदय के बल को बढ़ाता है ( २ ) ज्वर, वात, कफ, हृत्लास, कास और अरुचिको मिटाताहै ( ३ ) कच्चा वैगन कफ और पित्तको मिटाताहै ( ४ ) पका वैगन पित्तको बढ़ाता है और पचनेमें भारी है ( ५ ) वैगनका भुरता पचनेमें बहुत हल्का और दीपन है । कफ, मेद और बार्दाको मिटाताहै ( ६ ) वैगनका शाक

प्रयोग—( १ ) यह कपेली, शीतल, कडवी और चरपरी है। कफ, वात, पित्त, दाह, अर्श, शोथ, अश्मरी, मूत्रकुच्छ, विसर्प, अतिसार, रुधिरविकार, योनीरोग, वृषा, व्रण, प्रमेह, रंक्तपित्त, कुष्ठ, और विषका नाश करती है ( २ ) इसके अंगुरसलौने पचनेमें हल्के, चरपरे और उष्ण है कफ और वातको मिटाते है ( ३ ) इसके पत्ते भेदक, कपेले, पचनेमें हल्के, शीतले, कडवे, चरपरे और वातल है ( ४ ) रुधिरविकार और कफ पित्तको मिटाते है ( ५ ) इसको बीज कपेले, मीठे, खट्टे, रुक्ष और पित्त बढ़ानेवाले है। रुधिरविकार और कफको मिटाते है। इसके फलकी गिर और छोटी कोमल डालिया खानेके काममें आती हैं।



संख्या ( ५०६ )

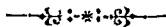
( सं० ) जलवेतसः, वानीरः, नादेयः, प्रारिव्याधः।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुगी
जलवेत	जलवेत	जलवेतस	जलवेतस	जलवेत	जलवेत	प्रव्वहणे
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
नीरवजि	नीरवजि			Calamus fasciculatus		

स्थान—जल वेतके वृक्ष बंगाल, ओडीसा, चटगांव और ब्रह्मा आदि देशोंमें होते है।

पहिचान—जलवेत छोटी अवस्थामें खड़ी रहती है और जब बड़ जाती है तब आश्रय दूढ़नेके लिये झुककर, वृक्ष और भाडियों पर चढ़ती है।

प्रयोग—( १ ) यह शीतल, कडवी, कपेली, वातल, ग्राही और रुक्ष होती है व्रणको शुद्ध करती है। पित्त, रुधिरविकार, व्रण और कफको मिटाती है।



संख्या ( ५०७ )

( सं० ) वैडूर्य, केतुरत्नं, विदूरजं, अभ्ररोहम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लहसणियो	लहसुनिया	लसणियो	वैडूर्य	वैडूर्य	लहसुनिया	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
					Cat's eye	

गुण—(१) लहसुनिया-उष्ण और खट्टा होता है। रक्तपित्त, पित्तकणूक, गुल्म, खट्टरोग और कफ वातको मिटाता है। बुद्धि, आयु, बल और अग्नि को बढ़ाता है और रसायन है।

संख्या (५००)

( सं० ) बोलं, गंधरसं, ब्रणारि., रक्तापहम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
बीजाबोल	बीजाबोल	हिराबोल	बोळ	गधरस	बीजाबोल	बोलमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
करियबोल	सुमान्दर	मुर, मुर		Balsamodendron myrrha	Myrrh	

स्थान—बीजाबोलके वृक्ष हिन्दुस्थानके पश्चिमभागमें पैदा होते हैं।

प्रयोग—( १ ) यह शीतल, दीपन, पाचन, मधुर, चरपरा और कड़वा है ( २ ) पुराने निगडेहुए और देरीसे भरनेवाले फोड़ोंको इसके काथसे धोने चाहिये ( ३ ) मुख और मसूड़ोंके छालोंको मिटानेके लिये इसको मुँह में रखना चाहिये ( ४ ) इसके छुल्ले करनेसे गलेके छाले और पीडा मिटती है ( ५ ) इससे सूखी खांसी तर होजाती है ( ६ ) वृद्ध मनुष्योंका श्वास मिटानेके लिये इसका प्रयोग अच्छा है ( ७ ) आतोंके कड़े मारनेके लिये इसको परदेके तेलके साथ देना चाहिये ( ८ ) इसका लेप करनेसे ठण्डी गाँठें खिल जाती हैं ( ९ ) इसको स्त्रीके या गर्भीके दूधमें गलाके आखमें डालनेसे आखकी पीडा मिटती है और गीढ़ आना बन्द होजाता है ( १० ) अपस्मार मिटानेवाली औ-

पत्रियोंमें इसको मिलानेसे, उनकी शक्ति बढ़ जाती है, (११) शोरेके हल्के, तिजाव में इसको मिलाकर लगानेसे पुराने विगडे हुए फाँड़े मिटते हैं (१२) श्वासन लिंकाके विगडे हुए द्रवके निकासको रोकनेकेलिये इसकी फकी देनी चाहिये (१३) बीजाबोलको गुडमें मिलाकर देनेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ता है (१४) इसका लेप करनेसे अंडकोपकी सूजन उतर जाती है (१५) यह उष्ण और रूक्ष है (१६) इसको गुलाबके गुलकंदमें मिलाके देनेसे ढीलेमलके एक दो वेग होजाते हैं (१७) सोंठके साथ फकी देनेसे मन्दाग्नि मिटती है (१८) इसको मिट्टीके बरतनमें पानीके साथ घिस लपटे जैसा गाढा करके चटानेसे पेटका अफारा मिटता है (१९) चिरायतेके अर्कके साथ इसकी फकी, देनेसे ज्वर छूटता है (२०) इसको और हल्दीको घी और मधुमें मिलाकर चटानेसे हलीमक रोग मिटता है (२१) तिलोंके काथके साथ इसकी फकी देनेसे स्त्रियोंका कष्टसे मासिकधर्म होना मिटजाता है (२२) इलायची, वंशलोचन और बोलको मधुके साथ चटानेसे शरीरकी निर्बलता मिटती है (२३) ४ मासे बीजाबोलको रात भर पानीमें भिगो उसके नितरे हुए पानीमें थोड़ी मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पिलानेसे मूत्रच्छ मिटता है (२४) इसको सिर केमें पीसकर मर्दन करनेसे खुजली मिटती है (२५) बीजाबोल और लोंगे घराघर ले, महीन पीस वस्त्रमें बांधके गर्भाशयके मुँह तक पहुँचानेसे गर्भाशय शुद्ध होजाता है ।

संख्या (५०६)

(सं०) ब्रीहिः, तरुडुलः, शालिः, षष्टिकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
चावल	चावल	चौरा	साळ	आशुधान्य	चावल	
द्राविडी	कर्नाटकी	थरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		उरुज	विरज	Oryza Sativa	Rice	

स्थाने—चावल हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोये जाते हैं।

चावल कई प्रकारके होते हैं।

प्रयोग—( १ ) जियादे गर्मी पड़नेसे विना समयमें पके हुए नये चावलोंको खानेके काममें लानेसे मंदाग्नि होकर विपूचिका होनेका बडा भारी भय है। जैसेकि नये चावलोंको खानेसे सन् १८१७ ई० में बड़ी भारी विम्वचिका फैली थी, इससे पहिले भी हिन्दुस्थानमें विम्वचिकाका रोग होताथा, परंतु इसके पीछे प्रनिवर्ष यह रोग फैलने लग गया। नये चावल रोग पैदा करते हैं इसलिये पुराने चावल भोजनके काममें लाने चाहिये ( २ ) घंवरके पास जल युक्त स्थानोंमें जो विना बोये चावल पैदा होते हैं उनको देवभात कहते हैं, ये औपधि के प्रयोगमें काम आते हैं ( ३ ) रोगी और निर्बल मनुष्यको चावलोंका पथ्य-दिया जाता है ( ४ ) भुस्ती समेत चावलोंको भिगोके सेक लेवे। पीछे उनको कूट, भुस्से से अलग कर दहीके साथ खिलानेसे आमातिसार मिटता है ( ५ ) चावलोंका मांड ज्वरमें और पित्तशोथमें बड़ी शान्ति करनेवाला है ( ६ ) मूत्राघात और उसी प्रकारके रोगोंमें चावलोंके मांड में शकर मिलाके पिलाना चाहिये ( ७ ) मांडमें नींबूका रस और शकर मिलाके अथवा और कोई रोजक चीज मिलाके खिलाने और पिलानेसे अरुचि मिटती है ( ८ ) गुटामें मांडकी पिचकारी देनेसे आंतोंकी पीड़ा मिटती है ( ९ ) चावलोंका पुल्टिस अलसी जितना काम देता है ( १० ) जाँके ओटाये हुए जलकी ठौर चावलोंका मांड दे सकते हैं ( ११ ) अतिसार मिटानेके लिये चावलोंका मांड पिलाना चाहिये ( १२ ) चावलोंको तरबूजमें भर उसका सूद बन्द कर ७ दिनतक पड़ा रखकर उसमेंसे चावल निकाल सुखा पीसके पीठी करनेसे मुखकी भाई मिटती है ( १३ ) चावलोंको पीके साथ पीस कर लेप करनेसे विसर्प रोग मिटता है ( १४ ) चावलोंके आटेके थूहरके दूध की भावना दे उसके पूरे निकालके ७ दिनतक खानेसे उदर रोग मिटते हैं।

संख्या ( ५१० )

( सं० ) शंखः, महानादः, पावनध्वनिः, कयुः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलुडी
शख	शख	शख	शखो	शाक्, शख	शख	शखमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
शख	शख					Conch shell Monovalve shell

दक्षिणावर्त और वामावर्तके भेदसे शख दो प्रकारके होतेहैं, दक्षिणावर्त शख बहुत कम मिलताहै, इसलिये वामावर्त शखही औपधियोंके काममें आताहै, निर्मल और चन्द्रमाके समान उज्ज्वल चमकदार शख औपधियोंके काममें लाना चाहिये ।

शखको शुद्ध करनेकी रीति यहहै कि इसके छोटे २ टुकड़े कर पोदलीमें बाँध एक हंडीमें खटाई और कांजी भर उसके बीचमें उस पोदलीको लटका उसके नीचे चार पहर तक मंद अग्नि देना चाहिये । पीछे उसमेंसे निकाल उष्ण जलसे धो सुखाके रख छोडना चाहिये ।

शख भस्म बनानेकी रीति—शखको अग्निमें लान कर २ नीचके रसमें बुझाना चाहिये, जबतक वह दिखरके टुकड़े २ न हो जाय तबतक बुझात रहना चाहिये, पीछे एक सकोरमें गवारपाठेकी गिरके बीचमें उसको रख उसका मुँह कपड़ मिट्टीसे बन्ध कर, सुखा, गजपुटकी अग्निमें भस्म कर लाना चाहिये ।

प्रयोग—( १ ) शख भस्म—सलौनी, शीतल, और ग्राही होतेहैं, संग्रहणी, नेत्रका फूला, पेटकी पीडा और मुखपरकी जवानीकी फूसियोंको मिटातीहै ( २ ) शख भस्म और सैधानमक बराबर ले शहदमें मिलाकर एक टुककी मात्रा देनेसे संग्रहणी मिटतीहै ( ३ ) शखभस्मकी मात्रा उष्ण जलके साथ देनेसे पंक्तिशूल मिटतीहै ( ४ ) इसका शहदके साथ अंजन करनेसे अंजन रोग मिटताहै ( ५ ) शख चूर्ण और मूलीकी भस्मका लेप करनेसे कफकी ग्रन्थी और अरुद मिटताहै ।

संख्या ( ५११ )

( सं० ) शंखजीरकं, कम्बुजीरः, श्लक्ष्णजीरः, श्लक्ष्णमृदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
पीथोमाटो पत्रनपक	संगजराहत	शंखजीर	शखजीर		सेलखडी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
		इजरुल् परावी	संगेजराहत	Silicate of magnesia		Soap stone

प्रयोग—( १ ) यह शीतल है । दाह और रुधिरस्रावको मिटाता है ( २ ) इसका लेप करनेसे शोथ, विसर्प, कच्चा के रोग और रक्तविकार मिटते हैं ( ३ ) इसकी फ़की लेनेसे व्रण और दाह मिटती है ।

संख्या ( ५१२ )

( सं० ) शंखपुष्पी, कंबुपुष्पी, शंखाह्व, शंखमालिनी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
शंखावली	शंखाहुली	शंखावली	शखौली	शखमहुलुई	फौडियाली	शंखपुष्पि
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
	गुब्बधि			F. Fyolvalus alsinoides E. hirsutus		

स्थान—शंखाहुली हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर होती है ।  
 प्रयोग—( १ ) शंखाहुली—उष्ण तीक्ष्ण, सारक, कपेली, चरपरी, शीतल, पाचक, मनके रोगोंको हरनेवाली, रुधिर शुद्ध करनेवाली, स्मरणशक्ति और बल बढ़ानेवाली है ( २ ) दूधके साथ इसकी फ़की देनेसे स्नायुजालकी शक्ति बढ़ती है ( ३ ) इसका घी बनानेके खिलानेसे प्रागलपन मिटता है ( ४ ) इसके योगसे कई प्रकारके घी बनाकर पीनेसे अपस्मार मिटता है ( ५ ) इसकी रस तोला ताजा रस पिलानेसे सब प्रकारके जन्माद रोग मिटते हैं ( ६ )



इसके पंचांगको ठंडाईकी तरह पीस दूधमें ध्यानकर पिलानेसे स्नायुजालकी निर्वलता मिटतीहै ( ७ ) दूधके साथ इसके चूर्णकी फकी-देनेसे सूखी खांसी मिटतीहै ( ८ ) इसको आटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटतीहै ( ९ ) इसके दूधमासे स्वरसमे बराबर भिरचका चूर्ण और मधु मिलाकर पिलानेसे वमन बन्ध हो जाताहै ( १० ) दूधके साथ इसका सेवन करनेसे कई प्रकारके रोग मिटतेहैं ( ११ ) इसकी जड़को कंठमें बांधनेसे कंठमाला मिटतीहै ( १२ ) इसकी जड़के काथसे बच्चोंका सतत ज्वर छूट जाताहै ( १३ ) इसके पत्तोंकी बीड़ी बनाके पीनेसे कास और श्वास मिटताहै ( १४ ) यह भीतरके अर्शको मिटातीहै ।

संख्या ( ५१३ )

( सं० ) शठी, द्राविडकः, कर्चूरकः, कल्पकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
कर्चूर	कर्चूर	कर्चूरो	कर्चोरा	अंधशठी	नरकचूर	गंडला कचोरमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	गटकचोरा	नूरम्बात	इरकुलकाफूर	Curcuma zedoaria	The long & the round zedoary	
				O. Zeram		

स्थान—कर्चूर हिन्दुस्थानके बहुतसे वागोंमें बोया जाताहै ।

प्रयोग—( १ ) कर्चूर—कड़वा, चरपरा, उष्ण, लघु, रोचक, दीपन, सुगन्धयुक्त और उत्तेजक होताहै और पेटकी बाटीकी पीड़ा मिटाताहै ( २ ) इसके चूर्णकी फकी लेनेसे पेटकी शूल मिटतीहै ( ३ ) चोट और मोचपर इसका लोपक्रिया जाताहै ( ४ ) मुखका चिप चिपाट मिटानेके लिये इसको चूसतेहै ( ५ ) बच्चा होनेके बाद स्त्रियोंकी निर्वलता मिटानेके लिये जी पाकादि बनातेहैं उनमें कचूर मिलाया जाताहै ( ६ ) सर्दी या प्रतिश्याय मिटानेके लिये कचूर पीपल और दालचीनीके काभमें मधु मिलाके पिलातेहै ( ७ ) शरीरकी बाटीकी पीड़ा मिटानेके लिये इसका लेप करतेहै ( ८ ) इसका काथ पिलानेसे

पेटकी बादीकी पीडा मिटती है ( ६ ) इसको फिट्करीके साथ पानीमें पीसके सन्धियोंकी चोट और चोटसे नीलपड जाने पर लेप करते है ( १० ) खासी और कफको मिटानेके लिये इसके छोटे २ टुकडोंको मुखमें रखके चूसना चाहिये ( ११ ) सूखी खासी मिटानेके लिये इसके पौने चार मासे चूर्णकी फली देनी चाहिये ( १२ ) कचूर-ठंडा, औषधिकी तीक्ष्णताको कम करनेवाला और बल बढ़ानेवाला है ( १३ ) गलेका कफ मिटानेके लिये गवैया लोग कचूरको चूसा करते है ( १४ ) अपशब्दकी नलीके ऊपरके भागकी और मूलकी दाहको मिटानेके लिये इसको जलमें पीसकर पिलाना चाहिये ( १५ ) काली मिरच, मुलहठी और मिश्रीके साथ कचूरको ओटाके पिलानेसे कफ और श्वासकी नलिकाके रोग मिटते है ( १६ ) विपूचिकामें इसका काथ पिलाते है ( १७ ) इसका गुणगुना लेप लगाकर ऊपर वाधनेसे अडकोप की सर्दीकी सूजन उत्तर जाती है ( १८ ) इसको दातोंमें रखनेसे दातोंमें रोग नहीं होता है ( १९ ) इसकी मूग प्रमाण गोलिया बनाके २-३ गोली देनेसे हृत्पास और वमन मिटती है ( २० ) इसको पीसकर लंगानसे मुहासे मिटते है इसकी जड़ हल्दी जैसी पीली होती है ।

संख्या ( ५१४ )

( सं० ) शणः, माल्यपुष्पः, वमनः, त्वक्सारः ।

भारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलड़ी
शण	शण	शण, सण	ताग	शुनगाव	सणी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Crotolaria</i>	Sunn or san hemp	
				<i>incea</i>	Indian hemp Lalse	
				<i>tenatifolia</i>	Brown or Flax hemp	

स्थान—सन्के वृक्ष हिमालय से सीलोन तक हिन्दुस्थानमें पाये: सब और होते है ।  
 प्रयोग—( १ ) सण-खट्टी, कपेली और उष्ण होती है ( २ ) वात, कफ और आलस्यको मिटाती है ( ३ ) यह वामक और आमनाशक है ( ४ ) जिम

के समयपर बालक होनेमें पीडा, अधिक हो, और विलम्ब हो, उसको इसका सेवन कराना चाहिये ( ६ ) इसके सेवनसे मलकी रुकावट मिटती है ( ६ ) जमे हुए रुधिरपर इसका लेप करनेसे विखर जाता है ( ७ ) इसके पुष्प प्रदेश और रक्तविकारको मिटाते हैं ( ८ ) रुधिर शुद्ध करनेके लिये सनके बीजोंकी प्रयोग करते हैं ( ९ ) इसके बीजोंको पीस कर बुरकानेसे काचका निकलाना बन्ध होता है ( १० ) इसको छाल, उबड़ और हल्दीके चूर्णका धुआ पिलानेमें श्वास, उर्ध्ववात, कास, गल रोग और सब प्रकारकी हिचकी मिटती है ( ११ ) इसके बीज और गेहूँका आटा बराबर २ ले, उनको बराबर घीमें पकाके, गुड़के साथ इत्तीन दिन तक खिलानेसे स्नायुक ( नारू ) मिटती है ( १२ )

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	अंगाली	पंजावी	मैलडी
चनशण	शणहुली	शणपुष्पी	सुळमुळ	कम्भनीया	छोटेशण	जनुमु, मोंगुके
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
जयप	सणवुगिड			<i>Crotalaria verucosa</i>		

स्थान—शणपुष्पीके पौधे हिन्दुस्थानके उष्ण भागोंमें होते हैं।

यह पौधा २—३ फुट ऊंचा होता है, इसके नीले पीले और श्वेत पुष्प लगते हैं।

प्रयोग—( १ ) यह कडवी, कपेली, और वामरुह। अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, सन्निपात, और कंठ, मुख, हृदय और पित्तके रोगोंको मिटाती है ( २ ) इसको बीज शीतल, आर्द्र और प्रचनेमें भारी होते हैं ( ३ ) इसके पत्तोंका रस मुंहमें लार गिरनेको कम करता है ( ४ ) इसके पत्तोंका रस मर्दन करनेसे खुजली और पीपवाली पीले रंगकी फुन्सिया ( जोत्वहुधा हाथ पैरोंमें इकट्ठी छत्तेके छत्ते होती है ) मिट जाती है ( ५ ) इसके पत्तोंका रस पि-

लानेसे पुन्सिया और खुजली मिटती है अथवा इसकी कोमल शाखाओंक रस मर्दन करनेसे और पिलानेसेभी उक्त रोग मिटते हैं ।

संख्या ( ५१६ )

! (सं०) शंतपुष्पा, शताह्वा, कारवी, शताची ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलश्री
सोबा, सुवा	सोया	शवादाणा	वाळंतशोप	शुल्फा	सोयेकेबीज	सदाप
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शतकुप्ये (ह)	सदाप	शवित		<i>Lucidarium graveolens P. Sonn</i>	<i>Dill</i>	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाता है ।

इसके १०० तौले बीजोंमेंसे ३० या ४० तौले सुगन्धित तेल निकलता है ।  
 प्रयोग—( १ ) सोया—हल्का, तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, उष्ण और  
 अग्निदीपन है—( २ ) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़ गर्म करके फोड़े पुन्सियों  
 पर बांधनेसे वे जल्दी पक जाते हैं ( ३ ) पेटकी शूल मिटानेके लिये इसके  
 बीजोंका काथ करके पिलाते हैं ( ४ ) सोंठके साथ इसके चूर्णकी फकी देनेसे  
 अजीर्ण और मन्दाग्नि मिटती है ( ५ ) गुड़के साथ आटाके पिलानेसे स्त्रियों  
 की पेटकी पीड़ा मिटती है ( ६ ) इमको पाक बनाके खानेसे या इसके चूर्ण  
 में मिश्री मिलाके दूधके साथ फकी लेनेसे स्त्रियोंके दूध बढ़ता है ( ७ ) बाल-  
 क होनेके पीछे स्त्रियोंको इसका हिम या फाट पिलानेसे हृदयको लाभ होता है  
 ( ८ ) इसके चूर्णमें मिश्री मिला, दूधकी लिस्सिके साथ फकी लेनेसे मूत्रकी  
 रोकवट मिटती है ( ९ ) तिल या तिलकी जड़के काथके साथ इसके बीजोंके  
 चूर्णको फकी देनेसे स्त्रियोंका अवरोध मिट जाता है ( १० ) इसके बीजोंको  
 डोलीके साथ पीस गर्म कर लेप करनेसे गांठ खिखर जाती है ( ११ ) इसकी  
 भस्मके डुरकानेसे पुराने घाव भर जाते हैं ( १२ ) यह दोषोंको पचानेवाला  
 और बद्धकोष्ठको मिटानेवाला है ( १३ ) इसके शाकको सिरके नीचे रखनेसे

वात, पित्त, दाह और शोषको मिटाती है ( ४ ) ज्वारकी शक्करके गुण— यह कुछ उष्ण, कड़वी, बहुत पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रोचक और सार होती है। दाह, वात, पित्त और रुधिरविकारको मिटाती है ( ५ ) ज्वारकी शक्कर-ठण्डी, दीपन और रोचक होती है, पित्तको कम करती है, और ज्वरको मिटाती है। गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीण और वृद्ध मनुष्यको इससे विरेचन कारनेसे कोई उपद्रव नहीं होता है। ( ६ ) मधुशर्कराके गुण— यह पचनेमें भारी, शीतल, रूक्ष, कपेली, छेदक, पाकमें मधुर और धीर्यवर्द्धक होती है। वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृषा और पित्त कफको मिटाती है। ( ७ ) पुष्प शर्कराके गुण— यह स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको मिटानेवाली है।

संख्या ( ५२२ )

(-सं०) शल्लकी, महेरुणा, कुंदुरुकी, सुरभिः।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सेळो	सालई	सालेडा	सालई	शलह	सलई	शदुम
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	आनेब्याल			Boswellia serrata B thurifera	Indian Olibanum tree	

पहिचान— इस वृक्षकी उंचाई ३० फुटकी और प्रेदङ्की गुलाई ५-६ फुटकी होती है, इसकी छाल प्रायः आध इंच मोटी होती है। यह जबतक ताजी रहती है तबतक रसदार रहती है, यह बहुधा कुछ हरे, खाखी, रंगकी होती है, फागुन चैतके आस पास इसके पुराने पत्ते गिर जाते हैं, और जेठमें नवीन पत्ते आजाते हैं, इसकी कोमल डालियों और पत्ते रूंपदार होते हैं। इसकी डालियोंके अन्तमें ८-१५ इंच लम्बी पत्तोंकी सीकें लगती हैं। उनके ८ से १५ जोड़े पत्तोंके लगते हैं वे आमने सामने या कुछ अन्तरसे लगा करते हैं। इसके श्वेत

रंगके पुष्प लगतेहैं। इसके नीमके पत्तों जैसे पत्ते लगतेहैं और तिसूटे पीले फल लगतेहैं।

फूलने फलनेका समय—जब इसके पत्ते गिरजातेहैं तब पुष्प निकलने लगतेहैं कभी पुराने पत्ते गिरनेके पहिले और कभी नवीन पत्ते निकलनेके पीछे पुष्प निकलतेहैं।

गुण—( १ ) यह कपेली, शीतल, मधुर, कडवी और शरीरको पुष्ट करनेवालीहै। कफ, पित्तातिसार, रक्तपित्त, व्रण, रुधिरविकार, वात, पित्त, कफ, अर्श, पक्कातिसार और कुष्ठको मिटातीहै ( २ ) इसके फल और पुष्प, कुष्ठ, अरुचि, कफ और ज्वारार्शको मिटातेहैं ( ३ ) इसके, गोंदको कुन्दरगोंद कहतेहैं उसके प्रयोग कुन्दरुके साथ लिखेहैं।

संख्या ( ५२३ )

( सं० ) शाकः, ककचपत्रः, खरपत्रः, श्रेष्ठकाष्ठः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सागवान	सागवान	शोग, साग	सागवान	शेगुनगाछ	सागोन	टेंक
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
	त्याग			Tectona grandis	Teak The teak tree	

स्थान—इसके वृक्ष पश्चिमोत्तर प्रदेश, दक्षिण और मध्यहिन्दुस्थान, बंगाल, आसाम, सिक्कम, मनीपुर, ओडीसा और भांसी आदि कई देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—यह वृक्ष बहुत ऊंचा होताहै इसकी ६० से २० फुट उचाई पर शाखा फूटने लगतीहै। इसके रूध ( पेदड़ ) की गुलाई १० से २५ फुट तक होतीहै, सागवानके पत्तेको पहिचाननेके लिये उसको थोडा रगड़ के उस ठौर अपने मुंहका थूंक लगाके रगड़तेहैं जो वह लाल होजाय तो पत्ता सागवानका है नही तो और किसीका है। इसकी लडकी की दरारोंमें

एक प्रकारका श्वेत द्रव जम जाता है, वह पानमें, चूनेकी टौर, काममें आता है, शुष्क और उष्ण टौरमें, काती, गंगशिर, या पौपके प्रारम्भमें इसके पत्ते गिर जाते हैं। जो वृक्ष आर्द्रभूमिमें होते हैं उनके पत्ते माघ फागुन तक नहीं गिरते हैं वैशाखमें इसके नवीन पत्ते आजाते हैं इसकी छाठी शाखें चौखंडी, होती हैं और उनके कूटोंके बीचमें नलियें होती हैं। इसके पत्ते दो तीन फुट लम्बे होते हैं, वे ऊपरसे खरदरे और नीचेसे सफेद रंगदार होते हैं, इसके सफेद रंगके पुष्प लगते हैं। इसके फलकी मध्य रेखा आध इंच लम्बी होती है, और फलमें १-२ या ३-४ बीज निकलते हैं। इसके बीजकी खोखल ५ रानेकी दीखती है।

॥ फूलने फलनेका समय—अपाठ श्रावणमें यह वृक्ष फूलता है कातीसे पौष तक इसके फल पकते हैं। इसके बीजोंको पोषमें डालियों परसे ही उतारके एकत्र कर लेने चाहिये। इसकी लकड़ीको ओटानेसे राल जैसा एक प्रकारका पदार्थ निकलता है, इसके पत्तोंमेंसे लाल या पीला रंग निकलता है। इसके बीजोंमेंसे एक प्रकारका गाढा तेल निकलता है।

— प्रयोग—(१) शाक—(सागवान) कपेला, शीतल, और रक्तपित्तनाशक है (२) इसकी लकड़ीको घिसकर लेप करनेसे पित्तकी मस्तकपीड़ा मिटती है (३) पित्तशोधको बखरनेके लिये इसकी लकड़ीको घिसके लेप करना चाहिये (४) पित्तबढ़नेसे जो मदाग्नि होकर आमाशयमें दाह हो जाती है उसको मिटानेके लिये इसके चूर्णकी साढ़े पाच मासेसे लेके १२॥ मासे तककी फकी देनी चाहिये (५) इसकी लकड़ीके कोयलेको पोस्तके पानीमें बुझा पीसके लेप करनेसे पपोटोंकी सोई उतरती है (६) आंखोंकी ज्योति बढ़ानेके लिये उक्त लेप करते हैं (७) इसकी छालके चूर्णकी फकी अतिसारको मिटाती है (८) इसके फलोंमेंसे गाढा और सुगंधवाला तेल निकलता है उसतेलके लगानेसे मस्तकमें घाल उगजाते हैं (९) शरीरपर, इसका मर्दन करनेसे खुजली मिटती है (१०) इसकी छालका हिम पिलानेसे श्वेत प्रदर मिटता है (११) इलायची, वंशलोचन, मिश्री और इसकी छालके चूर्णकी दूधके साथ फकी देनेसे बल बढ़ता है (१२) इसकी लकड़ीको जलमें घिसकर लगानेसे भिलावेके तेलसे अथवा काजूगुलीके छिलकोंके तेलसे पैदाहुई

दाह युक्त शोथ मिटजाती है ( १३ ) इसके फलको पीस पुण्डिस बनाके इन्द्रिके पासके बालोंपर बांधनेसे मूत तुरंत उतर जाता है ( १४ ) भारवाही चौपायों के घाव पर इसके राल जैसे गोंदका लेप करनेसे उनमें कीड़े नहीं पड़ते हैं ।

—१०१—

संख्या ( ५२४ )

( सं० ) शाखोटः, पिशाचद्रुः, घूकावासः, चीरनाशनः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	सहोडा(रा)	साहोडा	साहोडा	शेउडागाछ	सहोडा	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Streblus asper Trophus aspera		

स्थान—शाखोटके वृक्ष हिन्दुस्थानके जागल देशोंके अधिक शुष्कभागों में सहैलखण्डसे पूर्व और दक्षिणकी ओर टैवनकोर तक बहुत होते हैं ।

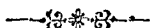
पहचान—इस वृक्षकी ऊँचाई २० फुटकी होती है । इसकी छाल आध इंच मोटी, सफेद, कुछ हरी, श्वेत भूरे रंगकी, चिकनी होती है और पुरानी होनेपर खरदरी होजाती है । इसकी अंतर छालमें दूध निकलता है । इसके पत्ते कुछ गोल दोनों ओरसे खरदरे और २-४ इंच लम्बे होते हैं उनपर छोटी २ उठी हुई बुँदें होती हैं, इसके पुरुष और स्त्री जातिके पुष्प अलग २ लगते हैं, इसके पीले रंगका फल लगता है उसमें एक बीज निकलता है । स्त्री जातिके वृक्षोंकी अपेक्षा पुरुष जातिके वृक्ष बहुत होते हैं ।

फूलने फलनेका समय—पोषसे फागुन तक इसके पुष्प लगते हैं वैशाखसे अषाढ तक इसके फल पक जाते हैं ।

प्रयोग—( १ ) सहोडा—रक्तपित्त, बसासीर, वात, कफ और अतिसारको मिटाता है ( २ ) इसकी छालको ओटाके पिलानेसे ज्वर छूट जाता है ( ३ ) घेलगिर और इसकी छालको ओटाकर पिलानेसे अतिसार मिटता है ( ४ ) इसकी छालके फायमें एरडका तेल डालकर पिलानेसे



मिटता है ( ५ ) इसका दूधिया रस विवाह में लगानेसे उसका घाव मिल जाता है ( ६ ) फोड़े फुन्गी या घावोंपर इसका दूधिया रस लगानेसे दुर्गंध या विष युक्त हवा का असर नहीं होता है ( ७ ) बिगड़े हुए घाव या ऐसे घाव जो हड्डी तक पहुंच गये हों उनपर इसकी जड़का लेप करते हैं ( ८ ) इसकी जड़को घिसके सापके दंशपर लेप करते हैं ( ९ ) इसकी सूखी जड़के २॥ से ५ रती तक चूर्णकी फकी देनेसे आमामिस्रार मिटता है ( १० ) पेशियोंकी मज्जनपर- इसके रसका लेप करते हैं ( ११ ) इसकी टहनियां दांतुन के काममें आती है ( १२ ) इसके दूधिया रसका जापन देनेसे बूध बहुत शीघ्रतासे जम जाता है और उसका दहीभी गाढ़ा रहता है ( १३ ) दक्षिण हिन्दुस्थानके लोग अपने घरोंको विजलीसे बचानेकेलिये चैत वैशाखमें इसकी टहनियोंको काटके छप्परमें और उनके चारों ओर जमा देते हैं ( १४ ) इसकी छालको कांजीके साथ पीस, उसमें घी मिलाकर लेप करनेसे वातशोथ मिटती है ( १५ ) इसके पत्तोंके रसमें पारा मिलाकर नाभिके आस पास मलनेसे वायु शूल मिटती है ।



संख्या ( ५२५ )

( सं० ) शालपर्णी, एकमूला, अंशुमती, ध्रुवा ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सरिवन	समेरवो	साळवण	शालपान	सरिवन	मुय्याकुपोन्ना
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
	मूरुयलहोत्रे			Desmodium gangeticum Hedysarum g		

स्थान—शालपर्णी हिन्दुस्थानके छोटे २-पहाड़ और जंगलोंमें सब ठौर होती है ।

पोलिचान-इसका छोटा लुग होता है । एक २ इंडी पर तीन सपसे लगे गते हैं । इसक बहुतमी छोटी २ फालियां लगती हैं ।

'प्रयोग'-( १ ) यह -रुड़की, पचनेमें भारी, उष्ण, मीठी और रसायनी, है वीर्य और धातुको बढ़ाती है, विषमज्वर, वादी, प्रमेह, अर्श, शोथ, दाह, ज्वर, र्वास, विष, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, कास, अतिसार और कृत्रिम विषको मिटाती है ( २ ) यह दशमूलकी औषधियोंमें है। इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे प्रतिश्याय मिटता है ( ३ ) चिरायतेके साथ इसकी जड़को ओटाके पिलानेसे ज्वर छूटता है ( ४ ) नाभि, वस्ति और भग पर इसकी जड़का लेप करनेसे मूढ गर्भ बाहिर निकल आता है।

संख्या ( ५२६ )

( सं० ) शालमली, रक्तपुष्पा, तूलवृक्षः, मोचा।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेमलसामने	सेमल(र)	शेमळो	काटसावर	शिमुलगाठ	सेमर	मुल्लवूरगा
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
यलवंगर	यलवडमर			Bombax malabaricum Sal-mulia m bar	Silk/cottona tree	

स्थान—सेमलके वृक्ष हिन्दुस्थानके राजपूताना आदि अधिक उष्ण जंगलोंमें होते हैं।

पहिचान—सेमलका बड़ा भारी वृक्ष होता है। इसकी ऊंचाई १५० फुट और इसकी पेड़की गुलाई ४० फुटकी होती है, यह सीधी होती है। इसकी और पुरानी डालियोंकी डाल, स्फेद और खाखी रंगकी होती है। उसमें आरपार खड़ी दरारें होती हैं। इसकी डालियों पर काली नोकके आध इंच लम्बे बहुतसे राटे लगते हैं। इसके ५, ७ पत्ते लगते हैं। इसके पुष्प बड़े और फिरमची रंगके होते हैं। इनकी पंखडिया मोटी होती है। काती मंगशिरमें इसके पत्ते गिरजाते हैं। और चैत्रतक पीछे नहीं आते हैं।

फूलने फलनेका समय—माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगते हैं। चैत्र वैशाखमें इसके फल पकते हैं।



द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
लवपिशिन्	यलवट्टुह.गि-				Gum of silk cotton tree

मोचरस शामलाका गोंद होताहै ।

प्रयोग—(१) सेमलका गोंद—कपेला, ग्राही, शीतल, मधुर, रसायन, स्निग्ध, पचनेमें भारी, आयुर्दाको स्थिर करनेवाला तथा बल, बुद्धि, दीर्घ और धातुको बढ़ानेवाला, शरीरका रंग उज्ज्वल करनेवाला, गर्भस्थोपक और रूफकारक है (२) वात, अतिसार, प्रवाहिका, कारिाविकार, पित्त, दाह, आम्रातिसार और रक्तगतिसारको मिटाताहै (३) एक महीने तक इसका सेवन करनेसे पारेके विकार मिटतेहै (४) मोचरस और समुद्रफेनको खरलकर लेप करनेसे शरीरकी दुर्गंध मिटतीहै (५) कई मनुष्य मोचरसकी ठौर सुपारीके पुष्प काममें लातेहैं ।

संख्या (५२८)

( सं० ) श्वेतशाल्मली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
सफेदसामलो	सफेदभैर	धोलोशेमलो	पाठरासावर	श्वेतशिमूल	सफेदसिम्बल	तेल्लवृगु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
वेक्षैयलव	विळ्ळीमल्लु वृगो			Eriodendron anfractuosum Bombax pentan drum	The white cotton tree Kapok floss	

स्थान—सफेद सेमलके वृक्ष हिन्दुस्थान और सीलोनके उष्ण भागोंके जंगलोमें बहुत होतेहैं ।

पहिचान—यह एक सीधी पेड़का ऊंचा वृक्ष होताहै, जब यह छोटा होताहै तब इसके काटे लगा करतेहैं । इसके मूले सफेद पुष्प लगतेहैं वे लाल पुष्पके सेमलके पुष्पोंसे बहुत छोटे होतेहैं । इसका फल कुछ बड़ा, जियादा धुंधले रंगका और गोल होताहै । कोनेदार नहीं होता, माघके महीनेमें इसके पत्ते गिर जातेहैं । इसके धुंधले लाल रंगका गोंद लगताहै ।

फूलने फलने का समय—इसके पत्ते गिरनेके पीछेही पुष्प लग जातेहैं और वशाखमें फल पकतहै।

इसके बीजोंमेंसे तेल निकलताहै वह अच्छे लाल या दुंधले, भूरे रंगका होताहै।

प्रयोग—( १ ) इसका गोंद ग्राहीहै ( २ ) इसकी फकी देनेसे अतिसार

मिटताहै ( ३ ) इसकी रुई अधिक टण्डी और लचलची होतीहै इसलिये रो-

किके तकिये-आदिमें भगा जातीहै और औषधिके काममें आतीहै ( ४ ) इसके

बूखे कच्चे फल औषधिके काममें आतहै। अचार लोग इसके फलोंके बदलेमें दू-

धरे वृत्तोंके फल देदिया करतेहैं, जिनमे कई विपैल फल हातहैं। इसलिये उनका

वृत्तके नीचेकी पृथ्वी परसे एकत्र करलेना चाहिये। लाल सेमलके फलसे इनमें

गुण कुछ कम होताहै ( ५ ) इसके कच्चे फल ग्राही और चुरपराहट मिटाने-

वालेहैं ( ६ ) इसकी जड़को भी सेमलका मूशला कहतेहै। लाल पुष्पके सेम-

लकी जड़से इसकी जड़में गुण अधिकहै। इसकी जड़को कतर, छायामें सुखा,

पीस, उसमें इसकी छालका रस और शकर मिलाके खातहै। इसके पत्ते और

बीज औषधिके प्रयोगमें आतहै ( ७ ) जब बच्चेके मूत्रकी शंका नहीं रुकतीहो

तो उसको इसके गोंदकी फकी देनी चाहिये ( ८ ) इसके छोटे वृत्तकी जड़का

काथे पिलानेसे पुराना अतिसार और आमार्तिसार मिटताहै ( ९ ) इसका

काथे पिलानेसे मूत्रवृद्धि होकर जलधर और सर्वांग जलमय शोथ मिटजातीहै

( १० ) इसके एक तोले कोमल पत्तोंको जलके साथ पीस छान, उसको पीके

ऊपरसे मक्खन निकालो हुआ दूध पीवे, ऐसे ३, ४ दिन तक प्रातःकाल पीने-

से नवीन मूत्रकृच्छ्र मिटताहै ( ११ ) इसके छोटे या कच्चे फलोंका शाक बन-

नाया जाताहै।

संख्या ( ५२६ )

( सं० ) शिरीषः, भण्डिलः, मृदुपुष्पः, शुकप्रियः

मास्वीडो	जहिन्दी	गुजराती	मरहटी	बेंगाली	मजाशी	तैलंगी
सिरस	सिरस	शरजडो	शिरस	शिरिपिगाछ	सिरस	दिरसेनु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी
काडवाडई	वागेमर	सुल्तानुल अशजार	दरस्तेनक- रिया	Albizzia Lebbek Acacia sirissa	The iris tree

स्थान—शिरपके पेड़ हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं और अपने आप भी उगतेहैं।

पहिचान—इसकी उंचाई ४० से ६० फुटकी होतीहै। इसकी पेदड़ छोटी होतीहै। उसकी छाल आध इंच मोटी और धुंधले या कुछ भूरे रंगकी और उसमें बहुतसी छोटी बड़ी दरारें होतीहै। इसके ३ से ६ तक जोड़े लम्बे और चौड़े पत्तोंके लगतेहैं। पत्तोंकी विचली सीकके दोनों ओरके भाग घराघर नहीं होतेहैं। इसके सुगंधयुक्त सफेद पुष्प लगतेहैं, इसकी फलिया ८ से १२ इंच लम्बी दो इंच चौड़ी और पतली, हल्के पीले रंगकी होतीहै जिनमें ८ से १२ तक बीज निकलतेहैं। उष्णकालमें इसके कुछ पत्ते गिर जातेहैं और फागुन, चैतमें नये आजातेहैं।

चैत वैशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं परन्तु दूसरे समयमें भी लगतेहैं। भाद्रवमें इसकी फलियां पकतीहै वे शीतकाल और उष्णकालमें वृत्त पर ही लगी रहतीहै। इसके बबूलके गोंद जैसा एक प्रकारका गोंद लगताहै वह पानीमें गल जाताहै। इसके बीजोंमें से तेल निकाला जाताहै।

प्रयोग—(१) सिरस-मधुर, शीतल, कड़वा, कपेला, और पचनेमें, हल्काहै त्रिदोष, विसर्प, कास, ब्रण, विप, स्वेद, त्वग्दोष, प्रामा, कुष्ठ और कंठ को मिटाता है। इसके बीज आखके अंजनकी औषधियों में डाले जातेहैं (२) इसका तेल कोठमें लगाया जाताहै (३) नेत्रकी पीडामें इसकी छालका लेप करते हैं (४) इसके पुष्प ठण्डे हैं (५) गर्मीके फोड़े, फुत्सी और पित्तशोथपर इनका लेप करतेहैं (६) विपैल, जीवोंके दंशपर इसके पुष्पोंका लेप करतेहैं (७) इसके ६ मासे बीजोंको पीसके फकी देनेसे गंडमाला की पेशियोंकी सूजन उतरतीहै (८) बीजोंको पानीके साथ पीसके लेप करनेसे गंडमालाकी सूजन उतरतीहै (९) इसकी जड़की छालके चूर्णका मंजन करनेसे पके हुए मसूड़ोंका रोग मिटाहै

और दात हट हो जाते हैं ( १० ) पत्तोंका लेप करनेसे आंखके गोलैकी सूजन मिटती है और पीप बन्ध हो जाता है ( ११ ) दूधकी लस्सीमें इसके तेलकी चूंदें डालके पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १२ ) इसके बीजोंके चूर्णकी फकी देनेसे अतिसार मिटता है ( १३ ) इसके तेलका लेप करनेसे अर्श मिटता है ( १४ ) इसके पत्तोंके कल्कको पानीमें छान मिश्री मिलाके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १५ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे जलंधरवालेकी सूजन उतर जाती है ( १६ ) इसके बीजोंको पानीके साथ पीस, पोटनी बांध जिस ओर मस्तक पीड़ा हो उसी ओरके नाकके छिद्रमें २॥ चूंदें टपकानेसे मस्तक पीड़ा मिटती है ( १७ ) इसके पत्तोंके रसका अंजन करनेसे नेत्र पीड़ा मिटती है ( १८ ) इसके गाँद, और काली मिरचको पीसकर मंजन करनेसे दंतपीड़ा मिटती है ( १९ ) इसके बीजोंके तेलके लगानेसे श्वेतकुष्ठ मिटता है ( २० ) इसके डेढ़ तोले पत्ते और दो मासे काली मिरचको पीसके ४० दिन पीनेसे कुष्ठ मिट जाता है ( २१ ) पुराने शिरसकी पेटड़ और जड़की छाल, बीज और पुष्पोंको एक चम्मच गोमत्रके साथ एक दिनमें ३ बेर पिलानेसे विष उतर जाता है ( २२ ) मिश्रुन की संक्रांतिमें इसकी ७ मासे छालको पीसकर चावलके धोवनके पानीके साथ ३ दिन पीनेसे एक वर्षतक सर्पादिक का विष नहीं चढ़ता है ( २३ ) इसके बीज और काली मिरच बराबर ले षकरीके मूत्रमें पीसकर अंजन करनेसे सन्निपातकी मूर्च्छा मिटती है ( २४ ) इसकी छालके चूर्णको १०० बेर धोये हुए घीमें मिलाकर लेप करनेसे विसर्प रोग मिटता है ( २५ ) इसकी जड़ और बीजके चूर्णकी नस्य देनेसे मूर्य वर्त्त मिटता है ( २६ ) इसके और करंजके बीजोंको पीसकर अंजन करनेसे नेत्ररोग, उन्माद और अपस्मार मिटते हैं ( २७ ) इसके पत्ते या पुष्पोंके रसकी सफेद मिरचोंके सातदिनतक भावना देकर, सर्पकाटे हुए मनुष्यको ये मिरचें खिलानेसे या उसके उनका अंजन करनेसे विष उतर जाता है ( २८ ) इसके बीजोंको थूहरके दूधमें पीसके लेप करनेसे मंडूकके दंशका विष उतरता है ( २९ ) इसके और आमके पत्तोंके रसको गुने गुनाकर कानमें टपकानेसे कर्णपीड़ा मिटती है ( ३० ) इसके बीजोंको महीन पीसकर सुंधानेसे बन्ध जुकाम मिटता है ( ३१ ) इसकी छालको ओटाकर कुल्ले करनेसे दंतपीड़ा मिटती है ( ३२ ) इसके पत्तोंके रसमें कपड़ा भिगो, सुखा,

इसे तीन बेर भिगो, सुखाकर, उसकी बची बनावे चमेलीके तेलमें जला, का-  
जल पाठ कर उसका अंजन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बढ़ती है ( ३१ ) इसकी  
छालको पीसकर लेप करनेसे अडकोपोंकी खुजली मिटती है ।

संख्या ( ५३० )

( सं० ) पीताशिरिपः ।

L. Albizzia odoratissima Mimosa o

स्थान—पीली शिरसके वृक्ष सिन्धु नदीसे पूर्व बङ्गाल, आसाम, मध्य  
और दक्षिण हिन्दुस्थान आदि बहुत देशोंमें होते हैं । इसके गहरा भूरा फीका  
और पानीमें गलनेवाला गोंद लगता है । इसकी छालमेंसे रंग निकाला जाता है ।

प्रयोग—( १ ) इसकी छालका लेप करनेसे कृष्ठ मिटता है ( २ ) पुराने  
और कठोर फोड़ेपर इसका लेप करते हैं ( ३ ) इसके पत्तोंको घृतमें तलेके  
खिलानेसे कफ मिटता है ( ४ ) इसकी सूखी छालको पीसके घुरकानेसे घाव  
भर जाता है ( ५ ) इसके, सम्भालूके और सहिजनके पत्तोंको पानीमें ओटाके  
बफारा देने और उनको बांधनेसे सन्धिकी वातपीडा मिटती है ( ६ ) इसकी  
छाल और काले तिलोंको बराबरले सिरकेमें पीसके मुखपर गलनेसे कालापन  
मिटता है ( ७ ) इसके बीजोंकी माला बनाके बच्चोंके गलेमें पहिरानेसे उनके  
दांत आनेके समय कष्ट नहीं होता है ।

संख्या ( ५३१ )

( सं० ) शिलाजतु, शैलानियासं, अश्मजं, अश्मलाक्षा ।

भारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शिलाजीत	शिलाजीत	शिलाजित	शिलाजित	शिलानित	शिलाजीत	शिलाजतु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
शिलाजित	शिलाजितु			Asphaltum poun- binum Bitumen Judaeum	Jews s pitch Asphaltum	



१७ उत्पत्ति-स्थान—जिन २ पहाड़ोंमें शिलाजीत होता है, वे पहाड़ उष्ण-कालकी अत्यन्त ऊष्मासे, बहुत तप, जानेके कारणसे एक प्रकारका लाख या गोंद जैसा पदार्थ छोड़ते हैं, उसको शिलाजीत कहते हैं। सोने, चांदी, तांबे और लोहेके भेदसे शिलाजीत चार प्रकारका होता है ( १ ) सोनेके शिलाजीतका रंग गुडहलके पुष्प जैसा लाल होता है ( २ ) चांदीके शिलाजीत श्वेत होता है ( ३ ) तांबेका शिलाजीत मोरके कंठके रंग जैसा होता है ( ४ ) लोहेका एक, गिद्धकी पांख जैसा होता है वह सर्वमें उत्तम गिना जाता है। दूसरा गोमूत्र जैसी गंधवाला और काला होता है। तीसरा, गूगल जैसा होता है।

शिलाजीत बनाने और शुद्ध करनेकी रीति—( १ ) जहां शिलाजीत निकलता हो, वहांके पत्थरका टुकड़ा ले उसके बहुत छोटे-छोटे टुकड़े कर, उष्णजलमें एक या दो पहर तक भिगो रखे, पीछे उनको मलकर निर्मल जठा निकालके मृत्तिकाके पात्रमें भरकर धूपमें रख देवे, जब उसका मैल नीचे बैठ जावे, तब उस नितर हुए पानीको मृत्तिकाके दूसरे पात्रमें लेंगे। ऐसे दो महीने तक धूपमें रख कर पलटते रहनेसे निर्मल शिलाजीत हा जाता है। इस मृत्तिका नीचेकी तलछटको भी ऐसेही शुद्ध करनेसे उसमें जो कुछ शिलाजीत रह गया हो, वह निकल आवेगा और नीचे केवल मैल रह जावेगा, इस निर्मल शिलाजीतको मंदाग्नि पर चढ़ाके, गोली बनानेके लायक गाढा कर लेना चाहिये ( २ ) वेचनेवाले जो शिलाजीत लाते हैं, उसको लोहेके पात्रमें डाल दुग्ने उष्णजलमें भिगोकर धूपमें रख देना चाहिये जब वह सब गलकर पानी जैसा हो जावे दूसरे पात्रमें अफीमके जेठकी भांति उसका चोवा टपका लेना चाहिये। ऐसे करते २ जत्र इसके नीचे कुछ भी मैल नहीं रहे और केवल जेठा ही रह जावे, तब उसको उक्त रीतिसे गाढा कर लें, इस प्रकार से निकाले हुए शिलाजीतको गोदुग्ध, त्रिफलाके काथ और जल भंगरेके स्वरसमें अलग २ एक २ दिन खरल कर धूपमें सुखा लेनेसे शुद्ध हो जाता है ( ३ ) लोहेके शिलाजीतको केवल जलसे धोनेसे शुद्ध हो जाता है ( ४ ) नीमकी अंतर छालके काथ में शिलाजीतको भिगो कर उसके जेठकी भांति टपका कर मंदाग्निसे गाढा कर लेना चाहिये ( ५ ) अथवा गिलोयके काथमें इसी रीतिसे शुद्ध कर लेना चाहिये। शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा यह है कि निर्धूम अग्निमें रखनेसे उस-

की निर्मूल लोय उठने लगतीह । अथवा थोड़ासा टुकड़ा पानीमें डालनेसे जो वह तैरता रहे तो उस टुकड़ेमें से कुछ पिलास लिये हुए काले रंगके धारवे पानीके पेंद तक चले जातेहैं जबतक वह टुकड़ा नहीं गलजाताहै तबतक उसी प्रकारके धारवे उसमेंसे निकलते रहतेहैं, जब वह पेंद बैठ जाताहै तब उसमें से धारवे निकलके पानी के ऊपर तक चले आतेह ।

( १ ) धातु भेदसे शिला जीतके गुण—सोनेका शिलाजीत—कड़वा, मधुर, चरपरा, शीतल और विपाकमें चरपरा होताहै वात और रोगोंके पेंदोंके मिटाताहै ( २ ) चादीका शिलाजीत—शीतल, चरपरा और विपाकमें मधुर होताहै—कफ और पित्तके रोगोंको मिटाताहै ( ३ ) तांबेका शिलाजीत—तीक्ष्ण और उष्ण होताहै और कफके रोगोंको मिटाताहै ( ४ ) लौहेका शिलाजीत—हरक, रोगोंको मिटाताहै । यह तीन प्रकारकाहै । जिनमें एक गिद्धकी पासू, जैसा होताहै । यह कड़वा, सलौना, विपाकमें चरपरा और शीत वीर्य होताहै, यह सबमें उच्चमहिना जाताहै ( ५ ) दूसरा, गोमूत्र जैसी गंध वाला और काला होताहै । यह स्निग्ध, मृदु तथा पचनेमें भारी, कड़वा, कपिला और शीतल होताहै ( ६ ) तीसरा—गूगल जैसा होताहै । यह कड़वा, सलौना, विपाकमें कटु और शीतवीर्य होताहै ( ७ ) शुद्ध शिलाजीत—चरपरा, कड़वा, उष्ण, विपाकमें चरपरा और रसायनहै। कंपवायु, प्रमेह, पथरी, मूत्रशंकरा, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, क्षय, श्वास, वात, अर्श, पांडु, अपस्मार, उन्माद, शोफ, कुष्ठ, उदररोग और और कृमि रोगको मिटाताहै ( ८ ) एक मासे शिलाजीतको पीपल और इलायचीके साथ लेनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात मिटाताहै ( ९ ) इसको त्रिफला और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटाताहै ( १० ) इसको मधुके साथ चाटनेसे शुकज मूत्रकृच्छ्र मिटाताहै ( ११ ) गोमूत्रमें शिलाजीत मिलाके पीनेसे कुम्भकामला मिटाताहै ( १२ ) गिलोयके कायसे शुद्ध किये हुए शिलाजीतका सेवन करनेसे पंचकर्मसे शुद्ध हुए मनुष्य का वातरक्त मिटाताहै ( १३ ) इसको शकर युक्त दूधके साथ २१ दिन तक लेनेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटाताहै ( १४ ) इसको शंखर और कपूरके साथ लेनेसे मूत्रजठर और मूत्रातीत मिटाताहै ( १५ ) इसको मधुके साथ चाटनेसे प्रमेह मिटाताहै ।

संख्या ( ५३२ )

( सं० ) शिवलिंगी, आपस्तम्भिनी, चंडा, चित्रफला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
शिवलिंगी	शिवलिंगी	शिवळिगी	शिवलिंगी	शिवलिंगिनी		
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Bryonia laciniosa	The Bryony	

स्थान—इसकी घेलें हिमालयसे सीलौन तक सब ठौर होती है ।

पहिचान—शिवलिंगीकी घेल होती है । इसके तीन २ पत्ते लगते है । इसके कबे फल गोल और हरे रंगके होते है । वे पकजाने पर कुछ लाल होजाते है । इनके ऊपर श्वेतचित्र होते है, इसके फलोंमें गोंद जैसा चेष निकलता है । उसचेष के भीतर कुछ चपटे बीज रहते है । उनके दोनों ओर जलेरी सहित शिवलिंग के आकार का चिन्ह रहता है ।

गुण—( १ ) शिवलिंगी—तिक्त, सारक, बलवर्द्धक, चरपरी, उष्ण दुर्गंधयुक्त और रसायन है और सिंभरोग को मिटाती है ( २ ) यह पारे को बांधती है ( ३ ) इसके बीज बहुत वामक हैं ( ४ ) इसके पत्तों को उबाल के उनका शाक बनाते है । इसके फल पकजानेके पीछे इसको 'श्रीपाधि' के काम में लाना चाहिये ।

संख्या ( ५३३ )

( सं० ) शिशपा, कृष्णसारा, पिच्छिला, भस्मगर्भा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सीसम	सीसम	शीशम	शिसवा	शिशुगाछ	सीसम	इरुवुड

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
शिशपा	अगरुगिड			Dalbergia sissoo	The sissoo, The black wood, Rosewood

स्थान—सीसम के वृक्ष हिन्दुस्थान में सब ठौर उगते हैं। ये बहुधा नदियों के किनारे घालूरेत या कंरूरीली जमीन में बहुत होते हैं, ये हल्की जमीनोंमें अच्छे बढ़ते हैं।

परिचान—इसका वृक्ष ६० फुट या उससे कुछ अधिक ऊंचा होजाता है, इसकी पेदड़ सीधी नहीं होती है और उसकी गुलाई ६ से १२ फुट तक होती है। इसकी छोटी शाखें लटकती हुई और संपदार होती हैं। इसकी पेदड़की छाल एक इंच तक मोटी भूरे या कुछ पीलास लिये हुए भूरंगकी होती है और उसकी पुरानी दरारें ऊंची पड़कर एक दूसरीसे मिलजाती हैं। इसके पत्ते पुराने होनेपर कुछ लाल भूरे रंगके होजाते हैं। पत्ते गोल और नोकदार होते हैं वे मार्गशीर्ष से गिरने लगते हैं जो माघ या फागुन तक गिरते रहते हैं। फिर नये पत्ते निकलने लगते हैं, जो चैत वैशाख तक निकल चुकते हैं। पूरे बड़े हुए पत्ते अच्छे साफ हरे रंगके होते हैं, इसके कुछ चन्दनियां सफेद रंगके पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं। इसकी फलिया बहुत पतली और चपटी होती हैं। उनमें छोटे २ दो तीन चपटे बीज निकलते हैं। इसकी लकड़ी बड़ी दृढ होती है। उसके बाहिरका भाग सफेद और भीतरका कुछ ललाई लिये हुए काले रंगका होता है।

फूलने फलनेका समय—फागुन से जेठ तक इसके पुष्प लगते रहते हैं। कभी २ इसके अषाढ से आसोज तक दुबारा पुष्प लगते हैं। काती से माघ तक इसके बीज पकते रहते हैं। इसकी लकड़ी और बीजोंमेंसे तेल निकाला जाता है जो औषधिके काममें आता है।

प्रयोग—( १ ) सीसम-चरपरा, कड़वा, कपेला, उष्ण, धीर्य, और अग्निवर्द्धक है ( २ ) इसकी लकड़ीका बुरादा रक्तशोधक है—( ३ ) इसकी जड़ शोषक है ( ४ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे फोड़े फुन्सी मिटते हैं इसके बुरादेके काथमें भी यही गुण है ( ५ ) इसका तेल त्वग्दोषमें काम आता है ( ६ ) कोढ़में भी इसके पत्तोंका या बुरादेका काथ पिलाते हैं ( ७ ) इसके प

चौंके लुआव को भीठे तेलमें मिलाकर, छिनी हुई या राइ, झाई, हुई चमड़ी पर लगानेसे शान्ति रहती है ( ८ ) मूत्रकृच्छ्री अत्यन्त पीड़ामें इसके पत्तोंका काथ पिलाते है ( ९ ) सुगन्धित और चरपरी औषधियोंके साथ इसकी छालकी गोलियां बनाके विस्मृत्रिकामें देते है ( १० ) इसके पत्र या बुरादेका काथ पिलानेसे वमन बन्ध होता है ( ११ ) इसके बुरादेका शर्वत बनाके पिलानेसे रुधिरविकार मिटता है ( १२ ) इसका काथ पिलानेसे वसा प्रमेह मिटता है ( १३ ) इसके १० मासे बुरादेको आध पाव पानीमें आटा आधा रख छाने उसमें इसका शर्वत मिलाकर नित्य पीव, एम ४० दिन तक पानेमें कोठ मिटता है ( १४ ) इसके पाव बुरादेको तीन सर पानीमें रात दिन भिगो, आटा, आधा रखके छान लेवे, फिर उसमें तीन पाव बुरा डालके शर्वत बनालेवे यह शर्वत इक्तशोधक है ( १५ ) इसके पत्तोंको गर्म करके बांधने और उनके काथसे धानसे स्तन शोध उतर जाती है ।

संख्या ( ५३४ )

( सं० ) शुक्रम-

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
सिरको	सिरका				सिरका	पुल्लनील, मिडुद
द्राविडी	कन्नोटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
		खल्ल	सिरकाह	Actum		

स्थान—हिन्दुस्थानमें कई प्रकारके सिरके बनाये जाते हैं, और वि सेव औषधिके काममें आते हैं ।  
 प्रयोग—( १ ) सिरमें जमे हुए दूधपित्तपदार्थको निकालनेके लिये सिरकेको भीठे तेल या जलमें मिलाकर लगाना चाहिये ( २ ) लुकी दाह मिटानेके लिये सिरकेको भीठे तेल या जलमें मिलाकर शरीरपर मर्दन करना चाहिये ( ३ ) इसके टुकड़ेको गर्म कर सिरकेमें हुआके सूंघनेसे प्रतिर्याय मिटता है

( ४ ) इसका बफारा देनेसे ज्वरकी उष्मा कम हो जाती है ( ५ ) सिरकेके लेप या बफारेसे बाहिर के कीड़े और खिलाने मिलानेसे भीतरके कीड़े मर जाते हैं ( ६ ) कानमें सिरकेका बफारा देनेसे कानकी शूल और बहिराग्न मिटता है ( ७ ) मंदाग्निके कारणसे जो आसमें दुर्गंध हो जाती है उसको मिटाने के लिये सिरकेमें नीच डालके पिलाते है ( ८ ) सिरकेमें नान और फिटकड़ी डालके लगानेसे या कुल्ले करानेसे ममूडोंमेंसे रुधिरका बहना बंद हो जाता है ( ९ ) सिरकेको उष्णजलमें मिलानेके कुल्ले करानेसे गलेके घाव या छाले मिटते है ( १० ) ठण्डे जलमें सिरका मिलानेसे दाह और तृषा मिटती है ( ११ ) अंगूठी सिरकेमें नाना मिलानेके पागल कुत्तेके दश पर लगाते है ( १२ ) सिरकेको हल्का करके अग्निदग्धपर या उष्णजल आदिसे जो छाले हो जाते है उनपर लगाते है ( १३ ) सिरकेमें गंधक पीसके लेप करनेसे गठिया और छोटे जोड़ोंकी शोध उत्तर जाती है ( १४ ) सिरकेमें मीठा तेल मिलानेके कड़ी पड़ी हुई जोड़ों पर और गठियापर लगाते है ( १५ ) पुरुषार्थ बढ़ानेके लिये सिरकेका कुच्छा दिनतक लगातार सेवन करना चाहिये ( १६ ) सिरकेमें सोहागेको पीसकर दाद पर लगाते है ( १७ ) ताड़की ताड़ीका बनाया हुआ सिरका बहुत दुखदाई हिचकीको रोकता है ( १८ ) ताड़ीके सिरकेको चर्मदल-कुष्ठपर मर्दन करना चाहिये ( १९ ) महुवेके सिरकेको जलमें मिलानेके पिलानेसे विषूचिकाकी तृषा कम पड़ती है सांठका सिरकाभी इसी काममें आता है ( २० ) थोड़ी लाल मि-र-च-पीस सिरकेमें मिलानेके कुल्ले करनेसे गलेकी पीडा मिटती है ( २१ ) चालक होनके पीछे रक्त बन्ध करनेके लिये १ तोले सिरका पिलाना चाहिये । पूरन्तु जन्तुक आवल नहीं निकल जाय तब तक नहीं पिलाना चाहिये क्योंकि इसके पिलानेसे गर्भाशयसे मवादका बहना बन्ध हो जानेसे कदाचित् आंखों भीतर ही रह जाती है ( २२ ) मूद रोगकी मिटानेके लिये सिरकेका प्रयोग बहुत अच्छा है ( २३ ) महुवेका सिरका पिलानेसे पसीना आता है ( २४ ) सिरकेको शिरपुर मलने और वानोंमें डालनेसे कानमें भिनभिनाहट और नाना प्रकारके शब्द होना मिट जाता है ( २५ ) सिरकेमें गुलाब जल मिलानेके कुल्ले करनेसे दंतपीडा मिटती है ( २६ ) सिरकेमें शहद मिलानेके मलनेसे मसूढाके रोग मिटते है ( २७ ) सिरका पिलानेसे जलधर मिटता है ( २८ )

सिरकेमें राई मिलाकर कुल्ले करनेसे कंठकी सूजन मिटती है ( २९ ) सिरकेको चूनेमें मिलाकर मस्तकके घावोंपर लगानेसे रुधिर बन्ध होजाता है ( ३० ) बालकका काग लटक आने पर मुलतानी मिट्टीको सिरकेमें मिलाकर तालू पर रखना चाहिये अथवा सिरकेमें माजूफलको घिस तर्जनी अंगुलिके लगाकर उससे कागको उठाना चाहिये ( ३१ ) बालूरेतमें सिरका मिला उसको गर्मकर पोदली बाधके, पेदपर, सेक करनेसे, उदरपीडा मिटती है ( ३२ ) सिरका पिलानेसे तृषा मिटती है ( ३३ ) सिरकेमें कपूर मिलाकर लगानेसे विच्छूका विष उतरता है ( ३४ ) सिरकेमें मधु और मूट मिलाकर मलनेसे चिबडूका विष उतरता है ( ३५ ) कांजीमें वस्त्र भिगोके ओढानेसे दाह मिटती है ।

संख्या ( ५३५ )

( सं० ) शक्तिः, मुक्ताप्रसूः, मुक्तास्फोटः, महाशक्तिः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
सीपडी	मोती की सीप	मोतीनी छीप	मोत्याची शिप	फिनुक	सीप	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
					Oyster shell	
					Bivalve shell	

स्थान—सीप—समुद्र, नदी, और तलाव आदि जलाशयोंमें होती है ।

सीप दो प्रकारकी होती है, एक मोतीकी और दूसरी जलकी—सीपको शुद्ध करने और भस्म बनानेकी रीति—शंखको शुद्ध करनेकी जो रीति है उसी रीतिसे इसको शुद्ध कर लेना चाहिये । जैसे कोडीकी भस्म बनानेकी रीति लिखी है वैसीही इसकी भस्म बनाना चाहिये ।

प्रयोग—( १ ) इसकी भस्म—ठण्डी है । रक्त पित्त और ज्वरका नाश करती है ( २ ) मोतीकी सीप—चरपरी, स्निग्ध, मधुर, रोचक और बहुत दीपन होती है । श्वास हृदय और शूलको मिटाती है ( ३ ) जलकी सीप—चरपरी, स्निग्ध, दीपन, रोचक, पाचक और बलवर्द्धक है । गुल्म, शूल, और

विषके दोषोंको मिटाती है ( ४ ) इसकी भस्मको अदरकके रसमें घोट, चने व-  
राबर गोलियां बनेंके, २ गोली नित्य देनेसे श्वास और कांस मिटता है ( ५ )  
इसकी भस्मसे दातोंको मलनेसे उनकी पीड़ा मिटती है और निर्मल होजातेहैं ( ६ )  
इसकी भस्मको अजने करनेसे पलकोंकी खुजली और नेत्रपीड़ा मिटती है  
( ७ ) इसकी भस्मको सिरकेमें मिलाकर मलनेसे मसूसे और तिल मिटतेहैं  
( ८ ) सीपको पीसके नित्य दो बेर भगम मलनेसे उसका डीलापन मिटता है  
( ९ ) इसको पीस कर नीभिके आंस पास लेप करनेसे मूत्रकी रुकावट मिट-  
ती है ( १० ) बच्चेके गलेमें सीप लटकानेसे दांत निकलनेका कष्ट नहीं भोगना  
पड़ता है ( ११ ) सीपको सिरकेमें घिसकर कानोंकी लोरों पर लेप करनेसे  
जुकामकी मसूके पीड़ा मिटती है ।

संख्या ( ५३६ )

( 'सं०' ) शूंठी, सहौषधं, विश्वं, नागरम् ।

मारवाड़ी.	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
सूठ	सोंठ	सु (सं) ठ	सुठ	शूंठि	सुंड	सोंठि
द्राविडी	कर्नाटकी	चरपी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शुंठु	शोंठि धोणसुठि	जजनील- यात्रिस	जजनीलख- रक		Dry ginger	

प्रयोग—( १ ) सोंठ-रोचक, पाचक, चरपरी, हल्की, म्लिग्ध, उष्ण  
वीर्य, वृष्य, हृद्य, पाकसे मधुर, सारक, अग्निदीपन और वीर्यवर्द्धक है ।  
( २ ) बकरीके दूधके साथ सोंठके १॥ मासा चूर्णकी फकी देनेसे गर्भवती  
स्त्रीका विषमज्वर हटता है ( ३ ) इसको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे  
आधाशीशीकी पीड़ा मिटती है ( ४ ) इसके कल्कको बकरीके दूधमें मिलाकर नस्य  
द देनेसे कई प्रकारके दोषोंसे पैदाहुई मस्तकशूल मिटती है ( ५ ) सोंठ और नीम  
के पत्ते या निरोलीको पीस, कुँडू गर्मकर, उसमें थोडा सेंधा नमक डाल टिकिया  
बनाके नेत्रों पर बांधनेसे खुजली, पीड़ा और सूजन मिटजाती है ( ६ ) इसका



गुणगुणा काथ पीनेसे हृद्रोग मिटताहै ( ७ ) इसके ? तोरो चूर्णको काजीके साथ नित्य पीनेसे आमवात मिटतीहै ( ८ ) इसके चूर्णकी नित्य फकी तलेनेसे वादीके रोग मिटतेहै ( ९ ) सोंठ और गिलोयका काथ बनाकर पीनेसे बहुत दिनोंकी आमवात मिटतीहै ( १० ) इसके चूर्णको गुडमें मिलाकर नियम पूर्वक सेवन करनेसे अग्निदीपन होताहै ( ११ ) सोंठ और बीलका काथ पिलानेसे वमन और विसूचिका मिटतीहै । इस काथमें कायफल मिलानेसे अधिक गुण करताहै ( १२ ) सोंठ और हरडके कल्कको खिलाकर गर्मजल पिलानेसे श्वास और हिचकी मिटतीहै ( १३ ) सोंठ, आवले और पीपलके चूर्णको मुष्टु के साथ चटानेसे हिचकी मिटतीहै ( १४ ) सोंठके चूर्णकी फकी देके गर्म किया हुआ छालीका दूध पिलानेसे हिचकी मिटतीहै ( १५ ) सोंठ और सधे नमक को महीन पीसके सुंभानेसे पक्षाघात मिटताहै ( १६ ) सोंठको पानीमें घिस, उसकी २-३ बूंद नेत्रमें टपकानेसे नेत्रपीडा मिटतीहै ( १७ ) इसका पाक बनाके खानेसे वीर्य पुष्ट होताहै ( १८ ) सोंठको एरंडके तेलमें घिसकर गुणगुना लेप करनेसे सर्दीकी मस्तरुपीडा मिटतीहै ( १९ ) बड़नागका विप्र-उतारनेके लिये सोंठ खिलाना चाहिये ( २० ) ४ मासे सोंठका काथ करके पिलानेसे मंदाग्नि उदररोग और जलके दोष मिटतेहैं ( २१ ) सोंठ और जोखारकी गर्म-जलके साथ फकी लेनेसे कई-देशोंके जल पीनेसे पैदाहुए जलके दोष मिटतेहैं ( २२ ) सोंठ और शकरकी फकी देनेसे हिचकी बन्ध होताहै ( २३ ) सोंठ और धनियेका काथ पिलानेसे आमाजीर्ण मिटताहै ( २४ ) सोंठ और एरंडकी जड़को ओटाकर पिलानेसे वादी और सर्दीकी पीडा मिटतीहै ( २५ ) सोंठ, कायफल और असगंधको पीसकर मर्दन करनेसे वादीकी पीडा मिटतीहै ( २६ ) पावधर सोंठमें एक तोला पारा मिला, खरलकर, मर्दन करनेसे रांधनवाय वाय भिडतीहै ( २७ ) कच्चे बीलकी गिर और सोंठको गुडमें मिलाकर ब्याडके साथ पीनेसे सग्रहणी मिटतीहै ( २८ ) सोंठके कल्कसे सिद्ध किया हुआ घी पिलानेसे ज्वर, कास, सग्रहणी, झीह और पांडुरोग मिटताहै ( २९ ) सोंठके काथमें एरंडका तेल मिलाके पीनेसे वास्त, कुत्ति और कमरकी गूल मिटतीहै ( ३० ) सोंठ और गोखरूका काथ प्रातः काल नित्य

पीनेसे औषधवात और कटिशूल मिटती है। इसी काथमें जो खार भिलाके पिलानेसे मूत्र-  
कृच्छ्र मिटता है (३) गोमूत्रके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे श्मीपदरोग मिटता है।

संख्या ( ५३७ )

( सं० ) शूरणः, अशोभिः, दुर्नामारिः, कंडूलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
मूरण	सूरण	सुरण	सूरण	ओल	जिगीफद	सूर्णगडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
विळग	सूर्णगडुः		जिमीकद	<i>Amorphophallus campanulatus Arum campanulatum</i>		

स्थान—सूरण हिन्दुस्थान और सीलोनमें बहुत बोया जाता है।  
 औषधयोग—( १ ) सूरण—दीपन, रुच, कसेला, चरपरा, विष्टभी, रोचक,  
 पाचक, लघु और विशद है। गुल्म, प्लीह, कफ और अर्शको मिटाता है और  
 खजली पैदा करता है ( २ ) इसका गूदा और बीज जलन पैदा करते हैं, परंतु  
 गुठिया पर लगानेसे उसकी पीड़ा मिट जाती है ( ३ ) सूरण-का अचार  
 उष्ण और वायुनाशक है ( ४ ) ताजा सूरण बहुत उत्तेजक और कफकारक  
 है ( ५ ) सूरण पर गार लपेट आगमें भून, नमक और तेल मिलाके, काममें  
 खानेसे अर्श मिटता है ( ६ ) सूरणका शाक पौष्टिक है ( ७ ) सूरणको इम्लीके  
 पुत्रे और धानके तुपोंके साथ उवाल, धोकर, शाक बनाके खिलानेसे रक्तार्श  
 मिटता है ( ८ ) कच्चा कंद खानेसे जिहा पर काटे पड़ जाते हैं, इसलिये इसको  
 पकाते समय इसमें इम्ली-ढाली जाती है ( ९ ) इसके टुकड़ोंको पानीमें खूब उवाल  
 कर रोपरेके साथ खानेसे रक्तार्श मिटता है ( १० ) इसका पुष्टिस वापनेसे  
 विच्छूका और दूसरे विपैल कीड़ोंका विष उतरता है ( ११ ) इसके लगानेसे  
 आंसकी गूमड़ी और पीड़ा मिटती है ( १२ ) इसके टुकड़ोंको पुटपाकमें पका-  
 कर खानेसे अर्श मिटता है ( १३ ) इसके टुकड़ोंको घायामें सुखा चूर्ण बना-  
 कर १६ मासेकी नित्य प्रातःकाल फकी लेनेसे अर्श मिटता है ( १४ )

सूरण कंदमें आटे जैसा बहुतसा पदार्थ होता है, उसमें तीव्र, विष-युक्त रस होता है, उसको धोकर या तपाकर निकाल दिया करते हैं। इस कंदका शाक बनाया जाता है।

संख्या ( ५३८ )

( सं० ) शृङ्गाटकं, जलफलं, जलवल्ली, शृङ्गरुहः ।

मारवाठी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलद्वी
सिंघाडा	सिंघाडा	शिंघोडा	शिंघाडे	शिंघाडे	मिंघाडा	दुम्पगड्डु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Trapa bispinosa	Water caltre p	
				T. quadrispinosa	The singhara nut	

स्थान—सिंघाडे हिन्दुस्थान, और सीलोनके तालाव, और भील, आदि प्रलाशयोंमें हुआ करते हैं।

प्रयोग—(१) सिंघाडे-शीतल, मधुर, गुरु, वृष्य, आही, रुचिकारक, कपेले और शुक्रल है। ये पित्तके रोगोंमें बहुत उपकारी है (२) सिंघाडेके सेबनसे अतिसार मिटता है (३) सिंघाडेकी बेलकी पीसकर लेप करनेसे दाह मिटती है (४) सिंघाडेके आटेकी रोटी बनाके खानेसे रक्तप्रदर मिटता है (५) सिंघाडेके एक तोले चूर्णकी फकी नित्य लेनेसे सूत्रातिसार मिटती है, या इसके आटेकी दूधके साथ फकी लेनेसे या उसका हलुवा घनीके खानेसे वीर्य बढ़ता है और पुष्ट होता है (७) पुष्टीकी औषधियोंमें सिंघाडेको आटा मिलाया जाता है। सिंघाडेमें मैदा बहुत निकलती है और उसको गुलाल बनाई जाती है। सिंघाडेको कच्चा, या उबालके खाते हैं।

संख्या ( ५३९ )

( सं० ) शैलेयं, शिलोद्भवं, स्थविरं, शिलापुष्पम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
छड़छड़ीलो,	भूरि छरीला	पथरफुल	दकड़फूल	शैलज,	धैलछलीरा	रातिपुव्वु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कल्पारि	कल्लुहुव्वु	उशनाह	दोवालाह	<i>Parmelia kamtschadalis</i> <i>P. perluta</i> <i>P. perforata</i>	Lichens:	

स्थान—छड़ीला हिमालय और नीलगिरी आदि कई पहाड़ोंमें-तोताह ।

प्रयोग—( १ ) छड़ीला—शीतल, हृद्य, लघु, कड़वा, चरपरा, रोचक, ग्राही, बल बढ़ानेवाला, रेचक और कृमिनाशकहै ( २ ) छड़ीला औषधियों की चरपराहट मिटाताहै और ज्वरको छुटाताहै ( ३ ) कुत्तेका विष, उतानेके लिये-इसका प्रयोग किया जाताहै ( ४ ) कामला रोगमें-यह बहुत उपकारीहै ( ५ ) इसके सेवनसे मंदाग्नि मिटतीहै ( ६ ) फुफुस सम्बन्धी रोगोंमें इसका सेवन बहुत उपकारीहै ( ७ ) इसकी धूनीसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( ८ ) इसके चूर्णकी नस्य लेनेसे मस्तकपीडा मिटतीहै ( ९ ) यह सारकहै और प्रणादिकको सुखा देताहै ( १० ) मासिकधर्ममें कष्टसे रजका निकलना, वमन, पथरी, नाकसे गाढे पीपका निकलना, यकृत, गर्भाशय और आमाशयकी पीड़ामें यह काम आताहै ( ११ ) साधारण पीडा, मुहसे लाळ गिरना, गले और दांतोंके रोगको मिटाताहै ( १२ ) पित्तकी मस्तकपीडामें इसका लेप करतेहै ( १३ ) इसको पानीमें ओटा पीस पुल्टिस बनाके हृव, पृष्ठ वंश और कमर पर बांधनेसे मूत्रकी रुकावट मिटतीहै और मूत्रवृद्धि होतीहै ।

संख्या ( ५४० )

( सं० ) शैवाल, शैवल, जलनली, हटपणी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
काजी, काई	काई, सिवार	शैवाल	शैवाळ	शैवाला	काई	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन
				(1) Blyxa octandra Wallisneria (2) Botatophyllum submersum (3) Vallisneria spiralis - V. spirallodes

स्थान—यह तालाबों में और बहुधा बहते जल में बहुत होती है। तीन आचार्यों ने शैवालके अलग अलग तीन लैटिन नाम लिखे हैं इसलिये यह निश्चय नहीं है कि कौनसा नाम ठीक है।

प्रयोग—( १ ) यह—शीतल, कड़वी, मयुर, सारक, रुक्ष, मलीनी, पचनेमें हल्की और स्निग्ध होती है ( २ ) तृपा, रक्तपित्त, ज्वर शोष, दाह और व्रणको मिटाती है ( ३ ) काँड़को एक मिट्टीके ठीकरेमें भर चूल्हेपर चिढा उसकी भस्मकेर उसमें बराबर बुरा भिलाकर चार भासे निरन्तर लेनेसे वायुको पतलापन और प्रमेह मिटाता है ( ४ ) काँड़को निचो उसका पानी निकालके इन्द्रिके छिद्रमें टपकानसे घाव भर जाता है ( ५ )

संख्या ( ५४१ )

( सं० ) शोभाञ्जनः, शिशुः, हरितशाकः, शाकपत्रः

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुगु
सहिंजयो	सहिंजना	शुषुषो	शुवगा	मजिना	सोहजना	(सुनग, सुवया)
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मुरगे,	नुगे			Moringa pterygosperma Hyperanthera Moringa	The horse R-dish tree	

स्थान—सहिंजनेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें बहुत और बोये जाते हैं। और अपने आपभी उगते हैं।

पौष्टिकानं—इसका वृक्ष २० फुट ऊंचा होता है, इसकी पेढेह सीधी और गुलाबमें ४-५ फुटकी होती है इसके बड़ी २ थोड़ी शाखें लगती हैं इसकी छाल कोमल और भूरे रंगकी होती है उसमें गहरी दरार होती है। इसके पत्त आकारमें

इस्लीके, पर्चा, जैसे होते हैं, परंतु लम्बाई, चौड़ाई में, उनसे कुछ बड़े होते हैं। व सीकके दोनों और आग्नेय भाग में लगते हैं। इसके सफेद पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं, जिनमें मधु जैसी तीव्र गंध आती है। इसके ६ से १० इंच लम्बी लटकती हुई फलियां लगती हैं। मृगशिर पोषण; इसके पुराने पत्ते गिर जाते हैं और फागुन ऋतु में नये निकल आते हैं।

फलने, फलनेका समय—पोष से चैत तक; इसके पुष्प लगते हैं। फागुन और चैतके अहीनेमें इसके लम्बी लम्बी फलियां लगती हैं। चैतके पीछे तक इसकी फलियां पकती रहती हैं जब तक वे नहीं तोड़ी जावे तब तक वृक्ष पर ही लटकती रहती हैं। इसके बीजोंको सफेद गिरच कहते हैं। इसके एक प्रकारका गोदा लगता है, इसको लकड़ीमेंसे नीला, रंग निकाला जाता है; इसके १०० तोले बीजोंमेंसे ३६ तोले सुन्झ-निर्मल सफेद तेल निकलता है, यह तेल विगडता नहीं है, इसमें सुगंध और स्वाद नहीं होता है।

प्रयोग—(१) सहिजना—चरपरा, तीक्ष्ण, उष्ण, मधुर, लघु, दीपन, रोचक, रूक्ष, दाहकारक, सलाना, कडवा, ग्राही, हृद्य, शुक्रवर्द्धक और पाकमें जरपरा है (२) इसकी जड़ चरपरी, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धक है (३) जलंधर, तिप्पी, यकृत, भीतरकी सूजन, और पथरी आदिके रोगोंमें इसकी जड़की छालका काथ या ताजा रस पिलाते हैं (४) सोजिश मिटानेके लिये इसकी छालका लेप करते हैं या उसके काथको गाढा करके लेप करते हैं (५) इसके ताजे रसको कानमें डालनेसे कानकी पीडा मिटती है (६) सहिजनेका गांठ कानमें घुसकानेसे कानका पीप बन्ध होजाता है (७) इसके पुष्प उष्ण और रूक्ष है (८) ये बड़े दोषोंको निकालते हैं और इनका लेप करनेसे सूजन मिटती है (९) इनको पीसकर मिश्रीके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है (१०) इनको थोटाकर पिलानेसे पित्तका निकास बढाता है (११) इसकी जड़के रसको दूरेके साथ पिलानेसे शर्करारमरी मिटती है और मूत्रवृद्धि होती है (१२) इसकी जड़के रसमें सोंठ डालके पिलानेसे पाचनशक्ति बढती है (१३) अटरकका रस और इसकी जड़का रस दोनोंको मिलाकर पिलानेसे श्वास मिटता है (१४) इसकी जड़का पुस्टिस बाधनेसे सोजिश उत्तर जाती है परंतु त्वत्रामें बहुत दाह और पीडा होती है (१५) इसकी फलीका शाक खानेमें

आंतोंमें कीड़े नहीं पड़ते हैं ( १६ ) इसके छोटे पेटकी जड़का काथ पिलानेसे पुरानी गठिया, अर्द्धांग और जलंधर मिटता है ( १७ ) इसके बीजोंको यंत्रमें दबाके तेल निकालते हैं उस तेलका मर्दन करनेसे छोटे जोड़ोंकी सूजन और गठियाकी तीव्रपीड़ा मिटती है ( १८ ) इसकी सर्वा मासे ताजी जड़की ओटाके पिलानेसे ठहर २ के आनेवाला ज्वर छूट जाता है । अपस्मार और स्त्रियोंके अ-वेशके रोगमें भी यही काथ पिलानेसे ( १९ ) इसकी ताजी जड़ सरसों और अदरकको पीसकर लेप करनेसे गठिया मिटती है ( २० ) तिळ्नी और मंदागिन वालेको इन तीनोंकी गोलियां बनाके खिलाते हैं ( २१ ) यकृत, तिळ्नी, रुधिर के बहनेवाली नसोंकी पीड़ा, धनुस्तंभ, स्नायुकी निर्बलता, किसी अंगका शून्यपन, पीपवाली फुन्सियां, शरीरपरके दाग और कोठमें इसके फलका सेवन करना बहुत लाभकारी है ( २२ ) मुख और गलेके छाले मिटानेके लिये इसकी जड़के काथसे कुल्ले करने चाहिये ( २३ ) इसका गोंद मुखमें रखनेसे दांतका सड़ना बन्ध हो जाता है ( २४ ) इसकी जड़की छालका काथ पिलानेसे वांङ्गे मिटते हैं ( २५ ) जङ्गली सहिजनकी छाल चित्रककी जड़के वृतरकी और मुर्गेकी बीटका नारूपर लेप करते हैं ( २६ ) बोये हुए सहिजनके पत्तोंका ४ तोले रस चमने करानेके लिये पिलाते हैं ( २७ ) सहिजनेकी सवा तोले छालका काथ पिलानेसे छोड़ गर्भीशयसे बाहिर निकल जाती है ( २८ ) छोड़ निकालनेके लिये इसकी जड़का प्रयोग भी करते हैं ( २९ ) इसकी जड़को पानीमें भिगोके ओटानेसे तेल निकल जाता है, उसमें बहुत दुर्गंध और चरपराहट होती है ( ३० ) बच्चोंका यकृत बढ जाने पर इसकी जड़का लेप करते हैं ( ३१ ) गला पड़ जानेसे जो स्वर भंग होजाता है उसको मिटानेके लिये इसकी ताजी जड़के काथके कुल्ले कराते हैं ( ३२ ) गिल्टियोंकी सूजन बिखरनेके लिये बहुधा इसके गोंदका लेप करते हैं ( ३३ ) इसके पुष्प बलवर्द्धक हैं इनके काथसे प्रतिशयाय मिटता है ( ३४ ) इसके पत्ते, थोड़ा लहसन, एक रुड़ुड़ा हल्दीका, थोड़ा नमक और काली मिरच पीसके पिलानेसे घाबले रुत्तेका विष उतरता है । इन सब चीजोंका पीसकर उसके दंशपर लेप करनेसे ५, ६ दिनमें उसका घाब भर जाता है, पित्त शोध उतर जाती है और ज्वर छूटजाता है ( ३५ ) इसके पुष्पोंको दूधमें ओटाकर पीनेसे पुरुपार्थ बढ़ता है ( ३६ ) गठियाकी पीड़ा मिटानेके लिये इसकी जड़का लेप

कतेह ( ३७ ) इसकी जड़की या वृक्षकी छालको पानीमें पीस, टिकिया, घनाके  
 बांधनेसे छाली होजाता है ( ३८ ) इसकी छालमें कुछ हींग और सोंठ मिला  
 जलके साथ पीसकर गालियां बना, दो मासेकी-मात्रा दिनमें २, ३, बेर देनेसे  
 पेटकी बाँदीकी पीडा, शूल और अफारा मिटतीहै ( ३९ ) इसके पत्ते और  
 कालिया जण्डाहै ( ४० ) इसके गोंदका लेप करनेसे गठियाकी सूजन मिटतीहै  
 ( ४१ ) इसकी जड़का हिम या फाँट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होके जलंधर मिटता  
 है ( ४२ ) इसके पत्तोंके रसमें प्राग्जीमिरचको पीसकर लेप करनेसे, मस्तक  
 की शूल मिटतीहै ( ४३ ) इसके बीज और पोखरमूलको देनेसे बालकोंके  
 पेटके कीड़े मरतेहै ( ४४ ) इसके बीज, जड़ और सवे नमकको काजीके राश  
 पीसकर लेप करनेसे स्नायुकी पीडा, मिटतीहै ( ४५ ) इसके पत्तोंको पानीके  
 साथ पीस, गर्म कर लेप करनेसे सर्दीकी या अन्य प्रकारकी, मस्तकपीडा  
 मिटतीहै ( ४६ ) इसके पत्तोंके रसमें बोडी-मधु मिलाकर नेत्र पर लेप कर-  
 नेसे नेत्रके गोलैकी-पित्तशोध मिटतीहै ( ४७ ) इसकी नरम डालियोंके  
 रसमें मधु मिलाकर नेत्रोंमें टपकानेसे रतों या मिटतीहै ( ४८ ) इसके एक तोले  
 गोंदको नित्य दहीके साथ ७ दिन तक खानेसे मत्रकृच्छ्र मिटतीहै ( ४९ )  
 इसके पत्तोंको पानीके साथ पीस, गर्म कर गुन-गुना लेप करनेसे वायुकी पीडा  
 मिटतीहै ( ५० ) इसकी छालके काथमें गुड मिलाकर पिलानेसे आबल जल्दी  
 गिर जातीहै ( ५१ ) इसकी बीजोंको महीने पीस, भाँयके घी और मधुमें मिला  
 बत्ती बनाकर अतुधर्मके पीछे यानिमें रखनेसे गर्भ धारण होनेकी शक्ति  
 जाती रहतीहै ( ५२ ) इसके बीजोंको महीने पीस उसका गुन-गुना लेप कर  
 नेसे घुटनोंकी पुरानी पीडा मिटतीहै ( ५३ ) इसके पत्तोंको बराबर तेलके  
 साथ पीस, चोट या मोचकी पीडा पर लेप कर, धूपमें बैठनेसे उरा टारकी  
 पीडा मिटतीहै ( ५४ ) इसकी छाल और राईको पीसकर लेप करनेसे कान  
 के नीचेकी सूजन मिटतीहै ( ५५ ) इसकी जड़की छाल और आकके पत्तोंको  
 पीसकर लेप करनेसे अर्श मिटतीहै ( ५६ ) इसके और कासमर्दके पत्तोंका  
 रस बनाकर पिलानेसे दिचकी मिटतीहै ( ५७ ) इसकी जड़की छालको पीस-  
 कर लेप करनेसे स्नायु रोग मिटतीहै ( ५८ ) इसके पत्तोंको भिगेकर खानेसे  
 छातीकी पीडा मिटतीहै ( ५९ ) इसकी जड़के कण्ठको सरसोंके तेलमें थोडा



और बैलोंकी पीठके बांधपर लेप करते हैं ( ६ ) जड़की छालके कांधको गांठा करके लेप करनेसे गठियाकी सूजन उतरती है ( ७ ) इसकी जड़की छालके चूर्ण और काथसे बहुत पसीना आता है । परन्तु उनमें रोग मिटानेकी शक्ति कम है ( ८ ) इसकी जड़की छालके चूर्णकी फकी लीनसे गठियाकी तेज पीड़ा मिटती है ( ९ ) इसकी छालका और कुटजकी छालका रस मिलाकर पिलानेसे अतिसार मिटता है ।

संख्या ( ५४४ ) :

( सं० ) अरलुः, कटंगः, प्रियजीवः, कुटनटः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	अरलु, ट्टु	अहदूशो	पिंवल्लोट्टु			
द्राविडी	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Ailanthus excelsa</i>		

स्थान—अरलुके वृक्ष संयुक्तप्रदेश, विहार, पश्चिमी-प्रायद्वीप, कर्नाटक, बम्बई, कैरा, पंचमहल, गुजरात और राजपूताना आदि देशोंमें होते हैं ।

परिचय—इस वृक्षकी ऊंचाई ६०, ८० फुट होती है, इसकी छाल सुफेद होती है, इसके पत्तोंकी डालयें ८ से १२ इंच लम्बी और कभी कभी दो तीन फुट लम्बी हो जाती हैं । इसके पत्ते गहरी कटी हुई कोरोंके कंगूरदार होते हैं । उनके ८ से १४ जोड़े एक सिकके ऊपर प्रायः आमने सामने लगते हैं इसके पुष्प कुछ पीले रंगके होते हैं । शीतकालके पहिले भागमें इसके सब पत्ते गिर जाते हैं, फागुन चैतमें नवीन आजाते हैं ।

फूलने फलने का समय—वैत वैशाखमें यह वृक्ष फूलता है । इसके लाल गांठे लगता है ।

प्रयोग—( १ ) अरलु, कूत्त, अग्नि और बलवद्धक, कपिला, शीतल और कड़वाई ( २ ) इसकी छालके चूर्णकी फकी लीनसे मंदाग्नि मिटती है ।

( ३ ) निर्बलतामें आनेवाले डेरको रोकनेके लिये इसकी छालके चूर्णकी फकी देतेहैं ( ५४ ) इसकी फकी लेनेसे निर्बलता और खासी भिटतीहै ( ५५ ) इसके चूर्णको अदरकके रस और मधुके साथ चटानेसे खांस भिटताहै ( ५६ ) इसकी छालको टण्डे या गर्म पानीमें चार पहर भिगो मल छानकर दिनमें दो बर पिलानेसे मंदाग्नि भिटतीहै ( ५७ ) मुखे कफको निकालनेके लिये इसके काथमें मधु मिलाकर पिलाना चाहिये ( ५८ ) इसकी ३ मासे छाल और तीन मासे साँठको आँटाकर पिलानेसे बाइठ और आक्षेप वायु भिटतीहै ( ५९ ) बालक होनेके पीछेकी निर्बलता भिटानेके लिये इसकी छाल और पत्तोंको का- ममें लातेहै ( ६० ) इसके गोदके चूर्णको थोड़ा २ दूधके साथ पिलानेसे आ- मोतिसार और खाँसी भिटतीहै ( ६१ ) इसके गोदको दहीके साथ देनेसे अ- मोतिसार और आमोतिसार भिटतीहै ( ६२ ) इसकी छाल बहुत कड़वी होतीहै ।

संख्या ( ५४५ )

( सं० ) श्रीवल्ली, शिववल्ली, कंटवल्ली, कटुफला ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	उर्बंगाली	पंजाबी	मल्लैवली
सीकाकाई	सीकाकाई	सीकाकाई	शिककाई	काटीमिठि	शिकोया	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
चिकाकायि	सीगियवल्ली			Acacia concinna		

स्थान—सीकाकाईके पेड़ दक्षिण, मालवा, राजपूताना, बंगाल और अवध आदि बहुतसे देशोंमें होतेहैं । यह पौधा ५० फुट तक उँचा होकर लंबे और चौड़े पत्तोंवाले शाखोंवाले होताहै । इसकी शाखाओंमें तीखे और मुड़े हुए काँटे और शूलमे रहतेहैं । इसके पुष्पोंकी बलिया मैजनी रंगकी होती है । पुष्पपीले रंगके होतेहैं, इसकी फलियाँ मोटी, गिरदार और सीधी, ३, ४ या ५ इंच लम्बी, पौन या एक इंच चौड़ी और बीजोंके बीच बीचमें चिपी हुई होतीहैं ।

फूलने फूलने का समय—फागुन से अपाढ़ तक वर्षा ऋतुमें यह वृत्त फूलता है, शीतकालके आरंभमें इसके फल पक जाते हैं। इसकी छालमेंसे एक प्रकारका रंग निकलता है। हल्दी-और इसके पत्तोंको मिलाकर, बहुत सुंदर नीला रंग निकालते हैं।

प्रयोग—(१) पित्तकी वमन मिटानेके लिये, इसके कोमल पत्तों, कुछ नमक, इमली और कुछ लाल मिर्चोंको पीसकर चटनी बनानेकी खाते हैं (२) इस चटनीको रोटीके साथ खानेसे अरुचि मिटती है (३) इस चटनीके खानेसे विचनके एक या दो अच्छे वेग हो जाते हैं और उनमें पित्त निकलता है (४) इससे अपशब्द और डकारकी दुर्गंध मिटती है (५) इसके पत्तोंको जलमें भिगो छानकर पिलानेसे हल्का विरेचन लगता है (६) इसके कोमल पत्तोंको ओटाकर पिलानेसे हल्का विरेचन होता है (७) इसकी फलियोंको ओटाके पिलाने से दूषित वायु आदि से पैदा हुआ ज्वर छूट जाता है (८) कोमल पत्तों का हिम या फाट पिलाने से आफरा मिटता है (९) कोमल पत्तोंको पीस गर्मकर पेटपर लेप करनेसे आफरा मिटता है और हल्के दस्त लगते हैं (१०) इसकी फलियोंको पीसकर लेप करनेसे त्वचाके रोग मिटते हैं (११) फोड़ोंको साफ करनेके लिये भी इनका लिपक रते हैं (१२) पेटमें तिल्ली आदि अंगोंमेंसे जो उनके रसका वहना बन्ध हो जाता है उनकी रुकावटको मिटानेके लिये इसके कोमल पत्तोंका काथ पिलाते हैं (१३) इसकी फलीके चूर्णकी फकी देनेसे सूखी खासी मिटती है (१४) इसकी फली हल्की, रेचक, वामक और हृत्वास पैदा करनेवाली है। फलीकी रेचक शक्ति सोनामुखीसे अच्छी है। परन्तु इसकी गंध और स्वादसे हृत्वास पैदा होजाता है। इसकी रेचक शक्ति बढ़ानेके लिये इसकी साथ कोई त्सार मिला देना चाहिये (१५) कामलारोग जो हृदयकी रुकावटसे नहीं पैदा हुआ हो, वह इसकी फलीसे चर्मन करानेसे मिटजाता है (१६) सवा तोले सीक्काई फो ढाईपाव पीनीमें ओटाकर उससे शिरको धोनेसे बाल अच्छे बढ़ते हैं और शिरमें खोरा जमना बन्ध होजाता है (१७) इसकी थोड़ी मात्रा देनेसे बल बढ़ता है और अधिक मात्रा लगातार देनेसे व्यसन और विरेचन होने लगते हैं। (१८) इसकी फली-केश और कपड़े धोनेके काममें आती है।

संख्या ( ५४६ )

( सं० ) इलेमान्तक, शैलुः, उद्दाल, धनुवारक ।

भारजाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
लैसवो	लिसोडा(रा)	गुदो	शेलवट	भालता	लिसुडा	चैन्ननदोर (1)
द्राचिडी	फर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अग्रेजी	
नरिविलि	चैन्नकाथि		सपिस्ता	Cordia myra	Sebsten	

स्थान-लिसोडेके वृक्ष चनाबसे आसाम तक, खासिया पहाड, बंगाल, मद्रा, सिन्ध, मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताना आदि कई देशोंमें होते हैं ।

पहिचान-गूदे दो प्रकारके होते हैं । एकतो वह है कि जिसके बड़ा फल लगता है उसको राय गूदा कहते हैं । और दूसरा छोटे फलका, उसको कठगूदा कहते हैं । यह वृक्ष २०, ४० फुट ऊंचा होता है इसकी पेदड छोटी सीधी या कुछ मुड़ी हुई होती है । इसकी गुलाई ४-६ फुट होती है । इसके फली हुई और ऊंची बहुत सी शाखें होती हैं । इसकी छोटी शाखें कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंगकी होती हैं । इसकी छाल एक इंच मोटी, हल्के भूरे रंगकी, खरदरी और कभी रं कुछ काले रंगकी होती है । इसके छोटे पत्ते चिकने होते हैं जो पूरे बढनेपर थोड़े बहुत खरदरे हो जाते हैं । इसके सफेद रंगके पुष्पोंके गुच्छे और हरे रंगके फलोंके भ्रूमके लगते हैं । इसके फल पकजानेपर कुछ लाल भूरे रंगके हो जाते हैं । उनका छिलका मोटा होता है और चपदार पदार्थसे भरा हुआ होता है । इसकी गुठलीमें एक या दो खाने होते हैं उनमें मींगी होती है । चैतमें इसके पत्ते गिर जाते हैं और थोड़े दिनों पीछे नवीन निकल आते हैं ।

फूलने फलनेका समय-फागुन और चैतमें इसके पुष्प लगते हैं वैशाख से अप्राद तक फल पका जाते हैं । इसके एक प्रकारका मींद लंगता है । इसके हरे पत्ते और गूदेका रस रसातक काममें आता है । इसकी मींगीमेंसे तेल निकला जाता है वह सूघने और लगानेके काममें आता है ।

प्रयोग—( १ ) लेसवा—भीठा, कपूला, कड़वा, चरपरा, पाचक, स्निग्ध और पित्तको शांत करनेवाला है ( २ ) इसके फलका चेष औषधियोंकी चरपराहटको कम कर देता है ( ३ ) छातीके रोग और सूखी खांसी मिटानेके लिये इसके फलका काथ पिलाते है ( ४ ) फलोंके चेषमें मिश्री डालकर पीनेसे मूत्राशय और मूत्रनाली की दाह मिटता है ( ५ ) इसके काथके कुल्ले करनेसे मसूड़े दृढ हो जाते है ( ६ ) पित्तके रोगोंमें मृदु विरंच करानेके लिये गूदेका बहुतसा काथ पिलाते है ( ७ ) गूदेकी मींगीको पीसकर लेप करनेसे दाह मिटता है ( ८ ) इसके पत्तोंको फोडेपर बांधते है ( ९ ) मस्तकपीड़ा मिटानेके लिये, मस्तक पर गूदेके पत्ते बांधने चाहिये ( १० ) गूदेकी छालका रस और नारियलके तेलको मिलकर पिलानेसे पेटके मरोड़े मिटते है ( ११ ) इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे खुजली मिटती है ( १२ ) छालको आटाकर पिलानेसे ज्वर छूटता है ( १३ ) छालके चूर्णकी फकी देनेसे बल बढ़ता है ( १४ ) इसके पत्तोंको तेलसे चुपड़, उनको तपाकर पेटपर बांधनेसे वादीसे किठोर पड़ा हुआ पेट ढीला पड़ जाता है ( १५ ) गूदेकी छालको पानीमें भिगो मल छानकर पिलानेसे पथरी मिटती है ( १६ ) गूदेकी छालके हिममें मिश्री डालकर पीनेसे मूत्रकी दाह मिटती है ( १७ ) गूदेकी छालका काथ पिलानेसे प्रतिश्याय मिटता है ( १८ ) इसका फुकाहुआ फल भीठा, स्निग्ध, पचनेमें भारी, विष्टभी, शीतल और चरपराहट मिटानेवाला है ( १९ ) इसके कोमल पत्तोंका १-ताला चेष निकाल, उसमें चूरा मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार मिटता है ( २० ) इसकी कोमलोंको पीस, गोलिएयां वनोंके देनेसे अतिसार मिटता है ( २१ ) इसके कोमल पत्तोंको अग्नि पर तपाकर १० दिनात्क वायनेसे कंठमाला मिटती है ( २२ ) यह पित्त, खांसी, ज्वर और श्वासको मिटाता है ( २३ ) इसका लेप करनेसे पित्तकी, मस्तकपीड़ा मिटती है ( २४ ) गूदेके मुहमें रखनेसे जीभका फटना बंध होजाता है ( २५ ) गूदेको जघी से चुपड़, उसपर गूदेकी भस्म बरकानेसे उसका निकलना बन्ध होजाता है ( २६ ) इसके एक तोले पत्ते और १५ काली-मिरचको पीस, छानके पिलानेसे वायले कुत्तेकी विष, उतरता है। इसके हुए गूदे खानेके काममें आते है, कच्चे गूदेका अचार बनाते है।

संख्या ( ५४७ )  
( सं० ) लघुश्लेष्मांतकः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गूदा	छोटागूदा	नहानगूदो	नहानभोंकर	छोटोबहुयार	-	चेन्नकरा
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
शिरुनरिवि-				Cordia obliqua C. latifolia		

स्थान— छोटे गूदेके घृत्त हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होतेहैं ।  
 प्रयोग— ( १ ) सूखी खासी मिटानेकेलिये गूदेका कोथे करके पिलातेहैं  
 ( २ ) गुठली निकाले हुए गूदेको सुखा चूर्ण बनाके फकी देनेसे अतिसार  
 मिटताहै ( ३ ) फुफ्फुसके रोगमें गूदेका सेवन अधिक लाभकारीहै ( ४ )  
 गूदेके कच्चे फलमें एक प्रकारका गोंद होताहै, यह मूत्रकृच्छ्रमें काम आताहै  
 ( ५ ) इसके पत्तोंकी गाखकोधीमें मिलाकर लगानेसे श्वाय भरजाताहै ( ६ )  
 इसके पत्तोंको गर्मकर बढ पर बाधनेसे बढ बैठजातीहै ॥ अकालके समयमें  
 गूदेके फल और पुष्प खानेके काममें आतेहैं ॥

संख्या ( ५४८ )

( सं० ) ( लघुश्लेष्मांतकभेद ) मुक्ताफलः, विन्दुफलः,  
पुष्करकफलः ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
गूदी	गोंदी	गुदी	गोंदी	-	गूदी	-
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Cordia Rolhu C. angustifolia		

स्थान—यह संयुक्त प्रदेश (मध्य) और दक्षिण हिन्दुस्थान और राजपूताने आदि देशोंमें होती है। ( ७८ )

प्राचिन—गूदीका वृत्त—३ ० ४ ० फुट ऊंचा होता है। इसकी पदद छोटी होती है और उसकी गुलाइ—३—५ फुट तक होती है। इसकी शाखें फली हुई और उनके अन्तका भाग बहुत ही मुकी हुआ रहता है। इसकी पददकी छाल

माटी, हल्के या गहरे भूरी रंगकी हाती है, यह बहुत नहीं तड़कती है। इसकी पत्तें खरदर हाते हैं। इसके छोटे सफेद पुष्पोंके और छोटे—२ हरे फलोंके गुच्छे लगते हैं, जब फल पक जाते हैं तब हल्के सिंदूरी रंगके हो जाते हैं वे चपदार पदार्थसे

भरे रहते हैं उनमें एक बीज होता है। माघ, फागुनमें इसके नवीन पत्तें आते हैं इसके एक प्रकारका गोंद लगता है।

फूलने, फलने का समय—वैतसे जेठ तक इसके पुष्प लगते हैं। वर्षा ऋतुमें फल पकते हैं।

प्रयोग—(१) गूदी—मीठी, कुंठ शीतल, कृमिनाशक और वातल है (२) इसकी छालका काथः पिलानेसे अतिसार मिटता है। (३) मुखपाकः पिटानेके लिये—इसकी छालके काथसे कुल्ले करते हैं (४) गूदीके पत्तोंको काली मिर्चके साथ घोट छान कर पीनेसे घ्रातु पुष्ट होती है (५) इसकी छालके चूर्णकी जड़ जमीनके नीचेसे निकाल उसका टुकड़ा मुंहमें रखनेसे पित्तके विकारसे पडा हुआ गला खुल जाता है (६) गूदीके रसमें मिथी मिलाके पीनेसे अथवा इसके पत्तोंके चूर्णकी शकरके साथ फकी लेनेसे घ्रातु पुष्ट होती है, परन्तु विशेष खानेसे वादी बढ़ जाती है (७) सूखी गूदीके चूर्णसे शकर साफ करते हैं। पके हुए फल खानेके काममें आते हैं।

संख्या ( ५४५ ) निम्नलिखित स्थानों में मिलता है।  
( सं० ) पद्भुजा, दशाङ्गुलं, खर्वूजं, पडरेखा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
खरबूजे	खरबूजा	खरबूज	खरबूज	खर्वूजा	खरबूजा	मोलाम्पराडु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
मोलापळ	कंबूज	मिर्चखि	खरबूजोह	<i>Cucumis melo</i>	(Melon Tho sweet melon)

स्थान— खरबूजे बहुधा नदियों और उनके किनारे चालू रेतमें बोये जाते हैं। खरबूजे के बीजोंमेंसे मीठा और खानेके लायक तेल निकलता है।

प्रयोग— (१) पका हुआ खरबूजा—स्निग्ध, मीठा, शीतल, पचनेमें भारी, मूत्रवर्द्धक, वृत्तिकारक, वृष्य, वल्य, कोष्ठ शुद्धिकारक, और पौष्टिक है (२) खरबूजेके बीज ठण्डे होते हैं और इनकी मीठी कई प्रकारके पाकोंमें पड़ती है (३) इसकी मीठी भाग सेवन करनेसे शरीर पुष्ट होता है (४) इसकी मीठीको मिश्री और कालीमिरचके साथ पीसकर पीनेसे मूत्रवृद्धि होती है (५) इसकी मीठीको बच्चे दूधके साथ पीसकर पीनेसे मूत्रनालीकी दाह मिटती है (६) मीठीको जलके साथ पीस, उसमें चन्दनके तेलकी १५ या २० बूंद डालकर पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है (७) इसकी मीठीका कृषिया रस बना, उसमें जाखार और कलमीशोरा मिलाके पिलानेसे बूजमें मूत्र पैदा होने लग जाता है (८) खरबूजेकी और खीराकी मीठीको कालीमिरचके साथ घोट धान मिश्री मिलाकर पिलानेमें हृदय और शरीरमें ठण्डाई होजाती है (९) इसकी मीठीको पीस गमक र बच्चोंके पेट पर लेप करनेसे अकारा उत्पन्न जाता है (१०) खरबूजे खानेसे मूत्रवृद्धि होती है (११) खरबूजा खिलानेसे बच्चोंके पेट फोड़े मिटते हैं कि जिनपर खरबूट आने खजली चला करती है (१२) खरबूजे खानेसे गुदामें खजलीका चलना और रुधिर निकलना बन्ध होजाता है (१३) बच्चा होनेके पीछे गर्भाशयकी पीड़ा मिटानेके लिये इसके छिन्नको साफके अकेमें पीसके पिलाना चाहिये (१४) इसके बीजोंको धूपमें सुखाकर पातलाम भर मजबूत काऊ लगा देवे कि जिसमें खा नहा लग सके। जिन दिनामें खरबूज नहीं मिले उन दिनामें इन बीजोंको काममें लानेसे उबनाही लाभ होता है कि जितना खरबूजेसे।



संख्या ( ५५० )

( सं० ) सप्तपर्णः विशालत्वक्, शारदः, विषमच्छदः ॥ १ ॥

मौरवादी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
	इतिमन-	सप्तपर्ण	सातपर्ण	इतिमगाछ	सतपर्ण	एडाकुल
द्राविडी	कन्नड़	मराठी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	एनलोग			Astoma Scholaris	Cobumerifallr	
				Profess S	known as Dita Bark	

स्थान—यह हिन्दुस्थानमें सब ठौर बोया जाता है। हिमालयमें जमुनासे पूर्व की ओर और बंगाल और दक्षिण हिन्दुस्थानमें बहुत होता है।

पहिचान—यह वृक्ष ४० से ६० और कहीं ८० से ९० फुट ऊंचा होता है और जल्दी बढ़ता है। इसकी पेटड़े लम्बी और शाखें फली हुई होती हैं। इसकी छाल काली, भूरी और खरदरी होती है परन्तु तड़कती नहीं है। इसके पत्ते ऊपरकी ओरसे चमकदार और नीचेकी ओरसे चन्दनियाँ रंगके ४ से ८ इंच लम्बे और थोड़े चौड़े होते हैं। इनके पुष्प कुछ हरे रंगके होते हैं।

फूलने फलनेका समय—भगशिरसे फागुन तक इसके पुष्प लगते रहते हैं, जेठमें फल लगते हैं।

प्रयोग—( १ ) सप्तपर्ण—कपेला, उष्ण, कड़वा, सारक, स्निग्ध, हृद्य और दीपन होता है ( २ ) इसके दूधियाँ उसको फोड़ों पर लगाते हैं ( ३ ) इसके दूधियाँ रसमें तेल मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दूद मिटता है ( ४ ) इसकी छालको काथ वारीसे आनेवाले ज्वरको रोकता है ( ५ ) इसकी छालके काथ पर अतीस बुरकाके पिलानेसे पुगाना अतिसार मिटता है ( ६ ) इसकी छाल और सौंफको आँटके पिलानेसे आँमातिसार मिटता है ( ७ ) इसकी छालके काथके साथ वायावेडंगकी फली देनेसे पेटके बौड़े मरते हैं ( ८ ) चिकित्सा और इसकी छालको आँटा बान ठण्डी कर मधु मिलाकर पिलानेसे रूधिर शुद्ध हो जाता है ( ९ ) ज्वर छटनेके पीछेकी निर्बलता मिटानेके लिये और पाचन शक्ति बढ़ानेके लिये इसकी छालके काथमें पीपल बुरकाके पिलाना चाहिये ( १० )

इसकी 'झालका' सत गुणमें उत्तम कुनैनके बराबर होता है ( ११ ) जिन विगड़े हुए त्रणोंमें दुर्गन्धियुक्त पूय निकलता हो तो इसके कोमल पत्तोंको अधिपर तपा पीस पुन्टिसा चिनाकर चनपर बांधना चाहिये ( १२ ) इसका काथ पीनेसे सांद्रमेह मिटती है ( १३ ) दूधके साथ इसके पत्तोंके कण्डका लेप करनेसे दुग्ध त्रण मिटते हैं ।

संख्या ( ५५१ )

समुद्रपात ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
धावबेल	समुद्रपात		समुद्रशाल	गुगुनी		
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Argyreia speciosa Lettsomii nervosa	The elephant crooper	

स्थान—समुद्रपातकी घेल हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होती है ।

पहिचान—यह बहुत बड़ी बेल होती है । इसकी शाखा और पत्तोंके नीचे सफेद कोमल रेशमीन रूण होते हैं । इसके पत्ते ४ से १२ इंच लम्बे नागरबेलके पान जैसे नोकदार होते हैं और प्रायः उतनेही चौड़े होते हैं । इसके गहरे गुलाबी रंगके पुष्पोंके गुच्छे लगते हैं । इसके बीजोंमेंसे तेल निकलता है ।

प्रयोग—( १ ) दूधके साथ इसकी जड़के चूर्णकी फंकी देनेसे घुटनेकी फिझीकी पीड़ा या सृजन मिटती है ( २ ) गोट या फोड़ेको पकानेके लिये इसके पत्तोंको रूणकी औरसे बांधना चाहिये ( ३ ) गोट या फोड़ेको बिलेरनेके लिये पत्तोंको उलटे बांधते हैं ( ४ ) इसकी जड़को ओटो छान बरदाकर उसमें मधु मिलाकर पिलानिसे रक्त शुद्ध होता है ( ५ ) इसके स्वरसमें सिरका मिलाकर शरीर पर मर्दन करनेसे पेटका भाग कम होजाता है ( ६ ) इसकी जड़को ओटोकर पीनेसे गोटिया मिटती है ( ७ ) इसके रसको लेप करनेसे बच्चोंके पुराने दादकी जातिके फोड़े मिटते हैं ( ८ ) इसके पत्तोंका पुन्टिसा बांध-

नेसे सूजन विखर जाती है (१६), इसकी जड़के चूर्णकी २॥ रतीसे सवा मासे तक की मात्रा देनेसे शक्तियाँ मिटती है (१७)। स्नायु कृ पर इसकी प्रतीका सु-  
 लिटर्स वांधते है (१८) इसका प्रक, तिलीका, तेल और सोयेके बीजोंको एकत्र  
 पीसकर खेपाकरनेसे, खुजली और बच्चोंके त्वचाके दूसरे रोग मिटते है (१९)।  
 विगडे हुए फोडे, नाडीघण और लम्बे धावों पर इसके पत्तोंको रंगूकी ओर  
 से बांधनेसे वे साफ होजाते है और उनमेंसे साफ पीप निकलने लगता है, जब  
 वे फोड़े शुद्ध होजावें तब उनपर पत्तोंकी उल्टे बांध देना चाहिये (२३)  
 इसकी जड़के चूर्णकी १॥ मासे तककी फकी देके ऊपर दूध पिलानेसे स्नायु-  
 जालकी शक्ति बढ़ती है।

सुख्या ( ५५२ )

( सं० ) समुद्रफलम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
समुद्रफल	समुद्रफल	समुद्रफल	समुद्रफल	समुद्रफल		
द्राविडी	कर्नाटकी	मिथराती	फारसी	हि लैटिन	अंग्रेजी	

स्नायुजालके रक्त समुदायीके पूर्व अन्त, बंगाल, महार और दक्षिण  
 हिन्दुस्थान आदि हिन्दुस्थानके बहुवसे भागोंमें होते है। नदियोंके किनारे दल २  
 में और बहुधा तर जमीनमें होते है। ( १० ) ( ११ ) ( १२ ) ( १३ ) ( १४ ) ( १५ ) ( १६ ) ( १७ ) ( १८ ) ( १९ ) ( २० ) ( २१ ) ( २२ ) ( २३ ) ( २४ ) ( २५ ) ( २६ ) ( २७ ) ( २८ ) ( २९ ) ( ३० ) ( ३१ ) ( ३२ ) ( ३३ ) ( ३४ ) ( ३५ ) ( ३६ ) ( ३७ ) ( ३८ ) ( ३९ ) ( ४० ) ( ४१ ) ( ४२ ) ( ४३ ) ( ४४ ) ( ४५ ) ( ४६ ) ( ४७ ) ( ४८ ) ( ४९ ) ( ५० ) ( ५१ ) ( ५२ ) ( ५३ ) ( ५४ ) ( ५५ ) ( ५६ ) ( ५७ ) ( ५८ ) ( ५९ ) ( ६० ) ( ६१ ) ( ६२ ) ( ६३ ) ( ६४ ) ( ६५ ) ( ६६ ) ( ६७ ) ( ६८ ) ( ६९ ) ( ७० ) ( ७१ ) ( ७२ ) ( ७३ ) ( ७४ ) ( ७५ ) ( ७६ ) ( ७७ ) ( ७८ ) ( ७९ ) ( ८० ) ( ८१ ) ( ८२ ) ( ८३ ) ( ८४ ) ( ८५ ) ( ८६ ) ( ८७ ) ( ८८ ) ( ८९ ) ( ९० ) ( ९१ ) ( ९२ ) ( ९३ ) ( ९४ ) ( ९५ ) ( ९६ ) ( ९७ ) ( ९८ ) ( ९९ ) ( १०० )

१) फलने फलनेका समय - वैशाखमें इसके पुष्प लगते हैं ( १५ ) अर्द्ध और अर्द्ध  
 सोअमें फल निकलते हैं ( १६ ) ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥  
 प्रयोग - ( १ ) पत्तों को उल्टी करके और फल निकालने के लिये इसके थोड़े से  
 बीजों को पीस अदरक के रस के साथ पिलाने चाहिये ( २ ) इस काम के लिये बहुत स  
 यथाभी है ( ३ ) पत्तों का स्वरसे पिलाने से अतिसार मिटता है ( ४ ) फल को पीस करके मू  
 थाने से मस्तक पीड़ा मिटती है ( ५ ) सौंठ और इसके फल को पीस करके मर्दन कर  
 ने से बहुत पसना आना बन्ध हो जाता है ( ६ ) इसके फल को माला कागनी के  
 साथ पीसके लेप करने से जमे हुए दाग मिटकर साफ हो जाते हैं ( ७ ) ज्वर में  
 स्नायु पीड़ा को मिटाने के लिये इसके फल को चूर्णका मर्दन करना चाहिये  
 ( ८ ) इसकी जड़ कड़वी है और रुनन जैसा काम देती है ( ९ ) इसको चूर्ण से  
 शरीर की दाह मिटती है ( १० ) मुनका के साथ लेने से बद्धकोष्ठ मिटता है ( ११ )  
 इसके फल को प्राणी में पीस कर पिलाने से वमन होती है ( १२ ) इसके फल को  
 फकी देने से अजीर्ण से तथा आमामाजीर्ण से पैदा हुई पेट की शूल मिटती है ( १३ )  
 इसके बीजों को पीस कर लेप करने से नेत्र पीड़ा मिटती है ( १४ ) ठंडी  
 हवा से पैदा हुई पीड़ा को मिटाने के लिये इच्छासागन्दर फल का या ऐसे ही गुण  
 वाली दूसरी औषधियों के साथ इसका लेप करना चाहिये ( १५ ) बच्चों की  
 छाती में जो सिदी से अमार्ज हो जाता है उसको वमन कराके निकालने के लिये  
 इसके थोड़े से बीज पीस कर पिलाने चाहिये ( १६ ) इसके फल को मीठी और  
 सान्दान के पीस कर मधुखन के साथ चटाने से अतिसार मिटता है ( १७ ) इ  
 सके फलों को छोटी शर पिलाने से भेटकी शूल मिटती है ( १८ ) इसके फल  
 शीतल, तिक्त और सारक है ( १९ ) इसके फल बहुत तिक्त और सुगंधयुक्त है  
 पीला उज्ज्वल और क्षामक है ( २० ) इसके पत्तों के स्वरसमें मधु मिलाकर पी  
 खाने से (आपातिसार) मिटता है ( २१ ) इसकी भीरी को आपाती में घिस कर जो  
 पीड़ा दहनी और हो तो शोण और और धाए और हो तो दहनी और के मर्दन  
 में टपकाने से मस्तक पीड़ा मिटती है जो इससे लिपाई का डरे होती है कि दूध में  
 घिस कर टपकाना चाहिये ( २२ ) फल की मीठी को धरु के मूत्र में घिस कर ज्व  
 में अंजन करने से नेत्र रोग मिटता है ( २३ ) फल की मीठी को खीरे दूध में घिस  
 कर नाक में टपकाने से नजल की पीड़ा मिटती है और मस्तक में मवाद निकल

जाता है ( १२३० ) इसके फलको चूर्णको गणेरुनक रसमें मिलाके, कातमें, ७ दिन डालनेसे बहिरापन मिटता है ( २४ ) इसके फलको भांगरके रसके साथ, ७ से-१४ दिन तक खानेसे, श्वेत कुष्ठ मिटता है ( १२५ ) इसके फलको चकरीके मूत्रमें घिसकर अंजन करनेसे, फूला फटता है ( १२६ ) इसके फलकी चकरीके मूत्रके साथ नस्य देनेसे, आधाशीशी मिटती है ( १२७ ) इसको अजवायनके साथ खानेसे, प्रेटीकी, शूल मिटती है और एकांतरा, छूटता है ( १२८ ) सुरासानी, अजवाइनके साथ इसके चूर्णकी फकी, देनेसे, रक्तपित्त मिटता है ( १२९ ) इसके फलको चकरीके मूत्रके साथ पीस, नस्य देनेसे, मूर्च्छा, मिटती है ( १३० ) गुडके साथ, ३ दिन तक खिलानेसे, पासिकर्षण शुद्ध होने, लगता है ( १३१ ) पीपलके साथ खानेसे, शूल मिटती है ( १३२ ) नींबूके रसके साथ, पीसकर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटती है ( ३३ ) पानीके साथ पीसकर २४ दिन तक मस्तकपर लेप करनेसे २४ दिनमें, केश, काले होजाते हैं ( १३४ ) इसका फल और आककी जड़की नस्य, देनेसे उन्माद मिटता है ( १३५ ) तूंबीकी गिरके रसके साथ पीसकर २१ दिन तक लेप करनेसे इन्दी मोटी होती है ( १३६ ) हरड़के साथ लेनेसे बद्धकाष्ठ मिटता है ( १३७ ) इसका मधुके साथ लेनेसे, श्वास रोग मिटता है ( ३८ ) घीके साथ खानेसे, पसीना बन्द होता है ( १३९ ) हन्दीके साथ खानेसे पित्त विकार, मिटते हैं ( ४० ) अकटरके रसके साथ खानेसे, प्रेटीकी पीडा मिटती है ( ४१ ) बिल्वीके मूत्रमें घिसके अंजन करनेसे नेत्रोंका भ्रमरजा बन्द होता है ( ४२ ) इंगोटेके रसके साथ पीसके लगानेसे, काखोलाई, मिटती है ( ४३ ) मधुमें मिलाके लगानेसे तलवाका घाव भर जाता है ( ४४ ) जलभंगरेके रसके साथ लेनेसे कामला रोग मिटता है ( ४५ ) गुडके साथ लेनेसे, प्रेटीकी पीडा मिटती है ( ४६ ) दहीके साथ लेनेसे नाभ ( धरन ) टिकाने अजाती है ( ४७ ) पानीमें पीसकर लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरता है ( ४८ ) इसको महीन पीसकर, दोनों नेत्रोंमें अंजन करनेसे सर्पका विष, उतरता है ( ४९ ) इसको दहीके साथ खिलानेसे, स्त्री, गर्भको धारण, करती है ( ५० ) एक भाग समुद्र फल और दो भाग पीपलको जला एक मासे ही मात्रा, पानों रखकर खानेसे श्वास रोग मिटता है ( ५१ ) चकरीके मूत्रके साथ घिसकर अंजन करनेसे रतौपा मिटता है और बाफनी, अजाती है ( ५२ ) गुड और

आकरके साथ देनेसे पेटके कीड़े मरजातेहैं ( ५३ ) अगस्त्याके रसके साथ  
 देनेसे नपुंसकता मिटतीहै ( ५४ ) गंधके मूत्रमें घिसके अंजन करनेसे भूत प्रेतका  
 आवेश मिटताहै ( ५५ ) अकलकरके साथ २१ दिन तक लेनेसे पेटकी पीड़ा  
 मिटतीहै ( ५६ ) काले धतूरेके रसके साथ पीसकर लेप करनेसे वायशूल  
 मिटतीहै ( ५७ ) आककी जड़के साथ पीसके लेप करनेसे कमरकी पीड़ा मि-  
 टतीहै ( ५८ ) आककी जड़ और समंदर फलको घिसकर नस्य देनेसे सन्नि-  
 पात दूर होताहै ( ५९ ) सफेद आककी जड़ और समंदर फलको पीसके  
 नस्य देनेसे सर्प और विच्छूका विष उतरताहै ( ६० ) इसको बचके साथ  
 देनेसे पित्तविकार-मिटतेहै ( ६१ ) भैंसके गोबरके रसके साथ देनेसे रक्तप्रद  
 मिटताहै ( ६२ ) भांगके रसके साथ देनेसे पित्त मिटताहै ( ६३ ) भांगरेके  
 रसके साथ देनेसे वायगोला मिटताहै ( ६४ ) तुलसी और लोंगके साथ दे-  
 नेसे ज्वर छूटनाहै ( ६५ ) पकरीके मूत्रके साथ देनेसे अजीर्ण मिटताहै ( ६६ )  
 तीरुके रसके साथ अंजन करनेसे आंखका दखना मिटताहै ( ६७ ) गुंडीके  
 रसके साथ देनेसे वादीवी पीड़ा मिटतीहै ( ६८ ) मिरच और काले धतूरेके  
 रसके साथ देनेसे अर्ध मिटतेहै ( ६९ ) गायके दूधके साथ खिलानेसे स्त्री गर्भको  
 प्राण्य करतीहै ( ७० ) गोघृतके साथ घिसकर लगानेसे कंठमाला मिटतीहै ( ७१ )  
 घूहरेके दूधके साथ लगानेसे सर्पका विष उतरताहै ( ७२ ) लहशुनके साथ  
 खिलानेसे पित्तकी भयल मिटतीहै ( ७३ ) निर्गुंडीके रसके साथ घिसकर अंजन  
 करनेसे फूला कटताहै ( ७४ ) मधुके साथ कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता  
 है ( ७५ ) गायकी आँछके साथ महीने तक खानेसे प्लीहरोग मिटताहै ( ७६ )  
 शिंगके साथ देनेसे पेटके कीड़े मरतेहै ( ७७ ) हरडके साथ पीसकर लगानेसे  
 दाद मिटताहै ( ७८ ) पानीमें घिसकर मूलद्वार पर लगानेसे अफारा मिटता  
 है ( ७९ ) चार मासे कमलगट्टे, ४ मासे पोखर मूल और समन्दर फलको  
 धाँवल्लोंके पानीके साथ पिलानेसे वमन, मिटतीहै ( ८० ) गोड़ेकी ली-  
 रके रसमें इसको और समुद्र भागको पीसकर कानोंमें डालनेसे बहिरापन  
 मिटताहै ( ८१ ) चारमासे दाख, घोडेके नख और समुद्रफलको घोडेके मूत्रमें ख-  
 लकर अंजन करनेसे पटल और जाला दूर होताहै ( ८२ ) टाककी जड़की  
 जाल ४ मासे, जागरमोथा ४ मासे गजपीपल ६ मासे और सपन्दरफल ४

मासे इन सबको पीसकर गायके दूधके साथ ३ दिन लेनेसे बन्ध्यापन भिटताहै।

संख्या ( ५५३ )

( सं० ) समुद्रफेनः, हिण्डीरः, अन्धिकफः, सुफेनम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
समदर झाग	समुद्रफेन	समुद्रफोण	समुद्रफेण	समुद्रफेन	समुद्रभाग	समुद्रपनुरुगु
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
फड़लनोरे	समुद्रनोरे			Sopia officinalis	Cuttle fishbone	

प्रयोग—( १ ) यह—शीतल, कपेला, लेखन, सारक, पचनेमें इल्का, और रोचकहै विष, पित्तविकार, नेत्र और कानके रोगोंको भिटताहै (२) समुद्र फेनको केवल या विनालेक तेलमें पीसके लगानेसे नेत्रका जाला भिटता है ( ३ ) मधु को थोटा गाढाकर उसमें समुद्रफेन मिला उसमें बत्ती भिगोके नासूरमें रखनेसे वह भर जाताहै ( ४ ) समुद्रभागको गुलाबके तेलमें मिलाकर मलनेसे मुखकी भाई दूर होतीहै ( ५ ) इसको और हरड़की भाँगीको पीस योनीमें रखनेसे ढीलापन भिटताहै ( ६ ) इसका चूर्ण कानमें डालनेसे कानसे पूयका बहना बन्ध होताहै ( ७ ) इसको और शकरको पीसकर अंजन करनेसे अर्जुन रोग भिटताहै ( ८ ) समुद्रफेन और नरकचूर जलमें पीसकर उबटना करनेसे मुहांसे भिटतेहै ( ९ ) समुद्रफेनकी भस्म बना सिरकेमें मिलाके लगानेसे चालोंका निकलना बन्ध होताहै ।

संख्या ( ५५४ )

( सं० ) सरलः, पीतद्रुः, पूतिकाष्ठम्, पीतवृक्षः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
	सरल, चीड	देवदारु	सरळ	सरलगाळ		सरळ, देवदारु

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	देवदार			Pinus Longifolia,	The longleaved or three leaved Pine

स्थान—सरलके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानके कपाऊं ब्रिटिस गढवाल नैनीताल और रानी खेत आदि बहुतसे भागोंमें और हिमालयमें सिन्ध नदी से भूदान तक होतेहैं ।

पाहियान—सरलका वृक्ष ७० फुट और कहीं कहीं १०० से ११० फुट ऊंचा हो जाताहै । इसकी पेढह लम्बी और सीधी होतीहै उसकी गुलाई ५, ७ फुट और कहीं कहीं १०, १२ फुटकी होतीहै । इसके पत्ते बहुधा २, ३ वर्ष तक नहीं गिरतेहैं जब बहुत पुराने हो जातेहैं तब वैशाख जेठमें गिरतेहै इसकी शाखें इसकी पेढहकी और ऊंची बढ़तीहै जिससे गोल शिर बन जाताहै । इसके ६ से १२ इंच लम्बे तीन २ पत्ते लगतेहैं कभी कभी इससेभी अधिक लम्बे होजातेहैं ।

फूलने फलने का समय—माघसे चैत तक इसके पुष्प लगते हैं वर्ष सवा वर्षमें इसके फल या डोडे पकतेहैं, चैत वैशाखमें वे फट जातेहैं, और उनमेंसे बीज निकल पडतेहैं परन्तु वे वृक्षपरही लगे रह जातेहैं जिससे वसत ऋतुमें वृक्षके ऊपर बहुतसे खाली डोडे दीखने लगतेहै । इस वृक्षमें गंधावेरजा निकाला जाताहै अर्थात् इसकी सवा छः सेर लकड़ीके टुकड़ोंमेंसे सेर भर वेरजा निकलताहै । इसकी छाल और पत्तोंके कोयले रंगतके काममें आतेहै । गंधे वेरजेमेंसे तेल निकाला जाताहै सात छटांक गंधे वेरजेमेंसे छटा क भर तेल निकलताहै ।

प्रयोग—( १ ) सरल-रस और साकमें चरपरा, कड़वा, उष्ण, सूक्ष्म, मीठा, हल्का, स्निग्ध, और कान्तिवर्द्धकहै ( २ ) इसकी लकड़ी उत्तेजक और पसीने लानेवालीहै । शरीरकी दाह कफ, निर्मलतासे मूर्च्छा, फोड़े फुन्सी आदि रोगोंमें उनकी औषधियोंके साथ काममें आतीहै ( ३ ) गंधे विरोजेके तेलसे पुराना मुजाक मिटताहै ( ४ ) मूत्र सम्बन्धी अगोंके रोग, पुगनी खासी, किसी अंगसे रुधिरका बहना, गठिया और ज्वर आदिरागोंमें



गंघावेरजा काम आताहै ( ५ ) तिळ्ही और शीतज्वरमे ४ से ८ मासे तक गंधाविरोजा देतेहै ( ६ ) गंधेविरोजेको किसी गांठ या दूसरी गिल्डियोंकी सूजनपर लगानेसे उसको पकने नहो देता और बिखेर देताहै ( ७ ) इसको खिलानेसे यह वीर्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंकी भिन्नियोंपर अपना असर करताहै इसलिये मूत्रहृच्छका यह बहुत अच्छा उपायहै । ३॥—मासेसे ११ मासे तक गंधेविरोजेका किसी चेपदार चीजके साथ द्रव बनाकर दिनमें चार बेर देना चाहिये । जैसेकि यह गाढा होताहै तो इसको धीरे २ अच्छी तरह किसी चेपदार चीजमें मिलाना चाहिये ( ८ ) गंधेविरोजा विशेष करके फोड़ेके लिये बहुत उत्तमरुहै ( ९ ) पकेहुए और पीपदार फोड़े और गांठोंके ऊपर इसका लेप बहुत उपकारीहै ( १० ) पकनेवाली सूजनको बिखेरनेके लिये चीडकी लकड़ीके टुकड़ोंका काथ पिलाना चाहिये ( ११ ) गंधेविरोजे की धूनी कई बेर देनेसे मासिक धर्म फिर होने लग जाताहै ( १२ ) कहीं २ के मनुष्य इसके फलोंको खानेके काममें लातेहै परन्तु न उनका स्वाद अच्छा है और न वे शरीरका पोषण करनेवालेहै ।

संख्या ( ५५५ )

( सं० ) सर्जकः, अजकर्ण, मरिचपत्रकः, पीतफलः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	बडाशाल	रालनु भाइ	सर्जवृक्ष		सर्जराल	शालमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
वेल्लेकुन्नारिक	संजरदगर			Vateria indica V Malabica	The white dammer Pinoy Vairish or Indian Copal	

स्थान—चन्द्रसके वृक्ष पश्चिमी प्रायः द्वीपमें कनारेसे द्रावणकोर तक होतेहै ।

पहिचान—यह वृक्ष बडा होताहै, इसके पत्ते बारह महीने लगे रहतेहै । इसके वृक्षमेंसे राल जैसा एक पदार्थ निकलताहै ।

इसके बीजोंमेंसे बहुतसा गाढा तेल इस रीतिसे निकाला जाता है कि बीजोंको साफ कर सेकके पीस लेते हैं पीसेहुए पाच सेर बीजोंको चारहसेर पानीमें इतने समय तक थोटावें कि तेल पानी पर तैरने लगजावे तब उसको पानी परसे उतार फिर उन बीजोंके आटे और जलको खूब हिलादेवें और आठ पहर तक पड़ा रखें, कई लोग घीके घदलेमें इसको बेच देते हैं ।

-प्रयोग- ( १- ) चन्द्रसकी फकी देनेसे अतिसार मिटता है- ( २ ) तेल और मौमको मंठ आंच पर गलाकर उसमें चन्द्रस मिला मरहम बनाके, फोड़े फुन्सी पर लगाते हैं ( ३ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे पुरानी गठिया मिटती है ( ४ ) दूसरे कई प्रकारके रोग, कि जिनमें पीड़ा हुआ करती है, इसके तेलके मर्दन करनेसे मिटते हैं ( ५ ) चन्द्रस और बुरेका धुंआ लेनेसे सर्दगर्मीका जुकाम मिटता है ( ६ ) चन्द्रसको मलनेसे दातोंसे रुधिरका निकलना बन्द होजाता है ( ७ ) इसकी छालके चूर्णमें कपासके फलका रस और मधु मिलाकर कानमें डालनेसे कर्णस्राव मिटता है ।

संख्या ( ५५६ )

( सं० ) सर्पाक्षी, फणिहंत्री, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बगाली	पंजाबी	तेलङ्गी
	सरहटी	नकुलकंद	मुगुसकादा	पानशिउली	सरहटी	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
				Ophiorhiza mangos	The mongoose plant	

स्थान—सरहटीके गुल्म खासिया पहाड़ आसाम पश्चिम प्रायद्वीप और सीलोन आदि बहुतसे देशोंमें होते हैं ।

-प्रयोग-( १- ) इसका पचांग, कडवा, होता है, परन्तु जड़ बहुतही कड़वी होती है यह आमाशयकी शूल मिटानेके लिये दीजाती है ( २- ) इसके पचागना सवा तोले काथ पिलानेसे सर्प का विष उचरता है साप और नालेकी लड़ाईमें

जब नोलेको सर्पकाटखाताहै तब वह नोल उसका रिय उतारनेके लिये इस सरहटीको खाताहै ( ३ ) पानीजे और दुष्ट वायु आदिसे पैदाहुए कई रोग को मिटानेके लिये इसका काथ पिलाया जाताहै ( ४ ) पागल कुत्तेके काटे हुए रोगीको इसका काथ पिलाना चाहिये ( ५ ) इसकी जडको घिसकर सर्पके दंश पर लगाना चाहिये ( ६ ) इसकी जडको चंद्रग्रहणमें निमंत्रण दे वृसरे दिन लाकर कालेसूतसे वाम कानमें बांधनेसे एकांतरा छूट जाताहै और दक्षिण कानमें बांधनेसे द्वाहिक ज्वर छूटजाताहै ( ७ ) श्मशानमें पैदा हुई सरहटी की जडको रविवारेके दिन लाकर उसको घीमें घिसकर ललाट पर तिलक करनेसे एकाहिकज्वर छूटताहै ( ८ ) इसकी जडको लाल सूतमें बांधकर कमरमें बांधनेसे अतिसार मिटताहै ।

संख्या ( ५५७ )

( सं० ) सर्वजया ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	संभाजय		देवकेली	सर्वजया	हकीक	गुरिगंजाचेट्टु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कुन्दमती-चहि				Ganna indica	Indian shot	

स्थान—सर्वजया हिन्दुस्थान और सीलोनमें प्रायः सबठौर बागोंमें लगाई जातीहै ।

पाहिचान—इसके पत्ते बड़े और कठोर होतेहैं । इसके बीज काले चमकदार, शकृत, और मटर जैसे गोल होतेहैं ।

फूलने फलनेका समय—इसके बारह महीनेही पुष्प आते रहतेहै ।।

प्रयोग—( १ ) ज्वरमें पसीना लानेकेलिये इसकी जडका काथ पिलाते है ( २ ) इसकी जडको पीसकर ठंडाईकी तरह पिलानेसे मूत्रवृद्धि होतीहै ( ३ ) मूत्रवृद्धि होनेसे जलंधर मिटताहै ( ४ ) इसकी जड चरपरी और उत्तेजकहै

( ५ ) विपैल घामके खानेसे जब चौपायोंका पेट फूल जानाहै तो उनको इसकी जड़के टुकड़े और कालीमिरचोंका चावलोंके धोवनके पानीके साथ ओटाके पिलातेहै ( ६ ) हृदयकी निर्बलता मिटानेकेलिये इसके बीजोंका प्रयोग करतेहै ( ७ ) इसके बीजोंका लेप करनेमें घाव भरजाताहै ( ८ ) इसकी जड़को काट कर पानीमें भिगो देतेहै पीछे उसको मल छान कर कुछ समय तक रख छोडतेहै जब पानी नितर कर गाद नीच बैठ जातीहै तब उस पानी को निकाल देतेहै और गादको सुखा पीसकर रोटी बनाके निर्बल मनुष्यको खिलातेहै क्योंकि इससे उसको खट्टी डकारें नहीं आती और जल्दीसे पचजातीहै । इसकी जड़में मैदा होतीहै इसलिये उसको पीसकर खातेहै ।

सरसवा ( ५५८ )

( सं० ) सर्षप, कटुस्नेह, तन्तुभ, कदम्बकः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सरसों	सरसों	सरसव	शिरष	सरिषा	सरों	आवालु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कटुह	सालुवे	खदले अवयज	सिप दान सुफादि	<i>B. assienampsteria</i> Var. I <i>Dichotoma</i> <i>Sinapis dichotoma</i>	kali sarson	

एक मन सरसोंमेंसे तेरह सेर तेल निकलताहै इसके तेलको गन्धकके तिजाव और पानीके साथ ओटानेसे शुद्ध होजाताहै ।

प्रयोग—( १ ) सरसों—रस और पाकमें बरपरी, हृद्य, कटवी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निवर्द्धक, और कुछ रूक्षहै । वात, कफ, फइ, कुष्ठ, शूल, छिगि, ग्रहपीडा और पीडाको मिटातीहै ( २ ) इसके तेलमें कपूर मिलाके मर्दन करनेसे पेशी सम्बन्धी गठिया मिटतीहै ( ३ ) मन्वा स्तंभ और बाटीसे अकड़े हुए अंगपर इसका मर्दन करना बहुत उपकारीहै ( ४ ) सरसोंके तेलका सभ शरीर पर मर्दन करके स्नान करनेसे त्वचा शीतल, कठोर और नीरोग होजातीहै ( ५ ) सरसोंको पीस गर्मपानीमें मिला पुल्टिस बनाके बाधनेसे बाटी

के रोग मिटता है ( ६ ) इसके तलका मर्दन करनेसे वात पित्त स्वरमें बहुत लाभ होता है ( ७ ) बच्चोंकी खासी मिटानेकेलिये उनकी छाती पर इसके तलके तलका मर्दन करना चाहिये ( ८ ) सरसोंको पीस मधुके साथ चटानेसे कफकी खासी मिटती है ( ९ ) यह-उग्र गंधवाली और दीपन है पित्त और रक्त पित्त को पैदा करती है ( १० ) सरसों पीसकर मासिकधर्म के स्नानके बाद पीछे तीन दिन तक उसका शाफा बनाकर भगमें रखनेसे गर्भ धारण होता है ( ११ ) सरसोंको दूधमें ओटावे जब सब बूध जल जावे तब सुखा पीसकर उबटना करनेसे शरीरका रंग गौरा होजाता है ( १२ ) आकके दूधमें रुई भिगो ब्यायामें सुखा बत्ती बनाकर उससे सरसोंके तेलमें काजल पाड़के लगानेसे नाडी ब्रण मिटता है ( १३ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे जृंभाका वेग मिटता है ( १४ ) इसके तेलमें आकके पत्तोंका रस और हल्दीका कल्क डालकर ओटावे जब तेल सिद्ध होजावे तब उतार छानके लगानेसे पामा और-विचर्चिका मिटती है ( १५ ) सरसोंका तेल कानमें डालनेसे कानके कीड़े मरते जाते है ( १६ ) इसके तेलको पेट पर मलनेसे शिथी कम होजाती है ( १७ ) सरसों और वचको पीसके लेप करनेसे शोथ उतर जाती है ( १८ ) सरसों, नीमके पत्ते और भिलावेको सरायसंपुटमें बंध कर जला ब्यालीके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अपची मिटती है ( १९ ) सरसोंको गोमूत्रके साथ पीस गर्भकर लेप करनेसे श्लीषद मिटता है ( २० ) इसके तेलको कानमें डालनेसे वादीकी कर्णशूल मिटती है ।

### संख्या ( ५५६ )

(-सं०-) साजकः, अग्रधान्यं, नीलकणा, वर्जरी, ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
बाजरा	बाजरा	बाजरो	बाजरी		बाजरी	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
		जाजरस	गानरस	Panicum typhlo- dium panicum spicatum		The Bhubra, Cnumbo, or spiked millet Millet

स्थान—वाजरा हिन्दुस्थानमें प्रायः सब ठौर होताहै । वाजरेकी डडीकी खरगतेके काममें आतीहै । १०० तोले वाजरेमेंसे ७१॥ तोले मैदा और १ तोले तेल निकलताहै ।

प्रयोग—(१) वाजरा—उष्ण, रक्त, और दुर्जरहै । पित्त, अग्नि और बलको बढ़ाताहै । पित्त प्रकृतिवालेके वीर्यको पतला करदेताहै । कफ और वातको मिटाताहै । (२) वाजरेके फुंगी जो सिंहेके ऊपर लगतीहै उसकी एक मासेकी गुठमें गोखी बनाकर खिलानेसे वाबले कुत्तेका विष उतरताहै ।

—१४:~\*~७३—

संख्या ( ५६० )

( सं० ) श्वेतसारिवा, काष्ठशारिवा, शारदा, गोधी ।

गारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
गोरीसर	अनतमूल	धोलीउपल-सरा	पाढरीकावली	शुक्लासारिवा		मानेन
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Almesmus indicus</i> <i>Asclepias</i> <i>pendosara</i>	Indian sarasparilla	

स्थान—सारिवा उत्तर-हिन्दुस्थानमें वादासे अबय और सिकम तक और दक्षिणमें द्रावक्षोर और सीलोन तक होतीहै ।

पहिचान—यह-वृक्षके लपटनेवाला भूाड होताहै, इसके पत्तोंके नीचे लोहके जगके रंगके रूप होतेहै, डडी पर इसके पत्ते आमने सामने लगतेहै । वे कुछ लम्बे होतेहै । इसके छोटे सफेद रंगके पुष्प लगतेहै उनमें गंध नहीं आतीहै । इसके फल दो तीन इंच लम्बे होतेहै उनमें लम्बे २ बीज होतेहै । छ नकी जड़ पर लम्बे बालोंका गुच्छा रहताहै । इसकी जड़ लम्बी चली जातीहै और उसमें कोईसी ठौर शाखा फूटतीहै । इसकी लम्बी जड़ोंकी पूलियें बड़ी हुई निकतीहै ।

प्रयोग—( १ ) श्वेत सारिवा—शीतल, मधुर, पचनेमें भारी, म्लिग्ध, क-डवी, शुक्ल और सुगन्धित होतीहै । इसकी जड़ रधिरशोधक और बलवर्द्धकहै ।

( २ ) मंदाग्नि, त्वचाके रोग, उपदंश और श्वेतप्रदरमें इसका प्रयोग किया जाता है; ( ३ ) सारक औषधियोंके साथ भी इसका प्रयोग किया जाता है ( ४ ) इसकी जड़के चूर्णकी गायकं दूधके साथ फकी देनेसे पथरी और पीड़ से मूत्रका उतरना बन्ध होजाता है ( ५ ) सफेद जीरा और इसका काथ पिलानेसे रुधिर शुद्ध होजाता है, और पित्तकी तेजी मिटजाती है ( ६ ) फोडे फुन्सी, गंडमाला, और उपदंश सम्बन्धी रोग मिटानेके लिये, इसका ७॥ तोले से १० तोले तक काथ दिनमें तीन बेर पिलाना चाहिये ( ७ ) बच्चोंके मुँहके सफेद छालोंको मिटानेके लिये इसकी जड़को पीस मधुके साथ लगाते है। अथवा इसकी सूखी छालको पीस मक्खनमें तल रात दिनमें १ मासे से ३॥ मासे तक चटादेना चाहिये ( ८ ) आखमें छोटी २ लाल फुन्सियां होजाती है उनके ऊपर इसका दूधिया रस लगाते है ( ९ ) इसकी छोटी जड़को केलेके पत्तेमें लपेट पुटपाक कर, पत्तेमेंसे निकाल, जीरे और शकरके साथ पीस, घीमें मिलाके चटानेसे वीर्य और मूत्रसम्बन्धी अंगोंके रोग मिटते है ( १० ) इसकी जड़का लेप करनेसे सूजन उतरती है ( ११ ) इसकी जड़ सारसपरलेकी ठौर काममें आती है। इसकी ताजी जड़ काममें लानी चाहिये। पुरानी होनेसे और सूख जाने से इसका गुण कम होजाता है ( १२ ) शरीरकी निर्बलता मिटानेके लिये इसका प्रयोग बहुत अच्छा है ( १३ ) इसके साथ कंटालीको ओटाकर पिलानेसे पुरानी खांसी मिटती है ( १४ ) इसके काथके साथ अतीसकी फकी देनेसे अतिसार मिटता है ( १५ ) बच्चोंका रुधिर शुद्ध करके निर्बलता मिटानेके लिये अनंतमूलको दूध और शकरके साथ ओटाके पिलाना चाहिये ( १६ ) अनंतमूल और हीगका चूर्ण खिलानेसे वमन बन्ध होजाती है ( १७ ) इसके पत्तोंको पीसकर दांतोंमें ढबानेसे दांतोंके कीड़े निकलजाते है ( १८ ) इसकी जड़का प्रयोग करनेसे ब्रणशुद्ध होजाता है ।

संख्या ( ५६१ )

( सं० ) कृष्णसारिवा, श्यामा, अनन्ता, कृष्णमूली ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलड़ी
लीमर	करियासाउ	कालीउपल- मरी	कालीकावली	श्यामालता	करियामाऊ	
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Ichnocarpus frutescens Echites ?</i>		

स्थान—सारिवा पश्चिम हिमालयमें सिरमौरसे नैपाल तक, गंगाके उपरके मैदानोंसे बंगाल, आसाम, और सिलहट तक, दक्षिण हिन्दुस्थान, सीलोन पश्चिमोत्तर हिमालय और शिमल आदि कई उष्ण प्रान्तोंमें होती है।

प्रयोग—( १ ) कालीसर—शीतल, वृष्य, मधुर, सिग्ध, शुक्ल और लघु है। दोनों सारिवाओंके गुणोंमें कुछ विशेष अन्तर नहीं है ( २ ) इसकी जड़ रक्तशोधक और बलवर्द्धक है और सारसापरेलाकी ठौर काममें आती है ( ३ ) इसके ठंडक और पत्तोंका काथ पिलानेसे ज्वर छूटता है ( ४ ) इसकी ५ तोले जड़को ढाई पाव पानीमें छोटा फर उसमेंसे ५, ७।। तोले काथ पर पीपल घुरकाके दिनमें दो बेर पिलानेसे मंदाग्नि मिटती है ( ५ ) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाकर पिलानेसे त्वचाके रोग मिटते हैं ( ६ ) इसकी जड़को चोपचीनीके साथ छोटाकर पिलानेसे उपदंश मिटता है ( ७ ) इसकी जड़के काथमें मधु मिलाकर पीनेसे नेत्रोंका शुक रोग मिटता है।

संख्या ( ५६२ )

( सं० ) सिद्धेश्वरः, सिद्धाख्यः, सिद्धनाथः, कृष्णचूडा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजारी	तैलड़ी
गुलतुरी	गुलतुर्ग	संधेगरो	गुलतुरी	कृष्णचूडा		
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Gaesalpinx pulcherima Poinciana ?</i>		



स्थान—कृष्ण चूडाके वृक्ष हिन्दुस्थानमें हरेक प्रागमें लगाये जातेहैं।

पहिचान—इसके वारह, महीने पुष्प लगते रहतेहैं। यह लाल और पीले पुष्पोंके भेदसे दो प्रकारका होताहै। इसका भाङ बड़ा होताहै इसके कहीं २: काटे लगतेहैं, इसकी एक सीक पर ५—१० जोड़े पत्तोंके लगतेहैं, इसके लम्बी पतली चपटी फालियें लगतीहैं।

प्रयोग—( १ ) यह—शीतल, सिग्ध, कडवा और कपैला होताहै ( २ ) इसके पत्तोंको पीसकर लगानेसे गाठ और नासूर मिटताहै ( ३ ) यह त्रिदोषनाशकहै ( ४ ) इसके पत्ते, पुष्प, और बीज औषधिके प्रयोगमें आतेहैं।

संख्या ( ५६३ )

( सं० ) सिन्दूरं, गणेशभूषणं, शृङ्गारकं, नागजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सिन्दूर	सिन्दूर	सिन्दूर	शेदूर	सिन्दूर	सिन्दूर	चैदिरु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
सिन्दूर	सिन्दूर			Plumbi oxydum rubrum	Minium Read lead.	

प्रयोग—( १ ) यह उष्ण है, विसर्प, कुष्ठ, कंठ और विषको मिटाताहै ( २ ) हृदीर्द्ध हृदीको जोडताहै, व्रणको शुद्ध करताहै और भ्रग देताहै।

संख्या ( ५६४ )

( सं० ) सिन्दूरी, रक्तबीजा, करच्छदा, रक्तपुष्पा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सिन्दूरपुष्पी	सिन्दूरिया	सिन्दूरी	शेदरी	सिन्दूरपुष्पी	लटकण ज.फर	

द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
	सिन्दूरी			Bixa Orellana	Ornottoc, Ornett

स्थान—सिन्दूरी हिन्दुस्थानमें बहुत ठौर बोई जाती है।

पहिचान—यह सफेद और गुलाबी या पियाजी रंगके पुष्पोंके कारण से दो प्रकारकी होती है। इसका वृत्त छोटा होता है इसके शाखें थोड़ी लगती हैं।

फूलने फलनेका समय—उष्णकालमें इसके पुष्प लगते हैं शीतकालमें इसके फल पकते हैं। इसके फलके गूदेमें से लाल या नारंजी रंग निकाला जाता है।

प्रयोग—(१) यह शोषक और रुख रचक है और आमामिसार और चूकके रोगोंकी बहुत अच्छी औषधि है (२) इसके फलकी गिर ग्राही है (३) इसके बीज हृदयको हितकारी, ग्राही और ज्वर मिटानेवाले हैं।

सख्या (५६५)

(सं०) सीताफल, गंडगात्रं, कृष्णबीजं, आतृष्यम्।

भारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
सीताफल	सीताफल	सीताफल	सीताफल	आतागात्र	शरीफा	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		शरीफा	काज	Anona squamosa	Custard apple	

स्थान—सीताफलके वृत्त बंगाल, समुक्त प्रदेश, राजपूताना, पंजाब, मध्य हिन्दुस्थान, बुन्देलखण्ड, कमाऊं, दक्षिण, सिन्ध, पंचमहल और चेम्बई, आदि प्रदेशोंमें बोये जाते हैं और अपने आपभी पैदा होते हैं।

पहिचान—इसका भाङ या छोटा वृत्त होता है, पेदङ सीधी और छोटी होती है, इसके पत्ते लम्बे, कुछ चौड़े और तीखे होते हैं। वे पसतम सयके सम

नहीं गिरतेहैं, और फागुन तक नये आजातेहैं। इसके एक ठौर, एक या दो पुष्प लगतेहैं, इसकी मध्य रेखा २ से ४ इंच तक लम्बी होतीहै, इसके फल का रंग कुछ पीलास लिये हुए हरा होताहै। इसके बीज-लम्बे, काले या कुछ भूरे रंगके होतेहैं। वे गिरमें गड़े हुए रहतेहैं।

फूलने फलनेका समय—ग्रीष्मऋतुमें इसके पुष्प लगतेहैं। आपाढ़से आसोज तक इसके फल पकतेहैं।

प्रयोग—( १ ) सीताफल, -मधुर, शीतल, हृद्य, वातल, प्राणिक, बलवर्द्धक और पित्तनाशकहै ( २ ) इसके पके हुए फलको कूट नमक मिलाके बांधनेसे दुष्ट वायु, जल, और पृथ्वीसे पैदा हुई गांठें जन्दी पकतीहै ( ३ ) इसके बीजोंका लेप करनेसे कीड़े मरतेहैं ( ४ ) इसके कच्चे फलको सुखा पीस चूनेके आटेमें मिलाकर खिलानेसे या लेप करनेसे कीड़े मरतेहैं ( ५ ) इसके पत्तोंके हिम या फाटते गुदा धोनेसे बच्चोंकी कांचका निकलना बन्ध होताहै ( ६ ) इसकी जड़ बहुत भारी रेचकहै ( ७ ) तेज आमालिसारमें इसके चूर्णकी फकी देतेहैं ( ८ ) इसके बीजोंको पीसकर गर्भाशयके मुख पर लगानेसे बालक मुखसे पैदा होजाताहै ( ९ ) इसके पत्तोंकी टिकिया बनाकर बांधनेसे स्नायु रुकाहिर निफल आताहै ( १० ) इसके गीले पत्तोंको पीस टिकड़ी बनाके विगड़े हुए फोड़ों पर बांधतेहैं ( ११ ) इसके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे जूएँ लीखें आदि कीड़े मरतेहैं ( १२ ) इसके पत्ते, तमाखू और धिन बुझे हुए चूनेको पीसकर जिन पावोंमें कीड़े पड जातेहैं उन पर लेप करतेहैं ( १३ ) इसके फलसे मन्दाग्नि मिटतीहै ( १४ ) इसकी छालका काथ पिलानेसे श्वास मिटताहै ( १५ ) ज्वर छुड़ानेकेलिये इसकी छालका काथ पिलातेहैं ( १६ ) गांठको जन्दी पकानेकेलिये इसके ताजे पत्तोंको पीस लुगड़ी बनाके बांधतेहैं ( १७ ) इसके बीजोंकी-मिर्गीको पीस कपड़ेकी बत्तीमें रख जलाकर उसका धुंआ नाकमें पहुंचानेसे मिर्गीके समय लाभ होताहै ( १८ ) सीताफलके बीजोंको पीसकर शिरमें लगानेसे जूएँ लीखे मर जातीहै ( १९ ) इसके बीज और बेरीके पत्तोंको बराबर ले पीस बालोंकी जड़में मल कर ४ घड़ी पीछे अर्द्धाण्य जलसे धोडालनेसे बाल लम्बे बढ़ते लग जातेहैं।

संख्या ( ५६६ )

( सं० ) सीसकं, नागं, यवनेष्टं, भुजङ्गमम् ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सीसा	सीसा	शीसु	सिसे	सीसा	शीशा	सीसु
द्राचिड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कहनाह	सीसा	रिसामेश्रस्वद	सुवस्याह	Plumbum	Lead	

परीक्षा—सीसा दो प्रकारका होता है एक कुमार और दूसरा समल, इनमें कुमार उत्तम होता है वह रसादिक के काममें आता है। जो सीसा गलनेसे बहुत पतला हो जाय, तोलमें भारी, काटनेमें बहुत उज्ज्वल और बाहिरसे काला हो वह उत्तम होता है।

इसको शुद्ध करने की रीति—( १ ) इस सीसेको गला गलाके आकके दूधमें तीन बेर बुझानेसे यह शुद्ध हो जाता है ( २ ) अथवा खैरके कोयलोंकी अग्निसे इसको गला २ के त्रिफलेके काथमें सातबेर बुझाना चाहिये ( ३ ) अथवा ग्वारपाठके रसमें ७ बेर बुझाना चाहिये ( ४ ) अथवा हाथीके मूत्रमें ७ बेर बुझाना चाहिये।

नागेश्वर बनानेकी रीति—( १ ) १ सेर सीसेको मृत्तिकाके पात्रमें गलाके इम्ली और पीपलकी पाव अंतर छालका चूर्ण उसपर थोड़ा २ बुरकाता जाय और लोहेकी कढ़द्दीसे रगड़ता जाय, ऐसे करते २ जय उसकी मसम हो जाय, तब उसकी बराबर शुद्ध मैनेसिल ले, दोनोंको कांजीसे खूब घोट, टिकिया बना, सुखा, उनको सराव सपुटमें कपड भिट्टीसे बन्दकर, गज भर गढेमें जड़ली कंडोंकी आच देवे, जय स्वाग शीतल हो जाय, तब निकाल कर, उसके उत्तरीतिसे ६० आच देनेसे उत्तम भस्म होती है ( २ ) शुद्ध सीसेके मैनेसिलको नागरवेलके पानमें खरल कर, उस सीसेके पतले सुखा, सराव सपुटमें कपड भिट्टीसे बंधकर, गजपुटमें धरके ५

तल होजानेपर निकाल, फिर बराबर मैनसिल ले, नागरबेलके पानके रसमें खरल कर, टिकिया वनाके उक्त रीतिसे गजपुटकी आंचमें फूंक लेवे इसी भांति ३२ बेर आंच देनेसे उत्तम नागेश्वर बन जाताहै। नागेश्वर बनानेकी और भी कई रीतेंहैं। ( १ ) विना शुद्ध किये हुए सीसेकी भस्मका सेवन करनेसे कुष्ठ, अरुचि, गुल्म, पाण्डु, क्षय, कफ, रक्तविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अशमरी, शूल, भगंदर और प्रमेह आदि रोग पैदा होतेहैं ( २ ) शुद्ध कियेहुए सीसेकी भस्मके सेवनसे क्षय, वातविकार, गुल्म, पाण्डु, भ्रम, कृमिरोग, कफ, शूल, प्रमेह, कास, संग्रहणी, अर्श, मंदाग्नि, जलके विकार और आमवात आदि कई रोग मिटतेहैं। अलग अलग अनुपानके साथ इसका सेवन करनेसे हरेक रोग मिटतेहैं ( ३ ) गिलोयके स्वरस और मधुके साथ अथवा हल्दी आवळे और मधुके साथ दो रती नित्य लेनेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटतेहैं।

सख्या ( ५६७ )

( सं० ) सुधामुली, अमृतोत्था, वीरकन्दः, प्राणदा ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सालममिश्री	सालगमिश्री	"	सालमिथी	सालममिछरी	सालम	"
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		खमियुस्ताल		Eulophia campetris	Salap	

स्थान—सालम-मिश्री, अवध, रुहेलखण्ड, गङ्गाका अंतरवेद पंजाब, सिरोही और राजपूतानेके पश्चिमके भागमें होतीहै।

प्रयोग—( १ ) सालममिश्री-मीठी, कपेली, उष्णवीर्य, विपाकमें भारी और-रसायनहै ( २ ) शरीरको सुखानेवाले क्षय रोग आदि दूसरे रोगोंमें बहुत हितकारीहै और शरीरको पुष्ट करतीहै ( ३ ) बच्चेकी माको इसकी कांजी करके पिलानेसे बच्चा पुष्ट होताहै ( ४ ) शंकराशमरी मिटानेके लिये

इसका प्रयोग करना चाहिये ( ५ ) मिश्रीके साथ, इसकी फकी देनेसे वीर्यकी क्षीणता मिटती है ( ६ ) पुष्टाईकी औषधियोंके साथ इसका अथवालेह बनाकर चटानेसे पुरुषार्थ बढ़ता है और नपुंसकता मिटती है ( ७ ) इसको पीस दूधमें आटाके पिलानेसे आमातिसार मिटता है ( ८ ) सालममिश्री—पचनेमें हल्की है । यह खानेके काममें भी आती है ।

संख्या ( ५६८ )

( सं० ) सुधामूली भेदः । हि० एक प्रकारकी सालममिश्री

E Salep

स्थान—सालममिश्री की यह जात योरूप और उत्तर एशियामें होती है । गीली सालममिश्रीकी "सुगंध तीर्य" जैसी होती है । पंजे की सालम सबसे अच्छी होती है । प्रालुआंको सुखा पीस छान उस आटेको गोंदके पानीसे ओसनकर उसके सालम जैसे दाने बना डालते हैं, उन को नकली सालम कहते हैं । प्रयोग—( १ ) सालम मिश्री ४० गुने पानीको चपदार कर देती है अगर इसमें थोड़ासा सोहागा डाल दिया जाय तो वह जल और भी गाढा हो जाता है । सालम मिश्रीमें शक होती है ( २ ) गीली सालम मिश्रीमें उड़नेवाला तेल होता है ( ३ ) नपुंसकता मिटानेके लिये इसके कई प्रकारके योग बनाते हैं ( ४ ) गीली सालममिश्रीको घुट्टीमें रखनेसे एक प्रकारकी नपुंसकता मिटती है ( ५ ) स्नायुजालकी निरलता मिटानेके लिये सूखी सालममिश्रीके चूर्णकी फकी देना चाहिये ( ६ ) स्नायुजालका बल बढ़ानेवाली दूमरी औषधियोंके साथ इसका प्रयोग किया जाता है । पक्षाघातमें इसका प्रयोग बहुत किया जाता है ( ७ ) लोंग, जायफल, आदि चीजोंके साथ इसको दूधमें मिलाकर पिलानेसे शरीर पुष्ट होता है ।

संख्या ( ५६९ )

( सं० ) सुवर्चिका, सूर्यचारः, तद्विणरसः, ताक्ष्यः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
कलमीसोरो	शोरा	सुरोखार	सोरा		शोरा	सूराकारसु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अंग्रेज़ी
कम्पियुप्पु	कड्डिउप्पु	अवकर	श्योरा	Potassium nitras P Nitrate		Saltpetro Nitro

प्रयोग—(१) शोरा—तीक्ष्ण, अत्यंत उष्ण, रेचक, चरपरा, कड़वा, अग्नि को दीपन करनेवाला, सलौना, सूक्ष्म, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राही, और वातनाशक है (२) कलमीशोरा बहुधा वृक्कमेंसे निकलता है। यह अपने मार्ग में फिल्ली को उत्तेजित करनेके कारणसे मूत्रवृद्धि करता है (३) इसमें पसीना लानेकी शक्ति है इसलिये इससे ज्वरकी ऊष्मा कम होजाती है (४) मूत्रकृच्छ्र और पथरीके रोगोंमें शोरेका प्रयोग करना चाहिये (५) शिरमें जो एक प्रकारका स्नायुका रोग होता है उसको मिटानेके लिये शोरेका पानी शिरपर डालते है (६) ५ से ६ रती शोरा वार २ पिलानेसे तृषा और ऊष्मा कम होजाती है (७) रक्तकी चालकी तेजीको कम करनेके लिये भी ऐसे ही पिलाया जाता है (८) इसको दूधके साथ पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है (९) यह जहरीली छूतको मिटाता है (१०) इसको कबूते तेलमें जलाकर मर्दन करनेसे खुजली मिटती है (११) शोरा और सफेद कत्था पीसकर बुरकानेसे मुँहके बाले मिटते हैं (१२) एक मासे शोरा और एक मासे राईको पीस, उसमें बराबर घृा मिला, दो मात्राकर, दो दिन प्रातःकाल देनेसे मूत्रकी रुकावट मिटती है (१३) शुद्ध कलमीशोरेमें रंगत आजावे जितनी इन्दी मिलाकर अंजन करनेसे जाला, नाखूना आदि नेत्ररोग मिटते हैं और नेत्रोंकी ज्योति बढती है (१४) इसको शिरकेमें पीसकर कनपटी पर लेप करनेसे नकसीर बन्ध होती है (१५) शोरेमें कपडा भिगोकर नाभिके नीचे रखनेसे बन्ध हुआ मूत्र उतरने लगजाता है (१६) २ से १० मासे तक शोरा भोजन क्रिये पहिले खिलानेसे मरा हुआ बालक गर्भाशयमेंसे निकलजाता है। शोरा रंगतके काम में आता है।

संख्या ( ५७० )

( सं० ) सुवर्णम्, कनकम्, हिरण्यम्, हेमम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनो	सोना	सोना	सोने	सोना	सोना	बगारमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	श्रेणी	
तंग	स्वर्ण, चिल्ल	ज़हब	जर, तिला	Aurum	Gold	

( १ ) सुवर्णको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि चिन्ह वर्त्मक मृत्तिका (उदईके बाबलेकी मिट्टी) धूमसा, सोना गैरू, ईट और नमक इन सबको पीस जमेरीके रसमें या कांजी के साथ सुवर्णके पतले पत्रों पर लेप करदेवे, पीछे उनको निर्वात स्थानमें २० छाणोंके बीचमें जुदे २ धर कर आंच लगादेवे । जब ठण्डे होजावें तब निकाल खंटाईके जलसे धोकर, कसौटी पर परीक्षा करे, जबतक कसौटी पर उत्तम सुवर्ण जैसा कस न आवे तबतक इसी प्रकारसे उसका शोधन करे ( २ ) अथवा सुवर्णको गला २ कर कचनारके रसमें तीन घेर बुझा देनेसे सुवर्ण शुद्ध होजाताहै ।

सुवर्ण भस्म बनानेकी रीति—शुद्ध सुवर्णके महीन पत्रे करा उनमें दुंगुना पारा मिला नींबूके रसके साथ घोट उसकी गोली बनाके या टिकड़ी बनावे, उस टिकड़ीके बराबर शुद्ध आमलासार गंधक पीस सरावेमें उस गंधकको टिकड़ी के ऊपर नीचे रख कपडमिट्टीसे बन्द कर, सुखा ३० छाणोंकी आंच दे, ठंडा होने पर सरावेमेंसे उस सुवर्णको निकाल नींबूके रसमें खरल कर टिकिया बनाके सुखादेवे, पीछे उससे दुंगुना शुद्ध गंधक, उसके ऊपर नीचे देकर सरावसम्पुटमें बन्द कर उक्त रीतिसे आंच देवे । इस प्रकार १४ आंच देनेसे सुवर्णकी निरुत्थभस्म होजातीहै । इस भस्मको खानेकेलिये काममें लाना चाहिये ।

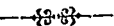
जबतक सुवर्ण भस्मका सेवन करे तब तक ऐसे अन्न और जाकादिक कि जिनका नाम ककारसे प्रारंभहो, ( जैसे कोद्रन, कर्कटी आदि ), उनका



त्याग रक्त्वे । सुवर्ण भस्म सेवन करनेके पीछे जो इन पदार्थोंका सदैवकोलिये त्याग रक्त्वे तो सुवर्णके गुण बहुत समय तक ठहरतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) सुवर्ण भस्म-रूपेती, तिक्त, शीतल और मयुरहै । इसके सेवनसे आयुर्दा, कान्ती, पराक्रम, विषयशक्ति, भोजनकी रुचि, और बुधा बढ़तीहै । श्वास, कास, क्षय, वात, पित्त, प्रमेह, संग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, देहका दुबलापन, विष, उन्माद, रक्तपित्त, अपस्मार, शूल और नेत्र रोग आदि कई प्रकारके रोग मिटतेहैं । रोगी मनुष्य सुवर्ण भस्मका सेवन करे तो उसके रोग नष्ट होजातेहैं, और नीरोग मनुष्य इसका सेवन करे तो उसकी आयुर्दा बढ़तीहै । अशुद्ध सुवर्णकी भस्मका, या सुवर्ण भस्म बनाते समयमें वह कक्षा रहगया हो तो उसका सेवन करनेसे मनुष्यके बल और वीर्य नष्ट हो जातेहैं और शरीरमें कई प्रकारके रोग पैदा होजातेहैं इसलिये सुवर्ण को शुद्ध करके उसकी भस्म बनाना चाहिये ( २ ) जल भंगरेके रसके साथ सुवर्णभस्मका सेवन करनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( ३ ) दूधके साथ लेनेसे बल बढ़ताहै ( ४ ) साठेकी जड़के साथ देनेसे नेत्र रोग मिटतेहै ( ५ ) घृतके साथ देनेसे आयु बढ़तीहै ( ६ ) केसरके साथ देनेसे कान्ति बढ़तीहै ( ७ ) दूधके साथ देनेसे राजयच्चाकी शुष्क खासी मिटतीहै ( ८ ) निर्विषीके साथ देनेसे विष उतरताहै ( ९ ) सोंठ, लोंग और मिर्चोंके साथ देनेसे विदोषका उन्माद मिटताहै ( १० ) आवले और मधुके साथ चटानेसे क्षय सम्बन्धी शोष रोग मिटताहै ( ११ ) शंखपुष्पीके साथ सुवर्णभस्मका सेवन करनेसे आयु बढ़तीहै ( १२ ) विदायी कंदके चूर्णके साथ सेवन करनेसे वीर्यमें बालक पैदा करनेकी शक्ति बढ़तीहै ( १३ ) इसकी भस्मको इलायची, वंशलोचन और मधुके साथ चटानेसे पराक्रम बढ़ताहै ( १४ ) सुवर्णके बरक या भस्मको बच के चूर्ण और मधुके साथ चटानेसे रमण शक्ति बढ़तीहै ( १५ ) ज्वरत्र औषधियोंके साथ सुवर्ण भस्म देनेसे ज्वर छूटताहै ( १६ ) अरइसेके पत्ते और मधुके साथ चटानेसे राजयच्चा ( खैररोग ) मिटताहै ( १७ ) ब्राह्मी, शंखा होली और मधुके साथ चटानेसे उन्माद मिटताहै ( १८ ) काँचबीज आदि पुष्टाईकी औषधियोंके साथ सेवन करनेसे नपुंसकता मिटतीहै ( १९ ) सुवर्णभस्मकी मात्रा दो रती तकहै । सुवर्णभस्मको बच, शंखाहुली और मधुके साथ बालकको

घटानेसे पल, बुद्धि और आयु बढ़ती है और शरीर पुष्ट होता है (२०) सोनेके बरकोंके साधारण गुण ये सत्र प्रकारके विष, शूल, अम्लपित्त, हृदयभी निर्बलता, हृद्रोग, शरीरका दुबलापन; क्षय, व्रण, मदाग्नि, हिचकी, आनाह, कफ और वातरोग आदि कईप्रकारके रोगोंको अलग २ अनुपानके साथ पिटाते है (२१) सोनेके बरकों को शहदके साथ चटानेसे सत्र प्रकारके विष उतरते है परन्तु एक दो बरकसे काम नहीं चलता, इसलिये जबतक विष नहीं उतरे तबतक थोड़े २ समयके अन्तरसे चटाते रहना चाहिये (२२) मक्खन और मिश्रीके साथ सोनेके बरक चटानेसे पित्तके रोग मिटते है (२३) स्नायुजालको बलवान् करनेके लिये बरक काममें आते है (२४) सूर्यके देखनेसे जिसकी दृष्टि विदग्ध होगई हो तो घीके साथ सुवर्ण घिसकर आंखमें अंजन करना चाहिये ।



संख्या ( ५७१ )

( सं० ) सुवर्णमाक्षिकम्, ताप्यम्, मधुधातुः, तापीजम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोनमक्खी	सोनामारुती	सोनामाखी	सोनामुखी	स्वर्णमाक्षिक	सोनेमही	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		मरकशीया		Ferri sulphuretum	Iron sulphuro or sulphuret of iron	

स्थान—सुवर्णमाक्षिक हिन्दुस्थानमें कई ठौर खानोंमेंसे निकलती है ।

पहिचान—रुद्ध काले रंगके पत्थरमें पीतलके रंगकी एक धातु होती है उसको सोनमक्खी कहते है, जिसमें पत्थर कम हो, और यह धातु अधिक हो, वैसे टुकड़े लेने चाहिये । जो सफेदी लिये हुए पीतलके रंगके कुछ घिसे हुए धातुके टुकड़े होते है, और जिनमें पत्थरका मिलाप नहीं होता है उसको रूपमक्खी कहते है । इसको यहां लिखनेका यह प्रयोजन है कि आपधियां बेचनेवाले धातु पा रूपामक्खीको सोनमक्खीकी ठौर दे दिया करते है और अनजान लोग

उसको निर्मल और चमकदार देखकर मोल लेलिया करते हैं।

सोनमक्खीको शोधनेकी रीति—( १ ) तीनभाग सोनमक्खीमें एकभाग सैधानमक मिलाकर नीबू और विजोरेके रसके साथ लोहके पात्रमें इतने समय तक खरल करे कि जबतक वह लाल न होजाय। ( २ ) सोनमक्खीको गलार कर परंडके तेल, विजोरे और केलेकी जड़के रस और त्रिफलेके काथ आदि प्रत्येकमें सात सात वेर वृभावे ( ३ ) सहिजनेकी जड़को पीस उसको अगस्तिके पत्तोंके रसमें घोल उसमें सोनमक्खीको सातवेर वृभावे अथवा नीबूके रसमें सातवेर वृभानेसे सुवर्णमाक्षिक शुद्ध होजाती है।

( १ ) सुवर्णमाक्षिककी भस्म करनेकी रीति:—शुद्ध सोनमक्खीको पीस मिट्टीके खप्परमें डाल, चूल्हे पर चढाकर उसके नीचे आंच जलावे और उसमें नीबूका रस डालकर लोहेकी कुड्यीसे हिलावे ज्यों २ रस जलताजावे त्यों २ उसमें रस डालता जाय और हिलाता जाय जब उसका रंग लाल होजाय तब नीबूका रस डालना, हिलाना और आंच देना बन्ध करदेवे, जब स्वाग शीतल होजावे तब उसको काममें लाना चाहिये।

( २ ) रीति—महीन पीसी हुई सोनमक्खी, तीनभाग सैधानमक एक भाग ले दोनोंको लोहेकी कढ़ाईमें डाल, चूल्हे पर चढाकर उसमें नीबू अथवा विजोरेका रस डालकर लोहेके ढंडेसे घोटता रहे और तीक्ष्णाग्नि देता रहे जब लाल होजाय तब उतार लेवे और स्वाग शीतल होजाने पर काममें लावे।

प्रयोग—( १ ) स्वर्णमाक्षिक-तित्त, और मधुर है। प्रमेह, अर्श, क्षय, कुष्ठ, कफ और पित्तके रोग, पाडु, कामला, विप और इलीमक आदि कई रोगोंको मिटती है ( २ ) इसकी भस्मको मधुके साथ चटानेसे अथवा गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे पित्त प्रमेह मिटता है ( ३ ) अतीसके चूर्णके साथ देनेसे ज्वर छूटता है ( ४ ) पीपल और मधुके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटती है ( ५ ) सौंठके साथ देनेसे अतिसार मिटता है ( ६ ) मधुके साथ इसका अंजन करनेसे नेत्रका शुक्ररोग मिटता है ( ७ ) अशुद्ध सोनमक्खीका सेवन करनेसे मंदाग्नि, अफारा, नेत्ररोग, कुष्ठ, खैन और कुमिरोग आदि बहुतसी व्याधिया पैदा होती हैं।

संख्या ( ५७२ )

( सं० ) सूर्यावर्ता, रविप्रीता, रविक्रान्ता, सौरी ।

मारवाड़ी	हिंदी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलद्री
हुलहुल	हुलहुल	मृयमुलीफुल	तिलवण	हुडहुडिया		
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				<i>Gynandropsis pentaphylla = Citron p</i>		

स्थान-सूर्यावर्त हिन्दुस्थानक उष्ण भागोंमें बहुत होता है ।

ताजी हुल हुल को कूट अर्थात् दरगच कर जल के साथ उस का अर्क खेचनेसे उसका तेल निकल आता है, इस तेलमें लहसन या राई के तेल के जैसे गुण होते हैं ।

प्रयोग—( १ ) ब्रह्म सुवर्चला-उष्ण, लघु, कपेली, सारक और चरपरी है ( २ ) इसके पत्तोंके काथकी ६ तोलेकी मात्रा दिनमें दो बेर देनेसे वाइंट मिटती है ( ३ ) पानीजरेका ज्वर ह्रुडानेके लिये बीजोंके काथकी उतनी ही मात्रा देनी चाहिये ( ४ ) बाला उठानेके लिये इसके पत्तोंका पुन्डिस बाधा जाता है । उस छालेमेंसे बहुतसा मवाद वह निकलता है ( ५ ) इसके बीजोंके चूर्ण की शकरके साथ फकी देनेसे आतोंके कीड़े बाहिर निकल जाते हैं ( ६ ) बीजोंका लेप करनेसे दाह मिटती है ( ७ ) कानके भीतरकी सूजन और पीडा मिटानेके लिये इसके केवल पत्तोंका बिना जलसे निकाला हुआ रस कान में डालना चाहिये ( ८ ) फोडेके ऊपर इसके पत्ते बाधनेसे उसकी सूजन विखर जाती है । इसके पत्तोंको सिरके या नींबूके रस या उष्ण जलमें बाटकर लेप या पुन्डिस बनाके बाधना चाहिये ( ९ ) इसकी जड़का काथ पिलानेसे हल्का ज्वर छूट जाता है ( १० ) दो मासेसे चार मासे तक इसके बीजोंके चूर्णमें बराबर शकर मिलाकर, उसकी फकी प्रभात और संध्याके समय दो दिन तक देकर, तीसरे दिन प्रभातके समय एरंडके तेलकी मात्रा देनी चाहिये, इससे कृमि मरते हैं । बच्चोंको आयुके अनुसार २॥ से १० रती तककी मात्रा देनी चाहिये

( ११ ) इसके पत्तोंके रसको गुणगुनाकर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटतीहै ( १२ ) श्वास सम्बन्धी नालिकाके रोगोंको मिटानेके लिये इसके पत्तोंका स्वरस पिलातेहै ( १३ ) इसके पत्तोंका रस रेचकहै ( १४ ) इसके पत्तोंको ठंडाईकी तरह घोट छानकर पीनेसे और उनका फोक बांधनेसे उपदंश मिटताहै ( १५ ) इसके पत्ते और काली मिरच प्रत्येक बराबर ले, पीस, काली मिरचके बराबर गोलियां बनाकर एक एक गोली तीन दिन तक देनेसे शीतज्वर छूट जाताहै ( १६ ) इसकी जब कानमें बांधनेसे भूतज्वर छूटताहै ( १७ ) इसके पत्ते और लहशुनको पीस टिकिया बनाके बांधनेसे गलगंड फूट जाता है और वहकरके साफ हो जाताहै ( १८ ) इसके १७ मासे-बीजोंको पीस कर खिलानेसे संघ प्रकारके विष उतरतेहै ( १९ ) इसके रसमें सैधानमक, मधु, और कड़वा तेल मिला, उष्णकर कानमें डालनेसे कानकी शूल मिटतीहै। इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै।

संख्या ( ५७३ )

( सं० ) सेवम्, सिवितिकाफलम्, सेविफलम्, सुष्टिप्रमाणवदरम्।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
सेव	सेव	शेव, सेव	सेवफल	सेउफल	सेव	
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		बुफफाइ	सेव	Pyrus Malus, P. Communis	Apple	

स्थान—सेवके वृक्ष हिमालय, पंजाब, सिन्ध, संयुक्त प्रदेश, मध्य हिन्दुस्थान और दक्षिण आदि देशोंमें होतेहैं।

पहचान—इसका वृक्ष ३० फुट ऊंचा होताहै इसके पत्तोंके नीचेके अन्त का भाग सफेद रूपदार होताहै, इसके पुष्पोंका रंग सफेद होताहै और उनमें लाल धींटे होतेहैं। इसके फलका रंग हरा पीला और लाल होताहै, इसके कच्चे फलका स्वाद खट्टा या फीका होताहै और पकने पर मीठा होजाताहै।

फूलने फलने का समय—फागुनसे वैशाख तक इसके पुष्प लगते हैं अथाठसे भादों तक फल पकते हैं ।

प्रयोग—(१) सेव-ठंडी, रम और पाकमें मीठी, रोचक और पचनेमें भारी होती है, वात और पित्तको मिटाती है और नीरोगताको बढ़ाती है (२) अन्य फलोंकी अपेक्षा इसका फल सुगमतासे पचता है यह-वीर्य और कफको बढ़ाती है (३) इसके खानेसे शरीर पुष्ट होता है और रुधिर शुद्ध होजाता है (४) सेव खानेसे मुखका स्वाद सुधरता है गलेका पीडा मिटती है, और मस्तिष्ककी शक्ति बढ़ती है क्योंकि इसमें फासफोरिक एसिडका तत्व अधिक है (५) अफीम खाने या मदिरा पीनेका व्यसन छुड़ानेके लिये-इसका प्रयोग अच्छा है (६) निद्रा नाशवाले को सेव खिलाना चाहिये (७) बृक्की पीडावालेको सेव खिलाना लाभकारी है (८) पोस्तके काथमें सेवका शर्वत मिलाकर पीनेसे रक्तातिसार मिटता है (९) सेवके रसमें आधी मिश्री डालकर शर्वत बनाते हैं। शर्वतकी २ तोलेकी मात्रा देनी चाहिये (१०) इसके पानी में ४ रती कपूर मिलाकर पिलानेसे विच्छूका विष उतरता है जो इससे न उतरे तो आव २ घंटेके अन्तरसे २-३ बेर पिलाना चाहिये (११) सेवका फल खानेके काम में आता है (१२) इसका मुरब्बा बनाते हैं (१३) इसका मुरब्बा खानेसे हृदय और मस्तिष्कका बल बढ़ता है (१४) इसके शर्वतमें ब्राह्मीका चूर्ण मिलाके चटानेसे पित्तान्माद मिटता है (१५) पित्तान्माद मिटानेके लिये इसके मुरब्बा खिलाना चाहिये (१६) पके हुए सेवके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे सूखी खासी और मूर्च्छा मिटती है (१७) कच्चे सेवके रसमें सेंधा नमक मिलाकर पिलानेसे वमन बन्ध होती है (१८) इसके टुकडेको मुहमें रखनेसे तृषा मिटती है (१९) इसको पीसके लेप करनेसे आलकी पित्तकी पीडा मिटती है (२०) जो सेव नटा मिले तो इसकी ठौर बीहको काममें लाना चाहिये (२१) कच्ची सेव ग्राही है और अतिसारको मिटाती है (२२) इसके पत्तोंको ओटाकर पिलानेसे विच्छूका विष उतरता है (२३) बहुत सेवके खानेसे जो उपद्रव हो जाते हैं उनको मिटानेके लिये गुलकंद खिलाना चाहिये अथवा टालचीनी शहदमें चटाना चाहिये ।

संख्या ( ५७४ )

( सं० ) सैधवं, नादेयं, सिन्धुजं, माणिमन्थम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सोडोलूण	सीधानॉन	सिंधालूण	शेधेलोण	सैधवलवण	सैधानमक	सैधवलधणमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
सैधवलवण	सैधवलवण			Soda chloridum Chloride of sodium	Rock or Biv salt	

यह नमक सफेद और गुलाबी रंगके भेदसे दो प्रकारका होता है । इसको लाहोरी नमक भी कहते हैं ।

प्रयोग—( १ ) यह—पाचन, दीपन, रोचक, स्निग्ध, सूक्ष्म, पचनेमें हल्का, विपाकमें मधुर, हृदय और नेत्रोंको हितकारी है । त्रिदोष, घण, और विषको मिटाता है और पुरुषार्थको बढ़ाता है ( २ ) इसको गुट्टामें रखनेसे बद्धकोष्ठ और मूत्रकी रुकावट मिटती है ( ३ ) इसकी सलाई बनाकर नेत्रोंमें फेरने से जाला कटता है ( ४ ) इसमें दुग्धनी मिश्री मिला पीस कज्जल बनाके अञ्जन करनेसे मोतियाबिन्द और जाला आदि मिटजाता है ( ५ ) श्वास रोग मिटानेके लिये पहिले दिन दो मासे सैधानमक पीसकर सोते समय शहदकी साथ चाटे, ऐसे नित्य आध २ मासे बढ़ाते हुए ६ मासे तक बढ़ाले इसको ऊपर पानी न पीवे, जो तृषा लगे तो कुछ गुनगुना पानी पीना चाहिये ( ६ ) २ मासे सैधानमकको तीन तोले गौ घृतके साथ घटानेसे सर्पका विष उतरता है ( ७ ) सैधे नमकको पानीमें मिलाकर नस्य लेनेसे हिचकी बन्ध होजाती है ( ८ ) घृतमें सैधा नमक मिलाके पीनेसे वातसे पैदा हुई वमन मिटती है ( ९ ) मधुके साथ सैधानमकका अञ्जन करनेसे नेत्रका शुक्ररोग मिटता है ( १० ) इसका अञ्जन करनेसे दातोंका कुदपन मिटता है ( ११ ) गायका गोबर और नॉन मिलाके लेप करनेसे जल पर कम होजाता है ( १२ ) नॉन और सफेद बुरा बुरावर लेके फकी लेनेसे चोटकी पीडा मिटती है ( १३ ) नॉन और मुदासंगको पीसकर लेप करनेसे बन्दरके विषकी शान्ति होती है ( १४ ) सैधा नॉन और हरडके

चूर्णकी नित्य फर्षी लेनेसे अग्निदीपन होतीहै (१५) ८ मासे सेधे नमकको तोले गो घृतमें मिलाकर चटानेसे विषैल जीत्रांका विष उतरताहै ।

संख्या ( ५७५ )

( सं० ) सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरा, द्विजप्रिया -

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
सोमलता	सोमलता	सोमलता	सोमवल्ली	सोमलता	सोमलता	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Sarcostemma brevis, var Asclepias acida	The Moon plant	

इसके सिवाय तीन जाति+ सोम यौर मिलतेहै उनको भी हिन्दुस्वात वाले इन्ही नामोंसे पुकारतेहै अपने २ अलग देशी नाम नहींहै ।

प्रयोग—( १ ) सोमलता-रूडवी, चरपरी, रसायनी, शतिल, और भीठीहै। त्रिदोष, पित्तदाह, वृषा और शोधको मिटातीहै ( २ ) गर्भोंके खेतमें जो सफेद कीड़े लगजातेहै, उनको मारनेके लिये सोमलताको काममें लानेकी यह रीतिहै, कि इसकी टहनियोंकी पूली घुनाके, उसके भीतर एक डाटके भी डूँह-नमककी थेली बांधके, कुएकी मोरीमें रखदेतेहै, कि जिसमें होके खेतमें पानी जाया करताहै ( थेलीको नमकमे गाड़ी परके दूध बांधनेका प्रयोजन यहहै कि यह नमक धीरे २ गलजावे ) उस पानीमे कीड़े मरजातेहै और खेतीको हानि नहीं पहुंचतीहै ( ३ ) इसके पोधेमें बहुतसा दूधिया रस निकलताहै वह वृषा कम करनेके लिये पिलाया जाताहै ।

संख्या ( ५७६ )

( सं० ) सौराष्ट्री, सुराष्ट्रजा, काजी, स्तुत्या ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
गोपीचन्दन	गोपीचन्दन	गोपीचन्दन	गोपीचन्दन		सौराष्ट्रमट्टी	सैगधिकुम्भ



द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
					Silicate of alumina

गुण—( १ ) गोभीचन्दन-शीतल और दाहनाशक है। अणु, विष, विसर्प, रुधिर विकार, पित्त, कफ और प्रदररोगको मिटाता है ( २ ) इसका पेटपर लेप करनेसे गिराता हुआ गर्भ स्थिर होजाता है ( ३ ) इसको पानीमें छान शकर मिलाकर पीनेसे प्रदर मिटाता है ( ४ ) फोड़े फुन्सी पर इसका लेप करते है।

संख्या ( ५७७ )

( सं० ) सौवर्चलं, रुचकं, हृद्यगंधकं, कृष्णालवणम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
सचललूण	कालानोन	सचल(ळ)	सचळलूण	सचलळवण	कालानमक	गल्लअट्टुपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
सूरुतउत्पु	सूरुतउत्पु			Unaqua sodium chloride		

गुण—( १ ) यह चरपरा, उष्ण, रेचक, पचनेमें हल्का, दीपन, और विशद होता है। विवंध, आनाह, शूल, गुल्म, कृमि, आमकी शूल और अरुचि को मिटाता है।

संख्या ( ५७८ )

( सं० ) स्नुही, सुधा, समन्तदुग्धा, सेहुराडः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
थोर	युहर	कटालोथोर	निवडुग	मनसागाछ	दण्डेथोहर	जेमुडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कल्लिमर	कल्लिमर			Daphnoria nerifolia E. ligularia E. Lirncalli	Milk hedge Milk bush or Indian tree spurge	

स्थान—दंदाधुहरके वृत्त हिन्दुस्थान और बंगाल आदि कई देशोंमें होते हैं।

पहिले स्थान—इसकी ऊंचाई २० फुटकी होती है, इसकी पेदङ्की मध्यरेखा एक फुटकी होती है। वसंत ऋतुमें इसके पत्ते गिर जाते हैं, फागुन और चैतमें नये पत्ते निकल आते हैं। इसके हरेक भागमें दूध होता है।

इसको ओटानेसे गोंद निकलता है।

फूलने फलने का समय—माघ और फागुनमें इसके पुष्प लगते हैं।

प्रयोग—(१) थूहर—चरपरा, कड़वा, उष्ण, तीक्ष्ण, दीपन, सारक, और गुरुह (२) इसका दूधिया रस या इसके दूधमें दूसरी औषधियोंको भिगोके खिलाने पिलानेसे विरेचन होता है। इसका दूध—उष्णवीर्य, स्निग्ध, रसमें चरपरा और लागु है—कुष्ठ, गुल्म, और उदररोग वालेके लिये इसका विरेचन बहुत उत्तम है (३) हृद्द, पीपल और निसोत आदि रेचक औषधियोंको इसके दूधमें भिगोके खिलानेसे तीव्र विरेचन होके जलंधर, सूजन और अफारा मिटता है (४) इसकी जड़को काली मिरचके साथ पिलानेसे और दंशपर लेप करनेसे सर्प का विष उतरता है (५) इसका दूध लगानेसे मस्ति और त्वचाके फोड़े फुन्सी मिटते हैं (६) जिस मनुष्यको पागल कुत्ता काटा हो उस के बहकनेके पहिले थूहरके डढेकी गिरी और अदरकको मिलाकर देनेसे उसका विष उतरता है (७) थूहरके रसकी कुछ बूँदें कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है (८) थूहरके रसमें चिराकके काजलकी खरल करके अजन करने से आखका दुखना और गीठ आना बन्ध हो जाता है (९) इसके अन्तके कोमल डंडोंको आगमें गर्मकर उनका रस निकाल उसमें गुड़ मिलाके पिलाने से बच्चेको वमन और विरेचन होकर खासी मिटती है (१०) इसको मक्खन या घीमें मिलाकर विगडे हुए फोड़ोंपर लगाना चाहिये (११) खुजली भिया दानेके लिये थूहरके रसको घीमें मिलाके मर्दन करना चाहिये (१२) पेशियों की सूजन पर इसका दूध लगानेसे सूजन बिखर जाती है। और पकती नहीं है (१३) इसका दूध हिलते हुए दांत पर लगानेसे वह दांत सहजसे गिर जाता है। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि इसका दूध दूसरे दांतके नहीं लग जाय (१४) थूहरका खार बनाके खिलानेसे कफ और श्वास मिटता है

(११५-) थूहरके दूध और पियाजके अर्कमें महीन कपड़ेको तीन-चर-भिगो २ और सुखा २ के अलसीके तेलमें ८ पहर रखे इन्दीका शिर वचाकर उसपर मक्खन लगीके उस कपडकी पट्टी इन्दीपर ४ घड़ी तक बंधी-रखा कर खोल डालनेसे इन्दी पुष्ट होती है जो आवश्यकता हो तो फिर भी ऐसेही उसकी पट्टी बांधे और रात्र समय कपड़ेको अलसीके तेलमें भीगा रखे (११६) इसकी जड़को लाल सूतसे कमरमें बाधनेसे अतिसार मिटता है (११७) हन्दीके चूर्णके इसके दूधकी कई बेर भावना देकर उसको घाधनेसे भगंदर और अर्श मिटते है।

संख्या (५७६)

( सं० ) कन्थारी, दुर्धर्षा, दुष्प्रवेशा, तीक्ष्णकंटका

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलुगु
नागफनीथार	नागफनी थुहर	दाथलोथोर	फडीचिनि वटुग	फनिमनसा	नागफनी	नागजमडू
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
शप्पातकलि	पापासकलि			Opuntia Dillenii Cactus indicus	The prickly pear	

स्थान—नागफना थुहर हिन्दुस्थानमें बहुत और पैदा होता है।

पहिचान—इस वृत्तकी ऊंचाई १०-५ फुट होती है। इसके पत्ते जिनकी पंजा कहते है ६ से ६ फुट लम्बे होते है। इसके लाल छीटाके पीले पुष्प लगते है, वे केवल दिनमें खुलते है रात्रिमें नहीं खुलते है।

प्रयोग—(१) इसके पत्तोंको कूट सुकित्स वनाके बाधनेसे दाह और पित्त शोथ मिटती है (२) कूकरधासीवालेको इसका फल सेकके विलाना चाहिये (३) इसके फलका शर्वत दिनमें तीन-चार बेर पोने चार-२ मासे पिलानेसे पित्तकी थैलीमेंसे पित्तका निकाल अढ़ता है (४) इसके दूधकी १० चूद शक्करमें मिलाके देनेसे विरेचने होता है (५) इसका पका फल खानेसे मूत्रका रंग लाला होजाता है (६) इसके फलके पीने चार मासे शर्वतमें

चन्दनको तेलफली १५ घूद डालके पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( ७ ) फोड़ेको जल्दी पकानेके लिये इसके पत्ते गर्म करके खसपर बांधना चाहिये ( ८ ) इसके पत्तेका गुदा आखपर घावनेसे आखका दुखना मिटता है ( ९ ) इसके पत्तोंके सुण्डिसको गर्म करके घावनेसे ममूडोंके असाध्य रोग मिटते हैं ( १० ) इसके दूधका विरेचन देते हैं ( ११ ) स्नायुन पर इसके पत्तोंकी गिरका सुण्डिस बांधते हैं ( १२ ) इसका फल मोतीजसा होता है वह शान्ति पैदा करने वाला और स्वा के काममें आता है ।

संख्या ( ५८० )

( सं० ) त्रिधारस्तुही, त्र्यस्रः, धारास्तुही ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	अंगाली	पंजाबी	तैलशी
तिधारीधूर	तिधाराधूर	तरधारीधूर	तिधारीनिवडुग			मूडधारजेमुडु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मुकीणकालि	मूत्रमूलेकालि	जकूमहिदा		Euphorbia antiquorum		

स्थान—तिधारा धुहर हिन्दुस्थानके सूखे पहाड़ोंमें कई ठौर मिलता है ।

पहिचान—इसकी त्रिखूटी त्रिधारी और पचधारी डालियां होती हैं । इसके बहुत छोटे पत्ते लगते हैं; किसीके नहीं भी लगते हैं ।

प्रयोग—( १ ) इसका दूध पिलानेसे विरेचन होके कमरका दर्द मिटता है ( २ ) गुठियांकी पीडा मिटानेके लिये इसको सृजन पर लगाना चाहिये ( ३ ) इसके दूधमें रुईका फीया भिगो उसका घीमें जला कर डाढ़में रखनेसे उसका दर्द मिटता है ( ४ ) इसके दूधको किसी औषधिक साथ खिलाने पिलानेसे तीक्ष्ण विरेचन होके जलधर मिटता है ( ५ ) इसके दूधमें तेल सिद्ध करके कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता है ( ६ ) स्नायुन पीडा मिटानेके लिये इसके दूधका लेप करते हैं ( ७ ) इसकी जड़ और हीगकी पीस कर पेट पर लेप करनेसे बच्चेकी आंतोंके भीतरके कड़े भरजाते हैं ( ८ ) इसकी जड़की

छालको ओटाकर पिलानेसे विरेचन होता है (९) इसकी टहनियोंकी ओटाके पिलानेसे छोटे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है (१०) इसके रसमें अरट्टसेके पत्तोंकी पीस छोटी गोली बनाके चूसनेसे खासी मिटती है (११) इसके ताजे रसका लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है (१२) इसके ताजे रसमें फुलाया हुआ सोहागा और नमक मिलाके लेप करनेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है, और सूजन उतरती है (१३) विरेचनकेलिये इसके दूधकी बहुत थोड़ी मात्रा देनी चाहिये (१४) सर्प का विष उतरनेकेलिये भी इसका प्रयोग किया जाता है (१५) जिस घरकी छत पर तिधारी थुहरके गमले पड़े रहते हैं उस पर विजली नहीं गिरती है ।

संख्या ( ५८१ )

( सं० ) सातला, ससला, भूरिफेना, विडुला ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
एकजात कोथौर	सातला	साथेर	निवहुगाचे-भट्ट	*	"	सम्बरेनु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	नीरुवाञ्जि	"			Marjoram	

स्थान—सातला, हिमालय में कश्मीर से सिक्किम तक और शिमले में होता है ।

प्रयोग—सातला—लघु, तिक्त, तीक्ष्ण, कषेला, सारक, रेचक, शीतल और पाकमें चरपरा है ( २ ) इसमेंसे एक प्रकारका उडनेवाला तेल निकलता है, वह सुगंध युक्त, उत्तेजक और बलवर्द्धक होता है । इस तेलकी ५ बूंद १॥ मासे गुडमें मिलाके खिलानेसे पेटकी शूल मिटती है ( ३ ) आमकी गुठलीको सेक उसकी गिरके दो मासे चूर्णमें इसके तेलकी ५ बूंद डालके देनेसे साधारण अतिसार मिटता है ( ४ ) एक रती सेकी हुई हींगको इसके साथ चटानेसे स्त्रियोंके आवेशके रोगका वेग मिटता है ( ५ ) इसके तेलका मर्दन करनेसे

\* मनसाविशेष, बडिलसोनूली

पुरानों गठिया मिटती है (६) इसके तेलमें फोया तर करके डाढ़में रखनेसे डाढ़की पीड़ा मिटती है (७) इसकी बूंदे कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा मिटती है (८) इसको वालों पर लगानेसे बाल बढ़ते हैं। इसके पत्तोंका शाक बनाया जाता है।

संख्या ( ५८२ )

(सं०) स्फटिका, वृढरजा, शुभ्रा, रंगदा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
फिटकड़ी	फिटकड़ी	फटकी	फटकी	फट्किरी	फिटकिरी	पटिकारसु
द्राविड़ी	फर्नाटकी	भरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
पटिकार	पटिकार	जान, शिव	जाफसफेद	Hydrargyrum sulphuratum	Alum Vitriol white	

स्थान—फिटकड़ी—विहार, कच्छ और पंजावमें बनती है। यह सफेद, पीली, लाल, गुलाबी और कालेरंगकी होती है। इसको बनाते समय इसमें जिस प्रकारका मल रह जाता है उसी प्रकारके रंगकी हो जाती है। प्रयोग—(१) फिटकड़ी, कडवी, चरपरी, कपेली, खट्टी, लेखन, ग्राहीणी, स्निग्ध और उष्ण है। कुष्ठ, ब्रण, प्रदर, विष दोष, मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष, भ्रमेह, वमन और त्रिसूचिका को मिटाती है (२) इसको फुलाकर सुंघानेसे नकसीर, वन्ध हो जाती है (३) इसका मंजन करनेसे सड़े हुए दांतोंकी पीड़ा मिटती है (४) पानीको शुद्ध करनेके लिये इसकी डली उसमें रख देते हैं (५) इसके कुप्रे करनेसे गुलेकी गाँठें मिटती हैं (६) फुलाई हुई फिटकड़ीका लेप करनेसे त्रिन्धुका विष उतरता है (७) नाभ टलजानेके बाद जो नाभि में फोड़ा हो जावे तो जलाई हुई फिटकड़ीका उसपर लेप करनेसे लगानेसे ज्वदी मिट जाता है (८) फुलाई हुई एक मासे फिटकड़ीमें तीन मासे, दूरा मिलाकर ४ पुड़ी बनावे, दो, २ घंटेके अंतरसे एक एक पुड़ी देनेसे छातीमेंसे रुधिरका आना बन्ध हो जाता है (९) गर्भपात होनेके पीछे गर्भाशयमेंसे दूषित रक्त आदि

को पूरा निकालनेके लिये और रुधिर बन्ध करनेके लिये, फिटकड़ीका प्रयोग इस प्रकारसे करना चाहिये, कि फिटकड़ीको महीन पीसकर, मलमलकी थैली में एक अखरोट या बड़ी गोली जितनी पोटली बना उसके एक डोरा बांध, पोटलीको गर्भाशयके मुंहके पास चौबीस घंटे तक रख देवे, जो उस समयमें बहां सुजली और दाह नहीं होवे तो उस पोटलीको फिर २४ घंटे तक रहने देवे, इससे जितना उपद्रवी रुधिर आदि मल होगा, वह गर्भाशयमेंसे निकलके योनीके मुख तक भर जायगा, उसको मुगमतासे निकालदेवे ( १० ) फिटकड़ी और बंधूलकी छालके काथकी पिचकारी देनेसे आम्रातिसार मिटता है ( ११ ) नींबूके रसके साथ फुलाई हुई फिटकड़ीका लेप करनेसे आखकी पीड़ा मिटती है ( १२ ) कुचाधांसीके लिये फुलाई हुई फिटकड़ीकी ५ से १० रती तककी मात्रा दिन में तीन बेर देना चाहिये ( १३ ) ढाईरती फिटकड़ीकी फकी देनेसे अतिसार मिटता है ( १४ ) अफीमके साथ फिटकड़ीकी फकी देनेसे पुराना अतिसार मिटता है ( १५ ) दो रती फिटकड़ीको ढाई तोले गुलाब जलमें पीसके कुछ घंटे आखमें डालनेसे आखकी ललाई और गीढोंका बहुत आना मिटता है ( १६ ) पावभर मीठे दहीमें एक मासे फिटकड़ी डालके खिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है। इसके खानेकी यह रीति है कि पाहिले दहीमें एक ठौर फिटकड़ी डाल के उसके ऊपर थोडासा दही ढककर फिटकड़ी सहित दहीको एक ग्रासमें खाकर फिर बाकीका दही ऊपरसे चाटजावे और गेहूंकी अलूणी रोटी और दालमें सैधा नमक और कालीमिरच डालकर खावे ( १७ ) फुलाई हुई फिटकड़ीकी एक मासे तककी फकी लेके ऊपर दूध पीनेसे पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १८ ) एक तोलेभर फिटकड़ीको सेर भर जलमें ओटाके कुल्ले करानेसे मूंह से लालका गिरना बन्ध होता है ( १९ ) मुखपाक मिटानेके लिये फिटकड़ी और चमेलीके पत्तोंको ओटाकर कुल्ले कराने चाहिये ( २० ) झुनी हुई फिटकड़ी और गैरू, दोनों घराघर ले, उसमें दुगुनी मिश्री मिला, ७ मासेकी फकी गायके दूधके साथ लेनेसे सुजाक मिटता है ( २१ ) ७ मासे फिटकड़ीको जलमें पीसकर पिलानेसे सर्पका विष उतरता है ( २२ ) थूहरकी लकड़ीको पोली कर उसमें फिटकड़ी भर, कपड़ मिट्टीसे बन्धकर कंदोंकी आगमें जला, स्वांगशीतल होनेपर निकाल उसमेंसे दो रतीकी मात्रा पानमें रखकर देनेसे श्वास

और कास मिटता है ( २३ ) फिटकड़ीको फुला उसमें घरावर माजूफलका चूर्ण मिलाकर बुरकानेसे धुंरके छाले मिटते है ( २४ ) एक मासे फिटकड़ी दो मासे अलसीको वाट पोतली बना पानीमें भिगो २ कर नेत्रों पर फेरनेसे नेत्रपीड़ा मिटती है ( २५ ) दो भाग फिटकड़ी और एक भाग नौनको पीसकर मंजन करनेसे दांत दृढ़ होते है ( २६ ) एक तोले फिटकड़ी और ६ मासे मोचरसको आधसेर पानीमें थोटा आधा पानी रखके कुल्ले करनेसे दांतोंकी पीड़ा मिटती है और दांत दृढ़ होते है ( २७ ) घावके मुर्दार मासपर फुलाई हुई फिटकड़ी बुरकानेसे घाव भर जाता है ( २८ ) फिटकड़ीको कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तंभन होता है ( २९ ) भुनी हुई फिटकड़ीमें घरावर मिश्रीका चूर्ण मिलाके एकसे ६ मासे तक फकी देनेसे कफ और श्वास मिटता है ( ३० ) भुनी हुई फिटकड़ी और पीजाबोल घरावर ले मधुके साथ पत्ती बनाकर कानमें रखनेसे कर्णपीड़ा मिटती है ( ३१ ) एक तोले फिटकड़ीको ४ तोले घीमें भूने जब वह घीमें जम जावे तब ऊपरके घीको लेकर उस घीका खाद और मैदाके साथ इलुवा बनाकर उसमें उस फिटकड़ीको रखके तीन दिन खिलानेसे चोट और शरीरमें रुधिरका जमाव धिखर जाता है ( ३२ ) फिटकड़ीको पानीके साथ पीसकर मलनेसे बगल गंध मिटती है ( ३३ ) योनी में इसके पानी की पिचकारी देनेसे प्रदर और उसका टीलापन मिटता है ।

संख्या ( ५८३ )

( सं० ) स्वर्जिकः, सुखार्जिकः, सुखवर्चकः, स्वर्जिजचारः ।

भारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
साजी	सज्जी	साजीखार	सज्जीखार	साजिमाटी	सज्जी	सज्जिकारमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
सज्जीकारं	सज्जीखार	कला, किलि	अजगार शखार		Barilla. Carbonate of soda	

सज्जी दो प्रकारसे बनती है एक वह है कि जहा पृथ्वी फूल जाती है वहा की मिट्टीमेंसे सज्जी निकाली जाती है । ( २ ) कई दृष्टियोंकी भस्मीमेंसे सज्जी



निकाली जाती है।

प्रयोग—( १ ) सजी—चरपरी, उष्ण, तीक्ष्ण, गुल्मनाशक, और अग्निवर्द्धक है कृमिरोग, आध्मान, उदरकी वातपीडा खट्टी डकारें और अम्ल-पित्तको मिटाती है ( २ ) साजीखार और जौखार बराबर ले पानीसे पीस पीपवाले फोड़े पर लेप करनेसे उसका मुंह सुख जाता है ( ३ ) सजीको महीन पीस मधुके साथ मलनेसे बिच्छूका त्रिप उतरता है ( ४ ) सजी और चुनेकी कलीको बराबर ले पीसके श्वेत दागपर लगावे जब सुखजाय तब गाढ़े वस्त्रसे छील फिर दूसरी बेर लगावे ऐसे कई बेर लगानेसे उस जगहकी त्वचा अलग होके वहां एक दाग पैदा होगा उसपर मीठा तेल मलनेसे वहाकी चमड़ी अपने रंगकी होजाती है ( ५ ) काच ढालते वक्त जो मैला पीछे रहजाता है उसको वागड़ खार कहते है इसीको साफ करनेके पीछे सूरतीखार कहते है। यह खार कृमिरोग, आध्मान, उदरकी वात पीडा, मिटाता है।

संख्या ( ५८४ )

( सं० ) स्वर्णक्षीरी, पटुपर्णी, हैमवती, पीतदुग्धा।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	कर्नाटकी
सत्यानाशी	सत्यानाशी	दारुडी	पिसोळा	सने, खिरह	सत्यानासी	त्रिकणिकेयभेद
द्राविडी	तैलंगी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन		अग्रेजी
				Argemone mexicana,		The Mexican or prickly poppy

स्थान—सत्यानासीके लुप बंगालसे पंजाब तक, पंचमहल और मारवाड़ आदि बहुतसे देशोंमें होते है।

पहिचान—इसका २-२ फुट ऊंचा लुप कटेलीकी जातका होता है। इसके पत्ते फल और शाखा आदि सब अंग पर काटे होते है, इसका पत्ता या टहनी तोड़नेसे पीला दूध निकलता है। इसके पीले रंगके पुष्प लगते है। इसका फल एक सा डेढ इंच लम्बा होता है, उसमें काले बीज निकलते है। इसकी जड़को मारवाडीमें "चोक" कहते है।

इसके बीजोंमें से एक प्रकारका पीला, साफ, और पारदर्शक तेल निकालता है। इसको खुला पड़ा रखनेसे यह सड़ जाता है, बीजोंमेंसे जब तेल निकाला जाता है-तब गदला होता कुछ दिन पड़ा रहनेसे उसके नीचे सफेद गाद बैठ जाती है और तल नितर कर साफ और चमकदार होजाता है, इसकी गरमसे कुछ जी, मचलाता है। परन्तु बहुत बुरा दुर्गंध नहीं आती है। इसका स्वाद कुछ चरपरा होता है - १. इस तेलकी परीक्षा यह है कि इसमें शोरेका तेज तिलानमिलानेसे इस तेलमें नारंगियां लाल रंग पैदा होजाता है। यह तल जलानेके काममें भी आता है।

प्रयोग—( १ ) इसके पंचांगका हिम या फाट पिलानेसे मूत्रवृद्धि होती है ( २ ) मूत्रनालीकी टाढ़ मिटानेके लिये इसका फाट पिलाते है ( ३ ) ( ४ ) रगड़से छिली हुई चमड़ी पर इसका हिम लगानेसे घाव भर जाता है ( ५ ) इसके बीज अहिफेनकी अपेक्षा अधिक मादक, नींद, लानेवाले, अचेत करनेवाले और वामरु है ( ६ ) आमाशयकी या अंतडियोंकी शूल मिटानेके लिये इसके तेलकी ३० से ६० बूंदें तक खाडमें डालके देना चाहिये। इससे शूल आदि बंध-होकर, रोगीको बहुत अच्छी निद्रा आजाती है ( ७ ) इस तेलकी इस मात्रासे नल खुला जाता है अर्थात् बद्धकोष्ठ मिटजाता है ( ८ ) आमातिसारमें मलका रूच-होनेके लिये इसके तेलकी ३० से ६० तक बूंदें खाडमें डालके फका देते है ( ९ ) किसी ३ को-१५ से ३० बूंदेंही सारक हो जाती है। बाजारमें इसका असली तेल नहीं मिलनेसे उसका असर ऐसा नहीं होता है ( १० ) इसके पंचांगका कूटकर अर्क निकालते है वह सारक होता है ( ११ ) इसका दूब या रस देरीसे अच्छे होनेवाले ब्रणोंकी अच्छा करता है ( १२ ) तिलोंके तेलमें सत्यानाशीका तेल मिला उससे बनाया हुआ पदार्थ भोजन करनेसे विमूचिकाके जैसे वमन और विरेचन होने लग जाते है ( १३ ) इसके बीजोंकी ४ मासेसे ६ मासे तक फकी देनेसे श्वासका रोग बढने नहीं पाता है ( १४ ) श्वास रोग मिटानेके लिये इसके तेलकी बूंदें खाडमें डालकर फकी देनी चाहिये ( १५ ) इसके असली ताजे तेलकी २५ बूंदोंसे और पुरानेकी ३५ बूंदोंसे विरेचनके ५ से १०—१२ वेग हो जाते है। जुलाफा, खंड मेकी और एरंडके तेलसे यह तेल विरेचनके लिये इस वास्ते अच्छा है कि

इसकी मात्रा बहुत थोड़ी है और जमाल गोटेके तेलसे भी यह तेल इस वास्ते अच्छा है कि जमाल गोटेके तेलका स्वाद चरपरा, जीमचलानेवाला और बुरा होता है। इसके स्वादमें ये दोष नहीं हैं। विरेचनके लिये इसका तेल देनेमें दो दोष हैं। पहिला यह है कि इससे सब मनुष्योंको विरेचनके वेग बराबर नहीं होते हैं, किसीको ३—४ ही होते हैं और किसीको १५—१६ हो जाते हैं। इसका दूसरा दोष यह है कि इसके असरके प्रारम्भमें ही वमन हो जाती है परन्तु बहुत भारी नहीं होती, कि जैसे जमाल गोटेके तेलसे, अथवा और किसी विरेचनसे, जैसे बहुत बुख दायक उपद्रव और निर्बलता हो जाती है वैसे उपद्रव और निर्बलता इससे नहीं होती है ( १६ ) इसके पीले रसको घीके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र मिटता है ( १७ ) इसके तेलकी ३० बूंदें मासे भर सोंठके साथ देनेसे शूल मिटती है ( १८ ) इसका अर्क लगानेसे उपदंशकी टाकियां, पांव और खुजली आदि रोग मिटते हैं ( १९ ) इसकी जड़ ( चोक ) के ४ मासे चूर्णकी फकी देनेसे पेटमेंसे पिटाट निकल जाती है ( २० ) बिना अग्निसे निकाले हुए इसके तेल और इसके पीले अर्कका गुण खुजलीमें एकसा होता है ( २१ ) इसका अर्क लगानेसे विगडे हुए पुराने फोडे साफ हो जाते हैं ( २२ ) इसके अर्कको आखमें लगाने में बड़ी सावधानी रखनी चाहिये ( २३ ) इसका तेल लगानेसे मस्तकपीडा मिटती है ( २४ ) जिस चर्म रोगमें फुन्सियां होके फैलती जाती हैं उनके भी इस तेलको लगानेसे लाभ होता है ( २५ ) सांभरे नौनमें इस तेलकी बूंदें डालकर जल परके रोगीको फकी देते हैं ( २६ ) गिलोय के रसमें इसके तेलकी बूंदें डालके पिलानेसे कामला रोग मिटता है।

संख्या ( ५८५ )

( सं० ) स्वर्णपत्री, कल्याणी, स्वर्णमुखी ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तेलुगु
सनाय	सनाय		सोनामुखी	सोनामुखी	सनामकी	
सोनामुखी					सरना,	

द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
		सना	सना	Cassia angustifolia C lanceolata	Senna, Country senna Indian or Tinnerelly senna

स्थान—सनायके वृक्ष सिन्ध, गुजरात, पंजाब, दक्षिण हिन्दुस्थान, संयुक्त प्रदेश और बंगई आदि हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें बोये जातेहैं।

पहिचान—इसकी एक सींकके ५ से ८ तक जोड़े पत्तोंके लगतेहैं। इसके पत्तोंका आकार इम्लीके पत्तों जैसा होताहै परंतु लम्बाई और चौड़ाई में ये उनसे कुछ बड़े होतेहैं। इसकी फलिया लम्बी, थोड़ी चौड़ी और कुछ मुड़ी हुई और दोनों ओर गोल किनारोंकी होतीहैं। इसके पत्ते सावित, साफ, कुछ चमकदार, पीलापन लिये हुए हरे या पीले और बहुत सुगंधवाले होतेहैं।

प्रयोग—( १ ) इसकी न्यूनाधिक मात्रा लेनेसे साधारण और तीक्ष्ण विरेचन होताहै। अलग्जेट्रियन सोनामुखी टिन्नेवल्ली सोनामुखीसे अधिकगुणकारीहै और टिन्नावली को अरब और मक्काकीसे अधिक गुणकारीहै ( २ ) इसका काथादिक लेनेसे जो पेटमें एंठन, मरोड़ी और दाह पैदा होतीहैं उसको मिटानेके लिये उनमें बादामका तेल डाल देतेहैं। अथवा सनायके पत्तोंको पानमें रख चायके निगलजानेसे उक्त उपद्रव नहीं होतेहैं ( ३ ) सनायके २॥ तोले पत्ते जौकूटकी हुई सांठ और लॉग हरेक ३॥।।। मासेको ओटते हुए २५ तोले पानी में एक घंटे भिगो मल छानकर ३॥।।। तोलेसे ५ तोले तक बढ़कोष्ठचालेको पिलानेसे निरुपद्रव और उत्तम रेच होताहै। बच्चेकी आयु और बल देखके इसकी आधी या कम मात्रा देनी चाहिये ( ४ ) ब्वरमें इसका काथ पिलातेहैं ( ५ ) सनायका हिम, फांट या काथ पीनेके पीछे २० या ३० मिन्टमें मूत्र खाल या सुनहरी होजाताहै ( ६ ) नये बच्चेको रेच करानेके लिये उसको दूध पिलानेवाली धायको सोनामुखी किसी रीतिसे देनेसे उस के दूधपर असर होके बच्चेको जुल्लब लग जाताहै ( ७ ) इसके हिम, फांट या काथ को पिचकारी द्वारा रुधिरमें मिला देने विरेचन होताहै ( ८ ) इसका विरेचन लेनेसे शरीर सम्बन्धी उपद्रव मिटतेहैं ( ९ ) इसका हिम पीनेसे आम बहुत निकलतीहै और पेटमें एंठन बहुत होतीहै ( १० ) पेटकी आम

निकालनेके लिये सोनामुखीका हिम, फाट या काथ पिलाना चाहिये ( ११ ) इसके हल्लास पैदा करनेवाले स्वाद और गुणसे अतोंमें मठोठी और कुब्ज दाह पैदा होनेके कारणसे बहुतसे मनुष्य इसको काममें कम लातेहैं । इसके साहित साफ चमकदार चन्दनियां हरे या पीले और भारी सुगंधवाले पत्ते काममें लाने चाहिये ( १२ ) सोनामुखीको खाड़के साथ लेनेसे पित्त मिटताहै ( १३ ) गुड़के साथ देनेसे निर्वलता मिटतीहै ( १४ ) शकरके साथ देनेसे वीर्य वृद्धि होतीहै ( १५ ) घृतके साथ देनेसे नीरागता बढ़तीहै ( १६ ) नौनके साथ लेनेसे मस्तिष्क के रोग भिटताहै ( १७ ) तक्रके साथ लेनेसे ज्वर भिटताहै ( १८ ) बकरीके दूधके साथ लेनेसे शरीर पुष्ट होताहै ( १९ ) लरड़ीके दूधके साथ देनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( २० ) ऊटनीके दूधके साथ लेनेसे मस्तककी वायु पीडा मिटतीहै ( २१ ) आमलीके पत्तोंके रसके साथ लेनेसे शीताग भिटताहै ( २२ ) लवंगके साथ लेनेसे ऊर्द्धश्वास मिटताहै ( २३ ) गायके घीके साथ लेनेसे पुरुषार्थ बढ़ताहै ( २४ ) जलभंगरेके रसके साथ लेनेसे केश काले होतेहैं ( २५ ) ब्यालीके मूत्रके साथ देनेसे पेटकी शोथ उतरतीहै ( २६ ) ढाकके रसके साथ लेनेसे मुखकी दुर्गंध मिटतीहै ( २७ ) काली बकरीके दहीके साथ लेनेसे विष उतरताहै ( २८ ) अनारदानेके रसके साथ लेनेसे छातीकी रुकावट ( इजा ) मिटताहै ( २९ ) आवलोंके रसके साथ लेनेसे कोढ़ और जलंधर मिटताहै ( ३० ) अदरकके रसके साथ लेनेसे अजीर्ण मिटताहै ( ३१ ) पीपलकी ब्यालके साथ खिलानेसे स्त्री की छोड़ गिरजातीहै ( ३२ ) दाखके रसके साथ लेनेसे नेत्रों की ज्योति बढ़तीहै ( ३३ ) जंगली आवलोंके रसके साथ लेनेसे ऊर्द्धश्वास मिटताहै ( ३४ ) निर्गुडीके रसके साथ देनेसे वाय और चित्तभ्रम मिटताहै ( ३५ ) नीमके पत्तोंके रसके साथ देनेसे श्वेत कोढ़ मिटताहै ( ३६ ) बचके साथ खानेसे वाय गौला मिटताहै ( ३७ ) पीपलके साथ लेनेसे शीताग भिटताहै ( ३८ ) खाड़के पानीसे या विजौरके रसके साथ लेनेसे जुधा बढ़ताहै ( ३९ ) अनारके रसके साथ लेनेसे टाह मिटतीहै ( ४० ) खाड़ और सोंठके साथ देनेसे वादी मिटतीहै ( ४१ ) ताजी कच्ची आमलीके रसके साथ देनेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै ।

संख्या ( ५८६ ),

हजारदाना ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलंगी
	छोटीझुंधी			दूधिया	हजारदाना	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		फाशरा	हजारफिश	<i>Euphorbia thymifolia</i> L. <i>foliata</i>		

स्थान—हजारदाना हिन्दुस्थानके बहुतसे भागोंमें होताहै ।

प्रयोग (१) इसके पंचांगका रस तीत्र, रेचकहै (२) इसके सूखे पत्ते और बीज सुगन्धयुक्त चरपरे और ग्राहीहै (३) बच्चोंके अतिसार और आमालि-सारमें मूत्रके साथ पत्तोंके चूर्णको देतेहै (४) यह—उत्तेजक और सारकहै (५) इसके अर्कका लेप करनेसे दाह मिटतीहै (६) इसकी डंढी और पुष्पों का रस तीत्र विरेचकहै (७) इसके गीले पंचांगको पीसके घावपर लेप कर-तेहैं (८) बच्चोंके पेटके काँडे मारनेके लिये और अतिसार मिटानेकेलिये इस के पत्ते और बीजोंकी फकी देतेहै (९) इसकी जड़को घोट ब्यानकर पिलाने से श्वेत और रक्तप्रदर मिटतेहैं ।

संख्या ( ५८७ )

हरमल ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पजाबी	तैलंगी
ईसबद	हरमल	इसप	हरमल	इसबंद	इसबंद लाहारा	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
		हरमुल	ईसबद	<i>Peganum Harmala</i>		

स्थान—हरमलके वृक्ष पश्चिमोत्तर हिन्दुस्थानमें सिन्ध पंजाब और

कश्मीरसे दहली आगरा दक्षिण-हिन्दुस्थानके पश्चिम भाग तक होते हैं ।

पहिचान—यह गुल्म १ से ३ फुट ऊंचा होता है इसके बीजोंमेंसे लाल रंग निकालाजाता है । इसके बीजोंमेंसे तेल निकलता है ।

प्रयोग—( १ ) हरमल—रुधिर शुद्ध करनेवाला, पुरुपार्थ और दुग्ध-वदानेवाला है ( २ ) पित्तके रोगोंमें इसका प्रयोग बहुत लाभकारी है ( ३ ) इसके बीजोंको पानीमें इतनी देर तक ओटावे कि उनका काय गाढा हाजावे तब उसको छान तिल्लीका तेल और मधु मिलाकर सदासे पैदा हुए पक्षाघात और कमरकी स्नायुपीड़ा पर मर्दन करते हैं ( ४ ) इसके बीज मादक और विपैल है ( ५ ) इनके प्रयोगसे ज्वर छूटता है ( ६ ) इसके पत्तोंको ओटाके पिलानेसे गठिया मिटती है ( ७ ) इसकी जड़को पीस सरसोंके तेलके साथ वालों पर लगानेसे जुएँ लीखें मरती है ( ८ ) इसके पत्तोंके काथसे मासिकधर्म शुद्ध होने लगता है ( ९ ) इसके पत्तोंका काथ पिलानेसे आंतोंके कीड़े मरते हैं ( १० ) इसके पंचांगमें इसके बीज अधिक गुणकारी हैं । ये—वाइटे और वाडीकी पीड़ा को मिटाते हैं, इनसे हल्लास और वमन होती है ( ११ ) श्वास द्विचकी स्त्रियोंके आवेशका रोग, गठिया, मूत्राशय और पित्तकी पथरी, शूल, कामला, कष्टसे मासिकधर्मका होना और स्नायुपीड़ा इन सब रोगोंमें इसके बीजोंका यथोचित प्रयोग करनेसे मिटते हैं और इनसे निद्रा आती है ( १२ ) इसके बीजोंको कपड़ें छानकर शीशीमें बन्ध करके धर रक्खें उसमें से २ मासेसे धीरे २ बढ़ाते हुए ७॥ मासे तक आवश्यकतानुसार बढ़ावे-इतनी मात्रा बढ़ानेसे हल्लास और वमन होने लगजाती है ( १३ ) रोगीके पास इसकी धूनी देनेसे दृष्टिदोष और भूतादिकके आवेशका भय नहीं रहता है ( १४ ) इसका काथ पिलानेसे श्वास मिटता है ( १५ ) विपुचिकावालेके पास इसके पंचांगकी धूनी देते हैं ( १६ ) जिन ब्रणोंमें पीड़ा हुआ करती हो उनके और उपदशके ब्रणोंके इसके बीजोंकी धूनी देनी चाहिये ( १७ ) इसके बीजोंकी धूनीसे हवा शुद्ध होता है ( १८ ) जिस मकानमें घाववाला रोगी सोता हो उसमें बहुधा इसके बीजोंको जलाना चाहिये ( १९ ) इसके बीजोंको तेलमें जला उस तेलको छानकर घावपर लगाते हैं ॥

संख्या ( ५८८ ) ( सं० ) हरितालं, आलं, नटमण्डनं, पीतकम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हरताल	हरताल	हरताल	हरताल(ळ)	हरिताल	हरताल	हरिदळमु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
अरिदंळ	हरिदाल	अरणीख		Yellow sulphidum arsenicum	Orpiment Yellow arsenic Yellow sulphide of arsenic	

पहिचान—हरताल आठ प्रकारकी होती है, उनमें से तीन प्रकारकी हरताल यहां मिलती है ( १ ) गोदती ( २ ) तबकिया और ( ३ ) मिटिया, इनमें से तबकिया और गोदती औषधी के प्रयोगके काम में आती है, गोदती हरताल कुछ गुगली सफेद रंगकी होती है और उसके अन्नकके जैसे पत्रे होते हैं ( २ ) तबकिया हरताल—चमकदार पीले रंगकी होती है, इसके भी पत्रे होते हैं परन्तु वेसे पीले नहीं होते जैसे कि अन्नक और गोदतीके होते हैं।

हरताल को शुद्ध करने की रीति—हरतालके छोटे छोटे टुकड़े कर कपड़ेकी थैलीमें बन्धकर काँजीके बीचमें लटकाके एक पहर तक स्वेदन करना चाहिये, फिर इसी रीतिसे पेटेके रस अथवा इसके काथ, तिलोंके तेल, और त्रिफलाके काथमें क्रमसे हररुमें एक एक पहर तक स्वेदन कर पीछे गायके दूधमें चार पहर तक स्वेदन करना चाहिये।

हरताल भस्म करने की रीति—( १ ) शुद्ध की हुई हरतालको साठे फ रसमें एक दिन खरलकर टिकिया बनाके सुखा लें, फिर साठेकी राखसे एक हंडीको आधीभर उसमें हरतालकी टिकिया रखकर उसपर फिर साठेकी राख मुहत्तक ढाटके भर दें। उसके ५ दिन तक लगातार आंच लगावे जब स्वाग शीतल हो जाय तब उस टिकियाको निकालके फाममें लावे। ( २ ) शुद्ध हरतालको पीपलकी जड़की अतर छालके काथमें खरलकर टिकिया बना सुखा पीपलकी राखके बीचमें हाडीमें रखके ५ दिन तक लगातार आंच देनेसे भस्म हो जाती है।



मानक रस बनाने की रीति—(१) हरतालके टुकड़ोंको अन्नकके पत्रपर विद्या ऊपर दूसरा पत्र देकर उसको कोयलोंकी अग्नि पर रख उसके ऊपरभी कोयलोंकी अग्नि रख देवे और थोड़ा दवा देवे, जब उसमेंसे पीला धुआं निकलने लगे और हरताल पिगलके सब ठौरसे लाल रंगकी होजावे तब अग्निमेंसे भोदलके पत्रोंको निकाल उनपर जमी हुई हरताल खुरच लेवे। इसका रंग माणिक जैसा लाल हो जाता है। (२) अथवा ३.पड़ मिट्टी की हुई कच्ची शीशी में हरतालके टुकड़े भर कर कोयलोंकी आचेके बीचमें रख देवे, जब उसमेंसे पीला धुआं निकलने लगे तो उसके ऊई की डाट देदेवे और थोड़ी २ देरमें लोहेकी सलाईसे जाच लेवे कि जमतक सब हरताल पिघलकर लाल रंगकी न हो जावे तबतक उसको आंच में रहने देवे जब सब हरताल पिघल कर लाल रंगकी हो जावे तब उसशीशीको अग्निमेंसे निकाल फोड़के उसको निकाल कर काममें लावे। हरताल भस्मकी परीक्षा यह है कि लोहेकी पत्तीको अग्निमें लाल कर उस पर हरताल भस्मको डालकर देखे जो उसमेंसे धुआं निकले तो जानना कि हरताल भस्म कच्ची रह गई और जो धुआं न निकले तो जानना कि हरताल भस्म अच्छी होगई। निधम हरताल भस्म काममें लाना चाहिये।

प्रयोग—(१) अशुद्ध हरतालके दोष—अशुद्ध हरतालके सवनसे आयुर्दा घटती है, कफ और वात सम्बन्धी रोग, प्रमेह, दाह, ज्वर, शरीरका संकोच आदि कई रोग पैदा होते हैं (२) शुद्ध हरतालके सवनसे कांति और वीर्य बढ़ता है, कुष्ठ आदि त्वचाके रोग, कफ, खांसी और श्वास आदि कई रोग मिटते हैं (३) यह कटु, स्निग्ध, उष्ण और कृपेला है (४) आध चांवले से एक रत्ती तक हरताल भस्मको आंवा हल्दीके साथ देनेसे अपस्मार मिटता है (५) इसको समुद्रफलके साथ देनेसे जलंधर मिटता है (६) बिटालके रसके साथ देने से भृगंदर मिटता है (७) मधुके साथ चटानेसे उपदेश मिटता है (८) चोवचीनीके चूर्ण और मधुके साथ चटाने से गठियां मिटती हैं (९) गिलोयके काथके साथ देने से वातरक्त मिटता है (१०) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटता है (११) आधी रत्तीस एक रत्ती या डेढ़ रत्ती तक माणिक रस पानमें रखकर खिलानेसे शीत ज्वर का आना बन्ध हो जाता है (१२) इलायची, वशलोचन और माणिक रसको मधुके साथ

चटाने से फफू और कास मिटता है ( १३ ) कूठ और मधुक साथ माणकरस चटानेसे श्वास मिटता है ( १४ ) पीपल और मधुक साथ माणकरस चटानेसे मंदाग्नि मिटती है ( १५ ) सोंठ और जायफलके घासेके साथ देनेसे अतिभार मिटता है ( १६ ) हरतालको गोमूत्रमें पीसकर कानमें डालनेसे कानकी दुर्गन्धि मिटती है और कीड़े मरते हैं ( १७ ) हरताल और हींगको सादी चावलके पानीमें पीसकर लेप करनेसे विन्छूका पिप उतरता है ( १८ ) आठ मासे हल्दी के साथ एक रती हरताल भस्म लेनेसे उभरा हुआ कोढ़ मिटता है ( १९ ) ८ मासे हरद और ८ मासे वायविडंगके साथ हरताल भस्म देनेसे सफेद कुष्ठ मिटता है ( २० ) ८ आठ मासे वापची और ८ मासे सोहागेके साथ इसकी एक रती मात्रा लेनेसे कोढ़ मिटता है ( २१ ) आठ मासे अइसा और ४ मासे बचके साथ इसको लेनेसे पांडुरोग मिटता है ( २२ ) पौडके रसके साथ इसको लेनेसे भगंडर मिटता है ( २३ ) ४ मासे शंखाहलीके साथ इसकी भस्म लेनेसे अपस्मार मिटता है ( २४ ) हरतालका तेल बनानेकी रीति—एक सर हरताल के टुकड़ोंकी कपड़ेकी थैलीमें बांधकर ५ सर तेलमें चारपहर तक मंदाग्निसे आधावे पीछे उस थैलीमेंसे पावे भर हरताल निकाल महीन पीसकर या उसी तेलके साथ खरल करके उस तेलमें डालकर उसको काचकी शीशीमें भरकर खाम लगाके धूपमें २१ दिन तक रख छोड़े इस तेलके लगानेसे खुजली, पाव, फोड़े, फुन्सी और दाद आदि त्वचाके रोग मिटते हैं ( २५ ) पावे भर तेलको अग्नि पर चढा जब वह लाल होजाय तब उसमें आधपाव दरगची हुई हरताल थोड़ी २ डलिके लकड़ी से हिलावे जब तेल हरा होकर जलन लगे तब ढक देनेसे उसकी ज्वाला बुझ जाती है फिर इसी भाति ४ बेर उसको उघाड़े और जल उठे तब ढक देवे फिर उसको ठंडा होनेपर शीशीमें भरके रख छोड़े इस तेलको खुजली आदि त्वचाके रोगों पर मलकर थोड़ी देर तक धूपमें बंध जाय और गर्म पानीसे स्नान करले ।

सख्या ( ५८ )

( सं० ) हरिद्रा, पीतिका, गौरी, दीर्घरागत

मरिवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	मराठी	तैलकी
हलदी	हलदी	हल्दर	हल्द	हरिद्रा	हलदी	पसुपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
मजल	अरिसिन	टरुकुस्तुफ	जदचावाह	<i>Curcuma longa</i>	<i>Jurmeric</i>	

स्थान—इसके पाषेहिन्दुस्थानमें बहुतसे पहाड़, जंगल और खेतमें बोये जाते हैं।

इसमेंसे पीला रंग निकाला जाता है।

प्रयोग—(१) हलदी—कपली, कड़वी, खुरी, उष्ण, उत्तेजक और शोधनी होती है पाह, पीनस, प्रमेह, अपची, पित्त, त्वग्दोष कटु, कुष्ठ और कृमिरोगको मिटाती है (२) सूजन और रगड़पर इसका लेप किया जाता है (३) रुधिर शुद्ध करनेके लिये इसका खाने पीनेका प्रयोग किया जाता है (४) जोरके डकका रुधिर बंध करनेके लिये उस पर हलदीका चूर्ण दुरकाते है (५) हल्दीकी ताजी गांठमें रस निकालकर पिलानसे आतक कीड़े मारते है (६) हल्दीके काथको गाढा करके शिरपर लेप करनेसे जुकाम मिटता है (७) आंखों पर लेप करनेसे ललाई फट जाती है और पीप बन्ध होजाता है (८) इसके पुष्पाको पीस कर लेप करनेसे दाद और त्वचाके कृमिसंबन्धी रोग मिट जाते है (९) हल्दीका धुआं नाकमें चढ़ानेसे जमा हुआ पानी आदि दुष्ट पदार्थ बहके मतिरयाय मिटजाता है (१०) इसमेंसे बहुत सुगंधयुक्त तेल निकलता है वह उत्तेजक होता है (११) हलदीके २ मासे चूर्णकी फकी देनेसे खांसी मिटती है (१२) बिच्छू फंदाशपर हलदीकी धुनी देने और तपानसे विष उतरता है (१३) भुवल, चक्र और मस्तकपाड़ा मिटानेकेलिये ताजी हलदीको पीस मस्तक और ललाटपर लेप करते है (१४) इसका ताजा रस ढंढा है (१५) नाकमें हलदीकी भांगली देनेसे स्त्रियोंके आघेशका वेग मिटता है (१६) फिटकड़ीका बीसवा भाग हलदी ले दोनोंको पीसके बुरकानेसे कानका वहना बन्ध होजाता है (१७) हलदी और चूनेको रगड़के त्वावपर लेप करते है, इससे दाहसहित शोथ त्रितर जाती है

और पीडा मिटजाती है ( १८ ) इसका लेप करनेसे या इसके काथदिकसे धोनेसे घावके कीड़े मरजाते हैं ( १९ ) प्रतिश्यायके मारम्भमें भोंगलीद्वारा हलदीका धुआं रातको नाकसे पीकर कुछ घंटातक उसके ऊपर जलआदि कोई पदार्थ नहीं पीना चाहिये, इससे प्रतिश्याय तुरत मिटजाता है ( २० ) निवाये दूधपर हलदी और कालीमिरचका चूर्ण बुरकाके पीनेसे ज्वरसहित प्रतिश्याय मिटता है ( २१ ) खुजलीआदि त्वचाके दूसरे रोगोंमें हलदीका लेप करना चाहिये ( २२ ) कपड़ेको हलदीके पानीमें रगकर दूखती हुई आखके सामने लटकता हुआ बांधते है ( २३ ) यकृतके रोगोंमें हलदीका प्रयोग किया जाता है ( २४ ) एक तोले हलदीके चूर्णको चार तोले दहीके साथ चटानेसे कामला रोग मिटता है ( २५ ) हलदी और ऊटके मँगनोंको आटाकर उस काथको गाढ़ा करके लेप करनेसे अंडकोपकी सूजन उतरती है ( २६ ) घावपर हलदी बुरकानेसे वह जल्दी भरता है ( २७ ) हलदीको पानीके साथ पीसकर जो पीडा दहनी और हो तो घाई और और बाई और हो तो दहनी औरके कानमें टपकानेसे मस्तरूपीडा मिटती है ( २८ ) हलदीको महीन पीस कपड़ेमें धरकर जिस दातमें पीडा होती हो उस दातके नीचे रखनेसे दंतपीडा मिटती है ( २९ ) बत्तीपर हलदी और घीका लेपकर उसको गर्भाशयके मुंहतक पहुंचानेसे गर्भाशयकी सूजन उतरती है ( ३० ) हलदी और तिलोंको खलको पीसकर लगानेसे मकड़ी का विष उतरता है ( ३१ ) गुड़ डोले हुए साठके काथ पर हलदीका चूर्ण बुरकाके पीनेसे मद्दशर्करा मिटती है ( ३२ ) हलदी और दाढ़ हलदीका काथ पीनेसे पिष्ट मगह मिटता है ( ३३ ) इसके काथ या कल्कमें ८ तोला गोमूत्र मिलाकर पिलानेसे पामा मिटती है ( ३४ ) हलदीको गुड़में गीली बनाकर गोमूत्रके साथ लेनेसे श्लेष्मिद कुष्ठ और दाढ़ मिटते है ( ३५ ) सूतके डारेके हलदीके रस और धूरके दूध को सात २ भाविना देकर उससे अशको गाढ़ा बांधनेसे खिर जाता है ( ३६ ) साठ तीन मासे हलदी और एक मासे सजीको पीसकर छोट बरकी घराबर गोलियां बना दोनों समय एक २ गीली खानेसे खासी मिटती है ( ३७ ) हलदी और आंबल दोनों समान भाग ले पीस खान उसमें घराबर नूरा मिला कर एक तोले फकी नित्य पानीके साथ ७ दिन तक देनेसे नया मूत्रकृच्छ मिटता है ( ३८ ) हलदी और तिलोंको पीस मुखपर मलने से मुखकी आड़े दूर होती है ।

संख्या ( ५६० )

( सं० ) कपूरहरिद्रा, सुरभिदारुः, आम्रगन्धा, पद्मपत्रा ।

मौरवादी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
आम्बाहलदी	आम्बाहलदी	आम्बाहळदर	आम्बेहळद	आमआदा	+	कस्तूरिपसुपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
कस्तूरिमजल	*			Ourcuma Amada	Mango ginger	

स्थान—आम्बाहलदी बङ्गालमें बहुत होती है ।

पहिचान—जब इसकी गाठ ताजी होती है तो उसमें कैरी जैसी गंध आती है ।

फूलने फलने का समय—वर्षा ऋतुके पिछले आधे भागमें इसके पुष्प लगते हैं ।

प्रयोग—( १ ) आम्बा हलदी—शीतल, वृष्य, वातल, मीठी, कड़वी, रोचक, लघु दीपन और सारक है ( २ ) इसका लेप उस रोगमें किया जाता है कि जिसमें चमड़ी मोटी पड़ जाती है उसका रंग पलट जाता है और खजली बहुत चलती है ( ३ ) इसकी ३॥ मासेसे ७॥ मासे तक फकी देनेसे पेटका अफारा मिटता है ( ४ ) काले नमकके साथ इसकी फकी देनेसे पेटका दर्द मिटता है ( ५ ) इसकी साँठके साथ फकी देनेसे पाचनशक्ति बढ़ती है ( ६ ) रगड़ और मोचपर इसका लेप करते हैं ( ७ ) नमकके साथ इसके चूर्णकी फकी लेनेसे सूखी खासी मिटती है ( ८ ) इसको तेलमें ओटाकर गठियापर लेप करते हैं ( ९ ) इसके चूर्णकी मिश्रीके साथ फकी देनेसे सूखी खासी मिटती है ( १० ) साँठ और जायफलके साथ इसका घिसकर पिलानेसे अतिसार मिटता है ( ११ ) भिलाषके धूपस पेदा हुई सूजनको मिटानेके लिये आम्बाहलदी साठीचावल और दूबको बासो पानीके साथ पीसकर मलना चाहिये ।

संख्या ( ५६१- )

( सं० ) दारुहरिद्रा, कटंकटेरी, पर्जन्या, पंचपत्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
दारुहलदी	दारुहलदी	दारुहळदर	दारुहळद	दारुहरिद्रा	दारुहलदी	मानुपमुपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
गरमजल (ळगरदश्चानीसिन)				Barberis aristata	Barberry	

स्थान—दारुहळदीके वृक्ष हिमालयम भूटानसे कनावार तक और नीलगिरी और सीलोन आदि देशोंमें होतेहैं ।

परिचान—इसका भाड़ सीधा काटेदार होताहै । इसकी जड़ और शाखाओंसे पीला रंग निकाला जाताहै । इसके बीजोंमेंसे तेल निकाला जाताहै ।

फूलने फूलने का समय—चैत वेशाखमें इसके पुष्प लगतेहैं ।

प्रयोग—( १ ) दारुहळदी-कड़वी, चरपरी, सूखी, उष्ण और व्रणनाशकहै ( २ ) बच्चोंको इसके फलका ठठा विरेचन दियाजाताहै ( ३ ) इसकी टहनियोंको ओटाके पिलानेसे पत्तीना और विरेचन होके गठियाकी पीडा मिटतातीहै ( ४ ) इसकी जड़का सूखा सत्त बच्चोंको विरेचनके लिये बहुत दिया करतेहैं ( ५ ) दूखती हुई आंख पर इसके सत्व का लेप करतेहैं ( ६ ) सूर्यके देखनेसे जो आंखकी ज्योति घटजाया करतीहै वह इसके लेपसे ठीक हो जातीहै ( ७ ) इसकी जड़की छीलमें बहुतसा कड़वा सत्व होताहै इसलिये चारोंसे अनेगाले ज्वरको छुटानेके लिये काममें आतीहै ( ८ ) यह तिसर्गी और अतिसर्गी ज्वरकी बहुत उत्तम औषधिहै ( ९ ) ज्वर छुटने के पीछेकी निश्चलता-मिटानेके लिये इसकी जड़के छालके चूर्णको प्रयुक्त साथ चटाना चाहिये ( १० ) इसकी जड़की छालको गुड़के साथ ओटाके पिलानेसे पेटकी शूल मिटतीहै ( ११ ) इसकी जड़की छाल और सांठ बराबर ले चूर्ण बनाके दिनमें दो तीन बेर फकी देनेसे अतिसार मिटताहै ( १२ ) इसके फलके काथके गड़्य कगनेसे शीताद रोग मिटताहै ( १३ ) इसकी जड़ों भी इसकी

जड़की छालके समान गुण है। ज्वरको रोकने और उतारनेमें यह कुनैनकी घरा  
 वर है ( १४ ) इसके प्रयोग से शोथयुक्त ज्वर छूटता है ( १५ ) निरंतर रहने  
 वाले ज्वरमें इसका काथ पिलानेसे। वह ज्वर उतर २ के आने लगता है और  
 अन्तमें उसका आना बन्द होजाता है इसको लगातार देनेसे न तो स्नायुकी  
 जड़में किसी प्रकारका दबाव पहुंचता है और न आमोशय, आंतें, मस्तिष्क और  
 सुननेकी इंद्रियोंमें कोई प्रकारका विकार होता है जैसे कि कुनैनके लगातार  
 देनेसे होजाया करता है ( १६ ) इमका २-२ तोला काथ, ज्वरकी बारीके दिन  
 २, ३ घंटेके अंतरसे दिनमें दो तीन बेर देनेसे बहुत पसीना आके ज्वर छूटजाता है।  
 अथवा जलके साथ इसकी जड़के चूर्णकी दो बेर फकी लेनेसे भी ऐसीही  
 गुण होता है। ज्वरकी बारीके बीचके दिनोंमें और ज्वर छूटनेके पीछे ४-५ दिन  
 तक इसका चूर्ण या काथ थोड़ा २ लेते रहना चाहिये ( १७ ) दूषित वायु  
 आदिसे जो ज्वर हुआ हो, अथवा जंगलका ज्वर हो और जो कुनैन संखिये आदिके  
 प्रयोगसे न छूटता हो वह इसका चूर्ण या काथ देनेसे छूटजाता है। इसकी टहनियों  
 में ज्वर छुड़ानेकी वैसीही शक्ति है कि जैसी इसकी जड़में है। इसका काथ बनाने  
 की यह रीति है, कि इसकी १५ तोले जड़को दरगच कर एरुसेर ६ छटांऊजलोंमें  
 मंद आंचसे आटावे, जब १० छटांऊ रहजावे, तब उसमेंसे ५ तोले से १५ तोले तक  
 पिलाना चाहिये ( १८ ) इसका सत ( रसोत ) बनानेकी यह रीति है कि इसकी  
 जड़को कूट पानीमें आठपहर तक भिगोरुं ह बन्द किये हुए बरतनमें मंद आंचसे  
 आटावे, जब उसका काथ गाढा होजाय तब उसको मलकर छानलेवे, फिर उस छने  
 हुए काथको बालूके यंत्रपर चूदाके, मंद आंचसे उसको बहुत गाढ़ा करके उतारलेवे।  
 इसको रसोत कहते हैं। रसोत और अफीमको नीबूके रसमें घिसकर लेप करनेसे  
 आंखकी पीड़ा मिटती है ( १९ ) भरे नींगले फोड़ेपर रसोतका लेप करते हैं ( २० )  
 जिसकी तिल्ली या यकृत बढ़गया हो उसको इसकी जड़की छालका काथ पिलाना  
 चाहिये ( २१ ) इसके फाटमें मधु मिलाकर प्रातःकाल पिलानेसे कामला रोग  
 मिटता है ( २२ ) इसके काथमें गोमूत्र मिलाकर पीनेसे अर्धवृद्धि मिटती है ( २३ )  
 कपीले और इससे सिद्ध किये हुए तेलके लगानेसे व्रण जन्दी भरते हैं ( २४ )  
 आंखोंके रसमें इसका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

संख्या (-५६२)

( सं० ) वनहरिद्रा, शोली, वनारिष्टा, शोलिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
जंगलीहलदी	वनहलदी	वनहळदर	रानहळद	वनहरिद्रा	जंगलीहलदी	अडविपसुपु
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
		जदवार		Curacuma aromatica C Zedoaria	Wild turmeric Cochin Turmeric Yellow Zedoary	

स्थान—जंगली हल्दी बहुधा बंगालमें होती है ।

पहिचान—उष्णकालमें इसके नवीन पत्ते और पुष्प लगते हैं । इसके पुष्पोंमें बड़ी सुगंध होती है । यह हलदी रगतके काममें आती है । पहिले इसकी अचीर बनाई जाती थी ।

प्रयोग—( १ ) जंगली हल्दी—चरपरी, कडवी, अग्निदीपन, और मीठी है ( २ ) मोच और रगडपर दूसरी औषधियोंके साथ इसका लेप करते हैं ( ३ ) तबकिया हरताल, कूठ और अजवानके साथ इसकी गोली बनाके देनेसे सर्पका विष उतरता है ( ४ ) खुजली और गाताकी फुन्सियों पर इसका लेप करते हैं ( ५ ) लोहवानके साथ इसको पीस उष्णकर ललाटपर लेप करनेसे मस्तकपीडा मिटती है ( ६ ) इमको पीस गर्मकर ललाटपर लेप करनेसे स्नायुसम्बन्धी मस्तकपीडा मिटती है ( ७ ) इसका धूआं पीनेसे पेटकी पीडा मिटती है ।

संख्या ( ५६३ )

( सं० ) हरिद्रुः, कदम्बकः, पीतकाष्ठः, सुराहः ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बङ्गाली	पंजाबी	तैलङ्गी
	हलदिवा	हळदरवा	हळदिवावृत्त			
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Adina cordifolia Nauclea c		



स्थान—हलादिवाके वृक्ष बहुते करके हिन्दुस्थानके तर देशोंमें होतेहैं। जैसेकि रतनागिरके जंगलोंमें, कोकनदेशके यानां जिलेमें, मुरत, बरोदा, मैसोर और मध्य हिन्दुस्थानके जंगलोंमें बहुते होतेहैं।

पाहिचान—इस वृक्षकी उंचाई ८० फुटकी और कटीर इससे भी अधिक होतीहै। इसकी पेदड सीधी और लम्बी होतीहै। उसकी गुलाई १० से १८ फुटकी होतीहै। इसके पत्ते हल्के हरे रंगके होतेहैं। इसकी छाल १-२ इंच मोटी भूरे रंगकी और खरदरी होतीहै, इसमें खड़ी तेड़े ( दरारें ) चलतीहैं, आडी नहीं चलतीहै। अन्तर छाल कुछ ललाई लिये हुए कुछ भूरे रंगकी धब्बे और चूसदार होतीहै। चैत वैशाख में इसके पुराने पत्ते गिर जातेहैं और जेठ तक नये निकल आतेहैं। इसके कोमल पत्तोंको बहुधा कीड़े खा जाया करतेहैं जिससे यह नंगा हो जाताहै, बरसातमें फिर नये पत्ते आजातेहैं। इसके पत्ते ४ से ६ इंच लम्बे और प्रायः इतने ही चौड़े होतेहैं।

फूलने फलनेका समय—जेठ अषाढ में या कुछ और भी देरीसे इसके पुष्प लगतेहैं। मृगाशिरमे फाल्गुन तक फल पकतेहैं।

प्रयोग—( १ ) हलादुवा रस और विपाक में कटु, उष्णवीर्य, कषेला लघु, शीतल, कड़वा, मङ्गलकारक और बलवर्द्धकहै। पित्त, कफ, त्वचाके रोग, वमन और व्रणको मिटाताहै और कान्तिको बढ़ाताहै ( २ ) इसकी छोटी कलियोंको काली गिरचके साथ पीसके सूघने से मस्तककी तीव्र पीडा मिटतीहै।

संख्या ( ५६४ )

( सं० ) हरीतकी, चेतकी, अभृता, विजया

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हरडे	हरडा, हर्ड	हरडे	हिरडा	हरीतकी	हड़ हरड	करकाय्
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
कडुकाय्	अरळैकाय्	अहलीलज	हलैलाह	Terminalia Chebula T. reticulata	The chebulec or black myrobalan	

स्थान—हरदके वृक्ष हिन्दुस्थानके उत्तरमें कमाऊसे बगाल तक दक्षिण में मद्रास विभाग, कोयंबदूर, कनारा, पूर्वी पश्चिमी घाट, गजाम, गोदावरी की तलहटी, मतपुड़ा पहाड़ गुजरात और चम्पई विभागोंमें घाटोंके पास ऊंचे जङ्गलोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसके वृक्षकी ऊचाई ८० से १०० फुट तक होतीहै। इसकी पेदद लम्बी और भीषी होतीहै, इसकी गुलाई ८ से १२ फुट तक होतीहै। इसकी छोटी शाखें निकलते हुए पत्ते और छोटे कोमल पत्तों पर लम्बे कोमल चमकते हुए लोहेके जङ्गके या मोरचेके रङ्गके और कभी २ रूपहरी रङ्गके रूप होतेहैं। इसके अलग थोड़ी २ दूर पर अदस के पत्ते जैसे तथा घावके पत्तों जैसे ३ से ८ इंच लम्बे पत्ते लगतेहैं, वे माघ फागुनमें गिर जातेहैं और चैतमें नये आ जातेहैं। इसके पुष्प थोड़े सफेद या पीले रङ्गके होतेहैं, उनमें बहुत दुर्गंध आतीहै। इसका फल १-१ १/२ इंच लम्बा, जिसके न्यूनाधिक स्पष्ट ५ रेखा होतीहैं और छोटा फल, जो जितना बड़ा होताहै। इसके पेड़ोंके बहुतसा गोंद लगताहै जो बराड़ के जिलेमें इकट्ठा किया जाताहै।

फूलने फलनेका समय—पत्ते निकलने के थोड़े दिन पीछे पुष्प लगते हैं पौषसे फागुन तक इसके फल निकलतेहैं।

हरदकेकी मींगीमेंसे स्वच्छ पारदर्शक और प्रायः सफेद रंगका पतला तेल निकलताहै। आचार्योंने मत भेदसे, हरद ५, ६ या ७ प्रकारकी लिखीहै।

प्रयोग—( १ ) हरद—कपेली, खट्टी, कड़वी, चरपरी, हृद्य, योगवाही, रसायनी, अग्निदीपन, सारक, लेखन, पचनेमें लघु, नेत्रोंको हितकारी, स्फुरितकारक, बल, बुद्धि और आयुर्वर्द्धकहै। ( २ ) बद्धकोष्ठ मिटानेके लिये, सोते समयमें हरदका मुख्वा खिलाना चाहिये ( ३ ) इसकी मींगीको घिना सेकी हुई खातेहै ( ४ ) मदाग्नि और आम्रातिसार मिटानेके लिये, हरदका मुख्वा बहुत उत्तम पदार्थहै ( ५ ) हरदकों जो कूट कर चिलम में भरके पिलानेसे श्वास के बेगकी शान्ति होतीहै ( ६ ) फैले हुए घावको इसके काथसे धोनेसे वह सिमिट जाताहै ( ७ ) इसको थोड़े पानीके साथ घिस उसमें सारोदक और अलसीका तेल बराबर मिलाकर अग्निसे जले हुए या उष्ण जलादिसे जले

हुए ब्रणपर लेप करनेसे वे ब्रण बहुत शीघ्रतासे अच्छे होजातेहैं, परंतु केवल चारोदक और अलसीका तेल मिलाकर लगानेसे इतनी शीघ्रतासे अच्छे नहीं होतेहैं ( ८ ) हरड, सनाय और गुलाबके गुलकंदकी गोलियां बनाके खानेसे बद्धकोष्ठ मिटताहै ( ९ ) हरडको रातभर पानीमें भिगो उस पानीसे आंख धोनेसे आंख बहुत ठण्डी हो जातीहै ( १० ) इसके चूर्णका मंजन करनेसे दांत साफ और नीरोग रहतेहैं ( ११ ) हरडकी भस्मकी मक्खनमें मिलाके घावपर लेप करतेहै ( १२ ) ६ हरड और १॥ मासे दालचीनी या लोंगको १० तोले जलमें १० मिनट तक थोटा छानकर, प्रातःकाल पिलानेसे अच्छा विरेचन लग जाताहै ( १३ ) इसके पत्तोंके ऊपर एक प्रकारके फफोलेसे उठ जातेहैं उनको बच्चोंको देनेसे अतिसार मिटताहै ( १४ ) इसके पत्तोंके २॥ तोले फफोले २॥ तोले दालचीनी १। तोले कत्था और १। तोले जायफल इन सब का चूर्ण बनाकर उसमेंसे ५ रतीसे १। मासे तककी मात्रा जवान आदमी को देनेसे अतिसार मिटताहै ( १५ ) इसको और कत्थेको चूसनेसे दांत दृढ होतेहैं ( १६ ) कच्ची हरड कभी कभी खानेके काममें आतीहै । यह रक्त शोधकहै । कच्ची हरडको मारवाडी भाषामें "जंघी हरड" कहतेहैं । जिस हरडका औषधिमें प्रयोग किया जाय वह ताजी चिकनी और भारी पानीमें डूबनेवाली छोटी गुठलीवाली और जियादा छालवाली होनी चाहिये ( १७ ) हरड सारकहै । पेटकी शूल, ज्वर, कफ, श्वास, मूत्रसम्बन्धीरोग, अंश आतोंके कीड़े, पुराना, अतिसार, बद्धकोष्ठ, आध्मान, वमन, त्वचाकेरोग, हिचकी, तिझी, जलधर, हृदय और यकृतके रोगोंमें हरडका प्रयोग किया जाताहै ( १८ ) आयु बढ़ानेकेलिये रसायनके प्रयोगोंमें हरड मुख्यहै । रसायनकी रीतपर केवल हरडका प्रयोग करने से आयु बढ़तीहै ( १९ ) जंगी हरड विरेचनके काममें बहुत आतीहै, इससे दाह और आतोंमें ऐंठन आदि कोई उपद्रव नहीं होतेहै ( २० ) पित्तकी प्रकृति या स्वाभाविक बद्धकोष्ठवाले और जो मलका थोड़ा सारकपन चाहतेहैं उनकेलिये जंगी हरड बहुत अच्छीहै ( २१ ) पित्त, कफ और विगडे हुए पित्तको निकालने के लिये पकी हुई हरडका विरेचन बहुत अच्छाहै ( २२ ) कच्ची हरड शोषक और सारकहै ( २३ ) अतिसार और आमालिसार मिटानेकेलिये इसी कामकी दूसरी औषधियोंमें कच्ची हरड मिलाकर देने की चाहिये ( २४ ) इसके लेप

में संकोचक और शोषक शक्ति है (२५) ७॥ मासेसे १। तोलेतक हरड़की छाल और थोड़ी कलौजीके फांट या काथमें मधु या मिश्री मिलाकर देनेसे अच्छा विरेचन होता है (२६) हरड़के काथकी पिचकारी देनेसे अर्श और योनीस्राव मिटता है (२७) हरड़की गुठलीको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे आधा शीशी मिटती है (२८) इसकी छालको पीसकर अजन करनेसे नेत्रोंसे पानी का बहना बन्ध होता है (२९) हरड़के काथसे सिद्ध किये हुए घीका सेवन करनेसे मद और मूर्च्छा मिटती है (३०) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे वमन, रक्तपित्त, शूल और अतिसार मिटता है (३१) इसके चूर्णके अरूसेके स्वरसकी ७ भावना टेके मधुके साथ चटानेसे रक्तपित्त मिटता है (३२) मधुके साथ इसका चूर्ण चटानेसे विषमज्वर छूटता है (३३) इसके चूर्णमें घरा-घर, मिश्री मिलाकर सेवन करनेसे पाचनशक्ति बढ़ती है (३४) हरड़, बरेड़ा, आंगला, एक २ भाग और मिश्री तीन भाग ले, पीस, गुलाबजलसे गोलियां बनाके ७ मासेकी मात्रा देनेसे अर्श मिटता है (३५) इसकी पींगीको पानीमें ३०-पहरतक घोट गोली बनाके अंजन करते रहनेसे मोतियाबिन्द पैदा नहीं होता है (३६) हरड़के काथमें मधु मिलाके पिलानेसे सब प्रकारके मुखरोग मिटते हैं (३७) हरड़को लोहेके पात्रमें हल्दीके रसमें घोटकर नखपर चार २ लेप करनेसे चिप्पारोग मिटजाता है (३८) हरड़को मुनकाके साथ खानेसे अम्लपित्त मिटता है (३९) इसके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे अथवा गुड़के साथ गोली बनाके खिलानेसे अम्लपित्त मिटता है (४०) हरड़को गोमूत्रमें पकाकर खिलानेसे शोथ और पांडुरोग मिटता है (४१) हरड़को एरंडके तेलमें पकाकर ७ दिनतक पीनेसे श्लीपदरोग मिटता है (४२) जवाहरड़ सैदानमककी एरंडके तेल और गोमूत्रमें पकाकर उष्ण जलके साथ उसकी फकी लेनेसे पुरानी अडवृद्धि मिटती है (४३) हरड़के चूर्णको मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटता है (४४) हरड़की गोमूत्रके साथ पीसकर पीनेसे श्लीपद रोग मिटता है (४५) इसके चूर्णको एरंडके तेलमें मिलाकर चटानेसे गृध्रसी और अडवृद्धि मिटती है (४६) ३-४ जवाहरड़की दुगुने गुडमें गोली बना उसको खाकर ऊपर गिलोयका काथ पीनेसे बहुत बड़ा हुआ वातरक्त मिटता है (४७) १० नग बड़ी हरड़की छालको जो कूटकर जलमें भिगो तीन दिन धूपमें रख देवे, चौथे दिन उसकी

मलछान, उसमें फिर ११ भाग घड़ी हरड़की छाल डालकर तीन दिन धूपमें रख छानकर उसमें आधसेर घूरा डाल शर्बत बनाके पीनेसे मस्तरूपीड़ा और पित्तके विकार मिटतेहैं।

—१७—

संख्या ( ५६५ )

( सं० ) हवुषा, हपुषा, वपुषा, विस्त्रा ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलङ्गी
हाऊनोर	हाउवेर	होश	लघुषा धोरशेरणी	हवूपफल	हाऊवेर	
द्राविडी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
	हवुवेर	अरधर	ओरस	Juniperus com- munis J nana	The juniper	

स्थान—इसके वृक्ष हिमालय के पश्चिमात्तर भागमें कमऊँसे पश्चिमकी ओर होतेहैं।

पहिचान—यह ६-७ फुट ऊंचा वृक्ष होताहै, इसकी पेदबकी गुलाई डेढ दो फुटकी होतीहै, और यूरोपमें यह ३०-४० फुट ऊंचा होताहै उसके पेदबकी गुलाई ४-५ फुटकी होतीहै। इसकी छाल कुछ सफेद भूरे रङ्गकी होतीहै इसकी छोटी शाखा सुगंधयुक्त होतीहै इसका फल मीठा और सुगंधयुक्त होताहै इसके पत्ते कुछ भूरे हरे रंगके होतेहै इसके छोटे २ फल लगतेहैं उनमें बहुधा तीन २ बीज निकलतेहैं जब इसके फल पूरे बड़े होजातेहैं और नहीं पकतेहैं तबतक उनमें बहुत तेल रहताहै जब वे पकजातेहैं तो उस तेलका रस जैसा पदार्थ बनजाताहै जो बहुत हल्के पीले रंगका होताहै और उसमें फल जैसी बहुत तीव्र गंध होतीहै।

इसकी लकड़ी और पके फलोंमेंसे रास जैसा पदार्थ निकलताहै १०० तोले हाऊवेरको पानीमें भिगों उनका अर्क खंचनेसे ६ मासे से ११ तोले तक उड़नेवाला तेल निकलताहै इसकी लकड़ी और कोमल टहनियोंमेंसे भी उड़नेवाला तेल निकलताहै।

इसके फल गोल, गहरे, कुछ बैजनी काले रंगके और मटर जितने बड़े होते हैं। उनमें तेलके सिवाय एक और भी पदार्थ होता है उसको अंग्रेजीमें "ग्लूकोस" कहते हैं। १०० तोले बीजोंमेंसे ३३ तोले नहीं उडने वाला तेल निकलता है। जब हाडवेरको तोड़ते हैं तो उसमें से उत्तम और चरपरी सुगंध आती है। हाडवेरका स्वाद कुछ उष्ण, कुछ गर्म मसाले जैसा, कुछ और भीठा कुछ ताड़पीन जैसा होता है। इसके फल और तेलके गुण ये हैं।

प्रयोग—( १ ) हाडवेर—चरपरा, फड़ना, उष्ण, भारी, अग्निदीपन और कपेला है। ये दोनों पेटकी घादीकी पीड़ा मिटानेवाले, उत्तेजक और मूत्रवर्द्धक हैं ( २ ) इसका तेल टुकको बहुत उत्तेजित करता है, इसलिये सावधानी के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये क्योंकि इसकी अधिक मात्रा देनेसे टुकमें सौजिश और मूत्र करते समय पीड़ा हो जाती है। ( ३ ) जो जलंधर वृक्के रोगसे नहो, अर्थात् यकृत और हृदयके रोगसे हो उसको मिटाने के लिये मूत्रवृद्धि करने के लिये इसके तेलकी एक से चार बूंद तक देनी चाहिये ( ४ ) मूत्रकृच्छ्र, पुराना मूत्रकृच्छ्र, श्वेतप्रदर और कुछ त्वचा सम्बन्धी रोगोंके पीपको रोकने के लिये इसके तेलका प्रयोग किया जाता है ( ५ ) त्वचा के रोग मिटाने के लिये इसका साधुन बहुत अच्छा है ( ६ ) इसके फल मूत्रवर्द्धक और उत्तेजक है ( ७ ) मूत्रकृच्छ्र मिटानेके लिये इसके फलके शर्णकी फकी देनी चाहिये।

संख्या ( ५६६ )

( सं० ) हंसपटी, रक्तपाटी, त्रिपादिका, कीटमाता ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
हसराज	हमपगी	हसगज	लाललाजा लुभद	गोंयालेलता	कीटमागिका	हसपादि
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन		अंग्रेजी
	हसपादी	बरम्यावशा	परस्यावशा	A venustum Adiantum lunulatum		Trauing colnema

स्थान—हंसराज हिन्दुस्थानमें तुरीकी जगहमें बहुत ठौर होता है, हिन्दु-स्थानके उष्ण विभागोंमें सर्दियोंमें सूखे हुए चावलोंके खेतमें उगता है और वर्षाऋतुके प्रारम्भमें सूख जाता है। इसकी डंडी काली होनेके कारण गुंजरती वाले इसको “कालो हंसराज” कहते हैं।

प्रयोग—( १ ) हंसराज-शीतल, भारी, चरपरा, उष्ण, और रसायन है ( २ ) बच्चोंको घूँटीकी साथ देनेसे ज्वर छूट जाता है ( ३ ) इसके पत्तोंको जलमें पीस बुरा मिलाके पिलानेसे ज्वर छूटता है ( ४ ) इसके पत्तोंको सोना-गेरूकी साथ पानीमें पीसकर लेप करनेसे मुखकी पित्त शोथ जो मस्तककी ओर बढ़ती हो मिटजाती है ( ५ ) अंतर दाह मिटानेके लिये इसका २॥ से ५ तोले तक काथ पिलाते है ( ६ ) इसके पत्तोंके स्वरसका लेप करनेसे मस्तककी ओर बढ़नेवाली मुखकी पित्त शोथ मिटती है ( ७ ) सूखे हंसराजका पंचांग और दानामेथीको महीन पीस गर्म करके लेप करनेसे फोड़े फुन्सी जल्दी पक जाते हैं ( ८ ) इसके ताजे पत्तोंको पीस गठियाकी शोथ पर लेप करते हैं ( ९ ) इसकी अधिक मात्रा वमन लाती है ( १० ) इसका काथ पिलानेसे खांसीसे पैदाहुई छातीकी पीडा मिटती है ( ११ ) बावले कुत्तेका विष उतारनेके लिये भी इसका प्रयोग किया जाता है ( १२ ) इसका लेप करनेसे तथा इसका तेल वनाके लगानेसे मस्तकके घाल नहीं खिरते है, अथवा इसकी राख वालोंमें लगानेसे भी वही गुन होता है ( १३ ) विदग्ध अर्थात् विगड़े हुए पित्तको सुधारनेके लिये इसका शर्वत पिलाते हैं ( १४ ) इसको जलमें ओटाके वफारा देनेसे ज्वरका वेग कम होजाता है ( १५ ) इसके शर्वतमें इलायची और वंशलोचन वुरकाके पिलानेसे ज्वरके पीछेकी निर्बलता मिटती है ( १६ ) इसके पत्तोंको पीस गर्म कर लेप करनेसे कई प्रकारकी पुरानी गांठें मिटती हैं ( १७ ) इसके पत्तोंके गुनगुन लेपसे गांठ बिखर जाती है ( १८ ) यह ग्राही, ज्वरनाशक, वलवर्द्धक और सूखी खांसी मिटानेवाला, मूत्रवर्द्धक और मासिक गर्भको शुद्ध करने वाला है। इसका म्वाद सुगंध युक्त और चरपरा होता है ( १९ ) इसको पीसकर चोट आदि पर लेप करते हैं ( २० ) इसका काथ पिलानेसे पेटके भीतरके यंत्रोंके प्रवाहकी रुकावट मिटती है ( २१ ) इसके पत्तोंको पीस गर्मकर

लेप करनेसे गिन्टियोंकी मूजन बिखर जाती है ( २२ ) इसके काथमें मधु मि  
लाक पिलानेस सूखी खांसी मिटती है ( २३ ) इसके पत्तोंको पीस तेलमें लु-  
परी करके सेकनेसे छातीकी पीड़ा मिटती है ।

संख्या ( ५९७ )

( सं० ) हस्तिशुंडी, श्रीहस्तिनी, शुंडी, धूसरपत्रिका ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
	हाथीशुंडा	हन्तिशुंडी	हस्तिशुंडी	हाथिशुंडा		
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
				Heliotropium Indicum Tiaridium		

स्थान--हन्तिशुंडाके छोटे पौधे हिन्दुस्थानमें सबदौर और विशेष करके  
गोली जगहमें होते हैं ।

प्रयोग-( १ ) यह-रसमें चरपरी और सण्णवीर्य है ( २ ) इसके पत्तोंका  
चूर्ण २ मासेसे १० मासेतक ज्वर लुडानेके लिये दिया जाता है ( ३ ) मसूड़ों  
की मूजन या छाले मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसका लेप करते हैं ( ४ ) गुंइके  
ऊपरकी फुन्सियां मिटानेके लिये इसके पत्तोंके रसका लेप करना चाहिये ( ५ )  
इसके पत्तोंके रसका लेप करनेसे घाय और फोडे साफ होजाते हैं और जल्दी  
भरजाते हैं ( ६ ) इसके पत्तोंके रसको एरडके तेलमें डाल छोटाके विच्छूके  
दर्शपर लगानेसे विष उतरता है ( ७ ) पागल कुत्तेके बिपको उतारनेके लिये  
तेलका प्रयोग बहुत उपकारी है ।

संख्या ( ५६८ )

( सं० ) हिंगुः रामठम्, वाहलीकम्, सूपधूपनम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
हींग	हींग	हिंग बघारणी	हिंग	हिंगु हिङ्	हिंगे हींग	इहुप



द्रागिही	कर्नाटकी	अरवी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी
विरुगाय	हिहू	दिल्लीत	अंगुजा	Fernla alliacos I' asnafoetida	Asafoetida

स्थान—हींगके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहै । हींग दो प्रकारकी होतीहै एक हींग वूसरा हींगडा ।

पाह्चान—इसका भाड २, ४ फुट ऊंचा होताहै । इसकी जड़के गारम्भके भागकी मध्य रेखा प्रायः दो इंचकी होतीहै, इसका गोंठ वसंतमें इकट्ठा किया जाता है ।

प्रयोग—( १ ) हींग—उष्ण, पाचक, रोचक, तीक्ष्ण, सारक, लोणु; चरु-परी, हृद्य, स्निग्ध, रस और विपाकमें चरपरी, दीपन, कृमिनाशक और पित्तवर्द्धकहै । पेटकी पीडा, गूल, त्रिसूचिका और वाइंटोंको मिटातीहै हींगको सेककर काममें लाना चाहिये ( २ ) इसका नित्य सेवन करनेसे दुष्ट वायु आदिसे पैदा हुआ ज्वर नहीं आताहै ( ३ ) हींग—पुरुषार्थ बढ़ानेवाली और निद्रालाने वालीहै ( ४ ) इसके फल उत्तेजकहै ( ५ ) बच्चोंकी खासी और गुजराती रोगमें हींगसे बड़ा उपकार होताहै ( ६ ) हींग और गुडकी गोली बनाके देनेसे अफारा मिटताहै ( ७ ) मंदाग्नि मिटानेवाली, औषधियोंमें सेकीहुई हींग मिलाई जातीहै ( ८ ) वमन करानेके लिये हींगका प्रयोग किया जाताहै ( ९ ) परण्डके रसमें हींग डालके पिलाने से पेटके कीड़े मरतेहैं ( १० ) ललाट पर इसका लेप करनेसे आधाशीशी मिटतीहै ( ११ ) इसका मंजन करनेसे दांतोंका बिगड़ना बन्द होजाताहै ( १२ ) जिसके नारु अधिक निकला करतेहैं उसको २॥ रतीसे साठे सात रतीतक हींगकी गोली बनाके खिलातेहैं, या जलके साथ पिलातेहै ( १३ ) सोंठ, हींग और सैधेनमककी फकी गर्मजलके साथ देनेसे अनीर्ण मिटताहै ( १४ ) अफीम और दूसरे पदार्थोंके पिपको उतारनेकेलिये हींगसे वमन करातेहै ( १५ ) हींगका जल बना के सुपानेसे आधाशीशी मिटतीहै ( १६ ) हींग और अफीमकी गोली बिगड़े हुए दांतकी खोखलमें धरतेहैं ( १७ ) विषूचिकाके प्रारम्भमें हींग, कपूर, कालीमिरच और अफीमकी गोलियां बनाके देतेहैं । परन्तु जब विषूचिकाके लक्षण

बहुत बढजावे तब बिना अफीमकी गोली देना चाहिये ( १८ ) घृचा होनेके  
 पीछे गर्भाशयमें जो दुष्ट मल रहजाताहै उसको निकालनेकेलिये सेकीहुइ हींग  
 लहसन और ताड़का गुड़, इनकी गोली बनाके प्रातःकाल नित्य देना चाहिये  
 ( १९ ) तिछ्ठीके रोगमें बहुत दिनोतक विरेचनकी जो औषधियां दीजातीहैं  
 उनकी चरपराहट मिटानेकेलिये उनमें हींग मिलादेतेहैं ( २० ) इसका अंजन  
 करनेसे धुंध मिटतीहै ( २१ ) इसके खानेसे घादी मिटतीहै ( २२ ) सौंफके  
 अर्कमें थोड़ी हींग मिलाकर संन्यासरोगवालेके कंठोंमें डालनेसे लाभ होताहै  
 ( २३ ) हींग गलेमें लटकानेसे मिरगी नहीं आतीहै ( २४ ) हींग को  
 सिरकेमें पीस, गर्म करके लेप करनेसे "गुहांजनी" वाफनीमें जो फुन्सी  
 होतीहै, मिटजातीहै ( २५ ) बालक होने के समय थोड़ी २ हींग खिलाने से  
 मसख सुख से होजाताहै ( २६ ) २ मासे हींगको २—३ बेरमें खिलानेसे  
 अफीमका विष उतरताहै ( २७ ) इसका धूंआ पिलानेसे हिचकी बन्द होतीहै  
 ( २८ ) इसका अंजन करनेसे कामला रोग, मिटताहै ( २९ ) हींग और उबद  
 के चूर्णका - धूंआ पिलानेसे ५ मकारकी हिचकी बन्द होतीहै ( ३० ) हींग  
 और सैंधेनमकको तेल और गोमूत्रमें ओढोकर नाभी पर लेप करनेसे पीड़ायुक्त  
 शूल मिटतीहै ( ३१ ) शुद्ध हींगका घृतके साथ, सेवन करनेसे मग्नशूल  
 मिटतीहै ( ३२ ) हींग और हरतालको नीबूके रसके साथ पीसकर लगानेसे  
 विच्छूका विष उतरताहै ( ३३ ) हींगको सिरकेमें घोट गुन गुना करके लेप  
 करनेसे नासूर मिटताहै ( ३४ ) हींगको मधुमें मिला जीरेके समान गोली  
 बनाकर इन्दीके छिद्रमें रखनेसे वीर्य स्तंभन होताहै और अपने-आप वीर्यका  
 गिरना बन्ध होजाताहै ( ३५ ) हींगको जलमें पीसकर अग्नि दग्ध पर  
 लगाना चाहिये ( ३६ ) २ मासे हींग और ४ नग बिदामकी भांगीको  
 पीसकर पिलानेसे हिचकी बन्ध होतीहै ( ३७ ) ६ तोले मोठके आटेमें थोड़ी  
 हींग मिलाकर पुण्डिस बांधनेसे नारू निकल जाताहै ( ३८ ) दो मासे हींग  
 और दो मासे नौनका सेरभर पानीमें ओटा आध पाव रसके पिलानेसे बा-  
 रीसे आनेवाला ज्वर छूटताहै ।

संख्या (५६६)

( मारवाड़ी ) हींगड़ा-

Latin Ferula foetida F Scorodosma

स्थान—हींगड़ेके वृक्ष हिन्दुस्थानमें नहीं होतेहैं।

इसका पोधा ४—५ फुट ऊंचा होताहै।

प्रयोग—( १ ) वाइट मिटानेकेलिये हींगड़ेका तेल बनानेके मद्देन करना चाहिये ( २ ) हींगड़ा उचैजकहै और हींगकी ठौर काममें आताहै।

इसके पत्तोंका शाक बनाया जाताहै। इसकी टहनीके भीतरका सफेद भाग शाकके काममें आताहै।

संख्या ( ६०० )

( सं० ) नाड़ीहिंगु, हिंगुनाड़िका, जन्तुका, रामठी।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहठी	बंगाली	पंजाबी	तैलंगी
डीकामाली	डीकामाली	डीकामारी	डिकेगाली			चिनकारिगुवे
श्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फारसी	लैटिन	अंग्रेजी	
डिकामलि	डिकामलि			Gardenia arborea-gummifera	Dekamalli gum Gummy gardenia	

स्थान—डीकामालीके वृक्ष मध्य और दक्षिण हिन्दुस्थानमें और सत-पुड़ा पहाड़से दक्षिणकी ओरके देशोंमें होतेहैं।

पहिचान—इसका बड़ा भाड़ होताहै उसके कटे नहीं होतेहैं। इसके पुराने पत्ते खरदरे होजातेहैं इसकी कलियोंके राल जैसा पदार्थ लगताहै वर्षा-अनुभूतमें इसके नवीन पत्ते आने लगतेहैं इसकी छाटी डालिये खरदरी और कुछ लाल होतीहै इसकी लकड़ी सफेद और कठोर होतीहै। इसका फल एक या डेढ़ इंच लम्बा होताहै, उसके ऊपर उठी हुई बहुतसी धारियां होतीहै, इसकी गुलीमें ४-५ खाने होतेहैं।

फूलने फूलनेका समय—फाल्गुन चैतमें इसके पुष्प लगतेहैं । डीकामाली एक वृक्षका गोंदहै ।

प्रयोग—( १ ) डीकामाली—चरपरी, उष्ण, तीक्ष्ण और दीपनहै कफ, वात, आनाह, मलस्तंभको मिटातीहै ( २ ) डीकामालीको तेलमें पिघलाके ललाटपर लेप करनेसे भस्तकपीडा मिटतीहै ( ३ ) स्नायुक ( नहखे , की पीडामें एक रतीसे एक मासे तक डीकामालीकी फकी देनी चाहिये ( ४ ) ३ मासे डीकामालीको ओटाके पिलानेसे पसीना आताहै ( ५ ) २ मासे डीकामाली और ३ मासे अरद्दुसोका क्वाथ करके पिलानसे सूखी खांसी मिटतीहै ( ६ ) बच्चोंके दात आनेके समयमें उनके मसूड़ोंपर डीकामाली मलनेसे दांत जल्दी निकल जातेहैं ( ७ ) इसका काथ बनाके पिलानसे बच्चोंकी आंतके कीड़े मर जातेहैं या निकल जातेहैं ( ८ ) इसके चूर्णको बच्चोंकी गुदामें रखनेसे वहाके कीड़े मर जातेहैं ( ९ ) इसके क्वाथसे पुराने घावको धोनेसे उसके कीड़े मर जातेहैं ( १० ) मंदाग्निमें इसके चूर्णकी ४ मासेकी मात्रा देनी चाहिये ( ११ ) इसके चूर्णको काले नमकके साथ देनेसे अपारा चतरताहै ( १२ ) इसको एरंडके तेलमें पिघलाके मर्दन करनेसे घाइट और रगोंकी खिचावट मिटतीहै ( १३ ) डीकामाली बहुत तेज होतीहै इसवास्ते इसकी मात्रा बहुत कम देनी चाहिये । इसका क्वाथ पीनेसे घाइट और पेटकी, घादीकी पीडा मिटतीहै ( १४ ) इसका लेप करनेसे दुर्गंध युक्त हवाका असर नहीं होताहै ( १५ ) स्त्रियोंके आवंशका रोग और वादीकी मदाग्निके रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाताहै ( १६ ) विगड़े हुए और जिनका चमड़ा शरत् होगया हो ऐसे घावों पर इसका लेप करतेहैं ( १७ ) घाव पर मरखी नहीं बैठतीहै । इसके लिये एक तोले डीकामालीको ३ तोले कड़वे तेलमें जला, ध्यान उसकी पिचकारी देनेसे मूत्रकी जलन मिटतीहै ( १८ ) इसका फल खानेके काममें आताहै ।

संख्या ( ६०१ )

( सं० ) हिंगुलम, दरदम, म्लेच्छम, रत्तोद्भवम् ।

मारवाड़ी	हिन्दी	गुजराती	मरहटी	बंगाली	पंजाबी	तैलक्षी
हींगलू	हिंगलू	हिंगलो	हिंगल	हिंगुल	शिंगरफ	हींगलीकमु
द्राविड़ी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
जातिस्लिग	हिंगुल	जंजफर शंजरफ	शंगरफ़	Hydrargyri sulphuratum.	Cinnabar Redsul phuret of mercury Vermillion	

स्थान—पारे और गंधके योगसे हींगलू बनता है, यह तीन प्रकारका होता है ( १ ) चमार ( २ ) शुकतुण्डक और हंसपाद, इनमें हंसपाद सबसे उत्तम है और इसकी परीक्षा यह है कि यह बहुत कठोर नहीं होता, इसकी सीकें चुकटी से टूट जाती हैं, और तोलमें दूसरे हींगलूसे भारी होता है ।

हिंगलू शोधनकी रीति—( १ ) इसके छोटे २ टुकड़े कर, नींबूके रसमें भिगोके सुखा लेना चाहिये, ऐसे सात बेर करने से हींगलू शुद्ध हो जाता है ( २ ) इसी रीति से अद्रक के रसकी सात बेर भावना देनेसे शुद्ध हो जाता है ( ३ ) सेर भर हिंगलू के छोटे २ टुकड़ोंको कपड़ेकी थैलीमें बन्धकर, भेड़के आठ सेर दूधमें अधर लटकाके धीमा आंच देवे जब वह दूध छीज के आधा रहजाय तब उस थैलीमेंसे निकाल उसे उष्ण जलसे धोवाले, फिर इसी रीतिसे आठ २ सेर दूधमें सातबेर पकानेसे हिंगलू शुद्ध होजाता है, पीछे उस थैलीमेंसे हिंगलूके टुकड़ोंको निकाल केवल जलमें ओटाके साफ करलेवे इसलियेकि उनमेंसे दूधका भाग निकलजावे, नहीं तो कुछ दिनों पीछे उनमेंसे दूध और धीकी गंध आने लग जाती है । ऐसे शुद्ध किया हुआ हिंगलू औषधिके काममें लानेसे कोई प्रकारका विकार नहीं करता है ( ४ ) इसकी शक्ति बढ़ानेकी यह रीति है कि हिंगलूके २ तोले भरके ५ टुकड़ोंको एक गाढे साफ कपड़ेमें सीकर बड़े बैगनके बीचमें रखकर उस बैगनपर कपड़ मिट्टी देके, जंगली फंदोंकी इतनी आगे देवे कि वह बैगन अच्छी तरहसे पक जावे और ऊपरसे कुछ जलभी जावे, जब वह स्वांग शीतल हो जाय तब उस बैगनमेंसे उस पोटलीको निकाल फिर दूसरे बैगनमें धरकर उक्त रीतिसे आंच देवे ऐसे १०० बेर आंच देकर तैयार करलेवे जो इसकी शक्ति और भी अधिक बढ़ानी

होयेतो उक्तरीतिसे उस पोटलीको एक २ तसतूकेमें रख २ के १०० आंच दे-  
 देवे। फिर उक्तरीतिसे काटेमें रख २ के या जो एक काटेमें नहीं मावेतो तीन,  
 चार कादों की लुगदीमें रख २ क १०० आंच देदेवे। ऐसे सिद्ध किये हुए  
 हिंगलूकी आयेसे एक चावल तक की मात्रा बहुत सावधानी और विचारके  
 साथ देना चाहिये, यह अलग २ अनुपान से इरेक रोगको मिटाताह।

शुद्ध हिंगलूके गुण-यह कड़वा, कपेला और चरपरा होता है। नेत्र-  
 रोग, हल्लास, कुष्ठ ज्वर, कामला, प्लीह, आमवात आदि बहुतसे रोग और  
 वात, पित्त, कफको मिटाताहै। पुरुषार्थ और पाचनशक्ति बढ़ाताहै ( २ )  
 अशुद्ध हींगलूके दोष-विना शोधे हुए हिंगलू को खानेके काम में लाने से  
 कुष्ठ, नपुसकता, क्लम, भ्रम, मोह आदि कई रोग पैदा हो जातेहै, इसलिये  
 इसको बहुत अर्च्छ, तगह शोधना चाहिये ( ३ ) शुद्ध किये हुए हंसराज  
 हींगलूके १॥ मासे टुकड़ोंको चोतह कपड़ेमें सीकर उस पोटली को अलूणे  
 आदपा व आटे की वाटी के बीच में रखकर, उसको मट २ आंच परसेक,  
 उसमेंमे पोटलीको निकाल उस वाटीको पिलानेसे मंदाग्नि मिटतीहै और  
 जैसे २ भूख बढ़तीजाय वैसेही कुछ घृतकी मात्रा बढ़ानी चाहिये ( ४ ) इम  
 पोटलीको दूधके बीचमें लटका, उसके नीचे एक पहर तक बहुत मट आंच दे,  
 उस पोटलीको निकाल उस दूधको रोगीकी शक्तिके अनुसार १ से ४  
 बेरमें पिलानेसे मंदाग्नि और अतिसार मिटताहै। इम दूधमें हलदी बुरकाके पिला-  
 नेसे श्वासरोग मिटताहै ( ६ ) चोपचीनीकी फबी देकर ऊपर यह दूध पिला-  
 नेसे गठिया मिटतीहै ( ७ ) बादी मिटानेवाली औषधियोंमें इसको मिला  
 अद्रकके रसमें खरलकर मिरचके बराबर गोलियां बना रखले, रोगीकी शक्ति  
 के अनुसार २ से ४ तक गोली देनेसे वादीके कई प्रकारके रोग मिटतेह ( ८ )  
 शुद्ध हिंगलू और शुद्ध बच्चनांगको बराबरले धतुरके रसमें पीस छोटी २ गो-  
 लिया बनाके आधेरेतीसे २ रती तक देनेसे वात और कफ सम्बन्धी ज्वर छूटता  
 है, जो इससे तृपा और ऊष्मा अधिक बढ़जावे तो दूर पिलाना चाहिये ( ९ )  
 अलग २ अनुपानके साथ देनेसे इससे कई रोग मिटतेह शुद्ध हिंगलू और  
 शुद्ध सोमल बराबर ले बांध करलेकी तेलके रसमें खरलकर गुग्गु रोवे, ऐस

हीरेको शुद्ध करनेकी यह रीतिहै कि हीरेको कुलथ और कोदोंके काथमें दोलायंत्रमें सात दिनतक स्वेदन करना चाहिये, अथवा हीरेको तपा २ के गधेके मूत्रमें २१ बेर बुझाना चाहिये ।

हीरेकी भस्म बनानेकी रीति—( १ ) हींग और सैंधे नमकको कुत्राथोंके काथमें मिला, हीरेको २१ बेर गर्म कर २ के, उसमें बुझानेसे भस्म होजातीहै ( २ ) मेंढेका सींग, सर्पकी हड्डी, कछुवेकी खांपडी, खग्गोशके दात और अमल वेत, उन सबको थूहरके दूधमें पीस, लुगदी बना, उसमें हीरेको रखकर, उसके धोकनीकी आच देनेसे हीरेकी भस्म हो जातीहै ।

प्रयोग—( १ ) हीरा-पद रसयुक्त और सर्वगोगनाशकहै । हीरेकी भस्मकी मात्रा आधी रती तककीहै । इसकी भस्मके सेवनसे शोष, क्षय, भगंदर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग, शोथ आदि कई रोग और वात पित्त और कफ के दोष मिटतेहै । शरीरकी कान्ति, आयु, वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ताहै शरीर पुष्ट होताहै और जिस रोगकी जो औषधिहै उस रोगकी उम औषधि के साथमें हीरेकी भस्म देनेसे उसी रोगको मिटातीहै ( २ ) खैरकी बालके साथ हीरेकी भस्मका सेवन करनेसे कुष्ठ मिटताहै ( ३ ) अह्वसे के चूर्ण के साथ चटानेसे कफ और खासी मिटतीहै ( ४ ) अद्रक के रस और मधुके साथ चटानेसे श्वास रोग मिटताहै ( ५ ) शकरके साथ फकी देने से पित्त और दाह मिटती है ( ६ ) चिरायते के काथ के साथ देनेसे ज्वर छूटताहै ( ७ ) गिलोयसत और मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै ( ८ ) मक्खनके साथ चटानेसे शोषरोग मिटताहै ( ९ ) इसकी भस्म और गोरारुके चूर्णको मधुके साथ चटानेसे प्रमेह मिटताहै ( १० ) बिदारी केदके चूर्णमें मिलाकर फकी देनेसे उदुमूत्ररोग मिटताहै ( ११ ) पीपल और शहदके साथ चटानेसे मंदाग्नि मिटतीहै ( १२ ) साटेकी जड़के चूर्ण और मधुके साथ चटानेसे शोथरोग मिटताहै ( १३ ) पुष्टाईकी औषधियोंके साथ खानेसे शरीर पुष्ट होताहै । ( १४ ) अशुद्ध हीरेके सेवन करनेसे कुष्ठ, पमलीका दर्द पांडु, रोग, दाह, शरीरका भागीपन, गन्धयत्ना आदि बहुतसे रोग होजाते ।

संख्या ( १०५ )

( सं. ) हेमनागर. ।

मारवाडी	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	पंजाबी	तैलड़ी
	जख्मेहेयात			हेमसागर		मिमासूड
द्राचिडी	कर्नाटकी	अरबी	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी	
मलेरती	लूनाहडकन गिड		जख्महेयात	<i>Bryophyllum calyci- num Kalnachos pinnata</i>		

स्थान—हेमसागर हिन्दुस्थानके अधिक उष्ण और तर भागमें सीलोन तक और बंगालमें सब ठौर पैदा होता है ।

परिचयान—इसके पत्ते मोटे और गिरदार होते हैं । वे जहां पृथ्वीको छूते हैं, वहाँ उनके किनारोंमेंसे बीज गिरके वृत्त लग जाते हैं ।

प्रयोग—( १ ) इसके पत्तोंका लेप करनेसे विगड़े हुए फोंड़े सुधर जाते हैं ( २ ) पित्तशायको मिटानेकेलिये इसके पत्तोंका लेप करते हैं ( ३ ) इसके लेपसे सृजन उतर जाती है और चमड़ीका रंग बदलना रुक जाता है ( ४ ) चिरे का घाव भरनेकेलिये, जो साधारण उपाय है, उनकी अपेक्षा इसके पत्तोंका लेप उस घावको बहुत शीघ्र भर देता है ( ५ ) इसके पत्तोंका ३ मासे से एक तोलेतक स्वरस पिघले हुए दुग्धने मरसनमें मिलाकर पिलानेसे अतिसार, आमामतिसार और विपूचिका मिटती है । पथरीवालेको भी इतनीही मात्रा देनी चाहिये ( ६ ) मोच और अग्निसे जले हुए त्रण और शरीरके ऊपरके त्रणोंपर इसके रसका लेप करना चाहिये ( ७ ) ताजे घाव और रगड़के ऊपर इसके रसका लेप करनेसे उनमेंसे रुधिर बहना बन्द होजाता है ( ८ ) चोटके घावपर इसके रसमें भिगोये हुए कपड़ेको बना नरनमें यह बहुत जल्दी भरजाता है । दूसरी औषधियोंसे इतना जल्दी नहीं भरता है ( ९ ) जिस घाव



बिछड़े होजातेहैं, उसके ऊपर इसके चूर्णको बुरकाकर. इसके पत्तोंका पुण्डिस  
 पांशतेहैं ( १० ) स्थानको शुद्ध करनेकेलिये इसको काममें लातेहैं । इसकी  
 धूनीसे हवा शुद्ध होतीहै ।

वेदर्तुग्रहशीतरदिमप्रमिते संवत्सरे वैक्रमे,

चैत्रे भास्यसित प्रमूनसमये पष्ठ्यां विधोर्वासरे ।

गङ्गापूर्वप्रमादवैद्यरचितो ग्रन्थोऽतिलाभप्रदो,

धन्वन्तर्यवतारविष्णुकृपया सम्यक् समाप्तिं गतः ॥ १ ॥

वेदऋतुग्रहचन्द्रमित, सम्बन् विक्रम भूप ।

चैत्रमासवदि पक्ष छठ, हिमकरचार अनूप ॥

पूर्ण ह्रुआ यह ग्रन्थ शुभ, औषध गुण आगार ।

भूल चूक कछु होयसो, सज्जन लेहु सुधार ॥

इतिश्रीत्रिपाठ्युपाख्यवैद्ययमुनादासात्मज--भारतधर्ममहा-

मण्डल तथायुर्वेदविद्यापीठनासिकवैद्यसभाप्राप्तयुर्वेद-

पञ्चाननोपाधिभूषितगङ्गाप्रसादवैद्यविरचितो-

ऽनुभूताचिकित्सासागरोत्तरार्धः संपूर्णः ।

